हृदन्तरस्थान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड-पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

76

ग्रहोदयास्त विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०६७, शक संवत् १९३२
सन् २०१०-२०११, जय हिन्द संवत् ६३-६४

पंचांग-प्रवर्तकः

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
मंगल

मंत्री
बुध

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ८३वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

RUCHIKA
PUBLICATIONS

मूल्य
७३.००

सर्वाधिकार- M/S मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित है।

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त ज्ञातव्य सांकेतिक शब्द

अ.-	अस्त, अश्विनी, अनुराधा (नक्षत्र), अतिगण्ड (योग), अग्नि (बाण)।
अं.-	अंग्रेजी (तारीख, मास), अंश।
आव.-	आवश्यकता में।
उ.-	उपरान्त, उदित, उत्तर।
उ. गो.-	उत्तर गोल।
क.-	करण, कर्क, कला।
कृ.-	कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)
क्रां. सा.-	क्रन्तिसाम्य (महापात)
गोधू.-	गोधूलि (लग्न)
घ.-	घड़ी।
घं.	घण्टा।
चौ.-	चौर (बाण)
ति.-	तिथि।
द.-	दक्षिण।
द. गो.-	दक्षिण गोल।
दा.-	दान पूजन।
दि.-	दिन।
दि. मा.-	दिनमान।
दि. ल.-	दिन का लग्न।
न.-	नक्षत्र।
निं.-	निम्बार्कों के लिए।
ने.-	नेप्च्यून।
नृ.-	नृप (बाण)।
प.-	पल. परिघ (योग), पश्चिम।
प्र.-	प्रविष्टा (पंजाबी तारीख)।
प्रा.-	प्रारम्भ।
भ.-	भद्रा. भरणी (नक्षत्र)।
भा.-	भाद्रपद।
मा.-	मार्गी।
मि.-	मिनट, मिथुन।
मृ.-	मृगशिरा, मृत्यु (बाण)।
या.-	यावत् (=तक)।
रा.-	रात्रि, राशि।
रो.-	रोग (बाण), रोहिणी।
ल.-	लग्न।
व.-	वक्री, वक्रगति से, वणिक्, वज्र, वरीयान् (योग)
वा.-	वार
वि.-	विकला, विष्टि (करण), विष्कम्भ, विशाखा।
वि. मु.-	विवाह मुहूर्त।
वै.-	वैष्णवों के लिए, वैधृति (योग), वैशाख।
व्र. स.-	व्रत सबके लिए।
शु.-	शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह), शुभ, शुक्ल (योग)।
श.-	भारत सरकार द्वारा संचलित शक संवत्, तारीख-मास।
स.-	समाप्त।
सं.-	संक्रान्ति, संवत्।
सां. का.-	साम्पातिक काल।
सा.-	सायन।
स्मा.-	स्मार्तों के लिए।
ल.-	लग्न

इस पंचाग के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह भोगांश और ग्रहों के क्रान्ति-शर की गणित डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विकसित *Computer Program* से की जाती है।

इस पञ्चाङ्ग के लिए आवश्यक निर्देशन

(1) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण ग्रीन्विच से पूर्व रेखांश ७६° ।५२' एवं उत्तर अक्षांश ३०° ।४४' के आधार पर किया गया है, अतः यहां जहां विशेष निर्देश न किया गया हो वहां 'सूर्योदय' से हमारा अभिप्राय इसी स्थल के सूर्योदय से रहता है।

(2) यहां सर्वत्र निरयणपद्धति को अपनाया गया है। जहां सायनगणना की गई है, वहां निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने हैं। इस पञ्चाङ्ग में दिए गए अयनांश धूनन-संस्कार-संस्कृत (स्पष्ट) हैं।

(3) तिथि, नक्षत्र एवं करणों के सम्मुख दिए गए घटी.पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं।

(4) इस पंचाग में केवल सूर्योदयव्यापी ही करण लिखे गए हैं, दूसरे नहीं।

(5) चन्द्रसञ्चार वाले कालम में राशियों के साथ दिए गए धड़ी-पल चन्द्रमा के राशिप्रवेश का काल बतलाते हैं।

(6) चन्द्रसंचार के आगे वाले कालमों में सूर्य के उदयास्त, जोकि भा.स्टै.टा में हैं, उपरोक्त स्थल के ही हैं।इनका सम्बन्ध सूर्यकेन्द्र से है। ये सूर्योदयास्तकाल किरण-वक्री-भवन संस्कार रहित हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए दो मिनट सूर्योदय में घटाएं एवं सूर्यास्त में जोड़ें।

(7) घड़ी-पलों वाले २४ पक्षों के लस्टर में पंचक-भद्रा की प्रारम्भ-समाप्ति, ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग तथा राशि-नक्षत्र-प्रवेश आदि के सभी काल भी घड़ीपलों में ही हैं। यह घड़ीपल उपरोक्त स्थल के सूर्योदय से बीता काल बतलाते हैं।

(8) पंक्तियों (अष्टमी, पूर्णिमा, अमावस्या) के स्पष्टग्रहों के नीचे दैनिक-गति, उसके नीचे मार्गी या वक्री, उसके नीचे उदित या अस्त, फिर चरण सहित नक्षत्र का (जिस में ग्रह है उसका) निर्देश किया गया है।

(9) पंक्तियों की सभी कुण्डलियां सूर्योदय-कालिक हैं।

(10) पञ्चाङ्ग की गणित, आचार्यों एवं ऋषियों द्वारा अनुमोदित सूक्ष्म दृक्तुल्य पद्धति द्वारा की गई है।

(11) यहां दिए गए ग्रह एवं शर भूमध्य दृश्य हैं।

(12) जिस घटीपलात्मक तिथि, योग नक्षत्र के आगे (६०/०) लिखा है, उस तिथि योग नक्षत्र की वृद्धि समझे। घण्टामिनटात्मक तिथि, नक्षत्र योग के आगे (............) ऐसा चिह्न उस तिथि, नक्षत्र योग की वृद्धि बतलाता है।

(13) यहां दिया गया भा. स्टै. टा ८२° /३०' पूर्व-रेखांश के स्थल का स्थानीयमध्यमकाल है।

(14) दैनिक लग्न सारणियां चण्डीगढ़ के लिए हैं, ये सारणियां चित्रा-पक्षीय निरयणलग्नों का समाप्तिकाल बतलाती है।

(15) पञ्चाङ्ग में क्षीणतिथि, नक्षत्र, योग के समाप्तिक्षण ही दिए गए हैं, पूर्ण भोग नहीं।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं प्रकाशतु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

ग्रहोदयास्त विशेषांक

विक्रम संवत् २०६७, शक संवत् १९३२
सन् २०१०-२०११, जय हिन्द संवत् ६३-६४

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा
मंगल

मंत्री
बुध

पञ्चांगप्रवर्तक
अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
सम्पादक मण्डल
श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण रजत पदक प्राप्त
दृक्सिद्धान्तभास्कर डॉ. शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त
ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली 83 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

प्रकाशक : **रुचिका पब्लिकेशन्स**
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23936116

मूल्य
७३.००

सर्वाधिकार-मै० मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित।

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. २०६७ वि.)

विषय	पृष्ठ
पचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन,	टा. पृ. 2
इनर टाईटल,	1
विषय सूची,	2
प्रमुख–प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, मेले, अवकाश, सिक्खपर्व,	3–10
श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय, गण्डमूल, पंचक,	11–13
कुम्भ महापर्व हरिद्वार,	14–16
ग्रहण विवरण,	17–26
साढेसाती,	27–28
आकाशी कौंसिल (सं. 2067 वि.),	29–44
व्यापारविमर्श (सं. 2067 वि.),	45–58
यंत्र, मंत्र, तंत्र –साधनाकाल एवं चमत्कार,	59–66
विंशोत्तरीदशा साधन	67–69
प्रसूति लग्नविचार–नक्षत्र–राशिज्ञान चक्र आदि,	70–81
नक्षत्रचरण एवम् नवांशराशि–बोधक सारणी	82
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2067 वि.),	83–86
वर्षराजादि फल (सं. 2067 वि.),	87–93
पूर्वयुता एवम् परयुता तिथि ?	94–95
संदिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था (सं. 2067 वि.),	96–98
तिथ्यादि 26 पक्ष (सं. 2067 वि.),	99–124
घण्टा–मिनटात्मक तिथ्यादि (ना.स्टैं.टा.),	125–140
चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणप्रवेश (सं. 2067 वि.),	141–145
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु, चन्द्र शृंगोन्नति,	146–161

विषय	पृष्ठ
चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2067वि.),	162–163
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	164–168
ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार,	169–174
अक्षांशादि सारणी,	175–184
कुछ विदेशी नगरों के अक्षांशादि,	185–188
स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी,	189–191
दैनिक लग्नसारणी (चण्डीगढ के लिए),	192–197
प्रमुख–प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	198
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	199–202
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	203–208
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी, सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म–शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	209–212
आवश्यक मुहूर्त्त, मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट परिहार, मेलापक सारणी,	213–223
लग्न–गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	224–237
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2067 वि.),	238–243
त्रिबल शुद्धि कोष्ठक (सं. 2067 वि.),	244–246
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2067 वि.),	247–249
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	250–253
सर्वार्थसिद्धि आदि मुहूर्त्त,	254–256

इसवर्ष की विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
श्रीगणेश चतुर्थी चन्द्रोदय,	11–13
कुम्भ महापर्व हरिद्वार,	14–16
विंशोत्तरीदशा साधन	67–69
पूर्वयुता एवम् परयुता तिथि ?	94–95

ग्रहोदयास्त विशेषांक*

विषय	पृष्ठ
समस्याएं और समाधान,	259–264
चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण,	265–266
ग्रहों का उदयास्तकाल,	267–297

*इस विषेशांक की विस्तृत विषयसूची के लिए पृष्ठ 257 देखें।

'अभिजित् प्रकाशन'

Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula(HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों एवम् आगामी प्रकाशनों के विस्तृत विज्ञापन अन्तिम पृष्ठों पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म- श्रीशक्तिधरशर्म- श्रीमदिन्दुशेखर- शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध- स्फुट- गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र- दृग्गणितपद्धत्यनुसारि- व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष- गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड- पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक- लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2068 वि.)में विशेष सामग्री—गत वर्ष (सं. 2066 वि.) के 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' में 'शनि की साढ़ेसाती व ढैय्या' का पूरा काल अशुभ नहीं होता, 'नाड़ीदोष के निर्णायक तीन परस्पर विरोधी मत'..... आदि विशिष्ट लेखों को विशेषांक में देने की हमने प्रतिज्ञा की थी, जिन्हें हम 'ग्रहोदयास्त, लोप–दर्शन' सम्बन्धी विशेष महत्त्वपूर्ण लेख के विस्तृत हो जाने के कारण इस वर्ष (सं. 2067 वि. में) न दे सके। अब इन लेखों को अन्य ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ आगामी वर्ष (सं. 2068 वि.) के विशेषांक में हम अवश्य प्रकाशित करेंगे।

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक " व्रतपर्व विवेक" पर आधारित)

जनवरी (सन् 2010 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	शु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	3 जन.	र.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	बु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	गु.
मौनी अमावस	15 जन.	शु.
कंकण सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)	15 जन.	शु.
गौरी तृतीया (गौंतरीं)	18 जन.	चं.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	19 जन.	मं.
श्रीपंचमी	20 जन.	बु.
वसन्तपंचमी	20 जन.	बु.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली)	22 जन.	शु.
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	22 जन.	शु.
भीष्माष्टमी	23 जन.	श.
भीष्म द्वादशी	27 जन.	बु.
माघस्नान समाप्त	30 जन.	श.
माघी पूर्णिमा	30 जन.	श.
फरवरी (सन् 2010 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर.	शु.
पहला शाही स्नान– कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	12 फर.	शु.
होलाष्टक प्रारम्भ	22 फर.	चं.
गोविन्द द्वादशी	25 फर.	गु.
होलिका दहन (प्रदोष में)	28 फर.	र.
होलाष्टक समाप्त	28 फर.	र.
मार्च(सन् 2010 ई.)		
वसन्तोत्सव	1 मार्च	चं.
द्वितीय शाही स्नान– कुम्भ महापर्व, हरिद्वार	15 मार्च	चं.
चान्द्र–संवत् 2066 वि. पूर्ण	15 मार्च	चं.
चान्द्र–संवत् 2067 वि. प्रा.	16 मार्च	मं
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	16 मार्च	मं.
वर्षफलश्रवण	16 मार्च	मं.
तैलाभ्यंग / ध्वजारोहण	16 मार्च	मं.
गौरी तृतीया (गणगौर)	18 मार्च	गु.
आन्दोलन तृतीया	18 मार्च	गु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	20 मार्च	श.
महाविषुवदिन	20 मार्च	श.
नाग पंचमी	20 मार्च	श.
हयव्रत	20 मार्च	श.
स्कन्द षष्ठी (पंचमी–विद्धा)	21 मार्च	र.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	23 मार्च	मं.
वासन्त नवरात्र समाप्त	24 मार्च	बु.
श्रीराम नवमी	24 मार्च	बु.
नवरात्र व्रत पारणा	25 मार्च	गु.
विष्णुदमनोत्सव	27 मार्च	श.
अनंग त्रयोदशी	28 मार्च	र.
श्रीमहावीर जयन्ती	28 मार्च	र.
शिवदमनोत्सव	29 मार्च	चं.
वैशाख स्नान प्रारम्भ	30 मार्च	मं.
अप्रैल (सन् 2010 ई.)		
वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	बु.
कुम्भ महापर्व हरिद्वार, कुम्भपर्व का प्रमुखस्नान दिन, प्रमुख शाहीस्नान	14 अप्रै.	बु.
मई (सन् 2010 ई.)		
श्रीपरशुराम जयन्ती	16 मई	र.
अक्षय तृतीया	16 मई	र.
श्रीगंगा जन्म	20 मई	गु.
श्रीजानकी जयन्ती	22 मई	श.
श्रीकूर्मजयन्ती,	27 मई	गु.
श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती	27 मई	गु.
कुम्भपर्व हरिद्वार सम्पन्न	27 मई	गु.
वैशाखी पूर्णिमा	27 मई	गु.
वैशाख स्नान समाप्त	27 मई	गु.
जून (सन् 2010 ई.)		
भद्रकाली एकादशी (पं.)	8 जून	मं.
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	12 जून	श.
भावुका अमावस	12 जून	श.
रम्भा तृतीया	14 जून	चं.
अरण्य षष्ठी	17 जून	गु.
विन्ध्यवासिनी पूजा	17 जून	गु.
श्रीगंगा दशहरा	21 जून	चं.
निर्जला एकादशी व्रत	22 जून	मं.
वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	26 जून	श.
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	26 जून	श.
जुलाई (सन् 2010 ई.)		
रथयात्रा (पुरी)	13 जुला.	मं.
कुमार षष्ठी	16 जुला.	शु.
विवस्वत् सप्तमी	17 जुला.	श.
विष्णुशयनोत्सव	21 जुला.	बु.
कोकिला व्रत	25 जुला.	र.
गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा)	25 जुला.	र.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	25 जुला.	र.
शिवशयनोत्सव	25 जुला.	र.
अगस्त (सन् 2010 ई.)		
हरियाली अमावस	10 अग.	मं.
मधुश्रवा तृतीया, संधारा तीज	12 अग.	गु.
नागपंचमी	14 अग.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी	17 अग.	मं.
ऋक् उपाकर्म	23 अग.	चं.
रक्षाबन्धन (राखी)	24 अग.	मं.
श्रावणी पूर्णिमा	24 अग.	मं.
शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म	24 अग.	मं.
बहुला चतुर्थी, संकष्ट चतुर्थी	28 अग.	श.
सितंबर (सन् 2010 ई.)		
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त=गृहस्थियों के लिए)	1 सितं.	बु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव=संन्यासियों के लिए)	2 सितं.	गु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	2 सितं.	गु.
श्रीगुग्गा नवमी	3 सितं.	शु.
पिठोरी अमावस	8 सितं.	बु.
कुशोत्पाटिनी अमावस	8 सितं.	बु.
साम उपाकर्म	10 सितं.	शु.
हरितालिका तृतीया	10 सितं.	शु.
गौरी तृतीया	10 सितं.	शु.
कलंक चतुर्थी	11 सितं.	श.
सिद्धिविनायक व्रत	11 सितं.	श.
हरितालिका चतुर्थी	11 सितं.	श.
ऋषि पंचमी	12 सितं.	र.
सूर्य षष्ठी व्रत	13 सितं.	चं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	15 सितं.	बु.
श्रीराधाष्टमी	15 सितं.	बु.
श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)	16 सितं.	गु.
श्रीवामन जयन्ती	19 सितं.	र.
अनन्त चतुर्दशी	22 सितं.	बु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	22 सितं.	बु.
पूर्णिमा श्राद्ध	22 सितं.	बु.
महालय श्राद्ध, श्राद्ध प्रारम्भ	24 सितं.	शु.
चन्द्रषष्ठी व्रत	29 सितं.	बु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	30 सितं.	गु.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

अक्तूबर (सन् 2010 ई.)		
महालय श्राद्ध समाप्त	7 अक्तू.	गु.
गजच्छाया पर्व	7 अक्तू.	गु.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	8 अक्तू.	शु.
उपांगललिता व्रत	11 अक्तू.	चं.
सरस्वती आवाहन	13 अक्तू.	बु.
सरस्वती पूजन	14 अक्तू.	गु.
सरस्वती बलिदान	15 अक्तू.	शु.
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	15 अक्तू.	शु.
महानवमी (पूजा,उपवास एवं बलिदान के लिए)	16 अक्तू.	श.
सरस्वती विसर्जन	16 अक्तू.	श.
नवरात्र समाप्त	16 अक्तू.	श.
विजयादशमी (दशहरा)	17 अक्तू.	र.
भरत मिलाप	18 अक्तू.	चं.
कोजागर व्रत	22 अक्तू.	शु.
शरत्पूर्णिमा	22 अक्तू.	शु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	22 अक्तू.	शु.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	22 अक्तू.	शु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	26 अक्तू.	मं.
अहोई अष्टमी (पं.)	30 अक्तू.	श.
नवम्बर (सन् 2010 ई.)		
गोवत्स द्वादशी	3 नवं.	बु.
धन त्रयोदशी	4 नवं.	गु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	4 नवं.	गु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	5 नवं.	शु.
दीपावली	5 नवं.	शु.
अन्नकूट, गोवर्धनपूजा	6 नवं.	श.
बलिपूजा	6 नवं.	श.
यमद्वितीया, भाई दूज	7 नवं.	र.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	8 नवं.	चं.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	11 नवं.	गु.
गोपाष्टमी	14 नवं.	र.
अक्षय नवमी	15 नवं.	चं.
कूष्माण्ड नवमी	15 नवं.	चं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	17 नवं.	बु.
हरिप्रबोधोत्सव	17 नवं.	बु.
तुलसी विवाह	18 नवं.	गु.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	18 नवं.	गु.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	19 नवं.	शु.
कार्तिक पूर्णिमा	21 नवं.	र.
श्री गुरुनानक जयन्ती	21 नवं.	र.
कार्तिकस्नान समाप्त	21 नवं.	र.
भीष्म पंचक समाप्त	21 नवं.	र.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	28 नवं.	र.
दिसंबर (सन् 2010 ई.)		
स्कन्द–गुह षष्ठी	11 दिसं.	श.
चम्पा षष्ठी	11 दिसं.	श.
मित्र सप्तमी	12 दिसं.	र.
श्रीगीता जयन्ती	17 दिसं.	शु.
श्रीदत्त जयन्ती	20 दिसं.	चं.
जनवरी (सन् 2011 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	श.
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दिखाई दे)	4 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	गु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	शु.
माघस्नान प्रारम्भ	19 जन.	बु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	22 जन.	श.
फरवरी (सन् 2011 ई.)		
मौनी अमावस	2 फर.	बु.
महोदय योग	3 फर.	गु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	6 फर.	र.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	6 फर.	र.
श्रीपंचमी	8 फर.	मं.
वसन्तपंचमी	8 फर.	मं.
सरस्वती पूजा	8 फर.	मं.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली)	10 फर.	गु.
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	10 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	11 फर.	शु.
भीष्म द्वादशी	15 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	18 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	18 फर.	शु
मार्च (सन् 2011 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि	2 मार्च	बु.
होलाष्टक प्रारम्भ	13 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	16 मार्च	बु.
होलिका दहन (प्रदोष में)	19 मार्च	श.
होलाष्टक समाप्त	19 मार्च	श.
वसन्तोत्सव	20 मार्च	र
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
अप्रैल (सन् 2011 ई.)		
वारुणीपर्व	1 अप्रैल	शु.
चान्द्र–संवत् 2067 वि. पूर्ण	3 अप्रैल	र.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2068) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2011 ई.)	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	4 अप्रैल
श्रीदुर्गाष्टमी	11 अप्रैल
श्री रामनवमी व्रत	12 अप्रैल
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रैल
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	16 अप्रैल
श्री परशुराम जयन्ती	5 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	17 मई
श्री गंगा दशहरा	11 जून
गुरु पूर्णिमा	15 जुला.
रक्षाबन्धन	13 अग.
संकष्ट चतुर्थी	17 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	21 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	22 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	12 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	28 सितं.
श्री दुर्गाष्टमी	4 अक्तू.
दशहरा (विजया-दशमी)	6 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	11 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	11 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	15 अक्तू.
दीपावली	26 अक्तू.
भाई दूज	28 अक्तू.
श्री गुरु नानक जयन्ती	10 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	18 नवं.
(सन् 2012 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	28 जन.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	7 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	20 फर.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)–(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2010 ई.)

माघ कृष्ण	10 जन.
माघ शुक्ल	26 जन.
फाल्गुन कृष्ण	9 फर.
फाल्गुन शुक्ल	25 फर.
चैत्र कृष्ण	11 मार्च
चैत्र शुक्ल	26 मार्च
प्र. वैशाख कृष्ण	10 अप्रै.
प्र.(अ.)वैशाख शुक्ल (स्मा.)	24 अप्रै.
द्वि.(अ.)वैशाख कृष्ण (स्मा.)	9 मई
द्वि(शुद्ध) वैशाख शुक्ल	24 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	8 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	22 जून
आषाढ़ कृष्ण	8 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	21 जुला.
श्रावण कृष्ण	6 अग.
श्रावण शुक्ल	20 अग.
भाद्रपद कृष्ण (स्मा.)	4 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (स्मा.)	18 सितं.
आश्विन कृष्ण	4 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	18 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	2 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	17 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (स्मा.)	1 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	17 दिसं.
पौष कृष्ण	31 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष शुक्ल	16 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	16 मार्च
चैत्र कृष्ण	30 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2010 ई.)

माघ कृष्ण	1 जन.
माघ शुक्ल	16 जन.
फाल्गुन कृष्ण	31 जन.
फाल्गुन शुक्ल	15 फर.
चैत्र कृष्ण	1 मार्च
चैत्र शुक्ल	16 मार्च
प्र. वैशाख कृष्ण	31 मार्च
प्र.(अधिक) वैशाख शुक्ल	15 अप्रैल
द्वि.(अधिक) वैशाख कृष्ण	29 अप्रैल
द्वि(शुद्ध) वैशाख शुक्ल	15 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	28 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	13 जून
आषाढ़ कृष्ण	27 जून
आषाढ़ शुक्ल	12 जुला.
श्रावण कृष्ण	27 जुला.
श्रावण शुक्ल	11 अग.
भाद्रपद कृष्ण	25 अग.
भाद्रपद शुक्ल	9 सितं.
आश्विन कृष्ण	24 सितं.
आश्विन शुक्ल	8 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	24 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	7 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	22 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	6 दिसं.
पौष कृष्ण	22 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष शुक्ल	5 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	4 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल	5 मार्च
चैत्र कृष्ण	20 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2010 ई.)

माघ	29 जन.
फाल्गुन	28 फर.
चैत्र	29 मार्च
प्र. वैशाख	27 अप्रै.
द्वि. वैशाख	27 मई
ज्येष्ठ	25 जून
आषाढ़	25 जुला.
श्रावण	24 अग.
भाद्रपद	22 सितं.
आश्विन	22 अक्तू.
कार्त्तिक	21 नवं.
मार्गशीर्ष	20 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष	19 जन.
माघ	17 फर.
फाल्गुन	19 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2010 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	18 मार्च
श्रीरामनवमी	24 मार्च
श्रीपरशुराम जयन्ती	16 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	26 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	27 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	27 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	26 जुला.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	1 सितं.
श्रीवराह जयन्ती	10 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	19 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं ।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2010 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	3 जन.
फाल्गुन	2 फर.
चैत्र	3 मार्च
प्र. वैशाख	2 अप्रै.
द्वि. वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ	31 मई
आषाढ़	30 जून
श्रावण	29 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	28 अग.
आश्विन	27 सितं.
कार्त्तिक	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष	25 नवं.
पौष	24 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	22 जन.
फाल्गुन	21 फर.
चैत्र	22 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2010 ई.)

चैत्र	19 मार्च
प्र. वैशाख	18 अप्रै.
द्वि. वैशाख	17 मई
ज्येष्ठ	15 जून
आषाढ़	15 जुला.
श्रावण	13 अग.
भाद्रपद	11 सितं.
आश्विन	11 अक्तू.
कार्त्तिक	9 नवं.
मार्गशीर्ष	9 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन	8 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2010 ई.)

माघ कृष्ण (भौम)	12 जन.
माघ शुक्ल	28 जन.
फाल्गुन कृष्ण	11 फर.
फाल्गुन शुक्ल	26 फर.
चैत्र कृष्ण (शनि)	13 मार्च
चैत्र शुक्ल (शनि)	27 मार्च
प्र. वैशाख कृष्ण	11 अप्रैल
प्र.(अ.)वैशाख शुक्ल(सोम)	26 अप्रैल
द्वि.(अ.)वैशाख कृष्ण (भौम)	11 मई
द्वि(शुद्ध) वैशाख शुक्ल(भौम)	25 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	10 जून
ज्येष्ठं शुक्ल	23 जून
आषाढ़ कृष्ण	9 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	23 जुला.
श्रावण कृष्ण (शनि)	7 अग.
श्रावण शुक्ल (शनि)	21 अग.
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	6 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (सोम)	20 सितं.
आश्विन कृष्ण (भौम)	5 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	20 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	3 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	19 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	3 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (शनि)	18 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष कृष्ण (शनि)	1 जन.
पौष शुक्ल (सोम)	17 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	31 जन.
माघ शुक्ल	16 फर.
फाल्गुन कृष्ण	2 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	17 मार्च
चैत्र कृष्ण	31 मार्च

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

अक्तूबर (सन् 2010 ई.)		
महालय श्राद्ध समाप्त	7 अक्तू.	गु.
गजच्छाया पर्व	7 अक्तू.	गु.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	8 अक्तू.	शु.
उपांगललिता व्रत	11 अक्तू.	चं.
सरस्वती आवाहन	13 अक्तू.	बु.
सरस्वती पूजन	14 अक्तू.	गु.
सरस्वती बलिदान	15 अक्तू.	शु.
दुर्गाष्टमी, महाष्टमी	15 अक्तू.	शु.
महानवमी (पूजा,उपवास एवं बलिदान के लिए)	16 अक्तू.	श.
सरस्वती विसर्जन	16 अक्तू.	श.
नवरात्र समाप्त	16 अक्तू.	श.
विजयादशमी (दशहरा)	17 अक्तू.	र.
भरत मिलाप	18 अक्तू.	चं.
कोजागर व्रत	22 अक्तू.	शु.
शरत्पूर्णिमा	22 अक्तू.	शु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	22 अक्तू.	शु.
कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ	22 अक्तू.	शु.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	26 अक्तू.	मं.
अहोई अष्टमी (पं.)	30 अक्तू.	श.
नवम्बर (सन् 2010 ई.)		
गोवत्स द्वादशी	3 नवं.	बु.
धन त्रयोदशी	4 नवं.	गु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	4 नवं.	गु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	5 नवं.	शु.
दीपावली	5 नवं.	शु.
अन्नकूट, गोवर्धनपूजा	6 नवं.	श.
बलिपूजा	6 नवं.	श.
यमद्वितीया, भाई दूज	7 नवं.	र.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	8 नवं.	चं.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	11 नवं.	गु.
गोपाष्टमी	14 नवं.	र.
अक्षय नवमी	15 नवं.	चं.
कूष्माण्ड नवमी	15 नवं.	चं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	17 नवं.	बु.
हरिप्रबोधोत्सव	17 नवं.	बु.
तुलसी विवाह	18 नवं.	गु.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	18 नवं.	गु.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	19 नवं.	शु.
कार्त्तिक पूर्णिमा	21 नवं.	र.
श्री गुरुनानक जयन्ती	21 नवं.	र.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	21 नवं.	र.
भीष्म पंचक समाप्त	21 नवं.	र.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	28 नवं.	र.
दिसंबर (सन् 2010 ई.)		
स्कन्द–गुह षष्ठी	11 दिसं.	श.
चम्पा षष्ठी	11 दिसं.	श.
मित्र सप्तमी	12 दिसं.	र.
श्रीगीता जयन्ती	17 दिसं.	शु.
श्रीदत्त जयन्ती	20 दिसं.	चं.
जनवरी (सन् 2011 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	श.
खण्डग्रास सूर्यगहण (भारत में दिखाई दे)	4 जन.	मं.
लोहड़ी (पं.)	13 जन.	गु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	शु.
माघस्नान प्रारम्भ	19 जन.	बु.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	22 जन.	श.
फरवरी (सन् 2011 ई.)		
मौनी अमावस	2 फर.	बु.
महोदय योग	3 फर.	गु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	6 फर.	र.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	6 फर.	र.
श्रीपंचमी	8 फर.	मं.
वसन्तपंचमी	8 फर.	मं.
सरस्वती पूजा	8 फर.	मं.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली)	10 फर.	गु.
आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	10 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	11 फर.	शु.
भीष्म द्वादशी	15 फर.	मं.
माघस्नान समाप्त	18 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	18 फर.	शु.
मार्च (सन् 2011 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि	2 मार्च	बु.
होलाष्टक प्रारम्भ	13 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	16 मार्च	बु.
होलिका दहन (प्रदोष में)	19 मार्च	श.
होलाष्टक समाप्त	19 मार्च	श.
वसन्तोत्सव	20 मार्च	र
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
अप्रैल (सन् 2011 ई.)		
वारुणीपर्व	1 अप्रैल	शु.
चान्द्र–संवत् 2067 वि. पूर्ण	3 अप्रैल	र.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2068) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2011 ई.)	
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	4 अप्रैल
श्रीदुर्गाष्टमी	11 अप्रैल
श्री रामनवमी व्रत	12 अप्रैल
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	14 अप्रैल
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	16 अप्रैल
श्री परशुराम जयन्ती	5 मई
श्री बुद्ध जयन्ती	17 मई
श्री गंगा दशहरा	11 जून
गुरु पूर्णिमा	15 जुला.
रक्षाबन्धन	13 अग.
संकष्ट चतुर्थी	17 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	21 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	22 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	12 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	28 सितं.
श्री दुर्गाष्टमी	4 अक्तू.
दशहरा (विजया-दशमी)	6 अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	11 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	11 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	15 अक्तू.
दीपावली	26 अक्तू.
भाई दूज	28 अक्तू.
श्री गुरु नानक जयन्ती	10 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	18 नवं.
(सन् 2012 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	28 जन.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	7 फर.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	20 फर.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)–(प्रो. प्रियव्रत शर्मा)

एकादशी व्रत

(सन् 2010 ई.)	
माघ कृष्ण	10 जन.
माघ शुक्ल	26 जन.
फाल्गुन कृष्ण	9 फर.
फाल्गुन शुक्ल	25 फर.
चैत्र कृष्ण	11 मार्च
चैत्र शुक्ल	26 मार्च
प्र. वैशाख कृष्ण	10 अप्रै.
प्र.(अ.)वैशाख शुक्ल (स्मा.)	24 अप्रै.
द्वि.(अ.)वैशाख कृष्ण (स्मा.)	9 मई
द्वि(शुद्ध) वैशाख शुक्ल	24 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	8 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	22 जून
आषाढ़ कृष्ण	8 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	21 जुला.
श्रावण कृष्ण	6 अग.
श्रावण शुक्ल	20 अग.
भाद्रपद कृष्ण (स्मा.)	4 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (स्मा.)	18 सितं.
आश्विन कृष्ण	4 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	18 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	2 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	17 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (स्मा.)	1 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	17 दिसं.
पौष कृष्ण	31 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष शुक्ल	16 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	14 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	16 मार्च
चैत्र कृष्ण	30 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2010 ई.)	
माघ कृष्ण	1 जन.
माघ शुक्ल	16 जन.
फाल्गुन कृष्ण	31 जन.
फाल्गुन शुक्ल	15 फर.
चैत्र कृष्ण	1 मार्च
चैत्र शुक्ल	16 मार्च
प्र. वैशाख कृष्ण	31 मार्च
प्र.(अधिक) वैशाख शुक्ल	15 अप्रैल
द्वि.(अधिक) वैशाख कृष्ण	29 अप्रैल
द्वि(शुद्ध) वैशाख शुक्ल	15 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	28 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	13 जून
आषाढ़ कृष्ण	27 जून
आषाढ़ शुक्ल	12 जुला.
श्रावण कृष्ण	27 जुला.
श्रावण शुक्ल	11 अग.
भाद्रपद कृष्ण	25 अग.
भाद्रपद शुक्ल	9 सितं.
आश्विन कृष्ण	24 सितं.
आश्विन शुक्ल	8 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	24 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	7 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	22 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	6 दिसं.
पौष कृष्ण	22 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष शुक्ल	5 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	4 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल	5 मार्च
चैत्र कृष्ण	20 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2010 ई.)	
माघ	29 जन.
फाल्गुन	28 फर.
चैत्र	29 मार्च
प्र. वैशाख	27 अप्रै.
द्वि. वैशाख	27 मई
ज्येष्ठ	25 जून
आषाढ़	25 जुला.
श्रावण	24 अग.
भाद्रपद	22 सितं.
आश्विन	22 अक्तू.
कार्त्तिक	21 नवं.
मार्गशीर्ष	20 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष	19 जन.
माघ	17 फर.
फाल्गुन	19 मार्च

दशावतार जयन्तियां

(सन् 2010 ई.)	
श्रीमत्स्य जयन्ती	18 मार्च
श्रीरामनवमी	24 मार्च
श्रीपरशुराम जयन्ती	16 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	26 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	27 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	27 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	26 जुला.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	1 सितं.
श्रीवराह जयन्ती	10 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	19 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं ।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2010 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	3 जन.
फाल्गुन	2 फर.
चैत्र	3 मार्च
प्र. वैशाख	2 अप्रै.
द्वि. वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ	31 मई
आषाढ़	30 जून
श्रावण	29 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	28 अग.
आश्विन	27 सितं.
कार्त्तिक	26 अक्तू.
मार्गशीर्ष	25 नवं.
पौष	24 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	22 जन.
फाल्गुन	21 फर.
चैत्र	22 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(2010 ई.)	
चैत्र	19 मार्च
प्र. वैशाख	18 अप्रै.
द्वि. वैशाख	17 मई
ज्येष्ठ	15 जून
आषाढ़	15 जुला.
श्रावण	13 अग.
भाद्रपद	11 सितं.
आश्विन	11 अक्तू.
कार्त्तिक	9 नवं.
मार्गशीर्ष	9 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन	8 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2010 ई.)	
माघ कृष्ण (भौम)	12 जन.
माघ शुक्ल	28 जन.
फाल्गुन कृष्ण	11 फर.
फाल्गुन शुक्ल	26 फर.
चैत्र कृष्ण (शनि)	13 मार्च
चैत्र शुक्ल (शनि)	27 मार्च
प्र. वैशाख कृष्ण	11 अप्रैल
प्र.(अ.)वैशाख शुक्ल(सोम)	26 अप्रैल
द्वि.(अ.)वैशाख कृष्ण (भौम)	11 मई
द्वि(शुद्ध) वैशाख शुक्ल(भौम)	25 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	10 जून
ज्येष्ठं शुक्ल	23 जून
आषाढ़ कृष्ण	9 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	23 जुला.
श्रावण कृष्ण (शनि)	7 अग.
श्रावण शुक्ल (शनि)	21 अग.
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	6 सितं.
भाद्रपद शुक्ल (सोम)	20 सितं.
आश्विन कृष्ण (भौम)	5 अक्तू.
आश्विन शुक्ल	20 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	3 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	19 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	3 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (शनि)	18 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष कृष्ण (शनि)	1 जन.
पौष शुक्ल (सोम)	17 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	31 जन.
माघ शुक्ल	16 फर.
फाल्गुन कृष्ण	2 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	17 मार्च
चैत्र कृष्ण	31 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत
(सन् 2010 ई.)

माघ	13 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
प्र. वैशाख	12 अप्रै.
द्वि. वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	10 जून
आषाढ़	10 जुला.
श्रावण	8 अग.
भाद्रपद	6 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्तिक	4 नवं.
मार्गशीर्ष	4 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	2 मार्च
चैत्र	1 अप्रैल

मासिक कालाष्टमी व्रत
(2010 ई.)

माघ	7 जन.
फाल्गुन	5 फर.
चैत्र	7 मार्च
प्र. वैशाख	6 अप्रै.
द्वि. वैशाख	6 मई
ज्येष्ठ	4 जून
आषाढ़	4 जुला.
श्रावण	3 अग.
भाद्रपद	1 सितं.
आश्विन	1 अक्तू.
कार्तिक	30 अक्तू.
मार्गशीर्ष	28 नवं.
पौष	28 दिसं.
माघ (सन् 2011 ई.)	26 जन.
फाल्गुन	24 फर.
चैत्र	26 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2010 ई.)
(स्नान–दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

माघ	30 जन.
फाल्गुन	28 फर.
चैत्र	30 मार्च
प्र. वैशाख	28 अप्रै.
द्वि. वैशाख	27 मई
ज्येष्ठ	26 जून
आषाढ़	25 जुला.
श्रावण	24 अग.
भाद्रपद	23 सितं.
आश्विन	22 अक्तू.
कार्तिक	21 नवं.
मार्गशीर्ष	21 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
पौष	19 जन.
माघ	18 फर.
फाल्गुन	19 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी
(श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व) (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

माघ (2010 ई.)	12 जन.
फाल्गुन	11 फर.
चैत्र	13 मार्च
प्र. वैशाख	12 अप्रै.
द्वि. वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	10 जून
आषाढ़	10 जुला.
श्रावण	8 अग.
भाद्रपद	6 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्तिक	4 नवं.
मार्गशीर्ष	3 दिसं.
पौष (सन् 2011 ई.)	2 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	1 अप्रैल

संक्रान्तियां
(सन् 2010 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	16 दिसं.
(सन् 2011ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं
(स्नान–दानार्थ)(2010 ई.)

माघ	15 जन.
फाल्गुन (शनैश्चरी)	13 फर.
चैत्र (सोम)	15 मार्च
प्र. वैशाख	14 अप्रै.
द्वि. वैशाख	14 मई
ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	12 जून
आषाढ़	11 जुला.
श्रावण (भौम)	10 अग.
भाद्रपद	8 सितं.
आश्विन	7 अक्तू.
कार्तिक (शनैश्चरी)	6 नवं.
मार्गशीर्ष	5 दिसं.
पौष(सन् 2011 ई.)(भौम)	4 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	4 मार्च
चैत्र	3 अप्रै.

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2010 ई.)

पूर्णिमा	22 सितं.
प्रतिपदा	24 सितं.
द्वितीया	25 सितं.
तृतीया	26 सितं.
चतुर्थी/भरणी श्राद्ध	27 सितं.
पंचमी	28 सितं.
षष्ठी	29 सितं.
सप्तमी	30 सितं.
अष्टमी	1 अक्तू.
☆नवमी	2 अक्तू.
दशमी	3 अक्तू.
एकादशी	4 अक्तू.
+द्वादशी	4 अक्तू.
त्रयोदशी	5 अक्तू.
✿ चतुर्दशी	6 अक्तू.
अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	7 अक्तू.

☆ सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्यु-तिथि कोई भी हो।

+ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्यु-तिथि कोई भी क्यों न हो।

✿ शस्त्र–विष आदि से मृतों (अर्थात् अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्यु किसी भी तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

जैन व्रतपर्व
(सन् 2010 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	12 जन.
मर्यादा महोत्सव	22 जन.
आचार्य भिक्षुअभिनिष्क्रमण	24 मार्च
श्रीजैन महावीर जयन्ती	28 मार्च
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	23 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	17 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	25 जुला.
चातुर्मास्य व्रत–नियम आदि प्रारम्भ	25 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	5 सितं.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	6 सितं.
संवत्सरी महापर्व	13 सितं.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	13 सितं.
श्रीतुलसी पट्टारोहण	21 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	21 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	6 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	7 नवं.
ज्ञानपंचमी	10 नवं.
चातुर्मास्य समाप्त	18 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	1 दिसं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	25 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	30 दिसं.
(सन् 2011 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	31 जन.
मर्यादा महोत्सव	10 फर.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2010–11 ई.)

(सन् 2010 ई.)

स्वामी विवेकानन्द	6 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	6 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	17 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	30 जन.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	8 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	16 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 फर
श्रीवल्लभाचार्य	10 अप्रै.
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीछत्रपति शिवाजी	15 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	18 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	19 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	15 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	16 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
महाराज अग्रसेन जी	8 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	17 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
श्रीवीर वैरागी	19 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाई बाबा	23 नवं.

(सन् 2011 ई.)

श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
स्वामी विवेकानन्द	25 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	25 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	5 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	18 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	27 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	6 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	19 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2010 ई.)

चेहल्म	5 फर.
आखिरी चहार शम्बा	10 फर.
शहादत–ए–इमाम हसन	13 फर.
ईद–ए–मिलाद	27 फर.
ईद–ए–मौलाद	4 मार्च
फतिहायज़दहुम	28 मार्च
जन्म श्री हज़रत अली	26 जून
शब–ए–मिराज	10 जुला.
शब–ए–बरात	28 जुला.
रमज़ान का पहला दिन	12 अग.
शहादत–ए–हज़रत अली	1 सितं.
जमतुल विदा	3 सितं
शब–ए–कद्र	7 सितं.
ईद–उल–फित्र	11 सितं.
इदुलज्जुहा	17 नवं.
मुहर्रम (ताज़िया)	17 दिसं.

(सन् 2011 ई.)

चेहल्म	25 जन.
आखिरी चहार शम्बा	2 फर.
शहादत–ए–इमाम हसन	2 फर.
ईद–ए–मिलाद	16 फर.
ईद–ए–मौलाद	21 फर.
फतिहायज़दहुम	17 मार्च

क्रिश्चियन त्योहार

(सन् 2010 ई.)

नया साल प्रारम्भ	1 जन.
गुड फ्राई डे	2 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	4 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.

(सन् 2011 ई.)

नया साल प्रारम्भ	1 जन.

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्र-दर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

'अभिजित् प्रकाशन'

Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula(HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विस्तृत विज्ञापन अन्तिम पृष्ठों पर देखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा की एक और अद्भुत कृति

ग्रहोदयास्तनिर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीख तथा मंगल आदि के लोप–दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पाएंगे। प्राचीन एवम् नवीन ज्योतिर्गणित ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप–दर्शन का दिन जानने की जटिल गणित प्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनक रूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणितप्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0° से 62° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 45 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप–दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप–दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप– पूर्वदर्शन या पूर्वलोप–पश्चिमदर्शन किस तारीख को होगा, यह पुस्तक में दी गई विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप विद्युदगति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझें, यह बिल्कुल सच है। लेखक की प्रतिज्ञा है– ग्रहों के उदयास्त, लोप–दर्शन पर उनका यह प्रकाशन अपनी ही तरह का है।

पुस्तक अप्रैल, 2010 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी, प्रतीक्षा कीजिए। मूल्य Rs. 250/– + डाकव्यय Rs. 50/–

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, 'अभिजित् प्रकाशन' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109, Phone: 0172-2565 303

सिक्ख पर्व (सं. 2067 वि.) (सन् 2010–11 ई.)

सिक्ख पर्व

नानकशाही कैलेण्डर अनुसार

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख			नानकशाही कैलेण्डर अनुसार		
	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए
श्री गुरु नानकदेव जी	21 नवंबर	प्रकाशदिवस से	3 अक्तूबर	21 नवम्बर	अवतार दिन से	22 सितम्बर
श्री गुरु अंगददेव जी	14 मई	28 सितं.	19 मार्च, 2010	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	26 मई	16 मार्च, 2010	23 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर
श्री गुरु रामदास जी	25 अक्तूबर	21 सितं.	10 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	5 अप्रैल	10 सितं.	16 जून	2 मई	16 सितम्बर	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	27 जून	5 जून	20 मार्च, 2010	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	16 फर., 2011	1 अप्रैल, 2011	31 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
श्री गुरु हरकिशन जी	4 अगस्त	31 अक्तूबर	29 मार्च, 2010	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	3 अप्रैल, 2010	29 मार्च, 2010	10 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	11 जन, 2011	8 दिसंबर	10 नवं.	5 जनवरी	24 नवम्बर	21 अक्तूबर
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	14 अप्रैल, 2010 ई.		1 वैशाख / 14 अप्रैल, 2010 ई.		
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	9 सितंबर., 2010 ई.		17 भाद्रपद / 1 सितंबर, 2010 ई.		
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	7 नवम्बर, 2010 ई.		6 कार्त्तिक / 20 अक्तूबर, 2010 ई.		

संक्रान्ति	
महीना	अंग्रेज़ी ता.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	14 अप्रै.
ज्येष्ठ	15 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	15 सितं.
कार्तिक	15 अक्तू.
मार्गशीर्ष	14 नवं.
पौष	14 दिसं.
माघ	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

इंग्लिश नववर्ष (2010 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	गुड फ्राई डे	2 अप्रै.	इदुल–फित्र	11 सितं.	(सन् 2011 ई.)	
अ. दि. श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.	वैशाखी (पंजाब)	14 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2011ई.) प्रारम्भ	1 जन.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	15 अक्तू.	अ. दि. श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन.
पोंगल	14 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	27 मई	दशहरा	17 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	26 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	22 अक्तू.	पोंगल	15 जन.
जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	30 जन.	रथयात्रा (पुरी)	13 जुला.	दीपावली	5 नवं.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	12 फर.	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	भाई दूज	7 नवं.	ईद–ए–मिलाद	16 फर.
ईद–ए–मिलाद	27 फर.	ओणम (केरल)	23 अग.	इदुलज्जुहा	17 नवं.	जन्मदिन श्री गुरु रविदास जी	18 फर.
गुड़ी पड़वा	16 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	24 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	21 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	2 मार्च
श्रीराम नवमी	24 मार्च	श्रीगणेश चतुर्थी	28 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.		
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	28 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	2 सितं.	मुहर्रम (ताज़िया)	17 दिसं.		
		जमतुलविदा	3 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2010 ई.)	ता.
जनवरी 2010 ई.	
लोहड़ी दांऊ(मोहाली)/बिंदरख(रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
वसन्त पंचमी	20 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ज.दि.गु. हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	28 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी,(मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2010 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	12 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	12 फर.
नगर कीर्तन होला महल्ला, चमकौर साहिब	24 फर.
मार्च 2010 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	1 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	2 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	4 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	5 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	14 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
माईसर खाना (पं.)	21 मार्च
नरीसैंमरी, मथुरा (उ.प्र.)	23 मार्च
श्री मनसादेवी (हरि.)	23 मार्च
बहुफोर्ट (जम्मू–काश्मीर)	23 मार्च
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर)	23 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी (श्रीहजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	28 मार्च
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	29 मार्च
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	29 मार्च
अप्रैल 2010 ई.	
कुम्भ महापर्व हरिद्वार, कुम्भपर्व का प्रमुख स्नान दिन, प्रमुख शाहीस्नान	14 अप्रै.
पिंजौर (हरि.)	14 अप्रै.
कशाधा, नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	16 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	29 अप्रै.
मई 2010 ई.	
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ज. दि. सं.बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	21 मई
जून 2010 ई.	
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन,	15 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	19 जून
श्रीगंगा दशहरा	21 जून
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	21 जून
नगाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	22 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	22 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	26 जून
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जुलाई 2010 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
जयन्ती सद्‌गुरु स्वामी तेऊँराम जी सप्त सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	17 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	19 जुला.
मेला पीरभीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	24 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली)	26 जुला.
मुड़िया पूनौ, (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	26 जुला.
अगस्त 2010 ई.	
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी, (झाड़ साहिब वाले) चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला,	5 अग.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	14 अग.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	17 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	17 अग.
ब. सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	24 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
सितंबर 2010 ई.	
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	2 सितं.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	6 सितं.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	10 सितं.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जन., सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2010 ई.)	ता.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी) हि.प्र. प्रारम्भ	11 सितं.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	12 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	12 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	13 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	15 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	19 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	22 सितं.
छपार (पं.)	22 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	23 सितं.
अक्तूबर 2010 ई.	
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	6 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	15 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	15 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	15 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	17 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	21 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	21 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	21 अक्तू.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	23 अक्तू.
नवंबर 2010 ई.	
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	1 नवं.
दीपावली (अमृतसर)	5 नवं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2010 ई.)	ता.
बाल मेला	14 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	17 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	17 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	19 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डेलालोवाल (गुरदासपुर)	20 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर, पं.)	21 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	21 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	21 नवं.
दिसम्बर 2010 ई.	
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	4 दिसं.
ब. बा. विसाखा सिंह, ददेहर सा. (तरनतारन) पं.	5 दिसं.
ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	16 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर,फतेहगढ़ सा.	24 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशंन सिंह जी, (राड़ा सा. वाले) मसीतां,(सिरसा–हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला, फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरबल्लभ (जालन्धर) प्रा.	28 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गुरुद्वारा कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.)प्रा.	30 दिसं.
जनवरी सन् 2011 ई.	
लोहड़ी दांऊ (मोहाली) (पं.)	14 जन.

नाम मेला/पर्व (सन् 2011 ई.)	ता.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2011 ई.	
वसन्त पंचमी	8 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड–पं.)	10 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	16 फर.
मार्च 2011 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	2 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	2 मार्च
नगर कीर्तन होला महल्ला, चमकौर साहिब	15 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	20 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	22 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	24 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	24 मार्च
अप्रैल 2011 ई.	
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	2 अप्रै.

व्रत–पर्व विवेक

(व्रत–पर्वों की तिथियों के निर्णायक नियमों पर एक प्रामाणिक पुस्तक)

लेखक : प्रो. प्रियव्रत शर्मा,

इस पुस्तक में नवरात्र, श्रीरामनवमी, रक्षाबन्धन, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, प्रदोषव्रत, एकादशी व्रत आदि सभी हिन्दु व्रत–पर्वो की तिथियों (तारीखों) के निर्णय के नियम ससिद्धान्त अत्यन्त सुबोध, सरल शैली/भाषा में दिए गए हैं, जिन्हें पढ़कर कोई भी व्यक्ति इन व्रत–पर्वो की तिथियों का निर्धारण स्वयं सरलता से कर सकता है। विस्तृत विज्ञापन इस पंचांग के अन्त में देखें।

[यदि आप चाहते हैं कि– आपके नगर/ ग्राम में होने वाले मेलों आदि को इस पृष्ठ पर प्रकाशित सूची में प्रविष्ट किया जाए, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख, जिसके अनुसार उसे मनाया जाता हो– पूर्ण विवरणसहित लिख भेजें– धन्यवाद।]

–सम्पादक

श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (भा.स्टैं.टा.) (2067 वि.)–भारत के प्रसिद्ध नगरों के लिए

स्थान	2 अप्रै.'10 घं. मि.	1 मई, '10 घं. मि.	31 मई, '10 घं. नि.	30 जून, '10 घं. मि.	29 जुला' 10 घं. मि.	28 अग., '10 घं. मि.	27 सितं.,'10 घं. मि.	26 अक्तू.,'10 घं. मि.	25 नवं., '10 घं. मि.	24 दिसं., '10 घं. मि.	22 जन., '11 घं. मि.	21 फर., '11 घं. मि.	22 मार्च, '11 घं. मि.
अजमेर	10 26	10 06	10 19	10 03	09 05	08 40	08 35	08 11	09 04	09 02	08 57	09 56	09 49
अमृतसर	10 38	10 19	10 29	10 07	09 05	08 33	08 23	07 58	08 53	08 55	08 55	10 01	09 58
अलवर	10 21	10 01	10 13	09 56	08 57	08 31	08 25	08 01	08 54	08 53	08 49	09 49	09 43
अलीगढ़	10 15	09 56	10 08	09 50	08 51	08 24	08 18	07 54	08 47	08 46	08 42	09 43	09 38
अहमदाबाद	10 27	10 07	10 21	10 08	09 13	08 52	08 50	08 28	09 19	09 15	09 07	10 01	09 52
आगरा	10 14	09 54	10 07	09 50	08 51	08 25	08 20	07 56	08 49	08 47	08 43	09 42	09 36
इलाहाबाद	09 54	09 34	09 48	09 33	08 35	08 11	08 07	07 44	08 36	08 33	08 27	09 24	09 17
उज्जैन	10 14	09 54	10 09	09 56	09 00	08 39	08 38	08 15	09 06	09 02	08 54	09 48	09 39
उदयपुर(रा.)	10 26	10 06	10 20	10 05	09 09	08 46	08 43	08 20	09 12	09 09	09 02	09 58	09 50
ऊना	10 32	10 13	10 23	10 01	08 59	08 27	08 17	07 52	08 47	08 49	08 49	09 55	09 52
कपूरथला	10 35	10 16	10 26	10 04	09 03	08 31	08 21	07 56	08 51	08 53	08 52	09 58	09 56
करनाल	10 24	10 05	10 16	09 56	08 56	08 27	08 18	07 54	08 48	08 49	08 46	09 50	09 46
कांगड़ा	10 33	10 15	10 24	10 01	08 59	08 27	08 16	07 50	08 46	08 48	08 49	09 56	09 53
कानपुर	10 02	09 43	09 56	09 39	08 42	08 16	08 11	07 48	08 40	08 38	08 33	09 32	09 25
कुरुक्षेत्र	10 26	10 07	10 18	09 57	08 57	08 27	08 19	07 54	08 48	08 49	08 47	09 51	09 47
कुल्लू	10 30	10 11	10 21	09 58	08 56	08 24	08 13	07 47	08 43	08 45	08 45	09 52	09 50
कोटा	10 18	09 58	10 12	09 57	09 00	08 36	08 33	08 10	09 02	08 59	08 53	09 49	09 42
कोलकाता	09 20	09 00	09 16	09 04	08 09	07 48	07 46	07 24	08 14	08 10	08 01	08 54	08 45
गुरदासपुर	10 37	10 18	10 28	10 05	09 03	08 30	08 20	07 54	08 50	08 52	08 52	09 59	09 57
ग्वालियर	10 11	09 51	10 05	09 48	08 51	08 26	08 21	07 58	08 50	08 48	08 43	09 41	09 34
चण्डीगढ़	10 27	10 09	10 19	09 58	08 57	08 26	08 17	07 52	08 46	08 48	08 47	09 52	09 48
चम्बा	10 35	10 16	10 26	10 02	09 00	08 27	08 16	07 50	08 46	08 49	08 49	09 57	09 55
चूरु	10 29	10 10	10 22	10 03	09 04	08 36	08 30	08 06	08 59	08 59	08 55	09 56	09 51
चेन्नई	09 35	09 13	09 33	09 29	08 40	08 30	08 37	08 17	09 04	08 53	08 37	09 19	09 04
जम्मू	10 41	10 22	10 31	10 08	09 05	08 32	08 20	07 54	08 50	08 54	08 54	10 02	10 01
जयपुर	10 22	10 03	10 15	09 58	09 00	08 34	08 29	08 05	08 58	08 57	08 52	09 51	09 45
जालन्धर	10 34	10 16	10 26	10 04	09 02	08 31	08 21	07 56	08 51	08 53	08 52	09 58	09 55
जोधपुर	10 32	10 13	10 26	10 09	09 12	08 47	08 42	08 19	09 11	09 09	09 04	10 02	09 56
दरभंगा	09 38	09 19	09 32	09 17	08 19	07 54	07 49	07 25	08 18	08 16	08 10	09 08	09 02
दिल्ली	10 21	10 02	10 13	09 54	08 55	08 27	08 20	07 56	08 49	08 49	08 46	09 48	09 43

श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (भा.स्टैं.टा.) (2067 वि.)–भारत के प्रसिद्ध नगरों के लिए

स्थान	2 अप्रै.'10 घं. मि.	1 मई, '10 घं. मि.	31 मई, '10 घं. मि.	30 जून, '10 घं. मि.	29 जुला'10 घं. मि.	28 अग., '10 घं. मि.	27 सितं.,'10 घं. मि.	26 अक्तू.,'10 घं. मि.	25 नवं., '10 घं. मि.	24 दिसं., '10 घं. मि.	22 जन., '11 घं. मि.	21 फर., '11 घं. मि.	22 मार्च, '11 घं. मि.
देहरादून	10 22	10 03	10 13	09 53	08 52	08 22	08 13	07 48	08 42	08 44	08 42	09 46	09 43
नागपुर	09 56	09 35	09 51	09 40	08 46	08 27	08 27	08 05	08 55	08 50	08 40	09 31	09 21
नाहन	10 25	10 06	10 17	09 56	08 55	08 24,	08 15	07 50	08 45	08 46	08 45	09 49	09 46
पटना	09 49	09 29	09 43	09 27	08 30	08 06	08 02	07 38	08 30	08 28	08 22	09 19	09 12
पटियाला	10 28	10 09	10 20	09 59	08 58	08 28	08 19	07 55	08 49	08 50	08 49	09 53	09 49
पठानकोट	10 36	10 18	10 27	10 04	09 02	08 29	08 18	07 52	08 48	08 51	08 51	09 58	09 56
फगवाड़ा	10 33	10 14	10 24	10 03	09 01	08 30	08 20	07 55	08 50	08 52	08 51	09 57	09 54
फिरोज़पुर	10 37	10 18	10 28	10 07	09 06	08 35	08 25	08 00	08 55	08 57	08 56	10 01	09 58
बंगलोर	09 46	09 24	09 44	09 40	08 52	08 41	08 49	08 28	09 16	09 05	08 49	09 30	09 15
बिलासपुर(हि.प्र.)	10 29	10 11	10 21	09 59	08 57	08 26	08 16	07 50	08 45	08 47	08 47	09 53	09 50
बीकानेर	10 35	10 16	10 28	10 10	09 11	08 44	08 37	08 13	09 07	09 06	09 02	10 03	09 58
बून्दी	10 20	10 00	10 13	09 58	09 01	08 37	08 33	08 10	09 02	08 59	08 53	09 50	09 43
बठिण्डा	10 34	10 15	10 25	10 05	09 04	08 34	08 26	08 01	08 55	08 56	08 55	09 59	09 55
भरतपुर	10 16	09 57	10 09	09 52	08 54	08 27	08 22	07 58	08 51	08 50	08 45	09 45	09 39
मण्डी (हि.प.)	10 30	10 11	10 21	09 58	08 56	08 24	08 14	07 49	08 44	08 46	08 46	09 52	09 50
मथुरा	10 16	09 57	10 09	09 52	08 53	08 26	08 20	07 56	08 50	08 48	08 44	09 44	09 39
मुम्बई	10 17	09 56	10 13	10 04	09 11	08 55	08 13*	08 36	09 25	09 18	09 07	09 55	09 44
रोपड़	10 30	10 11	10 21	09 59	08 58	08 27	08 18	07 53	08 48	08 49	08 48	09 53	09 50
रोहतक	10 24	10 05	10 16	09 57	08 57	08 29	08 22	07 57	08 51	08 51	08 48	09 50	09 46
लखनऊ	10 01	09 41	09 54	09 38	08 39	08 13	08 08	07 44	08 37	08 35	08 31	09 30	09 24
लुधियाना	10 32	10 13	10 23	10 02	09 01	08 30	08 20	07 55	08 50	08 52	08 51	09 56	09 53
वाराणसी	09 49	09 29	09 43	09 28	08 31	08 07	08 03	07 40	08 32	08 29	08 23	09 20	09 12
शिमला	10 27	10 08	10 19	09 57	08 55	08 24	08 15	07 49	08 44	08 46	08 45	09 51	09 48
श्रीनगर (का.)	10 45	10 27	10 35	10 09	09 05	08 30	08 17	07 51	08 47	08 52	08 54	10 04	10 04
संगरूर	10 30	10 11	10 22	10 01	09 01	08 31	08 22	07 57	08 52	08 53	08 51	09 55	09 51
सहारनपुर	10 23	10 04	10 15	09 54	08 54	08 24	08 16	07 51	08 45	08 46	08 44	09 48	09 44
सीकर	10 27	10 07	10 19	10 02	09 03	08 36	08 31	08 07	09 00	08 59	08 55	09 55	09 49
हरिद्वार	10 20	10 01	10 12	09 52	08 51	08 21	08 13	07 48	08 42	08 43	08 41	09 45	09 41
हिसार	10 28	10 09	10 20	10 01	09 01	08 32	08 25	08 00	08 54	08 54	08 52	09 54	09 50
होशियारपुर	10 33	10 15	10 24	10 02	09 00	08 29	08 19	07 53	08 49	08 51	08 50	09 56	09 54

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2010 से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.
3 जन.	1 12	4 जन.	20 23	1 मई	3 23	3 मई	5 36	28 अग.	5 45	30 अग.	10 27	24 दिसं.	12 21	26 दिसं.	9 02
11 जन.	20 18	14 जन.	1 02	10 मई	23 43	13 मई	1 52	6 सितं.	8 37	8 सितं.	2 55	(सन् 2011 ई.)			
21 जन.	21 05	23 जन.	23 50	19 मई	20 44	21 मई	17 54	14 सितं.	13 41	16 सितं.	16 12	2 जन.	1 57	4 जन.	2 46
30 जन.	12 28	1 फर.	6 31	28 मई	12 10	30 मई	14 15	24 सितं.	11 36	26 सितं.	16 07	11 जन.	18 29	13 जन.	23 34
8 फर.	2 05	10 फर.	6 57	7 जून	8 16	9 जून	10 49	3 अक्तू.	17 49	5 अक्तू.	13 19	20 जन.	21 18	22 जन.	16 34
18 फर.	3 01	20 फर.	6 21	16 जून	3 05	17 जून	23 26	11 अक्तू.	22 25	13 अक्तू.	23 40	29 जन.	7 47	31 जन.	9 25
26 फर.	23 45	28 फर.	17 57	24 जून	19 23	26 जून	21 58	21 अक्तू.	18 07	23 अक्तू.	22 11	8 फर.	1 54	10 फर.	7 33
7 मार्च	9 08	9 मार्च	13 20	4 जुला.	16 27	6 जुला.	19 52	31 अक्तू.	0 37	1 नवं.	21 35	17 फर.	8 14	19 फर.	2 46
17 मार्च	8 52	19 मार्च	11 52	13 जुला.	11 36	15 जुला.	6 38	8 नवं.	8 28	10 नवं.	8 42	25 फर.	13 22	27 फर.	14 56
26 मार्च	8 53	28 मार्च	4 19	22 जुला.	1 15	24 जुला.	4 25	18 नवं.	1 46	20 नवं.	5 41	7 मार्च	8 21	9 मार्च	14 08
3 अप्रै.	17 54	5 अप्रै.	20 58	31 जुला.	23 36	3 अग.	3 54	27 नवं.	5 59	29 नवं.	3 32	16 मार्च	18 59	18 मार्च	14 04
13 अप्रै.	15 42	15 अप्रै.	18 06	9 अग.	21 57	11 अग.	16 06	5 दिसं.	18 09	7 दिसं.	18 14	24 मार्च	20 44	26 मार्च	21 06
22 अप्रै.	15 22	24 अप्रै.	12 09	18 अग.	6 52	20 अग.	10 07	15 दिसं.	10 11	17 दिसं.	14 31	3 अप्रै.	14 22	— — —	— — —

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2010 से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2010 ई.	घं. मि.	2011 ई.	घं. मि.	2011 ई.	घं. मि.
17 जन.	23 35	22 जन.	22 48	3 जून	10 55	8 जून	9 53	20 सितं.	13 36	25 सितं.	14 00	7 जन.	20 32	12 जन.	21 14
14 फर.	5 43	19 फर.	4 55	30 जून	18 32	5 जुला.	18 29	17 अक्तू.	20 13	22 अक्तू.	20 20	4 फर.	4 00	9 फर.	4 51
13 मार्च	12 05	18 मार्च	10 33	28 जुला.	1 22	2 अग.	2 00	14 नवं.	3 49	19 नवं.	3 57	3 मार्च	10 18	8 मार्च	11 18
9 अप्रै.	19 09	14 अप्रै.	17 08	24 अग.	7 33	29 अग.	8 16	11 दिसं.	12 11	16 दिसं.	12 36	30 मार्च	16 07	— — —	— — —
7 मई	2 54	12 मई	1 05												

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2010 से 31 मार्च सन् 2011 ई. तक)

2010 ई.	रविवार की तारीखें					2010 ई.	रविवार की तारीखें					2010 ई.	रविवार की तारीखें					2011 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	3	10	17	24	31	मई	2	9	16	23	30	सितंबर	5	12	19	26	—	जनवरी	2	9	16	23	30
फरवरी	7	14	21	28	—	जून	6	13	20	27	—	अक्तूबर	3	10	17	24	31	फरवरी	6	13	20	27	—
मार्च	7	14	21	28	—	जुलाई	4	11	18	25	—	नवंबर	7	14	21	28	—	मार्च	6	13	20	27	—
अप्रैल	4	11	18	25	—	अगस्त	1	8	15	22	29	दिसंबर	5	12	19	26	—						

14 अप्रैल, सन् 2010 ई. को हरिद्वार में 'कुम्भ-महापर्व'

(कुम्भपर्व का माहात्म्य और उसकी स्नान–तिथियां)

लेखक –प्रियव्रत शर्मा,

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए उसे कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक में छिपाया गया। इन चारों स्थलों पर अमृतकलश से अमृत के बिन्दु छलक कर गिरे। इसीलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक–एक बार कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की। यही कारण है, कि– इन दोनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि– दैत्य–देवों की छीना–झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि में गिरीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं।

कुम्भ राशिस्थ बृहस्पति के समय जिस दिन सूर्यदेव मेषराशि में प्रवेश करते हैं, उस दिन हरिद्वार में कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस दिन हरिद्वार में गंगास्नान से मोक्ष की प्राप्ति होती है –

'' कुम्भराशिगते जीवे मेषराशिगते रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति–वर्जनम्।।''

इसवर्ष (सं. 2067 वि. में) 14 अप्रैल, 2010 ई. के दिन भा. स्टैं. टा. अनुसार 6 बजकर 57 मिनट पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। इस समय बृहस्पति कुम्भराशि में होगा। इसलिए इस दिन (14 अप्रैल को) शास्त्रानुसार हरिद्वार में कुम्भ–महापर्व पर गंगास्नान एवं दान, जप से महापुण्य प्राप्त होगा। **मेषसंक्रान्ति का पुण्यकाल 14 अप्रैल, 2010 ई. को हरिद्वार में मध्याह्न(12 बजकर 18 मिनट)** तक रहेगा–" **मध्यरात्रात् परतः संक्रांतौ परदिनस्य पूर्वार्धं पुण्यम्।**"–(*धर्मसिन्धु*) (अर्थात् यदि संक्रान्ति अर्धरात्रि के बाद हो तो उसका पुण्यकाल दूसरे दिन के पूर्वार्ध में रहता है)।क्योंकि संक्रान्ति के पुण्यकाल में ही तीर्थस्थानों, पवित्र नदियों में स्नान एवं दान–जप आदि का विशेष महत्त्व शास्त्रों में स्थान–स्थान पर वर्णित है, अतः हरिद्वार **के कुम्भपर्व पर एकत्रित धार्मिक लोगों को 14 अप्रैल, सन् 2010 ई. को मेष संक्रान्ति के पुण्यकाल में (सूर्योदय से पहले अरुणोदयकाल से लेकर दोपहर के 12 बजकर 18 मिनट तक) हरिद्वार में गंगास्नान करने से चूकना नहीं चाहिए।** शास्त्रीय निर्देश के अनुसार हरिद्वार के इस कुम्भपर्व का वास्तविक योग 14 अप्रैल, सन् 2010 ई. को मेषसंक्रान्ति के पुण्यकाल में ही बनता है। प्रमुख शाही स्नान (जिसमें पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य एवं अखाड़ों के प्रमुख साधु–सन्त, महन्तश्री आदि गंगा में स्नान करते हैं)।14 अप्रैल को ही होगा।

जो लोग किसी कारणवश संक्रान्ति–पुण्यकाल में स्नान न कर सकें, वे उसके बाद भी स्नान कर सकते हैं, क्योंकि संक्रान्ति–पुण्यकाल से रहित काल को भी कुम्भपर्व पर स्नान–दानार्थ समानरूप से माहात्म्य वाला माना गया है।

कुम्भपर्व पर स्नान का माहात्म्य

कुम्भपर्व पर समस्त भारत ही नहीं, विश्व के विभिन्न देशों से असंख्य ब्रह्मनिष्ठ, तपोधन महात्मा लोग हरिद्वार में एकत्र होकर गंगा में स्नान करने के लिए अपने–अपने सम्प्रदाय के महात्माओं के साथ विशिष्ट साज–सज्जा के साथ शोभायात्रा के रूप में निकलते हैं, जिनके दर्शन से धार्मिक लोग अपने जीवन को कृत–कृत्य करते हैं। इस अवसर पर तपःपूत मूर्धन्य महान् आत्माओं का यह अपूर्व सम्मेलन वस्तुतः दर्शनीय होता है। इस महापर्व पर श्रीगंगा जी में स्नान से मोक्ष की प्राप्ति तथा सभी प्रकार की लौकिक कामनाओं की उपलब्धि की शास्त्रों में चर्चा है। शास्त्र कहते हैं– इस पर्व पर गंगास्नान से उपलब्ध होने वाले माहात्म्य का बखान करना तो ब्रह्मा जी के लिए भी संभव नहीं–

" कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगो रविः।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्ति– वर्जनम्।।"
" लोके 'कुम्भ' इति ख्यातः जानीयात् सर्वकामदः।
गंगायां स्नानमाहात्म्यं नालं वक्तुं चतुर्मुखः।।"

एक परम्पराप्राप्त वाक्य में तो कुम्भपर्व पर किए गए गंगास्नानजन्य फल को हज़ारों अश्वमेध एवं सैकड़ों वाजपेय यज्ञों तथा समस्त पृथ्वी की लाख बार की गई प्रदक्षिणा से प्राप्त फल से भी कहीं बढ़कर बतलाया गया है,–

"अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम्।।"

सन् 2010 ई. में हरिद्वार कुम्भ–महापर्व के विशेष स्नानदिन

कुम्भपर्व पर स्नान–दान से पुण्यार्जन करने के इच्छुक असंख्य श्रद्धालु लोग तो

कुम्भ– पर्व के प्रधान स्नान–दिन से दो–अढाई मास पूर्व ही श्रीगंगा के तट पर आ बसते हैं। ऐसे श्रद्धालुओं के लिए पुण्यार्जन–निमित किए जा रहे तीर्थप्रवास के इन दिनों में अनेक विशेष पर्व आते हैं, जिनमें गंगास्नान का परम्परया बहुत विशेष माहात्म्य माना गया है। इन स्नान–दिनों को कुम्भपर्व का ही अङ्ग माना गया है। इस वर्ष हरिद्वार के इस कुम्भ–पर्व का प्रमुख स्नान तो 14 अप्रैल को ही होगा, लेकिन इसके अङ्गभूत अन्य स्नानदिन (जिनमें धार्मिक लोग गंगास्नान करके परमपुण्य प्राप्त कर सकेंगे) इस प्रकार हैं–

(i) माघी अमा (15 जन.)। इस दिन सूर्य ग्रहण भी है, जिससे इस स्नान का माहात्म्य और भी बढ़ जाता है। इस दिन हरिद्वार में ग्रहण के स्पर्श–मोक्षकाल की अवधि में स्नान–दानादि से अभीष्ट फलप्राप्ति की विशेष चर्चा शास्त्रों में की गई है। हरिद्वार में इसदिन सूर्य ग्रहण का प्रारम्भ (स्पर्श)11 घं. 58 मि.30 से. और समाप्ति (मोक्ष)15 घं. 11 मि. 59 से. (भा. स्टैं. टा.) पर है। ग्रहण की इस अवधि में स्नान–दानादि से धर्मनिष्ठ सज्जनों को बिल्कुल चूकना नहीं चाहिए।

(ii) वसन्त पंचमी (20 जनवरी)।
(iii) आरोग्य(रथ)सप्तमी (22 जनवरी)।
(iv) भीष्माष्टमी (23 जनवरी)।
(v) माघी पूर्णिमा (30 जनवरी)।
(vi) श्रीमहाशिवरात्रि व्रतदिन एवं कुम्भ–संक्रान्ति (12 फरवरी)। यह कुम्भपर्व का विशेष स्नानदिन है। इस दिन **प्रथम शाही स्नान** होगा, जिसमें दशनाम सम्प्रदाय के संन्यासी स्नान करते हैं। इस दिन कुम्भ संक्रान्ति भी है। संक्रान्तिदिन होने से इसदिन स्नान–दानादि का विशेष माहात्म्य शास्त्रप्रतिपादित है। संक्रान्ति–पुण्यकाल (जो अगले दिन यानी 13 फरवरी को मध्याह्न तक है) में भी स्नान–दान से धर्मप्रवृत्त लोगों को पुण्यार्जन अवश्य करना चाहिए।
(vii) **शनैश्चरी अमा** (13 फरवरी)।
(viii) मीन–संक्रान्ति (14 मार्च)।
(ix) चैत्री अमावस/सोमवती अमावस (15 मार्च)। यह भी कुम्भपर्व का **विशेष स्नानदिन** है। इस दिन कुम्भपर्व का **द्वितीय शाही स्नान** होगा, जिसमें षड्दर्शन के संन्यासी स्नान करते हैं।
(x) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, नवरात्र एवं नववर्ष प्रारम्भ (16 मार्च)।
(xi) महाविषुवदिन (20 मार्च)।
(xii) श्रीरामनवमी (24 मार्च)।
(xiii) चैत्री पूर्णिमा (30 मार्च)।
(xiv) मेष–संक्रान्ति (14 अप्रैल)। कुम्भपर्व का यह प्रमुख स्नानदिन है, जहां तृतीय(प्रमुख)शाही स्नान होगा। इस स्नान में षड्दर्शन के शंकराचार्यादि सन्त–महात्मा अपने विद्वान् शिष्यों सहित शान–शौकत से भाग लेते हैं। ध्यान रहे– इस दिन अमा भी है, जिससे इस कुम्भपर्व के स्नानादि का माहात्म्य और भी बढ़ जाता है।
(xv) वृषसंक्रान्ति एवं अमावस्या (14 मई)।
(xvi) श्रीपरशुराम जयन्ती एवं अक्षय तृतीया (16 मई)।
(xvii) श्रीशंकराचार्य जयन्ती (18 मई)।
(xviii) श्रीगंगा–जन्म (20 मई)।
(xix) वैशाखी पूर्णिमा (कुम्भपर्व का अन्तिम स्नान) (27 मई)।

इन स्नानदिनों के अतिरिक्त कुम्भपर्व पर हरिद्वार में प्रवास करने वाले धार्मिक जनों को सभी एकादशी व्रतों के दिनों में भी गंगास्नान का पुण्य प्राप्त करना चाहिए।

कुम्भपर्व पर गंगास्नान–पूजन–विधि

(प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित "व्रत–पर्व विवेक" से उद्धृत)

नित्य स्नान, पूजा आदि के पश्चात् प्रमुखस्नान के दिन (14 अप्रैल, 2010 ई. को) अरुणोदयकाल में स्नान से पूर्व स्नानकर्ता यह संकल्प करे–

ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे शोभन–नामसंवत्सरे मेषसंक्रान्तिपर्वणि, कुम्भस्थे गुरौ बुधवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अद्यावधि बोधाबोधपूर्वं कृतानां पापानां मार्जनाय जन्म–मरणावर्त्तान्मुक्तये च भगवत्या गङ्गायाः श्रीशिवस्य च षोडशोपचारपूजनं विधाय गंगायाः पावनधारायां इह हरिद्वारे स्नानमाचरिष्यामि।

इस संकल्प के अनन्तर भगवत्स्मरणपूर्वक गंगास्नान करे। इस कुम्भ महापर्व के पर्वदेव 'शिव और गंगा' हैं, अतः इस दिन पापापहारिणी भगवती गंगा एवं जगद्रक्षक भगवान् शिव की षोडशोपचार पूजा करके गंगा में पुष्पाञ्जलि अर्पणपूर्वक स्नान करते हुए यह मन्त्र पढे–" ओम् पापानि हर मे गंगे मुक्तिं देहि परां गतिम्"।

(ध्यान रहे– कुम्भपर्व की अन्य तिथियों में भी उक्त विधि का ही अनुसरण धर्मनिष्ठ व्यक्ति को करना चाहिए। यदि स्नान अरुणोदय में न किया जा सके तो दिन के किसी भी भाग में स्नान किया जा सकता है किंवा स्नानकर्ता षोडशोपचार पूजा करने में यदि उस समय असमर्थ हो तो पंचोपचार अथवा मानसिक पूजा ही उसे उस समय कर लेनी चाहिए।)

स्नानानन्तर गंगा के तट पर बैठकर "ॐ नमः शिवाय" का जाप तथा "गंगालहरी" एवं 'शिव–स्तोत्र' आदि का पाठ करना चाहिए। अगले पृष्ठ पर दिए जा रहे भगवान् शिव के 'पंचाक्षरस्तोत्र' एवं 'श्रीगंङ्गाष्टक' का पाठ भी इस दिन अभीष्ट फलप्रद माना जाता है।

श्रीशिव-पञ्चाक्षर स्तोत्र

(श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचित)

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥३॥
वसिष्ठ- कुम्भोद्भव- गौतमार्य- मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥४॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

श्रीगङ्गाष्टक

(महर्षि वाल्मीकिकृत)

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः॥१॥
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः॥२॥
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः॥३॥
काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम्।
दिव्यस्त्रीकरचारु-चामर-मरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः॥४॥
अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेः मालतीपुष्पमाला।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु॥५॥
एतत्ताल-तमाल-सालसरल-व्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दु-कुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामर-सिद्ध-किन्नरवधूतुङ्ग-स्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्॥६॥
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥७॥
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥८॥
गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः।
प्रक्षाल्य गात्र- कलिकल्मष- पङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ॥९॥

ग्रहण-विवरण (सं. 2067 वि.)

प्रियव्रत शर्मा

इस वर्ष सं. 2067 वि. (16 मार्च, 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक की अवधि) में भूगोल पर निम्नांकित चार ग्रहण दिखाई पड़ेंगे–

(i) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (26 जून, 2010 ई.)
(ii) खग्रास सूर्यग्रहण (11/12 जुलाई, 2010 ई.)
(iii) खग्रास चन्द्रग्रहण (21 दिसम्बर, 2010 ई.)
(iv) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.)

इनमें से 11/12 जुलाई, 2010 ई. वाला खग्रास सूर्यग्रहण और 21 दिसम्बर, 2010 ई. वाला खग्रास चन्द्रग्रहण– ये दोनों भारत में कहीं भी दिखाई नहीं पड़ेंगे। शेष दोनों ग्रहण भारत के कुछ प्रान्तों में देखे जा सकेंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(i) खग्रास सूर्यग्रहण (11/12 जुलाई, 2010 ई.)–

यह ग्रहण आषाढ़ी अमा रविवार (11 जुलाई, 2010 ई.) के दिन भूगोल पर भा. स्टैं. टा. के अनुसार 22 घं. 40 मि. पर प्रारम्भ होकर 12 जुलाई, 2010 ई. को 3 घं. 27 मि. पर समाप्त हो जाएगा। यह ग्रहण दक्षिणी अमेरिका के चिल्ली और बोलेविया प्रान्तों तथा पैसिफिक महासागर में दिखाई देगा। इसकी खग्रास आकृति पैसिफिक महासागर में ही दृश्य होगी।

(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (21 दिसंबर, 2010 ई.)–

यह ग्रहण मार्ग. पूर्णिमा मंगलवार, 21 दिसम्बर, 2010 ई. के दिन घटित होगा। भा. स्टैं. टा. अनुसार इसके स्पर्शादि–काल इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.	
ग्रहणप्रारम्भ	12	02	21 दिसंबर, 2010 ई. (I.S.T)
खग्रासप्रारम्भ	13	10	
ग्रहणमध्य	13	47	
खग्रास समाप्त	14	23	
ग्रहणसमाप्त	15	31	

ग्रहण का परमग्रास = 1.26 (चन्द्रबिम्ब =1.00)

इस ग्रहण के समय भारत में दिन होगा यानि इस समय चन्द्रमा भारत में सर्वत्र अधःकपाल (अदृश्य अधोवर्ती आकाश) में होगा। जिससे यह ग्रहण यहां (भारत में) दिखाई नहीं पड़ेगा। जहां ग्रहण के समय चन्द्रमा ऊर्ध्व कपाल (दृश्य ऊर्ध्व आकाश) में होगा, वहीं इसे देखा जा सकेगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(i) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (26 जून, 2010 ई.)–

यह ग्रहण भारत में ज्येष्ठ पूर्णिमा शनिवार (26 जून, 2010 ई.) के दिन पूर्वी भारत के अरुणाचल, मेघालय, नागालैण्ड मिज़ोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, आसाम तथा पूर्वी बिहार और पश्चिमी बंगाल में सायंकाल के समय ग्रस्तोदय के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण के प्रारम्भादि के काल भा. स्टैं. टा. में इस प्रकार हैं–

	घं.	मि.	
ग्रहणप्रारम्भ	15	47	26 जून, 2010 ई. (भा. स्टैं. टा.)
ग्रहणमध्य	17	08	
ग्रहण समाप्त	18	30	

पर्वकाल = 2 घं. 43 मि.

परमग्रासमान = 54 प्रतिशत

पृष्ठ 23 पर ग्रहणचित्र (1) में स्पष्टतापूर्वक बतलाया गया है कि– यह ग्रहण भारत के किस भाग में दिखाई देगा, किस भाग में नहीं। इस चित्र में दी गई 'च–छ' रेखा से दाईं ओर (पूर्वी भारत में) स्थित अरुणाचल आदि प्रदेशों में ही यह ग्रहण सायंकाल के समय ग्रस्तोदय के रूप में थोड़ी ही देर के लिए दिखाई पड़ेगा। इस रेखा से पश्चिम में स्थित किसी भी भारतीय स्थल पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा, क्योंकि वहां सर्वत्र चन्द्रमा ग्रहण–समाप्ति के बाद ही उदय होगा। यह 'च–छ' रेखा दर्शाती है कि– इस रेखा–स्थल पर चन्द्रमा का उदय ठीक उस समय होगा, जब ग्रहण समाप्त हो रहा होगा। इससे यह स्पष्ट है कि इस रेखा से पश्चिम में स्थित सभी स्थलों पर चन्द्रोदय ग्रहणसमाप्ति के अनन्तर होगा। इस रेखा से पूर्व की ओर अरुणाचल आदि प्रदेशों में चन्द्रोदय के समय

चन्द्रमा कितना, किस ओर से ग्रस्त दीखेगा– यह दर्शाने के लिए 8–8 मिनटान्तर पर तीन और रेखाएं अंकित की गई हैं।

पृष्ठ **21** पर अलग से एक कोष्ठक में अरुणाचल आदि उन प्रदेशों के, जहां यह ग्रहण ग्रस्तोदय के रूप में दृश्य होगा, प्रसिद्ध–प्रसिद्ध नगरों का चन्द्रोदयकाल भा.स्टैं.टा. में दिया गया है।

ध्यान रहे– जहां ग्रहण दृश्य नहीं होता, वहां उसका पर्व भी नहीं माना जाता। इसीलिए वहां स्नान–दान–जप का कोई माहात्म्य भी नहीं होता।

जहां ग्रहण ग्रस्तोदय हो, वहां ग्रहण का पर्वकाल ग्रस्त सूर्य/चन्द्र के उदयकाल से ही प्रारम्भ माना जाता है। अतः वहां ग्रस्त सूर्य–चन्द्र के उदय के समय ही धार्मिक लोगों को ग्रहण का प्रथमस्नान करना चाहिए।

चन्द्रग्रहण का सूतक– इस ग्रहण का सूतक 26 जून, 2010 ई. को प्रातः 6 घं. 47 मि. भा.स्टैं.टा. पर ही शुरू हो जाएगा। यह सूतक केवल उन्हीं अरुणाचल, आसाम आदि प्रदेशों में माना जाएगा, जहां यह ग्रहण दृश्य होगा, अन्यत्र नहीं।

ग्रहण का राशिफल– यह ग्रहण मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में घटित हो रहा है। अतः मूल नक्षत्र एवं धनु राशि वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेषरूप से कष्टप्रद रहेगा।

विभिन्न राशिवाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल नीचे कॉलम में दिया जा रहा है;–

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	मृत्यु	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात(दुर्घटना)	हानि	लाभ	सुख

शनिवार का ग्रहण – तेल, तिलहन, गुड़, घी, सोना, तांबा एवं शस्त्रक्षेत्र में भारी तेज़ी करेगा।

ग्रहण का अन्यफल – क्योंकि, यह चन्द्रग्रहण ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को होगा, इसलिए यह ग्रहण शासकवर्ग– शासिकाओं, बड़े गणराज्य प्रदेशों एवं प्रमुख राजनैतिक पार्टियों के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेगा। कहीं विशिष्ट राजनीतिज्ञ के निधन से शोक व्याप्त हो सकता है। राहज़नी में लूटपाट की घटनाएं भी अधिक होंगी–

> "ज्येष्ठे नरेन्द्र–द्विजराजपत्न्यः सस्यानि वृष्टिश्च महागणाश्च।
> प्रध्वंसमायान्ति नराश्च सौम्याः साल्वैः समेताश्च निषाद–संघाः।।"

किञ्च– यह चन्द्रग्रहण धनुराशि में घटित होगा। अतः प्रधानपुरुष, मन्त्रिवर्ग, घोड़े, मिथिला, पांचालदेश, मल्ल, वैद्य, चिकित्सक, व्यापारी, क्रूरलोगों एवं हथियारों के विशेष तकनीकज्ञ लोगों को भारी कष्ट होगा–

> "धन्विन्यमात्यवर–वाजि– विदेह– मल्लान् पांचाल–वैद्य–वणिजो विषमायुधज्ञान् हन्यात्.......... ।"

(ii) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.)–

यह ग्रहण पौषी अमा मंगलवार (4 जनवरी, 2011 ई.) को पश्चिमोत्तर भारत के दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखण्ड तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश में मध्याह्नोत्तर लगभग 2 से 4 बजे के मध्य स्वल्पग्रास के रूप में दिखाई पड़ेगा। अत्यल्प ग्रास के कारण यह ग्रहण सामान्यतः दृष्टिग्राह्य नहीं होगा।

यह ग्रहण भारत के किन प्रदेशों में दृश्य और किन प्रदेशों में अदृश्य होगा– इसे स्पष्टतापूर्वक जानने के लिए पृष्ठ **24** पर दिया गया ग्रहणचित्र (2) देखिए। यहां दी गई 'क–ख' रेखा से ऊपर स्थित प्रदेशों में ही यह ग्रहण दीखेगा। शेष भारत में यह दिखाई नहीं पड़ेगा। इस चित्र में 'क–ख' रेखा के इधर–उधर पार्श्ववर्ती प्रसिद्ध नगरों को भी अंकित किया गया है, जिससे इस रेखा का वास्तविक निर्गम–स्थल पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। इस रेखा से नगर जितना अधिक पश्चिमोत्तर में हटा होगा, उस नगर में इस ग्रहण का परमग्रासमान उतना ही अधिक होगा।

पृष्ठ **25–26** पर ग्रहणचित्र (3) और ग्रहणचित्र (4) में इस ग्रहण की क्रमशः स्पर्श(प्रारम्भ)काल–निर्देशक एवम् मोक्ष(समाप्ति)कालनिर्देशक रेखाएं 5–5 मिनटों के अन्तराल पर दी गई हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश द्वारा इन चित्रों में अभीष्ट नगर की स्थिति जानकर उस नगर में ग्रहण का स्पर्श एवम् मोक्षकाल (भा.स्टैं.टा.) पार्श्वस्थ रेखाओं द्वारा आसानी से जाना जा सकता है।

पृष्ठ **22** पर एक कोष्ठक में भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध नगरों में (जहां यह ग्रहण दृश्य होगा) इस ग्रहण का स्पर्श, मध्य एवम् मोक्षकाल भा.स्टैं.टा. में दिया गया है। यहां ग्रहणमध्यकाल ग्रहण के परमग्रासमान का काल बतलाता है।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.)

कुछ नगरों में ग्रहण की स्पर्श–मोक्षदिशाएं तथा ग्रहण–मध्यकालीन(परम)ग्रास (भा. स्टैं. टा.)

दिल्ली	कुरुक्षेत्र	जयपुर	चण्डीगढ़
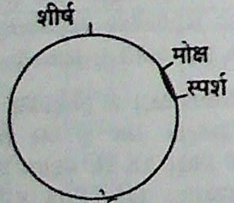 शीर्ष मोक्ष स्पर्श	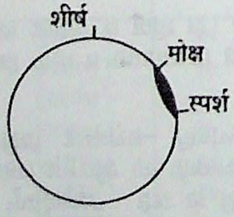 शीर्ष मोक्ष स्पर्श	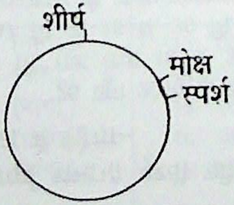 शीर्ष मोक्ष स्पर्श	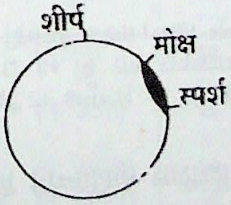 शीर्ष मोक्ष स्पर्श
ग्रहणमध्य 15 घं. 32 मि. (परमग्रास 3 प्रतिशत)	ग्रहणमध्य 15 घं. 32 मि. (परमग्रास 6 प्रतिशत)	ग्रहणमध्य 15 घं. 30 मि. (परमग्रास 1 प्रतिशत)	ग्रहणमध्य 15 घं. 32 मि. (परमग्रास 8 प्रतिशत)
शिमला	**हरिद्वार**	**जम्मू**	**अमृतसर**
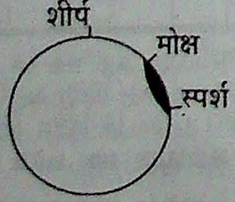 शीर्ष मोक्ष स्पर्श	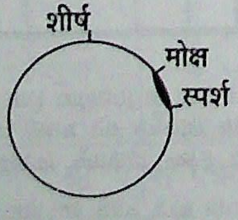 शीर्ष मोक्ष स्पर्श	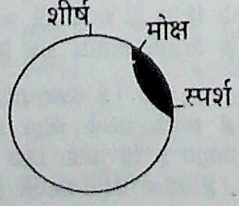 शीर्ष मोक्ष स्पर्श	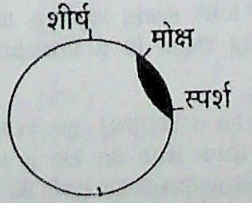 शीर्ष मोक्ष स्पर्श
ग्रहणमध्य 15 घं. 32 मि. (परमग्रास 8 प्रतिशत)	ग्रहणमध्य 15 घं. 34 मि. (परमग्रास 4 प्रतिशत)	ग्रहणमध्य 15 घं. 30 मि. (परमग्रास 17 प्रतिशत)	ग्रहणमध्य 15 घं. 30 मि. (परमग्रास 13 प्रतिशत)

पृष्ठ 19 पर हरिद्वार आदि तीर्थ–स्थलों तथा कुछ अन्य स्थलों पर भी ग्रहण के मध्यकालीन(परम)ग्रास तथा ग्रहण की स्पर्श–मोक्ष दिशाओं का भी निर्देश है।

ग्रहण का सूतक– इस ग्रहण का सूतक 4 जनवरी, 2011 ई. को सूर्योदय से पहले रात्रि के 2 बजे से ही प्रारम्भ हो जाएगा। यह सूतक भी पंजाब, हरियाणा आदि प्रान्तों के उन्हीं नगरों में माना जाएगा, जहां यह ग्रहण दृश्य होगा।

ग्रहण का राशिफल– क्योंकि, यह सूर्यग्रहण पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र एवं धनुराशि में घटित हो रहा है। अतः यह ग्रहण पू. षा. नक्षत्र एवं धनुराशि वाले लोगों के लिए विशेष नेष्टफलप्रद रहेगा। विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस सूर्यग्रहण का फल नीचे कॉलम में दिया गया है;–

जन्म/ नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अपमान	मृत्युतुल्यकष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात(दुर्घटना)	हानि	लाभ	सुख

ग्रहण का अन्यफलः– यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण भौमवती अमावस वाले दिन घटित होगा। अतः "भौमवारे ग्रहे भानोरन्योन्यं नृपतिक्षयः"– देश के किसी गण्यमान्य व्यक्ति का पद रिक्त होगा। क्योंकि, यह ग्रहण धनुराशि एवं पौषमास में घटित हो रहा है अतः मन्त्रियों, प्रधानपुरुषों, व्यापारियों, शस्त्रास्त्र– निर्माण में विशेषज्ञ, वैज्ञानिकों के लिए भयावह है।

पौषमास में ग्रहण होने से ब्राह्मणों, क्षत्रियों को पीड़ा व उपद्रवग्रस्त होना पड़ेगा। सिन्धप्रदेश, कुकुरप्रदेश एवं मिथिला में प्राकृतिक आपदा से हानि हो। वर्षा की कमी से कहीं दुर्भिक्ष रहे–

> "पौषे द्विज–क्षत्रजनोपरोधः ससैन्धवाख्याः कुकुरा विदेहाः।
> ध्वंसं व्रजन्त्यत्र च मन्दवृष्टिं भयं च विन्द्यादसुभिक्ष–युक्तम्।।"

मंगलवारी ग्रहण तेल, तिलहन, रुई, सोना, तांबा, चान्दी में आगे तेज़ी करेगा। औषधियां, घी, गुड़, खाण्ड भी तेज रहेंगे।

चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण

(जो वस्तुतः चन्द्रग्रहण नहीं होता)

पृथ्वी की आकाश में दो प्रकार की छायाएं होती हैं– मन्द और घनी। मन्दछाया को उपच्छाया, इंग्लिश में Penumbra और घनी छाया को भूभा, इंग्लिश में Umbra कहा जाता है। चन्द्रग्रहण से कुछ समय पहिले चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में अवश्य प्रवेश करता है। इसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया (जिसे भूभा कहा जाता है) में प्रविष्ट होता है। भूभा में जब वह प्रवेश करता है, तभी उसका बिम्ब काला पड़ता है। भूभा में चन्द्रमा की स्थितिकाल को ही चन्द्रग्रहण कहा जाता है।

कई बार चन्द्रमा पूर्णिमा के दिन केवल उपच्छाया में ही प्रविष्ट होकर भूभा में प्रविष्ट हुए बिना ही थोड़ी देर बाद उपच्छाया से बाहिर निकल जाता है। पृथ्वी की उपच्छाया में प्रविष्ट चन्द्रमा का बिम्ब काला नहीं पड़ता। उस समय उसका प्रकाश केवल कुछ धुंधला (मन्द) हो जाता है। चन्द्रमा के प्रकाश का यह धुंधलापन सामान्यतः दृष्टिग्राह्य नहीं होता।

गतवर्ष एक T.V. Channel ने 9 फरवरी, 2009 ई. को उपच्छाया में चन्द्रमा के प्रवेश को चन्द्रग्रहण के रूप में प्रसारित करने का व्यर्थ प्रयास किया, जिससे भ्रान्त सैकड़ों लोगों की Telephone-calls हमें मिलीं। हमनें उन्हें यथाशक्य कालाल्पता के कारण अत्यन्त संक्षेप में स्पष्ट करने का प्रयास किया कि उपछाया में चन्द्र का प्रवेश चन्द्रगहण नहीं होता। इस विषय पर और अधिक स्पष्टता के लिए पृष्ठ.. **265** ...पर 'चन्द्रमा का उपच्छाया ग्रहण' लेख पढें।

इसवर्ष चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में निम्नांकित तारीखों को निर्दिष्ट काल में रहेगा–

(i) 26 जून 2010 ई. को चन्द्रमा भा.स्टैं.टा. अनुसार 14 घं. 26 मि. से 15 घं. 47 मि. तक तथा 18 घं. 30 मि. से 19 घं. 51 मि. तक उपच्छाया में और 15 घं. 47 मि. से 18 घं. 30 मि. तक भूभा में विचरण करेगा। यहां भूभा में चन्द्र का विचरणकाल ही चन्द्रग्रहणकाल है।

(ii) 21 दिसम्बर, 2010 ई. को चन्द्रमा भा.स्टैं.टा. अनुसार 10 घं. 58 मि. से 12 घं. 02 मि. तक तथा 15 घं. 31 मि. से 16 घं. 36 मि. तक उपच्छाया में रहेगा। इस दिन चन्द्रमा का भूभा में स्थितिकाल (चन्द्रग्रहणकाल) 12 घं. 02 मि. से 15 घं. 31 मि. तक है।

खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (26 जून, 2010 ई.)

[पूर्वोत्तरी भारत के प्रसिद्ध कुछ नगरों का चन्द्रोदयकाल (भा.स्टैं.टा.)]

नगर /राज्य	घं. मि.	नगर /राज्य	घं. मि.	नगर /राज्य	घं. मि.	नगर /राज्य	घं. मि.
करीमगंज (आसा.)	18 13	अनिनि (अरुणा.)	18 08	जुन्हेबोटो (नागा.)	18 08	थिम्फू (भूटान)	18 31
कोकराझार (आसा.)	18 26	ईटानगर (अरुणा.)	18 13	फेक (नागा.)	18 07	गंगटोक (सिक्किम)	18 35
गुवाहाटी (आसा.)	18 19	एलांग (अरुणा.)	18 11	मोन (नागा.)	18 08		
गोलघाट (आसा.)	18 11	खोंसा (अरुणा.)	18 05	मोकोकचुंग (नागा.)	18 08	कूचबिहार (प. बंगाल)	18 29
गोलपाड़ा (आसा.)	18 24	चांगलांग (अरुणा.)	18 05	वोखा (नागा.)	18 09	कोलकाता (प. बंगाल)	18 25
घेमाजी (आसा.)	18 11	ज़िरो (अरुणा.)	18 14	जोवई (मेघा.)	18 15	जलपाईगुड़ी (प. बंगाल)	18 32
धुबुरी (आसा.)	18 26	डापोरिजो (अरुणा.)	18 13	तुरा (मेघा.)	18 24	दार्जिलिंग (प. बंगाल)	18 36
जोरहाट (आसा.)	18 10	तेजु (अरुणा.)	18 04	नोंगपोह (मेघा.)	18 18	पुरुलिया (प. बंगाल)	18 35
डिब्रूगढ़ (आसा.)	18 09	तवांग (अरुणा.)	18 22	बाघमारा (मेघा.)	18 21	पुरनिया (प. बंगाल)	18 36
तेजपुर (आसा.)	18 16	पासिघाट (अरुणा.)	18 09	शिलांग (मेघा.)	18 17	बालूरघाट (प. बंगाल)	18 29
तिनसुकिया (आसा.)	18 07	बोम्डिला (अरुणा.)	18 19	ऐज़ावल (मिज़ो.)	18 10	रायगंज (प. बंगाल)	18 33
दिसपुर (आसा.)	18 19	बोम्डो (अरुणा.)	18 12	चम्पई (मिज़ो.)	18 06	वर्धमान (प. बंगाल)	18 29
दीमापुर (आसा.)	18 10	यिंगकाग (अरुणा.)	18 13	लांगतलै (मिज़ो.)	18 06	शिलिगुड़ी (प. बंगाल)	18 34
दीफू (आसा.)	18 11	सेप्पा (अरुणा.)	18 16	साहा (मिज़ो.)	18 06		
नागाओं (आसा.)	18 15	उदयपुर (त्रिपुरा)	18 14			कटिहार (बिहार)	18 35
नालवाड़ी (आसा.)	18 21	अगरतला (त्रिपुरा)	18 16	इम्फाल (मणि.)	18 06	किशनगंज (बिहार)	18 35
मंगलदै (आसा.)	18 18	कैलाशहर (त्रिपुरा)	18 14	उखरूल (मणि.)	18 06		
शिवसागर (आसा.)	18 09			चन्देल (मणि.)	18 05	दुमका (झार.)	18 34
हैलाकण्डी (आसा.)	18 12	कोहिमा (नागा.)	18 08	बिश्नुपुर (मणि.)	18 07	धनबाद (झार.)	18 35

"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है। "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी देवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है। आज ही अपनी प्रति बुकसेलर से सुरक्षित कराएं।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), मध्य (परमग्रास) एवं मोक्ष (समाप्ति) काल (भा.स्टैं.टा.)]

स्थान	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	स्थान	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	स्थान	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.	स्थान	स्पर्श घं. मि.	मध्य घं. मि.	मोक्ष घं. मि.
अजमेर	15 14	15 28	15 43	गुरदासपुर	14 46	15 30	16 12	नैनीताल	15 22	15 35	15 48	मुज़फ्फर नगर	15 09	15 33	15 56
अनन्तनाग(का.)	14 40	15 30	16 16	चण्डीगढ़	14 57	15 32	16 05	पंचकूला	14 57	15 32	16 05	मुरादाबाद	15 23	15 34	15 45
अनूपशहर(उ.प्र.)	15 25	15 33	15 42	चम्बा	14 47	15 31	16 12	पटियाला	14 57	15 31	16 04	मेरठ	15 12	15 33	15 53
अमरोहा (उ.प्र.)	15 19	15 34	15 48	चूरु	15 01	16 29	15 57	पठानकोट	14 46	15 31	16 12	मोगा	14 50	15 30	16 08
अमृतसर	14 46	15 30	16 11	जम्मू	14 42	15 30	16 14	पानीपत	15 05	15 32	15 58	रतनगढ़	15 00	15 29	15 56
अम्बाला	14 59	15 32	16 03	जयपुर	15 20	15 30	15 40	पालमपुर	14 50	15 32	16 11	रामपुर बुशहर	14 58	15 33	16 07
अर्की (हि.प्र.)	14 56	15 32	16 07	जालन्धर	14 49	15 30	16 09	पाली	15 09	15 26	15 43	रिवाड़ी	15 12	15 31	15 50
अलवर	15 19	15 31	15 44	जालौर	15 07	15 25	15 43	पिलानी	15 03	15 30	15 56	रोपड़	14 55	15 32	16 06
अल्मोड़ा	15 21	15 35	15 50	जींद	15 02	15 31	15 59	पुंछ	14 36	15 29	16 18	रोहतक	15 06	15 31	15 56
आबू	15 19	15 25	15 30	जैसलमेर	14 46	15 23	15 58	फरीदकोट	14 48	15 29	16 08	लुधियाना	14 52	15 31	16 07
ऊधमपुर (का.)	14 42	15 30	16 15	जोधपुर	15 02	15 26	15 49	फरीदाबाद	15 15	15 32	15 49	शाहदरा	15 13	15 32	15 52
ऊना	14 51	15 31	16 09	झुंझुनु	15 04	15 30	15 54	फाज़िल्का	14 46	15 28	16 08	शिमला	14 57	15 32	16 06
कठुआ (का.)	14 46	15 31	16 12	डीडवाना	15 04	15 28	15 52	फिरोज़पुर	14 47	15 29	16 09	श्रीनगर (का.)	14 38	15 30	16 18
कपूरथला	14 48	15 30	16 10	थानेसर	15 01	15 32	16 01	फुलेरा	15 14	15 29	15 44	संगरूर	14 55	15 31	16 04
करनाल	15 03	15 32	16 00	दिल्ली	15 12	15 32	15 52	बाड़मेर	14 55	15 23	15 51	सरहिन्द	14 56	15 31	16 05
कांगड़ा	14 49	15 31	16 11	देवबन्द	15 07	15 33	15 58	बिजनौर	15 12	15 23	15 54	सहारनपुर	15 05	15 33	16 00
कारगिल	14 41	15 31	16 18	देवप्रयाग	15 09	15 34	15 58	बिलासपुर(हि.प्र.)	14 55	15 32	16 07	सांगानेर	15 21	15 30	15 39
कालका	14 56	15 32	16 05	देहरादून	15 05	15 33	16 00	बीकानेर	14 53	15 27	15 59	सिरसा	14 54	15 30	16 03
किशनगढ़(रा.)	14 40	15 23	16 03	द्वारिका	15 09	15 17	15 26	बुलन्दशहर	15 20	15 33	15 46	सीकर	15 07	15 29	15 51
कुराली (पं.)	14 56	15 32	16 06	धर्मशाला	14 49	15 31	16 11	बठिण्डा	14 51	15 30	16 06	सूरतगढ़	14 50	15 28	16 04
कुरुक्षेत्र	15 01	15 32	16 02	धूरी	14 54	15 31	16 05	भिवानी	15 05	15 31	15 56	सोलन	14 58	15 32	16 05
कुल्लू	14 53	15 32	16 09	नरैना	15 06	15 28	15 49	भीनमाल	15 08	15 24	15 41	हमीरपुर(हि.प्र.)	14 52	15 32	16 09
कैथल	15 00	15 31	16 01	नवलगढ़	15 05	15 29	15 53	भुज (गु.)	15 02	15 19	15 36	हरिद्वार	15 08	15 34	15 58
कोटखाई	14 59	15 33	16 05	नागौर	15 00	15 27	15 53	मण्डी (हि.प्र.)	14 53	15 32	16 09	हापुड़	15 16	15 33	15 50
खन्ना	14 55	15 31	16 06	नाभा	14 55	15 31	16 05	मसूरी	15 05	15 33	16 01	हांसी	15 01	15 31	15 59
खुर्जा	15 21	15 33	15 44	नारनौल	15 10	15 31	15 51	महेन्द्रगढ़	15 08	15 31	15 53	हिसार	15 00	15 30	16 00
गाजियाबाद	15 13	15 32	15 51	नालागढ़	14 55	15 32	16 07	मारवाड़ जं.	15 13	15 26	15 40	होशियारपुर	14 50	15 31	16 09
गुड़गांव	15 13	15 32	15 51	नाहन	15 00	15 33	16 03	मालेरकोटला	14 54	15 31	16 06				

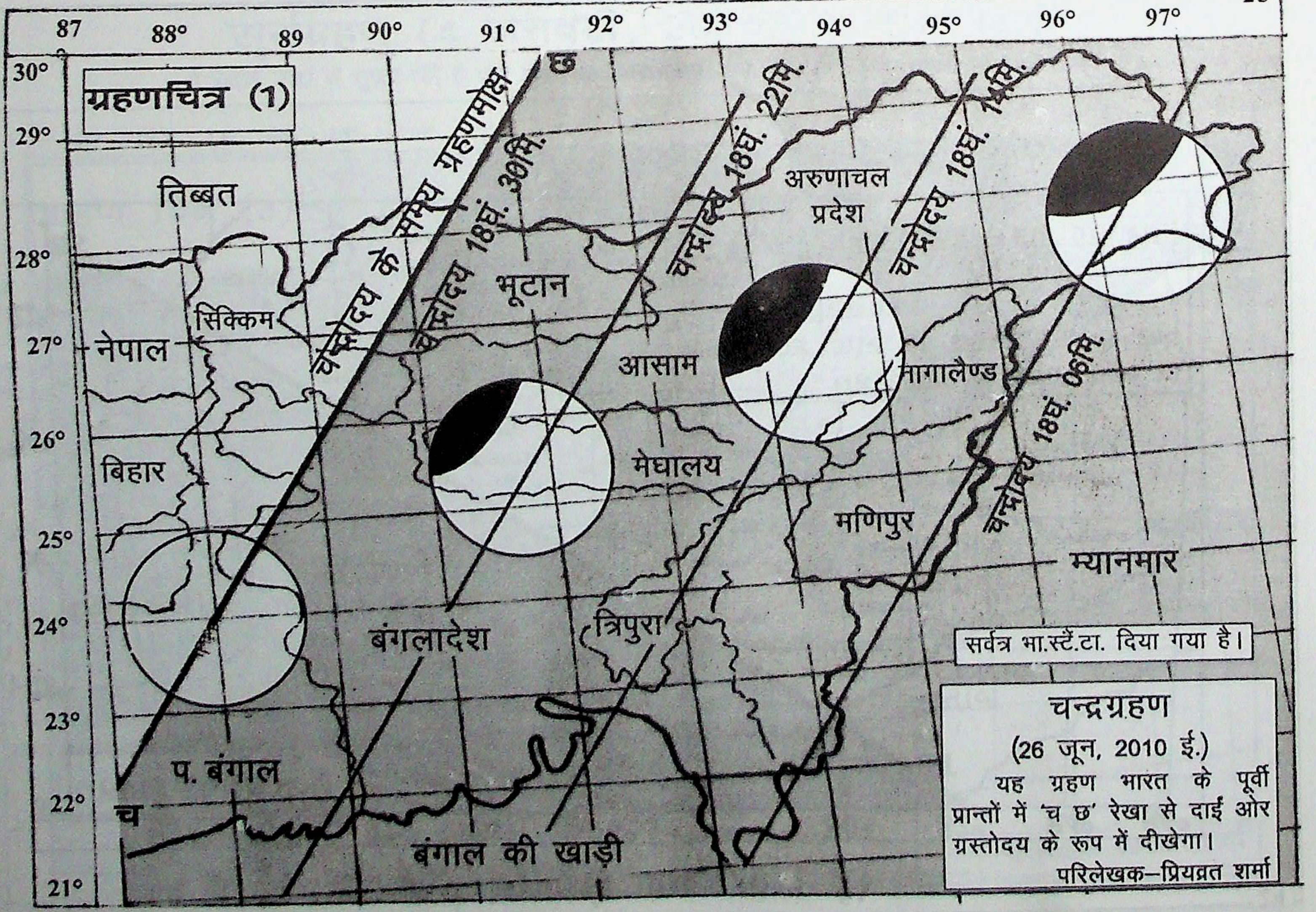
87
88°
89
90°
91°
92°
93°
94°
95°
96°
97°
30°
29°
28°
27°
26°
25°
24°
23°
22°
21°
छ
च
चन्द्रोदय के समय ग्रहणमोक्ष
चन्द्रोदय 18घं. 30मि.
चन्द्रोदय 18घं. 22मि.
चन्द्रोदय 18घं. 14मि.
चन्द्रोदय 18घं. 06मि.
तिब्बत
भूटान
अरुणाचल प्रदेश
सिक्किम
नेपाल
आसाम
नागालैण्ड
मेघालय
बिहार
मणिपुर
म्यानमार
त्रिपुरा
बंगलादेश
प. बंगाल
बंगाल की खाड़ी

ग्रहणचित्र (1)

सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।

चन्द्रग्रहण

(26 जून, 2010 ई.)

यह ग्रहण भारत के पूर्वी प्रान्तों में 'च छ' रेखा से दाईं ओर ग्रस्तोदय के रूप में दीखेगा।

परिलेखक–प्रियव्रत शर्मा

सूर्यग्रहण (4 जन., 2011 ई.)

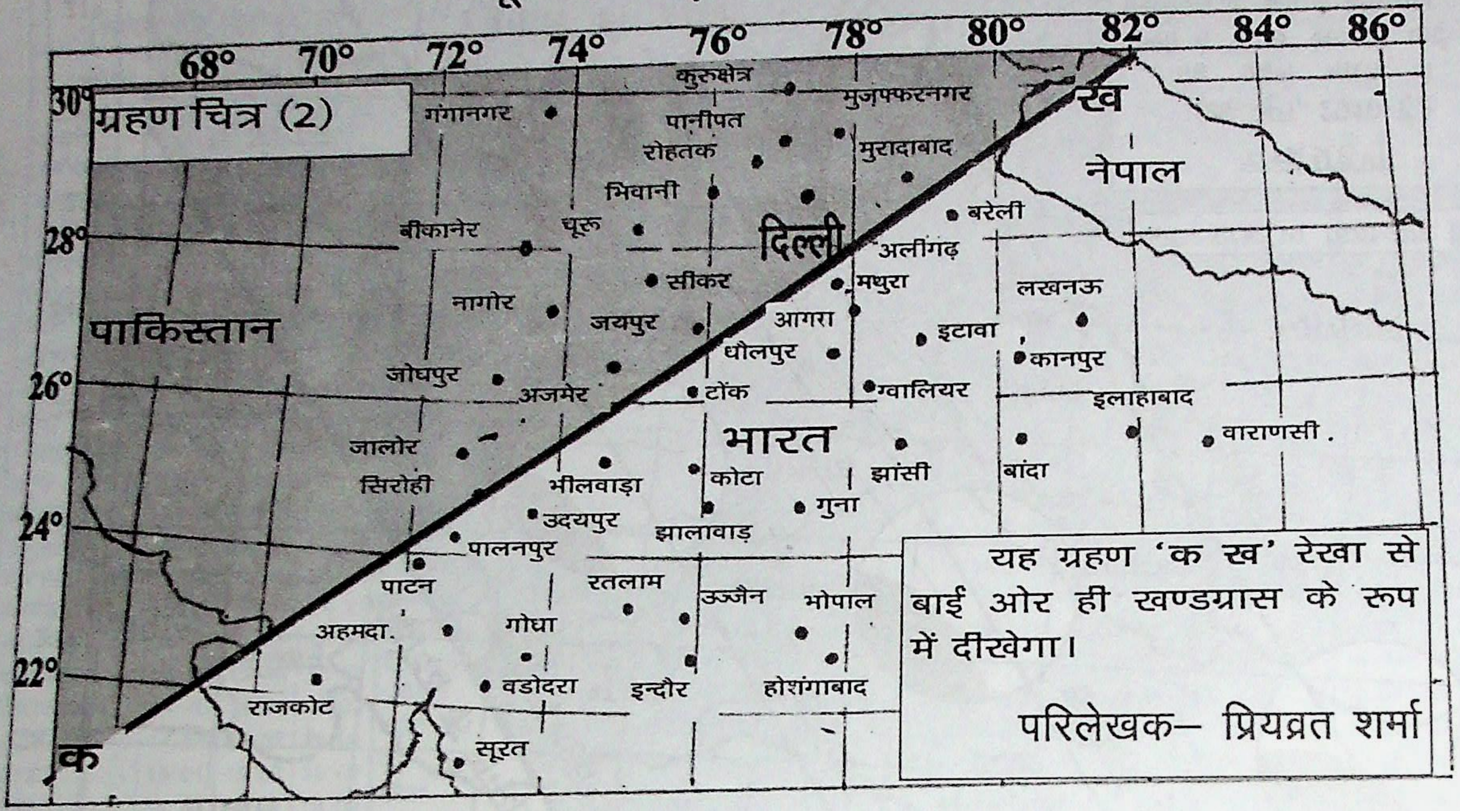
ग्रहण चित्र (2)
68°
70°
72°
74°
76°
78°
80°
82°
84°
86°
30°
28°
26°
24°
22°
क
ख
पाकिस्तान
नेपाल
भारत
दिल्ली
गंगानगर
कुरुक्षेत्र
मुजफ्फरनगर
पानीपत
रोहतक
मुरादाबाद
भिवानी
बरेली
बीकानेर
चूरू
अलीगढ़
सीकर
मथुरा
लखनऊ
नागोर
जयपुर
आगरा
इटावा
धौलपुर
कानपुर
जोधपुर
अजमेर
टोंक
ग्वालियर
इलाहाबाद
वाराणसी
जालोर
सिरोही
भीलवाड़ा
कोटा
झांसी
बांदा
उदयपुर
गुना
झालावाड़
पालनपुर
पाटन
रतलाम
उज्जैन
भोपाल
अहमदा.
गोधा
वडोदरा
इन्दौर
होशंगाबाद
राजकोट
सूरत

यह ग्रहण 'क ख' रेखा से बाईं ओर ही खण्डग्रास के रूप में दीखेगा।

परिलेखक– प्रियव्रत शर्मा

सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.) (स्पर्श रेखाएं)

ये रेखाएं जहां से गुज़र रही हैं वहां ग्रहण का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) इन रेखाओं पर अंकित है।

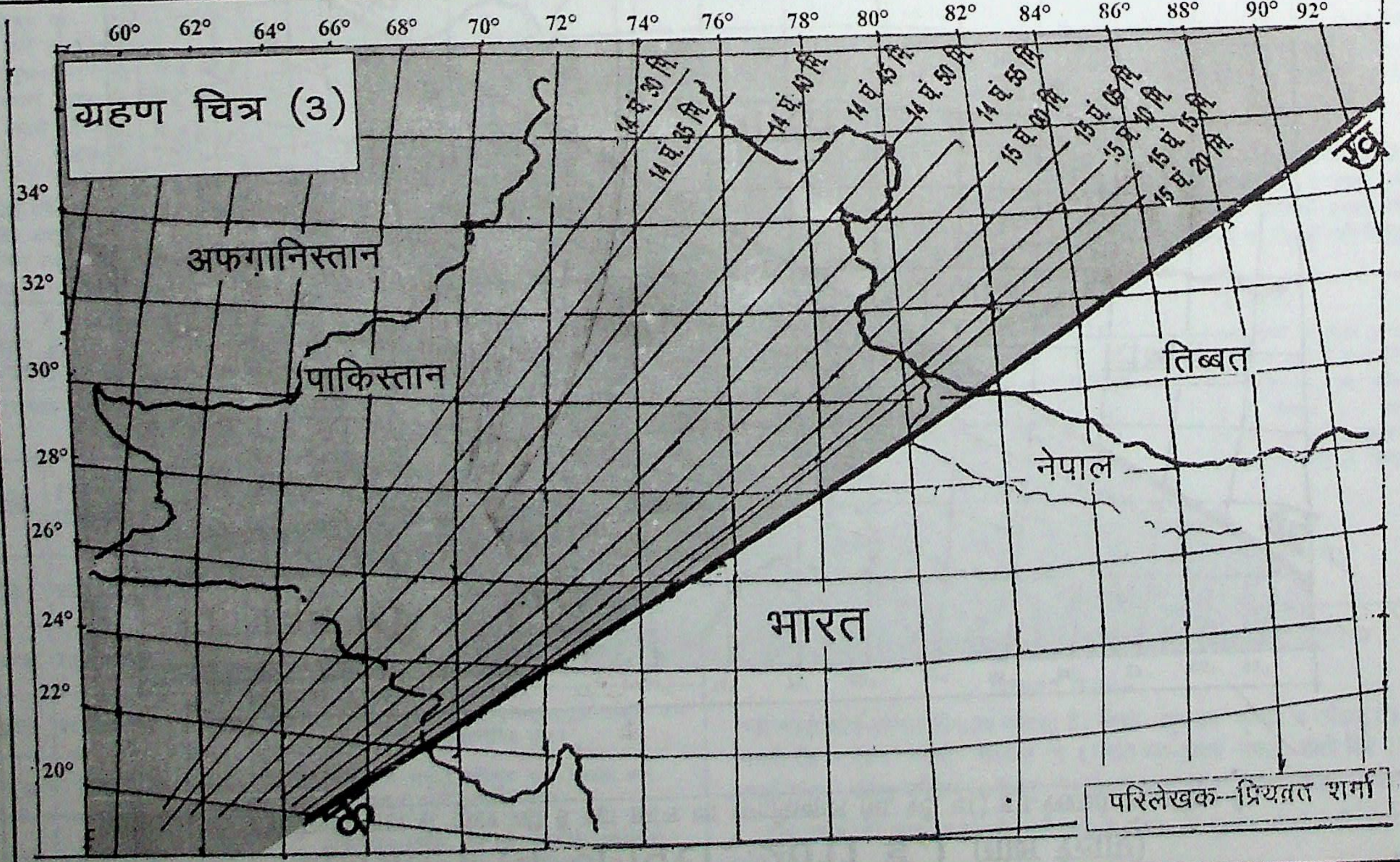
ग्रहण चित्र (3)
60°
62°
64°
66°
68°
70°
72°
74°
76°
78°
80°
82°
84°
86°
88°
90°
92°
34°
32°
30°
28°
26°
24°
22°
20°
14 घं. 30 मि.
14 घं. 35 मि.
14 घं. 40 मि.
14 घं. 45 मि.
14 घं. 50 मि.
14 घं. 55 मि.
15 घं. 00 मि.
15 घं. 05 मि.
15 घं. 10 मि.
15 घं. 15 मि.
15 घं. 20 मि.
अफ़ग़ानिस्तान
पाकिस्तान
तिब्बत
नेपाल
भारत
परिलेखक--प्रियव्रत शर्मा

सूर्यग्रहण (4 जनवरी, 2011 ई.) (मोक्ष रेखाएं)

ये रेखाएं जहां से गुज़र रही हैं वहां ग्रहण का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) इन रेखाओं पर अंकित है।

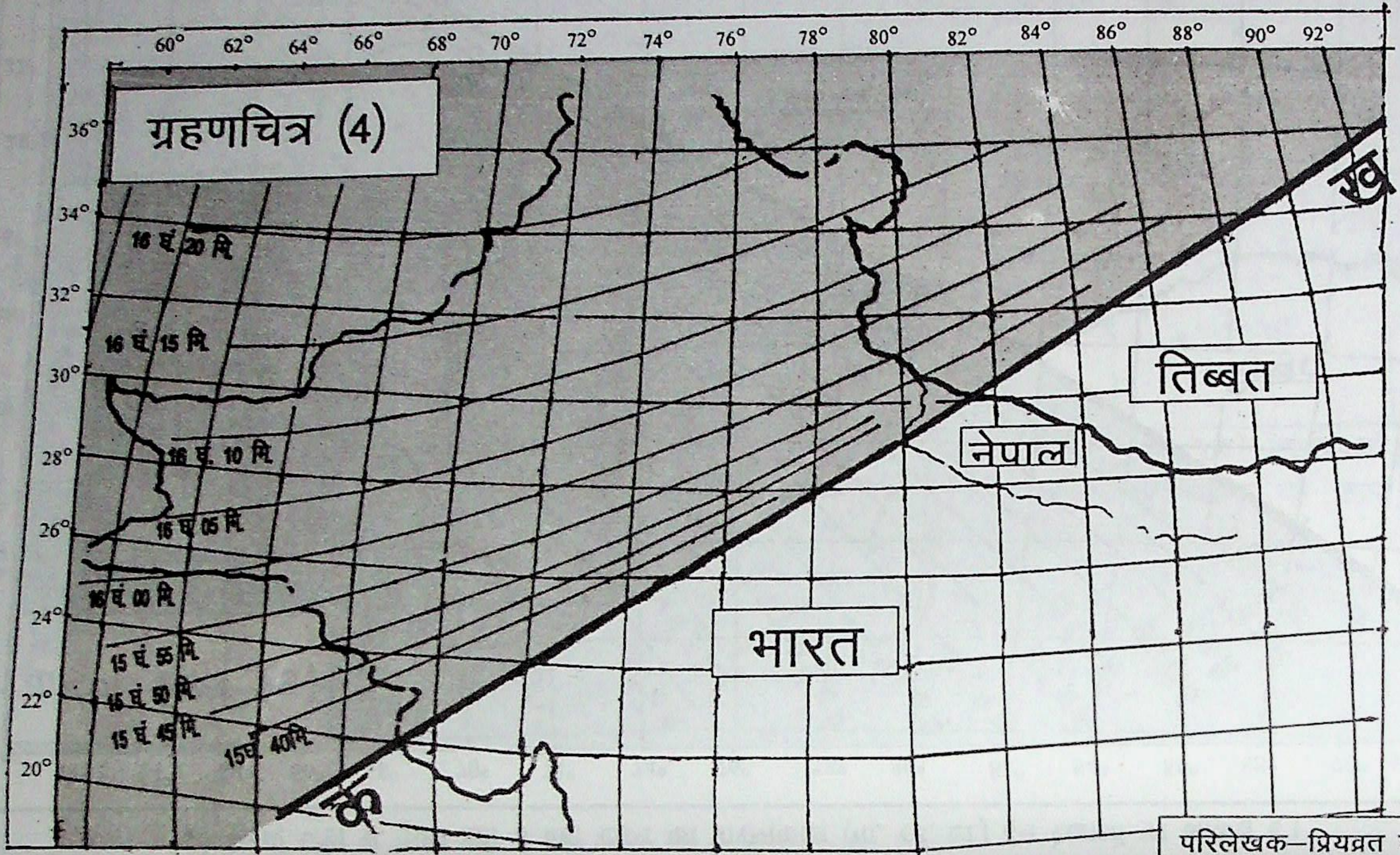
ग्रहणचित्र (4)
60°
62°
64°
66°
68°
70°
72°
74°
76°
78°
80°
82°
84°
86°
88°
90°
92°
36°
34°
32°
30°
28°
26°
24°
22°
20°
16 घं. 20 मि.
16 घं. 15 मि.
16 घं. 10 मि.
16 घं. 05 मि.
16 घं. 00 मि.
15 घं. 55 मि.
15 घं. 50 मि.
15 घं. 45 मि.
15घं. 40मि.
ख
क
तिब्बत
नेपाल
भारत

परिलेखक—प्रियव्रत शर्मा

शनि की साढेसाती (बृहत्कल्याणी), ढैय्या (लघुकल्याणी) और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2067 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो, तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है। शनिग्रहजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें या बन्दरों को गुड़–चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभमुहूर्त में बना हुआ शनियंत्र धारण करना विशेष शांतिप्रद है।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं। नोटः– नीचे दिए गए कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए कन्याराशिस्थ शनि की कालावधि में साढ़ेसाती या ढैय्या नहीं है,– यह समझ लें।

9 सितंबर, सन् 2009 ई. को भरणी नक्षत्र एवं मेष राशिस्थ चन्द्र के समय 24 घं. 00 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर शनिदेव कन्या राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2067 वि. के अन्त तक कन्या राशि में ही विचरण करेंगे।

कन्या राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती एवं ढैय्या का फल

(9 सितंबर, 2009 ई. से सं. 2067 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धनधान्य–समृद्धि, प्रभावक्षेत्र बढ़े, सम्मान प्राप्त हो, सुखसम्पदा–लाभ, घर में मांगलिक कृत्य हों।
कन्या	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शारीरिक कष्ट, रक्तपित्त विकार, स्त्रीकष्ट, पशु एवं सन्तान को कष्ट, व्यापार में हानि, राजभय।
तुला	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	धन-धान्य–समृद्धि, स्त्री-पुत्र–सुख,सुख-सम्पत्ति–लाभ, व्यवसाय में प्रगति,शारीरिक सुख।
कुम्भ	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	धन-धान्य–समृद्धि, स्त्री-पुत्र–सुख, सम्पत्ति लाभ, कारोबार में प्रगति,शारीरिक सुख।
मिथुन	ढैय्या	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन–विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथा व्यय, धननाश।

शनि–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढ़ेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभवेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

शनि का वैदिक मन्त्र– "ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये,
शंय्योरभिस्रवन्तु नः, शं ॐ"।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ शनैश्चर स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ऊँ नमस्ते कोण–संस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्र – देहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यम–संज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्द – संज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

गुरु के संचार का शुभाशुभ फल

सं. 2066 वि. में 13 अक्तूबर को गुरु मार्गी होकर 20 दिसम्बर, सन् 2009 ई. को 0 घं. 15 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर उ.षा. नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव पुनः कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2067 वि. में 2 मई 2010 ई. तक कुम्भ राशि में ही विचरण करेंगे।

कुम्भ–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(20 दिसम्बर, सन् 2009 ई.से 2 मई सन् 2010 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि

संवत् 2067 वि. में 2 मई, सन् 2010 ई. को 8 घं. 07 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर मूल नक्षत्र एवं धनु राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव मीन राशि में प्रविष्ट होकर 1 नवंबर, सन् 2010 ई. तक मीनराशि में ही संचार करेंगे।

मीन–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(2 मई से 1 नवंबर, सन् 2010 ई. तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय

संवत् 2067 वि. में 1 नवम्बर, सन् 2010 ई. को 12 घं. 53 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर मघा नक्षत्र एवं सिंह राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव वक्री होकर पुनः कुम्भ राशि में प्रविष्ट होंगे तथा 6 दिसंबर, सन् 2010 ई. तक गुरुदेव कुम्भ राशि में रहेंगे।

कुम्भ–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(1 नवम्बर से 6 दिसंबर, सन् 2010 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीर–कष्ट	धनलाभ	भय	आधि–व्याधि

संवत् 2067 वि. में 6 दिसंबर, 2010 ई. को 9 घं. 08 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर ज्येष्ठा नक्षत्र एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव पुनः मीनराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2067 वि. के अन्त तक मीन राशि में ही रहेंगे।

मीन–राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(6 दिसंबर, सन् 2010 ई. से संवत् 2067 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय

राहु के संचार का शुभाशुभ फल

सं. 2066 वि. में 17 नवम्बर, सन् 2009 ई. को 12 घं. 09 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर अनुराधा नक्षत्र एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय राहु धनु राशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2067 वि. के अन्त (किंवा आगे 6 जून, सन् 2011 ई.) तक धनु राशि में ही संचरण करेगा।

धनु–राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(17 नवंबर, सन् 2009 ई. से संवत् 2067 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि→	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनहानि	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह

अथ नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुम–संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव–संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगु–कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्द–मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूत तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यःपठेत्सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर –नारी–नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

आकाशी कौंसिल का विचार(सं. 2067 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

❖ संवत् 2067 वि. की ग्रहपरिषद् का राजा मंगल होने से अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप एवम् कहीं उग्रवादजन्य घटनाओं से देश में यदा–कदा अशान्ति बने। संवत् का मन्त्री बुध होने से देश में महंगाई बढ़े, जनता में आक्रोश रहे।

❖ संवत् के मध्य शनि–राहु–मंगल के समसप्तक एवम् षडष्टकयोग शासनतन्त्र एवम् विशिष्ट राजनीतिज्ञों के लिए भयावह परिणामों वाले हैं।

❖ इसवर्ष की ग्रहस्थिति भारत को शक्तिसम्पन्न देशों की कोटि में स्थापित करने वाली है। अणुशक्तिसम्पन्न देश होकर भारत प्रगति की राह पर अग्रेसर रहे।

❖ विश्व की महाशक्तियों में अग्रगण्य अमेरिका के प्रधान के लिए संवत् 2067 वि. की ग्रहस्थिति भारी कठिन एवम् संकटापन्न स्थिति को लेकर उपस्थित हो रही है।

❖ पाकिस्तान एवम् अन्य मुस्लिमराष्ट्रों में विशेष घटनाचक्र चलेगा। किसी यावन–देशविशेष की शासनसत्ता में अचानक परिवर्तन; कहीं उग्रवादियों द्वारा प्रधाननेता की हत्या के प्रयास।

❖ जुलाई, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से कहीं भारी जनधनहानि की संकेतक ग्रहस्थिति।

❖ भारतीय जनता पार्टी संकट में, पार्टी में आवश्यक संशोधन–संवर्धन के लिए मन्थन।

❖ भारत में महंगाई से केन्दीय एवम् प्रान्तीय शासक परेशान।

❖ भारतीय शासनप्रणाली एवम् प्रमुख नेताओं के जन्माङ्ग पर ज्योतिष–शास्त्र के आधार पर विश्लेषण।

❖ देश–विदेश में घटित होने वाले घटनाचक्र पर ज्योतिष–दृष्ट्या चर्चा एवम् भारत के साथ अन्य प्रमुख देशों के सम्बन्धों का चित्रण।

" जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे भी ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं।" हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिष–शास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है;–

" ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।" – (श्रीमद्भागवतपुराण)

ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताडित समस्त समाज, व्यक्ति किंवा देश की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मनः।।"

स्पष्ट है कि– उस परोक्ष–अज्ञात–अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से संचालित ब्रह्माण्ड में कभी भूकम्प, समुद्री–बर्फानी तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट एवं जनजीवन में उग्र–विनाशक घटनाएं स्पष्ट अनुभव की गई हैं।

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति ही ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

श्री वि संवत् 2067 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान् प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 82 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 83 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित्त भविष्यवाणियों में साधारणवर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल आश्चर्यचकित

कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग–गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

यह बात भी नितांत सत्य है, कि ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है, कि– आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है;– इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि का ही परिणाम है। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्ड पंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते रहते हैं और यह इस प्रकाशन का 83वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

भारत–पाक विभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्री जवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाक युद्ध; भारत–चीन युद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजरात सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाज़शरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सेंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमरीका की कोलम्बिया आन्तरिक्ष यान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु; संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभानिर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004ई. को अमरीका में भूकम्प एवं सं. 2065 वि. में नेपाल में राजाशाही के समाप्ति की भविष्यवाणी एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है।

संवत् 2063 वि. में ईराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा, 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी, भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन सिंह जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना, मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण, 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई को पीरू के भयंकर भूकम्प, 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान, 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प; *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा, 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी, 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प, 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प, 10 अगस्त के लगभग नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति की भविष्यवाणी एवम् अन्य अवाक् कर देने वाली सहस्रों सफल भविष्यवाणियों का श्रेय "श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाग" को ही जाता है।

इस प्रकार अव्यभिचरित भविष्यवाणियों के लिए यह पंचांग सम्पूर्ण भारत किंवा विदेशों में भी ख्यातनामा हो चुका है।

सं. 2067 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर भावी घटनाओं पर विचार करने से पूर्व सभी स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा करना तो स्थानाभाव के कारण यहां संभव नहीं है, लेकिन गत एक–दो वर्षों की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करना प्रासंगिक समझते हैं, ताकि फलितशास्त्र की प्रामाणिकता को स्थापित किया जा सके।

(1) भविष्यवाणी– "21 जून को मंगल सिंहराशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार शनि–मंगल 9/10 अगस्त, 2008 ई. तक एक–साथ चलेंगे। ग्रहस्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि– नेपाल में राजशाही के लिए सन् 2008 ई. का समय बहुत ही चिन्ताजनक परिस्थिति बना देगा। यहां जन–असन्तोष से अराजकता की स्थिति को संभालना कठिन होगा। माओवादियों में बढ़ रहे असन्तोष से नेपाल की तराई में स्थित मधेशियों के विरुद्ध हिंसा एवं जनधनहानि के योग संवत्–मध्य में स्पष्ट दिखाई देते हैं। सन् 2008 ई. की ग्रहस्थिति नेपाल में गणतन्त्र के पक्ष में जाती है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 24, कॉलम 2, स्टैंज़ा 3)

इस भविष्यवाणी की सत्यता सर्वविदित है। ठीक, 21 जून से 10 अगस्त के मध्य नेपाल में ऐतिहासिक राजतन्त्र समाप्त हुआ और गणतन्त्र की स्थापना का श्रीगणेश हो गया। इसी बारे पृ. 29 पर की गई भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं। पढ़ें–

(2) भविष्यवाणी– "सरकार और माओवादियों के बीच राजशाही और चुनावप्रणाली पर सहमति में कठिनाई आएगी। यहां माओवाद फिर देश को कठिन परिस्थितियों में लाकर खड़ा कर देगा। माओवादियों के हिंसक काण्ड भारत सरकार के लिए चिन्ता का कारण बनेंगे। *इसवर्ष सन् 2008 ई. की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार नेपाल में राजशाही की समाप्ति और एक स्वतन्त्र लोकतन्त्र की स्थापना सुनिश्चित है। लेकिन माओवाद यहां की शासनसत्ता पर किसी न किसी तरह काब्ज़ रहेगा।* "

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 29, कॉलम 1, स्टैंज़ा 2)

आज भी नेपाल में लोकतन्त्र के नाम पर शासन–सूत्र माओवादियों के अधीन है। इन उल्लिखित दो भविष्यवाणियों की सत्यता पर हमें नेपाल से भी अनेकों पत्र प्राप्त हुए हैं।

(3) भविष्यवाणी– "मुम्बई में ताज होटल पर सब से बड़ा उग्रवादी हमला"– संवत् 2065 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग के पृ. 29, कॉलम 2 पर पहला स्टैंजा पढ़ें–

" ध्यान दें– 27 नवम्बर के लगभग सू. बु. चं. मं.– ये चारों ग्रह अनुराधा नक्षत्र में होंगे, जोकि मार्गशीर्ष मास में किसी विशेष दुर्घटना का संकेत देते हैं। इस समय सरकार को

शत्रु की गतितिधि से सावधान रहना होगा। इसवर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में द्वितीया तिथि का क्षय होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति किंवा राजनीतिज्ञ का पद खाली होने का संकेत मिलता है–

" मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत्।।"

कहीं दुर्भिक्ष व कहीं रोगजन्य व उग्रवादी गतिविधियों के कारण जनता परेशान रहे।

ध्यान दें– 26/27 नवम्बर के पाक्षिक फलादेश में भी मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा किए गए हमले का संकेत स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार किया गया था–

" शनिवारी संक्रान्ति एवम् पक्षमध्य में सू. बु. चं. मं. का वृश्चिक राशि एवं एक नक्षत्र में रहना देश में किसी अघटित घटना को जन्म देगा। ..... कहीं उग्रवादजन्य गतिविधि से जनधन की हानि भी हो।"

(देखें– 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' 2065 वि., पृ. 120 का पाक्षिक फलादेश)

जब पिछले वर्ष 26 नवम्बर, सन् 2008 ई. को मुम्बई में आतंकवादी हमला हुआ था तो भारतीय पुलिस, सुरक्षाबलों तथा एन.एस.जी. कमांडोज़ को पाकिस्तानी हमलावरों का सफाया करने में 60 घंटे लगे थे।

आतंकवादियों ने 163 लोगों की हत्या तथा 370 लोगों को जख्मी किया था। इसका मुकाबला करते हुए आतंकवादनिरोधक सैल (ए. टी. ऐस.) के प्रमुख हेमन्त करकरे व उनके सहयोगी 2 अधिकारी, पुलिस के 15 जवान, सेना के मेजर उन्नी कृष्णन तथा एन.एस.जी. का एक कमांडो शहीद हो गए थे। सुरक्षाबलों व कमांडोज ने 8 आतंकवादियों को मार गिराया था।

उस समय होटल ताज, होटल ओबराय व नरीमन हाऊस में घुसे आतंकवादियों का सफाया करने में लगे 60 घंटों की सभी ओर से आलोचना हुई थी तथा तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री शिवराज पाटिल को इस्तीफा देना पड़ा था।

(4) भविष्यवाणी– " 14 नवम्बर, 2008 ई. को भारतीय यान चन्द्रमा पर पहुंचा, तिरंगा फहराया, भारत चौथी विश्वशक्ति के रूप में उभरा" – एतत् संबन्धी भविष्यवाणी पढ़ें –

"('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 27, कॉलम 1, स्टैंज़ा 2 पर)

" स्वतन्त्र भारत के 62वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार धनस्थानेश गुरु धनस्थान में भाग्येश चन्द्र के साथ मिलकर 'गजकेसरीयोग' बना रहा है, जोकि भारत की आर्थिक सम्पन्नता में भारी अभ्युदय का संकेत देता है।"

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2065 वि., पृ. 27, कॉलम 2, स्टैंज़ा 1, लाईन 13 में भी स्पष्ट घोषणा की गई है, कि गणतन्त्र–वर्षाङ्क में 'बुधादित्ययोग' गणतन्त्र की महिमा एवं वर्चस्व को उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर ही रखेगा।

(5) भविष्यवाणी– "संवत् 2066 में मुस्लिम (हिजरी) सन् 1431 का बादशाह शनि ही है। कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में युद्धमय वातावरण या आन्तरिक क्रान्ति से विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में चिन्ता रहे। जनधनहानि किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि भी हो। विश्व के कुछ देशों में भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से हानि की सम्भावना है। देश में नानाप्रकार के रोग फैलेंगे। शनि–मंगल–इतवार एवम् गुरुवार वाले दिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 38 कॉलम 1, स्टैंज़ा 3)

(i) ठीक इस भविष्यवाणी के अनुसार 'स्वाइन फ्लू' रोग से शासनतन्त्र चिन्तित हो रहा है।

(ii) पाक में आन्तरिक अशान्ति, विस्फोट, स्वातघाटी में उग्रवादियों के साथ सैन्य संघर्ष भी इस भविष्यवाणी की सफलता का स्पष्ट निदर्शन है।

(6) भविष्यवाणी–" *श्री बराक ओबामा की जन्मकुण्डली में भाग्येश बुध कर्मस्थान में अपने मित्र सूर्य के साथ स्थित है, इस पर गुरु–शनि की दृष्टि भी है। गुरु की कर्मस्थान पर उच्चदृष्टि महत्त्वपूर्ण है। ध्यान दें– जनवरी 2009 ई. में जब अमेरिका में राष्ट्रपतिपद का निर्वाचन होगा, उस समय गुरु मकर राशि में स्थित होकर उच्चदृष्टि से श्री बराक ओबामा के कर्मस्थान को देखेगा और कर्मेश चन्द्र (जोकि इनके जन्माङ्ग में उच्चहोकर अष्टम भाव में स्थित है) पर भी गुरु की विशेष दृष्टि पड़ेगी। शनि में गुरु का अन्तर मई 2009 ई. के लगभग तक प्रभावित करेगा। आगे बुध (श्रीबराक ओबामा के भाग्येश) की दशा निश्चितरूप से कुछ कर दिखलाने की क्षमता देगी एवं यशप्रद रहेगी।*

उल्लिखित यथालब्ध दोनों प्रतिद्वन्द्वियों की कुण्डलियों के विश्लेषण से श्री बराक ओबामा राष्ट्रपतिपद के समर्थ दावेदार सिद्ध होंगे–ऐसा विचार है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही है।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 40, कॉलम 1, अन्तिम स्टैंज़ा)

ठीक, इस घोषणा के अनुसार श्री बराक ओबामा अमेरिका के नए राष्ट्रपति बने।

(7) भविष्यवाणी– "यू.पी.ए. की कुण्डली का चिन्तन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है, कि–राहु की महादशा में शुक्रान्तर चल रहा है। इस पार्टी के प्रधान श्री मनमोहन सिंह जी की कुण्डली के अनुसार राहु की महादशा में केत्वन्तर राजनैतिक दृष्टि से कठिन परिस्थितियों वाला ही रहेगा। सत्ता में रहने के लिए भारी प्रयास करने होंगे। लेकिन अन्ततः गोचर में मकरस्थ गुरु की कर्मस्थान पर दृष्टि इन्हें पुनः सफलता प्रदान करने वाली होगी, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 1, स्टैंज़ा 3)

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार **U.P.A.** के प्रधान श्रीमनमोहन सिंह जी को पुनः प्रधानमन्त्रित्व प्राप्त हुआ।

(8) श्रीराहुल गान्धी जी के बारे में भविष्यवाणी–

"राजनैतिक दृष्टि से 4 मार्च, 2010 ई. तक की ग्रहस्थिति इनके (श्रीमती सोनिया गांधी के) एवं श्रीराहुल गांधी जी के लिए भारी प्रगतिप्रद होगी। सबल–सशक्त राजनीतिज्ञ एवं पार्टी– सुप्रीमो की दृष्टि से इन्हें भारी मान्यता प्राप्त होगी। श्रीराहुल गांधी को आगे सम्मान्यपद उपलब्ध होने का योग भी है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 1, स्टैंज़ा 5)

यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्यापित होती जा रही है। जोकि सार्वजनिक रूप से स्पष्ट है।

श्रीलालकृष्ण आडवानी जी के बारे में की गई भविष्यवाणी भी पढ़ें–

(9) भविष्यवाणी– " **श्रीलालकृष्ण आडवानी** की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार कर्मेश सूर्य का भाग्येश चन्द्र के साथ समसप्तकयोग बनना इन्हें पार्टी के प्रमुख पद पर स्थापित करता है, लेकिन कर्मेश सूर्य नीच होकर द्वादशस्थ होकर षष्ठेश मंगल एवं आयेश बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाता है। यह ग्रहस्थिति देश के प्रधानपदप्राप्ति में बाधक है।"

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 44, कॉलम 2, स्टैंज़ा 3)

भाजपा ने श्रीलालकृष्ण आडवानी जी को देश के भावी प्रधानमन्त्री के रूप में स्थापित करना चाहा था। उक्त भविष्यवाणी के अनुसार यह सम्भव न था। इस प्रकार यह भविष्यवाणी शत–प्रतिशत सत्य सिद्ध हुई।

हिमाचल प्रदेश में श्री प्रेमकुमार धूमल जी की प्रतिष्ठा बढ़ी, लोकसभानिर्वाचनों में भाजपा को बहुमत–

(10) भविष्यवाणी– " **हिमाचल प्रदेश**–इस प्रदेश की नामराशि कर्क एवं प्रभावराशि मीन है। प्रारम्भिक ग्रहस्थिति यहां के प्रमुख शासक श्रीप्रेम कुमार धूमल के शासनकाल में इस प्रान्त को ऐतिहासिक कार्य–कलापों एवं चीन आदि से सुरक्षा की दृष्टि से अपनाए गए नए आयामों, रेलमार्ग आदि के प्रोग्रामों से भारी यश एवं सफलता प्रदान करने वाली है। '**कुछ कर दिखाने की क्षमता**'– इनको श्रेय एवं जनता का प्रेय प्रदान करेगी। वर्षप्रवेश कुण्डली में सप्तमस्थ उच्चशुक्र एवं गोचरस्थ मकर का गुरु, राहुयुत होकर धूमल जी की नामराशि से पंचमभाव में होने से मई, 2009 ई. तक इनकी यश–प्रतिष्ठा एवं विरोधी ग्रुप को हतप्रभ कर देने वाली ग्रहस्थिति बनाता है। लोकसभानिर्वाचनों में भाजपा की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' सं. 2066 वि., पृ. 45 कॉलम 1, स्टैंज़ा 4)

पाठको ! श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2067 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' पर आधारित है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं, इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2067 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

शुभ संवत् 2067 वि. का राजा क्रूर ग्रह 'मंगल' है। इस संवत् की ग्रहपरिषद् में पांच पद क्रूरग्रहों को एवं 5 पद सौम्य ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। इस ग्रहपरिषद् में महाक्रूरग्रह शनि को कोई भी औहदा उपलब्ध नहीं है।

इस संवत् का राजा किसान एवं औद्यौगिक क्षेत्र का प्रतिनिधि ग्रह 'मंगल' है। मंगल को भौम नाम से जाना जाता है, क्योंकि यह 'भूमि का पुत्र' है। संवत् का राजा होने के साथ–साथ मंगल को वर्षा–पानी अर्थात् मेघेश का पद भी इस ग्रहपरिषद् में प्राप्त है। संवत् के राजा को स्वभावतः संवत् की संवैधानिक शक्तियां उपलब्ध होती हैं। संवत् 2067 वि. का मन्त्री बालग्रह बुध है। बुध ग्रह वर्षेश–मंगल का शत्रु होने से यह वर्ष शासनतन्त्र में कुछ विशिष्ट घटनाक्रम को प्रदर्शित करेगा। न्याय–संवैधानिक प्रणाली में इसवर्ष विशेष संशोधन होंगे। गतवर्ष सं. 2066 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग के पृ. 37, कॉलम 1, स्टैंज़ा 1 में हमने लिखा था कि– " इसवर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार न्यायपालिका और शासनप्रचालक पद्धति में काफी मतभेद उजागर हो सकते हैं। इस प्रकार कार्यपालिका और न्यायपालिका में मतभेद से देश की स्थिति का सुधार करने के लिए विशेष कानून बनाने पड़ेंगे।"

गतवर्ष सं. 2066 वि. में न्यायपालिका एवम् व्यवस्थापिका के अदारे में कुछ प्रमुख न्यायाधीश चर्चा में आए एवम् न्यायपालिका की कार्यप्रणाली में तीव्रता लाने तथा न्याय में पारदर्शिता हेतु सुप्रीमकोर्ट एवम् वरिष्ठ नेताओं को विशेष विचार–गोष्ठी का आयोजन करना पड़ा।

इसी प्रकार इसवर्ष की ग्रहपरिषद् की कार्यप्रणाली भी न्यायपालिका एवम् व्यवस्थापिका को सुधारात्मक पक्ष की ओर ले जाने वाली है। जिससे ग़रीब–अमीर सहज में न्याय पा सके, ऐसी प्रणाली या ऐसी व्यवस्था वाली तथा जजों पर अंकुश रखने वाली व्यवस्था लागू होगी।

संवत् का राजा मंगल होने से इसवर्ष में अग्निकाण्ड, बम–विस्फोट, प्राकृतिक उत्पात, चोरी–रोगों से परेशानी आदि की घटनाएं अधिक होंगी। शासकों एवम् विरोधी(विपक्षी)दलों में विधानसभा–लोकसभा में भारी विरोध रहे।

इसवर्ष चीन, नेपाल व पाक की तरफ से उग्रवादजन्य विभीषिका किंवा सीमाप्रान्तों पर भारी आतंक, सैन्य–हलचल से अचानक परेशानी बनेगी। सैन्यबल को सचेष्ट रहना होगा।

बुध के मन्त्रित्व में इसवर्ष खाद्य पदार्थों की महंगाई भयंकर रूप धारण करेगी, जिससे साधारण जनमानस में शासन के प्रति रोष उभरेगा।

शुक्र के सस्येश एवम् नीरसेश होने से गेहूं, चावल, ईख की फसल अच्छी हो; अगर, कपूर, सोना आदि में मूल्यवृद्धि बनी रहे।

इसवर्ष धान्येश एवम् धनेश– ये दो पद गुरु को प्राप्त हैं। खाद्य पदार्थों की फसल उत्तम हो, किसानवर्ग में धनधान्य–समृद्धि रहे।

इसवर्ष का रसेश सूर्य को एवम् फलेश–दुर्गेश– ये दो पद चन्द्र को प्राप्त हैं। चन्द्र दुर्गेश होने से सैन्यबल को सुसन्नद्ध नहीं रख सकेगा। सेना में कहीं मनमानी की भावना किंवा कहीं स्वेच्छाचारित्व का प्रदर्शन शासन को चिन्तित कर सकता है।

ग्रहपरिषद् के मन्त्री बुध के अतिरिक्त सभी पदाधिकारी मंगल (वर्षेश) के मित्र होने से शासनतन्त्र में परस्पर तालमेल अच्छा बना रहेगा। भारत किंवा विश्व के अन्य प्रगतिशील देश प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेंगे।

संवत् 2067 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत् लग्न कुण्डली के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं पर एक नज़र

जगत्लग्नकुण्डली में लग्नेश मंगल नीच होकर चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थेश चन्द्र व्ययस्थान में शनि की दृष्टि में है। शनि सारा वर्ष कन्याराशि में ही रहेगा एवम् इसकी नज़र दक्षिणदिशा की तरफ रहेगी। स्पष्ट है, कि– यह वर्ष विश्व के विशेषतः पाक, अमेरिका एवम् भारत के प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों एवम् राजनैतिक महाशक्तियों के लिए बहुत दुर्धर परिस्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। पाकिस्तान एवं अन्य मुस्लिम–राष्ट्रों के नायकों के लिए भी यह संवत् 2067 संकटापन्न स्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, विस्फोट कुछ राष्ट्रों की शान्ति को भंग करेंगे। प्रधान नेतृत्व के लिए यह योग विशेष चिन्ताकारक हैं।

वर्षेश (जगत) लग्न कुण्डली

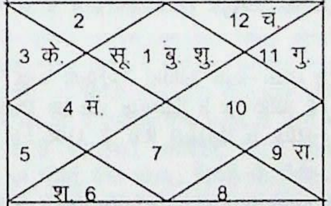

14 अप्रैल, 2010 ई., 6 घं. 57 मि.

जगत्लग्नकुण्डली में द्वितीयेश (धनेश) शुक्र, बुध एवं सूर्य के साथ द्वितीयभाव से व्ययस्थान में स्थित है; अतः विश्व के राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए प्रमुख राष्ट्र कुछ नई राजनैतिक प्रतिक्रिया में निरत रहेंगे, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय प्रव्रजन प्रभावित होगा। वर्षेश–कुण्डली में दशमभाव पर नीचशनि की दृष्टि एवम् कर्मेशशनि की शत्रु (छठे) भाव में स्थिति उग्रवादजन्य परेशानियों को बृहत्तर करेगी, जिससे भारत–अमेरिका आदि देश उग्रवाद– समापनार्थ प्रमुख भूमिका निभाने के लिए विवश होंगे। चतुर्थ भावेश चन्द्र गुरु के क्षेत्र में (व्ययस्थान) में शनि से दृष्ट होने से अनेकों विपरीत परिस्थितियों में भी समृद्ध किंवा प्रभावशाली देश अपनी सम्प्रभुता को तो बनाए रखेंगे, लेकिन इसवर्ष अमेरिका का प्रधान नेतृत्व उग्रवादजन्य विभीषिका से अछूता नहीं रहेगा; एतदर्थ विशेष सुरक्षाप्रबन्धन अनिवार्यतः करने चाहिएं। जग्त्लग्नकुण्डली में मकर राशि पर मंगल की उच्चदृष्टि भारत के प्रभावक्षेत्र को सुदृढ रखेगी। उग्रवाद–विभीषिका के बिरुद्ध प्रबुद्ध देशों को एकमञ्च पर उतरना होगा,– तभी जनजीवन प्रगति की ओर बढ़ सकेगा।

वर्षेश–कुण्डली के अनुसार यह वि. संवत् 2067 भारत, अमेरिका, पाक एवम् अन्य देश विशेष के लिए वरिष्ठ नेताओं के जीवन के लिए विशेष संकटापन्न ऐतिहासिक घटनाओं वाला रहेगा,– ऐसा संकेत मिलता है,– सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

जगत्लग्नकुण्डली में सप्तमेश शुक्र की सप्तमभाव पर पूर्णदृष्टि है एवम् मंगल की विशेष दृष्टि भी सप्तमभाव पर है। अतः मुस्लिम राष्ट्र–विशेष के लिए मुस्लिम –उग्रवाद कैंसर सिद्ध होगा और यह समाप्त नहीं होगा तथा उग्रवादजन्य दुष्परिणाम चिन्ताजनक रहेंगे। जगत्लग्नकुण्डली के अनुसार श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, पौष एवम् फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण सिद्ध होंगे।

स. 2067 वि. 'शोभन' नामक संवत्सर के नाम से जाना जाएगा। इसवर्ष नानाविध रोगों किंवा दुर्घटना, प्रकृतिक प्रकोपजन्य कष्टों से अनेकत्र जनता कष्ट में रहे। लेकिन कुछ भूभाग पर जनता में सुख एवम् धन–धान्यसमृद्धि रहे, वर्षा पर्याप्त हो–

" शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोग–शोकदा।
तथापि सुखिनो लोकाः बहु–सस्यार्घ–वृष्टिभिः।।"

इस संवत् का 'राजा मंगल' है। मंगल अग्नितत्त्व प्रधान ग्रह है। भूमिहरों (किसानों) एवम् औद्यौगिक क्षेत्रों को विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। सैन्यबल में प्रगति के विशेष पथ प्रशस्त होंगे। बड़े नगरों में कहीं अग्निकाण्ड, प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प आदि)

व कहीं उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। चोरी, ठगी किंवा जातीय उपद्रव, हत्याकाण्ड भी मंगल कराता है। प्रधान राजनैतिक पार्टियों में परस्पर कलह रहे।

इसवर्ष सं. 2067 वि. में भारत–पाक एवम् चीन–भारत सीमाओं पर सैन्यजमावड़ा एवम् युद्धजन्य विभीषिका से जनमानस एवम् शासनतन्त्र को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। सीमाप्रान्तों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखना होगा। राजा मंगल होने से प्रजा में नए–नए रोग फैलें, वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव होगी। इसवर्ष का मन्त्री बालग्रह बुध होने से प्रधान नेता की मनमानी चले एवम् विशेष प्रभाव बना रहेगा।

सं. 2067 वि. का दुर्गेश (सेनापति) स्त्रीग्रह चन्द्र होने से इस संवत् के पूर्वार्ध में अच्छे किंवा प्रतिष्ठित पदों पर मातृशक्ति (स्त्रीजाति) का वर्चस्व प्रखर रहेगा। आगे कानूनन स्त्रीजाति को गरिमा प्रदान करने के लिए वैधानिक तौर पर लगभग 20 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने के योग भी हैं। इसवर्ष के दुर्गेश को दृष्टि में रखते हुए भारत के सैन्य–समृद्धीकरण में विशेष ध्यान दिया जाएगा। अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, पाक, इराक, ईरान में विशेष घटनाएं घटेंगी। कहीं नस्लभेद, कहीं उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, कहीं राजनैतिक–धार्मिक उलझनें कठिन परिस्थिति में देशविशेष को लाकर खड़ा कर देंगी। समुद्र–तटवर्ती देशों में कहीं समुद्री तूफान, भयंकर भूकम्प व चक्रवात आदि प्राकृतिक आपदा से भारी जनधनहानि के योग इसवर्ष के मध्य के लगभग घटित होने के संकेत मिलते हैं।

16 मार्च से 14 अप्रैल तक सूर्य–शनि का समसप्तक योग बनेगा। दोनों प्रबल–शत्रुग्रह हैं। नक्सली अपनी शक्तिसत्ता का विस्तार करेंगे। भारत के आसाम–त्रिपुरा–नागालैण्ड–झारखण्ड आदि में इनकी शक्ति को नज़र अन्दाज़ करना आगे चलकर भयानक परिणामों वाला सिद्ध होगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अप्रैल, सन् 2010 ई. में धार्मिक स्थलों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखना होगा, क्योंकि इस समय उग्रवादजन्य किसी घटना किंवा किसी दुर्घटना से जनधनहानि के योग बनते हैं।

17 अप्रैल को बुध वक्री होकर 20 अप्रैल को अस्त होगा एवम् 20 अप्रैल को शुक्र वृषराशि में आ जाएगा। धन–धान्यसमृद्धि रहे। कहीं वायुवेग के साथ हानि के योग भी बनते हैं।

2 मई को गुरु मीनराशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा एवम् इसी समय बुध–सूर्य का शनि के साथ षडष्टकयोग बन रहा है। इस समय बुध एवम् शनि वक्री हैं। महाराष्ट्र, उडीसा आदि में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। जल–अग्नि–वायुजन्य प्रकोप से भी हानि संभव है।

15 मई को शुक्र मिथुन में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इस समय शुक्र–केतु ये दोनों शनि की दृष्टि में हैं। 20 मई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में एवम् 24 मई को केतु भी आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता है। 26 मई को मंगल सिंह राशि में आकर गुरु के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। यह सारी ग्रहस्थिति मई मास में किसी विशेष प्राकृतिक आपदा का संकेत देती है। ध्यान रहे;– **द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्लपक्ष 13 दिन का पक्ष है एवम् वैशाख अधिकमास भी है।** कहीं दुर्भिक्ष एवम् कहीं सीमाप्रान्तों पर युद्धाग्नि प्रज्वलित हो। कहीं विस्फोट आदि दुर्घटना से जनधनहानि भी हो।

शनि 13 जनवरी, 2010 ई. को वक्री होगा और 30 मई, 2010 ई. को यह मार्गी हो रहा है। 10 जून को शुक्र कर्कराशि में आकर गुरु की दृष्टि में आ जाएगा। यह स्थिति प्रगतिशील देशों के लिए शुभ है। नए–नए कार्यक्रम प्रगतिप्रद रहेंगे।

15 जून को सूर्य एवम् 22 जून को बुध भी मिथुन राशि में आकर शनि के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएंगें। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान में कुछ अप्रिय घटनाएं घटित होंगी। 19 जून से 5 जुलाई तक बुध का अतिचारी होना भी देशविशेष में किसी विशिष्ट घटना का संकेत देता है।

5 जुलाई को शुक्र मघा सिंह में आकर मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। कहीं वर्षा के अवरोध से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी एवम् कहीं बाढ़ से भी भारी हानि सम्भव है। 20 जुलाई को मंगल कन्याराशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। **23 जुलाई को गुरु वक्री होगा। यह ग्रहस्थिति कहीं बम–विस्फोट, कहीं भूकम्प किंवा समुद्री तूफान व भयंकर बाढ़ से भारी जनधनहानि का संकेत देती है। 21 अगस्त तक यह ग्रहस्थिति विशेष प्रभावी रहेगी।** 8 से 10 जुलाई तक एवम् 16 अगस्त से 5 सितम्बर तक दुर्घटना में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा।

5 सितम्बर को मंगल तुलाराशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। 17 सितम्बर को सूर्य कन्याराशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना लेगा। 16 अक्तूबर तक यह ग्रहस्थिति प्रभावी रहेगी। इस अवधि में किसी वरिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा।

19 अक्तूबर को शनि उदित होगा एवम् मंगल वृश्चिक राशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाएगा। इस समय मंगल पर गुरु की दृष्टि भी है। ध्यान दें;– 19 अक्तूबर **को ही आश्विन शुक्ल पक्ष में शुक्र पश्चिम में अस्त हो जाता है,** अतः यह राजनीतिज्ञों में मतभेद उजागर करेगा एवम् कहीं किसी अप्रत्याशित घटना से कष्टप्रद समाचार मिलने की संभावना बनाता है। 25 अक्तूबर तक इस ग्रहस्थिति का प्रभाव रहेगा। 1 नवम्बर को वक्री गुरु पू.भा.– 3 कुम्भ में आएगा। 3 नवम्बर को शुक्र पूर्व में उदित होगा।

ध्यान दें;– 19 अक्तूबर से 28 नवम्बर तक मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। " युद्धदौ शनि–माहेयौ"– प्रमाणानुसार सीमाप्रान्तों पर माओवादी, पाक या चीनी सेना की गतिविधि वातावरण को अशान्त कर सकती है। कहीं यानदुर्घटना में जनधनहानि एवम् किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो।

29 नवम्बर, 2010 ई. से 7 जनवरी, सन् 2011 ई. तक धनुराशि में मंगल–प्लूटो एवम् राहु एकसाथ चलेंगे। इसी बीच 6 दिसम्बर को गुरु मीनराशि में आ जाता है। भयंकर वर्षा–तूफान एवम् भयंकर भूकम्प से नेपाल, चीन, अमेरिका, जापान, पाक–भारत में कहीं भारी जनधनहानि संभव है।

नोट करें;– 28 दिसम्बर, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक मंगल अतिचारी रहेगा एवम् पौष कृष्ण अमा को मंगलवारी खण्डग्रास सूर्यग्रहण है, अतः किसी विशिष्ट प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ के निधन से किसी देशविशेष में शोक व्याप्त होने का योग है।

26 जनवरी, सन् 2011 ई. को शनि वक्री हो रहा है। 15 फरवरी, 2011 ई. को मंगल कुम्भराशि में आकर शनि को देखेगा और शनि–मंगल का षड्ष्टकयोग भी शुरु हो जाएगा। 13 मार्च से संवत् के अन्त तक गुरु अतिचारी रहेगा। शनि के वक्री होने से कुछ देशों में आन्तरिक कलह से क्रान्ति जैसी स्थिति बनेगी। 25 मार्च को मंगल मीनराशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग भी बनाएगा। अतः पाक में उग्रवादजन्य विभीषिका से स्थिति नाजुक हो सकती है। सीमाप्रान्तों पर इस समय विशेष सतर्क रहना आवश्यक है।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2010 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

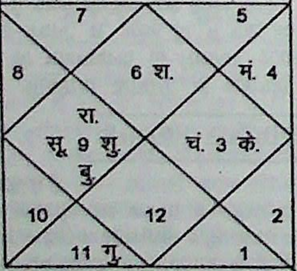

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1 जनवरी, 2011 ई.
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

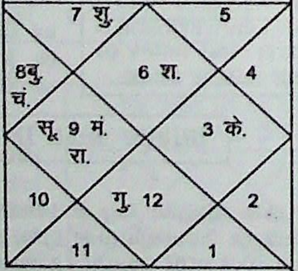

कुण्डली नं. (1) के अनुसार यूरोपीय देशों का नववर्ष चन्द्रग्रहण की छाया में शुरु हुआ है। लग्नेश बुध और धनेश–नवमेश शुक्र– दोनों अस्त हैं। तृतीयेश और अष्टमेश मंगल आमदन भाव में नीच है। यह ग्रहस्थिति इन देशों में व्यापारिक क्षेत्रों की दृष्टि से विशेष प्रगतिप्रद मालूम देती है। क्योंकि धनस्थान पर गुरु की विशेष दृष्टि है और कर्मस्थान पर भी गुरु की दृष्टि है, संघर्षमय स्थिति में भी ये देश अग्रेसर होते नज़र आएंगे। जर्मनी, नॉर्वे, फ्रांस, डेनमार्क, स्पेन, हॉलैण्ड, यूक्रेन आदि यूरोपीय देश ग्रहस्थिति के अनुसार अच्छी प्रगति करेंगे। लेकिन उग्रवाद से कहीं भारी अशान्ति संभव है।

13 जनवरी से 28 अगस्त तक की ग्रहस्थिति–अनुसार यूरोपीय देश काफी अग्रेसर होंगे। यूरो की कीमत में बढ़ोतरी होगी। 6 फरवरी से लेकर संवत् के अन्त तक गुरु, शुक्र का अतिचारी होना एवम् शनि का वक्री होना यूरोपीयं देशों में कहीं संघर्ष की स्थिति पैदा करेगा।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (2) के अनुसार लग्नेश बुध नीच चन्द्र के साथ तृतीयभाव में है। इन पर (लग्नेश बुध, आयेश नीच चन्द्र एवम् लग्नस्थ शनि पर) बृहस्पति की दृष्टि है। लेकिन लग्नेश–आयेश पर शनि की भी विशेष दृष्टि है। संकेत मिलता है कि– अमेरिका, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, ब्रिटेन एवम् कन्या, वृश्चिक, मेष, तुला तथा मकर नाम–प्रभावराशि वाले देशों में कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा उग्रवादजन्य आपदाओं से कहीं न कहीं भारी जनधनहानि होगी। मंगल–राहु एवम् सूर्य चतुर्थभाव में एकत्र हैं, जोकि जनवरी, 2011 ई. में प्राकृतिक आपदा से कहीं भयंकर जनधनहानि कर सकते हैं। 4 जनवरी (भौमवती अमा) को सूर्यग्रहण किसी वरिष्ठ राजनीतिज्ञ को भारी आपदा में डालकर मृत्युतुल्य कष्ट दे सकता है या किसी वरिष्ठ व्यक्ति का पद रिक्त होगा। 14 जनवरी, 2011 ई. के लगभग मकर राशिस्थ सूर्य–मंगल विश्व में विशेषतः यूरोपीय देशों में आर्थिक सन्तुलन को बिगाड़ सकते हैं। 15 फरवरी को मंगल कुम्भराशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। 25 मार्च से शनि–मंगल का समसप्तकयोग यूरोप के देशों में कहीं उग्रवादजन्य भयंकर घटनाओं से भारी परेशानी बढ़ाएगा। अमेरिका, ब्रिटेन आदि विशिष्ट देशों के प्रधान नेताओं को अपनी सुरक्षा पर ध्यान देना होगा। किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के साथ दुर्घटना घटित हो सकती है। फ्रांस में नस्लभेद की भावना से भारत के सम्बन्ध कटु हो सकते हैं।

मुस्लिम राष्ट्र

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
19 दिसं., सन् 2009 ई., शनिवार
17 घं. 20 मि. (सूर्यास्त समय)

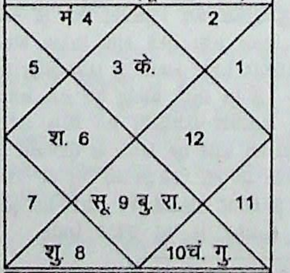

हिजरी सन् 1431 (1 मुहर्रम)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
8 दिसं., सन् 2010 ई., बुधवार
17 घं. 17 मि. (सूर्यास्त समय)

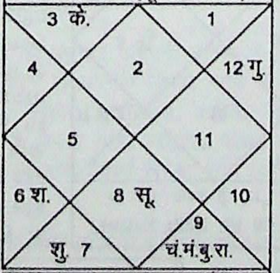

हिजरी सन् 1432 (1 मुहर्रम)

मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली नं. (1) के अनुसार– हिजरी सन् 1431 का राजा शनि है। कन्याराशिस्थ शनि की वृश्चिकस्थ शुक्र एवम् लग्नस्थ केतु पर दृष्टि है। कन्याराशि पाकिस्तान की नाम राशि है। कुण्डली (1) में मंगल–गुरु दोनों नीचस्थिति में परस्पर समसप्तकयोग बना रहे हैं। सष्ट है, कि– पाकिस्तान में आतंकी अपनी जड़ें बहुत गहरी जमा चुके हैं। पेशावर से कराची और इस्लामाबाद से लाहौर तक तालिबानी विस्फोटक स्थिति बना देंगे– ऐसा संकेत मिलता है। तालिबानी आतंकवादी अफगानिस्तान में भी वातावरण को अशान्त करते रहेंगे। कबायली क्षेत्रों के निवासी चीनी मुस्लिम–विद्रोही संगठन चीन में भी आतंकवादी हमले करके वहां की शान्ति को भंग कर सकते हैं। अक्तूबर के लगभग की ग्रहस्थिति के अनुसार पाक में आतंकवाद और अधिक बढ़ेगा। 14 मार्च, 2010 ई. से 13 अप्रैल

तक शनि–सूर्य का समसप्तकयोग एवम् मंगल, शनि की गोचरस्थिति के अनुसार मुस्लिम राष्ट्रों में भारी उपद्रव, भूकम्प एवम् अन्य प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग बनते हैं। पाकिस्तान जम्मू–काश्मीर में आतंकवादियों की घुसपैठ व हिंसक गतिविधियों में संलग्न रहेगा। नेपाल के रास्ते जाली भारतीय करंसी, हथियार, ड्रग्स एवम् विस्फोटक भिजवाकर भारत के साथ सम्बन्ध बिगाडेगा। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है, कि– मुस्लिम राष्ट्रविशेष हिंसक तालिबान व अंन्य आतंकवादियों से ग्रस्त रहेंगे। यह तालिबान, अमेरिका एवम् पाकिस्तान के लिए जल्दी ही भस्मासुर बन जाएगा और पाक फिर विघटन के मार्ग पर आकर खतरनाक संकट में पड सकता है। 20 जुलाई, 2010 ई. से 4 सितम्बर, 2010 ई. तक मुस्लिम राष्ट्रों में से कुछ राष्ट्रों को भारी संकट का सामना करना पड़ेगा। इस संवत् 2067 वि. के मध्य कुछ यावनराष्ट्–नायकों को अपने देश में होने वाली अराजकता का सामना करना कठिन हो जाएगा। कुछ मुस्लिम वरिष्ठ नेता हिंसा के शिकार भी हो सकते हैं। कुण्डली नं. (1) के अनुसार आश्विन तक मुस्लिमराष्ट्रों मे स्थितियां नेतृत्व के लिए कठिन हैं, या पाकिस्ताद आदि में नेतृत्व परिवर्तन के योग हैं।

कुण्डली नं. (2) के अनुसार– वृश्चिकस्थ सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि है। मंगल, राहु, चन्द्र, बुध– ये अष्टमभाव में एकत्र हैं। अफगानिस्तान, पाक, इराक, ईरान, कुवैत एवम् मालदीव आदि मुस्लिमराष्ट्रों में उग्रवाद एवम् आन्तरिक अशान्ति से जनधनहानि के योग बनते हैं। यहां के विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन को खतरा है। इन्हें अपने सुरक्षाप्रबन्धों को सुदृढ करना होगा। सेना किंवा सुरक्षात्मक पंक्ति में भी आई. एस. आई. के एजेंट स्थानीय नेतृत्व को परेशानी में डाल सकते हैं। दिसम्बर, 2010 ई. से विशेषत: 15 फरवरी से संवत् के अन्त तक शनि–मंगल की स्थिति किसी मुस्लिमराष्ट्र की शासनसत्ता में अचानक परिवर्तन ला सकती है। यहां के शासकों के लिए ग्रहस्थिति काफी चिन्तनीय मालूम देती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा

श्रीबराक ओबामा के राष्ट्रपति पद पर सफलता की भविष्यवाणी 19 सितम्बर, 2008 ई. को 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' सं. 2066 वि. में पृष्ठ 40 पर हम स्पष्टरूप से पहले ही कर चुके हैं।

जन्माङ्ग श्रीबराक ओबामा
4th August, 1961 - 13.06 P.M.
at HONOLULU (HAWAI)(U.S.A)

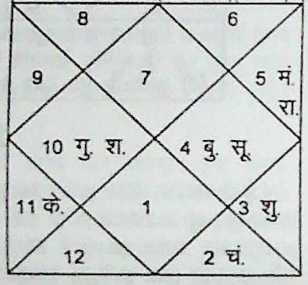

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल सप्तमेश एवम् द्वितीयेश होकर सिंहराशिस्थ शनि के साथ चलेगा। 1 मई, 2010 ई. से 15 मई तक, 20 जुलाई से लगभग 19 अक्तूबर, 2010 ई. तक एवम् 15 फरवरी, 2011 ई. से अप्रैल, 2011 ई. तक की ग्रहस्थिति की अवधि में श्री ओबामा को अन्तर्राष्ट्रीय एवम् देशान्तर्गत परिस्थितियों की गहनता को ध्यान में रखकर काम करना होगा। उल्लिखित समयावधियों में इन्हें आत्मसुरक्षा के साधनों को सुदृढ रखना आवश्यक है, अन्यथा उग्रवादजन्य घटना या निजदेशान्तर्गत रंगभेदनीति का दुष्परिणाम दुःखद घटनापूर्ण हो सकता है।

संवत् 2067 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत–सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अंनन्त प्रकृति अग्नि–ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" इस प्रकार समस्त घटनाचक्र एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाला ग्रहपुञ्ज प्रकृति किवा ईश्वर के अनुशासित कार्यक्रम का एक निदर्शन है, जोकि– गोचर ग्रहगति के संकेतानुसार हमें प्रतिवर्ष कुछ लिखने को प्रेरित करता है।

स्वतन्त्र भारत का 63 वां वर्ष

संवत् 2066 वि. में स्वतन्त्र भारत के 63वें वर्ष का उदय 14 अगस्त, 2009 ई. को रात्रि में 21 घं. 28 मि. (भा.स्टै.टा.) पर हो रहा है। 63वें वर्ष की कुण्डली में मंगल की शनि पर विशेष दृष्टि है। मुंथेश चन्द्र एवं द्वितीयेश–अष्टमेश मंगल पर शनि एवम् गुरु की विशेष दृष्टि भी है। 16 अगस्त को सूर्य सिंह राशि में आकर अपने शत्रुग्रह शनि के साथ मेल करेगा और इसी दिन मंगल की नज़र शनि पर से हट जाएगी। यह ग्रहस्थिति भारतीय लोकतन्त्र में कई विषम–परिस्थितियों को स्पष्ट तो करेगी, लेकिन प्रधान सक्षम–नेतृत्व परिस्थिति पर नियन्त्रण रखेंगे और भारत की गरिमा–यश–सम्मान देश–विदेश में उज्जवल रहेगा।

स्वतन्त्र भारत का 63 वां वर्ष
14 अग., 2009 ई. ($21^{h.}$ $28^{m.}$)

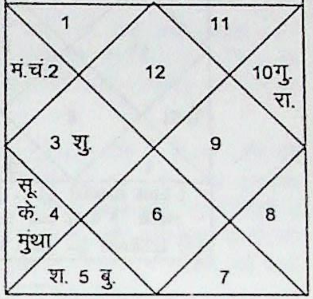

9 सितम्बर, सन् 2009 ई. को शनि कन्याराशि में आकर इसवर्ष पुनः मंगल के साथ दशम–चतुर्थसम्बन्ध बनाएगा, जिस कारण भारत में पाक द्वारा संवर्धित उग्रवाद कहीं भारी आतंकपूर्ण वातावरण बना सकता है। पाक की नामराशि में शनि का पदार्पण आगे सीमां प्रान्तों पर भारी अशान्ति पैदा करेगा। 5 अक्तूबर, 2009 ई. से 25 मई, 2010 ई. तक मंगल कर्कराशि में ही चलेगा और 16 नवम्बर, 2009 ई. तक मकरराशिस्थ राहु एवम् गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। 13 जनवरी, 2010 ई. को शनि वक्री हो रहा है। मंगल पहले ही 20 दिसम्बर, 2009 ई. को वक्री हो चुका है। इस प्रकार दोनों क्रूरग्रह 2 मार्च, 2010 ई. तक वक्र ही रहेंगे। भारत में माकपा एवम् वाम मोर्चे का अस्तित्व क्षीण होगा, भाजपा के अन्तर्कलह एवम् सिद्धान्त–मुद्दाविहीन राजनीति से भारत सरकार का विपक्ष क्षीण होगा, जिससे कांग्रेस पार्टी की सरकार कुछ मुद्दों पर मनमानी करेगी। ध्यान दें, कि– 5 अक्तूबर, 2009 ई. से 13 जनवरी, 2010 ई. एवम् 20 जुलाई, 2010 ई. से 16 अगस्त, 2010 ई. तक की समूची ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है, कि– भारत विश्व के सर्वाधिक आतंकवाद–प्रभावित देशों में से एक होगा। पाक में पनप रही तालिबानी

उग्रवादप्रक्रिया पाक को तो नष्ट करेगी ही परन्तु भारत के कुछ महानगरों में विस्फोट, तथा किसी प्रतिष्ठितव्यक्तिविशेष की हत्या से भारत को भी भारी हानि पहुंचा सकती है। भारतीय शासनतन्त्र अनुभव करने लगेगा कि– भारत आतंक–विरोधी लड़ाई जीतने में अक्षम है। सरकार को आतंकवाद से निपटने के लिए पुलिस एवम् सुरक्षाबलों को आधुनिक शस्त्र, संचार उपकरण, बेहतर प्रशिक्षण से सुसन्नद्ध करना होगा, अन्यथा माओवाद, आतंकवाद एवम् नक्सलवाद भारत के आसाम, त्रिपुरा आदि में पाक जैसी खतरनाक स्थिति बना सकते हैं।

5 अक्तूबर, सन् 2009 ई. से 13 जनवरी, 2010 ई. के लगभग एवम् 20 जुलाई, से 16 अगस्त, 2010 ई. तक की अवधि में भारत के किसी क्षेत्र में भयंकर प्राकृतिक आपदा या विस्फोट आदि से भारी जनधन हानि संभव है किंवा किसी हादसे में व्यक्तिविशेष के निधन से शोक व्याप्त होगा।

स्वतन्त्र भारत का 64वां वर्ष

स्वतन्त्र भारत का 64 वां वर्ष
14 / 15 अग., 2010 ई. (3घं. 37मि.)

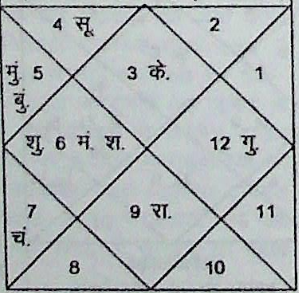

स्वतन्त्र भारत के 64वें वर्ष का उदय मिथुन लग्न में हो रहा है। लग्नेश बुध मुन्था के क्षेत्र में लग्न से तृतीयस्थ है। तृतीयेश सूर्य मुन्थेश होकर द्वितीय स्थान में गुरु से दृष्ट है। ग्रहगति से स्पष्ट संकेत मिलता है, कि– आगामी समय एशियन देशों में भारत तेज़ी से आर्थिक प्रगति की ओर अग्रेसर होगा। भारत द्वारा सभी क्षेत्रों में विकास बचत की बढ़ती दर प्रगतिशील देशों को आश्चर्यचकित कर सकती है। दूसरे देशों द्वारा विशेषरूप से पूंजीनिवेश भारत में होगा और देश प्रगतिपथ पर आगे बढ़ेगा। लेकिन 64वें वर्ष की स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में चतुर्थ भावस्थ शनि–मंगल एवम् नीच शुक्र कन्या नाम राशि वाले, किंवा मीन, मेष, वृश्चिक राशि वाले देशों में से किसी देश–विशेष, पाक, चीन या नेपाल आदि के साथ सीमांप्रान्तों पर अशान्ति बनेगी। सीमा मुद्दा गरमाएगा, सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे। व्यापारिक सम्बन्ध भी बिगड़ेंगे। 16 अगस्त से 16 अक्तूबर, 2010 ई. तक एवम् 19 अक्तूबर से 28 नवम्बर, 2010 ई. तक भारत के कुछ प्रतिष्ठित नगरों में उग्रवाद से एवम् किसी प्राकृतिक आपदा से भारी जन–धनहानि के योग बनते हैं।

29 नवम्बर, 2010 ई. से 8 जनवरी, सन् 2011 ई. तक मगल राहु का एकराशि–सम्बन्ध एवम् 15 फरवरी, 2011 ई. से संवत् के अन्त तक शनि–मगल का षडष्टकयोग कहीं किसी सम्मान्य वरिष्ठ व्यक्ति के पदरिक्त होने की सूचना देता है। सीमाप्रान्तों पर शत्रुद्वारा सैन्यबल का प्रयोग देश के लिए अशान्ति का कारण बन सकता है। किसी देश विशेष में नेतृत्व–परिवर्तन की संभावना भी इस वर्ष में विशेष घटना के रूप में जानी जाएगी। यह वर्ष सीमावर्ती देशों की कुनीति एवम् उग्रवादजन्य गतिविधि से काफी संकटपूर्ण रहेगा, लेकिन देश की गरिमा, प्रगति एवम् गौरव हमेशा उज्जवल रहेगा।

भारतीय गणतन्त्र का 61वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र का 61 वां वर्ष
26 जन. 2010 ई. (19घं. 30मि.)

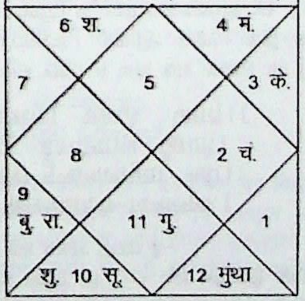

भारत के 61वें (इकसठवें) गणतन्त्र की वर्षकुण्डली के अनुसार लग्नेश सूर्य, तृतीयेश–दशमेश शुक्र के साथ मकरराशि (छठे भाव) में स्थित है। इनपर नीच मंगल की दृष्टि भी है। सिंह लग्न, शनि–मंगल से खलाक्रान्त है। मुंथेश गुरु शनिक्षेत्र में सप्तमस्थ है। शनि द्वितीयभाव (कन्याराशि) में है। नवमेश मंगल खर्च खाने में नीच है। इस ग्रहस्थिति के अनुसार आर्थिक संकट व खाद्यपदार्थों की महंगाई के कारण विश्व के बहुत से देशों में लोग भुखमरी के शिकार हो सकते हैं। जिससे कुछ देशों में आन्तरिक शान्ति एवम् सुरक्षा को खतरा पैदा हो सकता है। इस स्थिति का प्रभाव भारत पर भी दिखाई देगा। लेकिन गणतन्त्र की मौजूदा कुण्डली में नवमेश मंगल एवम् कर्मेश शुक्र का समसप्तकयोग भारत की प्रभुसत्ता को अक्षुण्ण रखेगा।

इसवर्ष गणतन्त्र की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार पश्चिमी बंगाल के आदिवासी माओवादियों में भुखमरी के कारण अराजकता एवम् संघर्षात्मक स्थिति बनने के योग हैं। मध्यप्रदेश में चंबल के डकैतों एवम् झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिमी बंगाल एवम् महाराष्ट्र में नक्सलवादियों के विरुद्ध सख्त अभियान चलाने को विवश होना पड़ेगा। अन्यथा देश की आन्तरिक सुरक्षा को भारी धक्का लगेगा एवम् अनेकत्र भारी जनधनहानि होने के योग हैं।

भारतीय गणतन्त्र की राष्ट्रपति महामहिमामयी श्रीमती प्रतिभा पाटिल महाभागा के समक्ष 19 जुलाई से 19 अक्तूबर, 2010 ई. तक एवम् 15 फरवरी, 2011 ई. से अप्रैल, 2011 ई. तक की समयावधि मे भारतगणतन्त्र से सम्बन्धित अनेकों समस्याएं आएंगी, लेकिन इन्हें विचारपूर्वक देश को सही दिशा देने का श्रेय प्राप्त होगा।

संवत् 2067 वि. की गोचर–ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

सम्पूर्ण विश्व 'कार्य–कारण सिद्धान्त' पर अपनी गतिमत्ता बनाए हुए है। ज्योतिषशास्त्र 'ग्रहस्थिति' को कारण मानकर सम्पूर्ण विश्व में संचालित घटनाचक्र का आकलन करता है।

'श्रीमद् भागवत् पुराण' के चतुर्थ स्कन्ध के 11वें अध्याय के श्लोक नं. 17 में स्पष्टरूप से घोषित किया है कि–निर्गुण परामात्मा तो संसारचक्र को संचालित करने में केवल निमित्तमात्र है। उसी के आश्रय से कार्य–कारणात्मक जगत् उसी प्रकार भ्रमण करता है, जिस प्रकार चुम्बक के प्रभावक्षेत्र में रहता हुआ लौहखण्ड चुम्बक के अनुरूप इधर–उधर संचलित होने पर विवश होता है–

" निमित्तमात्रं तत्रासीन्निर्गुणः पुरुर्षभः।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं यत्र भ्रमति लौहवत्।।"

संवत् (2067 वि.) की नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश गुरु तृतीय भाव में शनि के क्षेत्र में है। शनि कन्याराशि में वक्रस्थिति में है एवम् गुरु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। इस समय नीचस्थ मंगल भी गुरु के साथ षडष्टकयोग बना रहा है। स्पष्ट है, कि– कुछ माओवादी माकपा एवम् अन्य ग्रुप जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास नहीं रखते, वे भी सुरक्षाबलों पर प्रहार कर सकते हैं। ये पार्टियां देश के आधादर्जन से भी अधिक राज्यों को दूषित कर रही हैं। इसवर्ष छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आसाम आदि में भारी उपद्रव होंगे। इन उपद्रवों को कानूनव्यवस्था के नज़रिये से हल करने की नीति असफल रहेगी। जम्मू–काश्मीर भी सरकार के लिए सिरदर्द रहेंगा। इसलिए तेज़ी से बढ़ रही माओवादी किंवा सभी प्रकार की हिंसा पर कन्ट्रोल करने के लिए स्पष्ट व प्रभावशाली कार्यवाही में देरी करना भारी भूल सिद्ध होगी।

संवत् 2067 वि. की नववर्ष प्रवेशकुण्डली

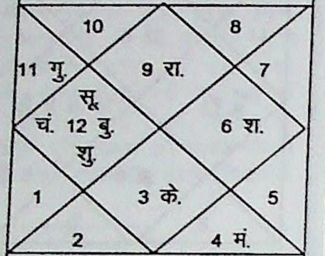

15/16 मार्च, सन् 2010 ई.
(2 घं. 31 मि.)

वर्षप्रवेशकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष कुछ प्रतिष्ठित पोलिस ऑफिसरज, मिलिट्री–जवान एवम् राजनयिक उग्रवादी हिंसा के शिकार होंगे, प्रतिष्ठित नगरों नें प्रमुख स्थानों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा।

नववर्षप्रवेशकालीन कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–राहु का दशम–चतुर्थ, पंचमेश मंगल का अष्टमभाव में नीच होना, सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र का शनि के साथ समसप्तकयोग इसवर्ष में वैश्विक तापमान में वृद्धि से भयंकर परिणामों का संकेत देता है। इस ग्रहस्थिति का परिणाम इसवर्ष विनाशकारी समुद्रीतूफान, कहीं समुद्रतटवर्ती भूभाग में विनाशलीला का दृश्य उपस्थित कर सकता है। कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ से भारी जनधनहानि संभव है। जलवायु–परिवर्तन (ऋतुविपर्यय) आदि से भयंकर संक्रामक बीमारियों व जनता की स्वास्थ्यसम्बन्धी अन्य परेशानियों से लाखों जानें जा सकती हैं, क्योंकि उल्लिखित ग्रहथिति वैश्विक तापमान में अचानक तबदीली का संकेत देती है। शनि–राहु आदि की स्थिति/दृष्टि के विचार से एवम् इसवर्ष में क्रूरग्रहों के समसप्तकयोग–चिन्तन से ज्ञात होता है, कि– बिहार, उड़ीसा, मणिपुर, बंगाल, आसाम में किसी प्राकृतिक आपदा से भारी कष्टमयस्थिति का सामना करना पड़ेगा एवम् कहीं उग्रवादजन्य–हिंसक घटनाओं से भारी जनधनहानि का भी संकेत मिलता है। शनि की दृष्टि किसी धार्मिक समारोह/स्थान पर भी हानि करेगी।

संवत् 2067 वि. का प्रारम्भ मंगलवार को हो रहा है। मंगल कर्क राशि में है। वर्षारम्भ में सूर्य–शनि का समसप्तकयोग 13 अप्रैल तक चल रहा है। इसवर्ष गुजरात से जम्मू–काश्मीर तक भारत–नेपालसीमा तथा भारत–बंगलादेशसीमा पर भारत सरकार को अधिक चौकस रहना पडेगा, अन्यथा बॉर्डर एरिया से नकली करंसी, हेरोइन, शस्त्र–सहित आतंकवादी भारत में प्रवेश करके वातावरण को अशान्त कर सकते हैं। शनि कन्या राशि में है, इस दृष्टि से सीमा पर सावधान रहना नितान्त आवश्यक है।

संवत् के आरम्भ से पूर्व ही शनि वक्र स्थिति में है। बुध–शुक्र दोनों 19 अप्रैल तक मेष राशि में ही रहते हैं। लेकिन 20 अप्रैल को वक्री बुध को शुक्र मेष राशि में ही छोड़कर वृषराशि में आ जाएगा, जोकि कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि का संकेत देता है।

2 मई को बृहस्पति मीन राशि में आकर वक्री शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। 15 मई से 27 मई तक द्वि.(शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष त्रयोदशदिनात्मक (13 दिन का) है। ध्यान दें; शुक्ल पक्ष का त्रयोदशदिनात्मक होना विशेषरूप से जनकष्टदायक माना गया है। इस त्रयोदशदिनपक्ष का फल ('देहली–दीपक न्याय' से) 12 जून शनैश्चरी अमा तक अनुभव होगा। शास्त्र में 13 दिन के पक्ष का फल इस प्रकार लिखा है–

"यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश–दिनात्मकः।
तदा कालो भवेद्घोरो मुण्डमालायुता मही।।
अनेक युग सहस्रेषु दैवयोगाच्च जायते।
त्रयोदश दिनः पक्षस्तदा संहरते जगत्।।"

भारत के कुछ प्रान्तों एवम् विश्व के कुछ राष्ट्रों में कहीं घोर अकाल की स्थिति बने, सीमाप्रान्तों पर कहीं भयंकर युद्ध का वातावरण अशान्ति बनाए। कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा (समुद्री तूफान, विस्फोट, भूकम्प आदि) से भारी जनधनहानि का भी योग बनता है। मई/जून, सन् 2010 ई. में इसवर्ष किसी प्रमुख व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो जाना भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष का परिणाम होगा। लिखा है–

" एकत्रपक्षे द्वितिथि–प्रपाते महर्घमन्नं जनमध्य वैरम्।
तत्पक्ष–नाशे मरणं नृपाणाम्"......... इत्यादि।

इस समयावधि में देश में महंगाई जोर पकड़ेगी राजनैतिक पार्टियों में

वातावरण अशान्त रहेगा। इसवर्ष वैशाख अधिकमास होने से खाद्यान्नों में महंगाई की सूचना मिलती है। 15 मई को मिथुनस्थ शुक्र एवम् 26 मई को सिंह राशि का मंगल भी महंगाई को लेकर जनता में भारी रोष पैदा करेगा।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में एवम् 22 जून को बुध के मिथुन राशि में आने पर सूर्य, बुध एवम् केतु शनि की नज़र में आ जाएंगे। 22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आकर कहीं अतिवृष्टि, कहीं घोर अकाल की स्थिति बनाएगा, क्योंकि इन पर शनि की दशम दृष्टि है। जून के द्वितीय सप्ताह में अमेरिका, जापान, अफगानिस्तान, पाक आदि में कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग बनते हैं।

26 जून, शनिवार को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण, जोकि पूर्वी भारत में दृश्य होगा, अनेकत्र दुर्भिक्षकारक प्रतीत होता है।

5 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवम् सिंह राशि में प्रवेश करके अग्नितत्व–प्रधान ग्रह मंगल के साथ मेल करेगा। इस समय वर्षा की कमी अनुभव होगी। कुछ प्रान्तों में फसलें सूखेंगी। पानी की कमी से कुछ प्रान्त अकालग्रस्त होंगे। यह ग्रहस्थिति अगस्त के प्रारम्भ तक प्रभावित करेगी। 20 जुलाई को मंगल कन्या राशि में आकर शनि के साथ एकराशि–एक नक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा। यह ग्रहस्थिति अघटित घटनाओं को जन्म देगी। पाक में कट्टरपन्थी समूह रक्तक्रान्ति या रक्तविहीन क्रान्तिकारी योजनाओं से सं. 2067 में सत्तापरिवर्तन कर सकते हैं। इस्लामी कानून वहां विशेषरूप से लागू हो सकते हैं। शनि–मंगल का यह एकराशि–सम्बन्ध 4 सितम्बर तक चलेगा। इस समयावधि (20 जुलाई से 4 सितम्बर, 2010 ई. तक) में नेपाल, पाक एवम् चीन से सटी सीमाओं पर भारतीय सशस्त्र सैनिकों को सचेष्ट रहना अनिवार्य है, अन्यथा सीमाप्रान्तों पर भारतीय नक्सलवादियों को नेपाली माओवादियों, पाकिस्तानी जेहादियों एवम् चीनी उग्रवादियों द्वारा आधुनिक हथियार प्राप्त होंगे, जिससे देश की आन्तरिक स्थिति बिगड़ेगी एवम् हत्याकाण्डों में भारी जनधनहानि के रूप में जनता को कष्ट झेलना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में सैन्यबल का प्रयोग अनिवार्य हो जाएगा।

24 जुलाई को गुरु वक्री होगा। आगे श्रावण चान्द्रमास में (27 जुलाई से 24 अगस्त तक) 5 मंगलवार होने से अगस्त के दूसरे सप्ताह में कहीं भयंकर भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि संभव है। श्रावण में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या व निधन से राजनीतिज्ञों में क्षोभ पैदा होने का योग है। उग्रवादजन्य विभीषिका भी इस समयावधि में राजनीतिज्ञों के लिए सिरदर्द बनेगी।

श्रावण शुक्लपक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय होने से कार्तिक में कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन, किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा,–

"श्रावणे शुक्लपक्षे च तिथिः कापि क्षया भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते।।"

5 सितम्बर, 2010 ई. को मंगल तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा एवम् भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी (28 अगस्त को) शनिवारी है– यह ग्रहस्थिति मुस्लिम राष्ट्रविशेष के लिए भारी कठिन परिस्थिति को लेकर आएगी। कहीं उग्रवाद का प्रभाव भीषणरूप धारण करेगा। देश के अन्दर कहीं अराजकता एवम् हिंसा व्याप्त हो। इन दिनों कहीं सत्तापलट भी संभव है। भारत के किसी भाग में दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

16 सितम्बर को सूर्य–शनि का मेल प्रजा में कहीं शासकों के विरुद्ध रोष पैदा करेगा। महंगाई बहुत असह्य होगी। भाद्रपदशुक्ल सप्तमी को अनुराधा नक्षत्र होने से आगे वर्षा की बहुत कमी होने से फसल की हानि हो,–

"भाद्रपदे शुक्लपक्षे सप्तमी मैत्र–संयुता।
न वृष्टिर्न च पर्जन्यो जलाशां मुञ्च सर्वथा।।"

19 अकतूबर को मंगल वृश्चिकराशि में दाखिल होगा। शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि होगी। 28 नवम्बर, 2010 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि रहेगी। 19 अक्तूबर को (आश्विन शुक्ल पक्ष में) ही शनि उदित होगा और शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। शुक्लपक्ष में शुक्रास्त कहीं युद्धमय वातावरण बना सकता है एवम् किसी देश में आन्तरिक अशान्ति रक्तपात का कारण बनेगी,–

" शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा।
राजपुत्रसहस्राणां मही पिबति शोणितम्।।"

19 अक्तूबर से 28 नवम्बर, 2010 ई. तक की अवधि में कहीं दुर्भिक्ष व कहीं किसी व्यक्ति का पदरिक्त होगा, कहीं उग्रवादजन्य विस्फोट से जनधनहानि हो। अक्तूबर–नवम्बर में भयंकर भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक आपदा, यानदुर्घटना आदि से भी जनधनहानि के योग बनते हैं। 29 नवम्बर को मंगल धनुराशि में आकर राहु के साथ 7 जनवरी, 2011 ई. तक एकराशि–सम्बन्ध बनाते हुए विचरण करेगा। इस समय नेपाल में माओवादीनेता विशेष जनान्दोलन चला सकते हैं। इस संवत् 2067 वि. की नेपाल में यह क्रान्ति राष्ट्रविरोधी–अवसरवादी किंवा प्रतिक्रियावादी ताकतों को समाप्त कर सकती है एवम् एक सशक्तराष्ट्र के निर्माण के लिए प्रयास करेगी। इसका राजनैतिक प्रभाव भारतीय गणतन्त्र को प्रभावित करेगा।

ध्यान दें– वि. संवत् 2067 के अन्तिम 3–4 महीनों की ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है, कि– 4 जनवरी, 2011 ई. को मंगलवारी सूर्यग्रहण, 14 जनवरी से मंगल–सूर्य का मकर राशि में चलना, 26 जनवरी को शनि का वक्रत्व, 13 जनवरी, 2011 ई. को सूर्य का कुम्भराशि में आना एवम् 15 जनवरी, 2011 ई. को मंगल का भी कुम्भराशि में आकर सूर्य के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाना तथा शनि के साथ सूर्य–मंगल का षडष्टकसम्बन्ध (जोकि 13 मार्च, 2011 ई. तक चलेगा) इस समयावधि में कमरतोड़ महंगाई, बेरोजगारी, आन्तरिक सुरक्षा की कमजोरी से सीमावर्ती प्रान्तों में बढ़ रही नक्सलवादी हिंसा से शासनतन्त्र की सशक्तता पर प्रश्नचिह्न लगेगा। चीन देश भारतीय सीमाओं पर अपना

प्रभाव बढ़ाना चाहेगा। भारतीय सीमापंक्ति को इस समय सुदृढ़ रखना होगा, अन्यथा संवत् के अन्त तक चीन कभी भी घात करने की फिराक में रहेगा।

25 मार्च, सन् 2011 ई. को मंगल मीन राशि में आकर सूर्य–गुरु के साथ बैठकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। इस समय शनि वक्री है, गुरु–मंगल अतिचारी हैं;– यह ग्रहस्थिति सरकार द्वारा महंगाई पर अंकुश लगाने के प्रयासों को विफल करेगी। विपक्ष की कमज़ोरी (जोकि लोकतन्त्र के लिए विघातक है) सत्तारूढ़ पार्टी पर सुधार के लिए किए गए प्रयासों को विफल करती मालूम देगी–

> " यदा क्रूरग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः।
> तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्।।"

इस प्रमाणानुसार कहीं राजनीतिज्ञों में मतभेद उजागर हों, कहीं महंगाई से जनाक्रोश भी दिखाई दे।

सितम्बर, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से ज्ञात होता है कि– 29 नवम्बर तक शनि की मंगल पर दृष्टि, आगे राहु–मंगल का एकसाथ चलना एवम् 4 जनवरी, 2011 ई. को सूर्यग्रहण, 15 फरवरी से शनि–मंगल का षडष्टक एवम् 25 मार्च से संवत् 2067 वि. के अन्त तक शनि–मंगल का समसप्तक– ये सारे योग भारत के कुछ राजनीतिज्ञों के लिए अग्निपरीक्षा वाले सिद्ध होंगे। कहीं क्षेत्रीय निर्वाचनक्षेत्रों में भारी गहमा–गहमी रहेगी। कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड की घटना से अशान्ति का वातावरण बनेगा। राजनैतिक पार्टियां एक–दूसरे को नीचा दिखाने की नीति के अन्तर्गत घोषणापत्र प्रलोभनों से जनमन को प्रलुब्ध करने में तत्पर रहेंगी। इन दिनों (सितम्बर, 2010 ई. से फरवरी, 2011 ई. तक) उत्तर भारत में कांग्रेस का पलड़ा भारी रहेगा। अधिकतर सचेत देशभक्त एवम् जुझारू युवावर्ग आगे राजनीति की तरफ बढ़ेगा। देश लाभान्वित होगा। जिन प्रान्तों में इन दिनों विधानसभा के निर्वाचन होंगे, वहां विशेषतः हरियाणा में कांग्रेस बहुमत प्राप्त करेगी। महाराष्ट्र–झारखण्ड में भी कांग्रेस की स्थिति मज़बूत रहेगी। इस निर्वाचन में माकपा नेतृत्व को पश्चिमी बंगाल की स्थिति से चिन्तित रहना होगा। यहां तृणमूल कांग्रेस एवम् इंडियन नैशनल कांग्रेस का तालमेल माकपा को राजनैतिक चोट पहुंचा सकता है– ऐसा संवत् के अन्तिम मासों की ग्रहस्थिति से पता चलता है।

संवत् 2067 वि. की समूची ग्रहस्थिति का चिन्तन करने पर यह स्पष्ट भान होता है कि मीन का गुरु भारत की प्रभावराशि के स्वामी शनि पर अक्तूबर तक दृष्टिपात करेगा एवम् आगे 6 दिसम्बर, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक भारत की प्रभावराशि पर नजर रखेगा। अतः भारत अनेकविध समस्याओं से जूझने के बावजूद भी हर क्षेत्र में प्रगति करेगा एवम् अणुशक्तिसम्पन्न होकर विश्व की महाशक्तियों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अग्रेसर रहेगा। भारत में युवाशक्ति एवम् युवानेता का उदय होगा। भारत अपने समर्थ नेतृत्व में अवश्य तरक्की करेगा।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

कांग्रेस– संवत् 2067 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार कांग्रेस की स्थिति अधिक सुदृढ़ होने के योग हैं। मीन का गुरु कांग्रेस की कुण्डली के नवमेश एवम् दशमेश सूर्य–बुध पर दृष्टिपात करेगा, जोकि पार्टी के अन्तर्गत युवावर्ग को अधिक सशक्त बनाकर देश को राजनैतिक गरिमा प्रदान करेगा। 1 नवम्बर को वक्री गुरु कुम्भराशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा एवम् आगे यहां 5 दिसम्बर तक कुम्भराशि में ही बना रहेगा। इस समयावधि में केन्द्रीय शासनतन्त्र को भारी आर्थिक एवम् राजनैतिक संकटों से जूझना पड़ेगा। महंगाई एवम् आतंकवाद की समस्याएं विशेषरूप से उभरकर सामने आएंगी। जनता का आक्रोश बढ़ेगा। लेकिन कुम्भस्थ गुरु की कांग्रेसकुण्डली में तुलाराशिस्थ गुरु पर विशेष दृष्टि रहेगी। अतः सुयोग्य प्रधान नेतृत्व स्थिति पर नियन्त्रण पाने में सफल रहेगा। कांग्रेस–कुण्डली में लग्नेश गुरु एवम् द्वितीयेश शनि का समसप्तकयोग एवम् दशमेश बुध के व्ययस्थान में सूर्य के साथ क्षीण अवस्था में होने से 20 जुलाई, 2010 ई. से नवम्बर के लगभग तथा 15 फरवरी, 2011 से संवत् के अन्त तक की समयावधि प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है, निश्चितरूप से इन्हें सुरक्षा की दृष्टि से सचेत रहना चाहिए।

कांग्रेस पार्टी की कुण्डली

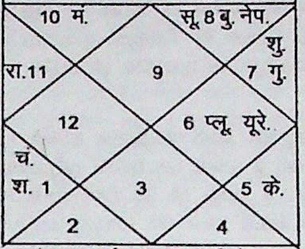

यू.पी.ए. की कुण्डली के अनुसार राहु में केतु, शुक्र, सूर्य के अन्तर इस संगठन को और मजबूत करेंगे। आगामी विधानसभा निर्वाचनों में इस संगठन एवम् कांग्रेसपार्टी का प्रभाव और प्रखर होगा, जिससे तीसरा मोर्चा नगण्य हो जाएगा।

श्रीमती सोनिया गांधी – श्रीमती सोनिया गांधी, (सुप्रीमो कांग्रेस) की जन्मकुण्डली के अनुसार इससमय बुध की महादशा में राहु का अन्तर 4 मार्च, सन् 2010 ई. तक चलेगा। बुध राशीश होकर त्रिकोण में सूर्य–केतु के साथ प्रभावक्षेत्र को बढ़ाता है एवम् राजनैतिक प्रखरता को प्रदान करता है। आगे बुध की महादशा में शनि का अन्तर 13 नवम्बर, 2012 ई. तक श्रीमती सोनिया गाधी को प्रभावित करेगा। क्योंकि, बुध व्ययेश है एवम् शनि सप्तमेश–अष्टमेश होने से इनके स्वास्थ्य को प्रभावित

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी,
जन्म 9 दिसं.,1946, 21$^{घं.}$ 15$^{मि.}$ (स्टैं.टा.)
TURIN (ITALY)

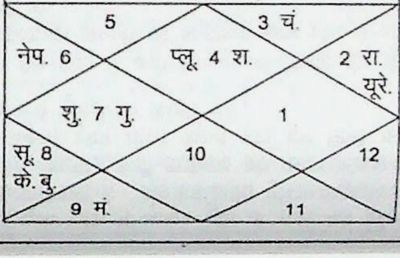

करेगा। किसी उग्रवादी ग्रुप की कुनीति से भी इस अवधि में इन्हें सचेत रहना आवश्यक है। अचानक कोई परेशानी आ सकती है। राजनीतिक खेमे में इन्हें भारी प्रतिष्ठा प्राप्त होती रहेगी, लेकिन मार्च, 2010 से 13 नवम्बर, 2012 ई. तक इन्हें अपनी सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए– प्रभु कृपा रखें।

प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहनसिंह जी– इनकी जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय राहु की महादशा में शुक्र का अन्तर फरवरी, 2011 ई. तक चलेगा। शुक्र षष्ठेश होकर नीचस्थ मंगल एवम् अष्टमेश चन्द्र के साथ अष्टमभाव में स्थित है। इनपर शनि की दृष्टि भी है। यह ग्रहस्थिति सम्मान्य प्रधानमन्त्री जी को स्वास्थ्य की दृष्टि से समस्यात्मक है। ध्यान दें, कि– राहु में मंगलान्तर अगस्त सन् 2014 ई. तक चलेगा। इस समयावधि में इनके स्वस्थ्य का विशेष ध्यान रखना परमावश्यक है, कभी भी स्वास्थ्यसम्बन्धी परेशानी खड़ी हो सकती है। लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भाग्येश–कर्मेश का कर्मस्थान में सम्बन्ध एवम् संवत् 2067 वि. में कुम्भ एवम् मीनस्थ गुरु इन्हें भारत की गरिमा को बरकरार रखने एवम् अणुशक्तिसम्पन्न देशों में भारत को सम्मान दिलाने में पूर्ण सफलता देगा। अमेरिका एवम् भारत तथा अन्य कुछ शान्तिप्रिय देशों की प्रगति के साथ विश्वशान्ति सुनिश्चित करने के लिए पारस्परिक स्वस्थसम्बन्धों के नए युग का सूत्रपात करने का श्रेय इन्हें प्राप्त होगा। कुछ प्रतिष्ठित देशों के साथ ससैन्य परमाणु समझौते को भी कार्यान्वित करने एवम् देश को अग्रेसर करने का यश इन्हें प्राप्त होगा। भारत के प्रधानमन्त्रियों के इतिहास में इन्हें हमेशा सम्मानपूर्वक देखा जाएगा। फिर भी ज्योतिष–दृष्ट्या हम लिखना उचित समझते हैं, कि– इनकी जन्मकुण्डली में शनि–मंगल का समसप्तक है, अतः इसवर्ष शनि–मंगल की स्थिति 20 जुलाई से 4 सितम्बर तक, 19 अक्तूबर से 28 नवम्बर तक तथा 15 फरवरी 2011 ई. से संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति कुछ चिन्तनीय है। इस समय इन्हें स्वास्थ्यरक्षार्थ एवम् शत्रुकृत कुनीति से विशेष सावधान रहना चाहिए, ताकि इनकी छत्रच्छाया में देश प्रगति की ओर अग्रेसर रहे।

जन्माङ्ग प्रधानमन्त्री, डॉ. मनमोहन सिंह
26 सितं., 1932, 14 घं. 0 मि. (गाहा–पाक)

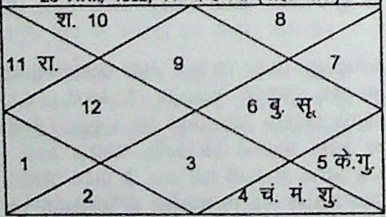

श्रीराहुलगान्धी– उदीयमान युवा नेता श्रीराहुल गांधी जी की जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है, कि–शनि भाग्येश एवम् कर्मेश होकर व्ययस्थान में नीचस्थ है, लेकिन शनि पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि है और शनि भाग्यस्थान को देख रहा है। ऐसी स्थिति में इन्हें राजनैतिक लाभ तो मिल सकता है। कांग्रेस– सदस्यों की सुधारवादी प्रक्रिया से देश एवम् पार्टी में नई सोच एवम् नई जागृति लाने के कारण इन्हें यशोलाभ होगा। इस समय चन्द्रमा की महादशा में राहु का अन्तर जून, 2010 ई. तक रहेगा। नवांश में भी शनि भाग्यस्थान को देखता है, जोकि इन्हें आगे जाकर उच्चपदाप्तियोग बनाता है। लेकिन चन्द्रमा में राहु के अन्तर में एवम् मंगल की महादशा में शनि के अन्तर तक इन्हें अपनी सुरक्षा को मजबूत रखना चाहिए। इनके प्रयास से पार्टी को बल मिलेगा, जो कि देश के लिए शुभ संकेत है।

जन्मकुण्डली श्रीराहुल गांधी
19 जून, 1970 ई., नई दिल्ली (5-05 A.M)

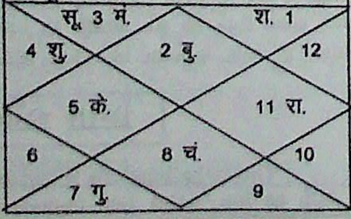

भारतीय जनता पार्टी– गोचर गणना के अनुसार इस पार्टी की ग्रहस्थिति का पर्यवेक्षण करने पर ज्ञात होता है, कि– पार्टी–सौहार्द एवम् पार्टी की एकता के क्षेत्र में गोचर में इसवर्ष शनि का संचार रहेगा। साथ ही साथ शनि का शत्रुग्रह मंगल भी इस संवत् में 2/3 बार ऐसी स्थिति में आ रहा है, जिससे ज्ञात होता है, कि भाजपा एक के बाद एक अनेक संकटों का सामना कर रही है एवम् इस साल की ग्रहस्थिति से यह संकट इस पार्टी में वैचारिक गुटबन्दी पैदा करेंगे एवम् संगठनात्मक–समस्याएं और पेचीदा हो जाएंगी, क्योंकि भाजपा की कुण्डली में शनि, मंगल, राहु भी संगठन के लिए कोई शुभ संकेत नहीं दे रहे। भाजपा की कुण्डली में चन्द्र छठे भाव में नीच है, एवम् चन्द्र पर मंगल की विशेष नज़र है। स्पष्ट है, कि इस पार्टी में प्राणपण फूंकने के लिए युवावर्ग को पार्टी में प्राथमिकता देनी होगी एवम् अन्तर्विरोधों से जूझ रही इस विपक्षी पार्टी को सबल बनाना देश के हित में होगा, क्योंकि गणतन्त्र में प्रबल–विपक्ष का होना भी देशहित में ही समझते हैं। इस संवत् में बृहस्पति के मीन राशि में आने पर 2 मई के बाद अक्तूबर तक इस पार्टी में मन्थनक्रिया शुरु होकर सदस्यों में आरोप–प्रत्यारोपों का बाज़ार खत्म होगा। गंभीर परिणामों का सामना करने के लिए ऐकमत्य से पार्टी को बल मिलेगा। 6 दिसम्बर, 2010 ई. से संवत् के अन्त तक अन्तर्कलह समाप्त होगा और आगे की सुध पार्टी ले सकेगी। पार्टी के निर्माण में श्रीराजनाथ सिंह, श्री अरुणजेतली एवम् श्रीमती सुषुमा स्वराज सशक्त भूमिका निभाएंगी।

कुण्डली भारतीय जनता पार्टी

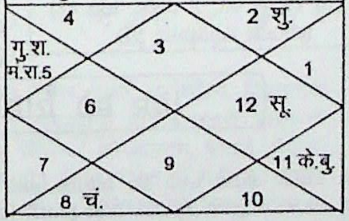

श्रीलालकृष्ण आडवानी– भाजपा के प्रतिष्ठित नेता श्रीलालकृष्ण आडवानी जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति एवम् गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार ज्ञात होता है, कि– इनका राजनैतिक दौर अभी समाप्तप्रायः भले ही मालूम दे, लेकिन पार्टीहित में इनका सहयोग अभी बना ही रहेगा। इसवर्ष 23 जुलाई, 2010 ई. से 17 नवम्बर तक की समयावधि इनके स्वास्थ्य के लिए एवम् राजनैतिक जीवन के लिए कठिन परिस्थितियों वाली है। तत्पश्चात्

जन्माङ्ग श्रीलालकृष्ण आडवानी (8-11-27)

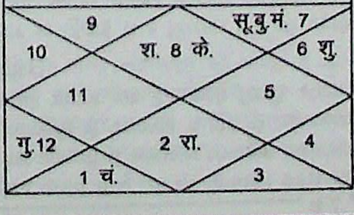

संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति पुनः इन्हें सम्मानित पार्टी सदस्य/नेता की दृष्टि से स्वीकारेगी, क्योंकि गुरु मीनराशि में आकर उच्चदृष्टि से भाग्यस्थान को देखेगा।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवम् नामराशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष कन्याराशि के शनि पर मीनस्थ गुरु की दृष्टि काफी समय तक चलेगी, जोकि यहां की शासनसत्ता के लिए शुभ है। लेकिन संवत् के शुरु से ही 29 मई, 2010 ई. तक शनि वक्री रहेगा, जोकि इस प्रान्त में लूटपाट आदि की घटनाएं कराएगा एवम् मंहगाई से जनता में रोष पैदा करेगा। कुछ स्थानीय धार्मिक झगडे और कुछ शहरी एवम् ग्रामीण विकास से सम्बन्धित मसले भी प्रधाननेता को परेशान करेंगे।

23 जुलाई से 5 दिसम्बर, 2010 ई. तक बृहस्पति वक्री रहेगा, जोकि यहां के प्रधाननेता एवम् राजनैतिक दलों के सदस्यों के लिए कहीं संकटमय वातावरण बनाएगा। कहीं प्राकृतिक आपदा, कहीं यानदुर्घटना से हानि के योग बनते हैं। इस प्रान्त मे आने वाले अढ़ाई (2½) वर्षों की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार यहां विपक्षी पार्टी का बल बढ़ेगा। इसवर्ष शिक्षा, चिकित्सा, कृषिविकास एवम् नए शिक्षण संस्थानों की स्थापना पर विशेष खर्च होगा।

हरियाणा– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवम् नामराशि मिथुन है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुनराशिस्थ केतु यहां जलवायु के कुछ अनुकूल न रहने से कृषकों को परेशान करेगा। यहां के कांग्रेसी नेता श्रीभूपेन्द्र सिंह हुड्डा मीन के गुरु में सशक्त शासक के रूप में सफल सिद्ध होंगे। क्योंकि, धनुराशि का स्वामी ग्रह स्वयं अपनी (मीन) राशि में प्रबल है। संवत् 2067 वि. से पहले की ग्रहस्थिति के अनुसार भी यहां कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व बना रहेगा। नवम्बर 2009 ई. से फरवरी, 2010 ई. तक इस प्रान्त के प्रधान नेता को अपनी पार्टी को भारी सफलता दिलाने एवम् सशक्त नेतृत्व को स्थापित करने का अवसर प्रदान करने वाली ग्रहस्थिति बन रही है। लेकिन श्री ओम्प्रकाश चौटाला साहिब की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार नवम्बर, 2009 ई. से मार्च, 2010ई. तक की ग्रहस्थिति उनके प्रभावक्षेत्र को मजबूत बनाएगी। दूसरी ओर ह.ज.कां. पार्टी भी अपना प्रभावक्षेत्र बढ़ाने में सफल होगी।

इस प्रान्त के प्रधानशासक (कांग्रेसी नेता) शिक्षा, विद्युत ऊर्जा, एवम् कृषि के क्षेत्र में प्रगति, पेयजल आपूर्ति, गरीबवर्ग को सुविधा एवम् बेरोज़गारी समाप्ति पर विशेष ध्यान देकर लोकप्रियता प्राप्त करेंगे।

हिमाचल प्रदेश– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवम् नामराशि कर्क है। संवत् के शुरु से 25 मई, 2010 ई. तक मंगल कर्कराशि में रहेगा किंवा द्वि.शुद्ध वैशाख शुक्ल पक्ष (15 से 27 मई तक) की ग्रहस्थिति के अनुसार यहां यानदुर्घटना से हानि के योग बनते हैं। 20 जुलाई से 4 सितम्बर 2010 ई. तक कन्याराशि के शनि–मंगल भी यहां के प्रधान नेतृत्व के सामने कुछ कठिन परिस्थिति को खडा करेंगे। लेकिन फिर भी श्रीप्रेमकुमार धूमल जी की ग्रहस्थिति के अनुसार इन्हें प्रशासनिक क्षेत्र में भारी यश प्राप्त होने के योग हैं। संवत् 2066 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृ. 45 पर हिमाचल प्रदेश शीर्षक के अन्तर्गत घोषण की गई थी कि– " वर्षप्रवेश कुण्डली में सप्तमस्थ उच्चशुक्र एवं गोचरस्थ मकर का गुरु, राहुयुत होकर धूमल जी की नामराशि से पंचमभाव में होने से मई, 2009 ई. तक इनकी यश–प्रतिष्ठा पद एवं विरोधीग्रुप को हतप्रभ कर देने वाली स्थिति बनाता है। लोकसभा निर्वाचनों में भाजपा की प्रतिष्ठा बढ़ेगी।"

इस वर्ष गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 23 जुलाई से 6 दिसम्बर तक की ग्रहस्थिति एवम् मेदिनी ग्रहस्थिति के अनुसार यहा प्राकृतिक आपदा, भयंकर हिमपात, भूस्खलन, भूकम्प, दुर्घटना आदि से हानि के योग बनते हैं।

पुनरपि–इस प्रान्त के नेता चीन आदि से सुरक्षा के बारे में विशेष प्रबन्धन पर केन्द्र का विशेष ध्यान आकृष्ट करेंगे। सुरम्य पर्यटनस्थलों को आकर्षक बनाने की योजनाएं बनाई जाएंगी। शिक्षा, कृषि, बाग़बानी (Horticulture), Medicinal Value की जडीबूटियों के संरक्षण पर ध्यानाकर्षण होगा। विद्युत–उत्पादन एवम् दुर्गम स्थानों को साधनसम्पन्न बनाने की योजनाए कार्यान्वित होंगी। यह प्रान्त श्री धूमल जी के नेतृत्व में प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की प्रभावराशि तुला है। नामराशि मकर है। इसवर्ष ग्रहपरिषद् का प्रधान मंगल है, जोकि संवत् के शुरु में नीचस्थ है। मकरराशि के स्वामी शनि के साथ मंगल का एकराशिसम्बन्ध, षडष्टक, समसप्तकयोग (26 मई से 19 जुलाई, 2010 ई. तक, 19 अक्तूबर से 28 नवम्बर, 2010 ई.; एवम् 15 फरवरी, 2011 ई. से संवत् 2067 के अन्त तक की अवधि में) यहां पाक–प्रेरित उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग हैं। उल्लिखित समयावधि में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति क पदरिक्त होने का भी योग है। भारत में विशेषदर्जाप्राप्त इस स्टेट में उग्रवाद की समाप्ति एवम् शान्ति स्थापित करने की नीति इस वर्ष सफल होती नज़र नहीं आ रही। इसवर्ष केन्द्र सरकार स्थानीय सरकार के सहयोग से यहां कुछ विशेष सुविधाएं देकर एवम् उग्रवाद का दमन करके जनमन को प्रभावित करेगी।

भारत का जलवायु एवं वर्षा

संवत् 2067 वि. में मेघेश (वर्षापानी) का मालिक ग्रह मंगल है। यही संवत् का राजा भी है। भूमि का पुत्र मंगल संवत् के आरम्भ से ही नीच स्थिति में 25 मई तक चलेगा, जोकि उत्तरी भारत में वर्षा का अवरोधक है। इसवर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से कुछ प्रान्तों में वर्षा की भयंकर कमी रहेगी, दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी।

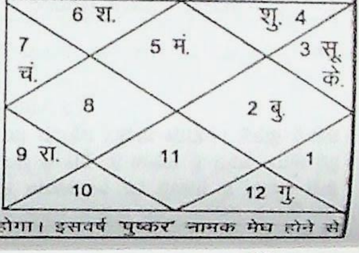
सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली
(22 जून, 2010 ई., 09 घं. 57 मि.)

इसवर्ष जलस्तम्भ का आभाव होने से भी कुछ भूभाग को अकालग्रस्त घोषित करना होगा। इसवर्ष 'पुष्कर' नामक मेघ होने से

'पुष्करे मन्दवृष्टिःस्यात्''–प्रमाणानुसार भी वर्षा कम होने के योग हैं। केवल नवमेघों में 'नील' नामक मेघ पर्याप्त वर्षा की सूचना देता है। द्वादश नागों में 'नन्दसारी नाग' होने से कुछ प्रान्तों में महावृष्टि से बाढ़ की स्थिति संभव है। इस संवत् में समुद्रतटवर्ती देशों में समुद्रीतूफान, भूकम्प आदि से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। वर्षाऋतु में शुक्र सिंह राशि में 5 जुलाई से 31 जुलाई तक रहेगा। इस समय भारत के कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त रहेंगे। महाराष्ट्र (मुम्बई), उड़ीसा, गुजरात, बिहार, आसाम आदि में कहीं भारी बाढ़ से हानि भी होगी।

आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश 22 जून, 2010 ई. को दिन में हो रहा है जोकि वर्षा की कमी का संकेत देता है– " दिवार्द्रा याति चेद्भानुर्जलभक्षणकारकः।"

20 जुलाई से 4 सितम्बर, 2010 ई. तक शनि–मंगल का एकराशिसम्बन्ध अनेक प्रान्तों में भारी सूखा एवम् कुछ प्रान्तों में भारी बाढ़ से तबाही का संकेत देता है।

अब हम गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षाविचार लिख रहे हैं; जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों मे वर्षा यत्र–तत्र होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि– समयाभाव के कारण संभव नहीं है।

मार्च (सन् 2010 ई.) – 2, 4, 5, 9 मार्च को हवा का ज़ोर रहे। 10 एवम् 14 मार्च को वायुवेग के साथ बंगलादेश एवम् दक्षिणी प्रान्तों में बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि के योग हैं। 16, 17, 18 मार्च तक उत्तरी भारत में तापमाप बढ़ेगा। 26, 28 और 29 मार्च को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार में बादल–वर्षा के योग हैं, लेकिन उत्तरी भारत में तापमान बढ़े।

अप्रैल– 1, 6, 8 और 14 अप्रैल के लगभग बंगलादेश, हि.प्र., भूटान,सिक्किम और आसाम में खण्डवृष्टि के योग बनते हैं। 16, 17, 18, 20, 21, 26, 27 और 28 अप्रैल को राजस्थान, उ. प्रदेश, हि.प्र., आसाम, महाराष्ट्र विशेषतः मुम्बई में बादलचाल एवम् वर्षा के योग बनते हैं।

मई– 2, 7, 9, 11 और 14 मई को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि.प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम एवम् आसाम में वर्षा के योग हैं। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवम् मध्यप्रदेश में गर्मी का प्रकोप बढ़े। 15, 20, 23, 24, 25 और 26 मई को मुम्बई, आसाम, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के योग हैं।

जून– 4, 6, 8, 9, 11 और 12 जून को भूटान, शिलांग, काठमाण्डू में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.प्र. मध्यप्रदेश, आसाम, पंजाब, हरियाणा एवम् हि. प्र. में कहीं आंधी से हानि हो। 13, 15, 17, 19, 20, 22, 23, 25 और 26 जून को हि.प्र., उ. प्र., भूटान, शिलांग, आसाम में ज़ोरदार वर्षा के योग हैं। पंजाब और हरियाणा मे लू तथा गर्मी का जोर रहे।

जुलाई– 1, 5, 6, 8 और 10 जुलाई को पंजाब, हि.प्र., उ.प्र., भूटान, शिलांग, आसाम एवम् अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। 13 से 17, 20 और 23 जुलाई को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़ एवम् उ.भारत में बादल–वर्षा के योग हैं। राजस्थान, उडीसा एवम् आसाम में कहीं सूखे व कहीं बाढ से हानि के समाचार मिलें। 28 और 29 जुलाई को पंजाब, हरियाणा में पर्याप्त वर्षा के योग हैं।

अगस्त– 1, 2, 3, 5 अगस्त को हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा एवम् उत्तरी–पश्चिमी भागों में पर्याप्त वर्षा के योग हैं। 11, 16, 20 और 24 अगस्त को हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ, दिल्ली आदि के अधिकांश भागों में वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से भी हानि के समाचार मिलें एवम् कहीं बादलचाल और बूंदाबांदी हो। 26, 27, 30 और 31 अगस्त को नेपाल, सूरत, दार्जिलिंग, विध्यप्रदेश एवम् उ.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि होगी। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहेगा।

सितम्बर– 1, 3, 5 और 7 सितम्बर को नेपाल, सूरत, दार्जिलिंग, विध्यप्रदेश एवम् उ.प्र. के कुछ भागों में कही बादलचाल व खण्डवृष्टि होगी। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहेगा। 9, 12, 13, 15, 16 एवम् 18 सितम्बर को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान व काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उत्तरी भारत में गर्मी का प्रभाव क्षीण होगा और मौसम में बदलाव अनुभव हो। 26 से 30 सितम्बर को उत्तर प्रदेश के कुछ भाग, श्रीलंका, आसाम एवम् बंगाल में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो।

अक्तूबर– 5 और 6 अक्तूबर को उत्तर प्रदेश के कुछ भाग, श्रीलंका, आसाम एवम् बंगाल में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। 8, 9, 10, 13, 17, 19 को हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, पंजाब एवम् उ.प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ने का योग है। इस पक्ष में हि. प्र., उत्तरी–पूर्वी लंका एवम् चिरापूंजी में अच्छी वर्षा हो। 24, 25 एवम् 29 अक्तूबर को जम्मू–काश्मीर, हि.प्र., उ. भारत में कहीं बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि हो।

नवम्बर– 2, 3, 4 और 6 नवम्बर को जम्मू–काश्मीर, हि.प्र., उ.भारत में कहीं बादल–चाल एवम् खण्डवृष्टि होगी। हि. प्र. एवम् काश्मीर के शिखरों पर कहीं हिमपात हो। उ.भारत में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा। 7, 8, 11, 18, 19 एवम् 21 नवम्बर को जम्मू– काश्मीर एवम् हि.प्र में जोरदार हिमपात के समाचार मिलेंगे। उत्तरी भारत में भी कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी रहे। 24, 25, 27 एवम् 29 नवम्बर को उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा।

दिसम्बर– 1 और 2 दिसम्बर को उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि व धुन्ध का वातावरण बने। दिसम्बर 6, 7, 10, 14, 17 और 21 को उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं शीतलहर से जनहानि के समाचार भी मिलेंगे। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। कहीं धुन्ध के

कारण यातायात में रुकावट आए। 23, 25, 30 एवम् 31 दिसम्बर को वायुवेग के साथ वर्षा हो।

जनवरी(सन् 2011 ई.)– 1, 3 और 4 जनवरी के लगभग कही वायुवेग के साथ वर्षा हो। उत्तरी भारत में शीतलहर बनी रहे। कहीं से धुन्ध के कारण दुर्घटना के समाचार मिलें। 5, 6, 7, 8, 11, 17 और 19 जनवरी को उत्तरी भारत शीतग्रस्त रहेगा। कुछ स्थानों पर वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि भी होगी। काश्मीर व हि.प्र. में कहीं हिमपात होने के समाचार भी मिलेंगे। 20, 24, 26, 28, 29, 30 और 31 जनवरी को उत्तरी भारत में बादलचाल व कहीं बूंदाबांदी हो। ऋतुपरिवर्तन के योग बनते हैं।

फरवरी– 4, 6, 9, 10, 12, 14, 15 और 18 को श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा एवम् मौसम में परिवर्तन होगा। 19, 22, 23, 24 और 27 फर. को मध्यप्रदेश, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल हो।

मार्च– 1 और 4 मार्च को मध्यप्रदेश, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल हो। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहे और तापमान बढ़ने लगे। मार्च 5, 6, 8, 12, 13, 15, 16 और 18 को हवा का ज़ोर रहे। मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में आसमान साफ रहे और गर्मी अनुभव हो। मार्च 22 और 25 से 31 को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल और बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहे; तापमान बढ़ने लगे।

पाठकों ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारत–वासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
7 जुलाई, सन् 2009 ई.
(गुरुपूर्णिमा)

शुभचिन्तक–

इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु.पो. कुराली,
अजीत नगर (मोहाली), (पंजाब)। **PIN - 140 103**
PHONE – 0160-2641277 FAX-2641577

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली **PH. 0160-2641274**)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं; जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से, हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं । लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह** जी की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशंस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलंकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षो से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जेसै–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफ–रीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* चि. *श्रीकृष्णशर्मा,* M.A. (संस्कृत), वेदाचार्य, साहित्याचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा तथा *चि. दिलबाग शर्मा* सुपुत्र श्री रामचन्द शर्मा, ग्राम एवं डा. सिनन्द (कैथल–हरि.) भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्जवल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह–आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

व्यापार–विमर्श

(संवत् 2067 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :– इन्दुशेखर शर्मा–संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। व्यापारी 'तेज़ी–मन्दी'– इन दो शब्दों से अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष साथ देता है। अतः किसी भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें। विश्वास रखें, ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार से आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं।

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह निःसन्देह सत्य सिद्ध हो चुका है, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं– "यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्" अर्थात् जो मेरा है, वह मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता। अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। **व्यापारियो** ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2067 में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति–प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् रुई में विशेष लाभ के चांस हैं, तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से सम्पर्क स्थापित करें । विदेशी व्यापारी पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2067 वि. में व्यापारिक बन्धु कॉटन(रुई), कपास, चीनी, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। 'व्यापार–विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें, तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2066 में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में पहले भयंकर तेज़ी से और बाद में आश्चर्यजनक लगातार मन्दे से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2010 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़, चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन, जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट, चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर **Advance Report** प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस **Rs.** 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

व्यापारियों से निवेदन है, कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

नोटः– वायदा व्यापार या हाँजर सौदा के व्यापार की लाईन अगर लिखे या बताए गए विचार के विपरीत चले तो तुरन्त सौदा काटकर नुक्सान से बचें, तुरन्त प्रत्यक्ष मिलकर या टेलीफोन से ताजा मशवरा हासिल करें।

किसी प्रकार के नुक्सान (हानि) की जिम्मेदारी हम नहीं लेते **अर्थात्–** व्यापार में हानि होने पर हम जिम्मेदार न होंगे ।

संवत् 2067 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2067 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2067 वि. को **'शोभन'** संवत्सर का नाम दिया गया है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"शोमने वत्सरे धात्री प्रजानां रोग–शोकदा।
तथापि सुखिनो लोका बहुसस्यार्थ वृष्टिभिः।।"

अर्थात्– प्रजा में नानाविध रोगों से परेशानी रहे, दुर्घटना, आतंकवाद किंवा प्राकृतिक प्रकोप से कुछ स्थानों पर जनता परेशान किंवा शोकाकुल रहे। पुनरपि विश्व के अनेक देशों में जनता में सुख एवं धन–धान्यसमृद्धि रहे। वर्षा अधिक हो।

संवत् 2067 वि. का **राजा मंगल** होने से अग्निकाण्ड से हानि, प्राकृतिक उत्पात, रोगादि किंवा उग्रवादजन्य घटनाओं से जनधनहानि हो। अनैतिक कार्यों की वृद्धि हो। शासकों में परस्पर कलह किंवा देश के सीमाप्रान्तों पर युद्धजन्य विभीषिका रहे। प्रजा रोग, प्रियजन वियोग से दुखी रहे। अनेकत्र वर्षा की कमी अनुभव हो।

इस संवत् का **मन्त्री बुध** होने से वर्षा पर्याप्त हो। जौ, चना, मसूर आदि अनाजों की फसलों को हानि पहुंचने से महंगाई बढ़े।

इस संवत् का **सस्येश शुक्र** होने से वर्षा पर्याप्त हो। गेहूं, चावल एवं ईख की फसल अच्छी हो।

इस संवत् का **धान्येश गुरु** होने से जौ, गेहूं, चावल की उपज उत्तम होगी।

संवत 2067 वि. का मेघेश मंगल होने से कहीं सूखा एवं कहीं बाढ की स्थिति बने।

इसवर्ष **'पुष्कर'** नामक मेघ है, अतः कन्दमूल फल (Underground fruits) अधिक मात्रा में उपलब्ध हों। नवमेघों में **'नील'** नामक मेघ होने से रुई, कपास की फसल उत्तम होगी। वर्षा अच्छी हो।

शरत्सस्यजातक कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार चावल, रुई, नरमा की फसल अच्छी होगी। Export होने से लाभ होगा। मूंग, मोठ, मक्का, जीरी, खाण्ड, शक्कर, बाजरा, अरहर, तिल आदि के व्यापारी इसवर्ष विशेष तेजी से लाभ प्राप्त करेंगे।

ग्रीष्मसस्यजातक कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार **'रबी की फसल'** काफी अच्छी रहेगी।

इस संवत् में **'अन्नस्तम्भ'** का अभाव होने से चावल, जीरा, धनिया में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

ग्रहों के वक्र–मार्ग, युति–प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं चना, गुड़, ग्वार, दालवाना, रुई, नरमा, मैंथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहनों में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे। **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास; सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी जिन्स/धातु की एक मास की मासिक लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स/ प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

अप्रैल (सन् 2010 ई.)

[संवत् 2066 वि. के अन्तिम मासों की ग्रहस्थिति पर विहंगम दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है, कि– 6 फरवरी, 2010 ई. से 23 मार्च, 2010 ई. तक गुरु अतिचारी रहेगा। शनि वक्र है। ऐसी स्थिति में सोना, चान्दी, तांबा एवं गेहूं, चना, जौ आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन; रुई, कपास, घी, गुड, खाण्ड में जोरदार तेजी या मन्दे के झटके आएंगे– सावधानी से काम करें। 26 मार्च को बाजारों में जोरदार मन्दे से एवं 29 मार्च के बाद जोरदार तेजी से लाभ मिल सकता है।]

मासारम्भ अर्थात् 1 अप्रैल को कुम्भराशिस्थ गुरु पू. भा. के दूसरे चरण में दाखिल होगा। गुरु शुभग्रह है, इस ग्रह का प्रभाव वायदा एवं हाजर बाजारों पर जोरदार घटाबढ़ी के रूप में देखा गया है। परन्तु इस समय क्रूर ग्रह शनि की राशि में

यह बाजारों में तेज़ीकारक ही माना गया है। अतः सोना, चान्दी, सूत, रुई में तेजी का ही रुख रहेगा। यह तेजी उत्तम–मध्यमरूप से 5 अप्रैल तक चल सकती है।

6 अप्रैल को शुक्र भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। शुक्र का सफेद जिन्सों पर विशेष प्रभाव अनुभव किया गया है। रुई, चान्दी, कपास, सूत आदि बाजारों पर इस ग्रह का वर्चस्व रहा है। मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय मेष–राशिस्थ शुक्र सोना, चान्दी, अफीम, कपास, सरसों, तेल, नारियल, घी, अलसी, उड़द, चना, मूंग, मोठ, ज्वार एवं तूअर में घटाबढ़ी एवं रुई में तेजी करेगा।

8 अप्रैल को बुध भरणी नक्षत्र में आएगा। शुक्र–बुध का एकराशि–सम्बन्ध भी बना हुआ है। जब बुध शुक्र के साथ मेल करता है, तब बम्पर फसल होने की अफवाहों से बाजारों में मन्दे के रिएक्शन्ज़ आते हैं, अतः इस समय वायदा व्यापारी समझ से काम करें। चावल, गेहूं आदि अनाजों में मन्दे के बाद तेज़ी बनेगी। तिलहन, तेल, घी के बाजारों में भी अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। लगभग 13 अप्रैल तक घटाबढ़ी से लाभ मिलेगा।

14 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में दाखिल होकर 20 अप्रैल तक शुक्र–बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। जब बुध, सूर्य के साथ मेल करता है तो वह क्रूर होकर तेज़ीकारक हो जाता है। अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, लालचन्दन, नारियल, सुपारी, हींग, सूत, कपड़ा, मेथी, लौंग, इलायची एवं अनाजों में तेजी बनेगी; रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेज़ी बनेगी।

16 अप्रैल को गुरु पू.भा.–3 में दाखिल होगा। इस समय कुम्भराशिस्थ गुरु पर मंगल की विशेष दृष्टि है। अनाज, तिलहन, सूत, कपास, चना, गुड़, सोना, चान्दी एवं लालमिर्च में तेज़ी बनेगी।

17 अप्रैल को शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में आएगा। इस समय शुक्र बुध–सूर्य के साथ मेषस्थ है। शुक्र गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी आदि में अच्छी घटाबढ़ी किया करता है। जब शुक्र सूर्य के साथ मेल करता है तो तेज़ीकारक हो जाता है। जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चान्दी, सोना, हीरा, मणि, मोती एवं जवाहरात में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

18 अप्रैल को मेषराशि में बुध वक्री हो रहा है। इस समय बुध सूर्य–शुक्र के साथ है। अफवाहों के साथ 24 दिन में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी और जौ, चना आदि अनाजों में मन्दी का झटका आकर तेज़ी बने।

20 अप्रैल को बुध पश्चिम में अस्त होगा और इसी दिन शुक्र वृष राशि में आएगा। वृष राशि शुक्र की अपनी राशि है, शुक्र का प्रभाव चान्दी, सोना, रुई, कपास, चीनी, चावल, घी पर तेज़ी–मन्दी के रूप में देखा गया है। रुई, कपास में जोरदार मन्दी के झटके आएंगे। सोना–चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी एवं अनाज मन्दे रहेंगे। बाजारों का यह Trend 25 अप्रैल तक चलेगा।

26 अप्रैल को मंगल आश्लेषा में पदार्पण करेगा। मंगल कर्क राशि में नीच माना जाता है। मंगल ग्रह का प्रभाव मौसम, हवा, बरसात के रूप में अनुभव किया गया है। मंगल तेलवाना, रुई, कपास, जूट, चान्दी, सोना एवं शेयर बाजारों को प्रभावित करता है। चान्दी, रुई में मन्दा; अनाजों में तेज़ी बने।

नोट–26, 27 अप्रैल तक जोरदार तेज़ी के Reactions आएंगे। ग्वार, चना आदि के व्यापारी तेज़ी से लाभ लें। चान्दी, रुई, चावल, चीनी के व्यापारी मन्दे में खरीदें, तेज़ी में बेचकर लाभ लेते रहें।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय बुध भी मेष राशि एवं भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में ही है। इस प्रकार बुध–सूर्य का एकराशि एवं एकनक्षत्र– सम्बन्ध व्यापार को प्रभावित करेगा। सोना, चान्दी, तांबा, मूंगा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, सरसों एवं गुड़, खाण्ड, घी में तेज़ी बनेगी।

28 अप्रैल को शुक्र रोहिणी में आएगा। 12 दिन में चान्दी, सोना आदि धातु तथा अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दी आएगी। अफीम में तेज़ी का वातावरण रहेगा।

30 अप्रैल को बुध वक्री पोजीशन में अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। यहां बुध मेषराशिस्थ सूर्य के साथ मेल करेगा। यह मेल अनाजों में तेज़ी करेगा। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ, में तेज़ी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल में अचानक मन्दी आकर बाद में तेज़ी बनेगी– सावधानी से काम करें।

मई (सन् 2010 ई.)

मासारम्भ में (2 मई को)गुरु पू.भा. के चतुर्थ चरण और मीन राशि में दाखिल होगा। इस समय मीन राशिस्थ गुरु पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। अतः रुई में 6 मास तक बड़ी भयंकर तेज़ी आकर बाद में मन्दी आती है। घी, तिल, तेल, सरसों में पहले 5/6 माह तक मन्दी आकर बाद में तेज़ी बने। गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, उड़द, मोठ, सुपारी, नारियल, हाथीदांत, कपूर एवम् नमक में तेजी बनती है।

नोट–रुई में अगर पहले मन्दी आने लगे तो जोरदार मन्दी के बाद तेज़ी बनेगी। अगर पहले तेज़ी आने लगे तो रुई में जोरदार मन्दी बनेगी; इसलिए सावधानी से काम करें। गुरु ग्रह अपनी राशि मीन में आकर गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना, रुई, तेलवाना आदि प्रमुख बाज़ारों में बड़ी मन्दी का कारण माना गया है।

7 मई को बुध पूर्व दिशा में उदित होगा। इस समय बुध उच्चस्थ सूर्य के साथ है, अतः रुई में पहले मन्दी आने के बाद तेज़ी बनेगी। गेहूं, चना आदि अनाजों में 40 दिन के अन्दर तेज़ी बन सकती है। इस समय तिल, घी, पाट, हैसियन एवम् लालमिर्च में भी तेज़ी का योग बनता है।

9 मई को शुक्र मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल हो रहा है। गेहूं, चना, ज्वार में मन्दा और गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनेगी।

11 मई को कृत्तिका नक्षत्र में सूर्य प्रवेश करेगा। 15 दिन में घी, रुई, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेज़ी बनेगी। इसी दिन बुध मार्गी हो रहा है, जोकि कपूर, चन्दन, अगर आदि में तेज़ी करेगा।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शुक्रवार वाले दिन शुक्र के साथ मेल करेगा। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तेल, तिल, सरसों तेज हों। जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, चावल में कुछ मन्दी का वातावरण बने।

15 मई को शुक्र मिथुन राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इस समय केतु और शुक्र पर शनि की विशेष दृष्टि होगी। मिथुन राशि का शुक्र रुई, कपास, सूत, वस्त्र, पाट, बारदाना, एरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दी लाता है और अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी बाज़ारों में आती है। गेहूं, चना, मटर, अरहर में भी मन्दे का योग बनता है। **लेकिन यहां शुक्र पर शनि की दृष्टि होने से हमें बाज़ारों में मन्दे की जगह तेज़ी ही मालूम देती है–**

"मिथुने च यदा शुक्रो महर्घ तत्र जायते।
यव–गोधूम–चणकाः शालिश्चैव विशेषतः।।"

इसलिए व्यापारी बाज़ार के रुख को देखकर ही काम करें। क्योंकि इस दिन चन्द्रदर्शन भी होगा, इसलिए हमें सभी अनाजों और दालवाना में तेज़ी का ही रुख मालूम देता है। 19 मई तक उत्तम–मध्यमरूप से अनाजों में तेज़ी चल सकती है।

20 मई को गुरु उ.भा. के प्रथम चरण में एवम् शुक्र आर्द्रा में प्रवेश करेगा। रुई, चान्दी, गेहूं, चना, दालवाना, ग्वार आदि में अचानक ज़ोरदार मन्दे का झटका आ सकता है।

23 मई को बुध भरणी नक्षत्र में, 24 मई को राहु पू.षा. के द्वितीय चरण और केतु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। चावल, चना, ग्वार, गेहूं आदि अनाजों, तेल व तिलहन में तेज़ी बनेगी। पू.षा. नक्षत्र का राहु फसलों के खराब हो जाने की खबरों से तेलवाना, खल, बिनौला, रुई, कपास और सोना, चान्दी में भी तेज़ी करता है।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा, जोकि तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी और लालमिर्च में तेज़ी करेगा। इस समय चान्दी में कुछ मन्दी आ सकती है।

26 मई को मंगल मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होगा। मंगल का प्रभाव मौसम, हवा, वर्षा पर खास तौर से पड़ता है। यह रुई, तेलवाना, कपास, जूट, चान्दी, सोना और शेयर बाज़ारों पर अपना विशेष प्रभाव रखता है। इस समय मंगल सूर्य की राशि में होने के कारण विशेष तेज़ीकारक हो सकता है। सोना, चान्दी, तांबा, लोहा आदि धातु, शस्त्र, गुड़, शक्कर, खाण्ड, अलसी, रुई, लालमिर्च, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, राई और गेहूं आदि अनाजों व खास कर लालचीज़ों में विशेष तेज़ी का योग है–

" यदा सिंहराशि–गतो भौमः काञ्चनं रक्त–ताम्रकम्।
आरक्त– सर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि।।"

30 मई को शनि मार्गी हो रहा है। ध्यान दें कि– 13 जनवरी, 2010 से 30 मई तक शनि वक्र ही चला है। शनि कन्याराशि में है एवम् गुरु की इस पर पूर्ण दृष्टि है, अतः रुई, चान्दी, कपास, सूत में मामूली तेज़ी आकर मन्दा बन सकता है। अगर इन दिनों रुई और चान्दी में मन्दा बने तो स्टॉक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा।

31 मई को शुक्र पुनर्वसु में आएगा और नेप्च्यून वक्री होगा। तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च, धान्य, बिनौला तेज़ रहेंगे।

जून (सन् 2010 ई.)

मासारम्भ में रुई, चान्दी, सोना, कपास में तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ बनेंगे। 4 जून को बुध कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा, जो कि चान्दी, अफीम में ज़ोरदार घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनाएगा। अनाजों में तेज़ी का रुख रहेगा।

6 जून को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जब भी बुध का सूर्य के साथ मेल होता है तो यह तेज़ी कारक ही माना जाता है। इसलिए 15 दिन में रुई में अच्छी तेज़ी की सम्भावना है। अगर यहां रुई में मन्दी आती है तो स्टॉक करें, आगे तेज़ी से लाभ मिलेगा। गेहूं, जौ, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि के भावों में तेज़ी बनेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होगा। सूर्य ग्रह का प्रत्येक वायदा और हाज़िर बाज़ारों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, सरसों, कपास, अनाज, सोना, चान्दी, हल्दी, कालीमिर्च और शेयर बाज़ारों पर सूर्य का विशेष प्रभाव देखा गया है। हमारे विचार से इस समय रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा एवम् नारियल आदि में

विशेष तेज़ी का योग बनेगा।

9 जून को शुक्र कर्क राशि में दाखिल होकर गुरु की दृष्टि में रहेगा। कर्क राशि का शुक्र ज़्यादातर मन्दीकारक ही माना गया है। रुई में पहले अच्छी मन्दी के झटके बनेंगे। स्टॉक करने का अच्छा अवसर है। अलसी, एरण्ड, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी तेज़ी के झटके आ सकते हैं, लेकिन गुरु की शुक्र पर दृष्टि के कारण यह तेज़ी मन्दी में भी बदल सकती है– सावधानी से काम करें। चान्दी, गेहूं, जौ, चना, अरहर आदि में हमारा विचार मन्दे का ही है।

11 जून को उ.भा. के द्वितीय चरण में गुरु दाखिल होगा। इस समय चान्दी में और मन्दा आ सकता है। रुई व गेहूं आदि अनाजों में कुछ तेज़ी बन सकती है।

(1 से 11 जून तक रुई और चान्दी में मन्दे की चाल नज़र आती है। मोटे अनाज और दाललवाना में कुछ तेज़ी का रुख रहेगा।)

12 जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र और बुध रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा। ध्यान दें– **12 जून को शनैश्चरी अमावस भी है।** 8 दिन में रुई, कपास, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेज़ी का योग है। रुई, सूत, ऊन, अनाज में भी तेज़ी के बाद कुछ मन्दा बन सकता है। राई, तुअर, सण, ऊनी व रेशमी वस्त्र, लाख, चमड़ा, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा सम्भव है।

13 जून को बाज़ारों में अनाज और रुई में तेज़ी बनेगी। 15 जून को सूर्य मिथुन राशि में दाखिल होकर केतु के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य और केतु शनि की विशेष दृष्टि में होंगे। यह योग अच्छी तेज़ी का रहेगा। धरती के अन्दर पैदा होने वाले कन्दमूलफल, पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक अनाज, सोना, चान्दी आदि धातु में अच्छी तेज़ी बनेगी; लाभ लें। यह तेज़ी अधिक देर नहीं चलेगी, इसलिए दो दिन के अन्दर–अन्दर ही लाभ लेना अच्छा रहेगा।

17 जून को बुध पूर्व में अस्त होगा और 19 जून को बुध मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होगा।

नोट करें– कि 19 जून से 5 जुलाई तक बुध अतिचारी रहेगा। यह योग विशेष नोट करने लायक है।

जब बुध अतिचारी होता है तब तिलहन बाज़ारों पर इसका विशेष प्रभाव देखा गया है। रुई में तेज़ी, चान्दी में घटाबढ़ी होकर मन्दी; अनाज, घी में मन्दा, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने, तेल और तिलहन के व्यापारी मन्दा आते ही स्टॉक करें, आगे अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

20 जून को मंगल पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा, जोकि तेल, तिल, सरसों, मूंगफली आदि तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड और नमक में तेज़ी करेगा। 22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में और बुध मिथुन राशि में दाखिल होकर सूर्य और केतु के साथ मेल करेगा और इस समय इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। ध्यान दें– इस समय बुध अतिचारी भी है। रुई, सूत, कपास, खल, बिनौला, अलसी, एरण्ड, गेहूं, चावल, चना, जौ, सोना, चान्दी और मोती में तेज़ी रहे। सरसों, तारा–मीरा में घटाबढ़ी के बाद बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे।

नोट– तेल, तिलहन में एकतरफा लाईन बनने के योग हैं। मन्दा आते ही स्टॉक करें, आगे तेज़ी से अच्छा लाभ मिले।

23 जून को शुक्र आश्लेषा में दाखिल होकर रुई और चावल में अस्थायी मन्दा करेगा। 25 जून को बुध आर्द्रा में आकर गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ में अचानक मन्दा ला सकता है। क्योंकि, इस समय सूर्य भी आर्द्रा नक्षत्र में ही है, इसलिए यह मन्दी ठहरेगी नहीं। तेल, तिल और अनाजों में तेज़ी का रुख मास के अन्त तक बना ही रहेगा। **विशेष विचार के लिए ताज़ा मशवरा हासिल करें।**

26 जून को खण्डग्रास चन्द्रग्रहण भी तेज़ी की तरफ ही इशारा करता है। 28 जून को वक्री प्लूटो मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में दाखिल होगा। प्लूटो, राहु का सूर्य–बुध और केतु के साथ समसप्तक योग भी अफवाहों के साथ बाज़ारों को तेज़ी की तरफ ले जाएगा।

जुलाई (सन् 2010 ई.)

मासारम्भ में 1 जुलाई को बुध पुनर्वसु में दाखिल होगा। इस समय बुध, सूर्य और केतु पर शनि की खास नज़र है। 8 दिन में चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में खास मन्दी होगी। क्योंकि बुध पर शनि की खास दृष्टि है, इसलिए यह मन्दी तेज़ी में भी बदल सकती है– सावधानी से काम करें।

5 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होगा। सिंह राशि में शुक्र का मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बन जाएगा। शुक्र खास तौर से कपास, रुई, गुड़, खाण्ड, तिलहन तथा चान्दी के बाज़ारों में अपना वर्चस्व व अधिकार रखता है। शुक्र और मंगल जब साथ होते हैं, तब लोगों की खरीददारी की मनोवृत्ति बढ़ती है। सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लालमिर्च एवम् लाल रंग की चीजें घी, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेज़ी बनेगी।

6 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में दाखिल होगा और उसी दिन बुध कर्क राशि में आकर गुरु की दृष्टि में आएगा। रुई में मन्दे के ज़बरदस्त झटके आएंगे, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेज़ी बनेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, मूंगफली, सरसों और सोने में पहले कुछ तेजी आकर बाद में मन्दा बने। कपास, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा,

उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, नारियल, माजु, केसर, मजीठ, नील, सौंठ, गुग्गुल आदि पदार्थों और करयाने में तेज़ी बने।

8 जुलाई को पुष्य नक्षत्र का बुध सोना, चान्दी में मन्दी, रुई में घटाबढ़ी से ज़ोरदार मन्दी बनाए। मोती, जवाहरात और ऊनी कपड़े तेज़ हों। 10 जुलाई को बुध का पश्चिम में उदय मन्दे का संकेत देता है। 13 जुलाई को मंगलवारी चन्द्रदर्शन कुछ स्थानों पर वर्षा में रुकावट करेगा।

14 जुलाई को मंगल के उ.फा. में आने पर गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनेगी। 15 जुलाई को बुध आश्लेषा नक्षत्र में आकर तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन एवम् गुड़, खाण्ड, उड़द आदि में तेज़ी करेगा।

17 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर गुरु की दृष्टि में आ जाएगा। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना आदि तेज़ होंगे। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में कुछ मन्दा नज़र आएगा। 17 जुलाई को ही शुक्र पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना के बाज़ार कुछ मन्दे ही मालूम देते हैं।

(14 से 19 जुलाई तक बाज़ारों में अनाज मन्दे रहें।)

20 जुलाई को मंगल कन्या राशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। यह योग बाज़ारों में भारी तेज़ी बनाने वाला है। लेकिन शनि–मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि होने से बाज़ारों में बहुत बड़ी तेज़ी की सम्भावना नज़र नहीं आती, फिर भी बाज़ारों का रुख तेज़ी की तरफ ही रहेगा– ऐसा हमारा विचार है। रुई, सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, सूती वस्त्र, लालमिर्च, काली मिर्च, हल्दी, ज़ीरा आदि में अच्छी तेज़ी की उम्मीद लेकर काम कर सकते हैं। लेकिन इसी दिन सूर्य पुष्य में दाखिल होगा। जोकि 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चान्दी में तेज़ी करेगा। रुई में पहले तेज़ी होकर बाद में मन्दी बने।

23 जुलाई को बुध मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होकर शुक्र के साथ मेल करेगा। उसी दिन गुरु मीन राशि में वक्री हो रहा है। गुरु पर शनि और मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है। 18 नवंबर तक गुरु वक्र पोजीशन में रहेगा। इस समय रुई, कपास, तेल, तिलहन और शेयर बाज़ारों में बहुत बड़ी तेज़ी का योग समझें। नमक, घी, तेल, अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। रुई, कपास में अप्रत्याशित तेज़ी से व्यापारी बहुत बड़ा लाभ उठा सकेंगे। रुई, कपास के व्यापारियों के लिए यह योग विशेष लाभ देने वाला है। व्यापारी भाइयों से हमारा अनुरोध है कि– जुलाई तक रुई का स्टॉक (**Advance** सौदा) करें तो वे उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे–

'मीनराशिंगतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्।
कार्पासस्यार्घ–सम्प्राप्ति लाभस्तस्माच्चतुर्गुणः।।'

ताज़ा मशवरा प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष मिलें।

26 जुलाई को पू.षा. के पहले चरण में राहु और आर्द्रा 3 में केतु दाखिल होगा, जोकि तेल, तिलहन, अनाज, दालवाना, Mentha oil में अच्छी तेज़ी कर सकता है।

29 जुलाई को शुक्र उ.फा. में और शनि भी उ.फा. के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। इस प्रकार कन्या राशि में शनि, शुक्र, मंगल– ये तीनों उ.फा. नक्षत्र में ही चल रहे होंगे। कपास, रुई, पटसूत्र, सण, लोहा, चान्दी, सोना, तांबा एवम् गेहूं आदि अनाज और दालवाना में अच्छी तेज़ी बनेगी, **जोकि इस मास के अन्त तक किंवा कुछ आगे तक चल सकती है।**

अगस्त (सन् 2010 ई.)

मासारम्भ में शुक्र कन्या राशि में आकर शनि और मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इन दिनों शनि, मंगल एवम् शुक्र पर गुरु की दृष्टि भी है और यह योग तिलहन बाज़ारों में ज़ोरदार घटाबढ़ी करने वाला है। रुई, कपास, तेलवाना, पाट, बारदाना, हल्दी कपास आदि के बाज़ारों में अच्छी तेज़ी सम्भावित है। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। गेहूं आदि सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, पशुचारा, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेज़ी बनेगी। चावलों में विशेष तेज़ी का योग बनता है।

2 अगस्त को बुध पू.फा. में आकर गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि में कुछ मन्दा बना सकता है। 3 अगस्त को सूर्य आश्लेषा में आकर 14 दिन में सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, और नील में तेज़ी लाएगा।

5 अगस्त को मंगल हस्त नक्षत्र में आकर 21 दिन में क्षुद्रधान्य(छोटे अनाज), दालवाना, घी आदि में तेज़ी करेगा।

10 अगस्त को भौमवती अमावस होने से तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी एवम् दालवाना के बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी की सम्भावना बनती है। इन दिनों मैंथा–ऑयल में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी।

11 अगस्त को चन्द्रदर्शन होगा एवम् शुक्र हस्त में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चले। गेहूं आदि अनाजों में मन्दा हो तो स्टॉक करने से आगे लाभ मिले। सोना तेज़ होगा।

16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र और सिंह राशि में दाखिल होगा। सिंह अग्नितत्त्व की राशि है। इस राशि का अधिपति सूर्य है। सिंह राशि के अन्तर्गत सोना

कालीमिर्च, अलसी, गुड़, तेल, तिलहन विशेष रूप से आते हैं। रुई, चान्दी, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड, दाख, लालमिर्च, कालीमिर्च में अच्छी तेज़ी के संकेत हैं।

18 अगस्त को वक्री नेप्च्यून धनिष्ठा–3 में दाखिल होगा। इस पर सूर्य की नज़र भी रहेगी। कहीं जलवायु के खराब होने की अफवाहों से बाज़ार खराब होंगे।

20 अगस्त को बुध वक्री होगा। वक्री बुध के साथ सूर्य का एकराशिसम्बन्ध चल रहा है। सूर्य के साथ जब बुध मेल करता है तो तेलवाना के व्यापार को खास तौर से प्रभावित करता है। इसलिए तेल एवम् तिलहन में ज़ोरदार तेज़ी आ सकती है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेज़ी का ही योग है। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में या तो ज़ोरदार तेज़ी बनेगी या ज़ोरदार मन्दा बनेगा– सावधानी से काम करें। 24 अगस्त तक बाज़ार तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ के साथ तेज़ी की तरफ बढ़ेगा।

24 अगस्त को चित्रा नक्षत्र का शुक्र और भौमवती पूर्णिमा भी बाज़ारों में कुछ तेज़ी का संकेत देती है।

26 अगस्त को मंगल चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। गेहूं, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल में तेज़ी बनेगी। 27 अगस्त को बुध पश्चिम में अस्त होगा। बुध और गुरु दोनों वक्री हैं। कहीं वर्षा की कमी तो कहीं अधिकता से फसलों को नुक्सान पहुंचेगा। रुई में झटके के साथ मन्दी आ सकती है। चान्दी तेज़ रहे। पाट, हैसियन और शेयरों में मन्दा रहे।

30 अगस्त को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। यह 14 दिन में ज़ीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रुई और सूत में तेज़ी करेगा। चान्दी में घटाबढ़ी चले।

31 अगस्त को हस्त नक्षत्र में शनि दाखिल होगा, जोकि अनाजों में तेज़ी करेगा।

सितम्बर (सन् 2010 ई.)

1 सितम्बर को शुक्र तुला में आएगा। तुलाराशि शुक्र की अपनी राशि है। अकेला शुक्र कभी–कभी ज़ोरदार मन्दी ला देता है। शुक्र विशेषतः गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन एवं चान्दी आदि में अच्छी घटाबढ़ी करता है। सोना, चान्दी में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। रुई और अफीम में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी बने। गुड़, खाण्ड में तेज़ी बनेगी।

3 सितम्बर को वक्री गुरु उ.भा. के प्रथम चरण में दाखिल होगा। गुरु मीन राशि में वक्री है और शनि–मंगल की इस पर दृष्टि भी है। इस समय चान्दी कुछ मन्दी रहे। रुई तेल, तिलहन एवम् गेहूं आदि अनाजों में तेज़ी रहे।

5 सितम्बर को मंगल तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। शुक्र जब तुला राशि में मंगल के साथ मेल करता है तो लोगों की खरीदशक्ति बढ़ जाती है। कपड़ा, सूत की ज़्यादा मांग रहती है। रुई, गुड़, खाण्ड,चान्दी के बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ते हैं। सरकार सूत का निर्यात (Export) का ऐलान करती है, जिससे कच्ची रुई के हाज़िर बाज़ारों पर इसका ज़ोरदार असर दिखाई देता है और रुई के बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी बनती है। रुई, कपड़ा, सूत, सण, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग, मोठ आदि अनाजों में अच्छी तेज़ी आ सकती है।

7 सितम्बर को वक्री बुध मघा नक्षत्र में आ जाता है। गेहूं, जौ, चना और देवदारु आदि तेज़ हों।

9 सितम्बर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर 11 दिन में गुड़, खाण्ड में तेज़ी और अनाजों में मन्दा करे। लेकिन 10 सितम्बर शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से गेहूं आदि अनाज फिर उठ सकते हैं।

12 सितम्बर को बुध मार्गी होगा। इस समय बुध सूर्य के साथ सिंह राशि में ही है। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेज़ी बने। चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बने। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी सुगन्धित चीज़ों में कुछ मन्दा बने। 12 सितम्बर को ही बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में पहले मन्दी होकर तेज़ी बनेगी। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, घी, तिल, पाट, हैसियन, लालमिर्च में अच्छी तेज़ी का वातावरण बन सकता है।

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. में आएगा। इसी दिन शनि भी अस्त हो रहा है। शनि पर गुरु की दृष्टि है। रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चान्दी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, बांस और नील में तेज़ी बनेगी। अनाज और शेयर बाज़ारों में कुछ तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज बनेंगे।

14 सितम्बर के लगभग प्लूटो के मार्गी होने पर जलवायु की Position में परिवर्तन आने से बाजारों में कुछ उठापटक हो सकती है।

15 सितम्बर को मंगल स्वाती में आकर 24 दिन में रुई, वस्त्र, गेहूं, तिल, तेल में तेज़ी करेगा। चान्दी में घटाबढ़ी और सोने में कुछ मन्दा आ सकता है। 16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर शनि के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। सूर्य और शनि दोनों शत्रु ग्रह हैं। कन्या राशि में ये दो क्रूर ग्रह होने से कई प्रकार के प्राकृतिक प्रकोप, अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा अन्य कई परेशानियां व समस्याएं देश के सामने आएंगी। रुई में भयंकर तेज़ी बने एवम् तेलवाना में भी अच्छी तेज़ी बन सकती है। इस समय सूर्य एवम् शनि पर गुरु की दृष्टि भी है, लेकिन गुरु के वक्री होने के कारण

सोना, चान्दी, कालीमिर्च, रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सरसों, तोरिया, कपास, अनाज, हल्दी और शेयर बाज़ारों में अच्छी तेज़ी के योग बनते नज़र आते हैं।

18 सितंबर को बुध पू.फा. में दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाजों में अचानक मन्दा आ सकता है।

27 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा और इसी दिन शनि हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में आएगा। 27 सितम्बर को ही राहु मूल के चतुर्थ चरण में और केतु आर्द्रा के द्वितीय चरण में दाखिल होंगे। इस प्रकार सूर्य शनि का एकराशि एवम् एक नक्षत्रसम्बन्ध बन रहा है। क्योंकि, केतु शनि की नज़र में भी है, इसलिए फसल और पैदावार की कमी होने की वजह से बाजारों में तूफानी तेज़ी आ सकती है। राहु का राजनीति का व्यापार मे प्रवेश होने से बाज़ारों में ज़ोरदार उठापटक होती है। राहु का मूल नक्षत्र में प्रवेश होने से तेलवाना, खल, बिनौला, रुई, कपास, चान्दी, सोना, तांबा आदि के बाज़ारों मे तेज़ी का रुख रहेगा।

नोट– पहले सभी बाज़ारों में मन्दी के झटके बनेंगे फिर अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा।

28 सितम्बर को बुध उ.फा. में और 29 सितम्बर को वक्री गुरु पू. भा. के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। 7 दिन में उड़द, मूंग, मोठ, मसर, अरहर में तेज़ी बने। रुई और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी रहे।

30 सितम्बर को बुध कन्या राशि में आकर अस्त हो रहा है। इस प्रकार यहां बुध, सूर्य और शनि एक राशि में हैं। कन्या राशि बुध की अपनी राशि है। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, अनाज, दालवाना, सोना, तेल, तिलहन के बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। बाद में अचानक मन्दा बन सकता है– सावधानी से काम करें।

इस माह की अन्तिम ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य शनि के कन्या राशि में होने और शुक्र, मंगल के तुला राशि में होने तथा शनि की केतु पर दृष्टि होने से वायदा और हाज़र बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के झटके बनेंगे।

अक्तूबर (सन् 2010 ई.)

मासारम्भ में 1 से 6 अक्तूबर तक शनि, सूर्य, बुध– ये तीनों कन्या राशि में रहेंगे। ये तीनों ग्रह हस्तनक्षत्र में ही चल रहे हैं। इस समय शनि–बुध अस्त हैं। अतः अक्तूबर के पहले सप्ताह में दालवाना,गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हल्दी में तेज़ी रहेगी। सोना, चान्दी, तांबा एवं रुई में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी के झटके आएंगे। मन्दे में माल लेकर तेज़ी आते ही निकाल दें, लाभ लेते रहें।

5 अक्तूबर को मंगल विशाखा में एवं इसी दिन बुध हस्त में पदार्पण करेगा। रुई, कपास एवं अनाजों में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

8 अक्तूबर को शुक्र वक्री हो जाएगा। 9 अक्तूबर को शनिवारी चन्द्रदर्शन भी हो रहा है। ध्यान दें– इस समय गुरु–शुक्र दोनों वक्री हैं। शुक्र, मंगल– ये दोनों इस समय तुला राशि में ही हैं। शुक्र जब मंगल के साथ मेल करता है तो रुई, चान्दी, तांबा में विशेष तेज़ी की हवा चलती है। इसलिए घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, चान्दी, सोना, तेल, तिलहन एवं गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में अच्छी तेज़ी का झटका आ सकता है।

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सूर्य, बुध एवम् शनि तीनों कन्या राशि में चल रहे हैं। सूर्य बुध–शनि के साथ मिलकर सोना, कालीमिर्च, अलसी, रुई, एरण्ड, मूंगफली, सरसों, कपास, दालवाना, हल्दी में विशेष तेज़ी कारक माना गया है। इस समय गुड़, खाण्ड, अरहर, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर में भी तेज़ी बनेगी। यह तेज़ी 17 अक्तूबर तक अच्छी बन जाने के योग हैं।

13 अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र का बुध रुई व चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी करेगा। अनाज तेज़ रहेंगे।

17 अक्तूबर को सूर्य एवम् बुध दोनों तुला राशि में दाखिल होकर शुक्र के साथ मेल करेंगे। तुला राशि में सूर्य नीच माना जाता है, लेकिन जब सूर्य बुध और शुक्र के साथ मेल करता है तो ज़ोरदार तेज़ी या मन्दे के झटके आते हैं। इसलिए सावधानी से काम करें। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, तांबा, चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी में तेज़ी रहेगी। चान्दी में कुछ मन्दा बन सकता है।

19 अक्तूबर, मंगलवार को मंगल वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। इसी दिन शनि उदित होगा और शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। इस समय वृश्चिक राशि के मंगल पर शनि की विशेष नज़र है एवम् शनि पर गुरु की विशेष दृष्टि है। इसलिए यह योग अच्छी तेज़ीकारक मालूम देता है, लेकिन कुछ चीज़ों में मन्दे के अच्छे झटके आ सकते हैं। रुई, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा आदि पदार्थ, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड, में तेज़ी का विचार है। शेयर बाज़ार, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन में मन्दा रहे।

21 अक्तूबर को बुध स्वाती में आकर रुई में मन्दा कर सकता है। 23 अक्तूबर को शनिवारी पूर्णमासी एवम् सायन संक्रान्ति बाज़ारों में तेज़ी का संकेत देती है।

24 अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का सूर्य एवम् अनुराधा नक्षत्र का मंगल रुई,

सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बिनौला, सुपारी, अलसी, सरसों, मिर्च, राई, हींग, गुग्गुल, लाल–चन्दन में अच्छी तेज़ी बनाएगा।

25 अक्तूबर को शनि हस्त नक्षत्र में आकर गुड़, खाण्ड में तेज़ी करेगा। 29 अक्तूबर को बुध विशाखा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय रुई के भावों में अच्छी मन्दी का झटका आने का योग है– सावधानी से काम करें। यह मन्दी 31 अक्तूबर तक ज़ोर पकड़ सकती है।

नवम्बर (सन् 2010 ई.)

1 नवम्बर को वक्री गुरु पू.भा. के तृतीय चरण में दाखिल होकर फिर से कुम्भ राशि में आ जाता है। कुम्भ–राशिस्थ गुरु पर मंगल की विशेष दृष्टि है। शुक्र, सूर्य के साथ तुला राशि में है। सूर्य भी इस समय स्वाती नक्षत्र में ही है। इस समय प्राकृतिक प्रकोप से फसलों को हानि पहुंचेगी, जिससे बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे–

"कुम्भराशि–गते जीवे मेघः स्वल्पाम्बु वर्षति।
कृषिनाशश्च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता।।"

रुई, चीनी, घी, तेल, तिलहन के स्टॉक से लाभ मिले। आगे भारी तेज़ी से उत्तम लाभ मिलेगा। इस समय सोना, तांबा, कांसा, पीतल, लोहा एवम् सीसा में तीन मास मन्दी रहकर तेज़ी बनेगी। इस समय गुड़, खाण्ड एवम् अन्न के भाव में भी तेज़ी बनेगी।

3 नवम्बर को वक्री शुक्र पूर्व में उदित होगा। शुक्र पर वक्री गुरु की विशेष दृष्टि है। रुई, सूत, चान्दी, चावल, घी, सोना में ज़ोरदार तेज़ी एवं मन्दी के झटके आएंगे;– बाज़ार का रुख देखकर काम करें।

4 नवम्बर को बुध वृश्चिक में आकर मंगल के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। इस समय बुध–मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि है। घी, तेल, सरसों, सोना, चान्दी, चावल में तेज़ी से लाभ लें।

6 नवम्बर को शनैश्चरी अमा वाले दिन सूर्य विशाखा में पदार्पण करेगा। इसी दिन वक्री शुक्र चित्रा में आ जाता है। सूर्य, शुक्र– दोनों गुरु की दृष्टि में हैं। चावल, मसूर, गेहूं, चना आदि अनाज; गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड एवम् अफीम में तेज़ी बनेगी। सोना, चान्दी में विशेष तेज़ी का योग नहीं बनता।

7 नवंबर को चन्द्रदर्शन वृश्चिक राशि में होगा। इसी दिन बुध अनुराधा नक्षत्र में आएगा एवम् नेप्च्यून मार्गी भी इसी दिन हो रहा है। सूत, सण, रुई, सोना, चान्दी एवं अनाजों में बाज़ार मन्दे रहेंगे।

8 नवम्बर को बुध पश्चिम में उदित होगा। इस समय वृश्चिक राशिस्थ मंगल–बुध पर शनि की खास नज़र है। यह योग तेज़ीकारक है। अफवाहों के कारण बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे। सोना, चान्दी, तांबा, सूत, रुई एवं तेलवाना में ज़ोरदार तेज़ी–मन्दी की प्रतिक्रिया बनेगी। मन्दे में खरीदें, 17 नवम्बर तक लाभ मिलेगा। जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम में तेजी बनेगी। अलसी और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

11 नवम्बर को मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। इस समय मंगल बुध के साथ है और शनि की इस पर दृष्टि है। 12 दिन में चान्दी और रुई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। सोना, तेल, तिलहन में भी तेज़ी का रुख रहेगा।

16 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर मंगल और बुध के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इस समय इन पर शनि की खास नज़र रहेगी। बुध का जब सूर्य और मंगल के साथ सम्बन्ध होता है तो यह क्रूर हो जाता है। सूर्य का जब मंगल और बुध के साथ सम्बन्ध होता है, तो बाज़ारों में अच्छी घटाबढ़ी होती है, यह हमारा अनुभव है। रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, सरसों, बिनौला, सोना, चान्दी, शेयर, हल्दी, कालीमिर्च एवम् अनाजों में इस समय अच्छी तेज़ी बनेगी। इसी दिन बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल हो रहा है। ध्यान दें– मंगल और बुध दोनों ज्येष्ठा नक्षत्र में चल रहे हैं । घी, गुड़, खाण्ड और चावल में भी अच्छी तेज़ी के योग बनते हैं।

18 नवम्बर को गुरु और शुक्र– दोनों मार्गी हो रहे हैं। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी में तेज़ी बने एवम् रुई में तेज़ी और मन्दी के अच्छे झटके आएंगे।

19 नवम्बर को सूर्य अनुराधा में आकर चना, चावल, दालवाना, ऊन, सोना व चान्दी में तेज़ी करेगा। गेहूं, अलसी, मिर्च में भी तेज़ी का रुख रहेगा।

नोट–18 से 24 नवम्बर तक वायदा बाज़ार में उठापठक चलेगी–सावधानी से काम करें।

25 नवम्बर को बुध मूल नक्षत्र और धनु राशि में प्रवेश करेगा। इसी दिन शनि हस्त के चतुर्थ चरण में और प्लूटो मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। स्पष्ट है कि– बुध और प्लूटो– दोनों धनु राशि में ही चल रहे है। धनु राशि में राहु के साथ बुध और प्लूटो दोनों एकराशि सम्बन्ध बना रहे हैं। इस समय उपज में कमी और कहीं युद्ध का माहौल बन सकता है। जिस का व्यापार पर प्रभाव स्पष्टरूप से दिखाई देगा। शेयर एवम् सोना–चान्दी के बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी आ सकती है। रुई, कपास, सूत, अनाज, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेज़ी का माहौल बनेगा।

27 नवम्बर को मंगल वृश्चिक राशि में अस्त हो जाएगा। जौ, चना, गुड़, अलसी, गेहूं में तेज़ी बनेगी। रुई व चान्दी में कुछ मन्दे का रुख रहेगा।

29 नवम्बर को मंगल मूल नक्षत्र और धनुराशि में दाखिल होकर राहु, बुध और प्लूटो के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन राहु मूल के तृतीय चरण एवम् केतु आर्द्रा के प्रथम चरण में दाखिल होगा। चावल, चना, जौ, मूंग, मोठ, सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी एवम् चान्दी, सोना, ताम्बा आदि धातुओं में झटके के साथ तेज़ी बनेगी। सेंधा नमक एवम् अनेक प्रकार के अनाज तेज़ होंगे। इस समय स्टॉक निकाल कर लाभ प्राप्त करना अच्छा रहेगा।

दिसम्बर (सन् 2010 ई.)

1 दिसम्बर को शुक्र स्वाती में आ जाता है। रुई, चान्दी, कपास, सूत, गुड़, खाण्ड में तेज़ी बने; वायदा बाज़ार इस समय ज़ोर पकड़ेगा एवम् निर्यात और आयात (Export & Import) की अफवाहों के साथ बाज़ार आगे चलेगा।

2 दिसम्बर को सूर्य का ज्येष्ठा में आना तेज़ीकारक मालूम देता है। क्योंकि, इस समय सूर्य पर शनि की खास नज़र है, अतः ऊनीवस्त्र, सोना, चान्दी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेज़ी बनेगी। रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेज़ी हो।

6 दिसम्बर को गुरु पू.भा. के चतुर्थ चरण और मीन राशि में दाखिल होगा। मीन राशि गुरु की अपनी राशि है। इस समय मीन राशि में स्थित गुरु पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। गुड़, खाण्ड, चान्दी, सोना, रुई, तेल, तिलहन में अच्छा मन्दा बन सकता है। कदाचित् इस समय तेज़ी आने लगे तो अच्छी तेज़ी भी आ सकती है। इसलिए बाज़ार का रुख देखकर काम करें।

7 दिसम्बर मंगलवार को धनु राशि में चन्द्रदर्शन होगा। यह चन्द्रदर्शन बाज़ारों में तेज़ी बना सकता है, लेकिन अनाजों के भाव मन्दे रहेंगे।

10 दिसम्बर को धनुराशिस्थ बुध वक्री हो रहा है। बुध, राहु और मंगल एक राशि में हैं। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी; गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दी का वातावरण बने।

14 दिसम्बर को बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। इस समय मंगल भी धनु राशि में अस्त है। **नोट करें**– धनु राशि में मंगल, बुध, राहु– ये तीनों अस्त हैं। रुई, घी, तेल, तिलहन एवम् अनाज, पाट, हैसियन और शेयरों में ज़ोरदार मन्दा आने की सम्भावना है। चान्दी में झटके के साथ तेज़ी आ सकती है।

16 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र और धनु राशि में आकर मंगल, बुध, राहु और प्लूटो के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। यह योग बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी करेगा। रुई, कपास, सूत, सोना, चान्दी, दालवाना और तेल–तिलहन में अच्छी तेज़ी बनाएगा।

17 दिसम्बर को मंगल पू.षा. नक्षत्र में आकर सोना, चान्दी, चावल, घी, दूध, तिल, तेल, सरसों एवम् मूंगफली आदि तिलहनों में तेज़ी करेगा। गेहूं आदि में मन्दे का रुख बन सकता है।

21 दिसम्बर को शुक्र विशाखा नक्षत्र में दाखिल होगा, जोकि रुई व अनाजों में मन्दे का संकेत देता है।

23 दिसम्बर को वक्री बुध ज्येष्ठा नक्षत्र और वृश्चिक राशि में दाखिल होगा। घी, गुड़, खाण्ड, चावल, तेल, सरसों आदि तिलहन, रुई और चान्दी में तेज़ी बनेगी। सोने का बाज़ार स्थिर रहेगा।

25 दिसम्बर को बुध पूर्व में उदित होगा। रुई में मन्दी आकर तेज़ी बनेगी। गेहूं, चना, जौ, तिल, तेल, घी, पाट, हैसियन एवम् लालमिर्च में तेज़ी बनेगी।

व्यापारी ध्यान दें– 28 दिसम्बर से मंगल धनुराशि में अतिचारी **Position** में आ जाता है। जब मंगल अतिचारी होता हैं, तब बाज़ारों में ज़बरदस्त मन्दी एवम् तेज़ी ज़रूर बनाता है। तेलवाना, रुई, कपास, चान्दी, सोना, तांबा, शेयर बाज़ार पर इस का असर विशेष रूप से होता है। मंगल की इस **Position** से हमें इस साल चान्दी, सोना, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, पाट, बारदाना, तेल, तिलहन में ज़ोरदार हलचल मालूम देती है। क्योंकि, इस समय मंगल का राहु और सूर्य के साथ राशिसम्बन्ध भी बना हुआ है, इसलिए हमें अच्छी तेज़ी का झटका मालूम देता है।

29 दिसम्बर को सूर्य पू.षा. में और 30 दिसम्बर को बुध मार्गी हो रहा है। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, हल्दी, गुग्गुल, कपूर ऊनीवस्त्र, गेहूं, जौ, आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी। मूंगफली, चन्दन, कपूर, अगर आदि में मन्दे का रुख रहेगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें। सोना तेज़ रहे। रुई में पहले मन्दी आकर बाद में तेज़ी बने।

नोट करें– 28 दिसम्बर से संवत् के अन्त तक मंगल अतिचारी पोज़ीशन में चलता रहेगा, जोकि ज़ोरदार तेज़ी किंवा ज़ोरदार मन्दी से वायदा व्यापारियों को भारी लाभ दे सकता है। समय पर ताज़ा मशवरा प्राप्त करें।

जनवरी (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में ही शुक्र वृश्चिक राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस पर इस समय शनि की विशेष दृष्टि है। ध्यान दें–अकेला शुक्र कमी–कमी बाज़ारों में ज़ोरदार मन्दी करता है, लेकिन जब यह बुध के साथ मेल करता है तो बाज़ार मन्दे हों तो ज़ोरदार मन्दी और यदि तेज़ हों तो ज़ोरदार तेज़ी का वातावरण बना देता है। विशेषतः शेयर बाज़ार, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी आदि में विशेष तेज़ी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ बनेंगे। इस समय शुक्र–बुध पर शनि की दृष्टि होने से हमारा विचार बाज़ारों में तेज़ी का ही है।

सूर्य–राहु के साथ बैठा मंगल, 3 जनवरी को उ.षा. में आकर रुई में विशेष तेज़ी कर सकता है। धान्य, घी, तेल, सरसों एवम् उड़द में भी तेज़ी बनेगी। 4 जनवरी को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इसदिन भौमवती अमावस एवं खण्डग्रास सूर्यग्रहण भी है। रुई, सूत, सुपारी, गेहूं, अलसी, घी, तेल, सरसों, उड़द में तेज़ी बनेगी। इस समय रुई में विशेष तेज़ी आने का योग है।

5 जनवरी को मकर राशि में चन्द्रदर्शन अनाजों में तेज़ी करे। 6 जनवरी को गुरु उ. भा. के प्रथम चर्ण में प्रवेश करेगा। इस समय चान्दी में मन्दा रहे। गेहूं, चावल, चना एवम् दालवाना में तेज़ी का रुख रहे।

7 जनवरी को बुध ग्रह मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होगा। इस समय सूर्य–राहु भी बुध के साथ मेल करेंगे। पापग्रह संयोग से यहां बुध तेज़ी करेगा। रुई, कपास, वस्त्र, सूत, चान्दी, सोना में तेज़ी के बाद मन्दी या मन्दी के बाद तेज़ी बनेगी। हमारा विचार तेज़ी का ही है; फिर भी बाज़ार का रुख देखकर काम करें।

8 जनवरी को मंगल मकर राशि में प्रविष्ट होगा। ध्यान दें– मंगल इस समय अतिचारी स्थिति में ही चल रहा है। मकर राशि में मंगल उच्च पोज़ीशन में है एवम् भारत की प्रभावराशि भी मकर ही है। इस समय किसी प्राकृतिक आपदा किंवा किसी दुर्घटना से हानि हो, जिसका असर व्यापार पर नज़र आएगा। व्यापारिक दृष्टि से " मकरे तु स्थिते भौमे घृत–तैल महर्घता" –प्रमाणानुसार घी, तेल, तिलहन, गेहूं, जौ, चना, ऊन, गुड़, खाण्ड, तिल, अफीम, सोना, चान्दी में तेज़ी बनेगी। गेहूं में घटाबढ़ी रहे।

11 जनवरी को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय सूर्य धनु राशि में राहु एवं बुध के साथ है। 14 दिन में उड़द, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लालशक्कर, कपास, चमड़ा, सरसों, मूंज, पट्टसूत्र एवं लालमिर्च में तेज़ी बने।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। यह अच्छी तेज़ी का योग है। घी, तेल, अलसी, एरण्ड, मूंगफली, तोड़िया, सरसों, बिनौला, अनाज, हल्दी, कालीमिर्च, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, शेयर बाज़ार, सोना, चान्दी, तांबा में अच्छी तेज़ी से लाभ मिलेगा। गेहूं आदि अनाज व बारदाना में बाज़ार अनिश्चित रहेंगे।

15 जनवरी को मेदिनीग्रह यूरेनस उ. भा. के प्रथम चरण में प्रवेश करेगा। इस समय गुरु भी उ.भा. में ही चल रहा है। गुरु एवं यूरेनस पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। जलवायु के विचार से बाज़ारों में उठा–पटक रहे। 17 जनवरी को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय शुक्र पर शनि और गुरु की दृष्टि भी है। शुक्र खासतौर पर गुड़, खाण्ड, रुई, तिलहन तथा चान्दी के बाज़ारों में अपना अधिकार रखता है। इसलिए अनाज, सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तिल, तेल में घटाबढ़ी के साथ मन्दी का रुख रहेगा।

19 जनवरी को बुध पू.षा. में दाखिल होगा। इस समय बुध राहु के साथ धनु राशि में है। बुध के राहु के साथ होने से बाज़ारों में अफवाहों के साथ तेज़ी–मन्दी के अच्छे Reactions बनेंगे। हमारे विचार से बिनौला और तिलहन में तेज़ी रहेगी। सोना एवम् चान्दी में ज़ोरदार मन्दे के Reactions आएंगे।

20 जनवरी को मंगल श्रवण में और नेप्च्यून धनिष्ठा–4 में दाखिल होगा। इस समय मंगल अतिचारी है। अनाजों और दालवाना में अच्छी तेज़ी बनेगी। सोना, चान्दी में ज़ोरदार तेज़ी के Reactions आएंगे। गुड़, खाण्ड, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

24 जनवरी को सूर्य भी श्रवण नक्षत्र में आ जाता है। गेहूं, जौ, चना, चावल, उड़द, मोठ आदि अनाजों, रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग और पीपल में भी तेज़ी बनेगी।

26 जनवरी को गुरु उ.भा. में प्रवेश करेगा और इसी दिन शनि वक्री हो रहा है। इस समय शनि और गुरु का समसप्तकयोग बन रहा है। गेहूं आदि अनाज़, सिक्का, कली, चावल, घी, तेल, तम्बाखू,सीमेन्ट में तेज़ी आकर अच्छी घटाबढ़ी चलेगी।

28 जनवरी को बुध उ.षा. में एवम् 29 जनवरी को शुक्र मूल–धनु में दाखिल होगा। धनुराशि में शुक्र राहु के साथ मेल करेगा। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चान्दी, सोना, तांबा आदि धातु, शेयर, रुई, सूत, कपास में अच्छी तेज़ी की सम्भावना बनती है।

30 जनवरी को बुध मकर राशि में दाखिल होगा। 31 जनवरी को राहु मूल–2 और केतु मृगशिरा–4 में दाखिल होगा। ध्यान दें– इस समय मकर राशि में सूर्य–मंगल के साथ बुध का मेल हो रहा है। इस समय मंगल अतिचारी है। बुध का अतिचारी मंगल और सूर्य के साथ मेल भयंकर तेज़ी का संकेत देता है। इस समय वायदा और हाज़िर के बाज़ारों में तूफानी तेज़ी आ सकती है। रुई, सोना, चान्दी, सभी तरह के अनाज, गुड़, खाण्ड एवम् तिलहन में ज़ोरदार तेज़ी की सम्भावना है। इस समय ताज़ा मशवरा हासिल करें, अच्छा लाभ होगा।

फरवरी (सन् 2011 ई.)

मासारम्भ में वायदा एवम् हाज़िर बाज़ार तेज़ी की तरफ रहेंगे। 4 फरवरी शुक्रवार को कुम्भस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन होगा। गेहूं, चावल, राजमाह, मूंग, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मसूर आदि दालवाना में अच्छी तेज़ी का योग है।

6 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। इसीदिन मंगल भी धनिष्ठा नक्षत्र में आ रहा है। ध्यान दें– इस समय सूर्य, मंगल– दोनों धनिष्ठा नक्षत्र में चल रहे हैं। इस समय मंगल अतिचारी है। सोना, चान्दी, मोती, मणि, जवाहरात; मूंग, मसूर आदि दालवाना; तांबा एवम् पीतल और गेहूं आदि अनाजों में तेज़ी बने। अलसी आदि तेल, तिलहन में भी तेज़ी का ही रुख रहेगा।

6 फरवरी को ही बुध श्रवण नक्षत्र में अस्त हो जाता है, जोकि बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी के बाद घटाबढ़ी के साथ ज़ोरदार मन्दे का संकेत देता है– सावधानी से काम करें। हमारे विचार से गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में तेज़ी बनेगी। बाद में सभी अनाजों व घी आदि में मन्दा बनेगा। रुई में घटाबढ़ी, पहले तेज़, बीच में मन्दी और अन्त में फिर तेज़ हो। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी। घटाबढ़ी का यह सिलसिला 11 फरवरी तक चल सकता है।

10 फरवरी को शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आकर मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों और नमक आदि में अच्छा मन्दा बनाएगा। 12 फरवरी को गुरु उ.भा. के तृतीय चरण में दाखिल होगा। चान्दी मन्दी रहेगी। रुई व गेहूं आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी।

14 फरवरी को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। नोट करें – इस समय सूर्य, मंगल और बुध– तीनों धनिष्ठा नक्षत्र में चल रहे हैं। धनिष्ठा नक्षत्र का सम्बन्ध तेल–तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, कपास एवम् दालवाना से है। इस समय अनाज, रुई, कपास, तेल व तिलहन में तेज़ी का रुख रहेगा। सोना, चान्दी में कुछ मन्दी के बाद तेज़ी का रुख रहे।

15 फरवरी को मंगल कुम्भ राशि में आकर सूर्य के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। जब सूर्य और मंगल एकराशि में आ जाते हैं तो यह बहुत क्रूर हो जाते हैं। इस समय मंगल की शनि पर खास नज़र है। इसलिए यह योग सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं को पैदा करेगा, जिससे वायदा एवम् हाज़िर के बाज़ार प्रभावित होंगे। हमारे विचार से रुई, सूत, कपास, गुड़, खाण्ड, दालवाना, मोटे अनाज, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तेल व तिलहन में ज़ोरदार तेज़ी बनेगी।

18 फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य–मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। यह योग भी बाज़ारों में अच्छी तेज़ी का मालूम देता है। इस समय मन्दे का काम करने वाले व्यापारी नुक्सान में रहेंगे। अलसी, मूंगफली, घी, तिल, तेल, सरसों, तोड़िया आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवम् दालवाना में अच्छी तेज़ी का योग है। रुई और चान्दी में ज़ोरदार मन्दी एवम् तेज़ी के झटके आ सकते हैं।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में दाखिल होगा और 22 फरवरी को बुध भी इसी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। सोना, चान्दी, सूत, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं आदि अनाजों व गुड़ में तेज़ी बनेगी।

22 फरवरी को उ.षा. नक्षत्र का शुक्र गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी में तेज़ी के बाद कुछ मन्दा कर सकता है। अनाज तेज़ रहेंगे एवम् रुई में घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

23 फरवरी को मंगल शतभिषा नक्षत्र में आ जाएगा। **ध्यान दें– इस समय सूर्य, मंगल और बुध– तीनों शतभिषा नक्षत्र में ही हैं। इसलिए बाज़ारों में ज़ोरदार तेज़ी एवम् मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे।** मन्दे में खरीदें, तेज़ी में बेचकर फायदा लें। हमारे विचार से इस समय अनाजों में अचानक मन्दा आ सकता है। रुई, सोना, चान्दी के भाव पहले मन्दे होकर बाद में तेज़ रहेंगे।

24 फरवरी को शुक्र मकर में दाखिल होगा। शुक्र अकेला कभी–कभी सभी बाज़ारों में मन्दी ला देता है। कपास, रुई, गुड़, खाण्ड, तथा चान्दी के बाज़ारों में अच्छी मन्दी बन सकती है। इस समय पाट, बारदाना और तिलहन में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी– ऐसा हमारा विचार है। लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सभी तरह के अनाज तेज़ रह सकते हैं। रुई, चान्दी में पहले घटाबढ़ी होकर अन्त में तेज़ी का ही रुख रहेगा– ऐसा हमारा विचार है। इस ग्रहस्थिति का प्रभाव 25, 26 फरवरी को विशेषरूप से अनुभव होगा।

27 फरवरी को गुरु उ.भा. के चतुर्थ चरण में प्रविष्ट होगा। इस समय गुरु पर शनि की पूर्ण नज़र है। इस समय चान्दी में कुछ मन्दे का रुख रहेगा। रुई व गेहूं आदि अनाजों में तेज़ी बनेगी।

मार्च (सन् 2011 ई.)

मार्च मास के प्रारम्भ में (1 मार्च को) बुध कुम्भ राशि में दाखिल होगा। 4 मार्च के सूर्य भी पू.भा. में आ जाता है। सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल एवं रुई में तेज़ी बनेगी।

5 मार्च को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आकर चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर,

मूंग, मोठ, उड़द आदि अनाजों में कुछ मन्दा करेगा। तिल, तेल में तेज़ी एवम् रुई में मन्दी के बाद फिर तेज़ी बनेगी।

6 मार्च को बुध मीन राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय इन पर मंगल की पूर्ण नज़र है। सोना, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहले तेज़ी बाद में मन्दी बने। सभी अनाजों में मन्दे का रुख रहे। बिनौला में तेज़ी बने। 8 मार्च को बुध उ. भा. में आएगा। इस समय गुरु भी उ.भा. नक्षत्र में ही चल रहा है। चान्दी में घटाबढ़ी रहे। रुई, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चावल आदि के भाव भी कुछ मन्दे की तरफ रहें।

12 मार्च को मंगल पू.भा. में आएगा और बुध पश्चिम में उदित होगा। इस समय तिल, तेल, सरसों, नारियल, एरण्ड, बिनौला आदि तिलहन, सुपारी, रुई और चान्दी में तेज़ी बनेगी।

नोट करें — 4 मार्च से 13 मार्च तक बुध अतिचारी पोज़ीशन में रहेगा। जब बुध मीन राशि में अतिचारी होता है तब यह विशेष बलवान् बन जाता है, तथा इसका प्रभाव सभी बाज़ारों पर उत्तम–मध्यमरूप से पड़ता है, लेकिन तिलहन बाज़ारों में तो अतिचारी बुध का बहुत ज़बरदस्त प्रभाव पड़ता है एवम् तिलहन में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेज़ी आती है।

[नोट — 30 मार्च के करीब तिलहन बाज़ारों में उत्तम लाभ मिल सकता है।]

13 मार्च को गुरु रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय इसकी गति 14 कला 20 विकला के लगभग होकर यह अतिचारी हो जाएगा, जोकि संवत् के अन्त तक अतिचारी ही चलेगा। गुरु ग्रह की यह पोज़ीशन बहुत महत्त्वशाली है। व्यापारी इन दिनों बहुत ही सूझबूझ से काम करें। हमें इस समय तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी में बहुत बड़ी मन्दी या बहुत बड़ी तेज़ी की लाईन बनती मालूम देती है। व्यापारी इस समय ताज़ा मशवरा प्राप्त करें तो भारी लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

इस समय (13 मार्च को) रेवती नक्षत्र का गुरु रुई में घटाबढ़ी करेगा। चान्दी में पहले मन्दी फिर तेज़ी, अनाज का भाव मन्दा रहे।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर बुध–गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय ज़ोरदार तेज़ी बनेगी। उत्तम तेज़ी से लाभ मिलेगा। तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना तेज़ रहें। प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले तेज़ी, बाद में मन्दी बनेगी। चान्दी भी कुछ मन्दी रहे।

15 मार्च को बुध रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। 11 दिन में केसर, मजीठ, गेरु, लालमिर्च, हल्दी, जीरा में तेज़ी बने। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, घी एवम् चान्दी के व्यापारी मन्दे से लाभ ले सकेंगे।

16 मार्च को शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। चावल, मूंग, मोठ, बाजरा, चान्दी, सोना और रुई में तेज़ी बनेगी। 18 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं एवम् तेल, तिलहन में तेज़ी आएगी।

22 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर शत्रुक्षेत्रस्थ मंगल के साथ मेल करेगा। रुई, चान्दी, सोने के बाज़ारों में तेज़ी का विशेष जोश आएगा। खरीद बढ़ेगी– बाज़ार तेज़ी की तरफ बढ़ेंगे। रुई, चान्दी, सोना, तांबा, गुड़, खाण्ड, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, चीनी, घी में ज़ोरदार मन्दी या तेज़ी बनेगी। समझ से काम करें। शुक्र का मंगल के साथ मेल होने से हमें मन्दे की जगह तेज़ी ही मालूम देती है।

25 मार्च को अतिचारी मंगल मीन राशि में आकर अतिचारी गुरु के साथ मेल करेगा। इस समय मंगल, सूर्य, गुरु एवम् बुध– ये चारों एकराशि–सम्बन्ध बना रहे हैं। इन पर शनि की पूर्ण दृष्टि भी है। यह योग व्यापारियों को विशेष ध्यान में रखना चाहिए। सोना, तांबा, रुई, लकड़ी, गुड़, खाण्ड आदि में तेज़ी हो। चान्दी में पहले मन्दी, फिर तेज़ी बने।

26 मार्च को गुरु अस्त हो रहा है, जोकि रुई और शेयरों में तेज़ी एवम् सोना, चान्दी व अनाजों में मन्दा कर सकता है। ध्यान दें– जिन बाज़ारों में तेज़ी चल रही थी, उनमें अचानक मन्दे का रुख बन सकता है– सावधानी से काम करें।

27 मार्च को शुक्र शतभिषा में दाखिल होगा। घी, चावल, सरसों, सोना, चान्दी, तेज़ होंगे। इसी दिन रेवती नक्षत्र का गुरु तेल, तिलहन, अनाज, सोने में मन्दे के रिएक्शन ला सकता है।

28 मार्च को बुध अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि में दाखिल होगा। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ में तेज़ी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल, सोना, चान्दी, तांबा, में मन्दे का बाज़ार रहे। चान्दी में ज़ोरदार मन्दा आने का विचार है।

29 मार्च को मंगल उ.भा. में दाखिल होगा। एक महीने में चन्दन, कपूर, गुग्गुल, रुई सोना, चान्दी, तांबा, गेहूं, जौ, चना में तेज़ी से लाभ मिलेगा।

30 मार्च को बुध वक्री होगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेज़ी बनेगी और अनाज व दालवाना मन्दे रहें। 31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आ जाता है, इस समय बुध और गुरु भी रेवती नक्षत्र में ही हैं, जोकि सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूं, जौ, चना आदि में अच्छी तेज़ी से लाभ देंगे।

सज्जनों ! हमने ग्रहचाल को पूरी तरह जांचकर तेजी–मन्दी के रुख का बेरवा इस पंचांग में दिया है, फिर भी ग्रहचालवश यदि किसी प्रकार से आपको व्यापार में हानि होती है तो हम उसके लिए उत्तरदायी न होंगे। वैसे, हमारी प्रभु से प्रार्थना है, कि– आपको व्यापार में हमेशा उत्तम लाभ प्राप्त होता रहे।

–: व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा :–

तेजी–मन्दी की प्रतिमास लिखित **Advance Report**

(अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट)

व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2010 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़, चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन, जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर **Advance Report** प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

नोट– पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

पत्र या **M.O.** फार्म पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ–साफ लिखें एवम् धनादेश, किस जिन्स की तेज़ी–मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं– यह अवश्य लिखें। **M.O.** या **D.D.** भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। **D.D.** या **M.O.** नीचे लिखे पते पर भेजें–

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

PHON: 0160-2641 277
FAX- 0160-2641 577

नोटः– गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की सावना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है, कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की सावना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2010 ई. से 3 अप्रैल, सन् 2011 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रों के निर्माण से एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साघना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते हैं। संवत् 2067 वि. में **अर्धोदययोग; महावारुणी, तथा महा–महावारुणी पर्व घटित नहीं हुए हैं।**

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त तारीख	समाप्त घं. मि.
सन् 2010 ई.			
20 जन.	3 58	20 जन.	15 58
18 फर.	18 05	19 फर.	06 05
20 मार्च	17 01	21 मार्च	5 01
20 अप्रै.	4 00	20 अप्रै.	16-00
21 मई	3 04	21 मई	15 04
21 जून	10 58	21 जून	22 58
22 जुला.	21 51	23 जुला.	9 51
23 अग.	4 56	23 अग.	16 56
23 सितं.	2 38	23 सितं.	14 38
23 अक्तू.	12 05	24 अक्तू.	0 05
22 नवं.	9 45	22 नवं.	21 45
21 दिसं.	23 09	22 दिसं	11 09
सन् 2011 ई.			
20 जन.	9 48	20 जन.	21 48
18 फर.	23 55	19 फर.	11 55
20 मार्च	22 50	21 मार्च	10 50

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त तारीख	समाप्त घं. मि.
सन् 2010 ई.			
9 जन.	23 11	10 जन.	7 16
24 जन.	0 10	24 जन.	6 22
4 फर.	18 53	5 फर.	0 01
18 फर.	13 39	18 फर.	18 36
2 मार्च	14 36	2 मार्च	18 32
28 मार्च	11 04	28 मार्च	14 52
10 अप्रै.	06 31	10 अप्रै.	11 26
23 अप्रै.	03 12	23 अप्रै.	07 42
05 मई	14 58	05 मई	21 01
18 मई	17 38	18 मई	23 53
31 मई	04 33	31 मई	13 43
13 जून	18 34	14 जून	05 07
23 जून	15 52	24 जून	04 17
07 जुला.	21 31	08 जुला.	07 03
19 जुला.	23 35	20 जुला.	06 58
02 अग.	20 01	03 अग.	02 17
14 अग.	18 38	14 अग.	23 27
28 अग.	07 34	28 अग.	12 40
07 अक्तू.	02 16	07 अक्तू.	06 44
17 अक्तू.	20 35	18 अक्तू.	01 47
31 अक्तू.	01 29	31 अक्तू.	06 27
12 नवं.	02 39	12 नवं.	09 17

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त तारीख	समाप्त घं. मि.
सन् 2010 ई.			
25 नवं.	11 26	25 नवं.	19 21
07 दिसं.	13 50	08 दिसं.	02 02
21 दिसं.	08 42	22 दिसं.	02 30
(सन् 2011 ई.)			
01 जन.	01 51	01 जन.	15 36
14 जन.	20 22	15 जन.	05 38
26 जन.	21 26	27 जन.	03 53
09 फर.	08 15	09 फर.	14 17
21 फर.	13 07	21 फर.	17 30
06 मार्च	13 57	06 मार्च	19 01
31 मार्च	17 43	31 मार्च	22 46
02 अप्रै.	15 30	02 अप्रै.	21 30

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्ति–साम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापात गणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

गजच्छाया पर्व (सन् 2010 ई.)

(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त तारीख	समाप्त घं. मि.
7 अक्तू.	7 43	7 अक्तू.	सू. अ.
महोदययोग(सन् 2011 ई.)			
3 फर.	सू. उ.	3 फर.	8 00
वारुणी पर्व (सन् 2011 ई.)			
1 अप्रैल	सू. उ.	1 अप्रैल	8 25

सूर्य–चन्द्रग्रहण

जैसा कि ऊपर लिखा है– यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। पर्वकालों के लिए पृ. 17 देखिए।

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

यन्त्र–मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा 'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल' में उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके, इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

सर्वविध मनोकामना सिद्ध्यर्थ चामत्कारिक मन्त्र

यह मन्त्र बड़ा विलक्षण है। नौकरीप्राप्ति, ट्रांस्फर कराना–रुकवाना, मनोकामनापूर्ति, सर्वविध कार्यसिद्ध्यर्थ इस मन्त्र का प्रयोग करें–

मन्त्र–"ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः। उत्पत्ति–स्थिति–प्रलयंकराय ब्रह्म–हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्व–कौतुकानि दर्शय दर्शय, दत्तात्रेयाय नमः। मम (मनोरथ) सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।"

विधि– एकान्त में शुद्ध स्थान पर बैठकर शुभ मुहूर्त में दस हजार मन्त्रजाप करके सिद्ध करें। फिर प्रतिदिन 108 बार (अर्थात् 1 माला) प्रातः जाप करते रहें; कल्पवृक्ष की तरह इस मन्त्र का फल प्राप्त करें।

नोट– मन्त्र में जहां (मनोरथ) लिखा है, वहां जिस कार्य हेतु मन्त्रजाप किया जा रहा है, उसे उच्चारण करें।

पतिकोप–शान्त्यर्थ (पतिसुख–प्राप्त्यर्थ) अनुभूत मन्त्र

यह मन्त्र दत्तात्रेय तन्त्र से उद्धृत है। यदि किसी स्त्री का पति रुष्ट हो गया हो और स्त्री (पत्नी) अपने माता– पिता के घर वियोग में रहती हो तो निम्नांकित मन्त्र का जाप विधिपूर्वक करे। शीघ्र ही पति का सुख प्राप्त होगा।

मन्त्र– " ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं (अमुक नामकं) मे वश्यं कुरु–कुरु स्वाहा।"

विधि– रात्रि में घी का दीपक प्रज्वलित करें। शुद्ध स्थान पर बैठकर (एकान्त में) एक लाख मन्त्रजाप पूर्ण करें। यक्षिणी की कृपा से शीघ्र ही पति का स्नेह प्राप्त होगा।

बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र– "पर्वत ऊपर कवली गाय, तेकरे गोबर बिच्छू बिआय, कौने बिच्छू कैली कौने बिच्छी, मुली सोने से मड़ाबली पुच्छी, आठ गिरह नौ पोर बिच्छी, झारो पोर पोर दोहाई, ईश्वर महादेव–गौरां पार्वती की दोहाई, नैना जोगिन कमारू गुरु की छू।"

विधि– इस मन्त्र को कण्ठस्थ कर लें। जब किसी व्यक्ति को बिच्छू काट ले तो नीम की पत्तेदार टहनी से जिस स्थान पर बिच्छू ने काटा हो, वहां 21 बार (टहनी से) इस मन्त्र को बारम्बार बोलकर झाड़ता रहे; ज़हर उतरने लगेगा। काटे स्थान पर नमक का थोड़ा सा तेज़ाब लगा देना ठीक रहेगा।

फोड़ा या खकराली (कछराली) झाड़ने का मन्त्र

(i) **मन्त्र–** "ॐ महानिल हलूमिषा आविर्भूता प्रदहत ॐ ठः ठः।"

विधि– जब फोड़ा (कछराली) अधिक परेशानी कारक हो जाए तो मंगलवार को सूर्योदय से पहले चौराहे की मिट्टी लाकर उल्लिखित मन्त्र को सात बार पढ़कर फोड़े पर लगाकर झाड़ दें। निश्चित आराम अनुभव करेंगे। रोगशान्त होगा।

(ii) घाव में यदि आराम न होता हो तो निम्नांकित मन्त्र को सात बार पढ़कर घाव पर फूंक मार दें। उसी दिन से आराम होना शुरु होगा– अनुभव करें।

मन्त्र– " राम मारे पैडुकी लछिमन ओढे घाव।
फूलै औ न पाकै परै सुखिजात।।"

धनदा यक्षिणी मन्त्र–प्रयोग

(i) **मन्त्र–** " ॐ धं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा।"

विधि– यह नौ अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र का सवालाख जाप करने से साधक को शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त होगी। इस यक्षिणी मन्त्रविशेष की आराधना से घर की दरिद्रता दूर हो जाती है। अनेकदा भूमिगत द्रव्य की भी प्राप्ति होती है।

(ii) **मन्त्र–** " ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम देहि देहि स्वाहा।।"

विधि– पीपल वृक्ष पर चढ़कर इस मन्त्र का जाप करने से धनलाभ होता है–

"अश्वत्त्थ वृक्षमारुह्य जपेदेकाग्रमानसः।
धनदायां यक्षिणीं च धनं प्राप्नोति मानवः।।"

स्वप्न में प्रश्नोत्तरज्ञानार्थ स्वप्नचक्रेश्वरी मन्त्र

मन्त्र–" ॐ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा।"

विधि– गाय के गोबर से चौका लगाकर घी का दीपक जलाकर पूर्व की तरफ मुख करके उल्लिखित मन्त्र का एक लाख जाप 21 दिन में करें, मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। किसी भी प्रश्न का उत्तर जानना हो तो सोने से पहले एक माला मन्त्रजाप करें। स्वप्न में सही उत्तर मिलेगा।

गर्भरक्षा के लिए साबर मन्त्र

मन्त्र–" ॐ नमो गंगा उकारे गोरख बहाधारे घीपार गोरख बेटा जाए जय द्रुत पूत ईश्वर की माया।"

विधि– यदि गर्भावस्था में स्त्री को रुधिर बहने लगे, तो कुमारी (रजोदर्शन से पहले वाली) कन्या के हाथ से काते हुए सूत के धागे को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके स्त्री की कमर में बान्ध दें, गर्भ सुरक्षित रहेगा।

अन्धापन से मुक्ति हेतु एवं नेत्ररोग– शान्त्यर्थ चाक्षुषोपनिषद्

सर्वजनहिताय हम यहां नेत्रकष्टों से मुक्तिहेतु चाक्षुषी विद्या का प्रकाशन कर रहे हैं। प्रतिदिन स्नान करके सूर्योदय के समय इस चाक्षुषोपनिषद का एक (या एकाधिक) बार पाठ अवश्य करें, फलानुभूति स्वयं होगी।

विनियोगः–" ॐ अस्याश्चाक्षुषविद्यायाः अहिर्बुध्न्यः ऋषिः गायत्रीछन्दः, सूर्यो देवता, चक्षू-रोग-निवृत्तये जपे विनियोगः।"

पाठः– "ॐ चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरो भव, मां पाहि पाहि, त्वरितं चक्षू- रोगान् शमय शमय, जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय, यथाहमन्धो न स्यां तथा कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षु- प्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय [यथाहमन्धो न स्यां तथा कृपया कल्याणं कुरु कुरु]।"

"ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे भगवते दिव्य-दिव्य-भास्कराय नमः। करुणाकराय अमृताय नमः। श्रीसूर्यायाक्षितेजसे नमः, महते नमः, रजसे नमः, तमसे नमः। असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः ।"

"यः इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्याक्षिरोगो भवति, न च तस्य कुले कश्चिदंधो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति।"

" ॐ विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं तपन्तं सहस्र-रश्मिभिः।
शतधावर्तमानं पुरः प्रजानाम् उदयत्येष सूर्यः।।"

"ॐ नमो भगवते सहस्र-रश्मये ह्यादित्याय नमः।
अहो वाहिनीम् वाहिनीम् स्वाहा।।"

विधि– सूर्य के सामने (प्रातः सूर्योदय के समय) एकवस्त्र में सूर्य का ध्यान करके पाठ करें। तत्पश्चात् दोनों हाथों से मस्तक के ऊपर से जलधारा से सूर्य को अर्घ्य दें। इस जल में से सूर्य की किरणों को आंखों पर पड़ने दें। प्रतिदिन अर्घ्य देने के पश्चात् आंखों पर उस जल को लगावें। फिर चाक्षुषीविद्या का चमत्कार अनुभव करें।

परीक्षा में सफलता के लिए दो सिद्ध प्रयोग

(i) परीक्षातिथि निर्धारित हो जाने पर परीक्षा प्रारम्भ होने से 15 दिन पूर्व जो बुधवार आए, उसी दिन स्नानादि क्रिया के बाद शुद्ध वस्त्र धारण करके **श्रीगणपति मन्दिर** में स्थिरासन पर बैठें। दो अगरबत्तियां जलाकर पूर्व या उत्तराभिमुख होकर निम्नांकित मन्त्र की एकमाला जाप करें। परीक्षा पूर्ण होने तक एकमाला प्रतिदिन जाप करते रहें। परीक्षा प्रारम्भ होने पर इसमन्त्र को एकबार मन से उच्चारण करके परीक्षापत्र लिखना प्रारम्भ करें; सफलता अवश्य मिलेगी।

मन्त्रः– " ॐ एकदन्तो महाबुद्धिः सर्वसौभाग्यदायकः।
सर्वसिद्धिकरो देवो गौरिपुत्रो विनायकः।।"

(ii) इसी प्रकार परीक्षा से 21 दिन पहले मंगलवार या शनिवार वाले दिन दो अगरबत्तियां जलाकर श्रीहनुमान् जी के मन्दिर में निम्नांकित मन्त्र का जाप करें। परीक्षा पूर्ण होने तक यथाशक्ति समय के अनुसार जाप करते रहें– उत्तम अंकलाभ होगा। परीक्षा में लिखना प्रारम्भ करने से पूर्व भी इस मन्त्र को एक–दो बार मन में उच्चारण कर लें।

मन्त्रः– " ॐ बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरो पवन कुमार।
बल–बुद्धि–विद्या देहु मोहि हरहुं क्लेश–विकार।।"

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए कुबेर मन्त्र

मन्त्र–"ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं क्लीं ॐ वित्तेश्वराय नमः।"

विधि– उल्लिखित सोलह वर्णों के इस मन्त्र का जाप किसी शिव मन्दिर में बैठकर सवालाख बार करें। घर में धन–धान्यसमृद्धि होगी। यह प्रयोग बिल्ववृक्ष के नीचे बैठकर भी किया जा सकता है।

सांसारिक कष्टों से मुक्ति, विद्या में सफलता एवं वाक्सिद्धि के लिए त्रिपुरभैरवी स्तवराज

"ॐ ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपां
जानन्ति नैव जगदादिमनादि-मूर्तिम्।
तस्माद् वयं कुचनतां नवकुंकुमाभाम्
स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मय-मातृभूताम्।।१।।

सद्यः समुद्यत-सहस्र- दिवाकराभाम्
विद्याऽक्ष- सूत्रवरदाभय-चिह्नहस्ताम्।
नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृत वक्त्र-पद्माम्
त्वां तारहाररुचिरां त्रिपुरे भजामः।।२।।

सिन्दूर- पूर- रुचिरं कुचभार- नम्रम्
जन्मान्तरेषु कृतपुण्य- फलैकगम्यम्।
अन्योन्य- भेद- कलहाकुल -मानसास्ते
जानन्ति किं जड़धियस्तव रूपमम्ब।।३।।

स्थूलां वदन्ति मुनयःश्रुतयो गृणन्ति
सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवासमन्ये।
त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि
मन्यामहे वयमपार- कृपाम्बुराशिम्।।४।।

चन्द्रावतंसललितां शरदिन्दु- शुभ्राम्
पञ्चाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्तीम्।
त्वां पुस्तकं जपवटीममृताम्बु- कुम्भम्
पद्मं च हस्तकमलैर्दधतीं त्रिनेत्राम्।।५।।

शंभुस्त्वमद्रितनया-कलितार्द्धभागो
विष्णुस्त्वमंब कमला-परिरब्धदेहः।
पद्मोद्भवस्त्वमसि वागधिवास- भूमिः
तेषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव।।६।।

आश्रित्य वाग्भव-भवांश्चतुरः परादीन्-
भावान् पदेषु निहितान् समुदीरयन्तीम्।
कण्ठादिभिश्च करणैः परदेवतां त्वाम्
संविन्मयीं हृदि कदापि न विस्मरामि।।७।।

आकुंच्य वायुमधिजित्य च वैरिषट्कम्
आलोक्य निश्चलधिया निज नासिकाग्रम्।
ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकलाऽवदातम्
त्वद्रूपमंब कृतिनस्तरुणार्क- मित्रम्।।८।।

त्वं प्राप्य मन्मथ- रिपोर्वपुरर्धभागम्
सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः।
सत्यं तदद्रितनये जगदेकमातः
नो चेदशेष जगतः स्थितिरेव न स्यात्।।९।।

पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां
पीठे तवाम्ब कनकाचल - गह्वरेषु।
गायन्ति सिद्धवनिताःसह किन्नरीभि-
रास्वादितासव - रसारुणनेत्र-पद्माः।।१०।।

विद्युद्विलासवपुषः श्रियमुद्वहन्तीम्
यान्तीं स्ववास भवनाच्छिव-राजधानीम्।
सौसुम्न वर्त्म कमलानि विकासयन्तीम्
देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम्।।११।।

आनन्द-जन्म - भवनं भवनं श्रुतीनाम्
चैतन्यमत्र तनुमंब तवाश्रयामि।

ब्रह्मेश-विष्णुभिरुपासित-पादपद्माम्
सौभाग्य-जन्मंवसतिं त्रिपुरे यथावत्।।१२।।

शब्दार्थ भावि भवनं सृजतीन्दुरूपा
या तद्बिभर्ति पुनरर्कतनुःस्वशक्त्या।
ब्रह्मात्मिका हरति तत्सकलं युगान्ते
तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि।।१३।।

नारायणीति नरकार्णव-तारिणीति
गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति।
ज्ञानप्रदेति नयनत्रय-भूषितेति
त्वामद्रिराज-तनये बहुधा वदन्ति।।१४।।

ये स्तुवन्ति जगन्मातः श्लोकैश्चतुर्दशैःक्रमात्।
त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धिं प्राप्नुयुस्ते नराःश्रियम्।।१५।।"

रुष्ट व्यक्ति को शीघ्र अनुकूल करने के लिए यन्त्र

विधि– जब कोई व्यक्ति नाराज़ हो या आपको हानि (कष्ट) पहुंचाने को तैयार हो तो **गुरुपुष्यामृत** किंवा **रविपुष्यामृत** योग में केसर और लालचन्दन में अपनी कनिष्ठिका (चिचनी) अंगुली के एक बूंद रक्त को मिलाकर भोजपत्र पर उल्लिखित यन्त्र को लिखे। फिर इस यन्त्र का धूप–दीप से पूजन करके इसे शहद में डाल दें। रुष्ट व्यक्ति वैरभाव को त्याग देगा; आप से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने लगेगा; अनुभूत है।

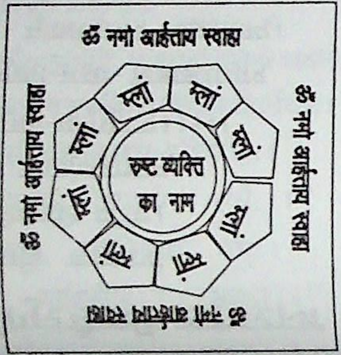

मनोकामना सिद्धियन्त्र

१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	९	१६	३
१५	४	५	१०
(मनोरथ)			

विधि– सफेद काग़ज़ या भोजपत्र पर केसर, चन्दन, कपूर, गंगाजल और खस की स्याही बनाकर अनार की कलम से शुक्ल पक्ष की द्वितीया से प्रातः पूर्वाभिमुख होकर लिखना प्रारम्भ करें। 24 बार इस यन्त्र को लिखकर आटे की 24 गोलियां बना लें। 24 दिन तक इस प्रकार प्रतिदिन लिखकर अन्तिम दिन 576 गोलियां लेकर एक एक करके अपने इष्टदेव का ध्यान करके नदी में बहा दें। आपका मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा।

शीतला(चेचक)शान्ति यन्त्र

श्री	श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री	श्री

विधि– प्रतिवर्ष अनेकों बच्चे शीतला (चेचक) से कालकवलित हो जाते हैं। जब माता का ज़ोर हो तो यह यन्त्र लालचन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धूप–दीप करके रोगग्रस्त बच्चे के गले में डाल दें। तुरन्त आराम मिलेगा।

रूठी हुई स्त्री को वशंवद करने के लिए यन्त्र

नोट– इस यन्त्र के मध्य जहां "अमुकीं" लिखा है, वहां 'रूठी औरत का नाम' लिखना चाहिए।

ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	अमुकीं	ॐ
ॐ	वश-	ॐ
ॐ	मानय	ॐ

विधि– यदि दौर्भाग्य से स्त्री (पत्नी)रुष्ट होकर अपने पिता के घर चली जाए तो ऊनी वस्त्र पर इस यन्त्र को अष्टगन्ध की स्याही बनाकर कमल–डण्डी से लिखें। यन्त्र को सामने रखकर **"ॐ अमुकीं वशमानय"** मन्त्र जाप करें। इस मन्त्र का जाप करते समय **'अमुकीं'** के स्थान पर रूठी स्त्री का नामोच्चारण करें। फिर इस मन्त्र के साथ खीर से 21 आहुतियां डालें। 21 दिन

में ही स्त्री/पत्नी वापिस आ जाएगी। यह प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ करें।

दुःस्वप्न (बुरे स्वप्न) के फल से मुक्ति के लिए यन्त्र

यदि स्वप्न देखकर अनिष्ट होता हो या स्त्री का गर्भपात हो जाता हो तो सामने दिए गए यन्त्र को भोजपत्र पर चमेली की कलम से अष्टगन्ध की स्याही बनाकर पुरुष अपने सिरहाने की तरफ रखें। स्त्री अपनी चोटी से बांधकर सोए तो स्वप्न से हानिभय नहीं रहता।

हं	सं	पं	कं
वं	धं	दं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	दं	जं

शनिग्रहजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ यन्त्र

विधि– सामने दिए गए यन्त्र को भोजपत्र पर शनिवार के दिन चौघड़िया या शनि की होरा में अष्टगन्ध की स्याही से अनार की कलम द्वारा लिखें। धूप–दीपद्वारा इसका पूजन करके दाहिनी भुजा पर नीले/काले धागे से धारण करें। शनिकृत नेष्टफल शान्त होंगे।

१२	७	१४
१३	११	६
८	१५	१०

अनपत्या (निस्सन्तान) स्त्री के लिए कुछ चामत्कारिक औषधीय प्रयोग

(i) शमीवृक्ष (जिसे आम भाषा में जण्डवृक्ष या जेखड़ी भी कहते हैं) की फलियां व पीपलवृक्ष की जड़ को सुखाकर चूर्ण बनाकर पांचमाशे मात्रा लेकर बछड़े वाली गाय के दूध से मासिक धर्म से चौथे दिन से पांच दिन तक सेवन करें, गर्भधारण होगा।

(ii) हाथी के दांत का बुरादा (चूरा) कूटकर महीन करें। कपड़छान करके समान भाग मिसरी मिलाकर नौ माशे की मात्रा से मासिक धर्म के तीसरे दिन से सात दिन तक स्त्री सेवन करे। बन्ध्यत्वदोष दूर होकर सन्तान प्राप्त होगी।

(iii) पीपल, कालीमिर्च, नागकेसर एवम् अदरक समभाग लेकर ऋतुकाल के चौथे दिन से 3 माशा मात्रा में देसी घी मिलाकर पांच दिन सेवन करने से वांझ स्त्री भी गर्भवती हो।

नोट– ये तीन प्रयोग स्त्रियों के सन्तानप्राप्ति के लिए जनहितार्थ यहां लिख दिए हैं। ये प्रयोग कुछ अनुभवी व्यक्तियों से प्राप्त हुए हैं, फिर भी किसी अनुभवी वैद्य का परामर्श लेकर ही प्रयोग में लाएं–ऐसा अनुरोध है।

सिद्धिप्रद कुछ तन्त्र–मन्त्र व जड़–पत्ते

पत्नीप्राप्ति हेतु

पुष्य नक्षत्र में 'गीदड़सींगी' लाकर प्रतिदिन ' ऐं डं पं लं '– अक्षरों की माला जपें। 3 मास में 'गीदड़सींगी' सिद्ध होगी। इस सिद्ध 'गीदड़सींगी' को धारण करने से सद्यः पत्नी प्राप्त होती है।

पतिसुख–प्राप्ति हेतु

गुरुपुष्य नक्षत्र में पीतवर्ण कनेर की जड़ प्राप्त करें। आश्लेषा नक्षत्र में खेजड़ी की जड़ लाएं। इन दोनों जड़ों को मघा नक्षत्र में पीला धागा बांधकर अपने पास रखें। शीघ्र पतिसुख प्राप्त होगा।

नौकरीप्राप्ति किंवा इन्टरव्यू में सफलता हेतु

चतुर्मखी रुद्राक्ष को लाल धागे से पिरोकर "ॐ नमः शिवाय" की माला जाप करें, सफलता मिलेगी।

पुत्रप्राप्ति हेतु

पुनर्वसु नक्षत्र में अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ प्राप्त करें। रवि–पुष्य नक्षत्र में बेरी की जड़ लाएं तथा उ.भा. नक्षत्र में अशोक वृक्ष की जड़ लाकर रेवती नक्षत्र में इन जड़ियों को हरे धागे में पिरोकर पति–पत्नी दोनों कण्ठ

में धारण करें। " ऐं ङं पं " की तीन माला जाप करें। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को पति–पत्नी दोनों ज्वार एवं जौ बीजकर " ऐं ङं पं " बोलकर बोए हुए ज्वार–जौ को सींचें। दशमी तिथि को ये ज्वार–जौ शिवपिण्डी पर श्रद्धापूर्वक चढ़ा दें, शीघ्र ही सन्तानयोग बनेगा।

व्यापार में वृद्धि एवं अर्थलाभ हेतु

रविवार को पीपल के 11 पत्ते, सोमवार को अशोक एवं मंगलवार को बरोटे (बड़) के 11–11 पत्ते प्राप्त करें। इन पत्तों पर ' पं दं लं ' लिखकर ' पं दं लं ' की तीन माला जाप करके इन पत्तों को जलप्रवाह करें। अर्थलाभ होने लगेगा। व्यापार में वृद्धि एवं भाग्योदय का अनुभव होने लगेगा।

तन्त्रशास्त्र के कुछ अद्भुत प्रयोग

तन्त्रशास्त्र भले ही प्रच्छन्न शास्त्र है, परन्तु वर्तमानकाल में इसके अनुभूत प्रयोगों से आज के वैज्ञानिक भी चकित हैं। यहां आगे कुछ तन्त्र–प्रयोग दे रहे हैं– अनुभव करें।

(i) **रविवार वाले दिन** भोजपत्र पर लालचन्दन से शत्रु (विरोधी) का नाम लिखकर शहद में डुबो दें, शत्रु आपके पक्ष की बात करने लगेगा।

(ii) श्रवण नक्षत्र में काले एरण्ड की जड़ को घर लाकर धूप–दीप से जड़ का पूजन करके बन्ध्या स्त्री के गले में लालधागे(वस्त्र) से बांध दें। रजोदर्शन से शुद्ध हो जाने पर गोखरू के बीज, निर्गुण्डी के रस में डालकर 9 माशे सात दिन तक पीएं, गर्भधारण होगा।

(iii) सफेद कटेली की जड़ एवं जटामांसी के पत्ते को दूध में पीसकर तीन दिन पीने एवं दूधादि पदार्थों का हल्का भोजन करने से बन्ध्या स्त्री अवश्य पुत्र प्राप्त करती है–

"मूलाशोका वाकिल लक्ष्मणाया ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः।
क्षीरोक्तचर्या नियमेन भुंक्ते पुत्रं प्रसूते वनिता विचित्रम्।।"

(iv) श्रावण मास, कृष्णपक्ष, रोहिणी नक्षत्र में एक नए कलशे में गंगाजल भर लाएं. आते समय पीछे नहीं देखें और आते–जाते समय कोई

गोखरू के बीज निर्गुंडी के रस में डालकर सात दिन तक पिलाने से बन्ध्यापन दूर हो एवं गर्भधारण हो।

(v) यदि कोई मनुष्य अति दुःख दे रहा हो तो उसके दरवाजे में चोंटली की मूल गाड़ देने से उसका शीघ्र उच्चाटन होगा।

(vi) आर्द्रा नक्षत्र में गूलर का बंदा लाकर यदि धन के गल्ले में रखे तो धन न घटे, यदि अन्न में रख दिया जाए तो अन्न में कमी न आए।

(vii) **दाद समाप्त–** अफीम, चकवड़ के बीज, नौशादर व चूना नींबू के रस में खरल करके दाद पर लगाने से तीन दिन में आराम होगा।

(viii) जिमीकन्द व तुलसी की जड़ को पान में रखकर खाने से स्तम्भन होता है –

"सूरणं तुलसीमूलं ताम्बूलैः सह भक्षयेत्।
न मुंचति नरो वीर्यमेकैकेन न संशयः।।"

(ix) **बच्चों के सूखारोग से निवृत्ति–** इस रोग में हज़ारों बच्चे हर वर्ष मरते हैं। इसकी औषधि शनिवार को सूर्योदय से पहले बिना बियानी गाय का गोबर लाकर बच्चे की पीठ पर मलें और गर्म पानी से धो डालें। कुछ कांटे से प्रतीत होंगे, इसलिए जल्दी–जल्दी चिमटी आदि से बीन उखाड़ फेंको– बस आराम जानो।

(x) **पथरीरोग दूर करने के लिए–** जवाखार चार रत्ती, मूली का रस अढ़ाई तोला मिलाकर सुबह–शाम पीने से 3 या 4 दिन में ही पथरी कटकर निकल जाती है।

(xi) **सफेद या रक्तकुष्ठ की औषधि–** तपकी हरताल 6 माषे, बावची का चूर्ण 1 तोला सिरके में घोटकर लगाने से 21 दिन में जड़ से समाप्त हो जाता है।

(xii) **रतौंधी की दवा–** छोटी हरड़, पिपली का चूर्ण स्त्री के दूध में घिसकर अंजन कर लेने से तीन दिन में जड़ से आराम हो जाता है।

विंशोत्तरीदशा साधन

(जन्म के समय विंशोत्तरीदशा का भोग्य–भुक्त)

जातक के जन्मकालिक स्पष्टचन्द्रमा के राशि, अंश, कला द्वारा नीचे दी गई " विंशोत्तरीदशा–भोग्यकाल सारणी " से विंशोत्तरी दशा के जन्मकालिक दशेश (महादशा के स्वामी ग्रह) एवं उसकी भोग्यदशा के वर्ष आदि सरलता से इस प्रकार जाने जा सकते हैं :–

इस सारणी में जन्मकालिक स्पष्टचन्द्र की राशि के नीचे चन्द्र की अंश, कला के आगे जन्मकालिक दशेश और उसकी दशा के भोग्य वर्षादि लिखे हैं। इन भोग्य वर्षादि में से चन्द्र की शेष कलाओं द्वारा आगे दी गई " भोग्यदशासाधन सहायक सारणी " से स्पष्टचन्द्र की शेष कलाओं के आगे दशेश ग्रह के नीचे लिखे, मासादि लेकर घटाने पर जन्मकालिक दशा के भोग्य वर्ष आदि ज्ञात हो जाते हैं। नीचे दिया गया उदाहरण देखें :–

उदाहरण :– जन्मकालीन स्पष्टचन्द्र 5 रा. 10 अं. 30 क. है। " विंशोत्तरीदशा भोग्यकाल सारणी " से कन्या राशि के नीचे 10 अंश 20 कला के आगे चन्द्र की दशा का भोग्यकाल 9 वर्ष 9 मास 0 दिन मिला। " भोग्यदशासाधन सहायक सारणी " में दशेश चन्द्र के नीचे चन्द्र की शेष कला 10 के आगे 1 मास 15 दिन मिले। इन्हें 9 वर्ष 9 मास 0 दिन में से घटाने पर 9 वर्ष 7 मास 15 दिन प्राप्त हुए। यह जन्म के समय चन्द्रदशा का भोग्य (शेष बचा) काल है। इसे चन्द्र के पूर्णदशाकाल (10 वर्ष) में से घटाने पर 4 मास 15 दिन चन्द्रदशा का जन्मकालिक भुक्त काल हुआ।

विंशोत्तरीदशा-भोग्यकाल सारणी (भाग 1)

(स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि के अनुसार)

स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन	स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन,
अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	अं. क..	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
0 00	केतु 07 00 00	सूर्य 04 06 00	मंगल 03 06 00	गुरु 04 00 00	6 40	केतु 03 06 00	सूर्य 01 06 00	राहु 18 00 00	शनि 14 03 00
0 20	06 09 27	04 04 06	03 03 27	03 07 06	7 00	03 03 27	01 04 06	17 06 18	13 09 09
0 40	06 07 24	04 02 12	03 01 24	03 02 12	7 20	03 01 24	01 02 12	17 01 06	13 03 18
1 00	06 05 21	04 00 18	02 11 21	02 09 18	7 40	02 11 21	01 00 18	16 07 24	12 09 27
1 20	06 03 18	03 10 24	02 09 18	02 04 24	8 00	02 09 18	00 10 24	16 02 12	12 04 06
1 40	06 01 15	03 09 00	02 07 15	02 00 00	8 20	02 07 15	00 09 00	15 09 00	11 10 15
2 00	05 11 12	03 07 06	02 05 12	01 07 06	8 40	02 05 12	00 07 06	15 03 18	11 04 24
2 20	05 09 09	03 05 12	02 03 09	01 02 12	9 00	02 03 09	00 05 12	14 10 06	10 11 03
2 40	05 07 06.	03 03 18	02 01 06	00 09 18	9 20	02 01 06	00 03 18	14 04 24	10 05 12
3 00	05 05 03	03 01 24	01 11 03	00 04 24	9 40	01 11 03	00 01 24	13 11 12	09 11 21
3 20	05 03 00	03 00 00	01 09 00	शनि 19 00 00	10 00	01 09 00	चन्द्र 10 00 00	13 06 00	09 06 00
3 40	05 00 27	02 10 06	01 06 27	18 06 09	10 20	01 06 27	09 09 00	13 00 18	09 00 09
4 00	04 10 24	02 08 12	01 04 24	18 00 18	10 40	01 04 24	09 06 00	12 07 06	08 06 18
4 20	04 08 21	02 06 18	01 02 21	17 06 27	11 00	01 02 21	09 03 00	12 01 24	08 00 27
4 40	04 06 18	02 04 24	01 00 18	17 01 06	11 20	01 00 18	09 00 00	11 08 12	07 07 06
5 00	04 04 15	02 03 00	00 10 15	16 07 15	11 40	00 10 15	08 09 00	11 03 00	07 01 15
5 20	04 02 12	02 01 06	00 08 12	16 01 24	12 00	00 08 12	08 06 00	10 09 18	06 07 24
5 40	04 00 09	01 11 12	00 06 09	15 08 03	12 20	00 06 09	08 03 00	10 04 06	06 02 03
6 00	03 10 06	01 09 18	00 04 06	15 02 12	12 40	00 04 06	08 00 00	09 10 24	05 08 12
6 20	03 08 03	01 07 24	00 02 03	14 08 21	13 00	00 02 03	07 09 00	09 05 12	05 02 21

विंशोत्तरीदशा–भोग्यकाल सारणी (भाग 2)

(स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि के अनुसार)

स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन
अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
13 20	शुक्र 20 00 00	चन्द्र 07 06 00	राहु 09 00 00	शनि 04 09 00
13 40	19 06 00	07 03 00	08 06 18	04 03 09
14 00	19 00 00	07 00 00	08 01 06	03 09 18
14 20	18 06 00	06 09 00	07 07 24	03 03 27
14 40	18 00 00	06 06 00	07 02 12	02 10 06
15 00	17 06 00	06 03 00	06 09 00	02 04 15
15 20	17 00 00	06 00 00	06 03 18	01 10 24
15 40	16 06 00	05 09 00	05 10 06	01 05 03
16 00	16 00 00	05 06 00	05 04 24	00 11 12
16 20	15 06 00	05 03 00	04 11 12	00 05 21
16 40	15 00 00	05 00 00	04 06 00	बुध 17 00 00
17 00	14 06 00	04 09 00	04 00 18	16 06 27
17 20	14 00 00	04 06 00	03 07 06	16 01 24
17 40	13 06 00	04 03 00	03 01 24	15 08 21
18 00	13 00 00	04 00 00	02 08 12	15 03 18
18 20	12 06 00	03 09 00	02 03 00	14 10 15
18 40	12 00 00	03 06 00	01 09 18	14 05 12
19 00	11 06 00	03 03 00	01 04 06	14 00 09
19 20	11 00 00	03 00 00	00 10 24	13 07 06
19 40	10 06 00	02 09 00	00 05 12	13 02 03
20 00	10 00 00	02 06 00	गुरु 16 00 00	12 09 00
20 20	09 06 00	02 03 00	15 07 06	12 03 27
20 40	09 00 00	02 00 00	15 02 12	11 10 24
21 00	08 06 00	01 09 00	14 09 18	11 05 21
21 20	08 00 00	01 06 00	14 04 24	11 00 18
21 40	07 06 00	01 03 00	14 00 00	10 07 15
22 00	07 00 00	01 00 00	13 07 06	10 02 12
22 20	06 06 00	00 09 00	13 02 12	09 09 09
22 40	06 00 00	00 06 00	12 09 18	09 04 06
23 00	05 06 00	00 03 00	12 04 24	08 11 03
23 20	शुक्र 05 00 00	मंगल 07 00 00	गुरु 12 00 00	बुध 08 06 00
23 40	04 06 00	06 09 27	11 07 06	08 00 27
24 00	04 00 00	06 07 24	11 02 12	07 07 24
24 20	03 06 00	06 05 21	10 09 18	07 02 21
24 40	03 00 00	06 03 18	10 04 24	06 09 18
25 00	02 06 00	06 01 15	10 00 00	06 04 15
25 20	02 00 00	05 11 12	09 07 06	05 11 12
25 40	01 06 00	05 09 09	09 02 12	05 06 09
26 00	01 00 00	05 07 06	08 09 18	05 01 06
26 20	00 06 00	05 05 03	08 04 24	04 08 03
26 40	सूर्य 06 00 00	05 03 00	08 00 00	04 03 00
27 00	05 10 06	05 00 27	07 07 06	03 09 27
27 20	05 08 12	04 10 24	07 02 12	03 04 24
27 40	05 06 18	04 08 21	06 09 18	02 11 21
28 00	05 04 24	04 06 18	06 04 24	02 06 18
28 20	05 03 00	04 04 15	06 00 00	02 01 15
28 40	05 01 06	04 02 12	05 07 06	01 08 12
29 00	04 11 12	04 00 09	05 02 12	01 03 09
29 20	04 09 18	03 10 06	04 09 18	00 10 06
29 40	04 07 24	03 08 03	04 04 24	00 05 03
30 00	04 06 00	03 06 00	04 00 00	00 00 00

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक– ''श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्'' द्वारा रचित

एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन – व्रत–पर्व विवेक

जो कि व्रत–पर्व पर आधारित एक ऐसा विशिष्ट संकलन है, जिस में 50 वर्षों (सन् 2001 से 2050 ई. तक) के सभी धर्मों (हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, जैन एवम् क्रिश्चियन) के व्रत–पर्वो की तारीखें और उनके निर्णायक सिद्धान्तों (Criteria) के इलावा हिन्दु व्रत–पर्वो से सम्बन्धित व्रत–कथाएं तथा देवी–देवताओं की पूजा–अर्चनार्थ आरतियां भी दी गई हैं। डायरी, पंचांग, जन्त्री तथा कैलेण्डर के निर्माता– प्रकाशकों, ज्योतिषियों एवं धर्मनिष्ठ लोगों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी है। विस्तृत विज्ञापन इस पंचांग के अन्त में देखें।

भोग्य दशासाधन सहायक सारणी

स्पष्ट चन्द्र की शेष कलाएं	दशेश केतु (7 वर्ष)	दशेश शुक्र (20 वर्ष)	दशेश सूर्य (6 वर्ष)	दशेश चन्द्र (10 वर्ष)	दशेश मंगल (7 वर्ष)	दशेश राहु (18 वर्ष)	दशेश गुरु (16 वर्ष)	दशेश शनि (19 वर्ष)	दशेश बुध (17 वर्ष)	स्पष्ट चन्द्र की शेष कलाएं
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
1	00 03	00 09	00 03	00 05	00 03	00 08	00 07	00 09	00 08	1
2	00 06	00 18	00 05	00 09	00 06	00 16	00 14	00 17	00 15	2
3	00 09	00 27	00 08	00 14	00 09	00 24	00 22	00 26	00 23	3
4	00 13	01 06	00 11	00 18	00 13	01 02	00 29	01 04	01 01	4
5	00 16	01 15	00 14	00 23	00 16	01 11	01 06	01 13	01 08	5
6	00 19	01 24	00 16	00 27	00 19	01 19	01 13	01 21	01 16	6
7	00 22	02 03	00 19	01 02	00 22	01 27	01 20	02 00	01 24	7
8	00 25	02 12	00 22	01 06	00 25	02 05	01 28	02 08	02 01	8
9	00 28	02 21	00 24	01 11	00 28	02 13	02 05	02 17	02 09	9
10	01 01	03 00	00 27	01 15	01 01	02 21	02 12	02 26	02 17	10
11	01 04	03 09	00 29	01 20	01 05	02 29	02 20	03 04	02 24	11
12	01 07	03 18	01 02	01 24	01 08	03 07	02 27	03 13	03 02	12
13	01 10	03 27	01 05	01 29	01 11	03 15	03 04	03 21	03 10	13
14	01 13	04 06	01 08	02 03	01 14	03 24	03 11	04 00	03 17	14
15	01 17	04 15	01 11	02 08	01 17	04 02	03 18	04 08	03 25	15
16	01 20	04 24	01 13	02 12	01 20	04 10	03 25	04 17	04 03	16
17	01 23	05 03	01 16	02 17	01 23	04 18	04 02	04 26	04 11	17
18	01 26	05 12	01 18	02 21	01 27	04 26	04 09	05 04	04 18	18
19	01 29	05 21	01 21	02 25	02 00	05 04	04 16	05 12	04 25	19
20	02 03	06 00	01 24	03 00	02 03	05 12	04 24	05 21	05 03	20

यदि आपके पास पुराने पंचांगों का रिकॉर्ड नहीं है तो कोई बात नहीं

—हमारा 'गणक मार्त्तण्ड' खीरीदिए—

812 पृष्ठों के विशाल ग्रन्थ गणक मार्त्तण्ड में 110 वर्ष के दैनिक तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रहस्पष्ट तथा ग्रहों के राशिप्रवेशकाल तो हैं ही, इसके अलावा इसने 140 पृष्ठों पर देशी–विदेशी जन्मपत्र निर्माणप्रक्रिया, विश्वभर के सूर्योदयास्तकाल, पंचांगपरिवर्त्तन, अखिल भारतीय लग्न स्पष्ट करने की दोनों (प्राचीन और नवीन) पद्धतियों वाली लग्नसारणियां, दैनिक मेषादि 12 लग्नों का उदय तुरन्त बतला देने वाले अद्भुत कोष्ठक, दशान्तर्दशा सारणियां, भारत के लगभग 4000 नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अं. तथा विश्व के लगभग सभी देशों के स्टैं. टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां तथा जन्मपत्रोपयोगी और भी पर्याप्त सामग्री इस ग्रन्थ में ज्योतिषियों के लिए चुनकर दी गई है। सभी गणित–प्रक्रियाओं के स्पष्टीकरण के लिए सर्वत्र कई–कई उदाहरण दिए गए हैं।

मूल्य Rs. 1000/-- + डाकव्यय Rs. 60/–

पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil. कोठी नं. 59, सैक्टर- 6, P.O. पंचकूला-(हरियाणा) -Pin- 134109 , PHONE- 0172-2565303

प्रसूति-लग्न विचार

मेष–जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष– माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन– माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क–माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह– माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या–माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५– ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला– माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक–माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु–माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७– इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७– इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ–माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आई, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**–अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान– (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। **दोहा– लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।।** केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्– चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०– तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्– जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः– यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि– वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्यां शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न मे ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०– मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्– दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तन्धन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो– प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः **सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।**"– इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। **स्मरण रहे कि**– पहले उपरोक्त मंत्र तथा **यन्त्र** ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०:– "द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः– "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः– "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग–रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग– क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग– यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग–चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब मान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन के जोय।।१।। [illegible] मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– झे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्त्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता या कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य.

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेमभीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दु:खी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दु:खी	सुखभोगी	दु:खी	सुखी	सुखी	सुखी	दु:खी	मातृहानि	दु:खी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दु:खी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दु:खिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दु:खिनी	दरिद्रा	दु:खार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दु:खार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दु:खार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दु:खिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दु:खिनी	विधवा	दु:खिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दु:खिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैदूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति– बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है।

सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलह्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासश्च तत्ररात्री – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्थानादाज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोशृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्णण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढे पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूट, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोशृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूडे, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूडे 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापडी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें.	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायर्येति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृम्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गए गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंगविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राह्वे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी,श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट–निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्निभयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य- उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः" ।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोतम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि. 1	★मेष	मं.	3 00 00	कर्क पुन. 4	★कर्क	चं.	6 00 00	तुला चित्रा 3	★तुला	शु.	9 00 00	मकर उ. षा. 2	★मकर	श.
0 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	3 03 20	,, पुष्य 1	सिंह	सू.	6 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	9 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
0 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	3 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	6 06 40	,, स्वाती 1	धनु	गु.	9 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
0 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	3 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	6 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	9 10 00	,, श्रव. 1	मेष	मं.
0 13 20	,, भर. 1.	सिंह	सू.	3 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	6 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	9 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
0 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	3 16 40	,, आश्ले. 1	घनु	गु.	6 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	9 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
0 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	3 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	6 20 00	,, विशा. 1	मेष	मं.	9 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
0 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	3 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	6 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	9 23 20	,, धनि. 1	सिंह	सू.
0 26 40	,, कृत्ति. 1	धनु	गु.	3 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	6 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	9 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
1 00 00	वृष ,, 2	मकर	श.	4 00 00	सिंह मघा 1	मेष	मं.	7 00 00	वृश्चि. ,, 4	कर्क	चं.	10 00 00	कुम्भ ,, 3	तुला	शु.
1 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	4 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	7 03 20	,, अनु. 1	सिंह	सू.	10 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
1 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	4 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	7 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	10 06 40	,, शत. 1	धनु	गु.
1 10 00	,, रोहि. 1	मेष	मं.	4 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	7 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	10 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
1 13 20	,, ,, 2	★वृष	शु.	4 13 20	,, पू.फा. 1	★सिंह	सू.	7 13 20	,, ,, 4	★वृश्चि.	मं.	10 13 20	,, ,, 3	★कुम्भ	श.
1 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	4 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	7 16 40	,, ज्येष्ठा 1	धनु	गु.	10 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
1 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	4 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	7 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	10 20 00	,, पू.भा. 1	मेष	मं.
1 23 20	,, मृग. 1	सिंह	सू.	4 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	7 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	10 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
1 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	4 26 40	,, उ.फा. 1	घनु	गु.	7 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	10 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
2 00 00	मिथुन ,, 3	तुला	शु.	5 00 00	कन्या ,, 2	मकर	श.	8 00 00	धनु मूल 1	मेष	मं.	11 00 00	मीन ,, 4	कर्क	चं.
2 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	5 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	8 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	11 03 20	,, उ.भा. 1	सिंह	सू.
2 06 40	,, आर्दा 1	धनु	गु.	5 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	8 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	11 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
2 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	5 10 00	,, हस्त 1	मेष	मं.	8 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	11 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
2 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	5 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.	8 13 20	,, पू.षा. 1	सिंह	सू.	11 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
2 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	5 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	8 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	11 16 40	,, रेव. 1	धनु	गु.
2 20 00	,, पुन. 1	मेष	मं.	5 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	8 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	11 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
2 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	5 23 20	,, चित्रा 1	सिंह	सू.	8 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	11 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2067 वि.)

राशि	वैशाख (14 अप्रै. से 13 मई तक, सन् 2010 ई.)	राशि	ज्येष्ठ (14 मई से 14 जून तक सन्, 2010 ई.)	राशि	आषाढ़ (15 जून से 15 जुला. तक, सन् 2010 ई.)
मेष	स्थानान्तरण का विचार, धनलाभ, निजीजन कष्ट, सम्पत्तिविवाद, कार्यान्तर से लाभ, मासान्त में शरीरकष्ट। अप्रै. 21, 22, 23, 30; मई 1, 9, 10, 11 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, अर्थहानियोग, निजीजन कष्ट, नई योजना, स्त्रीपक्ष से मदद, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। मई 19, 20, 27, 28, 29; जून 6, 7 अशुभ।	मेष	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, घरेलू झंझट, मित्रों से मेल, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। जून 15, 16, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
वृष	धनलाभ होकर हानि हो, कार्यान्तर से लाभ, भ्रातृसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, मासान्त में अच्छा लाभ। अप्रै. 14, 15, 16, 23, 24, 25; मई 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ होकर हानि हो। सम्पत्तिविवाद, नई योजना से लाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। मई 21, 22, 29, 30, 31; जून 8, 9, 10 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, अर्थहानि भय, निजीजन कष्ट, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक। जून 17, 18, 26, 27; जुला. 6, 7, 14, 15 अशुभ।
मिथुन	उदरविकार, धनहानि, भ्रातृसुख, जमीन–जायदाद–सम्बन्धी विवाद, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कारोबार ठीक। अप्रै. 17, 18, 25, 26, 27; मई 4, 5, 6 अशुभ।	मिथुन	क्रोध बढ़े, धनलाभ, भ्रातृ सुख, नई योजना असफल, कारोबार ठीक, मासान्त में लाभ। मई 14, 15, 23, 24; जून 1, 2, 11, 12 अशुभ।	मिथुन	रक्त–तित्तविकार, अर्थलाभ होकर हानि हो, भ्रातृ–सुख,साझेदारी में हानि। जून 19, 20, 28, 29, 30; जुला. 8, 9 अशुभ।
कर्क	सेहत खराब, धनलाभ, बन्धुकष्ट, गुप्तशत्रु से भय, कारोबार ठीक, नेत्रकष्ट। अप्रै. 19, 20, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, सांझेदारी में नुक्सान, भ्रातृसुख, अशुभ समाचार, नया कारोबार बने। मई 16, 17, 18, 25, 26; जून 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।	कर्क	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजन विरोध, स्त्रीसुख, मासान्त में आय से व्यय अधिक। जून 21, 22, 23; जुला. 1, 2, 10, 11 अशुभ।
सिंह	स्त्रीकष्ट, अर्थहानि, आय से व्यय अधिक, असफल योजना, यात्रा में कष्ट। अप्रै. 21, 22, 23, 30; मई 1, 9, 10, 11 अशुभ।	सिंह	शरीरकष्ट, निजीजनसहयोग, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीपक्ष शुभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। मई 19, 20, 27, 28, 29; जून 6, 7 अशुभ।	सिंह	कफविकार, धनलाभ, भ्रातृकष्ट, अच्छे लोगों से मेल, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। जून 15, 16, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
कन्या	उदरविकार, धनलाभ, मित्रों से अनबन, गुप्त चिन्ता, कारेबार में हानि, कार्यान्तर का विचार। अप्रै. 14, 15, 16, 23, 24, 25; मई 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, जमीन–जायदाद–सम्बन्धी झगड़े, गुप्तशत्रु से भय, स्त्रीसुख, कारोबार में हानि। मई 21, 22, 29, 30, 31; जून 8, 9, 10 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, वृथाविवाद, अर्थहानिभय, यात्रासुख, नई योजना, स्त्रीसुख, मासान्त में हानिभय। जून 17, 18, 26, 27; जुला. 6, 7, 14, 15 अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, अर्थलाभ होकर हानि हो, निजीजन विरोध, नई योजना से लाभ, स्त्रीसुख, कारोबार कमजोर। अप्रै. 17, 18, 25, 26, 27; मई 4, 5, 6 अशुभ।	तुला	वृथाविवाद से बचें, धनहानि, निजीजन विरोध, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, यात्रा में कष्ट। मई 14, 15, 23, 24; जून 1, 2, 11, 12 अशुभ।	तुला	उदर व नेत्रविकार, कारोबार में विशेष हानिभय, मित्र–बन्धु से मदद, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। जून 19, 20, 28, 29, 30; जुला. 8, 9 अशुभ।
वृश्चिक	रक्त–पित्तविकार, अर्थहानि, निजीजनों से सहयोग, सम्पदालाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। अप्रै. 19, 20, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।	वृश्चिक	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि हो, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट। मई 16, 17, 18, 25, 26; जून 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, धनलाभ, भ्रातृसुख, घरेलू झंझट सूलझें, स्त्रीपक्ष से मदद, कार्यान्तर से लाभ। जून 21, 22, 23; जुला 1, 2, 10, 11 अशुभ।
धनु	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ,. भ्रातृसुख, निजीजन सहयोग, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री से अनबन। अप्रै. 21, 22, 23, 30; मई 1, 9, 10, 11 अशुभ।	धनु	रक्त–पित्तविकार, अर्थहानि, निजीजन सुख, शुभ समाचार, शत्रु कमजोर, कारोबार पूर्ववत्। मई 19, 20, 27, 28, 29; जून 6, 7 अशुभ।	धनु	सेहत गड़बड़, कारोबार कमजोर, अच्छे लोगों से मदद मिले, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। जून 15, 16, 23, 24, 25; जुला. 3, 4, 5, 12, 13 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, धनलाभ, निजीलोगों से अनबन, शत्रु कमजोर, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। अप्रै. 14, 15, 16, 23, 24, 25; मई 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।	मकर	सेहत बिगड़े, धनलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से कष्ट, कारोबार पहले से ठीक। मई 21, 22, 29, 30, 31; जून 8, 9, 10 अशुभ।	मकर	सेहत ठीक रहे, धनलाभ, बन्धुकष्ट, निजीलोगों से अनबन, स्थानान्तरण व कार्यान्तरण का विचार। जून 17, 18, 26, 27; जुला. 6, 7, 14, 15 अशुभ।
कुम्भ	वात–पित्तविकार, अर्थलाभ, निजीजन सुख, असफल योजना, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से लाभ। अप्रै. 17, 18, 25, 26, 27; मई 4, 5, 6 अशुभ।	कुम्भ	घरेलू झंझट सुलझें, निजीजन सहयोग, असफल योजना, यात्रा में कष्ट, गुप्तचिन्ता, कार्यान्तर का विचार। मई 14, 15, 23, 24; जून 1, 2, 11, 12 अशुभ।	कुम्भ	क्रोध बढ़े, धनलाभ, भ्रातृकष्ट, असफल योजना, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। जून 19, 20, 28, 29, 30; जुला. 8, 9 अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, सन्ततिकष्ट, स्त्री से अनबन, कारोबार कमजोर। अप्रै. 19, 20, 28, 29; मई 7, 8, 9 अशुभ।	मीन	बन्धनभय, अचानक अर्थलाभ, निजीलोगों से अनबन, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक। मई 16, 17, 18, 25, 26; जून 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।	मीन	राजभय, वृथाव्यय, बन्धु से मदद, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीपक्ष शुभ, मासान्त में लाभ। जून 21, 22, 23; जुला. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2067 वि.)

राशि	श्रावण (16 जुला. से 15 अग. तक, सन् 2010 ई.)	राशि	भाद्रपद (16 अग. से 15 सितं. तक, सन् 2010 ई.)	राशि	आश्विन (16 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2010 ई.)
मेष	राजपक्ष से भय, नेत्रकष्ट, वृथाव्यय, निजीलोगों से अनबन, असफल योजना, मासान्त में कारोबार से लाभ। जुला. 21, 22, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।	मेष	सेहत ठीक, आर्थिक परेशानी, मन चिन्तित, असफल योजना, कारोबार ठीक, सन्तानपक्ष से चिन्ता। अग. 17, 18, 27, 28; सितं. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।	मेष	सिर व नेत्रकष्ट, अर्थलाभ, घरेलू झंझट, मित्र–बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार से लाभ। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।
वृष	शत्रुपक्ष कमजोर, वृथाव्यय, सन्तानपक्ष से चिन्ता, अपमानभय, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार। जुला. 23, 24, 25; अग. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	वृष	घरेलू झंझट बढ़ें। अर्थलाभ होकर हानि, निजीलोगों से अनबन, सम्पत्तिविवाद, स्त्रीसुख। अग. 19, 20, 21, 29, 30, 31; सितं. 7, 8 अशुभ।	वृष	सेहत गड़बड़, धनलाभ, वृथाविवाद से बचें, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। सितं. 16, 17, 26, 27; अक्तू. 5, 6, 13, 14 अशुभ।
मिथुन	अचानक कष्ट, गुप्तचिन्ता, स्त्रीपक्ष से लाभ, असफल योजना, कार्यान्तर से हानि। जुला. 16, 17, 25, 26, 27; अग. 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	मिथुन	सेहत गड़बड़, वृथाव्यय, भ्रातृकष्ट, शत्रु बढ़ें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में हानिभय। अग. 22, 23; सितं. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	मिथुन	धनहानि, कारोबार कमजोर, चिन्ता बढ़े, खर्च विशेष, स्त्रीपक्ष से लाभ। सितं. 18, 19, 20, 28, 29; अक्तू. 7, 8, 15, 16 अशुभ।
कर्क	धनहानि, सम्पत्तिविवाद, निजीलोगों से अनबन, गुप्तचिन्ता, शनि–मंगल का दान करें। जुला. 18, 19, 20, 28, 29, 30; अग. 7, 8, 15 अशुभ।	कर्क	कफ–वायुविकार, वृथाविवाद से दूर रहें, नई योजना से लाभ, स्त्रीसुख, मासान्त अशुभ। अग. 16, 24, 25, 26; सितं. 3, 4, 11, 12 अशुभ।	कर्क	अर्थलाभ होकर हानि हो, मित्रों से लाभ, नई योजना, स्त्रीकष्ट, कारोबार में हानि। सितं. 20, 21, 22, 30; अक्तू. 1, 2, 9, 10 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, वृथाव्यय, सन्तानसुख, कारोबार कुछ ठीक, निजीजन सहयोग, मासान्त में राजभय। जुला. 21, 22, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।	सिंह	नेत्रकष्ट, उदरविकार, सम्पदालाभ, कारोबार कमजोर, सन्तानपक्ष से चिन्ता। अग. 17, 18, 27, 28; सितं. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।
कन्या	उदरविकार, वृथाव्यय, मित्रों से मदद, घरेलू झंझट बढ़े। कारोबार कमजोर। जुला. 23, 24, 25; अग. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	कन्या	राजपक्ष से भय, लड़ाई–झगड़ों से दूर रहें, निजीजन सहयोग, स्त्रीकष्ट, कारोबार कमजोर। अग. 19, 20, 21, 29, 30, 31; सितं. 7, 8 अशुभ।	कन्या	सेहत ठीक, कारोबार से लाभ, भ्रातृसुख, स्थिर सम्पत्ति–लाभ, गुप्तचिन्ता। सितं. 16, 17, 26, 27; अक्तू. 5, 6, 13, 14 अशुभ।
तुला	गुप्तचिन्ता, स्त्रीपक्ष से कष्ट, वृथाव्यय, शत्रु प्रबल, अचानक कष्ट। जुला. 16, 17, 25, 26, 27; अग. 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	तुला	रक्त–पित्तविकार, धनलाभ होकर हानि हो, बन्धुकष्ट, यात्रा हो, स्त्रीसुख, कारोबारसम्बन्धी चिन्ता। अग. 22, 23; सितं. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, अर्थलाभ, वृथाव्यय, चोरों से सावधान, राजपक्ष से भय। सितं. 18, 19, 20, 28, 29; अक्तू. 7, 8, 15, 16 अशुभ।
वृश्चिक	घरेलू झंझट, विवाद से दूर रहें, यात्रा में कष्ट, दुर्घटनाभय, शनि–मंगल को यात्रा में सावधानी। जुला. 18, 19, 20, 28, 29, 30; अग. 7, 8, 15 अशुभ।	वृश्चिक	गुप्तचिन्ता, अपमानभय, बन्धुकष्ट, नई उलझनें पेश आएं, कार्यान्तर से हानि। अग. 16, 24, 25, 26; सितं. 3, 4, 11, 12 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, स्त्रीसुख, निजीजन विरोध, कारोबार ठीक, आय से व्यय अधिक। सितं. 20, 21, 22, 30; अक्तू. 1, 2, 9, 10 अशुभ।
धनु	सेहत ठीक, धनलाभ, घरेलू झंझट बढ़ें, निजीलोगों से अनबन, कारोबार में रद्दोबदल। जुला. 21, 22, 31; अग. 1, 9, 10 अशुभ।	धनु	विशेष कष्टभय, राजपक्ष अशुभ, स्त्रीसुख, स्थानान्तरण का विचार, शत्रु हतप्रभ। अग. 17, 18, 27, 28; सितं. 5, 6, 13, 14, 15 अशुभ।	धनु	सेहत गड़बड़, राजपक्ष से भय, वृथाविवाद से दूर रहें, अपमानभय, गुप्त शत्रु से सावधान। सितं. 23, 24, 25; अक्तू. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।
मकर	कफ–वायुविकार, रिश्तेदारों से अनबन, घरेलू झंझट बढ़ें, स्त्रीसुख, कारोबार कमजोर। जुला. 23, 24, 25; अग. 2, 3, 11, 12 अशुभ।	मकर	कफ–वायुविकार, अर्थहानि, भ्रातृसुख, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष से कष्ट, स्त्रीपक्ष से अनबन, कारोबार ठीक। अग. 19, 20, 21, 29, 30, 31; सितं. 7, 8 अशुभ।	मकर	उदरविकार, भ्रातृसुख, मित्रों से अनबन, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक। सितं. 16, 17, 26, 27; अक्तू. 5, 6, 13, 14 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, वृथाव्यय, बन्धु सहयोग, कारोबार ठीक, सन्तानपक्ष से चिन्ता, मासान्त में कष्ट। जुला. 16, 17, 25, 26, 27; अग. 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।	कुम्भ	कष्टभय, भ्रातृपक्ष से मदद, मित्रों से अनबन, शत्रु बढ़ें, गुप्तरोग, कारोबार ठीक। अग. 22, 23; सितं. 1, 2, 9, 10 अशुभ।	कुम्भ	कफ–वायुविकार, निजीजन कष्ट, कारोबार ठीक, सम्पत्तिलाभ, शत्रु कमजोर, स्त्रीकष्ट। सितं. 18, 19, 20, 28, 29; अक्तू. 7, 8, 15, 16 अशुभ।
मीन	उदर व नेत्रकष्ट, दोस्तों से अनबन, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक, मासान्त में धनलाभ। जुला. 18, 19, 20, 28,	मीन	मन परेशान रहे, घरेलू झंझट बढ़ें, असफल योजना, कारोबार कमजोर, कारोबार पहले से ठीक। अग. 16, 24,	मीन	नेत्रकष्ट, अर्थलाभ हो, नई योजना से लाभ, स्त्री से अनबन, कारोबार ठीक, यशोलाभ। सितं. 20, 21, 22,

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2067 वि.)

राशि	कार्तिक (17 अक्तू. से 15 नवं. तक, सन् 2010 ई.)	राशि	मार्गशीर्ष (16 नवं. से 15 दिसं. तक, सन् 2010 ई.)	राशि	पौष (16 दिसं., '10 से 13 जन. तक सन् 2011 ई.)
मेष	राजपक्ष से भय, लाभ होकर हाथ से निकले, उत्साह बढ़े, दोस्तों से अनबन, सन्तानकष्ट। अक्तू. 20, 21, 22, 30, 31; नवं. 7, 8 अशुभ।	मेष	राजभय, धनहानि, बन्धु-भ्रातृकष्ट, सम्पत्तिविवाद, नए कारोबार में हानि, विरोधीपक्ष प्रबल, आय से व्यय अधिक। नवं. 17, 18, 26, 27; दिसं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	मेष	कष्टभय, राजपक्ष से हानि, वृथाव्यय, मित्र-बन्धु से मदद, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। दिसं. 16, 23, 24; जन.(2011 ई.) 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
वृष	सिर व नेत्रकष्ट, अर्थहानि होकर अचानक लाभ हो, शत्रु प्रबल, कारोबार से लाभ। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	वृष	उदरविकार, धनलाभ होकर हानि, उत्साह बना रहे, यात्रा में कष्ट, शुभ समाचार, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। नवं. 19, 20, 21, 28, 29; दिसं. 7, 8 अशुभ।	वृष	हाथ तंग रहे, कर्जा बढ़े, भाई व मित्र से मदद, ऐशो-इशरत में मन लगे, शनि-राहु का दान करें। दिसं. 16, 17, 18, 25, 26, 27; जन. (2011 ई.) 3, 4, 13 अशुभ।
मिथुन	मन चिन्तित रहे, धनहानि, आय से व्यय अधिक, गुप्तचिन्ता, कारोबार कमजोर। अक्तू. 17, 25, 26, 27; नवं. 3, 4, 12, 13 अशुभ।	मिथुन	सेहत गड़बड़, घरेलू झंझट, बन्धुकष्ट, अच्छे लोगों से मेल, सन्तानपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। नवं. 21, 22, 23, 30; दिसं. 1, 9, 10 अशुभ।	मिथुन	सेहत गड़बड़, कारोबार में लाभ, घरेलू झंझट, नई योजना से हानि, कारोबार पहले से बेहतर। दिसं. 19, 20, 27, 28, 29; जन. (2011 ई.) 5, 6, 7 अशुभ।
कर्क	बन्धनभय, अर्थलाभ होकर वृथाव्यय हो, मित्र-बन्धुकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार में हानि। अक्तू. 18, 19, 27, 28, 29; नवं. 5, 6, 14, 15 अशुभ।	कर्क	कफ-वायुविकार, धनलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक। नवं. 16, 24, 25; दिसं. 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	कर्क	सेहत ठीक, शुभ समाचार, मित्र से अनबन, मासमध्य में विशेष खर्च, कारोबार पूर्ववत्। दिसं. 21, 22, 30, 31; जन. (2011 ई.) 8, 9 अशुभ।
सिंह	शरीरकष्ट, अर्थलाभ हो, निजीजन सहयोग, गुप्तचिन्ता, कारोबार बिगड़े। अक्तू. 20, 21, 22, 30, 31; नवं. 7, 8 अशुभ।	सिंह	शरीर-पीड़ा, धनलाभ होकर हानि हो, भाई से मदद, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार, यात्रा में कष्ट। नवं. 17, 18, 26, 27; दिसं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	सिंह	सेहत ठीक, आमदन से खर्च अधिक, उत्साह बढ़े, पार्टनरशिप में लाभ,अचानक धनलाभ। दिसं. 16, 23, 24; जन.(2011 ई.) 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
कन्या	अचानक कष्टभय, धनलाभ, मित्रों से अनबन, कलंकभय, कारोबार में रद्दोबदल। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	कन्या	रक्त-पित्तविकार, उत्साह बना रहे, गुप्तचिन्ता, नए कारोबार से लाभ, शत्रु सिर उठाएं। नवं. 19, 20, 21, 28, 29; दिसं. 7, 8 अशुभ।	कन्या	अर्थहानि, घरेलू उलझनें बढ़ें, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक, मानसिक परेशानी बनी रहे। दिसं. 16, 17, 18, 25, 26, 27; जन. (2011 ई.) 3, 4, 13 अशुभ।
तुला	सेहत ठीक, धनलाभ, बन्धुकष्ट-भय, जमीन से लाभ, स्त्रीपक्ष से कष्ट, कारोबार पहले से अच्छा। अक्तू. 17, 25, 26, 27; नवं. 3, 4, 12, 13 अशुभ।	तुला	सेहत ठीक, वृथाव्यय असफल योजना, अचानक यात्रा, अच्छे मित्र बनें, कारोबार ठीक। नवं. 21, 22, 23, 30; दिसं. 1, 9, 10 अशुभ।	तुला	सेहत गड़बड़, मित्रकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, नई योजना से लाभ, कारोबार ठीक। दिसं. 19, 20, 27, 28, 29; जन. (2011 ई.) 5, 6, 7 अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, अच्छे लोगों से मेल, शुभ समाचार, अचानक लाभ होकर हानिभय। अक्तू. 18, 19, 27, 28, 29; नवं. 5, 6, 14, 15 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत गड़बड़, मित्र-बन्धुसुख, नीच से अपमानभय, कारोबार बेहतर, नई योजना से कारोबार में लाभ। नवं. 16, 24, 25; दिसं. 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	वृश्चिक	शुभ समाचार, सम्पत्तिसुख, लेकिन घरेलू झंझट बढ़ें, कारोबार बढ़े, शत्रु कमजोर। दिसं. 21, 22, 30, 31; जन. (2011 ई.) 8, 9 अशुभ।
धनु	कष्टभय, धनलाभ, भाई-बन्धु कष्ट, गुप्तशत्रु से सावधान, कारोबार बेहतर। अक्तू. 20, 21, 22, 30, 31; नवं. 7, 8 अशुभ।	धनु	मन अशांत, मित्र-बन्धु से मदद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार कुछ कमजोर, आय से व्यय अधिक। नवं. 17, 18, 26, 27; दिसं. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।	धनु	सेहत ठीक, धनलाभ होकर हाथ से निकले, अच्छे लोगों से मेल हो, स्त्रीपक्ष से लाभ। दिसं. 16, 23, 24; जन. (2011 ई.) 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, राजपक्ष शुभ, मित्र-बन्धु सहयोग, शत्रु कमजोर, आय से व्यय अधिक। अक्तू. 23, 24; नवं. 1, 2, 9, 10, 11 अशुभ।	मकर	खुशी का समाचार मिले, आमदन हो, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। नवं. 19, 20, 21, 28, 29; दिसं. 7, 8 अशुभ।	मकर	नई योजना, नए कारोबार से लाभ, अर्थलाभ, मित्र-बन्धु से मदद, स्त्रीसुख, मासान्त में खर्च विशेष। दिसं. 16, 17, 18, 25, 26, 27; जन. (2011 ई.) 3, 4, 13 अशुभ।
कुम्भ	शरीरकष्ट, अच्छी आय-व्यय भी हो, बन्धुसुख, सन्ततिकष्ट, अचानक अशान्ति का कारण बने। अक्तू. 17, 25, 26, 27; नवं. 3, 4, 12, 13 अशुभ।	कुम्भ	कष्ट बढे, शत्रु प्रबल, मित्रों से मदद, आमदन ठीक, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। नवं. 21, 22, 23, 30; दिसं. 1, 9, 10 अशुभ।	कुम्भ	उत्साह बढ़े, आमदन अच्छी हो, बन्धुजन सहयोग, शत्रु प्रबल, कारोबार ठीक। दिसं. 19, 20, 27, 28, 29; जन. (2011 ई.) 5, 6, 7 अशुभ।
मीन	कष्टभय, अर्थहानि से चिन्ता, दोस्तों से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, गुप्तशत्रु से सावधान। अक्तू. 18, 19, 27, 28, 29; नवं. 5, 6, 14, 15 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, धनलाभ हो, निजीजनों से अनबन, कारोबार में सफलता, उत्साह व पराक्रम बढ़े। नवं. 16, 24, 25; दिसं. 2, 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।	मीन	सेहत ठीक, अचानक खर्च हो, शुभयात्रा, नई योजना, कर्जे से बचें, मासान्त में व्यय अधिक। दिसं. 21, 22, 30, 31; जन. (2011 ई.) 8, 9 अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2067वि.)

राशि	माघ (14 जन. से 12 फर. तक, सन् 2011 ई.)	राशि	फाल्गुन (13 फर. से 13 मार्च तक, सन् 2011 ई.)	राशि	चैत्र (14 मार्च से 13 अप्रै. तक, सन् 2011 ई.)
मेष	स्थानहानिभय, वृथाव्यय, भाई से मदद, घरेलू झंझट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में रुकावट। जन. 20, 21, 28, 29; फर. 7, 8 अशुभ।	मेष	वृथाविवाद से दूर रहें, राजपक्ष से भय, विशेष खर्च, अच्छे लोगों से मदद मिले, सन्तानपक्ष से चिन्ता। फर. 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 6, 7 अशुभ।	मेष	अचानक कष्टभय, कर्जा चढ़े, निजीजनों से अनबन,कारोबार ठप्प, स्त्रीपक्ष से लाभ। मार्च 16, 17, 24, 25; अप्रै. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
वृष	धनलाभ, नए कार्य की योजना, वृथाविवाद से बचें, अचानक नुक्सान का डर। जन. 14, 22, 23, 30, 31; फर. 1, 9, 10, 11 अशुभ।	वृष	सेहत ठीक, कारोबार से अचानक लाभ, निजीजनकष्ट, सन्तानहेतु विशेष खर्च, कारोबार बेहतर। फर. 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 8, 9, 10 अशुभ।	वृष	क्रोध बढ़े, शत्रु प्रबल हों, कार्यान्तर से लाभ, निजीलोगों से अनबन, आय से व्यय अधिक। मार्च 18, 19, 26, 27; अप्रै. 5, 6 अशुभ।
मिथुन	अचानक कष्टभय, धनलाभ, निजीजन कष्ट, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। जन. 15, 16, 17, 24, 25; फर. 2, 3, 12 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, धनलाभ, भाई–बन्धु से अनबन, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार में प्रगति। फर. 13, 20, 21; मार्च 1, 2, 11, 12 अशुभ।	मिथुन	सेहत ठीक, घरेलू झंझट बढ़ें खर्च अधिक, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट। मार्च 20, 21, 28, 29, 30; अप्रै. 7, 8, 9 अशुभ।
कर्क	कफ–वायुविकार, घरेलू झंझट बढ़ें, चोटभय, कारोबार ठीक, यात्रा में कष्ट। जन. 18, 19, 26, 27; फर. 4, 5, 6 अशुभ।	कर्क	उत्साह बढे, वृथाव्यय हो, बुरे कामों में मन लगे, कारोबार में हानि, कर्जा सिर चढ़े। फर. 14, 15, 22, 23; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।	कर्क	उदरविकार, आमदन हो, गुप्तशत्रु से सावधान, कारेबार में तरक्की। मार्च 14, 15, 22, 23, 31; अप्रै. 1, 10, 11 अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, चोरी–ठगी से हानि, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक, वृथाविवाद से दूर रहें। जन. 20, 21, 28, 29; फर. 7, 8 अशुभ।	सिंह	शरीरकष्ट, आय से व्यय अधिक, निजीजन विरोध, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में सुधार। फर. 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 6, 7 अशुभ।	सिंह	वृथाविवाद से दूर रहें, धनहानि का योग है, निजीजन से मदद, असफल योजना, स्त्रीसुख। मार्च 16, 17, 24, 25; अप्रै. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
कन्या	उदर व सिरपीड़ा, धनहानि भय, मित्र से धोखा, निजीजन कष्ट, कारोबार में लाभ। जन. 14, 22, 23, 30, 31; फर. 1, 9, 10, 11 अशुभ।	कन्या	मनपरेशान, कारोबार कमजोर, निजीजन हेतु विशेष खर्च, कर्जा चढ़े, घरेलू झंझट। फर. 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 8, 9, 10 अशुभ।	कन्या	क्रोध बढ़े, राजपक्ष से भय, घरेलू झंझट, कारोबार में रद्दोबदल, मासान्त में विशेष खर्च। मार्च 18, 19, 26, 27; अप्रै. 5, 6 अशुभ।
तुला	धनहानि भय, राजपक्ष से चिन्ता, सन्तानहेतु विशेष खर्च, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। जन. 15, 16, 17, 24, 25; फर. 2, 3, 12 अशुभ।	तुला	आय से व्यय अधिक, बन्धुकष्ट, नई योजना व कारोबार में हानि, मासान्त अच्छा रहे। फर. 13, 20, 21; मार्च 1, 2, 11, 12 अशुभ।	तुला	विरोधीपक्ष प्रबल रहे, विशेष खर्च, चोट से बचें, लड़ाई–झगड़े से दूर रहें, कार्यान्तर का विचार। मार्च 20, 21, 28, 29, 30; अप्रै. 7, 8, 9 अशुभ।
वृश्चिक	अच्छे लोगों से मेल, आय से व्यय अधिक, सुखद यात्रा, नए कार्य में हानिभय। जन. 18, 19, 26, 27; फर. 4, 5, 6 अशुभ।	वृश्चिक	शरीरपीड़ा, भाई से अनबन, सम्पत्तिविवाद, शत्रु बढ़ें, स्त्रीपक्ष ठीक, कार्यान्तर से लाभ। फर. 14, 15, 22, 23; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।	वृश्चिक	सेहत ठीक, फिजूल खर्च हो, भाई से मदद, मित्र से मनमुटाव, सन्तानपक्ष से खुशी। मार्च 14, 15, 22, 23, 31; अप्रै. 1, 10, 11 अशुभ।
धनु	नई योजनाएं बनें, भाई के साथ मेल, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष से सुख, कारोबार में रद्दोबदल। जन. 20, 21, 28, 29; फर. 7, 8 अशुभ।	धनु	कफ–वायुविकार, वृथाव्यय, बन्धुसुख, सन्तान से परेशानी, कारोबार में रद्दोबदल, खर्च अधिक। फर. 16, 17, 24, 25, 26; मार्च 6, 7 अशुभ।	धनु	कष्टभय, वृथाविवाद, मित्रों से मदद, गुप्तचिन्ता, कारोबार कमजोर, धोखे से बचें। मार्च 16, 17, 24, 25; अप्रै. 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।
मकर	धनलाभ, निजीजनविरोध, सम्पदासुख,मासमध्य में शुभ समाचार, कार्यान्तर से लाभ। जन. 14, 22, 23, 30, 31; फर. 1, 9, 10, 11 अशुभ।	मकर	मन में गुप्त चिन्तनीय कष्ट, नेत्रकष्ट, भाई से मदद, मित्र–बन्धु से अनबन, सन्तानपक्ष से शुभ समाचार। फर. 18, 19, 26, 27, 28; मार्च 8, 9, 10 अशुभ।	मकर	उदरविकार, धनलाभ, घरेलू लागों से अनबन, मित्रों से सहयोग मिले, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। मार्च 18, 19, 26, 27; अप्रै. 5, 6 अशुभ।
कुम्भ	सेहत ठीक, अर्थहानिभय, राजपक्ष से चिन्ता, नई योजना, स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त ठीक। जन. 15, 16, 17, 24, 25; फर. 2, 3, 12 अशुभ।	कुम्भ	शत्रु कमजोर, खर्च अधिक हो, घरेलू झंझट बढ़ें, मानसिक अशान्ति बढ़े, कर्जा चढ़े। फर. 13, 20, 21; मार्च 1, 2, 11, 12 अशुभ।	कुम्भ	सेहत ठीक, धनहानिभय, अच्छे लोगों से मदद, शत्रु बढ़ें, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 20, 21, 28, 29, 30; अप्रै. 7, 8, 9 अशुभ।
मीन	उदरविकार, धनलाभ होकर हाथ से निकले, कर्जा बढ़े, मित्र–बन्धु से मदद, स्त्रीकष्ट। जन. 18, 19, 26, 27; फर. 4, 5, 6 अशुभ।	मीन	प्रभावक्षेत्र बढ़े, अर्थलाभ होकर हानि हो, मित्र–बन्धुसुख, मासमध्य में कष्टप्रद समाचार। फर. 14, 15, 22, 23; मार्च 3, 4, 5, 13 अशुभ।	मीन	क्रोध बढ़े, कारोबार में रुकावट, धनलाभ, शत्रु प्रबल, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 14, 15, 22, 23, 31; अप्रै. 1, 10, 11 अशुभ।

अथ वर्षराजादि फल विचार (संवत् २०६७ वि.)

(सन् २०१०–११ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९१११, सृष्टि संवत् १९५५८८५१११, श्रीविक्रम संवत् २०६७, शक संवत् १९३२, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२४६, कलि-संवत् ५१११, सप्तर्षि-संवत् ५०८६, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५३५-३६, श्रीबुद्ध संवत् २६३३-३४, हिजरी सन् १४३१-३२, फसली सन् १४१७-१८, ईस्वी सन् २०१०–११ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का 'शोभन' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है;–

" शोभने वत्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा।
तथापि सुखिनो लोका बहु–सस्यार्थ–वृष्टिभिः।।"

अर्थात्– 'शोभन' नामक संवत्सर में प्रजा में नानाविध रोगों से परेशानी रहे (दुर्घटना किंवा प्राकृतिक–प्रकोपजन्य कष्टों से) अनेकत्र जनता शोकाकुल रहे। (पुनरपि विश्व के अनेक भागों में) जनता में सुख एवं धन–धान्य–समृद्धि रहेगी। वर्षा अधिक हो।

'मेघ महोदय' के अनुसार 'शोभन' वत्सर का फल इस प्रकार है;–

"शोभने राज्ञां प्रजानां च सुखम्। अतिवर्षा, चैत्रादि मासत्रये धान्यं समर्घम्। राजविग्रहः क्वचिदुत्पातः, आषाढ़ेऽल्पमेघः, श्रावणेऽतिवर्षा, परं लोकपीड़ा, भाद्रपदे महान् मेघः। आश्विने सुभिक्षं ततोऽपि किञ्चिद् विग्रहः।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) मंगल, मन्त्री बुध, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शुक्र, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) गुरु, मेघेश (मौसम, वर्षा–पानी के स्वामी) मंगल, रसेश (गुड़–खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) सूर्य, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) शुक्र, फलेश (फल–फूल आदि के स्वामी) चन्द्र, धनेश (धन–दौलत एवं खजाना के स्वामी) गुरु एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) चन्द्र हैं।

संवत् २०६७ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है;–

(१) संवत्सर २०६७ वि. के राजा मंगल का फल–

" भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयः चौराक्रमः पार्थिव–विग्रहश्च।
दुःखं प्रजा-व्याधि-वियोगपीड़ा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः।।"

अर्थात्– संवत्सर का राजा मंगल होने से अग्निकाण्ड से हानि हो, (प्राकृतिक उत्पात, रोगादि किंवा उग्रवादजन्य घटनाओं से) जनहानि हो। चोरी–ठगी आदि की घटनाएं अधिक हों। शासकों में परस्पर कलह किंवा देश की सीमाओं पर युद्धजन्य विभीषिका रहे। प्रजा(अनेकविध हेतुओं से) दुखी, रोग किंवा प्रियजनविछोह से पीड़ित रहे। वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव हो।

(२) मन्त्री बुध का फल–

"'शशि–सुते शुभमन्त्रिपदं गते स्वपतिना रमते मदनप्रिया।
बहुधनं बहुवारि–समन्वितं यव–मसूर–चणान्नमहर्घता।।"

अर्थात्– बुध के मन्त्रि होने पर स्त्रियां अपने जीवन–साथी के साथ ऐशो–इशरत में अधिक मन लगाएं। जनता में धन–धान्य–समृद्धि एवं वर्षा अधिक हो; जौ, मसूर, चना आदि अनाजों की फसल को हानि पहुंचने से महँगाई बढ़े।

(३) सस्येश शुक्र का फल–

"'शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूम–शालीक्षु–धनं प्रियंगु–वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि।।"

अर्थात्– शुक्र के सस्येश होने पर वर्षा पर्याप्त एवं सुखकरी हो। गोधूम

(गेहूं), चावल एवं ईख की फसल बहुत अच्छी हो। प्रियंगु वृक्षों पर लगे फूल सुखप्रद रहें।

(४) धान्येश गुरु का फल-

" गुरौ धान्यपतौ जाते यव गोधूम–शालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्रह्मवादिनः।।"

अर्थात्– गुरु धान्येश हो तो जौ, गेहूं, चावल की परिपक्वता एवं उपज उत्तम हो। ब्राह्मणवर्ग अपने यज्ञ–यजनादि कार्यों में तत्पर रहे।

(५) मेघेश भौम का फल-

" अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुतिविचारविहीन–धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमः बहुतापदः।।"

अर्थात्– मंगल मेघेश हो तो द्विजवर्ग वेद–विचार विहीन (अपने कर्तव्य से विमुख) रहे। कहीं वर्षा कम, कहीं बाढ़ की स्थिति बने। कहीं शीत, कहीं गर्मी अधिक अनुभव हो।

(६) रसेश सूर्य का फल-

"रसपतिः तरणिः धरणी तदा विरस–भोगरताल्प–पयोधरा।
वसन–तैल–घृतप्रिय–मानवा सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः।।"

अर्थात्– सूर्य रसेश हो तो रसपदार्थ (घी, दूध आदि) कम हों। वर्षा–पानी की कमी अनुभव हो। वस्त्र–तेल–घी आदि के इच्छुक व्यक्तियों को इन वस्तुओं की आपूर्ति संभव न होगी। शासकवर्ग एवं राजा लोगों को भी सुख न मिले।

(७) नीरसेश शुक्र का फल-

" कर्पूरागरु–गन्धानां हेम–मौक्तिक–वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि ।।"

अर्थात्– शुक्र नीरसेश हो तो कपूर, अगर, गन्ध, सोना, मोती, वस्त्र आदि के मूल्य में वृद्धि हो।

(८) फलेश चन्द्र का फल-

" यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता बलिभिः कुसुमैर्युताः।
द्विजवराः वरभोग–समन्विता नृपगणो नय–नाटन–तत्परः।।"

अर्थात्– चन्द्रमा फलेश हो तो वृक्षों में फल–फूल–समृद्धि रहे। बेलें फूलों से सुशोभित रहें। विप्रवर अच्छे (सात्विक) भोजन करें। राजा लोग न्यायपथ पर चलें, किंवा न्याय का प्रदर्शनमात्र करें।

(९) धनेश गुरु का फल-

"सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिज-वृत्तिपराः सुखभाजिनः।
फलित-पुष्पित-भूमिरुहाःसदा विविध-द्रव्ययुता भुवि मानवाः।।"

अर्थात्– बृहस्पति धनेश हो तो व्यापारिक व्यक्ति व्यापारक्षेत्र में सुख अनुभव करें। वृक्ष–फल–फूलों से सुसज्जित रहें। नाना प्रकार के वैभव एवं धन–धान्य की समृद्धि जनता में रहे।

(१०) दुर्गेश चन्द्र का फल-

" गढपतिर्मृग–लांछनको यदा नृप–सुराज्य–विलासितपौरजाः।
बहुधनेक्षुज–गोरस– भोगिनो नरवरा वरवर्णित– विग्रहाः।।"

अर्थात्– चन्द्रमा दुर्गेश हो तो शासकवर्ग अच्छे ढंग से शासन करें। प्रजा में आनन्दमय वातावरण रहे। ईख, गुड़, घी(गोरस) के व्यापार से अच्छा लाभ हो। श्रेष्ठ लोग सुन्दर परिधानयुत एवं सुन्दर (स्वस्थ) शरीर वाले हों।

सूचना– यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; रसेश का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ५, धान्य १७, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा १५, निद्रा ३, आलस्य १३, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६ फल १३, उत्साह ११, उग्रता ७, पाप ५, पुण्य ६, व्याधि ७, व्याधिनाश ३, आचार १, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उदभिज्ज ३, जरायुज ३, अण्डज ३, स्वेदज ३, टिड्डी १५, तोता ७, मूषक ११, सोना ७, तांबा ५, स्वचक्र ३, [illegible] हैं।

आवर्तकादि चतुर्मेघों में "पुष्कर" नामक मेघ है।

फलः– 'पुष्कर' नामक मेघ की स्थिति में कन्दमूल फल (Underground Fruits) अधिक मात्रा में उपलब्ध न हों। अनैतिक कृत्यों (पापों) में वृद्धि हो। नानाविध रोगों से जनता परेशान हो। वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव हो–

"नैव कन्दफल–मूल–विवृद्धिर्जायते विविधपातक–वृद्धिः।
रोगतो जनकृशत्वमनल्पं पुष्करे जलधरे जलमल्पकम्।।"

किञ्च– "पुष्करे मन्दवृष्टिःस्यात्"– अर्थात् वर्षा की कमी अनुभव हो।

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में 'नील' नामक मेघ है।

फल– "सत्पयो दिशति गोकुल-पूर्णा वस्त्रताखिल मही परिपूर्णा।
नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टिः जायते सकल–मानव–तुष्टिः।।"

अर्थात्– गोरस (दूध, घी आदि) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। रुई, कपास की फसल बहुत अच्छी हो। वर्षा अच्छी हो। जनता प्राकृतिक सम्पदा–समृद्धि से सन्तुष्ट रहे।

किञ्च– "नीलः क्षिप्रं हि वर्षति"– वर्षा पर्याप्त, किंवा कहीं अगेती (समय से पूर्व) वर्षा भी हो।

अनन्तादि अष्टनागविचार– इस वर्ष अनन्तादि अष्टनागों में 'शंख' नामक नाग है।

फल– पूर्वोत्तरी भारत में कहीं प्राकृतिक आपदा (तूफान, भूकम्प, भूस्खलन आदि) से भारी हानि के योग बनेंगे। दक्षिणी क्षेत्रों में उग्रवादजन्य अशान्ति, समुद्री तूफान आदि आपदा से संवत् २०६७ वि. में भारी हानि के योग बनेंगे। उत्तरी भारत में कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से कृषकवर्ग परेशान रहे। 'शंख' नामक नाग की अवधि में रोग–सर्पदंश की घटनाओं से जनता परेशान रहे। अग्निकाण्ड की घटनाएं अधिक हों एवं पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में उग्रवाद भयंकररूप धारण करे।

सुबुध्नादि द्वादश नागों का फल– इस संवत् में बारह नागों में 'नन्दसारी' नामक नाग है।

फल– "यस्मिन् वर्षे नागराजो नन्दसार्यभिधानकः।
तस्मिन् वर्षे महावृष्टिं कुरुते नात्र संशयः।।"

अर्थात्– 'नन्दसारी' नाग की स्थिति में (कुछ भूभाग किंवा प्रान्तों में) महावृष्टि से बाढ़ आदि की स्थिति बनेगी। कहीं समुद्री तूफान से भी हानि संभव है।

आवह आदि "सप्तवायु" विचार– इस वर्ष ' वायुसप्तक में **'आवाह'** नामक वायु है।

फल– दक्षिणी प्रान्तों में समुद्री तूफान एवं भयंकर वायुप्रकोप से जनधन–हानि हो। उत्तरी भूभाग पर भी कुछ स्थानों पर वायुवेग से हानि के योग बनेंगे। समुद्रतटवर्ती भूभाग पर कहीं सुनामी–प्रकोप से भारी जनधनहानि होगी।

संवत्सर २०६७ वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'मंगल' होने से इस संवत् का वाहन 'वृषभ' है।

फल– कृषकवर्ग की अथाह मेहनत का फल कृषिकर्म से प्राप्त न होगा। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा एवं बिहार में बाढ़वर्षा से हानि होगी। सरकार को कृषिकर्म की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा।

अधिकमास फल– संवत् २०६७ वि. में **"वैशाख अधिकमास"** है।

फलः– "वैशाखयुग्मे धान्यानां निष्पत्तिरशुभा क्वचित्।"– चावल, चना, गेहूं आदि की फसल कहीं–कहीं ही खराब रहे, अन्यथा सर्वत्र फसल ठीक रहे। **"द्विमाधवगते दुर्भिक्षकं जायते"**– वैशाख अधिक होने पर अनेकत्र दुभिक्ष की स्थिति बनेगी।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को **रेवती** नक्षत्र) का अभाव है।
(२) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को **मृगशिरा** नक्षत्र) ७२.१४ प्रतिशत है।
(३) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को **भरणी** नक्षत्र) का अभाव है।
(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को **पुनर्वसु** नक्षत्र) ६२.०३ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण

(गेहूं), चावल एवं ईख की फसल बहुत अच्छी हो। प्रियंगु वृक्षों पर लगे फूल सुखप्रद रहें।

(४) धान्येश गुरु का फल-

" गुरौ धान्यपतौ जाते यव गोधूम–शालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्रह्मवादिनः।।"

अर्थात्– गुरु धान्येश हो तो जौ, गेहूं, चावल की परिपक्वता एवं उपज उत्तम हो। ब्राह्मणवर्ग अपने यज्ञ–यजनादि कार्यों में तत्पर रहे।

(५) मेघेश भौम का फल-

" अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुतिविचारविहीन–धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमः बहुतापदः।।"

अर्थात्– मंगल मेघेश हो तो द्विजवर्ग वेद–विचार विहीन (अपने कर्तव्य से विमुख) रहे। कहीं वर्षा कम, कहीं बाढ़ की स्थिति बने। कहीं शीत, कहीं गर्मी अधिक अनुभव हो।

(६) रसेश सूर्य का फल-

"रसपतिः तरिणः धरणी तदा विरस–भोगरताल्प–पयोधरा।
वसन–तैल–घृतप्रिय–मानवा सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः।।"

अर्थात्– सूर्य रसेश हो तो रसपदार्थ (घी, दूध आदि) कम हों। वर्षा–पानी की कमी अनुभव हो। वस्त्र–तेल–घी आदि के इच्छुक व्यक्तियों को इन वस्तुओं की आपूर्ति संभव न होगी। शासकवर्ग एवं राजा लोगों को भी सुख न मिले।

(७) नीरसेश शुक्र का फल-

" कर्पूरागरु–गन्धानां हेम–मौक्तिक–वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि ।।"

अर्थात्– शुक्र नीरसेश हो तो कपूर, अगर, गन्ध, सोना, मोती, वस्त्र आदि के मूल्य में वृद्धि हो।

(८) फलेश चन्द्र का फल-

" यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता बलिभिः कुसुमैर्युताः।
द्विजवराः [illegible] ।।"

अर्थात्– चन्द्रमा फलेश हो तो वृक्षों में फल–फूल–समृद्धि रहे। बेलें फूलों से सुशोभित रहें। विप्रवर अच्छे (सात्विक) भोजन करें। राजा लोग न्यायपथ पर चलें, किंवा न्याय का प्रदर्शनमात्र करें।

(९) धनेश गुरु का फल-

"सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिज-वृत्तिपराः सुखभाजिनः।
फलित-पुष्पित-भूमिरुहाःसदा विविध-द्रव्ययुता भुवि मानवाः।।"

अर्थात्– बृहस्पति धनेश हो तो व्यापारिक व्यक्ति व्यापारक्षेत्र में सुख अनुभव करें। वृक्ष–फल–फूलों से सुसज्जित रहें। नाना प्रकार के वैभव एवं धन–धान्य की समृद्धि जनता में रहे।

(१०) दुर्गेश चन्द्र का फल-

" गढपतिर्मृग–लांछनको यदा नृप–सुराज्य–विलासितपौरजाः।
बहुधनेक्षुज–गोरस– भोगिनो नरवरा वरवर्णित– विग्रहाः।।"

अर्थात्– चन्द्रमा दुर्गेश हो तो शासकवर्ग अच्छे ढंग से शासन करें। प्रजा में आनन्दमय वातावरण रहे। ईख, गुड़, घी(गोरस) के व्यापार से अच्छा लाभ हो। श्रेष्ठ लोग सुन्दर परिधानयुत एवं सुन्दर (स्वस्थ) शरीर वाले हों।

सूचना– यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र होता है। किन्तु विशेषतः राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ५, धान्य १७, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ३, तृषा १५, निद्रा ३, आलस्य १३, उद्यम ५, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६ फल १३, उत्साह ११, उग्रता ७, पाप ५, पुण्य ६, व्याधि ७, व्याधिनाश ३, आचार १, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उदभिज्ज ३ जरायुज ३, अण्डज ३, स्वेदज ३, टिड्डी १५, तोता ७, मूषक ११, सोना ७, तांबा ५ स्वचक्र ३, [illegible]

आवर्तकादि चतुर्मेघों में "पुष्कर" नामक मेघ है।

फलः– 'पुष्कर' नामक मेघ की स्थिति में कन्दमूल फल (Underground Fruits) अधिक मात्रा में उपलब्ध न हों। अनैतिक कृत्यों (पापों) में वृद्धि हो। नानाविध रोगों से जनता परेशान हो। वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव हो–

"नैव कन्दफल–मूल–विवृद्धिर्जायते विविधपातक–वृद्धिः।
रोगतो जनकृशत्वमनल्पं पुष्करे जलधरे जलमल्पकम्।।"

किञ्च– "पुष्करे मन्दवृष्टिःस्यात्"– अर्थात् वर्षा की कमी अनुभव हो।

नवमेघविचार– इसवर्ष नवमेघों में 'नील' नामक मेघ है।

फल– "सत्पयो दिशति गोकुल-पूर्णा वस्त्रताखिल मही परिपूर्णा।
नील–नाम्नि जलदे जलवृष्टिः जायते सकल–मानव–तुष्टिः।।"

अर्थात्– गोरस (दूध, घी आदि) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। रुई, कपास की फसल बहुत अच्छी हो। वर्षा अच्छी हो। जनता प्राकृतिक सम्पदा–समृद्धि से सन्तुष्ट रहे।

किञ्च– "नीलः क्षिप्रं हि वर्षति"– वर्षा पर्याप्त, किंवा कहीं अगेती (समय से पूर्व) वर्षा भी हो।

अनन्तादि अष्टनागविचार– इस वर्ष अनन्तादि अष्टनागों में 'शंख' नामक नाग है।

फल– पूर्वोत्तरी भारत में कहीं प्राकृतिक आपदा (तूफान, भूकम्प, भूस्खलन आदि) से भारी हानि के योग बनेंगे। दक्षिणी क्षेत्रों में उग्रवादजन्य अशान्ति, समुद्री तूफान आदि आपदा से संवत् २०६७ वि. में भारी हानि के योग बनेंगे। उत्तरी भारत में कहीं अवर्षण किंवा अतिवर्षण से कृषकवर्ग परेशान रहे। 'शंख' नामक नाग की अवधि में रोग–सर्पदंश की घटनाओं से जनता परेशान रहे। अग्निकाण्ड की घटनाएं अधिक हों एवं पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में उग्रवाद भयंकररूप धारण करे।

सुबुध्नादि द्वादश नागों का फल– इस संवत् में बारह नागों में 'नन्दसारी' नामक नाग है।

फल– "यस्मिन् वर्षे नागराजो नन्दसार्यभिधानकः।
तस्मिन् वर्षे महावृष्टिं कुरुते नात्र संशयः।।"

अर्थात्– 'नन्दसारी' नाग की स्थिति में (कुछ भूभाग किंवा प्रान्तों में) महावृष्टि से बाढ़ आदि की स्थिति बनेगी। कहीं समुद्री तूफान से भी हानि संभव है।

आवह आदि "सप्तवायु" विचार– इस वर्ष ' वायुसप्तक में **'आवाह'** नामक वायु है।

फल– दक्षिणी प्रान्तों में समुद्री तूफान एवं भयंकर वायुप्रकोप से जनधन–हानि हो। उत्तरी भूभाग पर भी कुछ स्थानों पर वायुवेग से हानि के योग बनेंगे। समुद्रतटवर्ती भूभाग पर कहीं सुनामी–प्रकोप से भारी जनधनहानि होगी।

संवत्सर २०६७ वि. का वाहन– इसवर्ष का राजा 'मंगल' होने से इस संवत् का वाहन 'वृषभ' है।

फल– कृषकवर्ग की अथाह मेहनत का फल कृषिकर्म से प्राप्त न होगा। खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा एवं बिहार में बाढ़वर्षा से हानि होगी। सरकार को कृषिकर्म की ओर विशेष ध्यान देना पड़ेगा।

अधिकमास फल– संवत् २०६७ वि. में "वैशाख अधिकमास" है।

फलः– "वैशाखयुग्मे धान्यानां निष्पत्तिरशुमा क्वचित्।"– चावल, चना, गेहूं आदि की फसल कहीं–कहीं ही खराब रहे, अन्यथा सर्वत्र फसल ठीक रहे। **"द्विमाधवगते दुर्भिक्षकं जायते"–** वैशाख अधिक होने पर अनेकत्र दुभिक्ष की स्थिति बनेगी।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) का अभाव है।
(२) वायुस्तम्भ–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) ७२.१४ प्रतिशत है।
(३) तृणस्तम्भ–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) का अभाव है।
(४) अन्नस्तम्भ–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ६२.०३ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण

(जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ- इस वर्ष जलस्तम्भ का अभाव है। संवत् का राजा भी मंगल होने से वर्षा की कमी करता है। जलस्तर नीचे जाएगा। विद्युत्-उत्पादन क्षमता में कमी अनुभव होगी, परिणामस्वरूप इण्डस्ट्री वालों को भारी परेशानी का सामना करना होगा। जल-जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है, महँगाई बढ़ेगी। चावल, जीरा एवं अन्य खाद्य पदार्थ मंहगे होंगे। इसवर्ष रोहिणी का वास 'पर्वत' पर होने से भी वर्षा की कमी रहेगी।

(२) वायुस्तम्भ- इसवर्ष वायुस्तम्भ सबसे प्रबल है। वायुस्तम्भ ७२.१४ प्रतिशत होने से भूगर्भगत वायु का विशेष दबाव (Pressure) होने से कहीं समुद्री भूभाग पर भूगर्भगत विशेष-तरंगों के कारण विशेष जनधन-हानि सम्भव है। कहीं वायुवेग से कृषि-वृक्षों एवं अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। वर्षाकारक मेघ वायुवेग से बिखरते रहेंगे। परिणामस्वरूप, कहीं भयंकर सूखा, कहीं भारी वर्षा से हानि हो।

(३) तृणस्तम्भ- इसवर्ष तृणस्तम्भ का भी अभाव है। जल-तृणस्तम्भ इस वर्ष न होने से यह वर्ष बहुत क्षीण-सम्पदा का संकेत देता है। पशुचारा मंहगा होगा। आधि-व्याधि से जनता परेशान रहेगी। जन-असन्तोष को दबाने के लिए नए उपाए सोचने होंगे। ग़रीब-मध्यमवर्ग असन्तुष्ट रहेगा।

(४) अन्नस्तम्भ- अन्नस्तम्भ ६२.०३ प्रतिशत होने से अन्नक्षेत्र की आपूर्ति सरकार को गोदामों में सञ्चित अन्न से करनी पड़ेगी। जल-तृणस्तम्भ का अभाव अन्नस्तम्भ को प्रभावित करेगा। कृषकवर्ग को विशेष सुविधा-सम्पन्न बनाने के लिए प्रयास सरकार के हित में जाएंगे। भू-क्रय-विक्रय पर शासन को अंकुश लगाना होगा, अन्यथा कृषियोग्य भूमि की उपलब्धता के प्रभाव दूरगामी होंगे। क्षीणस्तम्भ देश की आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करेंगे।

वर्षस्तम्भों के विचार से यहवर्ष आगामी केन्द्रीय-शासन के लिए कई प्रकार की समस्याओं को उपस्थित कर सकता है। परमाणुसन्धि इस दृष्टि से भारत के लिए हितकारी सिद्ध होगी।

आर्षमान विचार (वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष- (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) का अभाव है।

(२) द्वितीय आर्ष-(गत संवत् २०६६ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र)

(३) तृतीय आर्ष- (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) का अभाव है।

(४) चतुर्थ आर्ष -(कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ६०.४८ प्रतिशत है।

इसवर्ष देश की रक्षा के लिए स्थापित चार दुर्गों (किलों) के विचार से भी यह वर्ष विशेष चिन्तनीय स्थिति का संकेत देता है। क्योंकि इस संवत् में वर्षरक्षा हेतु कल्पित **प्रथम दुर्ग का पूर्ण अभाव** है। देश में प्राकृतिक आपदा, साम्प्रदायिक एवं आतंकवादजन्य उपद्रवों से जनधनहानि की घटनाएं अशान्ति का कारण बनेंगी। जल-वायु की प्रतिकूलता, समुद्री भूभाग पर तूफान भी हानि कर सकते हैं।

द्वितीय आर्ष ५.०६ प्रतिशत एवं तृतीय आर्ष का अभाव होना भी जनजीवन एवं देश की प्रगति, राजनीतिज्ञ प्रमुखों के लिए काफी कठिनतापूर्ण परिस्थितियों का संकेतक है। इस संवत् में राजनीतिज्ञों की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा, अन्यथा प्रमुख राजनीतिज्ञविशेष के जीवन को खतरा है।

इसवर्ष चतुर्थ आर्ष ६०.४८ प्रतिशत होने से सन्तोषप्रद है। यह उग्रवाद से निपटने के लिए प्रमुख राष्ट्रों को एकमंच पर एकत्र होने की योजना को कार्यान्वित करेगा। जल-थल-नौसेना एवं आणविक-शक्ति-सम्पन्नता पर विशेष सतर्कता देशहित में रहेगी। कार्त्तिक-पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र सशक्त होने से देश की सम्प्रभुता को दृढ़ रखेगा। एवं प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करेगा।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।।"

रोहिणी का वास- इस वर्ष रोहिणी का वास 'पर्वत' पर है।

फल- " रोहिणी नाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।
वृष्टिहानिस्तदा ज्ञेया सर्वसस्य विनाशनम्।।"

अर्थात्- वर्षा की भयंकर कमी अनुभव होगी। परिणामस्वरूप, गेहूं, चना, जौ, चावल आदि की फसलों को बहुत नुक्सान पहुंचेगा। महँगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, जनता में अशान्ति बढ़े।

संवत्सर(समय) का वास-क्योंकि, इसवर्ष रोहिणी का वास पर्वत

फल– वर्षा कम हो, महँगाई बढ़ेगी। ज़मीन, कृषिभूमि की कीमत बढ़ेगी।

शनि की दृष्टि– संवत्सर २०६७ वि. के प्रारम्भ से अन्त तक शनि कन्या राशि में ही रहेगा। अतः इस संवत् (२०६७ वि.) में शनि की दृष्टि दक्षिण दिशा की तरफ ही रहेगी।

फल – दक्षिणी प्रान्तों एवं दक्षिणी गोलार्ध के देशों पर शनि की क्रूर दृष्टि रहेगी। दक्षिणी प्रान्तों किंवा दक्षिणी देशों में राजनैतिक परेशानियां बढ़ेंगी। इसवर्ष कहीं राजनैतिक हत्याकाण्डों से शान्तिभंग होगी। सत्ता में परिवर्तन आएगा। दक्षिण में कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध आन्दोलन, ज्वालामुखी–विस्फोट, भयंकर असाध्यरोग, भारी प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, तूफ़ान, अकालजन्य भारी जनधनहानि से शासनतन्त्र आपदाग्रस्त होगा। समुद्र–तटवर्ती भूभाग पर भारी समुद्री तूफ़ान से जनधनहानि के योग भी चिन्ता का कारण बनेंगे। कन्या, मकर, मेष एवं तुला राशि वाले देश इसवर्ष शनि की दृष्टि में रहेंगे–

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष –देशमङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०६७ वि. में–

(१) शनिवारी अमावस्याएं दो हैं; ज्येष्ठ कृष्ण एवं कार्तिक कृष्ण में।
(२) भौमवती अमावस्याएं भी दो हैं; श्रावण कृष्ण एवं पौष कृष्ण में।

शरत्सस्य जातक

संवत् २०६७ वि. में द्वि. अधिक वैशाख कृष्ण अमावस शुक्रवार (तात्कालिक प्रतिपदा), तदनुसार १४/१५ मई, सन् २०१० ई. को २७ घंटा ४७ मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर रोहिणी नक्षत्र, अतिगण्ड योग एवं वृष राशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

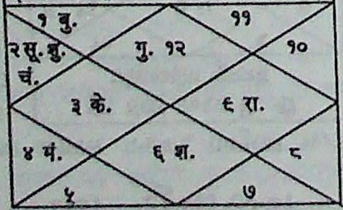

शरत्सस्य जातक कुण्डली
(१४/१५ मई, २०१० ई. २७घं. ४७ मि.)

फल– सूर्य, शुक्र एवं उच्च–चन्द्र– ये सब एकराशि(वृष) में स्थित हैं। सूर्य–शुक्र शत्रु हैं। चन्द्र–शुक्र सम–शत्रु हैं। अतः चावल आदि की फसल इसवर्ष अच्छी होगी। लेकिन उच्चाकांक्षी शनि, नीचस्थ–मंगल वर्षा आदि प्राकृतिक–प्रकोप से फसलों को हानि कारक रहेंगे। परिणामस्वरूप मूंग, मोठ, मक्का, जीरी, खाण्ड, शक्कर, बाजरा, अरहर, कपास, तिल आदि में विशेष तेज़ी से लाभ मिलेगा।

ग्रीष्मसस्य जातक

सं. २०६७ वि. में कार्तिक शुक्ल दशमी तिथि (तात्कालिक तिथि एकादशी), मंगलवार, तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०१० ई. को १७ घं. १७ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर पूभा. नक्षत्र, हर्षण योग एवं मीन–राशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

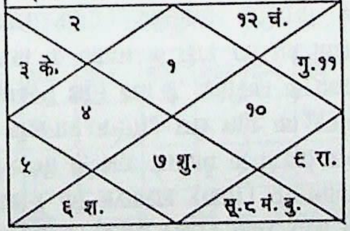

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली
(१६ नवं., २०१० ई. १७घं. १७ मि.)

फल–वृश्चिकस्थ सूर्य, मंगल एवं बुध पर कन्याराशिस्थ शनि की दृष्टि है। मीन राशिस्थ चन्द्र भी पूर्णतया शनिदृष्ट है। ग्रीष्मसस्याङ्ग में कुम्भराशिस्थ गुरु की तुलाराशिस्थ शुक्र पर विशेष दृष्टि है, अतः– ग्रीष्मधान्य (रबी) की फसल पूर्णतया अच्छी रहेगी–

"अष्टमराशिगतेऽर्के गुरु–शशिनोः कुम्भ–मीन–राशिस्थयोः।
सिंह–घट–संस्थयोर्वा निष्पत्तिः ग्रीष्म–सस्यस्य।।"

अर्थात्– सूर्य वृश्चिक राशि में, कुम्भ में गुरु एवं मीनस्थ चन्द्र अथवा सिंह में गुरु व कुम्भ में चन्द्र हो तो रबी की फसल की वृद्धि होती है। यह ग्रहस्थिति ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली में घटित हो रही है।

सूर्य आर्द्राप्रवेश लग्न

संवत् २०६७ वि. में ज्येष्ठ शुक्लपक्ष एकादशी मंगलवार, तदनुसार २२ जून, सन् २०१० ई. को ९ घं. ५७ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर स्वाती नक्षत्र, शिव योग एवं तुलाराशिस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

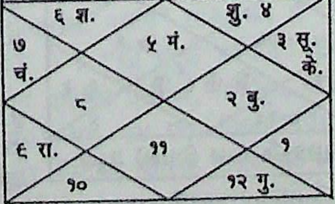

सूर्य आर्द्राप्रवेश कुण्डली
(२२ जून, २०१० ई. ०९ घं. ५७ मि.)

फल– मंगलवार को सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश किसी विशिष्टव्यक्ति के लिए हानिप्रद है। " भौमे निधनंकरो भवेत्।" आर्द्राप्रवेश दिन में होने से वर्षा की कमी अनुभव

होगी। चावल, गेहूं आदि की फसल प्रभावित होगी, महंगाई बढ़ेगी–
" दिवार्द्रा याति चेद् भानुर्जलभक्षण–कारकः"।

संवत् २०६७ वि. का शुभारम्भ

गतसंवत् २०६६ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, चन्द्रवार, तदनुसार १५/१६ मार्च, सन् २०१० ई. को २६ घं. ३१ मि.(भा. स्टैं.टा.) पर पू.भा. नक्षत्र, शुभ योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत्सर २०६७ वि. का शुभारम्भ धनु लग्न में हो रहा है।

शुभ संवत् २०६७ वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

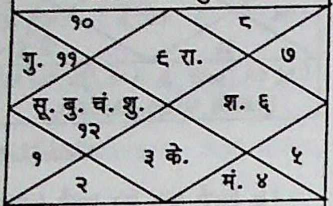

१५/१६ मार्च, २०१० ई., २६घं. ३१ मि.

फलविचार– २०६७ वि. का शुभारम्भ 'धनुलग्न' में हो रहा है। लग्नस्थ राहु है एवं लग्नेश गुरु तृतीय भाव में शनि के क्षेत्र में है। अतः उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में सुख–शान्ति रहे। कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ से हानि किंवा मध्यप्रदेश में रोग से कष्ट बने–

"धनुर्लग्ने तूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं भवेत्।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिः मध्यदेशे सरोगता।।"

किञ्च–पश्चिम में घी, अनाज सब मंहगे हों। दक्षिण में जनता सुखी रहे, परन्तु पशुपीड़ा से पशुधन–हानि हो–

"पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घं मासपंचकात्।
दक्षिणस्यां सुखं लोके क्वचित् पीड़ा चतुष्पदे।।"

अपि च– नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली में लग्नेश गुरु कुम्भराशिस्थ एवं अष्टमस्थ नीच मंगल की दृष्टि में है। लग्न में राहु है एवं दशम–भावस्थ शनि का सूर्य–बुध–चन्द्र–शुक्र के साथ सम–सप्तकयोग विषम उग्रवादजन्य समस्याओं को जन्म देगा। विस्फोट आदि से इसवर्ष किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा। बिहार, उड़ीसा, मणिपुर, बंगाल, आसाम में किसी प्राकृतिक आपदा से भारी कष्टमय वातावरण बन जाने के योग हैं। चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि होने से कहीं धार्मिक उन्माद से जन–जीवन अशान्त बन जाने के योग भी हैं।

वर्षेश(जगत्) लग्न

संवत् २०६७ वि. में प्रथम वैशाख कृष्ण अमावस बुधवार, तदनुसार १४ अप्रैल, सन् २०१० ई. को रेवती नक्षत्र, वैधृति योग एवं मीन राशिस्थ चन्द्र के समय ६ घं. ५७ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

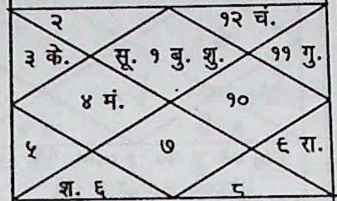

१४ अप्रैल, २०१० ई, ६ घं. ५७ मि.

फल– जगत् लग्न कुण्डली में लग्नेश मंगल चतुर्थभाव में नीच होकर बैठा है। विश्व की राजनैतिक महाशक्तियों के लिए यह वर्ष बहुत दुर्धर परिस्थितियों को लेकर उपस्थित हो रहा है। पाकिस्तान एवं अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में भारी संकटापन्न स्थिति से उलझना पड़ेगा। उग्रवादजन्य विस्फोट, हत्याकाण्ड अनेक प्रमुख देशों की शान्ति को भंग कर सकते हैं। जगत्–कुण्डली में द्वितीयेश शुक्र, बुध–सूर्य के साथ द्वितीयभाव से व्ययस्थ है, अतः विश्व की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के प्रयास होंगे। उग्रवाद पर कन्ट्रोल हेतु अमेरीका आदि देश कठोर पग उठाएंगे। तृतीयेश बुध, उच्चस्थ सूर्य के साथ है एवं तृतीय भाव पर गुरु की दृष्टि भी है, अतः देशों में परस्पर शान्ति स्थापनार्थ तालमेल बना रहेगा। चतुर्थ भावेश चन्द्र गुरु के क्षेत्र (व्ययस्थान) में शनि से दृष्ट है, अतः विपरीत परिस्थितियों में भी समृद्ध किंवा प्रभावशाली देश अपनी सम्प्रभुता को बनाए रखेंगे। मकर राशि पर मंगल की उच्च दृष्टि भारत के प्रभावक्षेत्र को बरकरार रखेगी। पंचमभावेश सूर्य उच्च है, पंचम भाव पर गुरु की दुष्टि भी है, अतः उग्रवाद के विरुद्ध सभी देश एकमंच पर उतरेंगे, शान्त्यर्थ नई योजनाएं बनेंगी। छठे भाव का स्वामी बुध, उच्चस्थ सूर्य के साथ है एवं छठे भाव में शनि बैठा है, अमेरिका के प्रधान नेता, पाक एवं देशविशेष के वरिष्ठ नेताओं के जीवन के लिए यह वर्ष विशेष कष्टपूर्ण एवं ऐतिहासिक घटनाओं वाला रहेगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ करना होगा, अन्यथा भारी दुर्घटना के योग बनते हैं। सप्तम भावेश शुक्र की सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि है, अतः मुस्लिम राष्ट्रों में से उग्रवाद की समाप्ति संभव नहीं। नवमेश गुरु कुम्भ राशि में है, जिससे कुछ देशों में कठिन एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन संभव हैं। श्रावण, भाद्रपद, आश्विन

पौष, फाल्गुन मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए ।

गुर्रा विचार (सन् २०१०-११ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा किंवा "गुर्रा" होता है।

संवत् २०६६ वि. में पौष शुक्ल तृतीया, शनिवार, तदनुसार १६ दिसंबर, सन २००६ ई. को १ मुहर्रम (यकम मुहर्रम), हिजरी सन् १४३१ का प्रारम्भ होगा। क्योंकि इसवर्ष यकम मुहर्रम को शनिवार है, अतः हिजरी सन् १४३१ का बादशाह शनि ही होगा।

फल– कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में युद्धमय वातावरण या आन्तरिक क्रान्ति से विश्व के प्रमुख राष्ट्रों में चिन्ता रहे। जन–धनहानि किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि भी हो। विश्व के कुछ देशों में भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड से हानि भी संभव है। देश में नानाप्रकार के रोग फैलेंगे। शनि–मंगल–रवि एवं गुरुवार वाले दिन किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु से शोक व्याप्त हो।

संवत् २०६७ वि. में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तृतीया, बुधवार, तदनुसार ८ दिसंबर, सन् २०१० ई. को १ मुहर्रम (यकम मुहर्रम), हिजरी सन् १४३२ का शुभारम्भ होगा। क्योंकि इसवर्ष यकम मुहर्रम (१ मुहर्रम) को बुधवार है, अतः हिजरी सन् १४३२ का बादशाह बुध ही होगा।

फल– गुड़, शक्कर, चीनी आदि पदार्थ मंहगे होंगे। जात–पात के बन्धन कमज़ोर होंगे। हिन्दुत्व का नाम राजनैतिक दृष्टि से सहज स्वीकार्य न रहे। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में जनता संकटग्रस्त होकर स्थानान्तरण करने को विवश हो। जनता में रोगभय व्याप्त हो। खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। व्यापारीवर्ग हानि से परेशान रहे।

आय–व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ–व्यय अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम् ।
यः शृणोति नरो भक्त्यां स सुखी वत्सरं भवेत् ।।"

*****

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन नीम के कोमल पत्ते, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल– ये सब कूट–पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात–पित्त एवं कफजन्य कष्टों से शान्ति मिलती है।

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

आज ही अपनी प्रति बुकसेलर से सुरक्षित कराएं ।

पूर्वयुता एवम् परयुता तिथि ?

("सं. 2066 वि. की चैत्र शुक्ल अष्टमी वाली 'दुर्गाष्टमी' की तिथि में मतभेद" – के सन्दर्भ में)

लेखक–प्रियव्रत शर्मा

सं. 2066 वि. में वासन्त नवरात्र की (चैत्रशुक्ल अष्टमी को मनाई जाने वाली) दुर्गाष्टमी कई पंचांगों में चैत्रशुक्ल अष्टमी शुक्रवार (3 अप्रैल, 2009 ई.) के दिन लिखी थी, जबकि हमारे **"श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग"** में यह चैत्रशुक्ल सप्तमी, गुरुवार (2 अप्रैल, 2009 ई.) को थी। इस मतभेद से धार्मिक समाज में भारी विक्षोभ रहा। यह मतभेद क्यों उत्पन्न हुआ ?, दुर्गाष्टमी शास्त्रानुसार वस्तुतः किस दिन थी ?– इसका स्पष्टीकरण यहां दिया जा रहा है–

एक पंचागकार ने, जिसने दुर्गाष्टमी 3 अप्रैल, 2009 ई. को लिखी थी, **"चैत्रशुक्लाष्टम्यां भवान्युत्पत्तिः। तत्र अष्टमी पर(नवमी)युता ग्राह्या"** – *धर्मसिन्धु* के इस वाक्य को अपने मत के समर्थन में उद्धृत किया और लिखा कि 3 अप्रैल, 2009 ई. को अष्टमी सूर्योदयानन्तर लगभग दो घड़ी विद्यमान होने से वह नवमीयुता(परयुता) है, जिससे इस वर्ष दुर्गाष्टमी 3 अप्रैल, 2009 ई. को ही शास्त्र सम्मत है। लेकिन यहां यह जान लेना आवश्यक है कि– **'परयुता'** एवम् **'पूर्वयुता'** पदों के शाब्दिक अर्थ तो क्रमशः **"परवर्ती तिथि से युक्त"** एवं **"पूर्ववर्ती तिथि से संयुक्त"** ही हैं। लेकिन व्रतपर्व–शास्त्र में ये शब्द क्रमशः परविद्धा और पूर्वविद्धा तिथियों के लिए ही प्रयोग में आते हैं, एतदर्थ नीचे लिखे शास्त्रवाक्य देखिए–

'धर्मसिन्धुकार' ने इस वाक्य में **"परयुता"** शब्द का प्रयोग **"परविद्धा"** तिथि के अर्थ में ही किया है–

"कृष्ण प्रतिपत् सर्वापि परयुतैव ग्राह्या।
उपवासे तु पक्षद्वयेऽपि प्रतिपत् पूर्वविद्धैव।।"

'ब्रह्मवैवर्त्त ' का यह वाक्य देखिए, इसमें भी **'परसंयुता'** का प्रयोग **"परविद्धा"** के अर्थ में ही किया गया है–

**"शुक्लपक्षेऽष्टमी चैव शुक्लपक्षे चतुर्दशी।
पूर्वविद्धा न कर्त्तव्या कर्त्तव्या परसंयुता।।"**

'वर्षकृत्य प्रदीप' का यह वाक्य विशेषरूप से ध्यातव्य है, जहां दुर्गाष्टमी के लिए स्पष्टतः पर(नवमी)विद्धा चैत्रशुक्ल अष्टमी को ग्राह्य लिखा है–

" चैत्रशुक्लाष्टम्यां भवान्युत्पत्तिः। तत्र नवमीविद्धा ग्राह्या। अष्टमी नवमीविद्धा नवमी चाष्टमीयुता"– ***इति ब्रह्मवैवर्त्तात्।***

देखिए–यहां **"ब्रह्मवैवर्त्तपुराण"** के वाक्य में भी **'अष्टमीयुता'** का प्रयोग **'अष्टमीविद्धा'** के लिए किया गया है।

तिथि परविद्धा कब मानी जाती है और पूर्वविद्धा कब– यहां यह जानना भी आवश्यक है, जिसका विशकलन नीचे दिया जा रहा है–

परविद्धा तिथि

जिस दिन कोई तिथि सूर्योदयानन्तर कम से कम तीन मुहूर्त्त* तक विद्यमान हो, उस दिन वह तिथि परविद्धा (परवर्ती तिथि से विद्धा) मानी जाएगी, बशर्ते कि परवर्ती तिथि उस दिन सूर्यास्त से कम से कम तीन मुहूर्त्त पहिले प्रारम्भ हो रही हो। 'परविद्धा–तिथि' के लिए **'परयुता'**, **'परा'** या **'उत्तरा'** शब्द का भी प्रयोग होता है।

(* *दिनमान का पन्द्रहवां भाग एकमुहूर्त्त होता है, जो मध्यमान से 2 घड़ी के बराबर होता है।)*

पूर्वविद्धा तिथि

जिस दिन कोई तिथि सूर्यास्त से कम से कम तीन मुहूर्त्त पहले

प्रारम्भ हो रही हो तो वह तिथि उस दिन **'पूर्वविद्धा'** (पूर्ववर्त्ती तिथि से विद्धा) होगी, बशर्ते कि उससे पूर्ववर्ती (वेधने वाली) तिथि भी उसी दिन सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त्त तक अवश्य विद्यमान हो।

'पूर्वविद्धा' के लिए **'पूर्वयुता'** या **' पूर्वा '** शब्द भी प्रयोग में आता है।

इस प्रकार पूर्वविद्धा –परविद्धा के सिद्धान्त का सारांश यह है–यदि कोई तिथि सूर्योदय के बाद कम से कम 3 मुहूर्त्त और अधिक से अधिक 12 मुहूर्त्त तक विद्यमान हो तो वह तिथि परवर्त्ती तिथि को और परवर्ती तिथि उस (पूर्ववर्ती) तिथि को अवश्य विद्ध करेगी। इसे प्रकारान्तर से इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि– यदि कोई तिथि सूर्यास्त से पहले कम से कम 3 मुहूर्त्त और अधिक से अधिक 12 मुहूर्त्त तक विद्यमान हो तो वह तिथि पूर्ववर्त्ती तिथि को और पूर्ववर्त्ती तिथि उस (परवर्त्ती) तिथि को विद्ध करेगी।

इससे यह परिणाम निकलता है कि– सूर्योदयानन्तर 3 मुहूर्त्त से कम तिथि न तो परवर्त्ती तिथि को विद्ध करती है और न ही वह परवर्त्ती तिथि से विद्ध होती है। इसी प्रकार सूर्यास्त से पूर्व 3 मुहूर्त्तों से कम तिथि न तो पूर्ववर्त्ती तिथि को विद्ध करती है और न ही उसे पूर्ववर्त्ती तिथि विद्ध करती है।

यही बात **'कालमाधव'**कार ने इस प्रकार लिखी है–

" उदये पूर्वया तिथ्या विध्यते त्रिमुहूर्त्तकैः।
सायं तूत्तरया तद्वन्न्यूनया न तु विध्यते।।
वेध्यापि त्रिमुहूर्त्तैव न न्यूना वेधमर्हति ।"

यहां **'पुरुषार्थ चिन्तामणि'**कार भी यही कहते हैं–

" मुहूर्त्त–त्रयान्न्यूनाया वेधकत्वं वेध्यत्वं च नास्ति।'

अब हम अपने प्रकृत विषय (सं. 2066 वि. की चैत्रशुक्लपक्षीय दुर्गाष्टमी) पर आते हैं। गतवर्ष (सं. 2066 वि.) का पंचांग उठाइए। देखिए– यहां **चैत्रशुक्ल अष्टमी** शुक्रवार (3 अप्रैल, 2009 ई.) को सूर्योदयानन्तर केवल 1 घटी 59 पल यानी यह यहां केवल एक मुहूर्त्त के ही लगभग है, अर्थात् 'यह' त्रिमुहूर्त्ता नहीं है। अतः सुस्पष्ट है– यह इसदिन पर(नवमी)युता(विद्धा) बिल्कुल नहीं। इसलिए नियमानुसार दुर्गाष्टमी व्रत इस दिन कदापि नहीं हो सकता, यह तो **चैत्रशुक्ल सप्तमी गुरुवार (2 अप्रैल, 2009 ई.) में ही शुद्ध था।**

इस प्रकार सिद्ध है– 3 अप्रैल, 2009 ई. को दुर्गाष्टमी का निर्देश करने वाले पंचांगकारों का निर्णय शास्त्रीय कतई नहीं था।

प्रसंगवश यहां यह विशेष बात बतलाना भी आवश्यक है कि–शारद नवरात्र (आश्विन शुक्ल अष्टमी) वाली दुर्गाष्टमी, जिसे **' महाष्टमी '** भी कहा जाता है, के व्रतदिन के निर्णय में भी अष्टमी यद्यपि परविद्धा ही ली जाती है, लेकिन वहां सूर्योदयानन्तर केवल एकघटी व्याप्ति वाली अष्टमी को भी विशेष नियमानुसार शास्त्रकारों ने परयुता या परविद्धा माना है। अतः वहां दूसरे दिन एकघटी वाली अष्टमी में भी अष्टमीव्रत किया जाएगा। वासन्त और शारद दुर्गाष्टमियों के निर्धारक नियमों में यह भिन्नता(विशेषता) ध्यान में रखनी आवश्यक है, इसीलिए इसका यहां निर्देश किया गया है। गौरी तृतीया आदि कुछ और भी ऐसे व्रत–पर्व हैं, जिनके निर्धारण के लिए पूर्वविद्धा और परविद्धा तिथि के निर्णय में तिथि की कहीं त्रिमुहूर्त्त से अल्प और कहीं त्रिमुहूर्त्त से अधिक व्याप्ति को भी स्वीकार किया गया है। ऐसे अपवादस्थलों पर, जोकि गिने–चुने ही हैं, शास्त्रकारों ने इस भिन्नता का स्पष्ट निर्देश किया है।

[पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि के बारे में विशेष विवेचन तथा व्रत–पर्वों के दिन के निर्धारण के लिए अनिवार्यतः ज्ञातव्य अन्य नियमों का सुविशद विवेचन मेरी पुस्तक **"व्रत–पर्व–विवेक"** के प्रथम प्रकरण **(व्रत–पर्व– शास्त्र के मूल तत्त्व)** में पढ़िए।]

सन्दिग्ध व्रत–पर्व–व्यवस्था (सं. 2067 वि.)

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)–134 109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत–पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए. – प्रियव्रत शर्मा)
(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

सं. 2066 वि. में दुर्गाष्टमी किस दिन थी?

सं. 2066 वि. में वासन्त नवरात्र (चैत्र शुक्ल) वाली दुर्गाष्टमी के दिन के बारे में सं. 2066 वि. के पंचांगों में मतभेद रहा। "इसवर्ष दुर्गाष्टमी वस्तुतः किसदिन थी ?"– इसका स्पष्टीकरण पृष्ठ 94 पर दिए गए लेख **"पूर्वयुता एवम् परयुता तिथि ?"** में पढ़िए।

1. नाग–पञ्चमी

पर(षष्ठी)विद्धा चैत्र शुक्ल पंचमी के दिन नागपञ्चमी मनाई जाती है। क्योंकि 21 मार्च, 2010 ई. को पंचमी सूर्योदयानन्तर केवल 3 ही मिनट विद्यमान है; अतः यह इसदिन त्रिमुहूर्त्ताल्प होने से षष्ठी से विद्ध नहीं मानी जा सकती। इसलिए यह पर्व पहले ही दिन (20 मार्च, 2010 ई. को) होगा। *नागोजिभट्ट* अपने 'तिथिनिर्णय' में लिखते हैं–

"पंचमी तु उपवासादि सर्वकर्मसु चतुर्थीविद्धैव।
नागव्रते स्कन्दव्रते च परविद्धैव।।"

2. नवरात्र–पारणा

इस वर्ष वासन्त(चैत्र शुक्ल)नवरात्र की पारणा (व्रतान्त में भोजनग्रहण) 25 मार्च को होगी। शास्त्रानुसार नवरात्रव्रतों की पारणा दशमी में ही की जाती है, नवमी में नहीं। क्योंकि नवमी तिथि नवरात्रतिथि है, अतः वहां तो उपवास होगा। भविष्यपुराण का वचन है–

"तस्मादियं महापुण्या नवमी पापनाशिनी।
उपोष्या सुप्रयत्नेन सततं पार्थिवैरिति।।"

यहां स्पष्ट है– 25 मार्च को ही दशमी में नवरात्रपारणा की जाएगी। ध्यान रहे– कुछ लोग नवमी में ही उपवास समाप्त कर देते हैं, उसी दिन पारणा कर लेते हैं– यह शास्त्र द्वारा अनुमोदित नहीं है।

3. अनङ्ग–त्रयोदशी

यह व्रत पूर्व(द्वादशी)विद्धा चैत्रशुक्ल त्रयोदशी में किया जाता है– "तत्र त्रयोदशी पूर्वविद्धा ग्राह्या"– (*धर्मसिन्धु*) । इसवर्ष 27 मार्च को त्रयोदशी सूर्यास्त से पूर्व त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी न होने से पूर्व(द्वादशी)विद्धा नहीं है, जिससे यह व्रत इसवर्ष 28 मार्च, 2010 ई. को ही होगा।

4. श्रीसत्यनारायण व्रत(प्रथम अधि. वैशाख)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इसवर्ष प्रथम (अधिक) वैशाख की पूर्णिमा 28 अप्रैल, 2010 ई. को 17घं. 48मि. पर समाप्त हो जाती है, जिससे यह इसदिन प्रदोषव्यापिनी नहीं है। क्योंकि इन दिनों में पंजाब, हरियाणा आदि पश्चिमोत्तर भारतीय प्रदेशों में प्रदोषकाल लगभग 19$^{\text{घं}}$ 00$^{\text{मि.}}$ से 21$^{\text{घं}}$ 00$^{\text{मि.}}$ तक रहेगा। 27 अप्रैल, 2010 ई. को पूर्णिमा 19$^{\text{घं}}$ 54$^{\text{मि.}}$ पर प्रारम्भ हो रही है, जिससे यह इसी दिन प्रदोषव्यापिनी है। अतः स्पष्ट है– श्रीसत्यनारायण व्रत इसी दिन (27 अप्रैल, 2010 ई. को)होगा।

क्योंकि, श्रीसत्यनारायण व्रत नक्त व्रत है, अतः इसका निर्णय प्रदोषव्याप्ति से ही करना होगा।

5. रम्भा तृतीया

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्व(द्वितीया)विद्धा तृतीया के दिन रम्भाव्रत किया जाता है– "ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां रम्भाव्रतम् । सा पूर्वविद्धा ग्राह्या"– (*धर्मसिन्धु*)। इस वर्ष 14 जून, 2010 ई. को तृतीया द्वितीयाविद्धा है, अतः यह व्रत 14 जून 2010 ई. को ही किया जाएगा।

6. कुमारषष्ठी

कुमार(स्कन्द)षष्ठी व्रत पूर्व(पंचमी)विद्धा षष्ठी के दिन किया जाता है। यहां *वसिष्ठ* का वाक्य है–

"कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एताः पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।"

इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल षष्ठी 16 जुलाई, 2010 ई. को पंचमीविद्धा है, अतः यह व्रत इसी दिन लगाया गया है।

7. ऋक्–उपाकर्म

ऋग्वेदियों के उपाकर्म के लिए तीन काल हैं– श्रावण शुक्ल पंचमी, श्रावणशुक्लान्तर्गत हस्त नक्षत्र एवं श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र। श्रवण नक्षत्र यहां मुख्यकाल माना गया है। संक्रान्ति एवं ग्रहण के दिन उपाकर्म वर्जित है। उ.षा.–विद्ध श्रवण भी यहां वर्जित है। यह धनिष्ठायुत शुभ माना जाता है। इस वर्ष श्रावण शुक्लान्तर्गत श्रवण नक्षत्र 23 अगस्त, 2010 ई. को संक्रान्ति–ग्रहण के दोषों से मुक्त है एवं यह धनिष्ठायोग वाला भी है। अतः इसी दिन ऋग्वेदियों का उपाकर्म होगा।

8. रक्षाबन्धन (राखी)

भद्रारहित अपराह्णव्यापिनी श्रावण पूर्णिमा में रक्षाबन्धन किया जाता है– " भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा"। इस वर्ष 24 अगस्त, 2010 ई. को श्रावणपूर्णिमा $9^{\text{घं}}$ $21^{\text{मि}}$ तक भद्रादूषित है, अतः इसके अनन्तर ही रक्षाबन्धन करना चाहिए। ध्यान रहे– पंजाब आदि प्रदेशों में परम्परया अपराह्ण से पहले प्रातः ही रक्षाबन्धन कर लिया जाता है। इस परम्परा का अनुसरण करने वालों को $9^{\text{घं}}$ $21^{\text{मि}}$ तक विद्यमान भद्रा का ध्यान अवश्य रखना होगा।

9. दूर्वाष्टमीव्रत

रौहिण(नवम)मुहूर्त्तव्यापिनी भाद्र.शुक्ल अष्टमी में दूर्वाष्टमी व्रत का विधान है। अगस्त्य तारा के उदयकाल में यह सर्वथा वर्जित है। यहां रौहिणकाल में ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र भी वर्जित हैं। सिंहस्थ सूर्यकाल इसके लिए उत्तम माना जाता है। कन्यास्थ सूर्यकाल को यथासम्भव वर्जित करने का शास्त्रनिर्देश है। यदि भाद्र. शुक्ल अष्टमी से पूर्व ही अगस्त्य तारा उदित (दृश्य) हो जाए तो इस व्रत को भाद्र. शुक्ल से पूर्ववर्त्ती अन्य समीपस्थ दूसरे ऐसे किसी कृष्ण या शुक्ल पक्ष की अष्टमी में करने का निर्देश है, जहां अगस्त्य तारा अस्त(लुप्त) हो। (इस बारे में शास्त्रीय प्रमाणवाक्य हम विगत कई वर्षों से इसी "सन्दिग्ध व्रत–पर्व–व्यवस्था" स्तम्भ में देते रहे हैं)। इसवर्ष हि.प्र., पंजाब एवम् चण्डीगढ़ में तथा इनके पार्श्ववर्त्ती स्थलों पर अगस्त्य 2 से 12 सितंबर के दिनों में ही उदित (दृश्य) हो जाएगा। जिसके परिणामस्वरूप इसवर्ष भाद्र. शुक्ल अष्टमी के दिन(उदित अगस्त्य के काल में) इन स्थलों पर दूर्वाष्टमीव्रत नहीं रखा जा सकेगा। अतः इसवर्ष इन स्थलों पर उक्त नियमानुसार 1 सितंबर को रौहिणव्यापिनी भाद्र.कृष्ण अष्टमी के दिन दूर्वाव्रत रखना होगा। इस समय सूर्य सिंहस्थ भी होगा। अगस्त्योदयास्त–कालसाधन की प्रक्रिया से यह भी ज्ञात होता है कि– हरियाणा(उत्तरीभाग को छोड़कर), दिल्ली व लगभग पूरे राजस्थान में भाद्र.कृष्ण सप्तमी बुधवार के दिन भी अगस्त्य उदित होगा। अतः इन प्रदेशों के लिए दूर्वाव्रत भाद्र. कृष्ण से भी पूर्ववर्त्ती पक्ष अर्थात् श्रावण शुक्ल की रौहिणव्यापिनी अष्टमी के दिन 16 अगस्त, 2010 ई. को होगा। इस दिन सिंहस्थ सूर्य का लाभ नहीं है, तथापि इससे दूर्वाव्रत–तिथि के निर्णय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि सिंहस्थ सूर्य यहां महत्त्वाधायकमात्र है, निर्णायक नहीं।

भारत के किस अक्षांशीय स्थल पर अगस्त्य कब अस्त और कब उदित होगा ? यह जानने के लिए मेरी "**व्रतपर्व विवेक**" पुस्तक में एक सारणी है। इस सारणी के आधार पर भारत के विभिन्न अक्षांशीय स्थलों पर इस दूर्वाव्रत की तारीख का निर्णय नीचे कोष्ठक में दिया जा रहा है–

भारत के विभिन्न अक्षांशीय स्थलों पर सं. 2067 वि. में दूर्वाव्रत की तारीखें

अक्षांश (उत्तर)	अगस्त्य उदय तारीख (2010 ई.)		दूर्वाष्टमी व्रत		
			तिथि (सं. 2067 वि.)	तारीख (2010 ई.)	सूर्यराशि
17	6	अगस्त	श्राव. कृ. 8 मं.	अगस्त 3	कर्क
19	10	"	" " "	" "	"
21	14	"	" " "	" "	"
23	17	"	श्रावण शु. 7 चं.	अगस्त 16	"
25	22	"	" " "	" "	"
27	26	"	" " "	" "	"
29	30	"	" " "	" "	"
31	4	सितंबर	भाद्र. कृ. 7 बु.	सितंबर 1	सिंह
33	10	"	" " "	" "	"
35	15	"	" " "	" "	"
36	18	"	भाद्र. शु. 8 बु.	सितंबर 15	"

10. महालय पूर्णिमा–श्राद्ध

धर्मशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों (*गृह्यसूत्रादि*) में महालय(पितृ)पक्ष का प्रारम्भ

भाद्र.शुक्ल पूर्णिमा से माना गया है। इस मतानुसार पूर्णिमा मृत्युतिथि वाले व्यक्तियों का महालय श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी भाद्र. पूर्णिमा में किया जाता है। इस वर्ष भाद्र. पूर्णिमा 22 और 23 सितंबर– दोनों दिन अपराह्णव्यापिनी है। 22 सितंबर को यह अपराह्ण को पूर्णतया और 23 सितंबर को आंशिकरूप से व्याप्त करती है। अतः शास्त्रनियमानुसार यहां पूर्णिमा का श्राद्ध 22 सितंबर को ही होगा। 22–23 सितंबर को अपराह्णकाल 13घं 26मि से 15घं 50मि (I.S.T.) तक होगा।

ध्यान रहे– जो लोग परम्परया सर्वपितृ अमा (आश्वि. अमा) को पूर्णिमा–श्राद्ध करते हैं, वे इसवर्ष यह श्राद्ध 7 अक्तूबर, 2010 ई. को करेंगे।

11. एकादशी–द्वादशी–त्रयोदशी का महालय श्राद्ध

द्वादशी का श्राद्ध 4 अक्तूबर, 2010 ई. को होगा, क्योंकि द्वादशी तिथि इसी दिन अपराह्णव्यापिनी है और इसी प्रकार त्रयोदशी का श्राद्ध 5 अक्तूबर, 2010 ई. को होगा, क्योंकि यह तिथि इसी दिन अपराह्ण को व्याप्त करती है।

ध्यान दें– एकादशी श्राद्ध भी द्वादशी श्राद्ध वाले दिन (4 अक्तूबर को) ही होगा, क्योंकि एकादशी भी इसी दिन अपराह्णव्यापिनी है। 4–5 अक्तूबर को अपराह्णकाल 13घं. 21मि. से 15घं. 40 मि. तक रहेगा।

12. शारदीय नवरात्रारम्भ

सूर्योदयानन्तर 10 घड़ी तक या मध्याह्न में अभिजित् मुहूर्त (दिन के अष्टम मुहूर्त) के समय आश्विन शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ, कलशस्थापन किया जाता है। प्रतिपदा की पूर्ववर्त्ती 16 घडियां और चित्रा तथा वैधृति का पूर्वार्ध भाग नवरात्रारम्भ के लिए निषिद्ध है। यदि नवरात्रारम्भ का यह विहितकाल(यानी सूर्योदयानन्तर की 10 घड़ियां एवं अभिजित् मुहूर्त्त) प्रतिपदा की निषिद्ध पहली 16 घड़ियों या चित्रा–वैधृति के पूर्वार्ध भाग से पूरी तरह दूषित हो तो इसकी परवाह न करते हुए इस दूषित काल में ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन कर लेना चाहिए; क्योंकि धर्मशास्त्र का कहना है कि–इन दोषों से जहां तक हो सके बचना चाहिए। यदि बचना संभव न हो तो इनसे दूषित काल में ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन करने में कोई दोष नहीं है। यह बात *धर्मसिन्धुकार* ने इस तरह कही है–

"प्रतिपदाद्य–षोडश–नाड़ी–निषेधः, चित्रा, वैधृतियोग–निषेधश्च उक्तकालानुरोधेन सति सम्भवे पालनीयः।"

इस वर्ष यही स्थिति है। आश्विन शुक्ल प्रतिपदा 8 अक्तूबर, 2010 ई. के दिन चित्रा–पूर्वार्ध 15घं 42मि. (I.S.T.) तक है। यहां अभिजित मुहूर्त्त 11घ 46मि से 12घ 32मि. (I.S.T.) तक है। स्पष्ट है– यहां चित्रापूर्वार्ध ने प्रतिपदा की सूर्योदयानन्तरवर्त्ती 10 घड़ियां एवं अभिजित् मुहूर्त्त का पूरा काल दूषित कर दिया है। इस स्थिति में उपरोक्त शास्त्रवाक्यानुसार इस दोष की उपेक्षा कर इसी दिन (8 अक्तूबर, 2010 ई. को ही) प्रातः 10 घड़ी तक अथवा अभिजित् मुहूर्त्त में नवरात्रारम्भ, कलशस्थापन किया जाएगा।

13. श्रीहनुमान् जयन्ती(उ.भा.)

निशीथव्यापिनी कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी में श्रीहनुमान् जी अंजनादेवी के गर्भ से पैदा हुए थे–

"आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि।
भौमवारेऽजनादेवी हनुमन्तमजीजनत्।।"

(यहां "आश्विन कृष्ण" अमान्त मासानुसार है, शुक्लान्त मासानुसार "यह " कार्तिक कृष्ण है।)

इस वर्ष 4 नवंबर, 2010 ई. को कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी निशीथव्यापिनी है, अतः यह पर्व इसी दिन होगा।

यह हनुमान् जयन्ती उत्तर भारतीय प्रथानुसार है, दक्षिण भारत में यह चैत्र पूर्णिमा को मनाई जाती है।

14. वैकुण्ठ चतुर्दशी

अरुणोदयव्यापिनी कार्तिक शुक्लचतुर्दशी के दिन यह व्रत श्रीशिव/विष्णु–प्रसादार्थ किया जाता है। जिस अहोरात्र में चतुर्दशी अरुणोदयव्यापिनी हो, उस अहोरात्र में उपवास रखकर अरुणोदयकाल में पूजा–अर्चना करने का विधान है–" चतुर्दशी–युक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपवासः"– (*धर्मसिन्धु*)। इसवर्ष यह चतुर्दशी 19/20 नवंबर, 2010 ई.(शुक्रवार) को अरुणोदयव्यापिनी है, अतः यह पर्व इसी दिन लिखा गया है।

15. श्रीमहाशिवरात्रि व्रत

निशीथ (रात्रि–अष्टम मुहूर्त्त)व्यापिनी फाल्गु. कृष्ण चतुर्दशी में इस व्रत का अनुष्ठान होता है। इस वर्ष केवल 2 मार्च, 2011 ई. को चतुर्दशी निशीथ में विद्यमान है, अतः यह व्रत इसी दिन लगाया गया है।

2 मार्च को निथीशकाल 24घ 09मि से 24घ 59मि. (I.S.T.) तक है।

के दिन चित्रा–पूर्वार्घ $15^{घ}$ $42^{मि}$ (I.S.T.) तक है। यहां अभिजित मुहूर्त $11^{घ}$ $46^{मि}$

2 मार्च को निशीथकाल $24^{घ}$ $09^{मि}$ से $24^{घ}$ $59^{मि}$ (I.S.T.) तक है।

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(१६ से ३० मार्च तक, सन् २०१० ई.) उत्तरायण, दक्षिण–उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

गु. २० मार्च से प्रातः पूर्व में तथा बु. २८ मार्च से सायं पश्चिम में दिखाई देना शुरु हो जाएगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिजासन्न, श. पूर्व क्षितिज के पास और मं. पूर्वकपाल में दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	मार्च	फाल्गुन	र.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	३९	१	मं.	५३	४९	पू.भा.	०	२७	शु.	९	३३	किं.	२१	४७	३	१६	२५	२९	मीन			६	३६	१८	२७	११	१	१७	१७	बुध उ.भा. में १७/०४, शुक्र रेव. में ३/४०, चान्द्र संवत्सर (A)
२९	४३	२	बु.	५६	५४	उ.भा.	५	४३	शु.	९	४८	बा.	२५	२२	४	१७	२६	३०	मीन			६	३४	१८	२८	११	२	१७	४	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, चन्द्रव्रत,
२९	४८	३	गु.	५८	५९	रेव.	१०	०	ब्र.	९	१९	तै.	२७	५६	५	१८	२७	र.१	मेष	१०	०	६	३३	१८	२८	११	३	१६	४८	पंचक समाप्त १०/००, सूर्य उ. भा. में ०/३४, गुरु पू. भा.(B)
२९	५३	४	शु.	६०	०	अश्वि.	१३	२०	ऐं.	८	३	व.	२९	३३	६	१९	२८	२	मेष			६	३२	१८	२९	११	४	१६	३१	भ. २६ ३३ बाद, नेप्च्यून धनि. ४ में ६/२१,
२९	५८	४	श.	०	३	भर.	१५	४०	वै.	६	१	वि.	०	३	७	२०	२९	३	वृष	३१	५	६	३१	१८	३०	११	५	१६	११	भ.०/०३ तक, सूर्य सायन मेष में ४१/१५, गुरु उदित (C)
३०	२	५	र.	०	३	कृत्ति.	१६	५८	वि. प्री.	३ ५९	१० २४	बा.	०	३	८	२१	३०	४	वृष			६	२९	१८	३०	११	६	१५	४९	स्कन्द षष्ठी (पंचमी-विद्धा),
अवम		६	र.	५८	५७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३०	७	७	चं.	५६	४१	रोहि.	१७	१०	आ.	५४	४५	ग.	२७	४९	९	२२	चै १	५	मिथुन	४६	४९	६	२८	१८	३१	११	७	१५	२४	भ. ५६/४१ बाद, बुध रेव. में ५७/५७, शक चैत्र (D)
३०	१२	८	मं.	५३	११	मृग.	१६	१२	सौ.	४९	८	वि.	२४	५७	१०	२३	२	६	मिथुन			६	२७	१८	३२	११	८	१४	५८	भ. २४/५७ तक, राहु पू.षा. ३, केतु पुन. १ में १/५७, (E)
३०	१६	९	बु.	४८	२८	आर्द्रा	१४	२	शो.	४२	३३	बा.	२०	४९	११	२४	३	७	कर्क	५६	३५	६	२६	१८	३२	११	९	१४	२९	श्रीरामनवमी (१४ घ. २ प. के बाद पुनर्वसु), नवरात्र समाप्त
३०	२१	१०	गु.	४२	३६	पुन.	१०	४१	अ.	३५	१	तै.	१५	३२	१२	२५	४	८	कर्क			६	२४	१८	३३	११	१०	१३	५७	नवरात्रव्रतपारणा (देखें पृ. 96),
३०	२६	११	शु.	३५	४४	पुष्य	६	१४	सु.	२६	३९	व.	९	१३	१३	२६	५	९	कर्क			६	२३	१८	३४	११	११	१३	२४	भ. ६/१३ से ३५/४४ तक, शुक्र अश्वि. मेष में ५०/१३, (F)
३०	३०	१२	श.	२८	६	आश्ले. मघा	० ५४	४९ ५९	धृ.	१७	३८	ब.	१	५५	१४	२७	६	१०	सिंह	०	४९	६	२२	१८	३४	११	१२	१२	४८	शनिप्रदोष व्रत, श्रीविष्णुदमनोत्सव,
३०	३५	१३	र.	२०	२	पू.फा.	४८	३७	शू. गं.	८ ५८	११ ३३	तै.	२०	२	१५	२८	७	११	सिंह			६	२१	१८	३५	११	१३	१२	१०	बुध पश्चिम में उदित ५/२२, अनंग त्रयोदशी (देखें पृ. 96)(G)
३०	४०	१४	चं.	११	५२	उ.फा.	४२	३१	वृ.	४९	९	व.	११	५२	१६	२९	८	१२	कन्या	२	३	६	२०	१८	३५	११	१४	११	३०	भ. ११/५२ से ३७/५५ तक, बुध अश्वि. मेष में ५५/४५, (H)
३०	४४	१५	मं.	४	२	हस्त	३७	१	ध्रु.	४०	१७	ब.	४	२	१७	३०	९	१३	कन्या			६	१८	१८	३६	११	१५	१०	४७	यूरेनस उ.भा. १ में ४४/२२, चैत्री पूर्णिमा, श्रीहनुमान्-जयन्ती,(I)

शोभन संवत्सर

गुरु उदित २० मार्च

(A) २०६७ वि. प्रारम्भ, वसन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, (B) १ में ६/०४, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, रबि-उस्सानी मु. प्रा., (C) २७/४२, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी (देखें पृ. 96), हय व्रत, (D) (सं.१९३२) प्रा. (E) गुरुबाल्य समाप्त २७/५२, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, (F) कामदा एकादशी व्रत (स.), (G) श्रीमहावीर जयन्ती(जैन), (H) वक्री शनि उ. फा. ३ में ५०/५८, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशिवदमनोत्सव, (I) (द.भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२३ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	३	११	१०	११	५	८	२
८	२	७	१६	२१	२५	७	२३	२३
१४	२६	१०	३९	८	१२	१२	२०	२०
५८	१०	१७	१३	२५	३६	२०	१४	१४
५९	८२५	८	११६	१४	७४	४	३	३
३१	३४	३७	२८	६	१५	४४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	मृग. ३	पुष्य २	उ.भा. ४	पू.भा. १	रेव. ३	उ.फा. ४	पू.षा. ४	पुन. २

कुण्डली सूर्योदय (२३ मार्च)

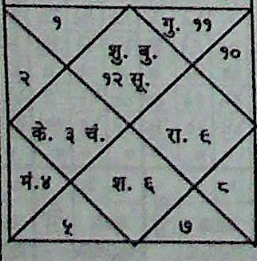

लोक भविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच सोमवार एवं पांच मंगलवार हैं, अतः भारत में धन-धान्यसमृद्धि रहे। संवत्सर का राजा मंगल होने से यावनराष्ट्रों में कहीं रक्तपात, आन्तरिक अशान्ति एवं सत्ताहस्तान्तरण का योग बने-

"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।"

इस पक्ष में गुरु का उदय भारत में सुभिक्ष का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना तेज़ रहें। २० मार्च के लगभग चान्दी, सोना, अनाज, तिल-तैल, सरसों, जौ, चना में कुछ तेज़ी बने। २६ मार्च के लगभग अचानक बाजार मन्दे हो सकते हैं। २९ मार्च को अनाज, अलसी में तेजी; चान्दी में जोरदार मन्दा बने। **आकाश लक्षण:-** मार्च १६, १७ और १८ को उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा। २०, २८ और २९ मार्च को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम एवम् पूर्वी बिहार में बादल-वर्षा के योग हैं, लेकिन उत्तरी भारत में तापमान बढ़े।

कुण्डली सूर्योदय (३० मार्च)

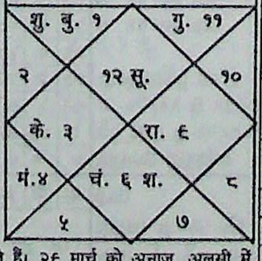

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
३० मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	३	०	१०	०	५	८	२
१५	१३	८	०	२२	३	६	२२	२२
१०	४७	२२	३	४६	५१	३९	५७	५७
४७	३५	४०	५४	५०	३४	२८	५९	५९
५९	८७६	१२	१०५	१३	७४	४	३	३
१६	४६	३१	१५	५५	०	३८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	हस्त २	पुष्य २	अश्वि. १	पू.भा. १	अश्वि. २	उ.फा. ३	पू.षा. ३	पुन. १

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, प्र.वैशाख कृष्ण पक्ष २															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(३१ मार्च से १४ अप्रैल तक, सन् २०१० ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः गु. पूर्व क्षितिजासन्न होगा। सायं बु.शु. पश्चिम क्षितिज में, श. पूर्व में और मं. याम्योत्तरवृत्त में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	मार्च	चैत्र	र.उस्सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५६	५५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३०	४९	२	बु.	५१	३	चित्रा	३२	३३	व्या.	३२	१७	तै.	२३	५९	१८	३१	१०	१४	तुला	४	३९	६	१७	१८	३७	११	१६	१०	३	सूर्य रेवती में २८/२२,
३०	५४	३	गु.	४६	४६	स्वा.	२९	३३	ह.	२५	२९	व.	१८	५४	१९	अ.१	११	१५	तुला			६	१६	१८	३७	११	१७	९	१७	भ. १८/५४ से ४६/४६ तक, गुरु पू.भा. २ में २१/१६, (A)
३०	५८	४	शु.	४४	२५	विशा.	२८	२१	व.	२०	८	ब.	१५	३६	२०	२	१२	१६	वृश्चि.	१३	२९	६	१५	१८	३८	११	१८	८	२८	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३१	३	५	श.	४४	९	अनु.	२९	११	सि.	१६	२६	कौ.	१४	१७	२१	३	१३	१७	वृश्चि.			६	१३	१८	३९	११	१९	७	३८	
३१	७	६	र.	४६	१	ज्ये.	३२	७	व्य.	१४	२४	ग.	१५	५	२२	४	१४	१८	धनु	३२	७	६	१२	१८	३९	११	२०	६	४६	भ. ४६/०१ बाद,
३१	१२	७	चं.	४९	५०	मूल	३६	५७	व.	१३	५७	वि.	१७	५८	२३	५	१५	१९	धनु			६	११	१८	४०	११	२१	५	५२	भ. १७/५८ तक,
३१	१७	८	मं.	५५	१०	पू.षा.	४३	२२	प.	१४	५४	बा.	२२	३०	२४	६	१६	२०	धनु			६	१०	१८	४०	११	२२	४	५६	शुक्र भरणी में ३६/५४ ,
३१	२१	९	बु.	६०	०	उ.षा.	५०	४९	शि.	१६	५०	तै.	२८	१९	२५	७	१७	२१	मकर	०	९	६	९	१८	४१	११	२३	३	५९	प्लूटो वक्री ४/४२ ,
३१	२६	९	गु.	१	२९	श्रव.	५८	४१	सि.	१९	२२	ग.	९	२९	२६	८	१८	२२	मकर			६	७	१८	४२	११	२४	२	५९	भ. ३४/४६ बाद, बुध भरणी में ७/१२,
३१	३०	१०	शु.	८	११	धनि.	६०	०	सा.	२२	१	वि.	८	११	२७	९	१९	२३	कुम्भ	३२	३७	६	६	१८	४२	११	२५	१	५९	भ. ८/११ तक, पंचक प्रारम्भ ३२/३७ ,
३१	३५	११	श.	१४	३२	धनि.	६	२४	शु.	२४	२२	बा.	१४	३२	२८	१०	२०	२४	कुम्भ			६	५	१८	४३	११	२६	०	५६	वरुथिनी एकादशी व्रत(स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
३१	३९	१२	र.	२०	८	शत.	१३	२४	शु.	२६	६	तै.	२०	८	२९	११	२१	२५	कुम्भ			६	४	१८	४४	११	२६	५९	५१	प्रदोष व्रत,
३१	४४	१३	चं.	२४	३८	पू.भा.	१९	२३	ब्र.	२७	१	व.	२४	३८	३०	१२	२२	२६	मीन	२	५८	६	३	१८	४४	११	२७	५८	४५	भ. २४/३८ से ५६/१५ तक,
३१	४८	१४	मं.	२७	५४	उ.भा.	२४	१२	ऐं.	२६	५८	श.	२७	५४	३१	१३	२३	२७	मीन			६	२	१८	४५	११	२८	५७	३७	
३१	५३	३०	बु.	२९	५६	रेव.	२७	४८	वै.	२५	५८	ना.	२९	५६	वै.१	१४	२४	२८	मेष	२७	४८	६	०	१८	४५	११	२९	५६	२७	पंचक समाप्त २७/४८, सं. सूर्य अश्वि. मेष में २/२२, (B)

(A) अप्रैल प्रारम्भ, (B) मु. ३०, पुण्यकाल १८/१६ तक, वैशाखी (पं.), मेषसंक्रान्ति, कुम्भमहापर्व हरिद्वार, कुम्भपर्व का मुख्य स्नानदिन, (प्रमुख शाहीस्नान) (देखें पृ. 14),

कुम्भ महापर्व हरिद्वार
१४ अप्रै., २०१० ई.

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
६ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	३	०	१०	०	५	८	२
२२	१७	१०	१०	२४	१२	६	२२	२२
४	३९	०	५१	२३	२८	७	३५	३५
५६	४	३३	३६	२६	५२	३५	४४	४४
५९	७१९	१५	७२	१३	७३	४	३	३
२	२९	५१	३८	३७	४६	२५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
व. २	षा. २	पुष्य ३	श्वि. ४	भा. २	श्वि. ४	फा. ३	षा. ३	पुन. १

कुण्डली सूर्योदय(६ अप्रै.)

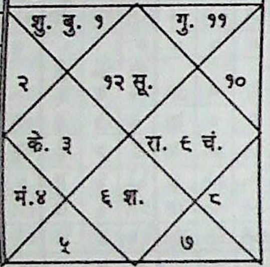

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार होने से प्रजा में सुख-समृद्धि एवम् सुभिक्ष रहे। लेकिन सूर्य-शनि का समसप्तक कन्याराशि वाले राष्ट्र विशेषतः पाकिस्तान एवम् अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह है। कहीं उग्रवाद से धार्मिक आयोजन पर जनधनहानि का योग भी बनता है; एवम् कहीं प्राकृतिक प्रकोप से भी जनधनहानि संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सरसों, अलसी, मूंगफली, सोना तेज रहें। ६ अप्रैल के लगभग सोना, चान्दी, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल मन्दे रहें। १४ अप्रैल के लगभग अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, तांबा, सुपारी, मेथी, लौंग, इलायची और अनाज तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदय (१४ अप्रै.)

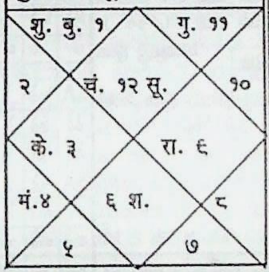

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१४ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	३	०	१०	०	५	८	२
२९	२३	१२	१७	२६	२२	५	२२	२२
५६	५२	१९	४३	११	१८	३३	१०	१०
२७	१३	१३	२१	३	३	२४	१८	१८
५८	७६२	१९	२३	१३	७३	४	३	३
४८	२५	८	५	१२	३०	२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ४	रेव. ३	पुष्य ३	भर. २	पू.भा. २	भर. ३	उ.फा. ३	पू.षा. ३	पुन. १

आकाश लक्षण:- मार्च ३१; अप्रैल १, ६, ८ और १४ के लगभग बंगलादेश, हि.प्र., भूटान, सिक्किम और आसाम में खण्डवृष्टि के

आकाश लक्षण:- मार्च ३१; अप्रैल १, ६, ८ और १४ के लगभग बंगलादेश, हि.प्र., भूटान, सिक्किम और आसाम में खण्डवृष्टि के

श्री वि.सं. २०६७, शाक १९३२, प्र.(अधि.) वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(१५ से २८ अप्रैल तक, सन् २०१० ई.)

उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।

२० अप्रै. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। गु. प्रातः पूर्व में दिखाई देगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज में, श. पूर्वकपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त में देखा जा सकता है। १६ अप्रै. को चं. से २° नीचे शु. चमकता दीखेगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	अप्रैल	चैत्र	रबिउस्सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	५७	१	गु.	३०	४७	अश्वि.	३०	१६	वि.	२४	४	किं.	०	२१	२	१५	२५	२९	मेष			५	५९	१८	४६	०	०	५५	१५	अधिक (मल) मास प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. १५,
३२	१	२	शु.	३०	३५	भर.	३१	४३	प्री.	२१	२०	बा.	०	४१	३	१६	२६	ज.१	वृष	४६	५५	५	५८	१८	४७	०	१	५४	१	गुरु पू.भा. ३ में १०/४२, जमद-उल-अव्वल मु. प्रा.,
३२	६	३	श.	२९	२८	कृत्ति.	३२	१६	आ.	१७	५२	तै.	०	१	४	१७	२७	२	वृष			५	५७	१८	४७	०	२	५२	४५	भ. ५८/२७ बाद, शुक्र कृत्ति. में ३२/५२,
३२	१०	४	र.	२७	३१	रोहि.	३२	१	सौ.	१३	४५	वि.	२७	३१	५	१८	२८	३	वृष			५	५६	१८	४८	०	३	५१	२७	भ. २७/३१ तक, बुध वक्री ८/१३,
३२	१४	५	चं.	२४	४९	मृग.	३१	१	शो.	९	०	बा.	२४	४९	६	१९	२९	४	मिथुन	१	३५	५	५५	१८	४९	०	४	५०	६	
३२	१९	६	मं.	२१	२३	आर्द्रा	२९	१८	अ. सु.	३ ५७	३८ ४३	तै.	२१	२३	७	२०	३०	५	मिथुन			५	५४	१८	४९	०	५	४८	४३	शुक्र वृष में १६/४०, सूर्य सायन वृष में १०/१५, ग्रीष्म (A)
३२	२३	७	बु.	१७	१३	पुन.	२६	५३	धृ.	५१	१५	व.	१७	१३	८	२१	वै.१	६	कर्क	१२	३४	५	५३	१८	५०	०	६	४७	१८	भ. १७/१३ से ४४/४८ तक, शक वैशाख प्रा., अगस्त्य(B)
३२	२७	८	गु.	१२	२२	पुष्य	२३	४६	शू.	४४	१४	ब.	१२	२२	९	२२	२	७	कर्क			५	५२	१८	५१	०	७	४५	५१	
३२	३१	९	शु.	६	५२	आश्ले.	२०	२	गं.	३६	४३	कौ.	६	५२	१०	२३	३	८	सिंह	२०	२	५	५१	१८	५१	०	८	४४	२२	
३२	३६	१०	श.	०	४६	मघा	१५	४७	वृ.	२८	५०	ग.	०	४६	११	२४	४	९	सिंह			५	५०	१८	५२	०	९	४२	५१	भ. २७/३३ से ५४/२० तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (C)
अवम		११	श.	५४	२०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३२	४०	१२	र.	४७	४५	पू.फा.	११	१३	ध्रु.	२०	४४	ब.	२१	२	१२	२५	५	१०	कन्या	२५	०	५	४९	१८	५३	०	१०	४१	१७	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वै.),
३२	४४	१३	चं.	४१	१७	उ.फा.	६	३४	व्या.	१२	३७	कौ.	१४	३१	१३	२६	६	११	कन्या			५	४८	१८	५३	०	११	३९	४१	मंगल आश्ले. में २०/४८, सोमप्रदोष व्रत,
३२	४८	१४	मं.	३५	१७	हस्त चित्रा	२ ५८	८ २०	ह. व.	४ ५७	४४ १९	ग.	८	१७	१४	२७	७	१२	तुला	३०	८	५	४७	१८	५४	०	१२	३८	४	भ. ३५/१७ बाद, सूर्य भरणी में ४२/२५, श्रीसत्यनारायण (D)
३२	५२	१५	बु.	३०	६	स्वा.	५५	३१	सि.	५०	४३	वि.	२	४२	१५	२८	८	१३	तुला			५	४६	१८	५५	०	१३	३६	२४	भ. २/४२ तक, शुक्र रोहिणी में २९/३९,

(A) ऋतु प्रारम्भ, बुध पश्चिम में अस्त १४/२५, (B) अस्त, (C) (स्मा.), (D) व्रत (देखें पृ. 96),

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२२ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० ७ ४५ ५१	३ १० ५१ ३१	३ १५ २ २०	० १७ ५५ ५२	१० २७ ५४ ५९	१ २ ४ ५२	५ ५ २ ४५	८ २१ ४४ ५२	२ २१ ४४ ५२
५८ ३०	८५० ७	२१ ५४	२३ १६	१२ ४२	७३ ९	३ ३२	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	पुष्य ३	पुष्य ४	भर. २	पू.भा. ३	कृत्ति. २	उ.फा. ३	पू.षा. ३	पुन. १

कुण्डली सूर्योदय(२२ अप्रै.)

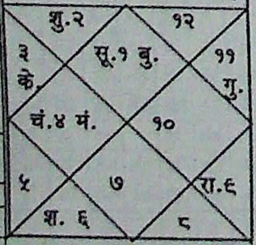

लोकभविष्य:- इस पक्ष में वृषराशि का शुक्र जनता में सुख-समृद्धि करे, सर्वत्र सुभिक्ष से खाद्यपदार्थ सुलभ होंगे, लेकिन सरहदी इलाकों पर कहीं युद्धमय वातावरण बने-

> "भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं कुरुते ध्रुवतः।
> प्रजानां सुखमत्यन्तं क्वचिद् विग्रहकारणम्।।"

बुध-शनि दोनों वक्र होकर कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि करेंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सोना, सरसों, अलसी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे। १७ अप्रैल के लगभग अचानक मन्दे का झटका आ सकता है। २० अप्रैल के लगभग रुई, कपास, सोना, चान्दी में जोरदार तेजी व मन्दे के झटके आएंगे। २५ से २८ अप्रैल तक रुई व चान्दी में मन्दी, लेकिन २७ अप्रैल को सोना, चान्दी, तांबा, सरसों, गुड़, खाण्ड तेज रहें।

आकाश लक्षण:- अप्रैल १६, १७, १८, २०, २१, २६, २७ और २८ को राजस्थान, उ.प्र., हि.प्र., आसाम, महाराष्ट्र (विशेषतः मुम्बई) में बादलचाल एवम् वर्षा के योग बनते हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२८ अप्रै.)

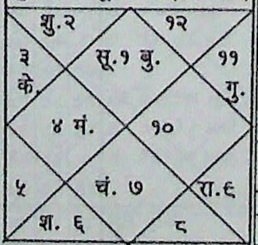

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२८ अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० १३ ३६ २३	६ ६ ५३ ४०	३ १७ १८ १२	० १४ ४४ २२	१० २९ १० ७	१ ९ २३ १०	५ ४ ४२ ४१	८ २१ २५ ४७	२ २१ २५ ४७
५८ १९	८३९ २१	२३ ३९	३९ २६	१२ १५	७२ ५३	३ ५	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. १	स्वा. १	आश्ले. १	भर. १	पू.भा. ३	कृत्ति. ४	उ.फा. ३	पू.षा. ३	पुन. १

श्री वि.सं. २०६७, शाक १९३२, द्वि.(अधि.) वैशाख कृ. पक्ष ४

(२९ अप्रैल से १४ मई तक, सन् २०१० ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

७ मई को बुध पूर्व में उदित हो जाएगा। प्रातः गु. पूर्व क्षितिज से ऊपर होगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज के पास, श. पूर्वकपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															वैशाख	अप्रैल	वैशाख	ज.उ.ल.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५६	१	गु.	२६	६	विशा.	५४	१	व्य.	४५	१२	की.	२६	६	१६	२९	९	१४	वृश्चि.	३९	१५	५	४५	१८	५५	०	१४	३४	४३	
३३	०	२	शु.	२३	३६	अनु.	५४	७	व.	४०	५७	ग.	२३	३६	१७	३०	१०	१५	वृश्चि.			५	४४	१८	५६	०	१५	३३	०	भ. ५३/१० बाद, वक्री बुध अश्वि. में ७/२५,
३३	४	३	श.	२२	५१	ज्ये.	५६	२	प.	३८	८	वि.	२२	५१	१८	म.१	११	१६	धनु	५६	२	५	४३	१८	५७	०	१६	३१	१५	भ. २२/५१ तक, मई प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३३	८	४	र.	२३	५८	मूल	५९	४५	शि.	३६	४८	बा.	२३	५८	१९	२	१२	१७	धनु			५	४२	१८	५७	०	१७	२९	२८	गुरु पू.भा. ४ मीन में ६/०३ ,
३३	१२	५	चं.	२६	५४	पू.षा.	६०	०	सि.	३६	५२	तै.	२६	५४	२०	३	१३	१८	धनु			५	४१	१८	५८	०	१८	२७	४०	
३३	१६	६	मं.	३१	२६	पू.षा.	५	११	सा.	३८	७	व.	३१	२६	२१	४	१४	१९	मकर	२१	४६	५	४०	१८	५९	०	१९	२५	५०	भ. ३१/२६ बाद,
३३	१९	७	बु.	३७	८	उ.षा.	११	५२	शु.	४०	१२	वि.	४	१९	२२	५	१५	२०	मकर			५	३९	१८	५९	०	२०	२३	५९	भ. ४/१९ तक,
३३	२२	८	गु.	४३	२४	श्रव.	१९	२१	शु.	४२	४२	बा.	१०	१६	२३	६	१६	२१	कुम्भ	५३	११	५	३९	१९	०	०	२१	२२	६	पंचक प्रारम्भ ५३/११,
३३	२७	९	शु.	४९	३६	धनि.	२६	५९	ब्र.	४५	९	तै.	१६	३०	२४	७	१७	२२	कुम्भ			५	३८	१९	०	०	२२	२०	१२	बुध पूर्व में उदित २३/१३,
३३	३०	१०	श.	५५	७	शत.	३४	९	ऐं.	४७	८	व.	२२	२२	२५	८	१८	२३	कुम्भ			५	३७	१९	१	०	२३	१८	१७	भ. २२/२२ से ५५/०७ तक,
३३	३४	११	र.	५९	३१	पू.भा.	४०	२३	वै.	४८	१८	ब.	२७	१९	२६	९	१९	२४	मीन	२३	५७	५	३६	१९	२	०	२४	१६	२०	शुक्र मृग. में ३०/४५, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स्मा.),
३३	३८	१२	चं.	६०	०	उ.भा.	४५	१८	वि.	४८	२४	कौ.	३१	१	२७	१०	२०	२५	मीन			५	३५	१९	२	०	२५	१४	२२	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वै.),
३३	४१	१२	मं.	२	३०	रेव.	४८	४६	प्री.	४७	१९	तै.	२	३०	२८	११	२१	२६	मेष	४८	४६	५	३५	१९	३	०	२६	१२	२३	पंचक समाप्त ४८/४६ , सूर्य कृत्ति. में २८/२[illegible], बुध (A)
३३	४४	१३	बु.	३	५७	अश्वि.	५०	४५	आ.	४५	४	व.	३	५७	२९	१२	२२	२७	मेष			५	३४	१९	४	०	२७	१०	२२	भ. ३/५७ से ३३/५७ तक,
३३	४८	१४	गु.	३	५५	भर.	५१	२३	सौ.	४१	४३	श.	३	५५	३०	१३	२३	२८	मेष			५	३३	१९	४	०	२८	८	१९	
३३	५१	३०	शु.	२	३२	कृत्ति.	५०	५२	शो.	३७	२४	ना.	२	३२	ज्ये.१	१४	२४	२९	वृष	६	२३	५	३३	१९	५	०	२९	६	१६	सं. सूर्य वृष में ५५/३४, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन(B)

(A) मार्गी ५५/५८, भौमप्रदोष व्रत, (B) मध्याह्न तक, अधिक(मल)मास समाप्त,

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
६ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	३	०	११	१	५	८	२
२१	१९	२०	९	०	१९	४	२१	२१
२२	२६	३४	५८	४५	५	२०	०	०
५	४३	३४	४४	५९	४	२४	२१	२१
५८	७०९	२५	२४	११	७२	२	३	३
६	५२	३९	१	३७	३३	२२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	श्रव. ३	आश्ले. ४	अश्वि. ३	पू.भा. ४	रोहि. ३	उ.फा. ३	पू.षा. ३	पुन. १

कुण्डली सूर्योदय (६ मई)

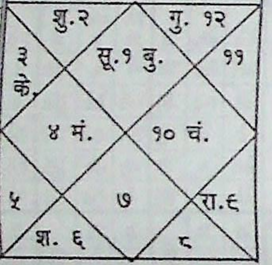

लोकभविष्य:- पू.भा. का गुरु आगे अनावृष्टि का संकेत देता है। गुरु के मीन राशि में प्रवेश से जनजीवनोपयोगी चीजों की कमी रहे। कहीं भयानक दुर्भिक्ष से शासन चिन्तित रहे-

> "यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
> सागराः सर्वनद्योऽपि विनश्यन्ति चतुष्पदाः।।"

पशुओं में रोगविशेष से भी कहीं परेशानी रहे। शनि-गुरु का समसप्तकयोग कहीं विशेष राजनैतिक संकट का योग बनाता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ३० अप्रैल के लगभग अनाज, अलसी, मूंग, मोठ में तेजी; घी, गुड़, खाण्ड में मन्दा बने। इस समय चान्दी में जोरदार मन्दे का योग है। ७ मई के लगभग घी, तिल, लालमिर्च, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे। ११ मई के लगभग अनाजों में तेजी; अलसी, गुड़, खाण्ड, मूंगफली आदि में मन्दी बने। १४ मई को बाजार तेजी की तरफ बढ़ सकते हैं।

आकाश लक्षण:- अप्रैल ३० और मई २, ७, ९, ११ एवम् १४ को पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि. प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम एवम् आसाम

कुण्डली सूर्योदय (१४ मई)

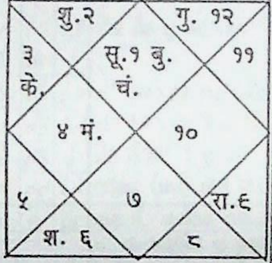

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१४ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	३	०	११	१	५	८	२
२९	२८	२४	८	२	२८	४	२०	२०
६	३३	६	४९	१६	४४	३	३४	३४
१४	२	०४	६	१७	८	५०	५५	५५
५७	८०९	२७	११	१०	७२	१	३	३
५५	२७	२४	५१	५१	१९	३८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	कृत्ति. १	आश्ले. ३	अश्वि. ३	पू.भा. ४	मृग. २	उ.फा. ३	पू.षा. ३	पुन. १

श्री वि.सं. २०६७, शाक १९३२, द्वि.(शुद्ध) वैशाख शु. पक्ष ५

(१५ से २७ मई तक, सन् २०१० ई.)

उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः बु. पूर्व क्षितिज और गुरु पूर्वकपाल में होगा। १६ मई को सायं चं. शु. पास-पास सटे हुए दिखाई देंगे। सायं शु. पश्चिम में क्षितिज से ऊपर, श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और मं. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	मई	वैशाख	ज.उ.ल.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५४	१	श.	०	१	रोहि.	४९	२५	अ.	३२	१७	ब.	०	१	२	१५	२५	३०	वृष			५	३२	१९	६	१	०	४	१०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, शुक्र मिथुन में ३/००, श्री शिवाजी जयन्ती,
अवम		२	श.	५६	३५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३३	५८	३	र.	५२	२७	मृग.	४७	१४	सु.	२६	३१	तै.	२४	३१	३	१६	२६	ज.१	मिथुन	१८	२४	५	३१	१९	६	१	१	२	३	श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया, जमद-उस्सानी मु. प्रा.,
३४	१	४	चं.	४७	४८	आर्द्रा	४४	३१	धृ.	२०	१६	व.	२०	७	४	१७	२७	२	मिथुन			५	३१	१९	७	१	१	५९	५४	भ. २०/०७ से ४७/४८ तक,
३४	४	५	मं.	४२	४६	पुन.	४१	२५	शू.	१३	४०	ब.	१५	१७	५	१८	२८	३	कर्क	२७	१३	५	३०	१९	८	१	२	५७	४४	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, **त्रयोदश दिनपक्ष**
३४	७	६	बु.	३७	२९	पुष्य	३८	५	ग. वृ.	६ ५९	४९ ४६	कौ.	१०	७	६	१९	२९	४	कर्क			५	३०	१९	८	१	३	५५	३२	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
३४	१०	७	गु.	३२	३	आश्ले.	३४	३५	ध्रु.	५२	३९	ग.	४	४६	७	२०	३०	५	सिंह	३४	३५	५	२९	१९	९	१	४	५३	१८	भ. ३२/०३ से ५९/२१ तक, गुरु उ.भा. १ में १/०६, (A)
३४	१२	८	शु.	२६	३४	मघा	३१	२	व्या.	४५	३१	ब.	२६	३४	८	२१	३१	६	सिंह			५	२९	१९	१०	१	५	५१	३	सूर्य सायन मिथुन में ८/५८,
३४	१५	९	श.	२१	६	पू.फा.	२७	३२	ह.	३८	२७	कौ.	२१	६	९	२२	ज्ये.१	७	कन्या	४१	४०	५	२८	१९	१०	१	६	४८	४६	श्रीजानकी जयन्ती, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१८	१०	र.	१५	४८	उ.फा.	२४	१२	व.	३१	३३	ग.	१५	४८	१०	२३	२	८	कन्या			५	२८	१९	११	१	७	४६	२८	भ. ४३/१६ बाद, बुध भरणी में १३/१५ ,
३४	२१	११	चं.	१०	४८	हस्त	२१	१३	सि.	२४	५६	वि.	१०	४८	११	२४	३	९	तुला	४९	५३	५	२७	१९	११	१	८	४४	८	भ. १०/४८ तक, राहु पू.षा. २, केतु आर्द्रा ४ में (B)
३४	२३	१२	मं.	६	१८	चित्रा	१८	४५	व्य.	१८	४६	बा.	६	१८	१२	२५	४	१०	तुला			५	२७	१९	१२	१	९	४१	४६	सूर्य रोहि. में १९/०७, भौमप्रदोष व्रत,
३४	२६	१३	बु.	२	३०	स्वा.	१७	३	व.	१३	१४	तै.	२	३०	१३	२६	५	११	तुला			५	२६	१९	१३	१	१०	३९	२३	भ. ५९/३९ बाद, मंगल मघा सिंह में २६/१०, (C)
अवम		१४	बु.	५९	३९	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	२८	१५	गु.	५७	५८	विशा.	१६	२०	प.	८	२९	वि.	२६	२१	१४	२७	६	१२	वृश्चि.	१	२३	५	२६	१९	१३	१	११	३६	५९	भ.२६/२१ तक, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुध पूर्णिमा, (D)

(A) शुक्र आर्द्रा में ३६/२८, श्रीगंगाजन्म, (B) ५८/५२, मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीनृसिंह जयन्ती, (D) श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीकूर्म जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, कुम्भमहापर्व हरिद्वार सम्पन्न,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	३	०	११	२	५	८	२
५	६	२७	११	३	७	३	२०	२०
५१	०	२१	४३	३०	८	५४	१२	१२
२	४३	५६	१५	२	१४	२६	३९	३९
५७	८५०	२८	४१	१०	७१	०	३	३
४३	२९	४३	११	७	४८	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ कृत्ति.	२ मघा	४ आश्ले.	४ अश्वि.	१ उ.भा.	१ आर्द्रा	३ उ.फा.	३ पू.षा.	१ पुन.

कुण्डली सूर्योदय (२१ मई)

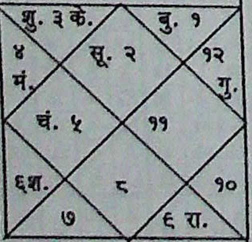

लोक भविष्य:- यह त्रयोदश दिनात्मक पक्ष है। पक्षारम्भ शनिवार को एवम् पंचमी मंगलवारी होने से किसी राष्ट्रविशेष में भयंकर युद्ध का सूत्रपात होने की सम्भावना बनती है-

> "यदा च जायते पक्षस्त्रयोदश- दिनात्मकः।
> भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही।"

विश्व के किसी देश में भयंकर दुर्भिक्ष रहे। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में अप्रत्याशित महंगाई से जनमानस में रोष व्याप्त हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- १५ मई को रुई, सूत, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में अच्छी मन्दी बने। गुड़, घी में जोरदार घटाबढ़ी रहे। २० मई के लगभग गेहूं आदि अनाजों में अच्छा मन्दा बनेगा। २५ मई को तिल, तेल, एरण्डी, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी आए। २६ मई को सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, शक्कर, खाण्ड तेज रहेंगे।

आकाश-लक्षण:- मई १५, २०, २३, २४, २५ और २६ को मुम्बई, आसाम, उड़ीसा, बिहार में वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२७ मई)

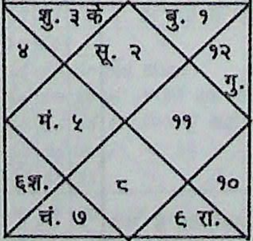

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	४	०	११	२	५	८	२
११	२९	०	१६	४	१४	३	१९	१९
३६	४३	१६	४४	२८	१८	५०	५३	५३
५७	१४	४५	१	५७	५	१७	३४	३४
५७	७९८	२९	६१	९	७१	०	३	३
३५	१२	४२	५५	२४	२५	२०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ रोहि.	३ विशा.	१ मघा	२ भर.	१ उ.भा.	३ आर्द्रा	३ उ.फा.	२ पू.षा.	४ आर्द्रा

(२८ मई से १२ जून तक, सन् २०१० ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः बु. पूर्व क्षितिजासन्न और गु. पूर्वकपाल में याम्योत्तरवृत्त की ओर बढ़ता दिखाई देगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज के पास, श. याम्योत्तरवृत्तासन्न और मं. पश्चिमकपाल में होगा।

श्री वि.सं. २०६७, शाक १९३२, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	मई	ज्येष्ठ	ज.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	२०	१	शु.	५७	३८	अनु.	१६	५०	शि.	४	४२	बा.	२७	४८	१५	२८	७	१३	वृश्चि.			५	२६	१९	१४	१	१२	३४	३३	
३४	३२	२	श.	५८	४८	ज्ये.	१८	४४	सि.	२	१	तै.	२८	१३	१६	२९	८	१४	धनु	१८	४४	५	२५	१९	१४	१	१३	३२	७	
३४	३५	३	र.	६०	०	मूल	२२	६	सा.	०	३२	व.	३०	९	१७	३०	९	१५	धनु			५	२५	१९	१५	१	१४	२९	३९	भ. ३०/०९ बाद, शनि मार्गी ४५/३४,
३४	३७	३	चं.	१	३०	पू.षा.	२६	५५	शु.	०	१४	वि.	१	३०	१८	३१	१०	१६	मकर	४३	२१	५	२५	१९	१६	१	१५	२७	१०	भ. १/३० तक, शुक्र पुन. में ४७/५४, नेप्च्यून वक्री (A)
३४	३९	४	मं.	५	३६	उ.षा.	३३	१	शु.	१	१	बा.	५	३६	१९	जू.१	११	१७	मकर			५	२४	१९	१६	१	१६	२४	४०	जून प्रारम्भ,
३४	४१	५	बु.	१०	५०	श्रव.	४०	३	ब्र.	२	४२	तै.	१०	५०	२०	२	१२	१८	मकर			५	२४	१९	१७	१	१७	२२	९	
३४	४३	६	गु.	१६	४६	धनि.	४७	३२	ऐं.	४	५९	व.	१६	४६	२१	३	१३	१९	कुम्भ	१३	४८	५	२४	१९	१७	१	१८	१९	३७	भ. १६/४६ से ४९/४९ तक, पंचक प्रारम्भ १३/४८,
३४	४४	७	शु.	२२	५२	शत.	५४	५६	वै.	७	२८	ब.	२२	५२	२२	४	१४	२०	कुम्भ			५	२४	१९	१८	१	१९	१७	५	बुध कृत्ति. में १२/००,
३४	४६	८	श.	२८	३२	पू.भा.	६०	०	वि.	९	४३	कौ.	२८	३२	२३	५	१५	२१	मीन	४५	४	५	२४	१९	१८	१	२०	१४	३२	
३४	४८	९	र.	३३	१४	पू.भा.	१	३८	प्री.	११	२१	तै.	०	५३	२४	६	१६	२२	मीन			५	२४	१९	१९	१	२१	११	५८	बुध वृष में २८/५५,
३४	४९	१०	चं.	३६	३२	उ.भा.	७	११	आ.	१२	०	व.	४	५२	२५	७	१७	२३	मीन			५	२३	१९	१९	१	२२	९	२४	भ. ४/५२ से ३६/३२ तक,
३४	५०	११	मं.	३८	११	रेव.	११	१४	सौ.	११	२६	ब.	७	२१	२६	८	१८	२४	मेष	११	१४	५	२३	१९	२०	१	२३	६	४९	पंचक समाप्त ११/१४, सूर्य मृग. में १४/०६, (B)
३४	५२	१२	बु.	३८	४	अश्वि.	१३	३५	शो.	९	३०	कौ.	८	७	२७	९	१९	२५	मेष			५	२३	१९	२०	१	२४	४	१४	शुक्र कर्क में १५/५८,
३४	५३	१३	गु.	३६	१६	भर.	१४	१४	अ.	६	१२	ग.	७	१०	२८	१०	२०	२६	वृष	२९	८	५	२३	१९	२०	१	२५	१	३८	भ. ३६/१६ बाद, प्रदोष व्रत,
३४	५४	१४	शु.	३२	५८	कृत्ति.	१३	१९	सु. धृ.	१ ५५	३६ ५१	वि.	४	३७	२९	११	२१	२७	वृष			५	२३	१९	२१	१	२५	५९	१	भ. ४/३७ तक, गुरु उ.भा. २ में २७/५५,
३४	५५	३०	श.	२८	२३	रोहि.	११	३	शू.	४९	१०	च.	०	४०	३०	१२	२२	२८	मिथुन	३९	२८	५	२३	१९	२१	१	२६	५६	२४	बुध रोहि. में ३३/१८, शुक्र पुष्य में ६/१३, शनैश्चरी (C)

(A) ४७/२२, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.), (C) अमा, वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमावस,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
५ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	४	०	११	२	५	८	२
२०	२१	४	२७	५	२४	३	१९	१९
१४	३	४९	४८	४९	५८	५०	२४	२४
३१	२७	२४	३६	७	३५	५६	५७	५७
५७	७१९	३१	८८	८	७०	०	३	३
२६	५१	१	१	१६	५१	३५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (५ जून)

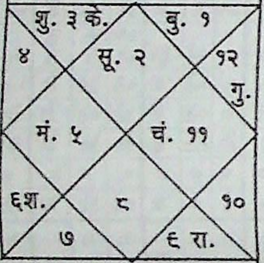

लोक भविष्य:- इस चान्द्रमास में ५ शुक्रवार एवं ५ शनिवार है। प्रजा में सुख-समृद्धि रहे; वर्षा समयानुकूल पर्याप्त हो। लेकिन अमेरिका, जापान एवं किसी मुस्लिम राष्ट्र में भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा से पक्षान्त में भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। कहीं सत्तापरिवर्तन भी हो;- " शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सोना, चान्दी मन्दे हों। ६ जून के लगभग सभी अनाज, तेल, तिलहन तेज होंगे। यह तेजी ८ जून तक चल सकती है। ९ जून से रुई में अच्छी मन्दी आकर तेजी बनेगी। तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज होंगे। अनाज मन्दे हों। १२ जून तक बाजार इसी तरह चलेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (१२ जून)

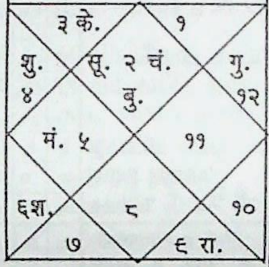

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१२ जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	४	१	११	३	५	८	२
२६	२०	८	९	६	३	३	१९	१९
५६	४९	२९	१	४३	१३	५७	२	२
२२	२७	१९	१७	५९	४	८	४१	४१
५७	८४४	३१	१०६	७	७०	१	३	३
२२	५५	५६	४२	१५	२१	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश-लक्षण:- मई २९, ३१; जून ४, ६, ८, ९, ११ और १२ को भूटान, शिलांग, काठमाण्डू में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.प्र.,
[illegible]

श्री वि.सं. २०६७, शाक १९३२, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७

(१३ से २६ जून तक, सन् २०१० ई.)

उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

१७ जून को बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा। प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर होगा। सायं शु. पश्चिमी क्षितिज के पास, श. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम में और मं. पश्चिमकपाल के मध्य में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	जून	ज्येष्ठ	ज.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५६	१	र.	२२	४९	मृग.	७	४२	गं.	४१	४६	ब.	२२	४९	३१	१३	२३	२९	मिथुन			५	२३	१९	२२	१	२७	५३	४५	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
३४	५६	२	चं.	१६	३३	आर्द्रा पुन.	३ ५९	३५ ०	वृ.	३३	५३	कौ.	१६	३३	३२	१४	२४	र.१	कर्क	४५	९	५	२३	१९	२२	१	२८	५१	६	रम्भा तृतीया (दिखें पृ. 96), रजब मु. प्रा.,
३४	५७	३	मं.	९	५३	पुष्य	५४	१३	ध्रु.	२५	४४	ग.	९	५३	आ.१	१५	२५	२	कर्क			५	२३	१९	२२	१	२९	४८	२६	भ. ३६/३० बाद, सं. सूर्य मिथुन में १२/२५, मु. ३०, (A)
३४	५८	४	बु.	३	५	आश्ले.	४९	३१	व्या.	१७	३२	वि.	३	५	२	१६	२६	३	सिंह	४९	३१	५	२४	१९	२३	२	०	४५	४६	भ. ३/०५ तक,
अवम		५	बु.	५६	२४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
३४	५८	६	ग.	५०	२	मघा	४५	६	ह.	९	२९	कौ.	२३	१३	३	१७	२७	४	सिंह			५	२४	१९	२३	२	१	४३	४	बुध पूर्व में अस्त ६/४६, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी,
३४	५९	७	शु.	४४	१०	पू.फा.	४१	११	व. सि.	१ ५४	४५ २७	ग.	१७	६	४	१८	२८	५	कन्या	५५	१८	५	२४	१९	२३	२	२	४०	२२	भ. ४४/१० बाद,
३४	५९	८	श.	३८	५७	उ.फा.	३७	५५	व्य.	४७	४२	वि.	११	३३	५	१९	२९	६	कन्या			५	२४	१९	२३	२	३	३७	३९	भ. ११/३३ तक, बुध मृग. में २९/२७,
३४	५९	९	र.	३४	३०	हस्त	३५	२४	व.	४१	३६	बा.	६	४३	६	२०	३०	७	कन्या			५	२४	१९	२४	२	४	३४	५५	मंगल पू.फा. में ५८/१२,
३४	५९	१०	चं.	३०	५६	चित्रा	३३	४६	प.	३६	१४	तै.	२	४३	७	२१	३१	८	तुला	४	२८	५	२४	१९	२४	२	५	३२	१०	भ. ५९/३७ बाद, सूर्य सायन कर्क में २८/५५, दक्षिण (B)
३४	५९	११	मं.	२८	२०	स्वा.	३३	६	शि.	३१	३९	वि.	२८	२०	८	२२	आ.१	९	तुला			५	२५	१९	२४	२	६	२९	२५	भ. २८/२० तक, सूर्य आर्द्रा में ११/१९, बुध मिथुन में (C)
३४	५९	१२	बु.	२६	४६	विशा.	३३	२७	सि.	२७	५४	बा.	२६	४६	९	२३	२	१०	वृश्चि.	१८	१६	५	२५	१९	२४	२	७	२६	३९	शुक्र आश्ले. में ३२/४५, प्रदोष व्रत, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण २६ जून
३४	५९	१३	गु.	२६	१८	अनु.	३४	५५	सा.	२५	३	तै.	२६	१८	१०	२४	३	११	वृश्चि.			५	२५	१९	२४	२	८	२३	५२	
३४	५८	१४	शु.	२७	१	ज्ये.	३७	३३	शु.	२३	७	व.	२७	१	११	२५	४	१२	धनु	३७	३३	५	२५	१९	२५	२	९	२१	५	भ.२७/०१ से ५८/०० तक, बुध आर्द्रा में ४५/०४, (D)
३४	५८	१५	श.	२८	५६	मूल	४१	२०	शु.	२२	८	ब.	२८	५६	१२	२६	५	१३	धनु			५	२६	१९	२५	२	१०	१८	१८	वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (E)

(A) पुण्यकाल २८/२२ तक, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), (B) अयन एवम् वर्षा ऋतु प्रारम्भ, श्रीगंगा दशहरा, (C) ४०/०६, शक आषाढ़ प्रा., निर्जला एकादशी व्रत(स.), (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) (पूर्वी भारत में दृश्य) (दिखें पृ. 17),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१९ जून,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	४	१	११	३	५	८	२
३	१	१२	२२	७	११	४	१८	१८
३७	१०	१५	२०	३१	२३	८	४०	४०
३८	०	२८	२	३६	५१	१७	२६	२६
५७	८४२	३२	१२३	६	६६	१	३	३
१६	९	४६	७	११	४६	५९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. ४	उ.फा. २	मघा ४	रोहि. ४	उ.भा. २	पुष्य ३	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४

कुण्डली सूर्योदय (१९ जून)

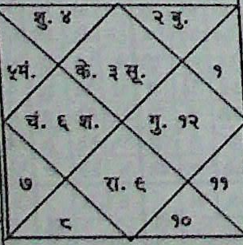

लोक भविष्यः- सूर्य, बुध एवं केतु के साथ शनि का दशम-चतुर्थसम्बन्ध कहीं शासकवर्ग में परस्पर वैमत्य का संकेत देता है। ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को आर्द्रा नक्षत्र का होना महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि में कहीं भयंकर वर्षा व अवर्षण से भारी हानि करेगा। कहीं तूफान आदि से भारी हानि भी होगी। शनिवारी पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण कहीं अकाल की स्थिति बनाता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १५ जून के लगभग गेहूं, चना, चावल, उड़द, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, रुई तेज रहें। सोना, चान्दी में भी तेजी का रुख बने। १७ जून के लगभग अनाज मन्दे एवं सोना, चान्दी में उठा-पटक चले। २० जून को तेल, तिलहन, गुड़-खाण्ड व नमक में तेजी बनेगी। २२ जून से २६ जून तक बाजार अस्थिर रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२६ जून)

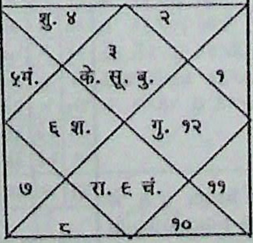

आकाश-लक्षणः- जून १३, १५, १७, १९, २०, २२, २३, २५ और २६ को हि.प्र., उ.प्र. भूटान, शिलांग, आसाम में जोरदार वर्षा के योग है। पंजाब और हरियाणा में लू और गर्मी का जोर रहे। १९ और २० जून को कहीं आंधी- तूफान से नुक्सान हो।

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२६ जून,

	सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	२	८	४	२	११	३	५	८	२
	१०	४	१६	७	८	१९	४	१८	१८
	१८	४५	७	१३	११	३०	२४	१८	१८
	१६	४१	९	०	२८	११	११	१०	१०
	५७	७४७	३३	१३१	५	६९	२	३	३
	१२	५२	३१	९	१	४	३६	११	११
			मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
			उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
योग	आर्द्रा २	मूल २	पू.फा. १	आर्द्रा १	उ.भा. २	आश्ले. १	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८

(२७ जून से ११ जुलाई तक, सन् २०१० ई..)
दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु।

पक्षान्त में बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। सायं शु. पश्चिम क्षितिज के नज़दीक, श. व मं. पश्चिम कपाल में होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जून	आषाढ़	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५७	१	र.	३२	२	पू.षा.	४६	१६	ब्र.	२२	५	बा.	०	२९	१३	२७	६	१४	धनु			५	२६	१९	२५	२	११	१५	३०	
३४	५७	२	चं.	३६	१५	उ.षा.	५२	१५	ऐं.	२२	५४	तै.	४	९	१४	२८	७	१५	मकर	२	४१	५	२६	१९	२५	२	१२	१२	४१	
३४	५६	३	मं.	४१	२४	श्रव.	५९	४	वै.	२४	२८	व.	८	४८	१५	२९	८	१६	मकर			५	२७	१९	२५	२	१३	९	५३	भ. ८/४८ से ४१/२४ तक, वक्री प्लूटो मूल ३ में (A)
३४	५५	४	बु.	४७	११	धनि.	६०	०	वि.	२६	३६	ब.	१४	१८	१६	३०	९	१७	कुम्भ	३२	४३	५	२७	१९	२५	२	१४	७	४	पंचक प्रारम्भ ३२/४३, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	५४	५	गु.	५३	१६	धनि.	६	२५	प्री.	२९	३	कौ.	२०	१३	१७	जु १	१०	१८	कुम्भ			५	२७	१९	२५	२	१५	४	१६	बुध पुन. में ५२/४५, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	६	शु.	५९	९	शत.	१३	५५	आ.	३१	२९	ग.	२६	१३	१८	२	११	१९	कुम्भ			५	२८	१९	२५	२	१६	१	२८	भ. ५९/०९ बाद,
३४	५२	७	श.	६०	०	पू.भा.	२१	५	सौ.	३३	३४	वि.	३१	४५	१९	३	१२	२०	मीन	४	२२	५	२८	१९	२५	२	१६	५८	३९	भ. ३१/४५ तक,
३४	५१	७	र.	४	२०	उ.भा.	२७	२६	शो.	३४	५४	ब.	४	२०	२०	४	१३	२१	मीन			५	२९	१९	२५	२	१७	५५	५१	
३४	५०	८	चं.	८	२१	रेव.	३२	३१	अ.	३५	११	कौ.	८	२१	२१	५	१४	२२	मेष	३२	३१	५	२९	१९	२५	२	१८	५३	४	पंचक समाप्त ३२/३१, शुक्र मघा सिंह में १०/४०, यूरेनस (B)
३४	४८	९	मं.	१०	५०	अश्वि.	३५	५७	सु.	३४	१०	ग.	१०	५०	२२	६	१५	२३	मेष			५	२९	१९	२५	२	१९	५०	१६	भ. ४१/१० बाद, सूर्य पुन. में १०/१५, बुध कर्क में (C)
३४	४७	१०	बु.	११	३०	भर.	३७	३६	धृ.	३१	४१	वि.	११	३०	२३	७	१६	२४	वृष	५२	४३	५	३०	१९	२४	२	२०	४७	२९	भ. ११/३० तक,
३४	४५	११	गु.	१०	१७	कृत्ति.	३७	२२	शू.	२७	४२	बा.	१०	१७	२४	८	१७	२५	वृष			५	३०	१९	२४	२	२१	४४	४२	बुध पुष्य में १९/४९, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	४३	१२	शु.	७	१३	रोहि.	३५	२३	गं.	२२	१४	तै.	७	१३	२५	९	१८	२६	वृष			५	३१	१९	२४	२	२२	४१	५६	प्रदोष व्रत,
३४	४२	१३	श.	२	३०	मृग.	३१	५१	वृ.	१५	२८	व.	२	३०	२६	१०	१९	२७	मिथुन	३	४८	५	३१	१९	२४	२	२३	३९	९	भ. २/३० से २९/२७ तक, बुध पश्चिम में उदित २०/१९,
अवम		१४	श.	५६	२१	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	४०	३०	र.	४९	६	आर्द्रा	२७	३	ध्रु. व्या.	७ ५८	३५ ५३	च.	२२	४३	२७	११	२०	२८	मिथुन			५	३२	१९	२४	२	२४	३६	२३	

(A) २/१९, (B) वक्री ४२/१०, (C) ४०/००,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	४	२	११	३	५	८	२
१८	२३	२१	२६	८	२९	४	१७	१७
५३	१८	१२	३५	५०	४७	५१	४९	४९
२	४३	२५	१६	३०	५५	१७	३३	३३
५७	७४५	३४	१२३	३	६८	३	३	३
१३	३८	२४	३३	२७	४	२७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (५ जुलाई)

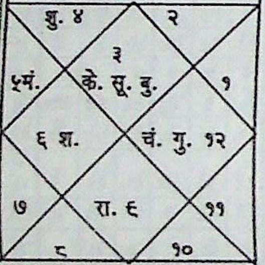

लोक भविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच रविवार एवं पांच चन्द्रवार हैं। कहीं भयंकर बाढ़-वर्षा से खड़ी फसल को हानि व दुर्भिक्ष की स्थिति बने। मुस्लिम देश में कहीं राजनैतिक हत्याकाण्ड एवं दक्षिण में कहीं सत्तापरिवर्तन हो;-

"यत्र मासे रवेर्वाराः जायन्ते पंच संततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च तदा ज्ञेयं महद्भयम्।।"

उत्तरी भारत में धनधान्यसमृद्धि एवं व्यापारिक क्षेत्र में वृद्धि हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में अनाजों में कुछ मन्दे का रुख रहेगा। १ जुलाई के लगभग चान्दी, रुई, कपास, सूत, सण में अच्छा मन्दा सम्भव है। ५ जुलाई के लगभग सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में तेजी बनेगी। ८ जुलाई के करीब सोना, चान्दी, रुई में घटाबढ़ी के बाद अच्छी मन्दी बन सकती है।

आकाश लक्षण:- जुलाई १, ५, ६, ८ और १० को पंजाब, हि.प्र., उ.प्र., गुजरात, शिलांग, आसाम एवम् अनेक [illegible] के साथ वर्षा के

कुण्डली सूर्योदय(११ जुलाई)

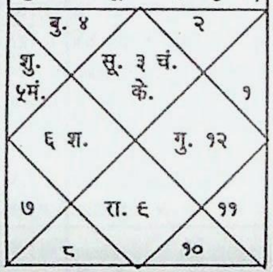

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	४	३	११	४	५	८	२
२४	१३	२४	८	९	६	५	१७	१७
३६	२४	४०	३०	८	३४	१३	३०	३०
२२	५९	१९	२५	२४	२९	१७	२८	२८
५७	८७७	३४	११२	२	६७	३	३	३
१४	४२	५९	४६	१९	१९	५८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(१२ से २६ जुलाई तक, सन् २०१० ई.)

दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शु. पश्चिम में क्षितिज के नज़दीक और बुध क्षितिजासन्न होगा। श. व मं. पश्चिमकपाल में होंगे। १४ जुलाई को चं.शु. काफी नज़दीक दीखेंगे।

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ६															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आषाढ़	जुलाई	आषाढ़	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३८	१	चं.	४१	६	पुन.	२१	२२	ह.	४९	३५	किं.	१५	६	२८	१२	२१	२९	कर्क	७	५०	५	३२	१९	२३	२	२५	३३	३७	
३४	३६	२	मं.	३२	४४	पुष्य	१५	९	व.	४०	१	बा.	६	५५	२९	१३	२२	३०	कर्क			५	३३	१९	२३	२	२६	३०	५१	चन्द्रदर्शन, मु. १५, रथयात्रा(श्रीजगदीश रथोत्सव)पुरी (A)
३४	३४	३	बु.	२४	२१	आश्ले.	८	४८	सि.	३०	२९	ग.	२४	२१	३०	१४	२३	शा. १	सिंह	८	४८	५	३३	१९	२३	२	२७	२८	६	भ. ५०/२२ बाद, मंगल उ.फा. में २४/३०, शाबान मु. (B)
३४	३१	४	गु.	१६	१९	मघा पू.फा.	२ ५७	४२ ११	व्य.	२१	१७	वि.	१६	१९	३१	१५	२४	२	सिंह			५	३४	१९	२२	२	२८	२५	२०	भ. १६/१९ तक, बुध आश्ले. में २८/१६,
३४	२९	५	शु.	८	५७	उ.फा.	५२	३४	व.	१२	३९	बा.	८	५७	श्रा. १	१६	२५	३	कन्या	१०	५५	५	३४	१९	२२	२	२९	२२	३५	सं. सूर्य कर्क में ३९/०१, मु. ४५, पुण्यकाल ९/०० (C)
३४	२७	६	श.	२	३३	हस्त	४९	६	प. शि.	४ ५८	५० २	तै.	२	३३	२	१७	२६	४	कन्या			५	३५	१९	२२	३	०	१९	५०	भ. ५७/१९ बाद, शुक्र पू.फा. में ३/१५, विवस्वत् सप्तमी,
अवम		७	श.	५७	१९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३४	२४	८	र.	५३	२६	चित्रा	४६	५८	सि.	५२	१८	वि.	२५	२२	३	१८	२७	५	तुला	१७	५१	५	३६	१९	२१	३	१	१७	५	भ. २५/२२ तक,
३४	२२	९	चं.	५०	५९	स्वा.	४६	१४	सा.	४७	४४	बा.	२२	१३	४	१९	२८	६	तुला			५	३६	१९	२१	३	२	१४	२०	
३४	१९	१०	मं.	५०	०	विशा.	४६	५७	शु.	४४	२०	तै.	२०	३०	५	२०	२९	७	वृश्चि.	३१	३९	५	३७	१९	२०	३	३	११	३५	सूर्य पुष्य में ८/३१, मंगल. कन्या में २/२२,
३४	१७	११	बु.	५०	२४	अनु.	४९	३	शु.	४२	३	व.	२०	१२	६	२१	३०	८	वृश्चि.			५	३७	१९	२०	३	४	८	५१	भ. २०/१२ से ५०/२४ तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (D)
३४	१४	१२	गु.	५२	६	ज्ये.	५२	२५	ब्र.	४०	४८	ब	२१	१२	७	२२	३१	९	धनु	५२	२५	५	३८	१९	१९	३	५	६	६	सूर्य सायन सिंह में ५५/३३,
३४	११	१३	शु.	५४	५९	मूल	५६	५५	ऐं.	४०	३०	कौ.	२३	३३	८	२३	श्रा. १	१०	धनु			५	३९	१९	१९	३	६	३	२३	बुध मघा सिंह में ४१/१५, गुरु वक्री २९/४५, शक (E)
३४	८	१४	श.	५८	५२	पू.षा.	६०	०	वै.	४१	०	ग.	२६	५६	९	२४	२	११	धनु			५	३९	१९	१८	३	७	०	३९	भ. ५८/५२ बाद,
३४	५	१५	र.	६०	०	पू.षा.	२	२४	वि.	४२	११	वि.	३१	१२	१०	२५	३	१२	मकर	१८	५३	५	४०	१९	१८	३	७	५७	५६	भ. ३१/१२ तक, गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा(F)
३४	२	१५	चं.	३	३६	उ.षा.	८	३९	प्री.	४३	५६	ब.	३	३६	११	२६	४	१३	मकर			५	४०	१९	१७	३	८	५५	१३	राहु पू.षा. १, केतु आर्द्रा ३ में ५१/३९ ,

(A) (पुष्य नक्षत्र ११ घं. ३६ मि. तक), (B) प्रारम्भ, (C) बाद, कुमार षष्ठी, (देखें पृ. 96), (D) (स.), श्रीविष्णुशयनोत्सव, (E) श्रावण प्रारम्भ, प्रदोष व्रत, (F) कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १ १७ ४	५ २५ ४९ २	४ २८ ४७ ६	३ २० ५९ ४५	११ ९ २० ३७	४ १४ २२ ३५	५ ५ ४२ ४२	८ १७ ८ १२	२ १७ ८ १२
५७ १५	८२५ १७	३५ ३७	९९ २५	० ५९	६६ १४	४ ३०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	चित्रा १	उ.फा. १	आश्ले. २	उ.भा. २	पू.फा. १	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४

कुण्डली सूर्योदय(१८ जुलाई)

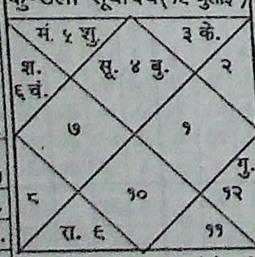

लोकभविष्य :- इस पक्ष में शनि-मंगल का कन्याराशि में एकत्र होना एवं बुध-शुक्र का सिंहराशि में एकसाथ चलना कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि का संकेत देता है। कहीं बाढ़, कहीं भारी सूखे से किसान परेशान रहें। मीनराशि में गुरु के वक्री होने से जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी से जनता में रोष रहे। भारतीय सीमाप्रान्तों पर सैन्यगतिविधि से वातावरण अशान्त हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, रुई, सूत, बादाम, सोना, चान्दी तेज रहेंगे। १६ जुलाई के करीब बाजारों में अचानक मन्दा आकर २० जुलाई के लगभग रुई, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन, अनाज, हल्दी में अच्छी तेजी बने। २३ जुलाई के करीब गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी, घी में मन्दी; रुई, सूत, सोना, चान्दी में तेजी और गुड़, खाण्ड में मन्दा बने।

आकाश लक्षण:- जुलाई १३, १४, १५, १६, १७, २० और २३ को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, चण्डीगढ़ एवम् उ.भा. में बादल-वर्षा के योग हैं। राजस्थान, उड़ीसा एवम् आसाम में कहीं सूखे व बाढ़ से हानि के समाचार मिलें।

कुण्डली सूर्योदय(२६ जुलाई)

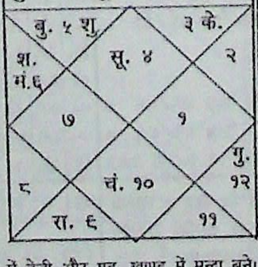

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ८ ५५ १२	९ ८ १० ४९	५ ३ ३४ १६	४ ३ २१ १८	११ ९ २२ ५६	४ २३ ७ २९	५ ६ २० ५०	८ १६ ४२ ४६	२ १६ ४२ ४६
५७ १९	७१८ ६	३६ १६	७३ ५६	० ३५	६४ ४४	५ ५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य २	उ.षा. ४	उ.फा. ३	मघा २	उ.भा. २	पू.फा. ३	उ.फा. ३	पू.षा. २	आर्द्रा ४

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, श्रावण कृष्ण पक्ष १०

(२७ जुलाई से १० अगस्त तक, सन् २०१० ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में दिखाई देगा। सायं बु.शु. पश्चिम क्षितिज में होंगे। इस समय श. एवम् मं. पश्चिम-कपाल में देखे जा सकते हैं।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															श्रावण	जुलाई	श्रावण	शाबान												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	५९	१	मं.	९	०	श्रव.	१५	३५	आ.	४६	६	कौ.	९	०	१२	२७	५	१४	कुम्भ	४९	१४	५	४१	१९	१७	३	९	५२	३१	पंचक प्रारम्भ ४९/१४, अशून्यशयन व्रत,
३३	५६	२	बु.	१४	५२	धनि.	२२	५५	सौ.	४८	३१	ग.	१४	५२	१३	२८	६	१५	कुम्भ			५	४२	१९	१६	३	१०	४९	५०	भ. ४७/५२ बाद,
३३	५३	३	गु.	२०	५७	शत.	३०	२६	शो.	५०	५९	वि.	२०	५७	१४	२९	७	१६	कुम्भ			५	४२	१९	१५	३	११	४७	१०	भ. २०/५७ तक, शुक्र उ.फा. में १७/१२, शनि उ.फा. (A)
३३	५०	४	शु.	२६	५६	पू.भा.	३७	४८	अ.	५३	१५	बा.	२६	५६	१५	३०	८	१७	मीन	२१	०	५	४३	१९	१५	३	१२	४४	३०	
३३	४६	५	श.	३२	२९	उ.भा.	४४	४१	सु.	५५	४	तै.	३२	२९	१६	३१	९	१८	मीन			५	४३	१९	१४	३	१३	४१	५१	
३३	४३	६	र.	३७	११	रेव.	५०	४१	धृ.	५६	७	ग.	४	५०	१७	अ.१	१०	१९	मेष	५०	४१	५	४४	१९	१३	३	१४	३९	१४	भ. ३७/११ बाद, पंचक समाप्त ५०/४१, शुक्र कन्या में (B)
३३	४०	७	चं.	४०	२९	अश्वि.	५५	२४	शू.	५६	८	वि.	८	५२	१८	२	११	२०	मेष			५	४५	१९	१२	३	१५	३६	३८	भ. ८/५२ तक, बुध पू.फा. में ४७/३०,
३३	३६	८	मं.	४२	३३	भर.	५८	३२	गं.	५४	५१	बा.	११	३६	१९	३	१२	२१	मेष			५	४५	१९	१२	३	१६	३४	२	सूर्य आश्ले. में ५/३७,
३३	३३	९	बु.	४२	३७	कृत्ति.	५९	५०	वृ.	५२	७	तै.	१२	३४	२०	४	१३	२२	वृष	१४	१	५	४६	१९	११	३	१७	३१	२८	
३३	२९	१०	गु.	४०	४५	रोहि.	५९	१३	ध्रु.	४७	४९	व.	११	४२	२१	५	१४	२३	वृष			५	४६	१९	१०	३	१८	२८	५६	भ. ११/४२ से ४०/४५ तक, मंगल हस्त में ३०/५७,
३३	२५	११	शु.	३६	५९	मृग.	५६	४४	व्या.	४२	०	ब.	८	५२	२२	६	१५	२४	मिथुन	२८	११	५	४७	१९	९	३	१९	२६	२४	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३३	२२	१२	श.	३१	२६	आर्द्रा	५२	३३	ह.	३४	४३	कौ.	४	१३	२३	७	१६	२५	मिथुन			५	४८	१९	८	३	२०	२३	५४	शनिप्रदोष व्रत,
३३	१८	१३	र.	२४	२२	पुन.	४६	५८	व.	२६	१२	व.	२४	२२	२४	८	१७	२६	कर्क	३३	२७	५	४८	१९	७	३	२१	२१	२५	भ. २४/२२ से ५०/१५ तक,
३३	१४	१४	चं.	१६	६	पुष्य	४०	२१	सि.	१६	४२	श.	१६	६	२५	९	१८	२७	कर्क			५	४९	१९	७	३	२२	१८	५७	
३३	१०	३०	मं.	७	१	आश्ले.	३३	५	व्य. व.	६ ५६	३१ १	ना.	७	१	२६	१०	१९	२८	सिंह	३३	५	५	४९	१९	६	३	२३	१६	३०	भौमवती अमा,हरियाली अमा,

(A) ४ में ४१/४५, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (B) २५/१३, अगस्त प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
३ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	५	४	११	५	५	८	२
१६	१४	८	१३	९	१	७	१६	१६
३४	९	२६	३३	१२	३९	३	१७	१७
२	५१	३६	३८	४३	२०	२०	१९	१९
५७	७६०	३६	६६	२	६२	५	३	३
२६	५२	५४	२०	१०	५६	३६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	भर. १	उ.फा. ४	पू.फा. १	उ.भा. २	उ.फा. २	उ.फा. ४	पू.षा. १	आर्द्रा ३

कुण्डली सूर्योदय(३ अग.)

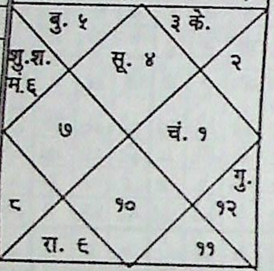

लोकभविष्यः:- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं। नेपाल, पाक, अफगानिस्तान आदि में कहीं अराजकता, रक्तपात आदि से अशान्ति रहे। भारत में भी उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड से कहीं जनहानि संभव है;-"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।"

कहीं सत्ताहस्तान्तरण भी हो। शुक्र-शनि-मंगल का एकसाथ होना भारी महंगाई से जनाक्रोश बनाए। पक्षान्त में भूकम्प-अग्निकाण्ड आदि से हानि के योग भी हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में बाजार ऊपर-नीचे चलेंगे। परन्तु २९ जुलाई को कपास, सूत, सण, सोना, चान्दी, तांबा एवम् अनाजों में तेजी का रुख रहे। १ अगस्त को चान्दी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी बने। अनाज, गुड़, खाण्ड में तेजी और चावलों में विशेष तेजी का झटका आएगा। ३ से १० अगस्त तक सोना, चान्दी, अनाज, तिलहन, गुड़, खाण्ड, नमक व शक्कर तेज रहेंगे।

आकाश लक्षण:- जुलाई २८, २९; अगस्त १, २, ३, ५ को हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा के उत्तर-पश्चिमी भागों में पर्याप्त वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१० अग.)

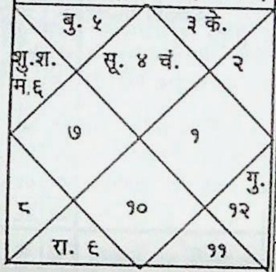

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
१० अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	५	४	११	५	५	८	२
२३	२१	१२	२०	८	८	७	१५	१५
१६	२५	४६	२१	५३	५४	४३	५५	५५
२९	१९	३६	१	३५	२५	४६	४	४
५७	६११	३७	४६	३	६१	६	३	३
३४	४४	२७	८	३०	२	०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	आश्ले. २	हस्त १	पू.फा. ३	उ.भा. २	उ.फा. ४	उ.फा. ४	पू.षा. १	आर्द्रा ३

श्री वि. सं. २०६७, शाक १६३२, श्रावण शुक्ल पक्ष ११

(११ से २४ अगस्त तक, सन् २०१० ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।

प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं बु. पश्चिम क्षितिज में, शु. पश्चिम में और श. एवम् मं. पश्चिमकपाल में होंगे। १३ अग. को सायं चं. शु. से ऊपर उठा हुआ दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शाबान				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५७	३४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३३	७	२	बु.	४८	९	मघा	२५	३९	प.	४५	३१	बा.	२२	५१	२७	११	२०	२९	सिंह			५	५०	१९	५	३	२४	१४	४	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र हस्त में ३/३७,
३३	३	३	गु.	३९	११	पू.फा.	१८	३१	शि.	३५	२४	तै.	१३	४०	२८	१२	२१	र.१	कन्या	३१	४८	५	५१	१९	४	३	२५	११	३९	रमज़ान मु. प्रारम्भ, मधुस्रवा तृतीया(संधारातीज),
३२	५९	४	शु.	३१	७	उ.फा.	१२	६	सि.	२६	०	व.	५	७	२९	१३	२२	२	कन्या			५	५१	१९	३	३	२६	९	१५	भ. ५/०७ से ३१/०७ तक,
३२	५५	५	श.	२४	१८	हस्त	६	५०	सा.	१७	३७	बा.	२४	१८	३०	१४	२३	३	तुला	३४	४४	५	५२	१९	२	३	२७	६	५२	नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती,
३२	५१	६	र.	१९	४	चित्रा	३	४	शु.	१०	३१	तै.	१९	४	३१	१५	२४	४	तुला			५	५३	१९	१	३	२८	४	३१	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
३२	४७	७	चं.	१५	३७	स्वा.	१	०	शु.	४	५०	व.	१५	३७	भा.१	१६	२५	५	वृश्चि.	४५	४१	५	५३	१९	०	३	२९	२	१०	भ. १५/३७ से ४४/५२ तक, सं. सूर्य मघा सिंह में (A)
३२	४३	८	मं.	१४	३	विशा.	०	४८	ब्र. ऐं.	० ५८	४१ ०	ब.	१४	३	२	१७	२६	६	वृश्चि.			५	५४	१८	५९	३	२९	५९	५०	श्रीदुर्गाष्टमी,
३२	३९	९	बु.	१४	२०	अनु.	२	२५	वै.	५६	४२	कौ.	१४	२०	३	१८	२७	७	वृश्चि.			५	५४	१८	५८	४	०	५७	३२	वक्री नेप्च्यून धनि. ३ में ४४/५२,
३२	३५	१०	गु.	१६	१९	ज्ये.	५	४३	वि.	५६	३५	ग.	१६	१९	४	१९	२८	८	धनु	५	४३	५	५५	१८	५७	४	१	५५	१४	भ. ४८/०० बाद,
३२	३१	११	शु.	१९	४४	मूल	१०	२९	प्री.	५७	२५	वि.	१९	४४	५	२०	२९	९	धनु			५	५६	१८	५६	४	२	५२	५७	भ. १९/४४ तक, बुध वक्री ४८/५५, पवित्रा एकादशी (B)
३२	२६	१२	श.	२४	१६	पू.षा.	१६	२२	आ.	५८	५७	बा.	२४	१६	६	२१	३०	१०	मकर	३३	०	५	५६	१८	५५	४	३	५०	४२	शनिप्रदोष व्रत,
३२	२२	१३	र.	२९	३७	उ.षा.	२३	४	सौ.	६०	०	तै.	२९	३७	७	२२	३१	११	मकर			५	५७	१८	५४	४	४	४८	२८	
३२	१८	१४	चं.	३५	२७	श्रव.	३०	१६	सौ.	०	५९	ग.	२	३१	८	२३	भा.१	१२	मकर			५	५७	१८	५२	४	५	४६	१'१	भ. ३५/२७ बाद, सूर्य सायन कन्या में १२/२७, (C)
३२	१४	१५	मं.	४१	३१	धनि.	३७	४२	शो.	३	१७	वि.	८	२७	९	२४	२	१३	कुम्भ	३	५७	५	५८	१८	५१	४	६	४४	३	भ. ८/२७ तक, पंचक प्रारम्भ ३/५७, शुक्र चित्रा में (D)

(A) ५९/१३, मु. ४५, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती, (B) व्रत (स.), (C) शरद् ऋतु प्रारम्भ, शक भाद्रपद प्रारम्भ, ऋग्वेदियों का उपाकर्म (देखें पृ. 97), (D) ४५/४९, रक्षाबन्धन (राखी) (९ घं. २१ मि. बाद)(देखें पृ. 97), श्री अमरनाथ यात्रा, श्रावणी पूर्णिमा, शुक्ल-कृष्ण-यजु-उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ अगस्त,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ २९ ५९ ५०	७ २ ५६ ४६	५ १७ १० २६	४ २४ २३ ५३	११ ८ २५ २२	५ १५ ५४ ४७	५ ८ २६ ५१	८ १५ ३२ ४६	२ १५ ३२ ४६
५७ ४२	७७६ ३०	३८ ०	१७ २७	४ ४३	५८ ३८	६ २१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ४	विशा. ४	हस्त ३	पू.फा. ४	उ.भा. २	हस्त २	उ.फा. ४	पू.षा. १	आर्द्रा ३

कुण्डली सूर्योदय (१७ अग.)

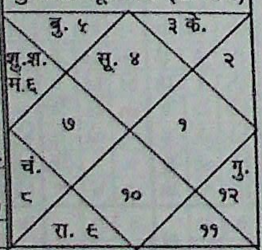

लोकभविष्यः- श्रावण शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय होने से आगे कार्त्तिक में कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन के योग बनते हैं;-

> "श्रावणे शुक्लपक्षे च तिथिः क्वापि क्षया भवेत्।
> तदा वै कार्त्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्।।"

सिंहस्थ सूर्य एवम् वक्री बुध कहीं अधिक वर्षा से हानि का संकेत देते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ११ अगस्त के लगभग गेहूं, चावल, रुई का स्टॉक करने से आगे लाभ मिले। १६ अगस्त के लगभग रुई, चान्दी, मूंग, ज्वार, बाजरा, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। २० अगस्त के करीब बाजारों में अचानक मन्दा आ सकता है। २४ अगस्त के करीब सोना, चान्दी, तेल, तिलहन व दालवाना में तेजी का रुख बने।

आकाश-लक्षणः- अगस्त ११, १६, २० और २४ को हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि के अधिकांश भागों में वर्षा के योग हैं। कहीं बाढ़ से हानि का समाचार मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदय (२४ अग.)

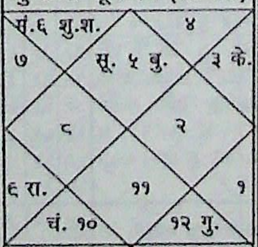

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ अगस्त,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ ६ ४४ ३	९ २८ ५९ १६	५ २१ ३७ ५३	४ २४ ३४ १२	११ ७ ४८ ५५	५ २२ ३६ २५	५ ९ १२ १४	८ १५ १० ३३	२ १५ १० ३३
५७ ४९	७११ ९	३८ ३०	२१ १६	५ ४९	५५ ३४	६ ४०	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	धनि. २	हस्त ४	पू.फा. ४	उ.भा. २	हस्त ४	उ.फा. ४	पू.षा. १	आर्द्रा ३

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२

(२५ अगस्त से ८ सितंबर तक, सन् २०१० ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

२७ अग. को बु. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। प्रातः गु. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। सायं शु. मं. पश्चिम में और श. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्रपद	अगस्त	भाद्रपद	रमजान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	९	१	बु.	४७	३६	शत.	४५	१०	अ.	५	३९	बा.	१४	३३	१०	२५	३	१४	कुम्भ			५	५८	१८	५०	४	७	४१	५२	
३२	५	२	गु.	५३	३०	पू.भा.	५२	२७	सु.	८	०	तै.	२०	३३	११	२६	४	१५	मीन	३५	४०	५	५९	१८	४९	४	८	३९	४३	मंगल चित्रा में ३७/४३,
३२	१	३	शु.	५९	१	उ.भा.	५९	२२	धृ.	१०	१०	व.	२६	१२	१२	२७	५	१६	मीन			६	०	१८	४८	४	९	३७	३६	भ. २६/१२ से ५९/०१ तक, बुध पश्चिम में अस्त (A)
३१	५७	४	श.	६०	०	रेव.	६०	०	शू.	११	५९	ब.	३१	२६	१३	२८	६	१७	मीन			६	०	१८	४७	४	१०	३५	३०	बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (B)
३१	५२	४	र.	३	५२	रेव.	५	३९	गं.	१३	१६	बा.	३	५२	१४	२९	७	१८	मेष	५	३९	६	१	१८	४६	४	११	३३	२६	पंचक समाप्त ५/३९ ,
३१	४८	५	चं.	७	५१	अश्वि.	११	५	वृ.	१३	५०	तै.	७	५१	१५	३०	८	१९	मेष			६	१	१८	४४	४	१२	३१	२४	सूर्य पू. फा. में ४९/००,
३१	४३	६	मं.	१०	३९	भर.	१५	२१	ध्रु.	१३	२८	व.	१०	३९	१६	३१	९	२०	वृष	३१	१४	६	२	१८	४३	४	१३	२९	२४	भ. १०/३९ से ४१/२१ तक, शनि हस्त १ में २/२४,
३१	३९	७	बु.	११	५९	कृत्ति.	१८	१०	व्या.	११	५६	ब.	११	५९	१७	सि.१	१०	२१	वृष			६	२	१८	४२	४	१४	२७	२६	शुक्र तुला में १५/०० , श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत(स्मा.)(C)
३१	३५	८	गु.	११	३८	रोहि.	१९	२०	ह.	९	५	कौ.	११	३८	१८	२	११	२२	मिथुन	४९	१४	६	३	१८	४१	४	१५	२५	२९	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत(वै.) (चन्द्रोदय २४घं. ०२मि.), (D)
३१	३०	९	शु.	९	२६	मृग.	१८	४०	व. सि.	४ ५८	४६ ५९	ग.	९	२६	१९	३	१२	२३	मिथुन			६	४	१८	४०	४	१६	२३	३५	भ. ३७/२४ बाद, वक्री गुरु उ.भा. १ में ३८/४२, (E)
३१	२६	१०	श.	५	२४	आर्द्रा	१६	११	व्य.	५१	४४	वि.	५	२४	२०	४	१३	२४	कर्क	५८	१२	६	४	१८	३८	४	१७	२१	४२	भ. ५/२४ तक, अगस्त्य उदित, अजा एकादशी व्रत (स्मा.),
अवम		११	श.	५९	३९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३१	२१	१२	र.	५२	२०	पुन.	११	५९	व.	४३	११	कौ.	२५	५९	२१	५	१४	२५	कर्क			६	५	१८	३७	४	१८	१९	५२	मंगल तुला में ५२/२८, अजा एकादशी व्रत (वै.),
३१	१७	१३	चं.	४३	४९	पुष्य आश्ले.	६ ५९	१९ ३३	प.	३३	३५	ग.	१८	४	२२	६	१५	२६	सिंह	५९	३३	६	५	१८	३६	४	१९	१८	३	भ. ४३/४९ बाद, सोमप्रदोष व्रत, पर्युषणपर्व (जैन) प्रारम्भ,
३१	१२	१४	मं.	३४	२८	मघा	५२	४	शि.	२३	१३	वि.	९	७	२३	७	१६	२७	सिंह			६	६	१८	३५	४	२०	१६	१६	भ. ९/०७ तक, वक्री बुध मघा में ४०/४० ,
३१	८	३०	बु.	२४	४३	पू.फा.	४४	२०	सि.	१२	२६	ना.	२४	४३	२४	८	१७	२८	कन्या	५७	२४	६	६	१८	३३	४	२१	१४	३१	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,

(A) २८/४८, (B) (चन्द्रोदय २० घं. २७ मि.), (C) (अर्धरात्रि में अष्टमी-रोहिणी-योग)(चन्द्रोदय २३ घं. ०६ मि.), जन्माष्टमी (जयन्तीयोग), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 97), सितंबर प्रारम्भ,
(D) गोकुलाष्टमी(नन्दोत्सव), (E) श्रीगुम्गा नवमी,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
२ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १५ २५ २९	१ १८ ४६ ४१	५ २७ २६ ५७	४ १८ २१ २०	११ ६ ५१ ४२	६ ० ३७ ७	५ १० १३ २५	८ १४ ४१ ५७	२ १४ ४१ ५७
५८ ६	९०० ८	३९ ९	५७ २१	६ ५९	५० २५	६ ५८	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२ सितं.)

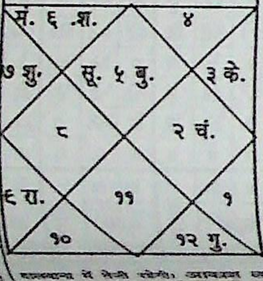

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार एवं पांच गुरुवार हैं। पूर्वोत्तर में सुखसमृद्धि रहे। लेकिन पश्चिमी देशों में कहीं विग्रह, कहीं उग्रवादजन्य अशान्ति से वातावरण क्षुब्ध रहे; -

> "यत्र मासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः।
> विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग-युद्धं च जायते।"

भाद्र. कृष्ण चतुर्थी शनिवारी होने से कहीं सत्तापरिवर्तन, कहीं दुर्भिक्ष भी संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २६ अग. को गेहूं, चावल, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल तेज रहेंगे। २७ अग. को अचानक जोरदार मन्दा बन सकता है। ३० अग. से जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तेल, घी, रुई, सूत तेज रहेंगे। ५ से ७ सितं. तक रुई, कपास, सूत, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड और [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (८ सितं.)

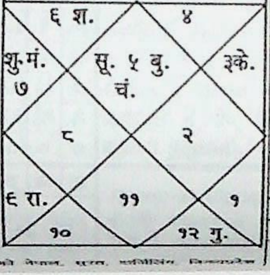

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.),
८ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २१ १४ ३१	४ १४ ५८ ३१	६ १ २२ ५८	४ १३ ७ ८	११ ६ ८ २३	६ ५ २९ २	५ १० ५५ ३९	८ १४ २२ ५२	२ १४ २२ ५२
५८ १६	९१७ ४२	३९ ३६	३६ ५७	७ ३२	४५ ५८	७ ८	३ ११	३ ११
		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(९ से २३ सितम्बर तक, सन् २०१० ई.)

दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिण गोल, शरद् ऋतु।

१२ सितं. को बुध पूर्व में उदित होगा और १३ सितं. को श. पश्चिम में दिखाई देना बन्द हो जाएगा। प्रातः गु. पश्चिम क्षितिज के पास होगा। सायं शु.मं. पश्चिम में परस्पर काफी आसन्न देखे जा सकेंगे। ११ सितं. को चं. से ऊपर शु. चमकता दिखाई देगा।

श्री वि. सं. २०६७ शाक १९३२, भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. रमज़ान				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	३	१	गु.	१५	२	उ.फा.	३६	५१	सा. शु.	१ ५१	३७ ८	ब.	१५	२	२५	९	१८	२९	कन्या			६	७	१८	३२	४	२२	१२	४८	शुक्र स्वाती में ३१/३१,
३०	५९	२	शु.	५	५४	हस्त	३०	६	शु.	४१	२३	कौ.	५	५४	२६	१०	१९	३०	तुला	५७	१०	६	८	१८	३१	४	२३	११	६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, हरितालिका तृतीया, गौरीतृतीया, (A)
अवम		३	शु	५७	४७	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३०	५४	४	श.	५१	४	चित्रा	२४	३५	ब्र.	३२	४२	व.	२४	२५	२७	११	२०	श.१	तुला			६	८	१८	३०	४	२४	९	२६	भ. २४/२५ से ५१/०४ तक, हरितालिका चतुर्थी, (B)
३०	४९	५	र.	४६	८	स्वा.	२०	४१	ऐं.	२५	२३	ब.	१८	३५	२८	१२	२१	२	तुला			६	९	१८	२८	४	२५	७	४८	बुध मार्गी ५६/१५, बुध पूर्व में उदित ३२/०७, ऋषि पंचमी,
३०	४५	६	चं.	४३	१४	विशा.	१८	४२	वै.	१९	४०	कौ.	१४	४७	२९	१३	२२	३	वृश्चि.	४	०	६	९	१८	२७	४	२६	६	११	सूर्य उ.फा. में ३३/०४, शनि अस्त ४२/४९, सूर्यषष्ठी, (C)
३०	४०	७	मं.	४२	२९	अनु.	१८	४८	वि.	१५	३८	ग.	१२	५२	३०	१४	२३	४	वृश्चि.			६	१०	१८	२६	४	२७	४	३६	भ. ४२/२९ बाद, प्लूटो मार्गी ९/४५,
३०	३६	८	बु.	४३	४८	ज्ये.	२१	०	प्री.	१३	१७	वि.	१२	१५	३१	१५	२४	५	धनु	२१	०	६	१०	१८	२५	४	२८	३	३	भ. १२/१५ तक, मंगल स्वा. में ५५/४५, श्रीमहालक्ष्मी (D)
३०	३१	९	गु.	४६	५७	मूल	२५	२	आ.	१२	२८	बा.	१५	२२	आ.१	१६	२५	६	धनु			६	११	१८	२३	४	२९	१	३१	सं. सूर्य कन्या में ५८/१५, मु. ३०, पुण्यकाल अगले (E)
३०	२७	१०	शु.	५१	३४	पू.षा.	३०	३८	सौ.	१२	५६	तै.	१९	१५	२	१७	२६	७	मकर	४७	१५	६	११	१८	२२	५	०	०	१	
३०	२२	११	श.	५७	१०	उ.षा.	३७	२०	शो.	१४	२२	व.	२४	१९	३	१८	२७	८	मकर			६	१२	१८	२१	५	०	५८	३३	भ. २४/१९ से ५७/१० तक, बुध पू.फा. में ०/५२, (F)
३०	१७	१२	र.	६०	०	श्रव.	४४	४१	अ.	१६	२६	ब.	३०	१४	४	१९	२८	९	मकर			६	१३	१८	२०	५	१	५७	६	पद्मा एकादशी व्रत (वै.), श्रवण द्वादशी, श्रीवामन (G)
३०	१३	१२	चं.	३	१८	धनि.	५२	१५	सु.	१८	४८	बा.	३	१८	५	२०	२९	१०	कुम्भ	१८	२७	६	१३	१८	१८	५	२	५५	४१	पंचक प्रारम्भ १८/२७, सोमप्रदोष व्रत,
३०	८	१३	मं.	९	३४	शत.	५९	४२	धृ.	२१	१२	तै.	९	३४	६	२१	३०	११	कुम्भ			६	१४	१८	१७	५	३	५४	१७	
३०	३	१४	बु.	१५	३९	पू.भा.	६०	०	शू.	२३	२५	व.	१५	३९	७	२२	३१	१२	मीन	५०	४	६	१४	१८	१६	५	४	५२	५६	भ. १५/३९ से ४८/३३ तक, श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत, (H)
२९	५९	१५	गु.	२१	२०	पू.भा.	६	४६	गं.	२५	१८	ब.	२१	२०	८	२३	आ.१	१३	मीन			६	१५	१८	१४	५	५	५१	३६	सूर्य सायन तुला में ५/५७, विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ,(I)

(A) साम उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती, मेला बाबा श्रीगोसाईं आणां-कुराली (पं.), (B) कलंकचतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २० घं. १६ मि.), श्रीसिद्धिविनायक व्रत, शव्वाल मु. प्रारम्भ, (C) संवत्सरी महापर्व (जैन), (D) व्रतारम्भ, श्रीराधाष्टमी, (E) दिन मध्याह्न तक, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (F) पद्मा एकादशी व्रत (स्मा.), (G) जयन्ती, श्रीवामनद्वादशी, (H) पूर्णिमा-श्राद्ध (देखें पृ. 97), प्रोष्ठपदी श्राद्ध, श्रीसत्यनारायण व्रत, (I) शक आश्विन प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २८ ३ ३	७ २५ ११ २६	६ ६ १ ३८	४ ११ ४० ३२	११ ५ १४ २०	६ १० ३१ ३९	५ ११ ४६ २	८ १४ ० ३७	२ १४ ० ३७
५८ २९	७४७ १७	४० ५	२३ ३०	७ ५५	३९ १३	७ १६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
उ.फा. १	ज्येष्ठा ३	चित्रा ४	मघा ४	उ.भा. १	स्वा. २	हस्त १	पू.षा. १	आर्द्रा ३

कुण्डली सूर्योदय (१५ सितं.)

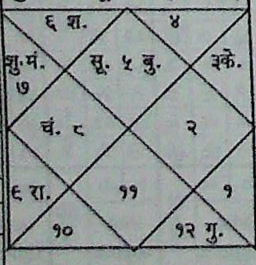

लोक-भविष्यः:- बुध का पूर्व में उदय एवं मार्गी होना कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि करेगा-" नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो ब्रजत्युदयम् ।" पक्षमध्य में सूर्य कन्याराशि में अस्त शनि के साथ राशिसम्बन्ध बनाकर कहीं राजनैतिक उलझनें बनाए एवम् कहीं यानदुर्घटना या प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी करे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:-९ सितं. के लगभग गेहूं आदि अनाज तेज रहें। १२ सितं. के करीब तिलहन, घी, बारदाना, लालमिर्च, कपास, सूत, सोना-चान्दी, तांबा, चावल, ज्वार और बाजरा में तेजी बने। १५ सितं. के लगभग चान्दी में घटाबढ़ी हो। सोना मन्दा रहे। १६ सितं. से पक्षान्त तक रुई, सुपारी, तिल, तेल, लालमिर्च तेज रहें। चान्दी, शेयर और गुड़, खाण्ड में कुछ मन्दा बने।

आकाश-लक्षण:- सितं. ९, १२, १३, १५, १६ एवम् १८ को आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान व काश्मीर में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उत्तरी भारत में गर्मी का प्रभाव क्षीण होगा और मौसम में बदलाव अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२३ सितं.)

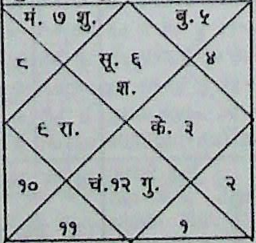

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २३ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ ५ ५१ ३६	११ १ ३६ ३९	६ ११ २४ १५	४ १८ ३८ १०	११ ४ १० २८	६ १५ १० ४८	५ १२ ४४ ३६	८ १३ ३५ ११	२ १३ ३५ ११
५८ ४२	७१९ २५	४० ३७	८२ ४७	८ १	२८ ४३	७ २२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
उ.फा. ३	पू.भा. ४	स्वा. २	पू.फा. २	उ.भा. १	स्वा. ३	हस्त १	पू.षा. १	आर्द्रा ३

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, आश्विन कृष्ण पक्ष १४

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२४ सितम्बर से ७ अक्तूबर तक, सन् २०१० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।
															प्र. आश्वि.	अं. सितंबर	श. आश्वि.	मु. शव्वाल				सूर्योदय		सूर्यास्त						श. अस्त है। बु. भी ३० सितं. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः गु. पश्चिम क्षितिज में डूबने को होगा। सायं शु.मं. पश्चिम क्षितिज के पास काफी आसन्न दिखाई देंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५४	१	शु.	२६	२८	उ.भा.	१३	२२	वृ.	२६	४५	कौ.	२६	२८	९	२४	२	१४	मीन			६	१५	१८	१३	५	६	५०	१८	श्राद्ध(पितृ-पक्ष) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध,
२९	५०	२	श.	३०	५५	रेव.	१९	२१	ध्रु.	२७	४२	ग.	३०	५५	१०	२५	३	१५	मेष	१९	२१	६	१६	१८	१२	५	७	४९	२	पंचक समाप्त १९/२१, द्वितीया का श्राद्ध,
२९	४५	३	र.	३४	३७	अश्वि.	२४	३६	व्या.	२८	४	व.	२	४३	११	२६	४	१६	मेष			६	१७	१८	११	५	८	४७	४८	भ. २/४३ से ३४/३७ तक, तृतीया का श्राद्ध,
२९	४०	४	चं.	३७	२४	भर.	२९	०	ह.	२७	४५	ब.	६	०	१२	२७	५	१७	वृष	४४	५८	६	१७	१८	९	५	९	४६	३६	सूर्य हस्त में ११/४३ , शनि हस्त २ में ४५/४५, (A)
२९	३६	५	मं.	३९	८	कृत्ति.	३२	२४	व.	२६	३७	कौ.	८	१६	१३	२८	६	१८	वृष			६	१८	१८	८	५	१०	४५	२७	बुध उ.फा. में १३/४८, पंचमी का श्राद्ध.
२९	३१	६	बु.	३९	३६	रोहि.	३४	३५	सि.	२४	३२	ग.	९	२२	१४	२९	७	१९	वृष			६	१८	१८	७	५	११	४४	२०	भ. ३९/३६ बाद, वक्री गुरु पू.भा. ४ में १९/२७, (B)
२९	२६	७	गु.	३८	३९	मृग.	३५	२४	व्य.	२१	२२	वि.	९	७	१५	३०	८	२०	मिथुन	५	१०	६	१९	१८	६	५	१२	४३	१५	भ. ९/०७ तक, बुध कन्या में ११/२२ , बुध पूर्व में (C)
२९	२२	८	शु.	३६	१०	आर्द्रा	३४	४३	व.	१७	१	बा.	७	२४	१६	अ. १	९	२१	मिथुन			६	२०	१८	४	५	१३	४२	१३	अष्टमी का श्राद्ध, अक्तूबर प्रारम्भ,
२९	१७	९	श.	३२	५	पुन.	३२	२७	प.	११	२२	तै.	४	७	१७	२	१०	२२	कर्क	१८	९	६	२०	१८	३	५	१४	४१	१२	भ. ५९/१८ बाद, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	१३	१०	र.	२६	२९	पुष्य	२८	४०	शि. सि.	४ ५६	२८ २५	वि.	२६	२९	१८	३	११	२३	कर्क			६	२१	१८	२	५	१५	४०	१४	भ. २६/२९ तक, दशमी का श्राद्ध,
२९	८	११	चं.	१९	३१	आश्ले.	२३	३३	सा.	४७	२१	बा.	१९	३१	१९	४	१२	२४	सिंह	२३	३३	६	२१	१८	१	५	१६	३९	१९	इन्दिरा एकादशी व्रत(स.), एकादशी का श्राद्ध, द्वादशी(D)
२९	३	१२	मं.	११	२८	मघा	१७	२२	शु.	३७	३१	तै.	११	२८	२०	५	१३	२५	सिंह			६	२२	१७	५९	५	१७	३८	२५	मंगल विशा. में ३१/५७, बुध हस्त में ५०/१९, (E)
२८	५९	१३	बु.	२	४३	पू.फा.	१०	२९	शु.	२७	१४	व.	२	४३	२१	६	१४	२६	कन्या	२३	४०	६	२३	१७	५८	५	१८	३७	३४	भ. २/४३ से २८/०७ तक, चतुर्दशी का श्राद्ध, (F)
अवम		१४	बु.	५३	३७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२८	५४	३०	गु.	४४	३८	उ.फा. हस्त	३ ५६	२० २५	ब्र.	१६	५१	च.	१९	७	२२	७	१५	२७	कन्या			६	२३	१७	५७	५	१९	३६	४५	महालय अमावस, सर्वपितृ अमावस, अज्ञात मृत्युतिथि एवं(G)

(A) राहु मूल ४, केतु आर्द्रा २ में ४४/४५, चतुर्थी का श्राद्ध. भरणी श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत. (B) चन्द्रषष्ठी, षष्ठी का श्राद्ध. (C) अस्त ३५/०१, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में), सप्तमी का श्राद्ध. (D) का श्राद्ध (देखें पृ. 98), संन्यासियों का श्राद्ध. (E) त्रयोदशी का श्राद्ध (देखें पृ. 98), प्रदोष व्रत, ——— (F) अपमृत्युवालों का श्राद्ध, (G) चतुर्दशी मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, गजच्छाया पर्व (७घं. ४३ मि. बाद),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ १३ ४२ १३	२ ११ ४५ ३५	६ १६ ५१ १४	५ १ २० ५१	११ ३ ७ १३	६ १८ १४ ६	५ १३ ४३ ४३	८ १३ ९ ४५	२ १३ ९ ४५
५८ ५९	८१७ २४	४१ १२	१०५ २०	७ ४३	१४ ४५	७ २५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
हस्त २	आर्द्रा २	स्वा. ४	उ.फा. २	पू.भा. ४	स्वा. ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २

कुण्डली सूर्योदय (१ अक्तू.)

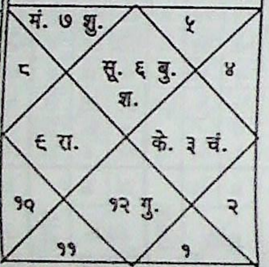

लोकभविष्य:- सूर्य, शनि एवम् बुध- ये तीनों कन्याराशि में आकर पक्षान्त में हस्त नक्षत्र में विचरण करेंगे। जनता में नानाविध रोगों से परेशानी बने। कहीं साम्प्रदायिक/धार्मिक उपद्रव किंवा कहीं उग्रवादजन्य विस्फोट आदि से जनधनहानि भी संभव है। इस चान्द्रमास में ५ शुक्रवार एवं ५ शनिवार हैं, अतः कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, कपास, नमक, धनिया, हल्दी, उड़द, मूंग, मोठ और अरहर में तेजी रहे। ३० सितं. को सोना-चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बने। १ से ५ अक्तू. तक बाजारों में कुछ मन्दे का रुख रह सकता है, लेकिन कपास, गेहूं में कुछ तेजी रहे।

आकाश लक्षण:- सितं. २६, २७, २८, २९, ३० एवम् अक्तू. ५ और ६ को उत्तरप्रदेश के कुछ भाग, श्रीलंका, आसाम एवम् बंगाल में वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो।

कुण्डली सूर्योदय (७ अक्तू.)

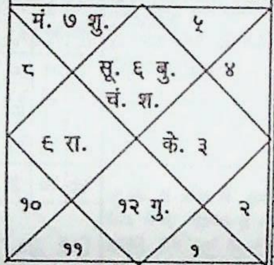

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ७ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ १९ ३६ ४५	५ ८ ३६ २	६ २० ५९ २६	५ १२ ० ३१	११ २ २२ १	६ १९ ११ १२	५ १४ २८ ७	८ १२ ५० ४१	२ १२ ५० ४१
५९ १३	९०४ २४	४१ ३६	१०६ ५८	७ १५	१ ५०	७ २३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
हस्त ३	उ.फा. ४	विशा. १	हस्त १	पू.भा. ४	स्वा. ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, आश्विन शुक्ल पक्ष १५

(८ से २३ अक्तूबर तक, सन् २०१० ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्–हेमन्त ऋतु।

बुध अस्त है। १९ अक्तू. के बाद शु. पश्चिम में लुप्त और श. प्रातः पूर्व क्षितिज में दृश्य हो जाएगा। सायं गु. पूर्वकपाल में और मं. पश्चिम क्षितिज के पास होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															आश्विन	अक्तूबर	आश्विन	शव्वाल												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	५०	१	शु.	३६	१३	चित्रा	५०	१०	ऐं. वै.	६ ५७	४५ १९	किं.	१०	२५	२३	८	१६	२८	तुला	२३	८	६	२४	१७	५६	५	२०	३५	५८	शुक्र वक्री १५/२७, शारद नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृ. 98)(A)
२८	४५	२	श.	२८	५२	स्वा.	४५	५	वि.	४८	५२	बा.	२	३३	२४	९	१७	२९	तुला			६	२५	१७	५५	५	२१	३५	१३	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२८	४०	३	र.	२२	५८	विशा.	४१	३५	प्री.	४१	४३	ग.	२२	५८	२५	१०	१८	जि.१	वृश्चि.	२७	१६	६	२५	१७	५३	५	२२	३४	३०	भ. ५०/५७ बाद, सूर्य चित्रा में ४३/४५, जिल्काद मु. (B)
२८	३६	४	चं.	१८	५५	अनु.	३९	५९	आ.	३६	८	वि.	१८	५५	२६	११	१९	२	वृश्चि.			६	२६	१७	५२	५	२३	३३	४९	भ. १८/५५ तक, उपाङ्गललिता व्रत,
२८	३१	५	मं.	१६	५६	ज्ये.	४०	२९	सौ.	३२	१३	बा.	१६	५६	२७	१२	२०	३	धनु	४०	२९	६	२६	१७	५१	५	२४	३३	९	
२८	२७	६	बु.	१७	७	मूल	४३	३	शो.	३०	०	तै.	१७	७	२८	१३	२१	४	धनु			६	२७	१७	५०	५	२५	३२	३२	बुध चित्रा में २२/५७ , सरस्वती आवाहन,
२८	२२	७	गु.	१९	२३	पू.षा.	४७	३२	अ.	२९	२१	व.	१९	२३	२९	१४	२२	५	धनु			६	२८	१७	४९	५	२६	३१	५७	भ. १९/२३ से ५१/२४ तक, सरस्वती पूजन,
२८	१८	८	शु.	२३	२५	उ.षा.	५३	३३	सु.	३०	०	ब.	२३	५५	३०	१५	२३	६	मकर	३	५३	६	२८	१७	४८	५	२७	३१	२३	श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती के लिए बलिदान,
२८	१३	९	श.	२८	४७	श्रव.	६०	०	धृ.	३१	३६	कौ.	२८	४७	३१	१६	२४	७	मकर			६	२९	१७	४६	५	२८	३०	५१	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ९/३६, महानवमी (पूजा, उपवास एवं(C)
२८	९	१०	र.	३४	५५	श्रव.	०	३५	शू.	३३	४५	तै.	१	५१	का.१	१७	२५	८	कुम्भ	३४	१९	६	३०	१७	४५	५	२९	३०	२१	पंचक प्रारम्भ ३४/१९, सं. सूर्य तुला में २७/२२, मु. (D)
२८	४	११	चं.	४१	१७	धनि.	८	३	गं.	३६	५	व.	८	१	२	१८	२६	९	कुम्भ			६	३१	१७	४४	६	०	२९	५२	भ. ८/०१ से ४१/१७ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत (E)
२८	०	१२	मं.	४७	२३	शत.	१५	३२	वृ.	३८	१५	ब.	१४	२०	३	१९	२७	१०	कुम्भ			६	३१	१७	४३	६	१	२९	२५	मंगल वृश्चिक में ४९/३४, शुक्र पश्चिम में अस्त ९/३०,(F)
२७	५५	१३	बु.	५२	५४	पू.भा.	२२	३५	ध्रु.	३९	५९	कौ.	२०	९	४	२०	२८	११	मीन	५	५२	६	३२	१७	४२	६	२	२९	०	प्रदोष व्रत,
२७	५१	१४	गु.	५७	३५	उ.भा.	२८	५६	व्या.	४१	७	ग.	२५	१५	५	२१	२९	१२	मीन			६	३३	१७	४१	६	३	२८	३७	भ. ५७/३५ बाद, बुध स्वा. में १५/२२,
२७	४७	१५	शु.	६०	०	रेव.	३४	२६	ह.	४१	३४	वि.	२९	३०	६	२२	३०	१३	मेष	३४	२६	६	३३	१७	४०	६	४	२८	१५	भ. २९/३० तक, पंचक समाप्त ३४/२६, शरत् पूर्णिमा, (G)
२७	४२	१५	श.	१	२२	अश्वि.	३९	३	व.	४१	१९	ब.	१	२२	७	२३	का.१	१४	मेष			६	३४	१७	३९	६	५	२७	५६	सूर्य सायन वृश्चिक में २८/४६, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, (H)

शुक्र अस्त
१९ अक्तूबर

(A) महाराज अग्रसेन जयन्ती, नाना/नानी का महालय श्राद्ध, (B) प्रारम्भ, (C) बलिदान के लिए), सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त, (D) ३०, पुण्यकाल ११/२२ बाद, बुध तुला में १६/१०, विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजिता-पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (E) (स.), भरत मिलाप, (F) शनि उदित ०/१६ , (G) कोजागर व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिकस्नान प्रारम्भ, (H) शक कार्तिक प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१५ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५ २७ ३१ २३	८ २८ ४२ ५१	६ २६ ३४ १३	५ २६ ३ ३२	११ १ २७ ७	६ १८ १९ २३	५ १५ २६ ५४	८ १२ २५ १५	२ १२ २५ १५
५९ २८	७२५ २१	४२ ८	१०२ ४७	६ १९	१७ १४	७ १८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चित्रा २	उ.षा. १	विशा. २	चित्रा १	पू.भा. ४	स्वा. ४	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २

कुण्डली सूर्योदय (१५ अक्तू.)

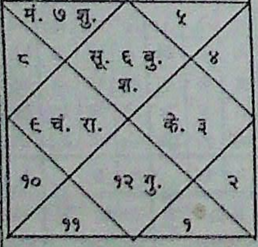

लोकभविष्यः- इस पक्ष में तुला राशि में शुक्रास्त है। शासकों में परस्पर वैमत्य रहे; किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। १९ अक्तूबर से वृश्चिक राशिस्थित मंगल पर शनि की दृष्टि एवं शुक्रास्त होने से कहीं किसी मुस्लिम देश में भयंकर युद्ध से वातावरण अशान्त हो सकता है- "शुक्लपक्षे यदा शुक्रः समुदेत्यस्तमेति वा । राजपुत्र-सहस्राणां मही पिबति शोणितम्।।" कहीं यान-दुर्घटना या भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, रुई, गुड़, खाण्ड, अरहर एवं लाल चीजों में तेजी बने। १३ अक्तू. को रुई व चान्दी में घटाबढ़ी चले। अनाज तेज रहें। १७ अक्तू. को रुई, अलसी, सरसों, जौ, चना, सोना, तांबा में तेजी रहे। १९ अक्तू. को सोना, चान्दी, तांबा में जोरदार तेजी के बाद अच्छी मन्दी आ सकती है।

कुण्डली सूर्योदय (२३ अक्तू.)

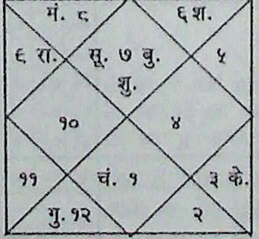

आकाश-लक्षणः- अक्तू. ८, ९, १०, १३, १७, १९ को हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, पंजाब एवं उ.प्र. के कुछ भागों में वायुवेग के साथ बौछारें पड़ने का योग है। इस पक्ष में हि.प्र., उत्तर-पूर्वी लंका एवम् चिरापूंजी में अच्छी वर्षा होगी।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२३ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ ५ २७ ५७	० ४ ४२ २१	७ २ १३ १०	६ ९ २७ ३२	११ ० ४० ४३	६ १५ १ ४४	५ १६ २४ ४१	८ ११ ५९ ४९	२ ११ ५९ ४९
५९ ४२	७४६ ०	४२ ४०	९७ ४२	५ ६	३२ ४६	७ ७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ४	अश्वि. २	विशा. ४	स्वा. १	पू.भा. ४	स्वा. ३	हस्त २	मूल ४	आर्द्रा २

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १६															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२४ अक्तूबर से ६ नवंबर तक, सन् २०१० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						बुध अस्त है। शु. ३ नवं. से पूर्व में दृश्य हो जाएगा। प्रातः श. पूर्वी क्षितिज में होगा। सायं गु. पूर्वकपाल में और मं. पश्चिमी क्षितिज के पास होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	अक्तू.	कार्तिक	जिल्काद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	३८	१	र.	४	१०	भर.	४२	४४	सि.	४०	२०	कौ.	४	१०	८	२४	२	१५	वृष	५८	३२	६	३५	१७	३८	६	६	२७	३९	सूर्य स्वा. में ९/४३, मंगल अनु. में ३१/१५,
२७	३४	२	चं.	६	४	कृत्ति	४५	३२	व्य.	३८	३८	ग.	६	४	९	२५	३	१६	वृष			६	३६	१७	३७	६	७	२७	२३	भ. ३६/३३ बाद, शनि हस्त ३ में ६/३४, वक्री यूरेनस (A)
२७	२९	३	मं.	७	३	रोहि.	४७	२६	व.	३६	१२	वि.	७	३	१०	२६	४	१७	वृष			६	३६	१७	३६	६	८	२७	१०	भ. ७/०३ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (B)
२७	२५	४	बु.	७	५	मृग.	४८	२२	प.	३३	१	बा.	७	५	११	२७	५	१८	मिथुन	१८	१	६	३७	१७	३५	६	९	२६	५९	
२७	२१	५	गु.	६	७	आर्द्रा	४८	१८	शि.	२९	२	तै.	६	७	१२	२८	६	१९	मिथुन			६	३८	१७	३४	६	१०	२६	५०	
२७	१७	६	शु.	४	६	पुन.	४७	९	सि.	२४	११	व.	४	६	१३	२९	७	२०	कर्क	३२	३२	६	३९	१७	३३	६	११	२६	४३	भ. ४/०६ से ३२/३३ तक, बुध विशा. में ३१/४९,
२७	१२	७	श.	१	०	पुष्य	४४	५३	सा.	१८	२७	ब.	१	०	१४	३०	८	२१	कर्क			६	३९	१७	३२	६	१२	२६	३९	अहोई अष्टमी (पं.),
अवम		८	श.	५६	४६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
२७	८	९	र.	५१	२७	आश्ले.	४१	३४	शु.	११	४९	तै.	२४	६	१५	३१	९	२२	सिंह	४१	३४	६	४०	१७	३१	६	१३	२६	३७	
२७	४	१०	चं.	४५	११	मघा	३७	१६	शु. ब्र.	४ ५६	२१ १०	व.	१८	१८	१६	न.१	१०	२३	सिंह			६	४१	१७	३१	६	१४	२६	३७	भ. १८/१८ से ४५/११ तक, वक्री गुरु पू.भा. ३ कुम्भ (C)
२७	०	११	मं.	३८	११	पू.फा.	३२	११	ऐं.	४७	२३	ब.	११	४१	१७	२	११	२४	कन्या	४५	४८	६	४२	१७	३०	६	१५	२६	३९	रमा एकादशी व्रत (स.), शुक्र उदित- ३ नवंबर
२६	५६	१२	बु.	३०	४२	उ.फा.	२६	३६	वै.	३८	१६	कौ.	४	२६	१८	३	१२	२५	कन्या			६	४३	१७	२९	६	१६	२६	४३	शुक्र पूर्व में उदित ४१/५२, गोवत्स द्वादशी, यमप्रीत्यर्थ (D)
२६	५२	१३	गु.	२३	६	हस्त	२०	५१	वि.	२९	४	व.	२३	६	१९	४	१३	२६	तुला	४८	२	६	४३	१७	२८	६	१७	२६	४९	भ. २३/०६ से ४९/२७ तक, बुध वृश्चिक में ५८/५२, (E)
२६	४८	१४	शु.	१५	४४	चित्रा	१५	२०	प्री.	२०	७	श.	१५	४४	२०	५	१४	२७	तुला			६	४४	१७	२७	६	१८	२६	५७	नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), दीपावली, (F)
२६	४४	३०	श.	९	१	स्वा.	१०	२७	आ.	११	४३	ना.	९	१	२१	६	१५	२८	वृश्चि.	५२	२९	६	४५	१७	२७	६	१९	२७	७	सूर्य विशाखा में २९/३७, वक्री शुक्र चित्रा में ३३/२२, (G)

(A) पू.भा. ४ में ५१/२५, (B) (करवा चौथ)(चन्द्रोदय १९घं. ५३ मि.), (C) में १५/३०, नवंबर प्रारम्भ, (D) दीपदान, प्रदोष व्रत, (E) धनत्रयोदशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.) (देखें पृ. ९८), (F)श्रीमहालक्ष्मी-पूजा, (G) शुक्र-बाल्य समाप्त ४१/४८, शनैश्चरी अमा, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा, अन्नकूट, गोक्रीड़ा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३० अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १२ २६ ४०	३ ५ ३७ १६	७ ७ १३ ९	६ २० ३९ ४८	११ ० ८ ३९	६ १० ५४ ४०	५ १७ १३ ५८	८ ११ ३७ ३४	२ ११ ३७ ३४
५९ ५७	८२३ ५०	४३ ७	९४ ०	३ ५२	३६ २४	६ ५५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२ स्वा.	१ पुष्य	२ अनु.	१ विशा.	४ पू.भा.	२ स्वा.	३ हस्त	४ मूल	२ आर्द्रा

कुण्डली सूर्योदय (३० अक्तू.)

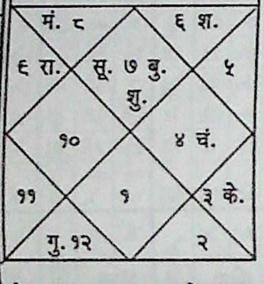

लोकभविष्यः- इस पक्ष में वक्री (मीनराशिस्थ) गुरु कुम्भ राशि में पदार्पण करेगा। खाद्य पदार्थ तेज होंगे; महंगाई बढ़ेगी; शासन पर से जनता का विश्वास उठेगा। पक्षान्त में शुक्रोदय एवं मं. बु. पर शनि की दृष्टि भी राजनैतिक संकट पैदा करेगी। शनिवारी अमावस कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाएगी, राजनीतिज्ञों के लिए कठिन परिस्थितियां बनें;- “कार्तिकस्य त्वमावस्या शनिवारेण संयुता। दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च सर्वलोक भयावहा।।” कहीं मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन हों।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, रुई, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी में तेजी बने। २९ अक्तू. के लगभग रुई में जोरदार मन्दा आ सकता है। २ से ५ नवं. तक अनाज, सोना, सूत, तेल, तिलहन, चान्दी में तेजी का रुख रहे। पक्षान्त में तेल, तिलहन, चावल, गेहूं, अरहर, गुड़, खाण्ड और अफीम में तेजी रहे। **आकाश लक्षणः-** अक्तु. २४, २५, २९; नवं. २, ३, ४ और ६ को जम्मू-काश्मीर, हि.प्र., उ.भारत में कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि होगी। हि.प्र. एवम् काश्मीर के उन्नत शिखरों पर कहीं हिमपात हो। उ.भा. में शीत का प्रभाव बढ़ने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (६ नवं.)

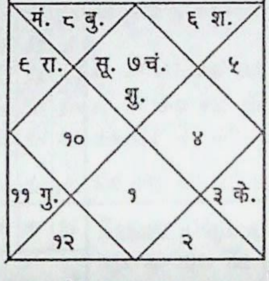

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
६ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ १९ २७ ८	६ १६ ४४ ७	७ १२ १६ २०	७ १ २८ २८	१० २९ ४५ ३४	६ ६ ५७ ३४	५ १८ १ ४१	८ ११ १५ १९	२ ११ १५ १९
६० १२	८५७ ४९	४३ ३५	९० ५९	२ ३०	२८ ३२	६ ४०	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ स्वा.	४ स्वा.	३ अनु.	४ विशा.	३ पू.भा.	१ स्वा.	३ हस्त	४ मूल	२ आर्द्रा

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, कार्त्तिक शुक्ल पक्ष १७

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(७ से २१ नवम्बर तक, सन् २०१० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु। ८ नवं. से बु. सायं पश्चिम में दृश्य होगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिजासन्न और श. पूर्वी क्षितिज के पास दिखाई देगा। सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और मं. पश्चिम क्षितिजासन्न होगा।
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्त्तिक	नवंबर	कार्त्तिक	ज़िलकाद		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४०	१	र.	३	२१	विशा.	६	३८	सौ. शो.	४ ५७	१० ४८	ब.	३	२१	२२	७	१६	२९	वृश्चि.			६	४६	१७	२६	६	२०	२७	१९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध अनु. में १०/२७, नेप्च्यून मार्गी (A)
अवम		२	र.	५९	८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२६	३७	३	चं.	५६	३७	अनु.	४	१३	अ.	५२	४५	तै.	२७	५२	२३	८	१७	जि. १	वृश्चि.			६	४७	१७	२५	६	२१	२७	३२	बुध पश्चिम में उदित ४७/३७, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (B)
२६	३३	४	मं.	५६	१	ज्ये.	३	३१	सु.	४९	१३	व.	२६	१८	२४	९	१८	२	धनु	३	३१	६	४७	१७	२५	६	२२	२७	४८	भ. २६/१८ से ५६/०१ तक,
२६	२९	५	बु.	५७	२४	मूल	४	४३	धृ.	४७	१४	ब.	२६	४३	२५	१०	१९	३	धनु			६	४८	१७	२४	६	२३	२८	५	ज्ञानपंचमी (जैन),
२६	२५	६	गु.	६०	०	पू.षा.	७	५०	शू.	४६	४०	कौ.	२९	१	२६	११	२०	४	मकर	२३	५५	६	४९	१७	२३	६	२४	२८	२३	मंगल ज्ये. में ५९/३०, सूर्यषष्ठी (बिहार),
२६	२२	६	शु.	०	३९	उ.षा.	१२	४०	गं.	४७	२०	तै.	०	३९	२७	१२	२१	५	मकर			६	५०	१७	२३	६	२५	२८	४३	
२६	१८	७	श.	५	२३	श्रव.	१८	५४	वृ.	४८	५४	व.	५	२३	२८	१३	२२	६	कुम्भ	५२	२५	६	५१	१७	२२	६	२६	२९	५	भ. ५/२३ से ३८/२२ तक, पंचक प्रारम्भ ५२/२५,
२६	१५	८	र.	११	१३	धनि.	२६	१	ध्रु.	५०	५८	ब.	११	१३	२९	१४	२३	७	कुम्भ			६	५२	१७	२२	६	२७	२९	२८	गोपाष्टमी, बालदिवस,
२६	११	९	चं.	१७	३१	शत.	३३	२७	व्या.	५३	६	कौ.	१७	३१	३०	१५	२४	८	कुम्भ			६	५३	१७	२१	६	२८	२९	५२	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२६	८	१०	मं.	२३	४२	पू.भा.	४०	३९	ह.	५४	५६	ग.	२३	४२	मा. १	१६	२५	९	मीन	२३	५४	६	५३	१७	२१	६	२९	३०	१७	भ. ५६/३० बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में २६/००, मु. ३०,(C)
२६	४	११	बु.	२९	१४	उ.भा.	४७	८	व.	५६	८	वि.	२९	१४	२	१७	२६	१०	मीन			६	५४	१७	२०	७	०	३०	४४	भ. २९/१४ तक,देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), (D)
२६	१	१२	गु.	३३	४७	रेव.	५२	३६	सि.	५६	३०	ब.	१	३०	३	१८	२७	११	मेष	५२	३६	६	५५	१७	२०	७	१	३१	१२	पंचक समाप्त ५२/३६, गुरु मार्गी ३८/४२, शुक्र मार्गी (E)
२५	५८	१३	शु.	३७	७	अश्वि.	५६	५२	व्य.	५५	५६	कौ.	५	२७	४	१९	२८	१२	मेष			६	५६	१७	१९	७	२	३१	४२	सूर्य अनु. में ४४/१८, वैकुण्ठ चतुर्दशी (देखें पृ. 98),(F)
२५	५५	१४	श.	३९	१०	भर.	५९	५४	व.	५४	२२	ग.	८	९	५	२०	२९	१३	मेष			६	५७	१७	१९	७	३	३२	१३	भ. ३९/१० बाद,
२५	५२	१५	र.	३९	५८	कृत्ति.	६०	०	प.	५१	५२	वि.	९	३१	६	२१	३०	१४	वृष	१५	२६	६	५८	१७	१८	७	४	३२	४५	भ. ९/३१ तक, श्रीगुरुनानक जयन्ती, कार्त्तिक पूर्णिमा, (G)

(A) ११/५७, यम द्वितीया, भाई दूज, (B) ज़िल्हिज्ज मु. प्रारम्भ, (C) पुण्यकाल १०/०० बाद, बुध ज्येष्ठा में १०/५८, (D) भीष्मपंचक प्रारम्भ, (E) ४९/४२, तुलसी- विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, (F) प्रदोष व्रत, (G) कार्त्तिकस्नान समाप्त, त्रिपुरोत्सव, भीष्मपंचक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला पुष्करराज (राज.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १४ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २७ २९ २९	१० ० ५० १५	७ १८ ६ ३७	७ १३ २४ ४६	१० २९ ३१ १०	६ ४ ७ ५६	५ १८ ५३ ४५	८ १० ४९ ५२	२ १० ४९ ५२
६० २४	७१२ १५	४४ ३	८७ ३१	० ५२	१० ४८	६ १७	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ विशा.	३ धनि.	१ ज्येष्ठा	४ अनु.	३ पू.भा.	४ चित्रा	३ हस्त	४ मूल	२ आर्द्रा

कुण्डली सूर्योदय (१४ नवं.)

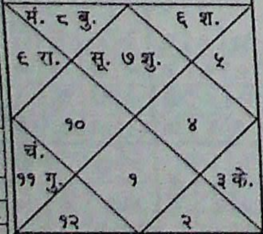

लोकभविष्यः- बुध का उदय एवम् गुरु-शुक्र का एक ही दिन में मार्गी होना तथा बुध, सूर्य, मंगल पर शनि की दृष्टि राजनीतिज्ञों के लिए विशेष उलझनपूर्ण है। प्रजा में असन्तोष, महंगाई एवं उग्रवादजन्य जनधनहानि से विश्व में भारी अशान्ति बनेगी। इस चान्द्रमास में पांच रविवार होने से कहीं शासनतन्त्र में परिवर्तन एवं राजनैतिक हत्याकाण्डों से शासक एवं शासित सभी परेशान रहें;-"यत्र मासे रवेर्वाराः जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च तदा ज्ञेयं च महद्भयम्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ७ से ११ नवं. तक सूत, सण, सोना, चान्दी और सभी प्रकार के अनाजों में मन्दी; रुई में घटाबढ़ी चले। १८ नवं. को चावल, अलसी, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी बनेगी। रुई में पहले तेजी बाद में मन्दी बनेगी। १९ नवं. को जौ, चना आदि अनाजों और सोना, चान्दी, तांबा में तेजी हो। अलसी, मिर्च में तेजी होकर मन्दी बने। **आकाश लक्षणः**- नवं. ७, ८, ११, १८, १९ एवम् २१ को जम्मू-काश्मीर एवम् हि. प्र. में जोरदार हिमपात के समाचार मिलेंगे। उत्तरी भारत में भी कहीं बादलचाल एवम् बून्दाबांदी हो।

कुण्डली सूर्योदय (२१ नवं.)

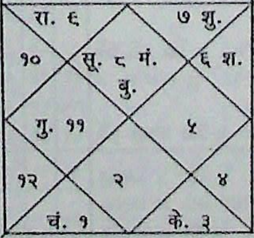

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २१ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ ४ ३२ ४६	० २५ ५४ ५८	७ २३ १६ ११	७ २३ २४ २१	१० २९ २९ २५	६ ३ ४३ ५८	५ १९ ३६ ४०	८ १० २७ ३७	२ १० २७ ३७
६० ३४	७७४ ३४	४४ २७	८२ ३२	० ३५	६ १५	५ ५५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ अनु.	४ भर.	२ ज्येष्ठा	३ ज्येष्ठा	३ पू.भा.	४ चित्रा	३ हस्त	४ मूल	२ आर्द्रा

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२२ नवम्बर से ५ दिसंबर तक, सन् २०१० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवम्बर	श. मार्गशीर्ष	मु. जिलहिज्ज				सूर्योदय		सूर्यास्त						२७ नवं. को मं. पश्चिम में अदृश्य होगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज के पास और इससे ऊपर श. होगा। सायं बु. पश्चिम क्षितिज में और गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४९	१	चं.	३९	३७	कृत्ति.	१	४३	शि.	४८	२९	बा.	९	४८	७	२२	१	१५	वृष			६	५९	१७	१८	७	५	३३	१९	सूर्य सायन धनु में २१/५५, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,
२५	४६	२	मं.	३८	१५	रोहि.	२	३०	सि.	४४	१९	तै.	८	५६	८	२३	२	१६	मिथुन	३२	३२	६	५९	१७	१८	७	६	३३	५४	
२५	४३	३	बु.	३६	०	मृग.	२	२०	सा.	३९	२८	व.	७	७	९	२४	३	१७	मिथुन			७	०	१७	१७	७	७	३४	३१	भ. ७/०७ से ३६/०० तक, शनि हस्त ४ में ५६/४५,(A)
२५	४०	४	गु.	३२	५८	आर्द्रा पुन.	१ ५९	२२ ४२	शु.	३४	१	ब.	४	२९	१०	२५	४	१८	कर्क	४५	११	७	१	१७	१७	७	८	३५	९	बुध मूल धनु में ५२/३०, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२५	३८	५	शु.	२९	१६	पुष्य	५७	२३	शु.	२८	१	कौ.	१	७	११	२६	५	१९	कर्क			७	२	१७	१७	७	९	३५	४९	
२५	३५	६	श.	२४	५८	आश्ले.	५४	३१	ब्र.	२१	३३	व.	२४	५८	१२	२७	६	२०	सिंह	५४	३१	७	३	१७	१७	७	१०	३६	३१	भ. २४/५८ से ५२/३४ तक, मंगल अस्त ८/२५,
२५	३२	७	र.	२०	१०	मघा	५१	११	ऐ.	१४	३९	ब.	२०	१०	१३	२८	७	२१	सिंह			७	४	१७	१७	७	११	३७	१४	श्रीभैरवाष्टमी (श्रीकालाष्टमी),
२५	३०	८	चं.	१४	५५	पू.फा.	४७	२८	वै. वि.	७ ५९	२४ ५५	कौ.	१४	५५	१४	२९	८	२२	सिंह			७	४	१७	१६	७	१२	३७	५९	मंगल मूल धनु में ५८/२२, राहु मूल ३, केतु आर्द्रा १ (B)
२५	२८	९	मं.	९	२१	उ.फा.	४३	३१	प्री.	५२	१३	ग.	९	२१	१५	३०	९	२३	कन्या	१	२८	७	५	१७	१६	७	१३	३८	४५	भ. ३६/३० बाद,
२५	२५	१०	बु.	३	३६	हस्त	३९	३०	आ.	४४	३०	वि.	३	३६	१६	दि.१	१०	२४	कन्या			७	६	१७	१६	७	१४	३९	३३	भ. ३/३६ तक, शुक्र स्वाती में ३३/२२, दिसंबर प्रारम्भ,(C)
अवम		११	बु.	५७	५४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५	२३	१२	गु.	५२	२३	चित्रा	३५	३८	सौ.	३६	५५	कौ.	२५	९	१७	२	११	२५	तुला	७	३१	७	७	१७	१६	७	१५	४०	२२	सूर्य ज्ये. में ५४/४५, उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.),
२५	२१	१३	शु.	४७	२१	स्वा.	३२	१०	शो.	२९	३९	ग.	१९	५२	१८	३	१२	२६	तुला			७	८	१७	१६	७	१६	४१	१३	भ. ४७/२१ बाद, प्रदोष व्रत,
२५	१९	१४	श.	४३	४	विशा.	२९	२१	अ.	२२	५५	वि.	१५	१०	१९	४	१३	२७	वृश्चि.	१४	५७	७	९	१७	१६	७	१७	४२	५	भ. १५/१० तक,
२५	१७	३०	र.	३९	५०	अनु.	२७	३०	सु.	१६	५५	च.	११	२७	२०	५	१४	२८	वृश्चि.			७	९	१७	१६	७	१८	४२	५८	

(A) प्लूटो मूल ४ में १७/५२, (B) में ३७/०४, (C) उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १२ ३८ ०	४ १४ २६ ४०	७ २६ १३ २३	८ ३ ४४ ५६	१० २६ ३६ ४६	६ ५ ३५ ३०	५ २० २२ १४	८ १० २ १०	२ १० २ १०
६० ४७	८५२ ४३	४४ ५४	६८ २७	२ १३	२३ ७	५ २५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	पू.फा. १	ज्येष्ठा ४	मूल २	पू.षा. ३	चित्रा ४	हस्त ४	मूल ४	आर्द्रा २

कुण्डली सूर्योदय (२६ नवं.)

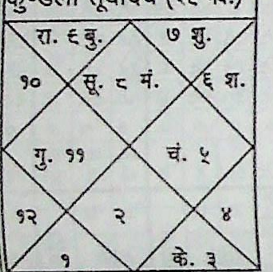

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच चन्द्रवार एवं पांच मंगलवार हैं। अतः भारतीय उद्योगजगत् में तरक्की हो किंवा आर्थिक प्रगति रहे। जनता में प्रगति के नए साधन जुटाए जाएंगे। लेकिन अमेरिका, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि मे भयंकर जनधनहानि के योग बनते हैं। कहीं प्राकृतिक आपदा एवं किसी प्रतिष्ठित-व्यक्ति की हत्या से वातावरण क्षुब्ध रहे- **"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"** मंगल, राहु का सम्बन्ध भी राजनीतिज्ञों के लिए अघटित घटनाओं वाला रहेगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २४ नवं. के लगभग जीरा के व्यापारी आगे तेजी का विचार करें तो अच्छा लाभ मिल सकेगा। सोना, चान्दी में मन्दा सम्भव है। २७ नवं. के लगभग अलसी में खास तेजी आएगी। जौ, चना, गुड़, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी बने। यह तेजी नवं. के आखिर तक चल सकती है। १ दिसं. से सोना, चान्दी, चावल आदि अनाज, तिलहन, गुड़, खाण्ड में तेजी का विचार है।

आकाश लक्षण:- नवं. २४, २५, २७, २६ एवम् दिसं. १, २ को उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में आ जाएगा। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि व धुन्ध का वातावरण बने।

कुण्डली सूर्योदय (५ दिसं.)

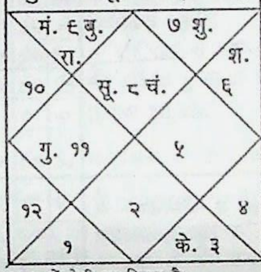

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
५ दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ १८ ४३ ०	७ ६ २६ ४४	८ ३ ४३ ३६	८ ६ ३६ ३६	१० २६ ५६ ३	६ ८ २० १८	५ २० ५३ ३८	८ ६ ४३ ६	२ ६ ४३ ६
६० ५४	८१७ २६	४५ १५	४२ ०	३ २५	३३ ६	४ ५६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्येष्ठा १	अनु. २	मूल २	मूल ३	पू.भा. ३	स्वा. १	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९

(६ से २१ दिसम्बर तक, सन् २०१० ई.)
दक्षिण—उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त—शिशिर ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. ज़िल्हिज्ज	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	मं. अस्त है। बु. भी १४ दिसं. को पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व में, श. पूर्वकपाल में; सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर दिखाई देगा।
२५	१६	१	चं.	३७	५३	ज्ये.	२६	५१	धृ.	११	५२	किं.	८	५१	२१	६	१५	२९	धनु	२६	५१	७	१०	१७	१६	७	१९	४३	५२	गुरु पू.भा. ४ मीन में ४/५४, यूरेनस मार्गी ०/३०,
२५	१४	२	मं.	३७	२७	मूल	२७	३८	शू.	७	५६	बा.	७	४०	२२	७	१६	३०	धनु			७	११	१७	१६	७	२०	४४	४८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२५	१२	३	बु.	३८	३८	पू.षा.	२९	५९	गं.	५	१३	तै.	८	३	२३	८	१७	मु.१	मकर	४५	५०	७	१२	१७	१७	७	२१	४५	४४	मुहर्रम(हिजरी सन् १४३२) मु. प्रारम्भ,
२५	११	४	गु.	४१	२७	उ.षा.	३३	५४	वृ.	३	४५	व.	१०	३	२४	९	१८	२	मकर			७	१२	१७	१७	७	२२	४६	४२	भ. १०/०३ से ४१/२७ तक,
२५	१०	५	शु.	४५	४५	श्रव.	३९	१६	ध्रु.	३	३०	ब.	१३	३६	२५	१०	१९	३	मकर			७	१३	१७	१७	७	२३	४७	४०	बुध वक्री २५/५२,
२५	८	६	श.	५१	१४	धनि.	४५	४६	व्या.	४	१७	कौ.	१८	२९	२६	११	२०	४	कुम्भ	१२	२४	७	१४	१७	१७	७	२४	४८	३९	पंचक प्रारम्भ १२/२४, स्कन्द(गुह)षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
२५	७	७	र.	५७	२४	शत.	५२	५९	ह.	५	५२	ग.	२४	१९	२७	१२	२१	५	कुम्भ			७	१४	१७	१७	७	२५	४९	३८	भ. ५७/२४ बाद,मित्र सप्तमी,
२५	६	८	चं.	६०	०	पू.भा.	६०	०	व.	७	५१	वि.	३०	३३	२८	१३	२२	६	मीन	४३	३१	७	१५	१७	१८	७	२६	५०	३८	भ. ३०/३३ तक,
२५	५	८	मं.	३	४०	पू.भा.	०	२०	सि.	९	५३	ब.	३	४०	२९	१४	२३	७	मीन			७	१६	१७	१८	७	२७	५१	३९	बुध पश्चिम में अस्त ३१/०९,
२५	४	९	बु.	९	३०	उ.भा.	७	१६	व्य.	११	३१	कौ.	९	३०	३०	१५	२४	८	मीन			७	१६	१७	१८	७	२८	५२	४०	
२५	४	१०	गु.	१४	२१	रेव.	१३	१९	व.	१२	२५	ग.	१४	२१	पौ.१	१६	२५	९	मेष	१३	१९	७	१७	१७	१९	७	२९	५३	४१	भ. ४६/०७ बाद, पंचक समाप्त १३/१९, सं. सूर्य मूल (A)
२५	३	११	शु.	१७	५१	अश्वि.	१८	३	प.	१२	१८	वि.	१७	५१	२	१७	२६	१०	मेष			७	१८	१७	१९	८	०	५४	४३	भ. १७/५१ तक, मंगल पू.षा. में ३५/०७, श्रीगीता (B)
२५	३	१२	श.	१९	४५	भर.	२१	१६	शि.	१०	५९	बा.	१९	४५	३	१८	२७	११	वृष	३६	५०	७	१८	१७	१९	८	१	५५	४५	शनिप्रदोष व्रत,
२५	२	१३	र.	२०	०	कृत्ति.	२२	५५	सि.	८	२४	तै.	२०	०	४	१९	२८	१२	वृष			७	१९	१७	२०	८	२	५६	४८	
२५	२	१४	चं.	१८	४१	रोहि.	२३	२	सा. शु.	४ ५९	३६ ४१	व.	१८	४१	५	२०	२९	१३	मिथुन	५२	३५	७	१९	१७	२०	८	३	५७	५१	भ. १८/४१ से ४७/२२ तक, श्रीदत्त जयन्ती, (C)
२५	२	१५	मं.	१५	५८	मृग.	२१	४८	शु.	५३	४६	ब.	१५	५८	६	२१	३०	१४	मिथुन			७	२०	१७	२१	८	४	५८	५५	शुक्र विशाखा में २३/२८, सूर्य सायन मकर में ५४/३३, (D)

(A) धनु में १/४३, मु. ३०, पुण्यकाल १७/४० तक, (B) जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) उत्तर अयन एवम् शिशिर ऋतु प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१४ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	८	८	११	६	५	८	२
२७	२	१०	१०	०	१४	२१	६	६
५१	२३	३२	४७	३३	६	३५	१४	१४
४०	५०	३५	२७	४२	१	३८	२८	२८
६१	७१५	४५	४५	५	४४	४	३	३
१	४४	४१	३	७	१६	१६	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ ज्येष्ठा	४ पू.भा.	४ मूल	४ मूल	४ पू.भा.	३ स्वा.	४ हस्त	३ मूल	१ आर्द्रा

कुण्डली सूर्योदय (१४ दिसं.)

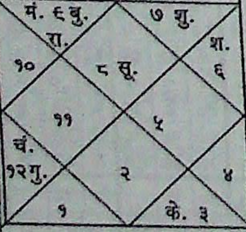

लोकभविष्यः- पक्षारम्भ में मीन का गुरु वर्षा की कमी से अनाजों एवम् जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी महंगाई करे। जनता में शासन के विरुद्ध रोष बढ़े;- "यदा सुरगुरुर्मीने दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। सागराः सर्वनद्योऽपि विनश्यन्ति चतुष्पदाः।।" मार्गशीर्ष धनुसंक्रान्ति भी अनेकत्र दुर्भिक्ष का संकेत देती है- "मार्गशीर्षे धनुषि हि यदा याति दिवाकरः। तदा दुर्भिक्षकं ज्ञेयम्।।" सूर्य, राहु, मंगल एकराशिस्थ हैं, अतः कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी हो।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः-६ दिसं. के लगभग रुई, घी, तिल, तेल, सरसों में लम्बी तेजी की लाईन बन सकती है। अनाज, दालदाना में भी तेजी रहे। १० दिसं. के करीब घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी; गेहूं, जौ, चना में कुछ मन्दे का रुख बने। १४ से १६ दिसं. तक रुई में अगर जोरदार मन्दा बने तो स्टॉक करें, आगे लाभ मिलेगा। चान्दी तेज रहेगी। १७ दिसं. से सोना, चान्दी, चावल, तेल, तिलहन में तेजी का रुख बने।

आकाश लक्षणः- दिसं. ६, ७, १०, १४, १७ और २१ को उत्तरी भारत में भयंकर शीतलहर चलेगी। कहीं शीतलहर से जनहानि के समाचार भी मिलेंगे। कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि और धुन्ध के वातावरण से यातायात अवरुद्ध हो।

कुण्डली सूर्योदय (२१ दिसं.)

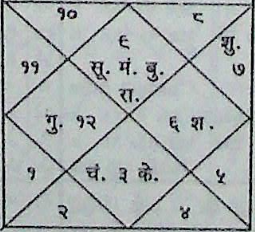

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२१ दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	८	११	६	५	८	२
४	०	१५	२	१	१६	२२	८	८
५८	३८	५३	४३	१३	३६	३	५२	५२
५७	५२	१५	२१	१८	२३	४०	१३	१३
६१	८२५	४५	८०	६	५०	३	३	३
४	४४	५९	२०	२१	४३	३९	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ मूल	३ मृग.	१ पू.षा.	१ मूल	४ पू.भा.	४ स्वा.	४ हस्त	३ मूल	१ आर्द्रा

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, पौष कृष्ण पक्ष २०

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	तारीखें अं. दिसम्बर	तारीखें श. पौष	तारीखें मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	(२२ दिसम्बर २०१० से ४ जनवरी सन् २०११ ई. तक) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु। मं. अस्त है। बु. २६ दिसं. से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्वकपाल में, श. पूर्वकपाल में याम्योत्तरवृत्त के पास दीखेगा। सायं गु. को पश्चिमकपाल में देख सकते हैं।
२५	२	१	बु.	१२	५	आर्द्रा	१९	२७	ब्र.	४७	४	कौ.	१२	५	७	२२	१	१५	मिथुन			७	२०	१७	२१	८	५	५९	५९	शक पौष प्रारम्भ,
२५	२	२	गु.	७	१७	पुन.	१६	१५	ऐं.	३९	४६	ग.	७	१७	८	२३	२	१६	कर्क	२	६	७	२१	१७	२२	८	७	१	४	भ. ३४/३४ बाद, वक्री बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में २/०४,
२५	२	३	शु.	१	५२	पुष्य	१२	२८	वै.	३२	५	वि.	१	५२	९	२४	३	१७	कर्क			७	२१	१७	२२	८	८	२	१०	भ. १/५२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
अवम		४	शु.	५६	५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२५	२.	५	श	५०	९	आश्ले.	८	२१	वि.	२४	१३	कौ.	२३	७	१०	२५	४	१८	सिंह	८	२१	७	२२	१७	२३	८	९	३	१६	
२५	३	६	र.	४४	१८	मघा	४	१०	प्री.	१६	२०	ग.	१७	१३	११	२६	५	१९	सिंह			७	२२	१७	२३	८	१०	४	२२	भ. ४४/१८ बाद, बुध पूर्व में उदित ५०/४२, (A)
२५	३	७	चं.	३८	४३	पू.फा. उ.फा.	० ५६	७ २१	आ.	८	३५	वि.	११	३०	१२	२७	६	२०	कन्या	१४	७	७	२३	१७	२४	८	११	५	३०	भ. ११/३० तक,
२५	४	८	मं.	३३	३१	हस्त	५३	२	सौ. शो.	१ ५४	६ ०	बा.	६	७	१३	२८	७	२१	कन्या			७	२३	१७	२५	८	१२	६	३८	
२५	५	९	बु.	२८	५२	चित्रा	५०	१६	अ.	४७	२०	तै.	१	१२	१४	२९	८	२२	तुला	२१	३४	७	२३	१७	२५	८	१३	७	४६	भ. ५६/५२ बाद, सूर्य पू.षा. में ७/१५,
२५	६	१०	गु.	२४	५१	स्वाती	४८	११	सु.	४१	१२	वि.	२४	५१	१५	३०	९	२३	तुला			७	२४	१७	२६	८	१४	८	५५	भ. २४/५१ तक, बुध मार्गी १३/३७ ,
२५	७	११	शु.	२१	३५	विशा.	४६	५१	धृ.	३५	४१	बा.	२१	३५	१६	३१	१०	२४	वृश्चि.	३२	६	७	२४	१७	२७	८	१५	१०	४	सफला एकादशी व्रत (स.),
२५	८	१२	श.	१९	८	अनु.	४६	२२	शू.	३०	५०	तै.	१९	८	१७	ज.१	११	२५	वृश्चि.			७	२४	१७	२७	८	१६	११	१४	शुक्र वृश्चिक में २३/१६, शनिप्रदोष व्रत, जनवरी (B)
२५	९	१३	र.	१७	३८	ज्ये.	४६	५१	गं.	२६	४४	व.	१७	३८	१८	२	१२	२६	धनु	४६	५१	७	२४	१७	२८	८	१७	१२	२४	भ. १७/३८ से ४७/२५ तक,
२५	१०	१४	चं.	१७	९	मूल	४८	२२	वृ.	२३	२७	श.	१७	९	१९	३	१३	२७	धनु			७	२५	१७	२९	८	१८	१३	३४	मंगल उ.षा. में ५४/०४, ग्रहणवेध,
२५	१२	३०	मं.	१७	४९	पू.षा.	५१	२	ध्रु.	२१	२	ना.	१७	४९	२०	४	१४	२८	धनु			७	२५	१७	३०	८	१९	१४	४५	शुक्र अनु. में ४७/३६, भौमवती अमा, खण्डग्रास सूर्य (C)

सूर्य ग्रहण-४ जनवरी

(A) जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब (पं.) प्रारम्भ, (B) (सन् २०११ ई.) प्रारम्भ, (C) ग्रहण (भारत में दृश्य,) (देखें पृ. 17),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२८ दिसंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	८	७	११	६	५	८	२
१२	९	२१	२६	२	२५	२२	८	८
६	४५	१६	२	१	४६	२७	२९	२९
३९	१०	३	४२	१५	५६	१७	५७	५७
६१	८४६	४६	१७	७	५५	३	३	३
९	३३	१७	५१	२९	३९	०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल ४	उ.फा. ४	पू.षा. ३	ज्येष्ठा ३	पू.भा. ४	विशा. २	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १

कुण्डली सूर्योदय (२८ दिसं.)

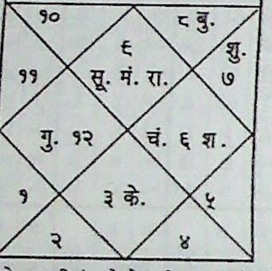

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं। बुध वक्री होकर वृश्चिक राशि में आकर २६ दिसं. को उदित हो रहा है। अतः कहीं वायुवेग एवम् वृष्टि से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। मंगल-राहु एकत्र हैं एवं अमावस मंगलवारी है, अतः कहीं यानदुर्घटना किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। कहीं देश-विशेष में उग्रवाद से हानि के समाचार मिलें। कहीं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन व हत्या से शोक व्याप्त हो- "अमावास्या सहस्यस्य शनि-सूर्यार-वासरे। यदि स्याद् भयमादेश्यं तदा सस्य-महर्घता।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २३ दिसं. के करीब घी, गुड़, खाण्ड, सरसों, चान्दी, सोना में कुछ तेजी रहे। २६ दिसं. के करीब रुई में मन्दी; गेहूं, तेल, तिलहन व लालमिर्च में तेजी बने। ३१ दिसं. को तेल, तिलहन, रुई, सोना, चान्दी के व्यापारी समझ से काम करें, जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। १ जन. से पक्षान्त तक रुई, शेयर, चान्दी व अफीम में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। अनाज, तेल, तिलहन तेज रहेंगे।

आकाश-लक्षणः- दिसं. २३, २५, ३०, ३१ एवम् जन. १, ३ और ४ के लगभग कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो। उत्तरी भारत में शीतलहर बनी रहेगी। कुछ भागों में धुन्ध से दुर्घटना सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (४ जन.)

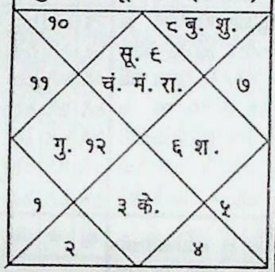

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
४ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	७	११	७	५	८	२
१९	१४	२६	२७	२	२	२२	८	८
१४	४८	४०	६	५६	२८	४६	७	७
४७	९	५२	५६	५७	८	१३	४१	४१
६१	७६४	४६	३८	८	५९	२	३	३
१०	४३	३४	३९	३४	२१	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. २	पू.षा. १	उ.षा. १	ज्येष्ठा ४	पू.भा. ४	विशा. ४	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, पौष शुक्ल पक्ष २१

(५ से १९ जनवरी तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				मं. अस्त है। प्रातः बु. पूर्वक्षितिजासन्न और शु. पूर्वकपाल में होगा। इस समय श. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। सायं गु. पश्चिमकपाल में दीखेगा। १० जन. को चं. गु. से ऊपर उठा दिखाई देगा।
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	पौष	जनवरी	पौष	मुहर्रम		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१३	१	बु.	१९	४१	उ.षा.	५४	५२	व्या.	१९	३३	ब.	१९	४१	२१	५	१५	२९	मकर	६	५२	७	२५	१७	३०	८	२०	१५	५५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, ग्रहणवेध,
२५	१५	२	गु.	२२	४७	श्रव.	५९	५३	ह.	१९	०	कौ.	२२	४७	२२	६	१६	स.१	मकर			७	२५	१७	३१	८	२१	१७	६	गुरु उ.भा. १ में ३४/३७, सफर मु. प्रारम्भ, ग्रहणवेध,
२५	१७	३	शु.	२७	५	धनि.	६०	०	व.	१९	२२	ग.	२७	५	२३	७	१७	२	कुम्भ	३२	४९	७	२५	१७	३२	८	२२	१८	१६	भ. ५९/४५ बाद, पंचक प्रारम्भ ३२/४९, बुध मूल धनु (A)
२५	१९	४	श.	३२	२५	धनि.	५	५७	सि.	२०	३१	वि.	३२	२५	२४	८	१८	३	कुम्भ			७	२५	१७	३३	८	२३	१९	२६	भ. ३२/२५ तक, मंगल मकर में ११/३१,
२५	२०	५	र.	३८	३०	शत.	१२	५२	व्य.	२२	१६	ब.	५	२८	२५	९	१९	४	कुम्भ			७	२५	१७	३३	८	२४	२०	३६	
२५	२३	६	चं.	४४	५५	पू.भा.	२०	१५	व.	२४	२१	कौ.	११	४२	२६	१०	२०	५	मीन	३	२३	७	२५	१७	३४	८	२५	२१	४६	
२५	२५	७	मं.	५१	८	उ.भा.	२७	३९	प.	२६	२४	ग.	१८	१	२७	११	२१	६	मीन			७	२५	१७	३५	८	२६	२२	५५	भ. ५१/०८ बाद, सूर्य उ.षा. में ११/५७ ,
२५	२७	८	बु.	५६	३६	रेव.	३४	३२	शि.	२८	४	वि.	२३	५२	२८	१२	२२	७	मेष	३४	३२	७	२५	१७	३६	८	२७	२४	३	भ. २३/५२ तक, पंचक समाप्त ३४/३२ ,
२५	२९	९	गु.	६०	०	अश्वि.	४०	२१	सि.	२८	५८	बा.	२८	४२	२९	१३	२३	८	मेष			७	२५	१७	३७	८	२८	२५	१०	लोहड़ी (पं.),
२५	३२	९	शु.	०	४८	भर.	४४	४३	सा.	२८	४४	कौ.	०	४८	मा.१	१४	२४	९	मेष			७	२५	१७	३८	८	२९	२६	१७	सं. सूर्य मकर में २८/१६, मु. १५, पुण्यकाल अगले (B)
२५	३४	१०	श.	३	२१	कृत्ति.	४७	१८	शु.	२७	१०	ग.	३	२१	२	१५	२५	१०	वृष	०	३२	७	२५	१७	३९	९	०	२७	२४	भ. ३३/३९ बाद, यूरेनस उ.भा. १ में ९/४६, पोंगल (C)
२५	३७	११	र.	४	०	रोहि.	४८	१	शु.	२४	७	वि.	४	०	३	१६	२६	११	वृष			७	२५	१७	३९	९	१	२८	२९	भ. ४/०० तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२५	३९	१२	चं.	२	४२	मृग.	४६	५३	ब्र.	१९	३४	बा.	२	४२	४	१७	२७	१२	मिथुन	१७	४०	७	२५	१७	४०	९	२	२९	३४	शुक्र ज्ये. में ४१/३०, सोमप्रदोष व्रत,
अवम		१३	चं.	५९	३२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
२५	४२	१४	मं.	५४	४५	आर्द्रा	४४	६	ऐं.	१३	३५	ग.	२७	९	५	१८	२८	१३	मिथुन			७	२४	१७	४१	९	३	३०	३९	भ. ५४/४५ बाद,
२५	४५	१५	बु.	४८	३८	पुन.	३९	५६	वै. वि.	६ ५८	२२ ८	वि.	२१	४०	६	१९	२९	१४	कर्क	२६	३	७	२४	१७	४२	९	४	३१	४३	भ. २१/४० तक, बुध पू.षा. में १४/०४, पौषी पूर्णिमा, (D)

(A) में ४२/२२, ग्रहणवेध, (B) दिन ८/१२ तक, मकर संक्रान्ति, (C) (द.भा.), (D) माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१२ जनवरी,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८ २७ २४ ४	११ २२ ८ २५	९ २ ५४ १५	८ ४ १७ २५	११ ४ ९ १९	७ १० ३४ ३९	५ २३ १ ४३	८ ७ ४२ १५	२ ७ ४२ १५
६१ ८	७२१ १२	४६ ४८	६८ २०	९ ३९	६२ ३२	१ २९	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. १	रेव. २	उ.षा. २	मूल २	उ.भा. १	अनु. ३	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १

कुण्डली सूर्योदय (१२ जन.)

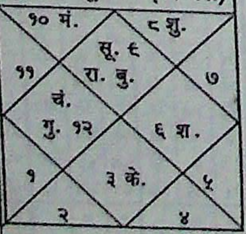

लोकभविष्य:- इस पक्ष में मकर राशि में मंगल-सूर्य हैं, अतः जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी से जनता परेशान रहे। सूर्य, मंगल का शनि के साथ नवम-पंचमसम्बन्ध भारतीय राजनीतिज्ञों के लिए विशेष कष्टप्रद मालूम देता है। कहीं धार्मिक उन्माद, राजनैतिक उलटफेर, एवं प्राकृतिक आपदा से हानि के योग भी बनते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ६ जन. के लगभग सोना, चान्दी में मन्दा रहे। ८ जन. को रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, घी में अच्छी तेजी बनेगी। ११ जन. को दलहन, गुड़, खाण्ड, चावल, चना, गेहूं, कपास, चमड़ा, सरसों, बारदाना में तेजी आए। १७ से १९ जन. तक सोना, चान्दी में जोरदार मन्दा; चावल, सरसों, तिल-तेल में भी मन्दे का रुख रहे।

आकाश-लक्षण:- जन. ५, ६, ७, ८, ११, १७ और १९ को उत्तरी भारत शीतग्रस्त रहेगा। कुछ स्थानों पर वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि भी होगी। काश्मीर व हि. प्र. में कहीं हिमपात होने के समाचार भी मिलें।

कुण्डली सूर्योदय (१९ जन.)

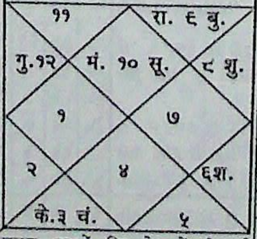

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१९ जनवरी,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ४ ३१ ३४	२ २२ ३८ ११	९ ८ २२ २७	८ १२ ५४ ५५	११ ५ १९ २७	७ १७ ५९ ५	५ २३ ९ ४७	८ ७ १९ ५९	२ ७ १९ ५९
६१ ४	८६४ ०	४६ ५९	७९ ५७	१० २९	६४ ४१	० ४३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	पुन. १	उ.षा. ४	मूल ४	उ.भा. १	ज्येष्ठा १	हस्त ४	मूल ३	आर्द्रा १

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, माघ कृष्ण पक्ष २२

(२० जनवरी से ३ फरवरी तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

मं. अस्त है। प्रातः बु. पूर्व क्षितिज में, शु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त में दिखाई देगा। सायं गु. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	तारीखें अं. जनवरी	तारीखें श. पौष	तारीखें मु. सफर	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४८	१	गु.	४१	३३	पुष्य	३४	४५	प्री.	४९	११	बा.	१५	५	७	२०	३०	१५	कर्क			७	२४	१७	४३	९	५	३२	४६	मंगल श्रव. में ५६/४८, नेप्च्यून धनि. ४ में १६/१५, (A)
२५	५१	२	शु.	३३	५४	आश्ले.	२८	५८	आ.	३९	४९	तै.	७	४३	८	२१	मा.१	१६	सिंह	२८	५८	७	२३	१७	४४	९	६	३३	४९	शक माघ प्रारम्भ,
२५	५४	३	श.	२६	४	मघा	२२	५७	सौ.	३०	२०	व.	०	१	९	२२	२	१७	सिंह			७	२३	१७	४५	९	७	३४	५१	भ. ०/०१ से २६/०४ तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी (B)
२५	५७	४	र.	१८	२६	पू.फा.	१७	७	शो.	२१	३	बा.	१८	२६	१०	२३	३	१८	कन्या	३०	४२	७	२३	१७	४६	९	८	३५	५२	
२६	०	५	चं.	११	२०	उ.फा.	११	४८	अ.	१२	१३	तै.	११	२०	११	२४	४	१९	कन्या			७	२२	१७	४७	९	९	३६	५४	सूर्य श्रव. में १८/०१,
२६	४	६	मं.	५	५	हस्त	७	२०	सु. धृ.	४ ५६	३ ४४	व.	५	५	१२	२५	५	२०	तुला	३५	२८	७	२२	१७	४७	९	१०	३७	५४	भ. ५/०५ से ३२/३० तक,
अवम		७	मं.	५९	५२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२६	७	८	बु.	५५	५३	चित्रा	३	५५	शु.	५०	२४	बा.	२७	५२	१३	२६	६	२१	तुला			७	२२	१७	४८	९	११	३८	५४	गुरु उ.भा. २ में २०/५४, शनि वक्री १०/४५,
२६	१०	९	गु.	५३	१२	स्वा.	१	४३	गं.	४५	६	तै.	२४	३२	१४	२७	७	२२	वृश्चि.	४५	५३	७	२१	१७	४९	९	१२	३९	५४	
२६	१४	१०	शु.	५१	४९	विशा.	०	४७	वृ.	४०	४९	व.	२२	३०	१५	२८	८	२३	वृश्चि.			७	२१	१७	५०	९	१३	४०	५३	भ. २२/३० से ५१/४६ तक, बुध उ.षा. में ४२/१२,
२६	१७	११	श.	५१	४१	अनु.	१	६	ध्रु.	३७	३१	ब.	२१	४५	१६	२९	९	२४	वृश्चि.			७	२०	१७	५१	९	१४	४१	५१	शुक्र मूल धनु में ५१/४०, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२६	२१	१२	र.	५२	४२	ज्ये.	२	३८	व्या.	३५	७	कौ.	२२	१२	१७	३०	१०	२५	धनु	२	३८	७	२०	१७	५२	९	१५	४२	४९	बुध मकर में ५६/२५,
२६	२५	१३	चं.	५४	४७	मूल	५	१५	ह.	३३	३३	ग.	२३	४४	१८	३१	११	२६	धनु			७	१९	१७	५३	९	१६	४३	४६	भ. ५४/४७ बाद, राहु मूल २, केतु मृग. ४ में (C)
२६	२८	१४	मं.	५७	४९	पू.षा.	८	५२	व.	३२	४५	वि.	२६	१९	१९	फ.१	१२	२७	मकर	२४	५५	७	१८	१७	५४	९	१७	४४	४२	भ. २६/१६ तक, फरवरी प्रारम्भ,
२६	३२	३०	बु.	६०	०	उ.षा.	१३	२५	सि.	३२	४०	च.	२९	४९	२०	२	१३	२८	मकर			७	१८	१७	५५	९	१८	४५	३७	मौनी अमावस,
२६	३६	३०	गु.	१	४८	श्रव.	१८	४८	व्य.	३३	१३	ना.	१	४८	२१	३	१४	२९	कुम्भ	५१	४६	७	१७	१७	५५	९	१९	४६	३२	पंचक प्रारम्भ ५१/४६, महोदय योग (८ घं. ०० मि. तक),

(A) सूर्य सायन कुम्भ में २१/००, (B) व्रत (चन्द्रोदय २० घं. ४७ मि.), (C)२६/५४, सोमप्रदोष व्रत, श्रीमेरुत्रयोदशी (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	९	८	११	७	५	८	२
११	४	१३	२२	६	२५	२३	६	६
३८	३९	५१	३६	३५	३७	१२	५७	५७
५६	५२	५२	३६	१३	१८	३५	४३	४३
६०	८३३	४७	८६	११	६	०	३	३
५९	७	९	४८	१५	२४	१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	चित्रा ४	श्रव. २	पू.भा. ३	उ.भा. १	ज्येष्ठा ३	मघा ४	मूल ३	आर्द्रा १

कुण्डली सूर्योदय (२६ जन.)

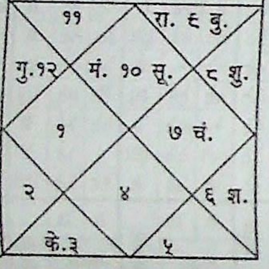

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास मे पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों मे राजनैतिक परेशानियां बढ़ें, सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावण से अशान्ति बढ़े;-

"यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः।
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।"

भारतीय शासनतन्त्र में किसी विशिष्ट राजनीतिज्ञ के लिए समय कष्टप्रद रहेगा। जनता में सुख-सुभिक्ष रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में जौ, चना, गेहूं, अफीम, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी एवम् लौंग तेज रहेंगे। २६ जन. को चावल, गेहूं, घी, तेल, तम्बाखू, सिमेंट में घटाबढ़ी चले। इस समय चान्दी में मन्दे का रुख रहे। गेहूं आदि अनाज तेज रहें। २६ जन. को गेहूं, जौ, चना, चान्दी, सोना, तांबा में अच्छी तेजी बनेगी। इस समय —- तेल, तिलहन में भी जोरदार तेजी आ सकती है।

कुण्डली सूर्योदय (३ फर.)

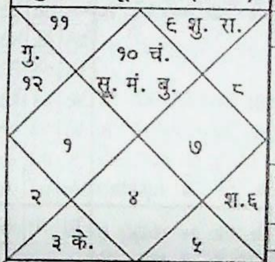

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	९	११	८	५	८	२
१९	१८	२०	४	८	४	२३	६	६
४६	३६	९	३२	७	३४	९	३२	३२
३३	२२	३७	४०	५८	९	२१	१७	१७
६०	७२६	४७	९२	१२	६७	०	३	३
५३	६	१७	५२	१	५४	५३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] ३	[illegible] ३	[illegible] ४	[illegible] ३	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] ४	[illegible] २	[illegible] ४

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, माघ शुक्ल पक्ष २३

(४ से १८ फरवरी तक, सन् २०११ ई.)

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर—वसन्त ऋतु।

मं. अदृश्य है। बुध भी ६ फर. से पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। गु. जो कि पश्चिमकपाल में दिखाई दे रहा है, ७ फर. को सायं चं. से लगभग ७° दक्षिण की ओर हटा दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															माघ	फरवरी	माघ	सफर												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	४०	१	शु.	६	३५	धनि.	२४	५७	व.	३४	२२	ब.	६	३५	२२	४	१५	३०	कुम्भ			७	१६	१७	५६	९	२०	४७	२५	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२६	४४	२	श.	१२	६	शत.	३१	४७	प.	३६	२	कौ.	१२	६	२३	५	१६	र. १	कुम्भ			७	१६	१७	५७	९	२१	४८	१७	रबि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२६	४८	३	र.	१८	१२	पू.भा.	३९	६	शि.	३८	४	ग.	१८	१२	२४	६	१७	२	मीन	२२	१५	७	१५	१७	५८	९	२२	४९	८	भ. ५१/२५ बाद, सूर्य धनि. में २६/०३, मंगल धनि. (A)
२६	५२	४	चं.	२४	३९	उ.भा.	४६	३८	सि.	४०	१८	वि.	२४	३९	२५	७	१८	३	मीन			७	१४	१७	५९	९	२३	४९	५८	भ. २४/३९ तक,
२६	५६	५	मं.	३१	४	रेव.	५४	३	सा.	४२	२६	बा.	३१	४	२६	८	१९	४	मेष	५४	३	७	१४	१८	०	९	२४	५०	४६	पंचक समाप्त ५४/०३, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (B)
२७	०	६	बु.	३७	१	अश्वि.	६०	०	शु.	४४	११	कौ.	४	३	२७	९	२०	५	मेष			७	१३	१८	१	९	२५	५१	३३	
२७	४	७	गु.	४२	१	अश्वि.	०	५३	शु.	४५	११	ग.	९	३१	२८	१०	२१	६	मेष			७	१२	१८	२	९	२६	५२	१८	भ. ४२/०१ बाद, शुक्र प.षा. में ३७/०५, रथ (आरोग्य)(C)
२७	८	८	शु.	४५	३५	भर.	६	३६	ब्र.	४५	५	वि.	१३	५१	२९	११	२२	७	वृष	२२	५०	७	११	१८	२	९	२७	५३	२	भ. १३/५१ तक, भीष्माष्टमी,
२७	१२	९	श.	४७	२०	कृत्ति.	१०	४८	ऐं.	४३	३६	बा.	१६	२७	३०	१२	२३	८	वृष			७	१०	१८	३	९	२८	५३	४४	गुरु उ.भा. ३ में ०/०७,
२७	१७	१०	र.	४७	०	रोहि.	१३	९	वै.	४०	३३	तै.	१७	१०	फा.१	१३	२४	९	मिथुन	४३	३३	७	९	१८	४	९	२९	५४	२४	सं. सूर्य कुम्भ में १/२५, मु. ४५, पुण्यकाल १७/१९ तक,
२७	२१	११	चं.	४४	३४	मृग.	१३	२७	वि.	३५	५१	व.	१५	४८	२	१४	२५	१०	मिथुन			७	९	१८	५	१०	०	५५	३	भ. १५/४८ से ४४/३४ तक, बुध धनि. में ३३/४०, (D)
२७	२५	१२	मं.	४०	६	आर्द्रा	११	४१	प्री.	२९	३१	ब.	१२	२०	३	१५	२६	११	कर्क	५४	६	७	८	१८	६	१०	१	५५	४०	मंगल कुम्भ में २४/०७, भीष्म द्वादशी,
२७	२९	१३	बु.	३३	५१	पुन.	८	३	आ.	२१	४३	कौ.	६	५८	४	१६	२७	१२	कर्क			७	७	१८	७	१०	२	५६	१५	प्रदोष व्रत,
२७	३४	१४	गु.	२६	११	पुष्य आश्ले.	२ ५६	४९ २२	सौ.	१२	४२	व.	२६	११	५	१७	२८	१३	सिंह	५६	२२	७	६	१८	७	१०	३	५६	४९	भ. २६/११ से ५१/४९ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
२७	३८	१५	शु.	१७	३१	मघा	४९	१२	शो. अ.	२ ५२	४५ १२	ब.	१७	३१	६	१८	२९	१४	सिंह			७	५	१८	८	१०	४	५७	२१	बुध कुम्भ में २६/०७, सूर्य सायन मीन में ५७/०६, (E)

(A) में ५७/०४, बुध श्रवण में २४/५७, बुध पूर्व में अस्त ३४/४८, गौरी तृतीया (गौंतरी), तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी, (B) सरस्वती पूजा, (C) सप्तमी (पहले अरुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) जया एकादशी व्रत (स.), (E) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
११ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २७ ५३ ३	० २४ २६ ५९	९ २६ २८ १५	९ १७ १६ ३७	११ ६ ४६ २६	८ १३ ४१ ३०	५ २२ ५९ २१	८ ६ ६ ५१	२ ६ ६ ५१
६० ४१	७४४ ७	४७ २२	९९ ०	१२ ३९	६६ १	१ ४३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. २	भर. ४	धनि. १	श्रव. ३	उ.भा. २	पू.षा. १	हस्त ४	मूल २	मृग. ४

कुण्डली सूर्योदय (११ फर.)

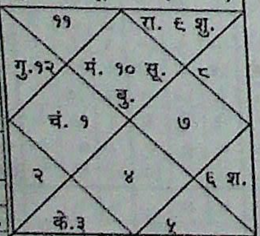

लोक-भविष्यः- इस पक्ष में मंगल की शनि पर विशेष दृष्टि होने से पक्ष-मध्य के बाद कहीं राजनैतिक संकट को जन्म देगी एवम् कहीं यान-दुर्घटना किंवा प्राकृतिक आपदा से हानि भी हो। पक्षान्त में अफरीकन देश एवम् पाकिस्तान में कहीं राजनैतिक संकट गहरा सकता है। इस पक्ष में अमरीका, भारत एवम् पाकिस्तान में कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान आदि से हानि भी संभव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से ६ फर. तक दालें, मोटे अनाज, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल, जस्ता, लोहा, गुड़, खाण्ड, अलसी, घी, चना, चावल तेज रहेंगे। ७ फर. को बाजारों में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। १० फर. को बाजार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। १४ फर. को सोना, चान्दी में मन्दा; रुई में घटाबढ़ी चले। १५ से १८ फर. तक घी, तेल, गुड़, खाण्ड में तेजी; रुई व चान्दी में काफी घटाबढ़ी चले। **आकाश-लक्षणः-** फर. ४, ६, ८, १०, १२, १४, १५ और १८ को लंका के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ प्रान्तों में बादलचाल व बून्दाबांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा एवम् मौसम में परिवर्तन होगा।

कुण्डली सूर्योदय (१८ फर.)

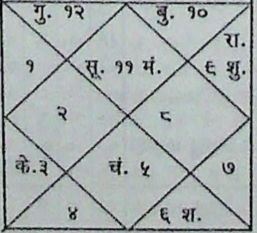

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१८ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० ४ ५७ २२	३ २९ ५४ ३६	१० १ ५९ ५३	९ २९ ७ १९	११ ११ १६ ३१	८ २१ ४७ ७	५ २२ ४५ २०	८ ५ ४४ ३६	२ ५ ४४ ३६
६० ३१	६०९ ३३	४७ २२	१०५ २	१३ ८	६६ ४९	२ २३	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	आश्ले. ४	धनि. ३	धनि. २	उ.भा. ३	पू.षा. ३	हस्त ४	मूल २	मृग. ४

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१९ फरवरी से ४ मार्च तक, सन् २०११ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. बु. अदृश्य हैं। प्रातः शु. पूर्व में और श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर हटा होगा। सायं गु. पश्चिम क्षितिज के पास होगा।
															फाल्गुन	फरवरी	माघ	र.उ.ल.												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	४३	१	श.	८	१८	पू.फा.	४१	४७	सु.	४१	३२	कौ.	८	१८	७	१९	३०	१५	कन्या	५४	५५	७	४	१८	९	१०	५	५७	५२	सूर्य शत. में ३७/५२,
अवम		२	श.	५८	५८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२७	४७	३	र.	५०	४	उ.फा.	३४	३६	धृ.	३१	३	व.	२४	३०	८	२०	फा.१	१६	कन्या			७	३	१८	१०	१०	६	५८	२२	म. २४/३० से ५०/०४ तक, शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५१	४	चं.	४१	५८	हस्त	२८	६	शू.	२१	६	ब.	१६	१	९	२१	२	१७	तुला	५५	१४	७	२	१८	११	१०	७	५८	५०	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२७	५६	५	मं.	३५	५	चित्रा	२२	४४	गं.	१२	२	कौ.	८	३२	१०	२२	३	१८	तुला			७	१	१८	११	१०	८	५९	१६	बुध शत. में ११/०७, शुक्र उ.षा. में ७/१९,
२८	०	६	बु.	२९	४३	स्वा.	१८	४७	वृ. ध्रु.	४ ५७	६ २६	ग.	२	२४	११	२३	४	१९	तुला			७	०	१८	१२	१०	९	५९	४१	म. २९/४३ से ५७/५२ तक, मंगल शत. में ५०/५५,
२८	५	७	गु.	२६	३	विशा.	१६	३१	व्या.	५२	१४	ब.	२६	३	१२	२४	५	२०	वृश्चि.	१	५६	६	५९	१८	१३	१०	११	०	५	शुक्र मकर में ५८/०६,
२८	९	८	शु.	२४	१२	अनु.	१६	०	ह.	४८	२७	कौ.	२४	१२	१३	२५	६	२१	वृश्चि.			६	५८	१८	१४	१०	१२	०	२७	
२८	१४	९	श.	२४	६	ज्ये.	१७	१४	व.	४६	०	ग.	२४	६	१४	२६	७	२२	धनु	१७	१४	६	५७	१८	१४	१०	१३	०	४८	म. ५४/४८ बाद,
२८	१९	१०	र.	२५	३६	मूल	२०	१	सि.	४४	४३	वि.	२५	३६	१५	२७	८	२३	धनु			६	५६	१८	१५	१०	१४	१	७	म. २५/३६ तक, गुरु उ.भा. ४ में १०/२५,
२८	२३	११	चं.	२८	२८	पू.षा.	२४	८	व्य.	४४	२६	बा.	२८	२८	१६	२८	९	२४	मकर	४०	२१	६	५५	१८	१६	१०	१५	१	२५	विजया एकादशी व्रत (स.),
२८	२८	१२	मं.	३२	२६	उ.षा.	२९	२०	व.	४४	५५	कौ.	०	२७	१७	मा.१	१०	२५	मकर			६	५३	१८	१७	१०	१६	१	४२	बुध पू.भा. में २१/३३, मार्च प्रारम्भ,
२८	३२	१३	बु.	३७	१५	श्रव.	३५	२१	प.	४६	०	ग.	४	५१	१८	२	११	२६	मकर			६	५२	१८	१७	१०	१७	१	५७	म. ३७/१५ बाद, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (देखें पृ. 98),(A)
२८	३७	१४	गु.	४२	४०	धनि.	४१	५८	शि.	४७	३३	वि.	१०	०	१९	३	१२	२७	कुम्भ	८	३७	६	५१	१८	१८	१०	१८	२	१०	म. १०/०० तक, पंचक प्रारम्भ ८/३७,
२८	४२	३०	शु.	४८	३४	शत.	४९	२	सि.	४९	२५	च.	१५	३७	२०	४	१३	२८	कुम्भ			६	५०	१८	१९	१०	१९	२	२२	सूर्य पू.भा. में ५४/०७,

(A) प्रदोष व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२५ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१०	११	८	५	८	२
१२	१२	७	११	१२	२९	२२	५	५
०	१७	३१	४१	४९	५७	२६	२२	२२
२७	५३	३६	५०	४२	५४	४७	२१	२१
६०	७९१	४७	१११	१३	७०	२	३	३
२१	५८	२४	२४	३२	२९	५९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	अनु. ३	शत. १	शत. २	उ.भा. ३	उ.षा. १	हस्त ४	मूल २	मृग. ४

कुण्डली सूर्योदय (२५ फर.)

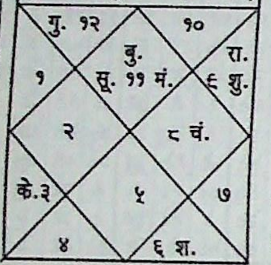

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार होने से अमेरिका, जापान एवम् अन्य देश-विशेष में भूकम्प, समुद्री तूफान, अग्निकाण्ड व ज्वालामुखी-विस्फोट से जनधनहानि के संकेत मिलते हैं। कहीं दुर्भिक्ष आदि से जनता परेशान रहे-

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कंपते फणी ।
ईशानदेश- भंगश्च वह्निदाहो महर्घता।।"

सूर्य, मंगल, चन्द्र एकत्र शत्रुक्षेत्र में होने से राजनीतिज्ञों में मतभेद रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, सूत, बारदाना, तिलहन, दाख, छुहारा, हल्दी, खाण्ड, गुड़ में तेजी चलेगी। २२ फर. को तिलहन, गुड़,खाण्ड, सोने में मन्दा आ सकता है। २४ फर. के लगभग गुड़, खाण्ड, घी, सभी अनाज, शेयर, अफीम में अच्छी तेजी बने। रुई व चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। ४ मार्च को भी बाजार तेज रहेंगे।

आकाश-लक्षण:- फर. १९, २२, २३, २४, २७ एवम् मार्च १ और ४ को मध्यप्रदेश, बंगाल आदि में कहीं बूंदाबांदी व बादलचाल हो। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहे और तापमान बढ़ने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (४ मार्च)

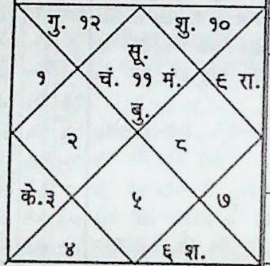

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
४ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	१०	११	९	५	८	२
१९	९	१३	२४	१४	८	२२	५	५
२	३५	३	५७	२५	१२	४	०	०
२३	८	१५	७	२९	५२	८	५	५
६०	७१५	४७	११५	१३	७०	३	३	३
१०	४१	२१	४२	५३	५९	३२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible] ४	[illegible] १	[illegible] २	[illegible] २	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] ४	[illegible] २	[illegible] ४

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५

(५ से १६ मार्च तक, सन् २०११ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

मं. अस्त है। १२ मार्च से बुध पश्चिम में दृश्य हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज से ऊपर उठा हुआ और श. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। गु. ७ मार्च को सायंकाल में चं. से लगभग ८° नीचे पश्चिम-क्षितिजासन्न दिखाई देगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	मार्च	फाल्गुन	र.उ.ल.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४६	१	श.	५४	४५	पू.भा.	५६	२३	सा.	५१	३२	किं.	२१	४०	२१	५	१४	२९	मीन	३९	३२	६	४९	१८	१९	१०	२०	२	३२	शुक्र श्रव. में २७/१५,
२८	५१	२	र.	६०	०	उ.भा.	६०	०	शु.	५३	४६	बा.	२७	५५	२२	६	१५	३०	मीन			६	४८	१८	२०	१०	२१	२	४१	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध मीन में ३३/४५, जन्मदिन (A)
२८	५५	२	चं.	१	६	उ.भा.	३	५५	शु.	५५	५९	कौ.	१	६	२३	७	१६	र.१	मीन			६	४७	१८	२१	१०	२२	२	४७	रबि-उल-सानी मु. प्रारम्भ,
२९	०	३	मं.	७	२७	रेव.	११	२२	ब्र.	५८	१	ग.	७	२७	२४	८	१७	२	मेष	११	२२	६	४५	१८	२२	१०	२३	२	५२	भ. ४०/२५ बाद, पंचक समाप्त ११/२२, बुध उ.भा. में (B)
२९	५	४	बु.	१३	२५	अश्वि.	१८	२९	ऐं.	५९	३७	वि.	१३	२५	२५	९	१८	३	मेष			६	४४	१८	२२	१०	२४	२	५४	भ. १३/२५ तक,
२९	१०	५	गु.	१८	४४	भर.	२४	५६	वै.	६०	०	बा.	१८	४४	२६	१०	१९	४	वृष	४१	२५	६	४३	१८	२३	१०	२५	२	५४	होलाष्टक १३ से १६ मार्च तक
२९	१४	६	शु.	२२	५८	कृत्ति.	३०	२१	वै.	०	३१	तै.	२२	५८	२७	११	२०	५	वृष			६	४२	१८	२४	१०	२६	२	५२	
२९	१९	७	श.	२५	४३	रोहि.	३४	१८	वि. प्री.	० ५९	२४ ०	व.	२५	४३	२८	१२	२१	६	वृष			६	४१	१८	२४	१०	२७	२	४८	भ. २५/४३ से ५६/१० तक, मंगल पू.भा. में ४५/४०,(C)
२९	२४	८	र.	२६	४०	मृग.	३६	२८	आ.	५६	६	ब.	२६	४०	२९	१३	२२	७	मिथुन	५	३९	६	४०	१८	२५	१०	२८	२	४१	गुरु रेवती १ में ३२/१६, होलाष्टक प्रारम्भ,
२९	२८	९	चं.	२५	३५	आर्द्रा	३६	३८	सौ.	५१	३५	कौ.	२५	३५	चै.१	१४	२३	८	मिथुन			६	३८	१८	२६	१०	२९	२	३२	सं. सूर्य मीन में ५४/४८, मु. ४५, पुण्यकाल अगले (D)
२९	३३	१०	मं.	२२	२५	पुन.	३४	४६	शो.	४५	२५	ग.	२२	२५	२	१५	२४	९	कर्क	२०	२६	६	३७	१८	२६	११	०	२	२२	भ. ४६/४६ बाद, बुध रेव. में ३६/३१,
२९	३८	११	बु.	१७	१५	पुष्य	३०	५८	अ.	३७	४२	वि.	१७	१५	३	१६	२५	१०	कर्क			६	३६	१८	२७	११	१	२	९	भ. १७/१५ तक, शुक्र धनि. में ४०/३४, प्लूटो पू.षा. (E)
२९	४२	१२	गु.	१०	१९	आश्ले.	२५	३०	सु.	२८	३९	बा.	१०	१९	४	१७	२६	११	सिंह	२५	३०	६	३५	१८	२८	११	२	१	५३	प्रदोष व्रत,
२९	४७	१३	शु.	१	५६	मघा	१८	४५	धृ.	१८	३४	तै.	१	५६	५	१८	२७	१२	सिंह			६	३३	१८	२८	११	३	१	३६	भ. ५२/३८ बाद, सूर्य उ.भा. में १५/५२,
अवम		१४	शु.	५२	३८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२९	५२	१५	श.	४२	४९	पू.फा.	११	१०	शू. ग.	७ ५६	४८ ४१	वि.	१७	४८	६	१९	२८	१३	कन्या	२४	८	६	३२	१८	२९	११	४	१	१७	भ. १७/४८ तक, होलिकादहन, जन्मदिन श्रीचैतन्य (F)

(A)श्रीरामकृष्ण परमहंस, (B) १७/५५, (C) बुध पश्चिम में उदित ४/४३, (D) दिन मध्याह्न तक, (E) १ में ४५/००, आमला एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी , (F) महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१३ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१० २८ २ ४१	१ २८ १० १२	१० २० ८ ५७	११ १२ ० २४	११ १६ ३१ ४१	९ १८ ५३ ४५	५ २१ २९ ५६	८ ४ ३१ २९	२ ४ ३१ २९
५९ ५२	७८१ १९	४७ १३	१०६ ११	१४ ११	७१ २८	४ ५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ३	मृग. २	पू.भा. १	उ.भा. ३	उ.भा. ४	श्रव. ३	हस्त ४	मूल २	मृग. ४

कुण्डली सूर्योदय (१३ मार्च)

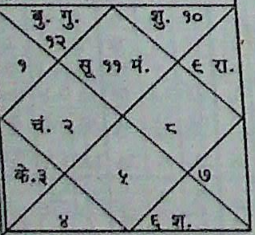

लोकभविष्य:- मंगल की शनि पर विशेषदृष्टि चल रही है, पक्षमध्य में सूर्य, गुरु, बुध पर भी शनि की पूर्ण दृष्टि होने से किसी यावन देश में आन्तरिक स्थिति विकटरूप धारण करेगी। कहीं मन्त्रिमण्डल में उलटफेर होंगे। राजनीतिज्ञों एवं राजनैतिक पार्टियों में मतभेद उजागर होने से यहां की केन्द्रीय शासनसत्ता में विशेष संशोधन की आवश्यकता पड़ेगी। देश में महंगाई जनता पर भारी पड़ेगी;- " तदा सस्यमहर्घत्वं शनिर्वा वक्रतां व्रजेत्।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में बाजारों में मन्दे का रुख रहेगा। सोना, चान्दी में घटा-बढ़ी; गुड़, खाण्ड, चान्दी में तेजी के बाद मन्दा बने। बिनौला तेज रहे। १२ मार्च को तेल, तिलहन, सुपारी, चान्दी, रुई में तेजी बने। १५ मार्च को गेरु, मजीठ, लालमिर्च तेज; गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी व चान्दी में मन्दा रहे। पक्षान्त में चावल, मूंग, मोठ, बाजरा, चान्दी, सोना, रुई, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे। **आकाश-लक्षण:-** मार्च ५, ६, ८, १२, १३, १५, १६, और १८ को हवा का जोर रहे। मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलवाल व बूंदाबांदी हो। उत्तरी भारत में आसमान साफ रहे और गर्मी का अनुभव हो।

कुण्डली सूर्योदय (१६ मार्च)

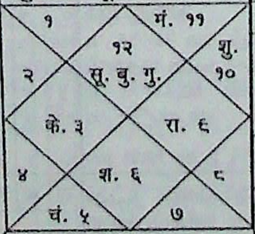

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
१६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११ ४ १ १६	४ २३ ८ ५७	१० २४ ५१ ५९	११ २१ ४२ ५	११ १७ ५७ ११	९ २६ ३ १३	५ २१ ४ ४०	८ ४ १२ २४	२ ४ १२ २४
५९ ३९	९२१ ५४	४७ ७	८० ३८	१४ २०	७१ ४४	४ २२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. १	पू.फा. ३	पू.भा. २	रेव. २	रेव. १	धनि. १	हस्त ४	मूल २	मृग. ४

श्री वि. सं. २०६७, शाक १९३२ चैत्र कृष्ण पक्ष २६

(२० मार्च से ३ अप्रैल तक, सन् २०११ ई.)

उत्तरायण, उत्तर—दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु।

मं. अस्त है। २६ मार्च को गु. और १ अप्रैल को बु. भी पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व क्षितिज से ऊपर और श. पश्चिमकपाल में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	मार्च	फाल्गुन	र.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	५६	१	र.	३२	५९	उ.फा. हस्त	३ ५५	१५ २८	वृ.	४५	४३	बा.	७	५४	७	२०	२९	१४	कन्या			६	३१	१८	३०	११	५	०	५५	सूर्य सायन मेष में ५५/४६, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव(A)
३०	१	२	च.	२३	३७	चित्रा	४८	२६	ध्रु.	३५	१५	ग.	२३	३७	८	२१	३०	१५	तुला	२१	५०	६	३०	१८	३०	११	६	०	३२	भ. ४६/२२ बाद,
३०	६	३	मं.	१५	११	स्वा.	४२	३३	व्या.	२५	३९	वि.	१५	११	९	२२	चै १	१६	तुला			६	२८	१८	३१	११	७	०	६	भ. १५/११ तक, शुक्र कुम्भ में १५/३०, शक चैत्र (B)
३०	१०	४	बु.	८	७	विशा.	३८	१३	ह.	१७	१३	बा.	८	७	१०	२३	२	१७	वृश्चि.	२४	९	६	२७	१८	३१	११	७	५९	३९	गुरुवार्धक्य प्रारम्भ ५/४५,
३०	१५	५	गु.	२	४६	अनु.	३५	४४	व.	१०	१४	तै.	२	४६	११	२४	३	१८	वृश्चि.			६	२६	१८	३२	११	८	५९	१०	भ. ५६/१८ बाद, यूरेनस उ.भा. २ में १/१५, (C)
अवम		६	गु.	५९	१८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३०	२०	७	शु.	५७	५७	ज्ये.	३५	१७	सि.	४	५१	वि.	२८	३९	१२	२५	४	१९	धनु	३५	१७	६	२५	१८	३३	११	९	५८	३९	भ. २८/३६ तक, मंगल मीन में ३०/३०,
३०	२५	८	श.	५८	३६	मूल	३६	४६	व्य. व.	१ ५८	२ ५१	बा.	२८	१६	१३	२६	५	२०	धनु			६	२४	१८	३३	११	१०	५८	६	गुरु अस्त ५/५२, श्रीशीतलाष्टमी,
३०	२९	९	र.	६०	०	पू.षा.	४०	८	प.	५८	३	तै.	२९	५०	१४	२७	६	२१	मकर	५६	१३	६	२२	१८	३४	११	११	५७	३२	शुक्र शत. में ४६/१६, गुरु रेवती २ में २६/३४,
३०	३४	९	चं.	१	४	उ.षा.	४५	२	शि.	५८	२५	ग.	१	४	१५	२८	७	२२	मकर			६	२१	१८	३५	११	१२	५६	५६	भ. ३३/०४ बाद, बुध अश्वि. मेष में ३३/१५,
३०	३९	१०	मं.	५	४	श्रव.	५१	७	सि.	५९	३९	वि.	५	४	१६	२९	८	२३	मकर			६	२०	१८	३५	११	१३	५६	१८	भ. ५/०४ तक, मंगल उ.भा. में ४६/२५,
३०	४३	११	बु.	१०	७	धनि.	५८	०	सा.	६०	०	बा.	१०	४	१७	३०	९	२४	कुम्भ	२४	३१	६	१९	१८	३६	११	१४	५५	३८	पंचक प्रारम्भ २४/३१, बुध वक्री ५०/००, पापमोचिनी (D)
३०	४८	१२	गु.	१५	५४	शत.	६०	०	सा.	१	२९	तै.	१५	१४	१८	३१	१०	२५	कुम्भ			६	१७	१८	३७	११	१५	५४	५६	सूर्य रेव. में ४३/३७, प्रदोष व्रत,
३०	५२	१३	शु.	२२	३	शत.	५	२२	शु.	३	४२	व.	२२	३	१९	अ. १	११	२६	मीन	५५	५८	६	१६	१८	३७	११	१६	५४	१३	भ. २२/०३ से ५५/१२ तक, बुध पश्चिम में अस्त (E)
३०	५७	१४	श.	२८	२०	पू.भा.	१२	५२	शु.	६	१	श.	२८	२०	२०	२	१२	२७	मीन			६	१५	१८	३८	११	१७	५३	२८	वक्री बुध रेव. में ५८/१०, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा),
३१	२	३०	र.	३४	३१	उ.भा.	२०	२०	ब्र.	८	१९	च.	१	२५	२१	३	१३	२८	मीन			६	१४	१८	३८	११	१८	५२	४१	चान्द्र संवत्सर (२०६७ वि.)पूर्ण,

गुरु अस्त
२६ मार्च

(A) दिन, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (B) (सं. १९३३) प्रारम्भ, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) मेला श्री शीतला माता- कुराली (पं.), (D) एकादशी व्रत (स.), (E) ५१/१६, वारुणी पर्व (८ घं. २५ मि. तक), अप्रैल प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	११	११	१०	५	८	२
१०	४	०	२८	१९	४	२०	३	३
५८	५५	२१	५१	३७	२६	३३	५०	५०
६	१२	१७	१३	५४	१३	२५	९	९
५९	७७२	४६	३२	१४	७२	४	३	३
२६	२८	५८	५८	२७	०	३५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ३	मूल २	पू.भा. ४	रेव. ४	रेव. १	धनि. ४	हस्त ४	मूल २	मृग. ४

कुण्डली सूर्योदय (२६ मार्च)

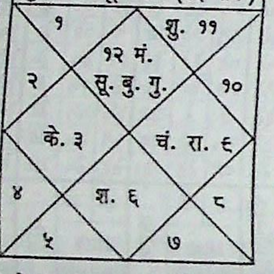

लोक-भविष्यः:-मीनराशि में सूर्य-बुध-गुरु-मंगल एकसाथ हैं। अनेकविध रोगों से जनता में परेशानी रहे। यहां शनि-मंगल का समसप्तक विशिष्ट राजनीतिज्ञों के लिए भारी संकटापन्न परिस्थितियां पैदा करेगा। सीमाप्रान्तों पर कहीं सेना की गतिविधि से शान्ति भंग होने के योग हैं। पक्षान्त में बुधास्त होना कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि का संकेत देता है;- " नोत्पात-परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम् ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २२ मार्च को रुई, चान्दी, गुड़, खाण्ड, चना, जौ, ज्वार, बाजरा में एकदम मन्दा आ जाने का योग है। २५ मार्च को मंगल मीन राशि में आकर सोने में तेजी करे और चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनाए। २६ मार्च को सोना, चान्दी में जोरदार मन्दा आ सकता है। रुई और शेयर के बाजार तेज रहेंगे। २८ मार्च को अनाजों में तेजी के बाद पक्षान्त तक बाजारों में जोदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। **आकाश-लक्षणः**- मार्च २२, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, और ३१ को पूर्वी आसाम, पूर्वी बिहार, बंगाल और बर्मा के कुछ भागों में बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि के योग हैं। उत्तरी भारत में मौसम साफ रहे और तापमान बढ़े।

कुण्डली सूर्योदय (३ अप्रै.)

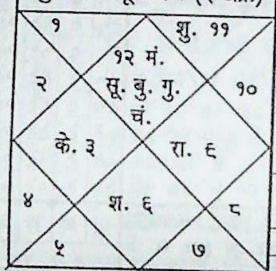

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	११	११	१०	५	८	२
१८	१२	६	२९	२१	१४	१९	३	३
५२	१६	३६	४५	३३	३	५६	२४	२४
४१	४८	१३	५९	४८	११	२१	४४	४४
५९	७१३	४६	२४	१४	७२	४	३	३
१०	१३	४५	१२	३१	१५	४०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	उ.भा. ३	उ.भा. १	रेव. ४	रेव. २	शत. ३	हस्त ३	मूल २	मृग. ४

श्री वि. सं 2066 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जनवरी, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण	1	1	शु.	21	14	पुन.	27	56	ऐं.	21	52	कर्क	22	38	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, इंग्लिश नववर्ष सन् 2010 ई. (A)
	2	2	श.	17	43	पुष्य	25	12	वै.	17	45	कर्क			7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 28/01 बाद, चन्द्रग्रहणवेध,
	3	3	र.	14	20	आश्ले.	22	38	वि.	13	45	सिंह	22	38	7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	भ. 14/20 तक, श्रीगणेश (संकष्ट)चतुर्थी व्रत (B)
	4	4	चं.	11	14	मघा	20	23	प्री./ आ.	9 30	57 29	सिंह			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	
	5	5/ 6	मं.	8 30	31 20	पू.फा.	18	36	सौ.	27	25	कन्या	24	14	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	भ. 30/20 बाद, गुरु धनि. 4 में 23/29, षष्ठी तिथिक्षय,
	6	7	बु.	28	43	उ.फा.	17	21	शो.	24	50	कन्या			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 17/32 तक,
	7	8	गु.	27	45	हस्त	16	43	अ.	22	44	तुला	28	38	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	
	8	9	शु.	27	27	चित्रा	16	43	सु.	21	9	तुला			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	
	9	10	श.	27	46	स्वाती	17	21	धृ.	20	3	तुला			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 15/36 से 27/46 तक,
	10	11	र.	28	41	विशा.	18	33	शू.	19	26	वृश्चि.	12	12	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	सूर्य उ.षा. में 30/08, व. बुध मूल में 27/14, (C)
	11	12	चं.	30	6	अनु.	20	18	गं.	19	13	वृश्चि.			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	शुक्र उ.षा. में 10/01,
	12	13	मं.	—	—	ज्येष्ठा	22	29	वृ.	19	22	धनु	22	29	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	मेरु त्रयोदशी (जैन), भौम प्रदोष व्रत,
	13	13	बु.	7	58	मूल	25	2	ध्रु.	19	48	धनु			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 7/58 से 21/05 तक, शुक्र मकर में 25/37, (D)
	14	14	गु.	10	12	पू.षा.	27	53	व्या.	20	28	धनु			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 12/38, मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन,(E)
	15	30	शु.	12	41	उ.षा.	30	54	ह.	21	19	मकर	10	37	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	बुध मार्गी 22/22, मौनी अमावस, कंकण सूर्यग्रहण (F)
माघ शुक्ल	16	1	श.	15	21	श्रव.	—	—	व.	22	16	मकर			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 30, सूर्यग्रहणवेध,
	17	2	र.	18	4	श्रव.	10	2	सि.	23	14	कुम्भ	23	35	7	24	17	41	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	पंचक प्रारम्भ 23/35, सूर्यग्रहणवेध,
	18	3	चं.	20	45	धनि.	13	8	व्य.	24	10	कुम्भ			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	गौरी तृतीया (गौंतरी), सूर्यग्रहणवेध,
	19	4	मं.	23	14	शत.	16	7	व.	24	56	कुम्भ			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 9/59 से 23/14 तक, राहु पू.षा. 4, केतु पुन. 2 (G)
	20	5	बु.	25	24	पू.भा.	18	49	प.	25	27	मीन	12	10	7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	प्लूटो मूल 4 में 29/24, गुरु शत. 1 में 31/21, (H)
	21	6	गु.	27	4	उ.भा.	21	5	शि.	25	36	मीन			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	बुध पू.षा. में 7/33, शुक्र श्रव. में 24/29,
	22	7	शु.	28	7	रेव.	22	48	सि.	25	18	मेष	22	48	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	56	6	48	17	31	22	भ. 28/07 बाद, पंचक समाप्त 22/48, रथ (आरोग्य) (I)
	23	8	श.	28	27	अश्वि.	23	50	सा.	24	28	मेष			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 16/17 तक, भीष्माष्टमी,
	24	9	र.	28	1	भर.	24	8	शु.	23	1	वृष	30	5	7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 8/22,
	25	10	चं.	26	47	कृत्ति.	23	40	शु.	20	58	वृष			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	
	26	11	मं.	24	49	रोहि.	22	28	ब्र.	18	20	वृष			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 13/48 से 24/49 तक, गणतन्त्र दिवस (भारत), (J)
	27	12	बु.	22	12	मृग.	20	37	ऐं.	15	8	मिथुन	9	37	7	21	17	49	7	16	17	52	7	18	18	0	6	47	17	34	27	वक्री मंगल पुष्य में 20/55, यूरेनस पू.भा. 4 मीन में (K)
	28	13	गु.	19	4	आर्द्रा	18	14	वै.	11	29	मिथुन			7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	प्रदोष व्रत,
	29	14	शु.	15	32	पुन.	15	27	वि./ प्री.	7 27	28 13	कर्क	10	10	7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 15/32 से 25/40 तक, श्री सत्यनारायण व्रत,
	30	15	श.	11	47	पुष्य	12	28	आ.	22	52	कर्क			7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान (L)
फाल्गु. कृष्ण	31	1/ 2	र.	8 28	0 19	आश्ले. /मघा	9 30	25 31	सौ.	18	33	सिंह	9	25	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, द्वितीया तिथिक्षय,

कंकण सूर्यग्रहण
15 जनवरी

(A) प्रारम्भ, चन्द्रग्रहणवेध,(B) (चन्द्रोदय 20 घं. 40 मि.), चन्द्रग्रहणवेध, (C) बुध पूर्व में उदित 18/45, षट्तिला एकादशी व्रत (स.), (D) शनि वक्री 21/28, लोहड़ी (पं.) (E) मकर संक्रान्ति, पोंगल (द. भारत), सूर्यग्रहणवेध, (F) (भारत में दृश्य), (G) में 9/28, तिल–कुन्द–वरद चतुर्थी, (H) सूर्य सायन कुम्भ में 9/58, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (I) सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (J) जया एकादशी व्रत (स.), (K) 13/15, भीष्म द्वादशी, (L) समाप्त,

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन कृष्ण	1	3	चं.	24	57	पू.फा.	27	56	शो.	14	25	सिंह			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 14/38 से 24/27 तक, शुक्र धनि. में (A)
	2	4	मं.	22	2	उ.फा.	25	50	अ./ सु.	10 31	36 13	कन्या	9	21	7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.
	3	5	बु.	19	44	हस्त	24	21	धृ.	28	22	कन्या			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	39	3	बुध उ.षा. में 15/15, शुक्र पश्चिम में उदित 16/33,
	4	6	गु.	18	10	चित्रा	23	36	शू.	26	7	तुला	11	53	7	16	17	57	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	भ. 18/10 से 29/47 तक, गुरु शत. 2 में 18/07,
	5	7	शु.	17	23	स्वाती	23	39	गं.	24	31	तुला			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	बुध मकर में 29/16,
	6	8	श.	17	26	विशा.	24	30	वृ.	23	33	वृश्चि.	18	13	7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	सूर्य धनि. मे 11/36, शुक्र कुम्भ में 22/50, शुक्रबाल्य (B)
	7	9	र.	18	16	अनु.	26	5	ध्रु.	23	10	वृश्चि.			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 31/01 बाद,
	8	10	चं.	19	47	ज्येष्ठा	28	16	व्या.	23	17	धनु	28	16	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 19/47 तक,
	9	11	मं.	21	51	मूल	30	57	ह.	23	48	धनु			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	वक्री शनि उ.फा. 4 में 25/21, विजया एकादशी व्रत (स.),
	10	12	बु.	24	17	पू.षा.	—	—	व.	24	35	धनु			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
	11	13	गु.	26	57	पू.षा.	9	55	सि.	25	32	मकर	16	41	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 26/57 बाद, शुक्र शत. में 30/29, प्रदोष व्रत,
	12	14	शु.	29	41	उ.षा.	13	3	व्य.	26	32	मकर			7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	भ. 16/19 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 25/38, मु. 30, (C)
	13	30	श.	—	—	श्रव.	16	11	व.	27	31	कुम्भ	29	43	7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	पंचक प्रारम्भ 29/43, बुध श्रव. में 9/39, शनैश्चरी अमा,
	14	30	र.	8	21	धनि.	19	14	प.	28	23	कुम्भ			7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	
फाल्गुन शुक्ल	15	1	चं.	10	52	शत.	22	6	शि.	29	6	कुम्भ			7	7	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 15, (D)
	16	2	मं.	13	9	पू.भा.	24	43	सि.	29	36	मीन	18	5	7	7	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	जन्मदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस,
	17	3	बु.	15	7	उ.भा.	27	1	सा.	29	50	मीन			7	6	18	8	7	2	18	9	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 27/54 बाद,
	18	4	गु.	16	42	रेव.	28	55	शु.	29	45	मेष	28	55	7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	भ. 16/42 तक, पंचक समाप्त 28/55, गुरु शत. 3 (E)
	19	5	शु.	17	50	अश्वि.	30	21	शु.	29	17	मेष			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 16/02,
	20	6	श.	18	26	भर.	—	—	ब्र.	28	24	मेष			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	
	21	7	र.	18	26	भर.	7	13	ऐं.	27	2	वृष	13	21	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 18/26 से 30/07 तक, बुध धनि. में 27/24,
	22	8	चं.	17	48	कृत्ति.	7	30	वै.	25	9	वृष			7	1	18	11	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	शुक्र पू.भा. में 22/13, होलाष्टक प्रारम्भ,
	23	9	मं.	16	29	रोहि./ मृग.	7 30	8 7	वि.	22	45	मिथुन	18	42	7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	
	24	10	बु.	14	32	आर्द्रा	28	29	प्री.	19	50	मिथुन			6	59	18	13	6	55	18	14	7	0	18	21	6	29	17	53	24	भ. 25/15 बाद,
	25	11	गु.	11	59	पुन.	26	20	आ.	16	28	कर्क	20	55	6	58	18	14	6	54	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	भ. 11/59 तक, बुध कुम्भ में 29/46, आमला (F)
	26	12/ 13	शु.	8 29	56 30	पुष्य	23	45	सौ.	12	42	कर्क			6	57	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	प्रदोष व्रत, बुध पूर्व में अस्त 21/26, त्रयोदशी तिथिक्षय,
	27	14	श.	25	51	आश्ले.	20	54	शो./ अ.	8 28	39 25	सिंह	20	54	6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 25/51 बाद,
	28	15	र.	22	8	मघा	17	57	सु.	24	10	सिंह			6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	भ. 12/00 तक, होलिकादहन (प्रदोष में), जन्मदिन (G)

शुक्र पश्चिम में उदित– 3 फरवरी

गुरु अस्त–18 फरवरी

होलाष्टक
22 से 28 फर.

(A) 15/17. (B) समाप्त 16/33. (C) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पहला शाही स्नान कुम्भ महापर्व हरिद्वार. (D) गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 10/50. (E) में 17/43, सूर्य सायन मीन में 24/05, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, गुरु अस्त 10/50. (F) एकादशी व्रत (स). गोविन्द द्वादशी. (G) श्रीचैतन्य महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, श्री सत्यनारायण व्रत.

श्री वि. सं 2066–67 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) मार्च, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	माह	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	1	चं.	18	32	पू.फा.	15	5	घृ.	20	2	कन्या	20	24	6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध शत. में 28/17, वसन्तोत्सव, (A)
	2	2	मं.	15	14	उ.फा.	12	29	शू.	16	9	कन्या			6	52	18	17	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	भ. 25/49 बाद, शुक्र मीन में 22/31,
	3	3	बु.	12	25	हस्त	10	21	गं.	12	41	तुला	21	30	6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 12/25 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	4	4	गु.	10	15	चित्रा	8	50	वृ.	9	44	तुला			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	सूर्य पू.भा. में 22/24, गुरु शत. 4 में 13/11, (B)
	5	5	शु.	8	51	स्वा.	8	5	घु./ व्या.	7 29	25 46	वृश्चि.	26	4	6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	शुक्र उ.भा. में 14/43,
	6	6	श.	8	20	विशा.	8	11	ह.	28	50	वृश्चि.			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	58	6	भ. 8/20 से 20/31 तक,
	7	7	र.	8	42	अनु.	9	8	व.	28	32	वृश्चि.			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	
	8	8	चं.	9	53	ज्ये.	10	54	सि.	28	48	धनु	10	54	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	श्रीशीतलाष्टमी,
	9	9	मं.	11	47	मूल	13	20	व्य.	29	30	धनु			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 24/58 बाद, बुध पू.भा. में 14/45,
	10	10	बु.	14	11	पू.षा.	16	13	व.	30	27	मकर	23	0	6	43	18	23	6	41	18	23	6	46	18	29	6	16	18	0	10	भ. 14/11 तक, मंगल मार्गी 22/39,
	11	11	गु.	16	52	उ.षा.	19	22	प.	–	–	मकर			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	15	18	1	11	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	12	12	शु.	19	35	श्रव.	22	32	प.	7	30	मकर			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	
	13	13	श.	22	11	धनि.	25	35	शि.	8	31	कुम्भ	12	5	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	भ. 22/11 बाद, पंचक प्रारम्भ 12/05, शनि प्रदोष व्रत,
	14	14	र.	24	32	शत.	28	21	सि.	9	24	कुम्भ			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	भ. 11/22 तक, सं. सूर्य मीन में 22/29, मु. 15, (C)
	15	30	चं.	26	31	पू.भा.	–	–	सा.	10	2	मीन	24	13	6	37	18	26	6	35	18	25	6	40	18	31	6	11	18	3	15	सोमवती अमा, द्वितीय शाही स्नान कुम्भ महापर्व (D)
चैत्र शुक्ल	16	1	मं.	28	7	पू.भा.	6	48	शु.	10	25	मीन			6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	चैत्र शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, बुध उ.भा. में 13/26, शुक्र रेव. में (E)
	17	2	बु.	29	20	उ.भा.	8	52	शु.	10	30	मीन			6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	चन्द्रदर्शन,मु. 30, चन्द्रव्रत,
	18	3	गु.	30	9	रेव.	10	33	ब्र.	10	17	मेष	10	33	6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	पंचक समाप्त 10/33, सूर्य उ. भा. में 6/47, गुरु पू.भा. (F)
	19	4	शु.	–	–	अश्वि.	11	52	ऐं.	9	45	मेष			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 18/21 बाद, नेप्च्यून धनि. 4 में 10/16,
	20	4	श.	6	33	भर.	12	47	वै.	8	55	वृष	18	57	6	31	18	30	6	29	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	भ. 6/33 तक, सूर्य सायन मेष में 23/01, गुरु उदित (G)
	21	5/ 6	र.	6 30	32 5	कृत्ति.	13	17	वि./ प्री.	7 30	46 15	वृष			6	29	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	स्कन्द षष्ठी (पञ्चमीविद्धा), षष्ठी तिथिक्षय, गुरु उदित 20 मार्च
	22	7	चं.	29	9	रोहि.	13	20	आ.	28	22	मिथुन	25	12	6	28	18	31	6	27	18	30	6	33	18	35	6	4	18	6	22	भ. 29/09 बाद, बुध रेव. में 29/39,
	23	8	मं.	27	44	मृग.	12	56	सौ.	26	6	मिथुन			6	27	18	32	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	7	23	भ. 16/26 तक, गुरुबाल्य समाप्त 17/36, राहु पू.षा. 3, (H)
	24	9	बु.	25	49	आर्द्रा	12	3	शो.	23	27	कर्क	29	4	6	26	18	32	6	25	18	31	6	30	18	36	6	2	18	7	24	श्रीरामनवमी (12 घं. 03 मि. के बाद पुनर्वसु), नवरात्र समाप्त,
	25	10	गु.	23	27	पुन.	10	41	अ.	20	25	कर्क			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	36	6	1	18	7	25	नवरात्रव्रत पारणा (देखें पृ. 96),
	26	11	शु.	20	41	पुष्य	8	53	सु.	17	3	कर्क			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	भ. 10/04 से 20/41 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 26/28, (I)
	27	12	श.	17	37	आश्ले./ मघा	6 28	43 19	धृ.	13	25	सिंह	6	43	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	शनिप्रदोष व्रत, श्रीविष्णुदमनोत्सव,
	28	13	र.	14	22	पू.फा.	25	48	शू./ गं.	9 29	37 46	सिंह			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	बुध पश्चिम में उदित 8/30, अनंग त्रयोदशी (देखें पृ. 96),(J)
	29	14	चं.	11	4	उ.फा.	23	20	वृ.	25	59	कन्या	7	10	6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	भ. 11/04 से 21/30 तक, बुध अश्वि. मेष में 28/38, (K)
	30	15/	मं.	7	55	हस्त	21	7	ध्रु.	22	25	कन्या			6	18	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	यूरेनस उ.भा. 1 में 24/03, चैत्री पूर्णिमा, श्रीहनुमान् (L)
प्र.वैशा. कृष्ण	31	1 2	बु.	29 26	4 42	चित्रा	19	18	व्या.	19	12	तुला	8	9	6	17	18	37	6	17	18	35	6	23	18	39	5	55	18	10	31	प्रथम वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय, सूर्य रेवती में 17/38,

(A) होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (B) मेला श्रीशीतला माता (कुराली–पं.), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, बुध मीन में 20/39, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा), (D) हरिद्वार, चान्द्र संवत्सर 2066 वि. पूर्ण, (E) 8/04, चान्द्र संवत्सर 2067 वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण,(F) 1 में 10/11, गौरि तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, (G) 17/36, उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन, श्री (लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी (देखें पृ. 96), हयव्रत, (H) केतु पुन. 1 में 7/14, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, (I) कामदा एकादशी व्रत (स.), (J) श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), (K) वक्री शनि उ.फा. 3 में 26/43, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशिवदमनोत्सव,(L) जयन्ती (द. भा.), वैशाखस्नान प्रारम्भ,

अप्रैल, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
प्रथम वैशाख कृष्ण	1	3	गु.	24	59	स्वा.	18	5	ह.	16	27	तुला			6	16	18	37	6	15	18	35	6	22	18	40	5	53	18	10	1	भ. 13/50 से 24/59 तक, गुरु पूभा. 2 में 14/48,
	2	4	शु.	24	1	विशा.	17	35	व.	14	18	वृश्चि.	11	38	6	15	18	38	6	14	18	36	6	21	18	40	5	52	18	11	2	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	3	5	श.	23	53	अनु.	17	54	सि.	12	48	वृश्चि.			6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	
	4	6	र.	24	37	ज्ये.	19	3	व्य.	11	58	धनु	19	3	6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	41	5	50	18	12	4	भ. 24/37 बाद,
	5	7	चं.	26	7	मूल	20	58	व.	11	46	धनु			6	11	18	40	6	11	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 13/22 तक,
	6	8	मं.	28	14	पू.षा.	23	31	प.	12	7	धनु			6	10	18	40	6	10	18	38	6	16	18	42	5	48	18	13	6	शुक्र भरणी में 22/08,
	7	9	बु.	—	—	उ.षा.	26	28	शि.	12	53	मकर	6	13	6	9	18	41	6	9	18	38	6	15	18	43	5	47	18	13	7	प्लूटो वक्री 8/02,
	8	9	गु.	6	44	श्रव.	29	36	सि.	13	52	मकर			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	43	5	46	18	14	8	भ. 20/03 बाद, बुध भरणी में 9/00,
	9	10	शु.	9	23	धनि.	—	—	सा.	14	55	कुम्भ	19	9	6	6	18	42	6	6	18	39	6	13	18	44	5	45	18	14	9	भ. 9/23 तक, पंचक प्रारम्भ 19/09,
	10	11	श.	11	54	धनि.	8	39	शु.	15	50	कुम्भ			6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	44	5	44	18	14	10	वरुथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
	11	12	र.	14	7	शत.	11	26	शु.	16	31	कुम्भ			6	4	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	प्रदोष व्रत,
	12	13	चं.	15	54	पू.भा.	13	48	ब्र.	16	51	मीन	7	15	6	3	18	44	6	3	18	41	6	10	18	45	5	42	18	15	12	भ. 15/54 से 28/33 तक,
	13	14	मं.	17	11	उ.भा.	15	42	ऐं.	16	49	मीन			6	2	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	
	14	30	बु.	17	59	रेव.	17	8	वै.	16	24	मेष	17	8	6	0	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	14	पंचक समाप्त 17/08, सं. सूर्य अश्वि. मेष में 6/57 , (A)
प्रथम (अधिक) वैशाख शुक्ल	15	1	गु.	18	18	अश्वि.	18	6	वि.	15	37	मेष			5	59	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	17	15	प्रथम(अधिक)वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, अधिक(मल)मास प्रा.,(B)
	16	2	शु.	18	12	भर.	18	40	प्री.	14	30	वृष	24	44	5	58	18	47	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	16	गुरु पूभा. 3 में 10/15,
	17	3	श.	17	44	कृत्ति.	18	52	आ.	13	6	वृष			5	57	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	18	17	भ. 29/20 बाद, शुक्र कृत्ति. में 19/06,
	18	4	र.	16	57	रोहि.	18	45	सौ.	11	26	वृष			5	56	18	48	5	57	18	45	6	4	18	48	5	37	18	18	18	भ. 16/57 तक, बुध वक्री 9/37,
	19	5	चं.	15	51	मृग.	18	19	शो.	9	31	मिथुन	6	34	5	55	18	49	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	
	20	6	मं.	14	27	आर्द्रा	17	37	अ./	7	22	मिथुन			5	54	18	49	5	55	18	46	6	2	18	49	5	35	18	19	20	शुक्र वृष में 12/34, सूर्य सायन वृष में 10/00, (C)
									सु.	28	59																					
	21	7	बु.	12	46	पुन.	16	38	धृ.	26	23	कर्क	10	54	5	53	18	50	5	54	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	भ. 12/46 से 23/48 तक, अगस्त्य अस्त,
	22	8	गु.	10	49	पुष्य	15	22	शू.	23	33	कर्क			5	52	18	51	5	53	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	
	23	9	शु.	8	36	आश्ले.	13	51	गं.	20	32	सिंह	13	51	5	51	18	51	5	52	18	47	5	59	18	51	5	32	18	20	23	
	24	10/	श.	6	9	मघा	12	9	वृ.	17	22	सिंह			5	50	18	52	5	51	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	भ. 16/51 से 27/34 तक, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत(स्मा.), एकादशी तिथिक्षय,
		11		27	34																											
	25	12	र.	24	55	पू.फा.	10	18	ध्रु.	14	6	कन्या	15	49	5	49	18	53	5	50	18	49	5	58	18	52	5	31	18	21	25	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वै.),
	26	13	चं.	22	19	उ.फा.	8	25	व्या.	10	50	कन्या			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	53	5	30	18	22	26	मंगल आश्ले. में 14/07, सोमप्रदोष व्रत,
	27	14	मं.	19	54	हस्त/	6	39	ह./	7	40	तुला	17	50	5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	27	भ. 19/54 बाद, सूर्य भरणी में 22/45, श्रीसत्यनारायण (D)
						चित्रा	29	7	व.	28	42																					
	28	15	बु.	17	48	स्वा.	27	58	सि.	26	3	तुला			5	46	18	55	5	47	18	50	5	55	18	54	5	28	18	23	28	भ. 6/51 तक, शुक्र रोहिणी में 17/38,
द्वि.(अ.)	29	1	गु.	16	11	विशा.	27	21	व्य.	23	50	वृश्चि.	21	27	5	45	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	23	29	द्वि (अधिक) वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
वै.कृ.	30	2	शु.	15	10	अनु.	27	23	व.	22	7	वृश्चि.			5	44	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	27	18	24	30	भ. 27/00 बाद, वक्री बुध अश्वि. में 8/42,

कुम्भ महापर्व हरिद्वार
14 अप्रैल

(A) मु. 30, पुण्यकाल 13/20 तक, वैशाखी (पं.), मेष संक्रान्ति, कुम्भमहापर्व हरिद्वार, कुम्भपर्व का मुख्य स्नानदिन (प्रमुख शाहीस्नान) (देखें पृ. 14). (B) चन्द्रदर्शन, मु. 15. (C) ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, बुध पश्चिम में अस्त 11/40. (D) व्रत (देखें पृष्ठ 96).

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
द्वि. (अधिक) वैशाख कृष्ण	1	3	श.	14	51	ज्ये.	28	8	प.	20	58	धनु	28	8	5	43	18	57	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	1	भ. 14/51 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत
	2	4	र.	15	17	मूल	29	36	शि.	20	25	धनु			5	42	18	57	5	44	18	53	5	52	18	56	5	25	18	25	2	गुरु पू.भा. 4 मीन में 8/07,
	3	5	चं.	16	27	पू.षा.	—	—	सि.	20	26	धनु			5	41	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	24	18	25	3	
	4	6	मं.	18	15	पू.षा.	7	45	सा.	20	55	मकर	14	22	5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	24	18	26	4	भ. 18/15 बाद,
	5	7	बु.	20	31	उ.षा.	10	24	शु.	21	44	मकर			5	39	18	59	5	41	18	55	5	50	18	58	5	23	18	26	5	भ. 7/23 तक,
	6	8	गु.	23	0	श्रव.	13	23	शु.	22	43	कुम्भ	26	54	5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	पंचक प्रारम्भ 26/54,
	7	9	शु.	25	28	धनि.	16	25	ब्र.	23	42	कुम्भ			5	38	19	0	5	40	18	56	5	48	18	59	5	22	18	27	7	बुध पूर्व में उदित 14/55,
	8	10	श.	27	40	शत.	19	17	ऐं.	24	28	कुम्भ			5	37	19	1	5	39	18	56	5	47	18	59	5	21	18	28	8	भ. 14/34 से 27/40 तक,
	9	11	र.	29	25	पू.भा.	21	45	वै.	24	55	मीन	15	11	5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	28	9	शुक्र मृग. में 17/54, पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स्मा.),
	10	12	चं.	—	—	उ.भा.	23	43	वि.	24	57	मीन			5	35	19	2	5	38	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (वै.),
	11	12	मं.	6	35	रेव.	25	5	प्री.	24	31	मेष	25	5	5	35	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	29	11	पंचक समाप्त 25/05, सूर्य कृत्ति. में 16/56, बुध मार्गी (A)
	12	13	बु.	7	10	अश्वि.	25	52	आ.	23	36	मेष			5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	1	5	19	18	30	12	भ. 7/10 से 19/09 तक,
	13	14	गु.	7	8	भर.	26	7	सौ.	22	15	मेष			5	33	19	4	5	36	18	59	5	44	19	2	5	18	18	30	13	
	14	30	शु.	6	34	कृत्ति.	25	54	शो.	20	30	वृष	8	6	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	18	18	31	14	सं. सूर्य वृष में 27/47, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (B)
द्वि. (शुद्ध) वैशाख शुक्ल	15	1/ 2	श.	5 28	33 10	रोहि.	25	18	अ.	18	27	वृष			5	32	19	6	5	35	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	द्वि. (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्र दर्शन, मु. 45, (C) द्वितीया तिथिक्षय,
	16	3	र.	26	30	मृग.	24	25	सु.	16	8	मिथुन	12	53	5	31	19	6	5	34	19	1	5	43	19	4	5	17	18	32	16	श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया,
	17	4	चं.	24	38	आर्द्रा	23	19	धृ.	13	37	मिथुन			5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	भ. 13/34 से 24/38 तक,
	18	5	मं.	22	37	पुन.	22	4	शू.	10	58	कर्क	16	24	5	30	19	8	5	33	19	2	5	42	19	5	5	16	18	33	18	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	19	6	बु.	20	29	पुष्य	20	44	गं./ वृ.	8 29	13 24	कर्क			5	30	19	8	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
	20	7	गु.	18	19	आश्ले.	19	19	ध्रु.	26	33	सिंह	19	19	5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	भ. 18/19 से 29/13 तक, गुरु उ.भा. 1 में 5/55, (D)
	21	8	शु.	16	6	मघा	17	54	व्या.	23	41	सिंह			5	29	19	10	5	31	19	4	5	40	19	6	5	14	18	35	21	सूर्य सायन मिथुन में 9/04,
	22	9	श.	13	55	पू.फा.	16	29	ह.	20	51	कन्या	22	8	5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	श्रीजानकी जयन्ती,
	23	10	र.	11	47	उ.फा.	15	9	व.	18	5	कन्या			5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	36	23	भ. 22/47 बाद, बुध भरणी में 10/46,
	24	11	चं.	9	47	हस्त	13	56	सि.	15	26	तुला	25	25	5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	भ. 9/47 तक, राहु पू.षा. 2, केतु आर्द्रा 4 में 29/00,(E)
	25	12	मं.	7	58	चित्रा	12	57	व्य.	12	57	तुला			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	9	5	13	18	37	25	सूर्य रोहि. में 13/06, भौम प्रदोष व्रत,
	26	13/ 14	बु.	6 29	27 18	स्वा.	12	16	व.	10	44	तुला			5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	भ. 29/18 बाद, मंगल मघा सिंह में 15/54, (F) चतुर्दशी तिथिक्षय,
	27	15	गु.	28	37	विशा.	11	58	प.	8	50	वृश्चि.	6	0	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	10	5	13	18	38	27	भ. 15/58 तक, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीबुध जयन्ती, (G)
ज्येष्ठ कृष्ण	28	1	शु.	28	29	अनु.	12	10	शि.	7	19	वृश्चि.			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	29	2	श.	28	57	ज्ये.	12	55	सि.	6	14	धनु	12	55	5	25	19	14	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	
	30	3	र.	—	—	मूल	14	15	सा.	5	38	धनु			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 17/29 बाद, शनि मार्गी 23/39,
	31	3	चं.	6	1	पू.षा.	16	11	शु.	5	31	मकर	22	45	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	39	31	भ. 6/01 तक, शुक्र पुन. में 24/35, नेप्च्यून वक्री (H)

त्रयोदश दिनपक्ष

(A) 27/58, भौमप्रदोष व्रत, (B) मध्याह्न तक, अधिक(मल)मास समाप्त, (C) शुक्र मिथुन में 6/44, श्रीशिवाजी जयन्ती, (D) शुक्र आर्द्रा में 20/04, श्रीगंगाजन्म, (E) मोहिनी एकादशी व्रत (स.), (F) श्रीनृसिंह जयन्ती, (G) श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीकूर्म जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, कुम्भ महापर्व हरिद्वार सम्पन्न, (H) 24/22, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति. काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि–प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ कृष्ण	1	4	मं.	7	39	उ.षा.	18	37	शु.	5	49	मकर			5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	
	2	5	बु.	9	44	श्रव.	21	26	ब्र.	6	30	मकर			5	24	19	17	5	28	19	11	5	37	19	12	5	11	18	40	2	
	3	6	गु.	12	7	धनि.	24	25	ऐं.	7	24	कुम्भ	10	55	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 12/07 से 25/20 तक, पंचक प्रारम्भ 10/55,
	4	7	शु.	14	33	शत.	27	22	वै.	8	23	कुम्भ			5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	13	5	11	18	41	4	बुध कृत्ति. में 10/12,
	5	8	श.	16	49	पू.भा.	—	—	वि.	9	17	मीन	23	25	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	
	6	9	र.	18	41	पू.भा.	6	3	प्री.	9	56	मीन			5	24	19	19	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	6	बुध वृष में 16/58,
	7	10	चं.	20	0	उ.भा.	8	16	आ.	10	11	मीन			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	भ. 7/20 से 20/00 तक,
	8	11	मं.	20	40	रेव.	9	53	सौ.	9	58	मेष	9	53	5	23	19	20	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	8	पंचक समाप्त 9/53, सूर्य मृग. में 11/01, अपरा (A)
	9	12	बु.	20	37	अश्वि.	10	49	शो.	9	11	मेष			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	शुक्र कर्क में 11/46,
	10	13	गु.	19	54	भर.	11	5	अ.	7	52	वृष	17	3	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 19/54 बाद, प्रदोष व्रत,
	11	14	शु.	18	34	कृत्ति.	10	43	सु./	6	2	वृष			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 7/14 तक, गुरु उ.भा. 2 में 16/33,
									धृ.	27	44																					
	12	30	श.	16	44	रोहि.	9	49	शू.	25	3	मिथुन	21	11	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	12	बुध रोहि. में 18/42, शुक्र पुष्य में 7/52, शनैश्चरी (B)
ज्येष्ठ शुक्ल	13	1	र.	14	31	मृग.	8	28	गं.	22	6	मिथुन			5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु.15,
	14	2	चं.	12	1	आर्द्रा/	6	50	वृ.	18	57	कर्क	23	28	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	रम्भा तृतीया (देखें पृ. 96),
						पुन.	28	59																								
	15	3	मं.	9	21	पुष्य	27	5	ध्रु.	15	41	कर्क			5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	भ. 19/59 बाद, सं. सूर्य मिथुन में 10/21, मु. 30, (C)
	16	4/	बु.	6	38	आश्ले.	25	12	व्या.	12	25	सिंह	25	12	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 6/38 तक,
		5		27	57																											पंचमी तिथिक्षय, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण–26 जून
	17	6	गु.	25	25	मघा	23	26	ह.	9	11	सिंह			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	11	18	46	17	बुध पूर्व में अस्त 9/33, विन्ध्यवासिनी–पूजा, अरण्य षष्ठी,
	18	7	शु.	23	4	पू.फा.	21	52	व./	6	6	कन्या	27	31	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	भ. 23/04 बाद,
									सि.	27	11																					
	19	8	श.	20	59	उ.फा.	20	34	व्य.	24	29	कन्या			5	24	19	23	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	भ. 10/01 तक, बुध मृग. में 17/11,
	20	9	र.	19	12	हस्त	19	34	व.	22	3	कन्या			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	मंगल पू.फा. में 28/41,
	21	10	चं.	17	47	चित्रा	18	55	प.	19	54	तुला	7	11	5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	21	भ. 29/15 बाद, सूर्य सायन कर्क में 16/58, दक्षिण (D)
	22	11	मं.	16	44	स्वा.	18	39	शि.	18	4	तुला			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	भ. 16/44 तक सूर्य आर्द्रा में 9/57, बुध मिथुन में (E)
	23	12	बु.	16	7	विशा.	18	48	सि.	16	34	वृश्चि.	12	43	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	शुक्र आश्ले. में 18/31, प्रदोष व्रत,
	24	13	गु.	15	56	अनु.	19	23	सा.	15	26	वृश्चि.			5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	
	25	14	शु.	16	14	ज्ये.	20	26	शु.	14	40	धनु	20	26	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	25	भ. 16/14 से 28/37 तक, बुध आर्द्रा में 23/27, (F)
	26	15	श.	17	0	मूल	21	58	शु.	14	17	धनु			5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	26	वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष), खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (G)
आषाढ़ कृ.	27	1	र.	18	15	पू.षा.	23	56	ब्र.	14	16	धनु			5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	28	2	चं.	19	56	उ.षा.	26	20	ऐं.	14	36	मकर	6	30	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	
	29	3	मं.	22	0	श्रव.	29	4	वै.	15	14	मकर			5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 8/58 से 22/00 तक, वक्री प्लूटो मूल 3 में (H)
	30	4	बु.	24	20	धनि.	—	—	वि.	16	6	कुम्भ	18	32	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	पंचक प्रारम्भ 18/32, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

(A) एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.), (B) अमावस, वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमावस, (C) पुण्यकाल 16/44 तक, महाराणाप्रताप जयन्ती (राज.), (D) अयन, एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ, श्रीगंगा दशहरा, (E) 21/29, निर्जला एकादशी व्रत (स.), (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, (G) (पूर्वी भारत में दृश्य) (देखें पृ. 17), (H) 6/23.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आषाढ़ कृष्ण	1	5	गु.	26	46	धनि.	8	1	प्री.	17	5	कुम्भ			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	बुध पुन. में 26/33,
	2	6	शु.	29	7	शत.	11	2	आ.	18	4	कुम्भ			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	भ. 29/07 बाद,
	3	7	श.	–	–	पू.भा.	13	54	सौ.	18	54	मीन	7	13	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	भ. 18/10 तक,
	4	7	र.	7	12	उ.भा.	16	27	शो.	19	26	मीन			5	29	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	4	
	5	8	चं.	8	49	रेव.	18	29	अ.	19	34	मेष	18	29	5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	5	पंचक समाप्त 18/29, शुक्र मघा सिंह में 9/45, (A)
	6	9	मं.	9	49	अश्वि.	19	52	सु.	19	10	मेष			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 21/57 बाद, सूर्य पुन. में 9/35, बुध कर्क में 21/29,
	7	10	बु.	10	6	भर.	20	32	धृ.	18	10	वृष	26	35	5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	भ. 10/06 तक,
	8	11	गु.	9	37	कृत्ति.	20	27	शू.	16	35	वृष			5	30	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	बुध पुष्य में 13/26, योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	9	12	शु.	8	24	रोहि.	19	40	गं.	14	25	वृष			5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	9	प्रदोष व्रत,
	10	13/	श.	6	31	मृग.	18	16	वृ.	11	43	मिथुन	7	2	5	31	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	10	भ. 6/31 से 17/18 तक, बुध पश्चिम में उदित 13/38, चतुर्दशी तिथिक्षय,
		14		28	4																											
	11	30	र.	25	10	आर्द्रा	16	21	ध्रु./	8	34	मिथुन			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	11	
									व्या.	29	5																					
आषाढ़ शुक्ल	12	1	चं.	21	59	पुन.	14	5	ह.	25	22	कर्क	8	41	5	32	19	23	5	36	19	18	5	45	19	19	5	19	18	47	12	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	13	2	मं.	18	39	पुष्य	11	36	व.	21	33	कर्क			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	चन्द्र दर्शन, मु. 15, रथयात्रा(श्रीजगदीश–रथोत्सव) पुरी (B)
	14	3	बु.	15	18	आश्ले.	9	4	सि.	17	45	सिंह	9	4	5	33	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	भ. 25/42 बाद, मंगल उ.फा. में 15/21,
	15	4	गु.	12	6	मघा/	6	38	व्य.	14	5	सिंह			5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	भ. 12/06 तक, बुध आश्ले. में 16/54,
						पू.फा.	28	27																								
	16	5	शु.	9	9	उ.फा.	26	36	व.	10	38	कन्या	9	57	5	34	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	सं. सूर्य कर्क में 21/11, मु. 45, पुण्यकाल 9/10 (C)
	17	6/	श.	6	36	हस्त	25	14	प./	7	31	कन्या			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 28/31 बाद, शुक्र पू.फा. में 6/53, विवस्वत् सप्तमी, सप्तमी तिथिक्षय,
		7		28	31				शि.	28	48																					
	18	8	र.	26	58	चित्रा	24	23	सि.	26	31	तुला	12	44	5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	भ. 15/45 तक,
	19	9	चं.	26	0	स्वा.	24	6	सा.	24	42	तुला			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	22	18	46	19	
	20	10	मं.	25	37	विशा.	24	24	शु.	23	21	वृश्चिक	18	16	5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	सूर्य पुष्य में 9/02, मंगल कन्या में 6/34,
	21	11	बु.	25	47	अनु.	25	15	शु.	22	27	वृश्चिक			5	37	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	23	18	45	21	भ. 13/42 से 25/47 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (D)
	22	12	गु.	26	29	ज्ये.	26	36	ब्र.	21	57	धनु	26	36	5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	सूर्य सायन सिंह में 27/51,
	23	13	शु.	27	38	मूल	28	25	ऐं.	21	50	धनु			5	39	19	19	5	41	19	13	5	50	19	16	5	24	18	44	23	बुध मघा सिंह में 22/09, गुरु वक्री 17/33, प्रदोष व्रत,
	24	14	श.	29	12	पू.षा.	–	–	वै.	22	3	धनु			5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	44	24	भ. 29/12 बाद,
	25	15	र.	–	–	पू.षा.	6	37	वि.	22	32	मकर	13	13	5	40	19	18	5	42	19	12	5	51	19	15	5	25	18	43	25	भ. 18/09 तक, गुरुपूर्णिमा(व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा (E)
	26	15	चं.	7	6	उ.षा.	9	8	प्री.	23	15	मकर			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	राहु पू.षा. 1, केतु आर्द्रा 3 में 26/20,
श्रावण कृ.	27	1	मं.	9	17	श्रव.	11	55	आ.	24	8	कुम्भ	25	22	5	41	19	17	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 25/22, (F)
	28	2	बु.	11	38	धनि.	14	52	सौ.	25	6	कुम्भ			5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	भ. 24/51 बाद,
	29	3	गु.	14	5	शत.	17	53	शो.	26	6	कुम्भ			5	42	19	15	5	45	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	29	भ. 14/05 तक, शुक्र उ.फा. में 12/35, शनि उ.फा. (G)
	30	4	शु.	16	29	पू.भा.	20	50	अ.	27	1	मीन	14	6	5	43	19	15	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	41	30	
	31	5	श.	18	43	उ.भा.	23	36	सु.	27	45	मीन			5	43	19	14	5	46	19	9	5	54	19	11	5	28	18	40	31	

(A) यूरेनस वक्री 22/21, (B) (पुष्य नक्षत्र 11 घं 36 मि. तक), (C) बाद, कुमार षष्ठी, (देखें पृ. 96), (D) (स.), श्रीविष्णुशयनोत्सव, (E) कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ, (F) अशून्यशयन व्रत, (G) 4 में 22/24, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अगस्त, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
श्रावण कृष्ण	1	6	र.	20	36	रेव.	26	0	धृ.	28	11	मेष	26	0	5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	भ. 20/36 बाद, पंचक समाप्त 26/00, शुक्र कन्या में (A)
	2	7	चं.	22	0	अश्वि.	27	54	शू.	28	12	मेष			5	45	19	12	5	47	19	7	5	55	19	10	5	29	18	39	2	भ. 9/18 तक, बुध पू.फा. में 24/45,
	3	8	मं.	22	46	भर.	29	10	गं.	27	42	मेष			5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	30	18	38	3	सूर्य आश्ले. में 8/00,
	4	9	बु.	22	49	कृत्ति.	29	42	वृ.	26	37	वृष	11	22	5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	4	
	5	10	गु.	22	5	रोहि.	29	28	ध्रु.	24	54	वृष			5	46	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	भ. 10/27 से 22/05 तक, मंगल हस्त में 18/09,
	6	11	शु.	20	35	मृग.	28	29	व्या.	22	35	मिथुन	17	3	5	47	19	9	5	49	19	5	5	57	19	7	5	31	18	36	6	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	7	12	श.	18	22	आर्द्रा	26	49	ह.	19	41	मिथुन			5	48	19	8	5	50	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	7	शनिप्रदोष व्रत,
	8	13	र.	15	33	पुन.	24	36	व.	16	17	कर्क	19	12	5	48	19	7	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	8	भ. 15/33 से 25/54 तक,
	9	14	चं.	12	15	पुष्य	21	57	सि.	12	30	कर्क			5	49	19	7	5	51	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	9	
	10	30/	मं.	8	38	आश्ले.	19	4	व्य./	8	26	सिंह	19	4	5	49	19	6	5	51	19	1	5	59	19	4	5	33	18	33	10	भौमवती अमा, हरियाली अमा,
									व.	28	14																					
श्रावण शुक्ल		1		28	51																											श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	11	2	बु.	25	6	मघा	16	6	प.	24	3	सिंह			5	50	19	5	5	52	19	0	6	0	19	4	5	33	18	33	11	चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र हस्त में 7/17,
	12	3	गु.	21	31	पू.फा.	13	15	शि.	20	1	कन्या	18	35	5	51	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	34	18	32	12	मधुस्रवा तृतीया (सन्धारा तीज),
	13	4	शु.	18	18	उ.फा.	10	42	सि.	16	15	कन्या			5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	13	भ. 7/54 से 18/18 तक,
	14	5	श.	15	35	हस्त	8	36	सा.	12	55	तुला	19	46	5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	35	18	30	14	नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती,
	15	6	र.	13	30	चित्रा	7	6	शु.	10	5	तुला			5	53	19	1	5	54	18	57	6	2	19	0	5	35	18	29	15	भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	7	चं.	12	8	स्वा.	6	17	शु.	7	49	वृश्चि.	24	9	5	53	19	0	5	55	18	56	6	2	18	59	5	35	18	29	16	भ. 12/08 से 23/50 तक, सं. सूर्य मघा सिंह में (B)
	17	8	मं.	11	31	विशा.	6	12	ब्र./	6	10	वृश्चि.			5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	28	17	श्रीदुर्गाष्टमी,
									ऐं.	29	6																					
	18	9	बु.	11	38	अनु.	6	52	वै.	28	35	वृश्चि.			5	54	18	58	5	56	18	54	6	3	18	57	5	36	18	27	18	वक्री नेप्च्यून धनि. 3 में 23/51,
	19	10	गु.	12	26	ज्ये.	8	12	वि.	28	33	धनु	8	12	5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	57	5	37	18	26	19	भ. 25/07 बाद,
	20	11	शु.	13	49	मूल	10	7	प्री.	28	53	धनु			5	56	18	56	5	57	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	20	भ. 13/49 तक, बुध वक्री 25/30, पवित्रा एकादशी (C)
	21	12	श.	15	39	पू.षा.	12	29	आ.	29	31	मकर	19	8	5	56	18	55	5	57	18	51	6	5	18	55	5	38	18	24	21	शनिप्रदोष व्रत,
	22	13	र.	17	47	उ.षा.	15	10	सौ.	—	—	मकर			5	57	18	54	5	58	18	50	6	5	18	54	5	38	18	23	22	
	23	14	चं.	20	8	श्रव.	18	4	सौ.	6	20	मकर			5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	53	5	38	18	22	23	भ. 20/08 बाद, सूर्य सायन कन्या में 10/56, शरद् (D)
	24	15	मं.	22	34	धनि.	21	3	शो.	7	16	कुम्भ	7	33	5	58	18	51	5	59	18	48	6	6	18	52	5	39	18	21	24	भ. 9/21 तक, पंचक प्रारम्भ 7/33, शुक्र चित्रा में (E)
भाद्रपद कृष्ण	25	1	बु.	25	1	शत.	24	3	अ.	8	14	कुम्भ			5	58	18	50	5	59	18	47	6	7	18	51	5	39	18	20	25	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	26	2	गु.	27	23	पू.भा.	26	58	सु.	9	11	मीन	20	15	5	59	18	49	6	0	18	46	6	7	18	50	5	40	18	19	26	मंगल चित्रा में 21/04,
	27	3	शु.	29	36	उ.भा.	29	45	धृ.	10	4	मीन			6	0	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	18	27	भ. 16/29 से 29/36 तक, बुध पश्चिम में अस्त 17/31,
	28	4	श.	—	—	रेव.	—	—	शू.	10	48	मीन			6	0	18	47	6	1	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	28	बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (F)
	29	4	र.	7	34	रेव.	8	16	गं.	11	19	मेष	8	16	6	1	18	46	6	1	18	42	6	8	18	47	5	41	18	17	29	पंचक समाप्त 8/16,
	30	5	चं.	9	10	अश्वि.	10	27	वृ.	11	33	मेष			6	1	18	44	6	2	18	41	6	9	18	46	5	41	18	16	30	सूर्य पू. फा. में 25/37,
	31	6	मं.	10	18	भर.	12	10	ध्रु.	11	25	वृष	18	31	6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	15	31	भ. 10/18 से 22/34 तक, शनि हस्त 1 में 6/59.

(A) 15/49. (B) 29/34, मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (C) व्रत (स.), (D) ऋतु प्रारम्भ, ऋग्वेदियों का उपाकर्म, (देखें पृ. 97). (E) 24/18, [illegible] (9 से 21 दि. बाद)(देखें पृ. 97). श्री [illegible] यात्रा, [illegible] पूर्णिमा, [illegible] (F) ([illegible] 27 मि.)

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भाद्रपद कृष्ण	1	7	बु.	10	50	कृत्ति.	13	19	व्या.	10	49	वृष			6	2	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	14	1	शुक्र तुला में 12/02, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (A)
	2	8	गु.	10	42	रोहि.	13	47	ह.	9	41	मिथुन	25	45	6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	42	5	42	18	12	2	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) (चन्द्रोदय 24घं. 02 मि.), (B)
	3	9	शु.	9	50	मृग.	13	32	व./ सि.	7 29	58 39	मिथुन			6	4	18	40	6	4	18	37	6	11	18	41	5	43	18	11	3	भ. 21/02 बाद, वक्री गुरु उ.भा. 1 में 21/33, श्रीगुग्गा नवमी,
	4	10/ 11	श.	8 29	14 56	आर्द्रा	12	32	व्य.	26	46	कर्क	29	21	6	4	18	38	6	4	18	36	6	11	18	40	5	43	18	10	4	भ. 8/14 तक, अगस्त्य उदित, अजा एकादशी व्रत (स्मा.), एकादशी तिथिक्षय,
	5	12	र.	27	1	पुन.	10	52	व.	23	21	कर्क			6	5	18	37	6	5	18	35	6	11	18	39	5	44	18	9	5	मंगल तुला में 27/04, अजा एकादशी व्रत (वै.),
	6	13	चं.	23	37	पुष्य/ आश्ले.	8 29	37 55	प.	19	31	सिंह	29	55	6	5	18	36	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	भ. 23/37 बाद, सोमप्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व (जैन) प्रा.,
	7	14	मं.	19	53	मघा	26	55	शि.	15	23	सिंह			6	6	18	35	6	6	18	32	6	12	18	37	5	44	18	7	7	भ. 9/45 तक, वक्री बुध मघा में 22/22,
	8	30	बु.	16	0	पू.फा.	23	50	सि.	11	5	कन्या	29	4	6	6	18	33	6	6	18	31	6	13	18	36	5	45	18	6	8	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,
भाद्रपद शुक्ल	9	1	गु.	12	8	उ.फा.	20	51	सा./ शु.	6 26	45 34	कन्या			6	7	18	32	6	7	18	30	6	13	18	35	5	45	18	5	9	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र स्वाती में 18/44,
	10	2/ 3	शु.	8 29	29 14	हस्त	18	10	शु.	22	41	तुला	29	0	6	8	18	31	6	7	18	29	6	14	18	34	5	45	18	4	10	चन्द्रदर्शन, मु. 30, हरितालिका तृतीया, गौरीतृतीया, (C) तृतीया तिथिक्षय,
	11	4	श.	26	34	चित्रा	15	58	ब्र.	19	13	तुला			6	8	18	30	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	भ. 15/54 से 26/34 तक, हरितालिका चतुर्थी, कलंक (D)
	12	5	र.	24	36	स्वा.	14	25	ऐं.	16	18	तुला			6	9	18	28	6	8	18	26	6	14	18	31	5	46	18	2	12	बुध मार्गी 28/39, बुध पूर्व में उदित 19/00, ऋषि पंचमी,
	13	6	चं.	23	27	विशा.	13	38	वै.	14	1	वृश्चि.	7	45	6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	1	13	सूर्य उ.फा. में 19/23, शनि अस्त 23/17, सूर्यषष्ठी, (E)
	14	7	मं.	23	9	अनु.	13	41	वि.	12	25	वृश्चि.			6	10	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	14	भ. 23/09 बाद, प्लूटो मार्गी 10/04,
	15	8	बु.	23	42	ज्ये.	14	34	प्री.	11	29	धनु	14	34	6	10	18	25	6	10	18	23	6	16	18	28	5	47	17	59	15	भ. 11/26 तक, मंगल स्वा. में 28/28, श्रीमहालक्ष्मी (F)
	16	9	गु.	24	58	मूल	16	12	आ.	11	10	धनु			6	11	18	23	6	10	18	22	6	16	18	27	5	48	17	58	16	सं. सूर्य कन्या में 29/29, मु. 30, पुण्यकाल अगले (G)
	17	10	शु.	26	49	पू.षा.	18	27	सौ.	11	22	मकर	25	5	6	11	18	22	6	11	18	20	6	17	18	26	5	48	17	56	17	
	18	11	श.	29	4	उ.षा.	21	8	शो.	11	57	मकर			6	12	18	21	6	11	18	19	6	17	18	24	5	48	17	55	18	भ. 15/56 से 29/04 तक, बुध पू.फा. में 6/33, (H)
	19	12	र.	–	–	श्रव.	24	5	अ.	12	47	मकर			6	13	18	20	6	12	18	18	6	17	18	23	5	49	17	54	19	श्रवण द्वादशी, श्रीवामन जयन्ती (वामन द्वादशी), (I)
	20	12	चं.	7	32	धनि.	27	7	सु.	13	44	कुम्भ	13	36	6	13	18	18	6	12	18	17	6	18	18	22	5	49	17	53	20	पंचक प्रारम्भ 13/36, सोमप्रदोष व्रत,
	21	13	मं.	10	3	शत.	30	6	धृ.	14	43	कुम्भ			6	14	18	17	6	13	18	16	6	18	18	21	5	50	17	52	21	
	22	14	बु.	12	30	पू.भा.	–	–	शू.	15	36	मीन	26	16	6	14	18	16	6	13	18	14	6	19	18	20	5	50	17	51	22	भ. 12/30 से 25/39 तक, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, (J)
	23	15	गु.	14	47	पू.भा.	8	57	गं.	16	22	मीन			6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	19	5	50	17	50	23	सूर्य सायन तुला में 8/38, विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ,
आश्विन कृष्ण	24	1	शु.	16	51	उ.भा.	11	36	वृ.	16	58	मीन			6	15	18	13	6	14	18	12	6	20	18	18	5	51	17	49	24	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, श्राद्ध (पितृ पक्ष) प्रारम्भ, (K)
	25	2	श.	18	38	रेव.	14	0	ध्रु.	17	21	मेष	14	0	6	16	18	12	6	15	18	11	6	20	18	16	5	51	17	48	25	पंचक समाप्त 14/00, द्वितीया का श्राद्ध,
	26	3	र.	20	7	अश्वि.	16	7	व्या.	17	30	मेष			6	17	18	11	6	15	18	10	6	20	18	15	5	51	17	47	26	भ. 7/22 से 20/07 तक, तृतीया का श्राद्ध,
	27	4	चं.	21	15	भर.	17	53	ह.	17	23	वृष	24	16	6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	46	27	सूर्य हस्त में 10/58, शनि हस्त 2 में 24/35, राहु (L)
	28	5	मं.	21	57	कृत्ति.	19	15	व.	16	57	वृष			6	18	18	8	6	16	18	7	6	21	18	13	5	52	17	45	28	बुध उ.फा. में 11/49, पंचमी का श्राद्ध,
	29	6	बु.	22	9	रोहि.	20	9	सि.	16	7	वृष			6	18	18	7	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	भ. 22/09 बाद, वक्री गुरु पू.भा. 4 में 14/05, चन्द्रषष्ठी, (M)
	30	7	गु.	21	47	मृग.	20	29	व्य.	14	52	मिथुन	8	23	6	19	18	6	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	42	30	भ 9/58 तक, बुध कन्या में 10/52, बुध पूर्व में अस्त (N)

(A) (अर्धरात्रि में अष्टमी-रोहिणी योग)(चन्द्रोदय 23घं. 6 मि.), जन्माष्टमी (जयन्ती योग), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 97), (B) गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (C) साम उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती, मेला डेरा बाबा श्रीगोसाईं आणां–कुराली (पं.), — (D) चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20 घं. 16 मि.), श्रीसिद्धिविनायक व्रत, (E) संवत्सरी महापर्व (जैन), (F) व्रतारम्भ, श्रीराधाष्टमी, (G) दिन मध्याह्न तक, श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), (H) पद्मा एकादशी व्रत (स्मा.), (I) पद्मा एकादशी व्रत (वै.), (J) पूर्णिमा–श्राद्ध (देखें पृ. 97), प्रोष्ठपदी श्राद्ध, श्रीसत्यनारायण व्रत, (K) प्रतिपदा का श्राद्ध (L) मूल 4, केतु आर्द्रा 2 में 24/11, चतुर्थी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (M) षष्ठी का श्राद्ध, (N) 20/20, सप्तमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी में),

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अक्तूबर, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
आश्विन कृष्ण	1	8	शु.	20	48	आर्द्रा	20	13	व.	13	8	मिथुन			6	20	18	4	6	18	18	4	6	23	18	10	5	54	17	41	1	अष्टमी का श्राद्ध,
	2	9	श.	19	10	पुन.	19	19	प.	10	53	कर्क	13	36	6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	9	5	54	17	40	2	भ. 30/03 बाद, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध.
	3	10	र.	16	56	पुष्य	17	49	शि./ सि.	8 28	8 55	कर्क			6	21	18	2	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	भ. 16/56 तक, दशमी का श्राद्ध.
	4	11	चं.	14	10	आश्ले.	15	46	सा.	25	18	सिंह	15	46	6	21	18	1	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), एकादशी का श्राद्ध.(A)
	5	12	मं.	10	57	मघा	13	19	शु.	21	22	सिंह			6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	मंगल विशा. में 19/09, बुध हस्त में 26/30. (B)
	6	13/ 14	बु.	7 27	27 49	पू.फा.	10	34	शु.	17	16	कन्या	15	51	6	23	17	58	6	20	17	58	6	25	18	4	5	56	17	36	6	भ. 7/27 से 17/38 तक, (C) चतुर्दशी तिथिक्षय,
	7	30	गु.	24	14	उ.फा./ हस्त	7 28	43 57	ब्र.	13	8	कन्या			6	23	17	57	6	21	17	57	6	26	18	3	5	56	17	35	7	महालय अमावस, सर्वपितृ अमावस, अज्ञात मृत्युतिथि (D)
आश्विन शुक्ल	8	1	शु.	20	53	चित्रा	26	28	ऐं./ वै.	9 29	6 20	तुला	15	40	6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	57	17	34	8	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र वक्री 12/35, शारद (E)
	9	2	श.	17	57	स्वा.	24	27	वि.	25	57	तुला			6	25	17	55	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	10	3	र.	15	37	विशा.	23	3	प्री.	23	6	वृश्चि.	17	20	6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	57	17	32	10	भ. 26/48 बाद, सूर्य चित्रा मे 23/55.
	11	4	चं.	14	0	अनु.	22	25	आ.	20	53	वृश्चि.			6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	भ. 14/00 तक, उपाङ्गललिता व्रत,
	12	5	मं.	13	13	ज्ये.	22	38	सौ.	19	20	धनु	22	38	6	26	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	
	13	6	बु.	13	18	मूल	23	40	शो.	18	27	धनु			6	27	17	50	6	24	17	50	6	29	17	57	5	59	17	29	13	बुध चित्रा में 15/38, सरस्वती आवाहन,
	14	7	गु.	14	13	पू.षा.	25	29	अ.	18	12	धनु			6	28	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	28	14	भ. 14/13 से 27/02 तक, सरस्वती पूजन,
	15	8	शु.	15	51	उ.षा.	27	54	सु.	18	28	मकर	8	2	6	28	17	48	6	25	17	48	6	30	17	55	6	0	17	27	15	श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, सरस्वती के लिए बलिदान,
	16	9	श.	18	0	श्रव.	—	—	धृ.	19	8	मकर			6	29	17	46	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	26	16	शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ 10/19, महानवमी (F)
	17	10	र.	20	28	श्रव.	6	43	शू.	20	0	कुम्भ	20	13	6	30	17	45	6	27	17	46	6	31	17	53	6	1	17	25	17	पंचक प्रारम्भ 20/13, सं. सूर्य तुला में 17/27, मु. 30,(G)
	18	11	चं.	23	1	धनि.	9	44	गं.	20	57	कुम्भ			6	31	17	44	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	18	भ. 9/44 से 23/01 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत(स.),(H)
	19	12	मं.	25	29	शत.	12	44	वृ.	21	49	कुम्भ			6	31	17	43	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	19	मंगल वृश्चिक में 26/21, शुक्र पश्चिम में अस्त 10/19,(I)
	20	13	बु.	27	42	पू.भा.	15	34	ध्रु.	22	32	मीन	8	53	6	32	17	42	6	29	17	43	6	33	17	50	6	2	17	23	20	प्रदोष व्रत,
	21	14	गु.	29	35	उ.भा.	18	7	व्या.	23	0	मीन			6	33	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	21	भ. 29/35 बाद, बुध स्वा. में 12/42,
	22	15	शु.	—	—	रेव.	20	20	ह.	23	11	मेष	20	20	6	33	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	3	17	21	22	भ. 18/21 तक, पंचक समाप्त 20/20, शरत्पूर्णिमा, (J)
	23	15	श.	7	6	अश्वि.	22	11	व.	23	6	मेष			6	34	17	39	6	31	17	40	6	34	17	47	6	4	17	20	23	सूर्य सायन वृश्चिक में 18/05, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ,
कार्तिक कृष्ण	24	1	र.	8	15	भर.	23	41	सि.	22	43	वृष	30	0	6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	5	17	19	24	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल अनु मे 19/05, (K)
	25	2	चं.	9	1	कृत्ति.	24	49	व्य.	22	3	वृष			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	46	6	5	17	19	25	भ. 21/13 बाद, शनि हस्त 3 में 9/14, वक्री यूरेनस (L)
	26	3	मं.	9	26	रोहि.	25	35	व.	21	5	वृष			6	36	17	36	6	33	17	37	6	36	17	45	6	6	17	18	26	भ. 9/26 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (M)
	27	4	बु.	9	27	मृग.	25	58	प.	19	49	मिथुन	13	49	6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	
	28	5	गु.	9	5	आर्द्रा	25	57	शि.	18	15	मिथुन			6	38	17	34	6	34	17	35	6	37	17	43	6	7	17	16	28	
	29	6	शु.	8	17	पुन.	25	30	सि.	16	19	कर्क	19	39	6	39	17	33	6	35	17	35	6	38	17	42	6	7	17	15	29	भ. 8/17 से 19/40 तक, बुध विशा. में 19/23.
	30	7/ 8	श.	7 29	3 22	पुष्य	24	37	सा.	14	2	कर्क			6	39	17	32	6	35	17	34	6	39	17	42	6	8	17	15	30	अहोई अष्टमी (पं.), अष्टमी तिथिक्षय,
	31	9	र.	27	15	आश्ले.	23	18	शु.	11	24	सिंह	23	18	6	40	17	31	6	36	17	33	6	39	17	41	6	9	17	14	31	

शुक्र अस्त
19 अक्तूबर

(A) द्वादशी का श्राद्ध (देखें पृ 98), सन्यासियों का श्राद्ध, (B) त्रयोदशी का श्राद्ध (देखें पृ. 98), भौमप्रदोष व्रत, (C) चतुर्दशी का श्राद्ध, अपमृत्यु वालों का श्राद्ध, (D) एवं चतुर्दशी मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, गजच्छाया पर्व (7 घ 43 मि बाद), (E) नवरात्रारम्भ (देखें पृ 98) नाना–नानी का महालय श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (F) (पूजा, उपवास एवं बलिदान के लिए), सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त, (G) पुण्यकाल 11/03 बाद, बुध तुला में 12/58, विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजिता–पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (H) भरतमिलाप, (I) शनि उदित 6/38, (J) कोजागर व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, [illegible] कार्तिकस्नान प्रारम्भ, (K) [illegible] (L) [illegible] 27/10, (M) (करवा चौथ)(चन्द्रोदय 19 घ 53 मि).

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) नवम्बर, सन् 2010 ई.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्त्तिक कृष्ण	1	10	चं.	24	46	मघा	21	35	शु./	8	25	सिंह			6	41	17	31	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	भ. 14/00 से 24/46 तक, वक्री गुरु पू.भा. 3 कुम्भ में (A)
									ब्र.	29	9																					शुक्र उदित–3 नवम्बर
	2	11	मं.	21	58	पू.फा.	19	34	ऐं.	25	39	कन्या	25	2	6	42	17	30	6	37	17	31	6	41	17	39	6	10	17	13	2	रमा एकादशी व्रत (स.),
	3	12	बु.	19	0	उ.फा.	17	21	वै.	22	1	कन्या			6	43	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	3	शुक्र पूर्व में उदित 23/28, गोवत्स द्वादशी, यमप्रीत्यर्थ (B)
	4	13	गु.	15	58	हस्त	15	4	वि.	18	21	तुला	25	57	6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	भ. 15/58 से 26/30 तक, बुध वृश्चिक में 30/16, (C)
	5	14	शु.	13	2	चित्रा	12	52	प्री.	14	47	तुला			6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), दीपावली, (D)
	6	30	श.	10	22	स्वा.	10	56	आ.	11	26	वृश्चि.	27	45	6	45	17	27	6	40	17	29	6	44	17	37	6	12	17	10	6	सूर्य विशा. में 18/36, शुक्रबाल्य समाप्त 23/28, (E)
कार्त्तिक शुक्ल	7	1/	र.	8	6	विशा.	9	25	सौ./	8	26	वृश्चि.			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	7	कार्त्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध अनु. (F)
		2		30	25				शो.	29	53																					द्वितीया तिथिक्षय,
	8	3	चं.	29	25	अनु.	8	28	अ.	27	53	वृश्चि.			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	14	17	9	8	बुध पश्चिम में उदित 25/50, श्रीविश्वकर्मा पूजा,
	9	4	मं.	29	12	ज्ये.	8	12	सु.	26	29	धनु	8	12	6	47	17	25	6	43	17	27	6	46	17	35	6	14	17	9	9	भ. 17/18 से 29/12 तक,
	10	5	बु.	29	46	मूल	8	42	धृ.	25	42	धनु			6	48	17	24	6	44	17	26	6	46	17	34	6	15	17	8	10	ज्ञानपंचमी (जैन),
	11	6	गु.	–	–	पू.षा.	9	57	शू.	25	29	मकर	16	23	6	49	17	23	6	44	17	25	6	47	17	34	6	16	17	8	11	मंगल ज्ये. में 30/13, सूर्यषष्ठी (बिहार),
	12	6	शु.	7	5	उ.षा.	11	54	गं.	25	46	मकर			6	50	17	23	6	45	17	25	6	48	17	33	6	16	17	7	12	
	13	7	श.	9	0	श्रव.	14	25	वृ.	26	25	कुम्भ	27	49	6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	भ. 9/00 से 22/11 तक, पंचक प्रारम्भ 27/49,
	14	8	र.	11	21	धनि.	17	16	ध्रु.	27	15	कुम्भ			6	52	17	22	6	47	17	24	6	49	17	32	6	18	17	6	14	गोपाष्टमी, बालदिवस,
	15	9	चं.	13	53	शत.	20	16	व्या.	28	7	कुम्भ			6	53	17	21	6	47	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	16	10	मं.	16	22	पू.भा.	23	9	ह.	28	52	मीन	16	27	6	53	17	21	6	48	17	23	6	51	17	32	6	19	17	6	16	भ. 29/29 बाद, सं. सूर्य वृश्चिक में 17/17, मु. 30,(G)
	17	11	बु.	18	36	उ.भा.	25	46	व.	29	22	मीन			6	54	17	20	6	49	17	23	6	52	17	31	6	20	17	5	17	भ. 18/36 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), (H)
	18	12	गु.	20	26	रेव.	27	57	सि.	29	31	मेष	27	57	6	55	17	20	6	50	17	22	6	52	17	31	6	21	17	5	18	पंचक समाप्त 27/57, गुरु मार्गी 22/24, शुक्र मार्गी (I)
	19	13	शु.	21	47	अश्वि.	29	41	व्य.	29	18	मेष			6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	19	सूर्य अनु. में 24/39, वैकुण्ठ चतुर्दशी(देखें पृ. 98), प्रदोषव्रत,
	20	14	श.	22	37	भर.	30	54	व.	28	42	मेष			6	57	17	19	6	51	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	भ. 22/37 बाद,
	21	15	र.	22	57	कृत्ति.	–	–	प.	27	42	वृष	13	8	6	58	17	18	6	52	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	भ. 10/47 तक, श्रीगुरुनानक जयन्ती, कार्त्तिक पूर्णिमा, (J)
मार्गशीर्ष कृष्ण	22	1	चं.	22	49	कृत्ति.	7	40	शि.	26	22	वृष			6	59	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	24	17	4	22	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन धनु में 15/45,
	23	2	मं.	22	18	रोहि.	7	59	सि.	24	43	मिथुन	20	0	6	59	17	18	6	54	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	23	
	24	3	बु.	21	24	मृग.	7	56	सा.	22	48	मिथुन			7	0	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ. 9/51 से 21/24 तक, शनि हस्त 4 में 29/42, (K)
	25	4	गु.	20	13	आर्द्रा/	7	34	शु.	20	38	कर्क	25	5	7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	बुध मूल धनु में 28/01, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
						पुन.	30	54																								
	26	5	शु.	18	45	पुष्य	29	59	शु.	18	15	कर्क			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	27	17	3	26	
	27	6	श.	17	2	आश्ले.	28	51	ब्र.	15	40	सिंह	28	51	7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	27	भ. 17/02 से 28/05 तक, मंगल अस्त 10/25,
	28	7	र.	15	8	मघा	27	32	ऐं.	12	55	सिंह			7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	श्रीकालाष्टमी (श्रीभैरवाष्टमी),
	29	8	चं.	13	2	पू.फा.	26	4	वै./	10	2	सिंह			7	4	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	मंगल मूल धनु में 30/25, राहु मूल 3, केतु आर्द्रा 1 (L)
									वि.	31	3																					
	30	9	मं.	10	50	उ.फा.	24	30	प्री.	27	59	कन्या	7	41	7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	30	भ. 21/41 बाद,

(A) 12/53, (B) दीपदान, प्रदोष व्रत, (C) धनत्रयोदशी, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.) (देखें पृ. 98), (D) श्रीमहालक्ष्मी–पूजा, (E) वक्री शुक्र चित्रा मे 20/06, शनैश्चरी अमा, गोवर्धनपूजा, बलि पूजा, अन्नकूट, गौक्रीड़ा, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), (F) मे 10/57, नेप्च्यून मार्गी 11/33, यम द्वितीया, भाई दूज, (G) पुण्यकाल 10/53 बाद, बुध ज्ये. में 11/16, (H) भीष्मपंचक प्रारम्भ, (I) 26/48, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि समाप्त, (J) कार्त्तिकस्नान समाप्त,त्रिपुरोत्सव, भीष्मपंचक समाप्त, श्री सत्यनारायण व्रत, मेला पुष्कर (राज.), (K) प्लूटो मूल 4 में 14/09, (L) में 21/54.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	10/ 11	बु.	8 30	33 16	हस्त	22	54	आ.	24	54	कन्या			7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	भ. 8/33 तक, शुक्र स्वा. में 20/27, उत्पन्ना एकादशी(A) एकादशी तिथिक्षय,
	2	12	गु.	28	4	चित्रा	21	22	सौ.	21	53	तुला	10	7	7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	सूर्य ज्ये. में 29/01, उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.),
	3	13	शु.	26	4	स्वा.	20	0	शो.	18	59	तुला			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	भ. 26/04 बाद, प्रदोष व्रत,
	4	14	श.	24	22	विशा.	18	53	अ.	16	18	वृश्चि.	13	8	7	9	17	16	7	3	17	20	7	4	17	29	6	32	17	3	4	भ. 13/13 तक,
	5	30	र.	23	5	अनु.	18	9	सु.	13	55	वृश्चि.			7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	
मार्गशीर्ष शुक्ल	6	1	चं.	22	19	ज्ये.	17	55	धृ.	11	55	धनु	17	55	7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गुरु पू.भा. 4 मीन में 9/08,(B)
	7	2	मं.	22	10	मूल	18	14	शू.	10	21	धनु			7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	34	17	4	7	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	8	3	बु.	22	39	पू.षा.	19	11	गं.	9	17	मकर	25	32	7	12	17	17	7	6	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	8	
	9	4	गु.	23	47	उ.षा.	20	46	वृ.	8	42	मकर			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	भ. 11/13 से 23/47 तक,
	10	5	शु.	25	31	श्रव.	22	56	ध्रु.	8	37	मकर			7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	36	17	4	10	बुध वक्री 17/34,
	11	6	श.	27	43	धनि.	25	32	व्या.	8	57	कुम्भ	12	11	7	14	17	17	7	8	17	21	7	9	17	30	6	37	17	5	11	पंचक प्रारम्भ 12/11, स्कन्द–गुह–चम्पा षष्ठी,
	12	7	र.	30	12	शत.	28	26	ह.	9	35	कुम्भ			7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	भ. 30/12 बाद, मित्र सप्तमी,
	13	8	चं.	—	—	पू.भा.	—	—	व.	10	24	मीन	24	39	7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	38	17	5	13	भ. 19/28 तक,
	14	8	मं.	6	44	पू.भा.	7	23	सि.	11	13	मीन			7	16	17	18	7	10	17	21	7	11	17	31	6	39	17	6	14	बुध पश्चिम में अस्त 19/44,
	15	9	बु.	11	5	उ.भा.	10	11	व्य.	11	53	मीन			7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	
	16	10	गु.	13	2	रेव.	12	36	व.	12	15	मेष	12	36	7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	भ. 25/44 बाद, पंचक समाप्त 12/36, सं. सूर्य मूल (C)
	17	11	शु.	14	26	अश्वि.	14	31	प.	12	13	मेष			7	18	17	19	7	11	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	भ. 14/26 तक, मंगल पू.षा. में 21/21, श्रीगीता (D)
	18	12	श.	15	12	भर.	15	49	शि.	11	42	वृष	22	2	7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	32	6	41	17	7	18	शनिप्रदोष व्रत,
	19	13	र.	15	19	कृत्ति.	16	29	सि.	10	41	वृष			7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	
	20	14	चं.	14	48	रोहि.	16	32	सा./ शु.	9 31	10 12	मिथुन	28	21	7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	20	भ. 14/48 से 26/16 तक, श्रीदत्त जयन्ती, (E)
	21	15	मं.	13	43	मृग.	16	3	शु.	28	50	मिथुन			7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	शुक्र विशाखा में 16/43, सूर्य सायन मकर में 29/09,(F)
पौष कृष्ण	22	1	बु.	12	10	आर्द्रा	15	7	ब्र.	26	10	मिथुन			7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	22	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	23	2	गु.	10	16	पुन.	13	51	ऐं.	23	15	कर्क	8	12	7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	भ. 21/11 बाद, वक्री बुध ज्ये. वृश्चिक मे 8/11,
	24	3/ 4	शु.	8 29	6 48	पुष्य	12	21	वै.	20	12	कर्क			7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	24	भ. 8/06 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चतुर्थी तिथिक्षय,
	25	5	श.	27	26	आश्ले.	10	42	वि.	17	3	सिंह	10	42	7	22	17	23	7	16	17	26	7	17	17	36	6	45	17	11	25	
	26	6	र.	25	6	मघा	9	2	प्री.	13	54	सिंह			7	22	17	23	7	16	17	27	7	18	17	36	6	45	17	11	26	भ. 25/06 बाद, बुध पूर्व में उदित 27/39, (G)
	27	7	चं.	22	52	पू.फा./ उ.फा.	7 29	25 55	आ.	10	49	कन्या	13	2	7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	भ. 11/59 तक,
	28	8	मं.	20	48	हस्त	28	36	सौ./ शो.	7 28	49 59	कन्या			7	23	17	25	7	17	17	28	7	18	17	38	6	46	17	12	28	
	29	9	बु.	18	56	चित्रा	27	30	अ.	26	19	तुला	16	1	7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	29	भ. 30/08 बाद, सूर्य पू.षा. में 10/17,
	30	10	गु.	17	20	स्वा.	26	40	सु.	23	53	तुला			7	24	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	14	30	भ. 17/20 तक, बुध मार्गी 12/51,
	31	11	शु.	16	2	विशा.	26	8	धृ.	21	40	वृश्चि.	20	14	7	24	17	27	7	18	17	30	7	19	17	40	6	47	17	14	31	सफला एकादशी व्रत (स.).

(A) व्रत (स्मा.), (B) यूरेनस मार्गी 7/22, (C) धनु में 7/58, मु. 30, पुण्यकाल 14/21 तक, (D) जयन्ती, मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), (E) श्रीसत्यनारायण व्रत, (F) उत्तर अयन एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
(G) [illegible]

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	12	श.	15	4	अनु.	25	57	शू.	19	44	वृश्चि.			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	शुक्र वृश्चिक में 16/44, शनिप्रदोष व्रत, इंग्लिश (A)
	2	13	र.	14	28	ज्ये.	26	9	गं.	18	6	धनु	26	9	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 14/28 से 26/22 तक, सूर्यग्रहण–4 जनवरी
	3	14	चं.	14	16	मूल	26	46	वृ.	16	47	धनु			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	मंगल उ.षा. में 29/03, ग्रहणवेध,
	4	30	मं.	14	32	पू.षा.	27	50	ध्रु.	15	50	धनु			7	25	17	30	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	शुक्र अनु. में 26/29, भौमवती अमा, खण्डग्रास सूर्यग्रहण (B)
पौष शुक्ल	5	1	बु.	15	17	उ.षा.	29	22	व्या.	15	14	मकर	10	10	7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	18	5	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, ग्रहणवेध,
	6	2	गु.	16	32	श्रव.	31	22	ह.	15	1	मकर			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	गुरु उ.भा. 1 में 21/16, ग्रहणवेध,
	7	3	शु.	18	15	धनि.	—	—	व.	15	10	कुम्भ	20	32	7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	भ. 31/19 बाद, पंचक प्रारम्भ 20/32, बुध मूल धनु में (C)
	8	4	श.	20	23	धनि.	9	48	सि.	15	38	कुम्भ			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 20/23 तक, मंगल मकर में 12/02,
	9	5	र.	22	49	शत.	12	34	व्य.	16	20	कुम्भ			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	
	10	6	चं.	25	23	पू.भा.	15	31	व.	17	10	मीन	8	47	7	25	17	34	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	
	11	7	मं.	27	52	उ.भा.	18	29	प.	17	59	मीन			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 27/52 बाद, सूर्य उ.षा. में 12/12,
	12	8	बु.	30	4	रेव.	21	14	शि.	18	39	मेष	21	14	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 16/58 तक, पंचक समाप्त 21/14,
	13	9	गु.	—	—	अश्वि.	23	34	सि.	19	0	मेष			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	लोहड़ी (पं.),
	14	9	शु.	7	44	भर.	25	18	सा.	18	55	मेष			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 18/44, मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन (D)
	15	10	श.	8	45	कृत्ति.	26	20	शु.	18	17	वृष	7	38	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 20/53 बाद, यूरेनस उ.भा. 1 में 11/20, पोंगल (E)
	16	11	र.	9	1	रोहि.	26	37	शु.	17	4	वृष			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 9/01 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	17	12/ 13	चं.	8 31	29 13	मृग.	26	10	ब्र.	15	14	मिथुन	14	29	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	27	17	शुक्र ज्ये. में 24/01, सोमप्रदोष व्रत, त्रयोदशी तिथिक्षय,
	18	14	मं.	29	18	आर्द्रा	25	3	ऐं.	12	51	मिथुन			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	भ. 29/18 बाद,
	19	15	बु.	26	51	पुन.	23	23	वै./ वि.	9 30	57 39	कर्क	17	50	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 16/04 तक, बुध पू.षा. में 13/02, पौषी पूर्णिमा, (F)
माघ कृष्ण	20	1	गु.	24	1	पुष्य	21	18	प्री.	27	4	कर्क			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	55	6	49	17	29	20	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल श्रव. में 31/19, नेप्च्यून (G)
	21	2	शु.	20	57	आश्ले.	18	59	आ.	23	19	सिंह	18	59	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	55	6	49	17	30	21	
	22	3	श.	17	49	मघा	16	34	सौ.	19	31	सिंह			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	भ. 7/23 से 17/49 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी (H)
	23	4	र.	14	45	पू.फा.	14	14	शो.	15	48	कन्या	19	40	7	23	17	46	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	
	24	5	चं.	11	55	उ.फा.	12	6	अ.	12	16	कन्या			7	22	17	47	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 14/35,
	25	6/ 7	मं.	9 31	24 19	हस्त	10	18	सु./ धृ.	8 30	59 4	तुला	21	33	7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	भ. 9/24 से 20/22 तक, सप्तमी तिथिक्षय,
	26	8	बु.	29	43	चित्रा	8	56	शू.	27	31	तुला			7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	गुरु उ.भा. 2 में 15/44, शनि वक्री 11/40, भारत (I)
	27	9	गु.	28	38	स्वा.	8	2	गं.	25	24	वृश्चि.	25	42	7	21	17	49	7	16	17	52	7	19	18	0	6	47	17	34	27	
	28	10	शु.	28	4	विशा.	7	39	वृ.	23	40	वृश्चि.			7	21	17	50	7	16	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 16/21 से 28/04 तक, बुध उ.षा. में 24/14,
	29	11	श.	28	1	अनु.	7	47	ध्रु.	22	20	वृश्चि.			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	36	29	शुक्र मूल धनु में 28/00, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	30	12	र.	28	24	ज्ये.	8	23	व्या.	21	22	धनु	8	23	7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	3	6	46	17	36	30	बुध मकर में 29/54,
	31	13	चं.	29	14	मूल	9	25	ह.	20	44	धनु			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	भ. 29/14 बाद, राहु मूल 2, केतु मृग. 4 में 19/17,(J)

(A) नववर्ष (सन् 2011 ई.) प्रारम्भ, (B) (भारत में दृश्य)(देखें पृ. 17), (C) 24/22, ग्रहणवेध, (D) 10/42 तक, मकर संक्रान्ति, (E) (द. भा.), (F) माघस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, (G) धनि. 4 में 16/06, सूर्य सायन कुम्भ में 15/48, (H) व्रत (चन्द्रोदय 20 घं. 47 मि.), (I) गणतन्त्र दिवस, (J) सोमप्रदोष व्रत, श्रीमेरु त्रयोदशी (जैन),

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) फरवरी, सन् 2011 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ कृष्ण	1	14	मं.	30	26	पू.षा.	10	51	व.	20	25	मकर	17	16	7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 17/50 तक,
	2	30	बु.	–	–	उ.षा.	12	40	सि.	20	22	मकर			7	18	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	45	17	39	2	मौनी अमावस,
	3	30	गु.	8	0	श्रव.	14	48	व्य.	20	34	कुम्भ	28	0	7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	पंचक प्रारम्भ 28/00, महोदय योग (8घं. 00मि. तक),
माघ शुक्ल	4	1	शु.	9	55	धनि.	17	15	व.	21	1	कुम्भ			7	16	17	56	7	12	17	58	7	15	18	7	6	44	17	40	4	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	5	2	श.	12	6	शत.	19	59	प.	21	41	कुम्भ			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	
	6	3	र.	14	32	पू.भा.	22	53	शि.	22	29	मीन	16	9	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 27/49 बाद, सूर्य धनि. में 17/40, मंगल धनि. में (A)
	7	4	चं.	17	6	उ.भा.	25	54	सि.	23	21	मीन			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 17/06 तक,
	8	5	मं.	19	39	रेव.	28	51	सा.	24	12	मेष	28	51	7	14	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	पंचक समाप्त 28/51, श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी, (B)
	9	6	बु.	22	1	अश्वि.	–	–	शु.	24	53	मेष			7	13	18	1	7	8	18	2	7	12	18	10	6	41	17	44	9	
	10	7	गु.	24	1	अश्वि.	7	33	शु.	25	16	मेष			7	12	18	2	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	भ. 24/01 बाद, शुक्र पू.षा. में 22/01, रथ (आरोग्य) (C)
	11	8	शु.	25	25	भर.	9	50	ब्र.	25	13	वृष	16	19	7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	40	17	45	11	भ. 12/43 तक, भीष्माष्टमी,
	12	9	श.	26	6	कृत्ति.	11	30	ऐं.	24	37	वृष			7	10	18	3	7	6	18	5	7	10	18	12	6	39	17	46	12	गुरु उ.भा. 3 में 7/13,
	13	10	र.	25	58	रोहि.	12	25	वै.	23	23	मिथुन	24	34	7	9	18	4	7	5	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 7/43, मु. 45, पुण्यकाल 14/05 तक,
	14	11	चं.	24	58	मृग.	12	31	वि.	21	29	मिथुन			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 13/28 से 24/58 तक, बुध धनि. में 20/37, (D)
	15	12	मं.	23	10	आर्द्रा	11	48	प्री.	18	56	कर्क	28	46	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	15	6	37	17	48	15	मंगल कुम्भ में 16/47, भीष्म द्वादशी,
	16	13	बु.	20	39	पुन.	10	20	आ.	15	48	कर्क			7	7	18	7	7	3	18	8	7	7	18	15	6	36	17	48	16	प्रदोष व्रत,
	17	14	गु.	17	34	पुष्य/ आश्ले.	8 29	14 38	सौ.	12	11	सिंह	29	38	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 17/34 से 27/50 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	18	15	शु.	14	5	मघा	26	46	शो./ अ.	8 27	11 58	सिंह			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	35	17	49	18	बुध कुम्भ में 17/32, सूर्य सायन मीन में 29/55, (E)
फाल्गुन कृष्ण	19	1/ 2	श.	10 30	23 39	पू.फा.	23	47	सु.	23	41	कन्या	29	2	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य शत. में 22/13, द्वितीया तिथिक्षय,
	20	3	र.	27	4	उ.फा.	20	53	धृ.	19	28	कन्या			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	भ. 16/51 से 27/04 तक,
	21	4	चं.	23	49	हस्त	18	17	शू.	15	29	तुला	29	8	7	2	18	11	6	59	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	22	5	मं.	21	3	चित्रा	16	6	गं.	11	50	तुला			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	बुध शत. में 11/28, शुक्र उ.षा. में 9/57,
	23	6	बु.	18	53	स्वा.	14	31	वृ./ ध्रु.	8 29	38 59	तुला			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	30	17	52	23	भ. 18/53 से 30/09 तक, मंगल शत. में 27/22,
	24	7	गु.	17	24	विशा.	13	35	व्या.	27	53	वृश्चि.	7	45	6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	शुक्र मकर में 30/13,
	25	8	शु.	16	39	अनु.	13	22	ह.	26	21	वृश्चि.			6	58	18	14	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	54	25	
	26	9	श.	16	35	ज्ये.	13	50	व.	25	21	धनु	13	50	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	भ. 28/52 बाद,
	27	10	र.	17	10	मूल	14	56	सि.	24	49	धनु			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 17/10 तक, गुरु उ.भा. 4 में 11/06,
	28	11	चं.	18	18	पू.षा.	16	34	व्य.	24	41	मकर	23	3	6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	विजया एकादशी व्रत (स.),

(A) 30/05, बुध श्रव. में 17/14, बुध पूर्व में अस्त 21/10, गौरी तृतीया (गौतरी), तिल–वरद–कुन्द चतुर्थी, (B) सरस्वती–पूजा, (C) सप्तमी (पहले अरुणोदय वाली), मर्यादा महोत्सव (जैन), (D) जया एकादशी व्रत (स.), (E) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, माघी पूर्णिमा, जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी, माघस्नान समाप्त.

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) मार्च, सन् 2011 ई.

मास पक्ष	[illegible]	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फा. कृ.	1	12	मं.	19	52	उ.षा.	18	38	व.	24	52	मकर			6	53	18	17	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	1	बुध पू.भा. में 15/30,
	2	13	बु.	21	46	श्रव.	21	1	प.	25	17	मकर			6	52	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	2	भ. 21/46 बाद, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (देखें पृ. 98).(A)
	3	14	गु.	23	56	धनि.	23	39	शि.	25	52	कुम्भ	10	18	6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	भ. 10/51 तक, पंचक प्रारम्भ 10/18,
	4	30	शु.	26	16	शत.	26	27	सि.	26	36	कुम्भ			6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	सूर्य पू.भा. में 28/29,
फाल्गुन शुक्ल	5	1	श.	28	43	पू.भा.	29	22	सा.	27	26	मीन	22	38	6	49	18	19	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रव. में 17/43,
	6	2	र.	–	–	उ.भा.	–	–	शु.	28	18	मीन			6	48	18	20	6	45	18	20	6	50	18	26	6	20	17	58	6	चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध मीन में 20/18, जन्मदिन (B)
	7	2	चं.	7	14	उ.भा.	8	21	शु.	29	11	मीन			6	47	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	
	8	3	मं.	9	44	रेव.	11	18	ब्र.	29	58	मेष	11	18	6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	17	59	8	भ. 22/55 बाद, पंचक समाप्त 11/18, बुध उ.भा. में (C)
	9	4	बु.	12	7	अश्वि.	14	8	ऐं.	30	35	मेष			6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	9	भ. 12/07 तक,
	10	5	गु.	14	13	भर.	16	42	वै.	–	–	वृष	23	17	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	29	6	17	18	0	10	होलाष्टक 13 से 19 मार्च
	11	6	शु.	15	53	कृत्ति.	18	50	वै.	6	56	वृष			6	42	18	24	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	11	
	12	7	श.	16	58	रोहि.	20	24	वि./ प्री.	6 30	52 17	वृष			6	41	18	24	6	39	18	24	6	44	18	30	6	15	18	1	12	भ. 16/58 से 29/09 तक, मंगल पू.भा. में 24/57, (D)
	13	8	र.	17	20	मृग.	21	15	आ.	29	6	मिथुन	8	55	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	13	18	2	13	गुरु रेव. 1 में 19/35, होलाष्टक प्रारम्भ,
	14	9	चं.	16	52	आर्द्रा	21	18	सौ.	27	16	मिथुन			6	38	18	26	6	36	18	25	6	42	18	31	6	12	18	2	14	सं. सूर्य मीन में 28/33, मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन (E)
	15	10	मं.	15	35	पुन.	20	32	शो.	24	47	कर्क	14	47	6	37	18	26	6	35	18	25	6	41	18	31	6	11	18	3	15	भ. 26/32 बाद, बुध रेव. में 22/26,
	16	11	बु.	13	30	पुष्य	18	59	अ.	21	41	कर्क			6	36	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 13/30 तक, शुक्र धनि. में 22/50, प्लूटो पू.षा. 1 (F)
	17	12	गु.	10	42	आश्ले.	16	47	सु.	18	2	सिंह	16	47	6	35	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	प्रदोष व्रत,
	18	13/ 14	शु.	7 27	21 37	मघा	14	4	धृ.	13	59	सिंह			6	33	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	भ. 27/37 बाद, सूर्य उ.भा. में 12/54, चतुर्दशी तिथिक्षय,
	19	15	श.	23	40	पू.फा.	11	0	शू./ गं.	9 29	40 13	कन्या	16	13	6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	भ. 13/39 तक, होलिकादहन, जन्मदिन श्रीचैतन्य (G)
चैत्र कृष्ण	20	1	र.	19	43	उ.फा./ हस्त	7 28	49 42	वृ.	24	48	कन्या			6	31	18	30	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	20	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन मेष में 28/50, (H)
	21	2	चं.	15	57	चित्रा	25	52	ध्रु.	20	36	तुला	15	15	6	30	18	30	6	28	18	29	6	34	18	34	6	5	18	6	21	भ. 26/15 बाद,
	22	3	मं.	12	33	स्वा.	23	30	व्या.	16	44	तुला			6	28	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	22	भ. 12/33 तक, शुक्र कुम्भ में 12/40, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	23	4	बु.	9	42	विशा.	21	45	ह.	13	21	वृश्चि.	16	7	6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	23	गुरुवार्धक्य प्रारम्भ 8/45,
	24	5/ 6	गु.	7 30	32 9	अनु.	20	44	व.	10	32	वृश्चि.			6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	24	भ. 30/09 बाद, यूरेनस उ.भा. 2 में 6/56, मेला (I) षष्ठी तिथिक्षय,
	25	7	शु.	29	36	ज्ये.	20	31	सि.	8	21	धनु	20	31	6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	25	भ. 17/53 तक, मंगल मीन में 18/37,
	26	8	श.	29	50	मूल	21	6	व्य./ व.	6 29	50 56	धनु			6	24	18	33	6	23	18	32	6	28	18	37	6	0	18	8	26	गुरु अस्त 8/45, श्रीशीतलाष्टमी. गुरु अस्त 26 मार्च
	27	9	र.	–	–	पू.षा.	22	26	प.	29	36	मकर	28	51	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	37	5	59	18	8	27	शुक्र शत. में 26/05, गुरु रेव. 2 में 18/12,
	28	9	चं.	6	48	उ.षा.	24	22	शि.	29	43	मकर			6	21	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	28	भ. 19/34 बाद, बुध अश्वि. मेष में 19/39,
	29	10	मं.	8	21	श्रव.	26	47	सि.	30	12	मकर			6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	29	भ. 8/21 तक, मंगल उ.भा. में 24/54
	30	11	बु.	10	22	धनि.	29	31	सा.	–	–	कुम्भ	16	7	6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	10	30	पंचक प्रारम्भ 16/07, बुध वक्री 26/19, पापमोचिनी (J)
	31	12	गु.	12	39	शत.	–	–	सा.	6	54	कुम्भ			6	17	18	37	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	31	सूर्य रेव. में 23/44, प्रदोष व्रत,

(A) प्रदोष व्रत, (B) श्री रामकृष्ण परमहंस, (C) 13/55, (D) बुध पश्चिम में उदित 8/34, (E) मध्याह्न तक, (F) में 24/36, आमला एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी (G) महाप्रभु, होलाष्टक समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) महाविषुवदिन, उत्तरगोल प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (I) श्रीशीतला माता (कुराली) पं., (J) एकादशी व्रत (स.).

श्री वि. सं. 2067 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) अप्रैल, सन् 2011 ई.

मास पक्ष	अंग्रेज़ी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	13	शु.	15	6	शत.	8	25	शु.	7	45	मीन	28	39	6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	1	भ. 15/06 से 28/21 तक, बुध पश्चिम में अस्त (A)
	2	14	श.	17	35	पू.भा.	11	24	शु.	8	40	मीन			6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	2	वक्री बुध रेव. में 29/31, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा),
	3	30	र.	20	2	उ.भा.	14	22	ब्र.	9	34	मीन			6	14	18	38	6	13	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	3	चान्द्र संवत्सर (2067 वि.) पूर्ण.

(A) 26/47, वारुणी पर्व (8 घं. 25 मि. तक).

पृष्ठ संख्या 144 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मूल्य Rs. 350/– +
डाकव्यय Rs. 50/–

लघु लग्नसारणी

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(अप्रैल, 2010 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी–प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्व लग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह 'लघु लग्नसारणी' उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फ़लादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह 'लघु लग्नसारणी' सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 ज़िला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि 12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। ध्यान रहे– भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्व लग्नसारणी) में भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहां दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अं.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह 'लघु लग्नसारणी' अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित पूरा मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D द्वारा भेजिए। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन 2010 ई.

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2010 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	आर्द्रा	9	20	14	42	20	3	1	23
1	पुन.	6	42	12	1	17	20	22	38
2	पुष्य	3	56	9	14	14	33	19	52
3	आश्ले.	1	12	6	32	11	53	17	15
3/ 4	मघा	22	38	4	2	9	28	14	55
4/ 5	पू.फा.	20	23	1	54	7	26	13	0
5/ 6	उ.फा.	18	36	0	14	5	54	11	37
6/ 7	हस्त	17	21	23	8	4	57	10	49
7/ 8	चित्रा	16	43	22	40	4	38	10	39
8/ 9	स्वाती	16	43	22	49	4	57	11	8
9/10	विशा.	17	21	23	36	5	53	12	12
10/11	अनु.	18	33	0	57	7	22	13	49
11/12	ज्येष्ठा	20	18	2	48	9	20	15	54
12/13	मूल	22	29	5	6	11	43	18	22
14	पू.षा.	1	2	7	44	14	26	21	9
15/16	उ.षा.	3	52	10	37	17	22	0	8
16/17	श्रव.	6	54	13	41	20	27	3	14
17/18	धनि.	10	2	16	49	23	35	6	22
18/19	शत.	13	8	19	54	2	39	9	23
19/20	पू.भा.	16	7	22	49	5	30	12	10
20/21	उ.भा.	18	49	1	25	8	1	14	34
21/22	रेव.	21	5	3	34	10	1	16	26
22/23	अश्वि.	22	48	5	8	11	25	17	39
23/24	भर.	23	50	5	59	12	5	18	8
25	कृत्ति.	0	8	6	5	12	0	17	51
25/26	रोहि.	23	40	5	26	11	9	16	50
26/27	मृग.	22	28	4	4	9	37	15	8
27/28	आर्द्रा	20	37	2	4	7	29	12	52
28/29	पुन.	18	14	23	34	4	53	10	10
29/30	पुष्य	15	27	20	43	1	58	7	13
30/31	आश्ले	12	27	17	42	22	56	4	10

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	मघा	9	25	14	40	19	56	1	13
1	पू.फा.	6	31	11	50	17	10	22	32
2	उ.फा.	3	56	9	21	14	48	20	18
3	हस्त	1	50	7	24	13	0	18	39
4	चित्रा	0	21	6	5	11	53	17	43
4/ 5	स्वाती	23	37	5	33	11	32	17	34
5/ 6	विशा.	23	39	5	48	11	59	18	13
7	अनु.	0	30	6	50	13	12	19	37
8	ज्येष्ठा	2	5	8	34	15	6	21	40
9/10	मूल	4	16	10	54	17	34	0	14
10/11	पू.षा.	6	57	13	40	20	24	3	9
11/12	उ.षा.	9	55	16	41	23	28	6	15
12/13	श्रव.	13	3	19	50	2	37	9	24
13/14	धनि.	16	11	22	57	5	43	12	29
14/15	शत.	19	14	1	58	8	42	15	24
15/16	पू.भा.	22	6	4	47	11	27	18	5
17	उ.भा.	0	43	7	20	13	55	20	28
18	रेव.	3	1	9	32	16	1	22	29
19/20	अश्वि.	4	55	11	19	17	42	0	2
20/21	भर.	6	21	12	37	18	51	1	3
21/22	कृत्ति.	7	13	13	21	19	26	1	29
22/23	रोहि.	7	30	13	28	19	24	1	17
23/24	मृग.	7	8	12	56	18	42	0	26
24	आर्द्रा	6	7	11	46	17	22	22	57
25	पुन.	4	29	10	0	15	28	20	55
26	पुष्य	2	20	7	43	13	5	18	25
26/27	आश्ले.	23	45	5	3	10	21	15	38
27/28	मघा	20	54	2	10	7	25	12	41

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/ 1	पू.फा.	17	57	23	13	4	29	9	47
1/ 2	उ.फा.	15	5	20	24	1	44	7	6
2/ 3	हस्त	12	29	17	54	23	21	4	49
3/ 4	चित्रा	10	20	15	54	21	30	3	8
4/ 5	स्वाती	8	50	14	34	20	21	2	11
5/ 6	विशा.	8	5	14	1	20	1	2	4
6/ 7	अनु.	8	11	14	20	20	33	2	49
7/ 8	ज्येष्ठा	9	8	15	31	21	56	4	24
8/ 9	मूल	10	54	17	27	0	3	6	40
9/10	पू.षा.	13	20	20	1	2	44	9	28
10/11	उ.षा.	16	13	23	0	5	47	12	34
11/12	श्रव.	19	22	2	10	8	58	15	45
12/13	धनि.	22	32	5	19	12	5	18	50
14	शत.	1	35	8	18	15	0	21	41
15/16	पू.भा.	4	21	11	0	17	37	0	13
16/17	उ.भा.	6	47	13	21	19	52	2	23
17/18	रेव.	8	52	15	19	21	45	4	10
18/19	अश्वि.	10	33	16	55	23	15	5	34
19/20	भर.	11	52	18	8	0	22	6	35
20/21	कृत्ति.	12	47	18	57	1	5	7	12
21/22	रोहि.	13	17	19	20	1	22	7	22
22/23	मृग.	13	20	19	17	1	12	7	5
23/24	आर्द्रा	12	56	18	45	0	33	6	19
24/25	पुन.	12	3	17	45	23	25	5	4
25/26	पुष्य	10	41	16	16	21	50	3	22
26/27	आश्ले.	8	53	14	22	19	50	1	17
27	मघा	6	43	12	8	17	32	22	56
28	पू.फा.	4	18	9	41	15	3	20	25
29	उ.फा.	1	48	7	10	12	33	17	56
29/30	हस्त	23	20	4	45	10	11	15	38
30/31	चित्रा	21	7	2	37	8	9	13	43

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2010 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	स्वाती	19	19	0	57	6	37	12	20
1/ 2	विशा.	18	5	23	53	5	44	11	38
2/ 3	अनु.	17	35	23	35	5	38	11	44
3/ 4	ज्येष्ठा	17	54	0	6	6	22	12	41
4/5	मूल	19	3	1	27	7	55	14	25
5/ 6	पू.षा.	20	58	3	33	10	10	16	49
6/ 7	उ.षा.	23	30	6	13	12	57	19	42
8	श्रव.	2	28	9	15	16	2	22	49
9/10	धनि.	5	36	12	22	19	9	1	54
10/11	शत.	8	39	15	22	22	5	4	46
11/12	पू.भा.	11	26	18	4	0	40	7	15
12/13	उ.भा.	13	48	20	19	2	49	9	16
13/14	रेव.	15	42	22	6	4	28	10	49
14/15	अश्वि.	17	8	23	25	5	40	11	54
15/16	भर.	18	6	0	16	6	25	12	33
16/17	कृत्ति.	18	39	0	44	6	48	12	50
17/18	रोहि.	18	52	0	52	6	50	12	48
18/19	मृग.	18	44	0	40	6	34	12	27
19/20	आर्द्रा	18	19	0	10	6	0	11	49
20/21	पुन.	17	37	23	24	5	10	10	54
21/22	पुष्य	16	38	22	20	4	2	9	43
22/23	आश्ले.	15	22	21	1	2	39	8	15
23/24	मघा	13	51	19	27	1	1	6	35
24/25	पू.फा.	12	8	17	41	23	14	4	46
25/26	उ.फा.	10	18	15	49	21	21	2	53
26/27	हस्त	8	25	13	58	19	31	1	4
27	चित्रा	6	39	12	14	17	50	23	28
28	स्वाती	5	7	10	47	16	29	22	13
29	विशा.	3	58	9	45	15	35	21	27
30	अनु.	3	21	9	18	15	17	21	19

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	ज्येष्ठा	3	23	9	30	15	40	21	52
2	मूल	4	8	10	26	16	47	23	10
3/ 4	पू.षा.	5	36	12	5	18	36	1	9
4/ 5	उ.षा.	7	45	14	22	21	1	3	42
5/ 6	श्रव.	10	25	17	8	23	52	6	37
6/ 7	धनि.	13	23	20	9	2	54	9	40
7/ 8	शत.	16	25	23	10	5	53	12	36
8/ 9	पू.भा.	19	17	1	56	8	35	15	11
9/10	उ.भा.	21	45	4	18	10	48	17	16
10/11	रेव.	23	43	6	7	12	28	18	48
12	अश्वि.	1	5	7	20	13	33	19	43
13	भर.	1	52	7	59	14	3	20	6
14	कृत्ति.	2	7	8	6	14	3	19	59
15	रोहि.	1	54	7	47	13	38	19	29
16	मृग.	1	18	7	6	12	53	18	40
17	आर्द्रा	0	25	6	9	11	53	17	37
17/18	पुन.	23	19	5	1	10	43	16	24
18/19	पुष्य	22	4	3	45	9	25	15	4
19/20	आश्ले.	20	44	2	23	8	2	13	41
20/21	मघा	19	19	0	58	6	36	12	15
21/22	पू.फा.	17	54	23	32	5	11	10	50
22/23	उ.फा.	16	29	22	8	3	48	9	28
23/24	हस्त	15	9	20	50	2	31	8	13
24/25	चित्रा	13	56	19	40	1	25	7	10
25/26	स्वाती	12	57	18	45	0	34	6	24
26/27	विशा.	12	15	18	9	0	3	6	0
27/28	अनु.	11	58	17	58	0	0	6	4
28/29	ज्येष्ठा	12	10	18	18	0	28	6	40
29/30	मूल	12	55	19	12	1	31	7	52
30/31	पू.षा.	14	15	20	41	3	9	9	39

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.षा.	16	11	22	45	5	20	11	58
1/ 2	श्रव.	18	37	1	17	7	59	14	42
2/ 3	धनि.	21	25	4	10	10	55	17	40
4	शत.	0	25	7	10	13	55	20	39
5	पू.भा.	3	22	10	4	16	45	23	25
6/ 7	उ.भा.	6	3	12	39	19	14	1	46
7/ 8	रेव.	8	16	14	44	21	9	3	32
8/ 9	अश्वि.	9	53	16	11	22	26	4	39
9/10	भर.	10	49	16	57	23	2	5	5
10/11	कृत्ति.	11	5	17	3	22	58	4	52
11/12	रोहि.	10	43	16	32	22	19	4	5
12/13	मृग.	9	48	15	30	21	11	2	50
13/14	आर्द्रा	8	28	14	5	19	41	1	16
14	पुन.	6	49	12	23	17	55	23	28
15	पुष्य	4	59	10	31	16	2	21	34
16	आश्ले.	3	5	8	36	14	8	19	40
17	मघा	1	12	6	45	12	18	17	52
17/18	पू.फा.	23	26	5	1	10	38	16	14
18/19	उ.फा.	21	52	3	31	9	11	14	52
19/20	हस्त	20	34	2	17	8	1	13	47
20/21	चित्रा	19	34	1	22	7	11	13	2
21/22	स्वाती	18	55	0	49	6	44	12	41
22/23	विशा.	18	39	0	39	6	40	12	43
23/24	अनु.	18	48	0	54	7	2	13	12
24/25	ज्येष्ठा	19	23	1	36	7	51	14	8
25/26	मूल	20	26	2	46	9	8	15	32
26/27	पू.षा.	21	58	4	25	10	54	17	24
27/28	उ.षा.	23	56	6	30	13	5	19	42
29	श्रव	2	20	9	0	15	40	22	22
30/ 1	धनि.	5	4	11	48	18	32	1	16

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2010 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अगस्त 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	सितम्बर 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	धनि.	5	4	11	48	18	32	1	16	**31/ 1**	रेव.	23	36	6	14	12	51	19	27	**31/ 1**	कृत्ति.	12	10	18	31	0	49	7	5
1/ 2	शत.	8	1	14	47	21	32	4	17	**2**	अश्वि.	2	0	8	32	15	2	21	29	**1/ 2**	रोहि.	13	19	19	30	1	38	7	44
2/ 3	पू.भा.	11	2	17	46	0	30	7	13	**3**	भर.	3	54	10	17	16	37	22	55	**2/ 3**	मृग.	13	47	19	47	1	45	7	39
3/ 4	उ.भा.	13	54	20	35	3	14	9	51	**4**	कृत्ति.	5	10	11	22	17	31	23	38	**3/ 4**	आर्द्रा	13	31	19	21	1	7	6	51
4/ 5	रेव.	16	27	23	1	5	32	12	2	**5**	रोहि.	5	42	11	42	17	40	23	35	**4/ 5**	पुन.	12	32	18	11	23	47	5	21
5/ 6	अश्वि.	18	29	0	54	7	16	13	36	**6**	मृग.	5	28	11	17	17	3	22	47	**5/ 6**	पुष्य	10	52	16	21	21	49	3	14
6/ 7	भर.	19	52	2	6	8	18	14	26	**7**	आर्द्रा	4	29	10	7	15	43	21	17	**6/ 7**	आश्ले.	8	37	13	58	19	19	0	37
7/ 8	कृत्ति.	20	32	2	35	8	35	14	32	**8**	पुन.	2	49	8	18	13	46	19	12	**7**	मघा	5	55	11	11	16	26	21	41
8/ 9	रोहि.	20	27	2	19	8	9	13	55	**9**	पुष्य	0	36	5	58	11	19	16	38	**8**	पू.फा.	2	55	8	9	13	23	18	36
9/10	मृग.	19	40	1	22	7	2	12	40	**9/10**	आश्ले.	21	57	3	15	8	31	13	48	**8/ 9**	उ.फा.	23	50	5	4	10	19	15	35
10/11	आर्द्रा	18	16	23	50	5	22	10	52	**10/11**	मघा	19	4	0	19	5	35	10	50	**9/10**	हस्त	20	51	2	9	7	28	12	48
11/12	पुन.	16	21	21	49	3	15	8	41	**11/12**	पू.फा.	16	6	21	22	2	39	7	56	**10/11**	चित्रा	18	10	23	34	5	0	10	28
12/13	पुष्य	14	5	19	29	0	52	6	14	**12/13**	उ.फा.	13	15	18	35	23	56	5	18	**11/12**	स्वाती	15	58	21	31	3	6	8	44
13/14	आश्ले.	11	36	16	58	22	20	3	42	**13/14**	हस्त	10	42	16	7	21	35	3	4	**12/13**	विशा.	14	25	20	9	1	56	7	45
14/15	मघा	9	4	14	27	19	50	1	14	**14/15**	चित्रा	8	36	14	10	19	46	1	25	**13/14**	अनु.	13	38	19	34	1	33	7	36
15	पू.फा.	6	38	12	4	17	30	22	58	**15/16**	स्वाती	7	6	12	49	18	36	0	25	**14/15**	ज्येष्ठा	13	41	19	50	2	1	8	16
16	उ.फा.	4	27	9	57	15	28	21	2	**16/17**	विशा.	6	17	12	11	18	9	0	9	**15/16**	मूल	14	34	20	54	3	18	9	44
17	हस्त	2	36	8	13	13	51	19	32	**17/18**	अनु.	6	12	12	18	18	27	0	38	**16/17**	पू.षा.	16	12	22	42	5	15	11	50
18	चित्रा	1	14	6	58	12	44	18	32	**18/19**	ज्येष्ठा	6	52	13	8	19	27	1	49	**17/18**	उ.षा.	18	27	1	5	7	45	14	26
19	स्वाती	0	23	6	15	12	10	18	7	**19/20**	मूल	8	12	14	38	21	6	3	35	**18/19**	श्रव.	21	8	3	51	10	35	17	20
20	विशा.	0	6	6	7	12	11	18	16	**20/21**	पू.षा.	10	7	16	40	23	15	5	51	**20**	धनि.	0	5	6	50	13	36	20	21
21	अनु.	0	24	6	33	12	45	18	59	**21/22**	उ.षा.	12	29	19	8	1	48	8	29	**21**	शत.	3	7	9	52	16	37	23	22
22	ज्येष्ठा	1	14	7	32	13	52	20	13	**22/23**	श्रव.	15	10	21	53	4	36	11	20	**22/23**	पू.भा.	6	6	12	50	19	33	2	16
23	मूल	2	36	9	1	15	27	21	55	**23/24**	धनि.	18	4	0	48	7	33	14	18	**23/24**	उ.भा.	8	57	15	38	22	19	4	58
24/25	पू.षा.	4	24	10	55	17	28	0	2	**24/25**	शत.	21	3	3	48	10	33	17	18	**24/25**	रेव.	11	36	18	14	0	50	7	26
25/26	उ.षा.	6	37	13	13	19	50	2	29	**26**	पू.भा.	0	2	6	47	13	31	20	15	**25/26**	अश्वि.	14	0	20	34	3	6	9	37
26/27	श्रव.	9	8	15	49	22	30	5	12	**27**	उ.भा.	2	58	9	41	16	23	23	4	**26/27**	भर.	16	7	22	36	5	3	11	29
27/28	धनि.	11	55	18	38	1	22	8	7	**28/29**	रेव.	5	44	12	24	19	3	1	40	**27/28**	कृत्ति.	17	53	0	16	6	38	12	57
28/29	शत.	14	52	21	37	4	22	11	7	**29/30**	अश्वि.	8	16	14	51	21	25	3	57	**28/29**	रोहि.	19	15	1	31	7	46	13	58
29/30	पू.भा.	17	52	0	37	7	22	14	6	**30/31**	भर.	10	27	16	56	23	23	5	48	**29/30**	मृग.	20	9	2	17	8	23	14	27
30/31	उ.भा.	20	50	3	33	10	15	16	56																				

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2010 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	आर्द्रा	20	29	2	28	8	25	14	20
1/ 2	पुन.	20	13	2	3	7	50	13	36
2/ 3	पुष्य	19	19	1	0	6	38	12	14
3/ 4	आश्ले.	17	49	23	21	4	51	10	20
4/ 5	मघा	15	46	21	12	2	35	7	57
5/ 6	पू.फा.	13	19	18	39	23	58	5	16
6/ 7	उ.फा.	10	34	15	51	21	9	2	26
7	हस्त	7	43	13	1	18	19	23	38
8	चित्रा	4	. 57	10	18	15	40	21	3
9	स्वाती	2	28	7	54	13	23	18	54
10	विशा.	0	27	6	2	11	39	17	20
10/11	अनु.	23	3	4	49	10	38	16	30
11/12	ज्येष्ठा	22	25	4	24	10	25	16	30
12/13	मूल	22	38	4	49	11	3	17	20
13/14	पू.षा.	23	40	6	3	12	29	18	58
15	उ.षा.	1	29	8	2	14	37	21	14
16	श्रव.	3	53	10	34	17	16	23	59
17/18	धनि.	6	43	13	28	20	13	2	58
18/19	शत.	9	44	16	29	23	15	6	0
19/20	पू.भा.	12	44	19	28	2	11	8	53
20/21	उ.भा.	15	34	22	14	4	53	11	31
21/22	रेव.	18	7	0	42	7	16	13	49
22/23	अश्वि.	20	20	2	50	9	18	15	45
23/24	भर.	22	11	4	36	10	59	17	20
24/25	कृत्ति.	23	41	6	0	12	17	18	34
26	रोहि.	0	49	7	2	13	14	19	25
27	मृग.	1	35	7	43	13	49	19	54
28	आर्द्रा	1	58	8	0	14	1	20	0
29	पुन.	1	57	7	53	13	47	19	39
30	पुष्य	1	30	7	19	13	7	18	52
31	आश्ले.	0	37	6	19	12	0	17	40

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवम्बर 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	मघा	23	18	4	54	10	29	16	3
1/ 2	पू.फा.	21	35	3	6	8	36	14	6
2/ 3	उ.फा.	19	34	1	2	6	28	11	55
3/ 4	हस्त	17	21	22	47	4	12	9	38
4/ 5	चित्रा	15	4	20	30	1	57	7	24
5/ 6	स्वाती	12	52	18	21	23	52	5	23
6/ 7	विशा.	10	56	16	31	22	7	3	45
7/ 8	अनु.	9	25	15	7	20	52	2	39
8/ 9	ज्येष्ठा	8	28	14	20	20	15	2	12
9/10	मूल	8	12	14	15	20	21	2	30
10/11	पू.षा.	8	42	14	56	21	14	3	34
11/12	उ.षा.	9	57	16	23	22	51	5	21
12/13	श्रव.	11	54	18	29	1	6	7	44
13/14	धनि.	14	25	21	6	3	49	10	32
14/15	शत.	17	16	0	1	6	46	13	31
15/16	पू.भा.	20	15	3	0	9	44	16	27
16/17	उ.भा.	23	9	5	50	12	30	19	8
18	रेव.	1	45	8	21	14	55	21	27
19	अश्वि.	3	57	10	26	16	53	23	18
20/21	भर.	5	41	12	2	18	21	0	39
21/22	कृत्ति.	6	54	13	8	19	20	1	31
22/23	रोहि.	7	40	13	47	19	53	1	57
23/24	मृग.	7	59	14	1	20	0	1	59
24/25	आर्द्रा	7	56	13	52	19	47	1	41
25/26	पुन.	7	34	13	25	19	16	1	5
26/27	पुष्य	6	54	12	42	18	28	0	14
27	आश्ले.	5	59	11	43	17	27	23	9
28	मघा	4	51	10	32	16	13	21	53
29	पू.फा.	3	32	9	10	14	49	20	26
30	उ.फा.	2	4	7	41	13	17	18	54

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसम्बर 2010 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	हस्त	0	30	6	6	11	42	17	18
1/ 2	चित्रा	22	54	4	31	10	7	15	45
2/ 3	स्वाती	21	22	3	0	8	39	14	19
3/ 4	विशा.	20	0	1	41	7	24	13	8
4/ 5	अनु.	18	53	0	40	6	28	12	18
5/ 6	ज्येष्ठा	18	9	0	3	5	58	11	55
6/ 7	मूल	17	55	23	56	6	0	12	6
7/ 8	पू.षा.	18	14	0	25	6	38	12	54
8/ 9	उ.षा.	19	11	1	32	7	54	14	19
9/10	श्रव.	20	46	3	15	9	47	16	20
10/11	धनि.	22	56	5	33	12	11	18	51
12	शत.	1	32	8	15	14	58	21	42
13/14	पू.भा.	4	26	11	11	17	55	0	39
14/15	उ.भा.	7	23	14	7	20	49	3	30
15/16	रेव.	10	11	16	50	23	27	6	3
16/17	अश्वि.	12	36	19	8	1	38	8	6
17/18	भर.	14	31	20	54	3	15	9	33
18/19	कृत्ति.	15	49	22	2	4	13	10	22
19/20	रोहि.	16	29	22	33	4	35	10	34
20/21	मृग.	16	32	22	28	4	21	10	13
21/22	आर्द्रा	16	3	21	51	3	38	9	23
22/23	पुन.	15	7	20	50	2	31	8	12
23/24	पुष्य	13	51	19	29	1	7	6	44
24/25	आश्ले.	12	20	17	56	23	32	5	7
25/26	मघा	10	42	16	17	21	52	3	27
26/27	पू.फा.	9	2	14	37	20	13	1	49
27/28	उ.फा.	7	25	13	2	18	39	0	17
28	हस्त	5	55	11	34	17	14	22	54
29	चित्रा	4	36	10	18	16	1	21	45
30	स्वाती	3	30	9	16	15	3	20	51
31	विशा.	2	40	8	30	14	22	20	14

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2011 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	अनु.	2	8	8	3	14	0	19	58
2	ज्येष्ठा	1	57	7	58	14	0	20	4
3	मूल	2	9	8	15	14	24	20	34
4	पू.षा.	2	46	8	59	15	14	21	31
5	उ.षा.	3	50	10	10	16	32	22	56
6/ 7	श्रव.	5	22	11	49	18	19	0	50
7/ 8	धनि.	7	22	13	57	20	32	3	10
8/ 9	शत.	9	48	16	28	23	9	5	51
9/10	पू.भा.	12	34	19	18	2	2	8	47
10/11	उ.भा.	15	31	22	16	5	1	11	45
11/12	रेव.	18	29	1	12	7	54	14	34
12/13	अश्वि.	21	14	3	51	10	28	17	2
13/14	भर.	23	34	6	3	12	31	18	56
15	कृत्ति.	1	18	7	38	13	55	20	9
16	रोहि.	2	20	8	29	14	34	20	37
17	मृग.	2	37	8	34	14	29	20	20
18	आर्द्रा	2	10	7	56	13	41.	19	23
19	पुन.	1	3	6	40	12	16	17	50
19/20	पुष्य	23	23	4	53	10	23	15	51
20/21	आश्ले.	21	18	2	44	8	9	13	34
21/22	मघा	18	59	0	23	5	46	11	10
22/23	पू.फा.	16	34	21	58	3	23	8	48
23/24	उ.फा.	14	13	19	40	1	8	6	36
24/25	हस्त	12	6	17	37	23	9	4	43
25/26	चित्रा	10	18	15	55	21	33	3	14
26/27	स्वाती	8	56	14	39	20	25	2	13
27/28	विशा.	8	2	13	54	19	47	1	42
28/29	अनु.	7	39	13	38	19	39	1	42
29/30	ज्येष्ठा	7	47	13	53	20	1	2	11
30/31	मूल	8	23	14	36	20	51	3	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	पू.षा.	9	25	15	44	22	5	4	28
1/ 2	उ.षा.	10	51	17	16	23	43	6	11
2/ 3	श्रव.	12	40	19	10	1	42	8	14
3/ 4	धनि.	14	48	21	23	4	0	10	37
4/ 5	शत.	17	15	23	55	6	35	13	16
5/ 6	पू.भा.	19	59	2	41	9	25	16	9
6/ 7	उ.भा.	22	53	5	38	12	23	19	9
8	रेव.	1	54	8	39	15	23	22	7
9/10	अश्वि.	4	51	11	33	18	14	0	54
10/11	भर.	7	33	14	10	20	45	3	19
11/12	कृत्ति.	9	50	16	19	22	45	5	9
12/13	रोहि.	11	30	17	48	0	3	6	16
13/14	मृग.	12	25	18	31	0	34	6	34
14/15	आर्द्रा	12	31	18	25	0	16	6	4
15/16	पुन.	11	48	17	30	23	9	4	46
16/17	पुष्य	10	20	15	52	21	21	2	48
17/18	आश्ले.	8	14	13	37	18	59	0	19
18	मघा	5	38	10	56	16	13	21	30
19	पू.फा.	2	46	8	1	13	16	18	31
19/20	उ.फा.	23	47	5	2	10	19	15	36
20/21	हस्त	20	53	2	12	7	32	12	54
21/22	चित्रा	18	17	23	41	5	8	10	36
22/23	स्वाती	16	7	21	39	3	14	8	51
23/24	विशा.	14	31	20	13	1	58	7	45
24/25	अनु.	13	35	19	28	1	23	7	21
25/26	ज्येष्ठा	13	22	19	25	1	31	7	39
26/27	मूल	13	50	20	3	2	19	8	36
27/28	पू.षा.	14	56	21	18	3	41	10	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2011 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/ 1	उ.षा.	16	34	23	3	5	33	12	5
1/ 2	श्रव.	18	38	1	12	7	47	14	24
2/ 3	धनि.	21	1	3	39	10	18	16	58
3/ 4	शत.	23	39	6	20	13	2	19	44
5	पू.भा.	2	27	9	10	15	54	22	38
6/ 7	उ.भा.	5	22	12	7	18	51	1	36
7/ 8	रेव.	8	21	15	5	21	50	4	34
8/ 9	अश्वि.	11	18	18	2	0	44	7	27
9/10	भर.	14	8	20	48	3	27	10	5
10/11	कृत्ति.	16	42	23	17	5	50	12	21
11/12	रोहि.	18	50	1	17	7	42	14	4
12/13	मृग.	20	24	2	41	8	55	15	6
13/14	आर्द्रा	21	15	3	20	9	22	15	21
14/15	पुन.	21	18	3	11	9	1	14	47
15/16	पुष्य	20	31	2	13	7	51	13	26
16/17	आश्ले.	18	59	0	29	5	57	11	23
17/18	मघा	16	47	22	8	3	28	8	46
18/19	पू.फा.	14	3	19	19	0	34	5	47
19/20	उ.फा.	11	0	16	13	21	25	2	37
20	हस्त	7	49	13	1	18	14	23	28
21	चित्रा	4	42	9	58	15	15	20	33
22	स्वाती	1	52	7	14	12	37	18	2
22/23	विशा.	23	30	5	0	10	32	16	7
23/24	अनु.	21	45	3	25	9	8	14	55
24/25	ज्येष्ठा	20	44	2	36	8	31	14	30
25/26	मूल	20	31	2	35	8	43	14	53
26/27	पू.षा.	21	6	3	22	9	41	16	2
27/28	उ.षा.	22	25	4	51	11	20	17	50
29	श्रव.	0	22	6	56	13	31	20	8
30	धनि.	2	47	9	26	16	7	22	48

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 5"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	42	9	8	16	27	0	2	19	14	38	3	24	49	0	8	24	59	38	10	2	21	27	8	13	50	56	5	10	30	19	8	27	37	46	8	27	4	46	-23	2	23	30	0	43
2	6	46	6	8	17	28	8	3	4	18	52	3	24	39	20	8	23	54	15	10	2	33	37	8	15	6	26	5	10	31	39	8	27	34	35	8	27	4	46	-22	57	19	51	-0	40
3	6	50	2	8	18	29	16	3	19	21	27	3	24	28	50	8	22	41	21	10	2	45	53	8	16	21	55	5	10	32	52	8	27	31	25	8	27	5	11	-22	51	14	53	-2	1
4	6	53	59	8	19	30	24	4	4	14	6	3	24	17	32	8	21	23	12	10	2	58	13	8	17	37	24	5	10	33	58	8	27	28	14	8	27	5	50	-22	45	9	5	-3	12
5	6	57	55	8	20	31	32	4	18	50	17	3	24	5	26	8	20	2	23	10	3	10	38	8	18	52	54	5	10	34	58	8	27	25	3	8	27	6	29	-22	39	2	53	-4	10
6	7	1	52	8	21	32	40	5	3	5	43	3	23	52	32	8	18	41	32	10	3	23	8	8	20	8	23	5	10	35	51	8	27	21	52	8	27	6	57	-22	32	-3	17	-4	51
7	7	5	49	8	22	33	49	5	16	58	29	3	23	38	50	8	17	23	14	10	3	35	43	8	21	23	52	5	10	36	38	8	27	18	41	8	27	7	9	-22	25	-9	8	-5	13
8	7	9	45	8	23	34	57	6	0	28	40	3	23	24	23	8	16	9	47	10	3	48	22	8	22	39	21	5	10	37	18	8	27	15	30	8	27	7	6	-22	17	-14	24	-5	17
9	7	13	42	8	24	36	6	6	13	37	42	3	23	9	9	8	15	3	6	10	4	1	5	8	23	54	50	5	10	37	52	8	27	12	20	8	27	6	55	-22	9	-18	51	-5	5
10	7	17	38	8	25	37	15	6	26	27	53	3	22	53	11	8	14	4	38	10	4	13	53	8	25	10	19	5	10	38	19	8	27	9	9	8	27	6	41	-22	0	-22	19	-4	37
11	7	21	35	8	26	38	24	7	9	1	55	3	22	36	30	8	13	15	20	10	4	26	45	8	26	25	48	5	10	38	40	8	27	5	58	8	27	6	32	-21	51	-24	38	-3	57
12	7	25	31	8	27	39	33	7	21	22	31	3	22	19	6	8	12	35	44	10	4	39	41	8	27	41	17	5	10	38	54	8	27	2	47	8	27	6	30	-21	42	-25	43	-3	6
13	7	29	28	8	28	40	42	8	3	32	15	3	22	1	1	8	12	6	0	10	4	52	41	8	28	56	45	5	10	39	1	8	26	59	36	8	27	6	35	-21	32	-25	32	-2	7
14	7	33	24	8	29	41	50	8	15	33	26	3	21	42	18	8	11	46	0	10	5	5	46	9	0	12	14	5	10	39	2	8	26	56	26	8	27	6	42	-21	22	-24	9	-1	4
15	7	37	21	9	0	42	58	8	27	28	13	3	21	22	56	8	11	35	22	10	5	18	54	9	1	27	42	5	10	38	56	8	26	53	15	8	27	6	45	-21	11	-21	42	0	2
16	7	41	18	9	1	44	6	9	9	18	35	3	21	3	0	8	11	33	37	10	5	32	6	9	2	43	10	5	10	38	44	8	26	50	4	8	27	6	35	-21	0	-18	19	1	7
17	7	45	14	9	2	45	14	9	21	6	34	3	20	42	29	8	11	40	9	10	5	45	21	9	3	58	37	5	10	38	25	8	26	46	53	8	27	6	8	-20	48	-14	14	2	9
18	7	49	11	9	3	46	20	10	2	54	22	3	20	21	28	8	11	54	21	10	5	58	40	9	5	14	4	5	10	38	0	8	26	43	42	8	27	5	21	-20	36	-9	38	3	6
19	7	53	7	9	4	47	26	10	14	44	28	3	19	59	57	8	12	15	35	10	6	12	3	9	6	29	30	5	10	37	28	8	26	40	32	8	27	4	17	-20	24	-4	40	3	55
20	7	57	4	9	5	48	32	10	26	39	46	3	19	38	0	8	12	43	13	10	6	25	29	9	7	44	56	5	10	36	49	8	26	37	21	8	27	3	3	-20	11	0	30	4	34
21	8	1	0	9	6	49	36	11	8	43	35	3	19	15	38	8	13	16	41	10	6	38	58	9	9	0	21	5	10	36	4	8	26	34	10	8	27	1	50	-19	58	5	41	5	1
22	8	4	57	9	7	50	40	11	20	59	36	3	18	52	54	8	13	55	25	10	6	52	30	9	10	15	46	5	10	35	13	8	26	30	59	8	27	0	51	-19	45	10	45	5	15
23	8	8	53	9	8	51	42	0	3	31	48	3	18	29	52	8	14	38	55	10	7	6	5	9	11	31	10	5	10	34	15	8	26	27	48	8	27	0	19	-19	31	15	29	5	15
24	8	12	50	9	9	52	44	0	16	24	6	3	18	6	33	8	15	26	44	10	7	19	44	9	12	46	34	5	10	33	11	8	26	24	38	8	27	0	21	-19	17	19	40	4	59
25	8	16	47	9	10	53	44	0	29	40	2	3	17	43	0	8	16	18	26	10	7	33	25	9	14	1	56	5	10	32	0	8	26	21	27	8	27	0	58	-19	2	23	0	4	27
26	8	20	43	9	11	54	43	1	13	22	11	3	17	19	16	8	17	13	40	10	7	47	9	9	15	17	19	5	10	30	44	8	26	18	16	8	27	2	0	-18	48	25	9	3	39
27	8	24	40	9	12	55	42	1	27	31	31	3	16	55	23	8	18	12	4	10	8	0	55	9	16	32	40	5	10	29	21	8	26	15	5	8	27	3	12	-18	32	25	46	2	37
28	8	28	36	9	13	56	39	2	12	6	38	3	16	31	25	8	19	13	23	10	8	14	44	9	17	48	1	5	10	27	51	8	26	11	54	8	27	4	11	-18	17	24	40	1	22
29	8	32	33	9	14	57	36	2	27	3	18	3	16	7	24	8	20	17	19	10	8	28	36	9	19	3	21	5	10	26	16	8	26	8	44	8	27	4	34	-18	1	21	48	0	0
30	8	36	29	9	15	58	31	3	12	14	26	3	15	43	22	8	21	23	39	10	8	42	30	9	20	18	40	5	10	24	35	8	26	5	33	8	27	4	3	-17	45	17	22	-1	23
31	8	40	26	9	16	59	25	3	27	30	40	3	15	19	24	8	22	32	10	10	8	56	27	9	21	33	59	5	10	22	47	8	26	2	22	8	27	2	34	-17	28	11	48	-2	40

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 10"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूय क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 22	9 18 0 19	4 12 41 44	3 14 55 30	8 23 42 43	10 9 10 25	9 22 49 17	5 10 20 54	8 25 59 11	8 27 0 11	-17 11	5 33	- 3 46
2	8 48 19	9 19 1 11	4 27 38 3	3 14 31 44	8 24 55 7	10 9 24 26	9 24 4 35	5 10 18 54	8 25 56 0	8 26 57 14	-16 54	- 0 54	- 4 35
3	8 52 16	9 20 2 3	5 12 12 7	3 14 8 9	8 26 9 14	10 9 38 29	9 25 19 51	5 10 16 49	8 25 52 50	8 26 54 13	-16 37	- 7 8	- 5 5
4	8 56 12	9 21 2 53	5 26 19 25	3 13 44 47	8 27 24 57	10 9 52 35	9 26 35 8	5 10 14 38	8 25 49 39	8 26 51 37	-16 19	-12 48	- 5 15
5	9 0 9	9 22 3 43	6 9 58 27	3 13 21 40	8 28 42 9	10 10 6 42	9 27 50 23	5 10 12 21	8 25 46 28	8 26 49 53	-16 1	-17 39	- 5 7
6	9 4 5	9 23 4 32	6 23 10 21	3 12 58 52	9 0 0 46	10 10 20 51	9 29 5 38	5 10 9 58	8 25 43 17	8 26 49 17	-15 43	-21 28	- 4 43
7	9 8 2	9 24 5 20	7 5 58 1	3 12 36 25	9 1 20 43	10 10 35 2	10 0 20 53	5 10 7 30	8 25 40 7	8 26 49 49	-15 24	-24 8	- 4 5
8	9 11 58	9 25 6 8	7 18 25 27	3 12 14 20	9 2 41 55	10 10 49 15	10 1 36 6	5 10 4 56	8 25 36 56	8 26 51 13	-15 6	-25 31	- 3 16
9	9 15 55	9 26 6 54	8 0 36 59	3 11 52 42	9 4 4 18	10 11 3 29	10 2 51 20	5 10 2 16	8 25 33 45	8 26 53 2	-14 47	-25 39	- 2 20
10	9 19 51	9 27 7 39	8 12 36 58	3 11 31 31	9 5 27 50	10 11 17 45	10 4 6 32	5 9 59 31	8 25 30 34	8 26 54 41	-14 27	-24 34	- 1 18
11	9 23 48	9 28 8 23	8 24 29 23	3 11 10 50	9 6 52 27	10 11 32 2	10 5 21 44	5 9 56 41	8 25 27 24	8 26 55 31	-14 8	-22 23	- 0 13
12	9 27 45	9 29 9 6	9 6 17 43	3 10 50 42	9 8 18 8	10 11 46 21	10 6 36 54	5 9 53 45	8 25 24 13	8 26 55 3	-13 48	-19 15	0 51
13	9 31 41	10 0 9 48	9 18 4 53	3 10 31 7	9 9 44 50	10 12 0 42	10 7 52 4	5 9 50 45	8 25 21 2	8 26 52 54	-13 28	-15 21	1 53
14	9 35 38	10 1 10 28	9 29 53 18	3 10 12 8	9 11 12 31	10 12 15 3	10 9 7 13	5 9 47 39	8 25 17 51	8 26 48 58	-13 8	-10 52	2 50
15	9 39 34	10 2 11 7	10 11 44 56	3 9 53 48	9 12 41 12	10 12 29 26	10 10 22 22	5 9 44 28	8 25 14 40	8 26 43 26	-12 47	- 5 59	3 40
16	9 43 31	10 3 11 44	10 23 41 29	3 9 36 6	9 14 10 49	10 12 43 49	10 11 37 29	5 9 41 12	8 25 11 30	8 26 36 42	-12 27	- 0 51	4 21
17	9 47 27	10 4 12 20	11 5 44 38	3 9 19 5	9 15 41 24	10 12 58 14	10 12 52 35	5 9 37 52	8 25 8 19	8 26 29 27	-12 6	4 20	4 50
18	9 51 24	10 5 12 54	11 17 56 10	3 9 2 46	9 17 12 55	10 13 12 39	10 14 7 40	5 9 34 27	8 25 5 8	8 26 22 24	-11 45	9 25	5 7
19	9 55 20	10 6 13 27	0 0 18 12	3 8 47 11	9 18 45 22	10 13 27 6	10 15 22 44	5 9 30 58	8 25 1 57	8 26 16 21	-11 24	14 13	5 9
20	9 59 17	10 7 13 58	0 12 53 12	3 8 32 19	9 20 18 45	10 13 41 33	10 16 37 46	5 9 27 24	8 24 58 47	8 26 11 52	-11 2	18 29	4 57
21	10 3 14	10 8 14 26	0 25 43 55	3 8 18 13	9 21 53 4	10 13 56 0	10 17 52 47	5 9 23 45	8 24 55 36	8 26 9 16	-10 41	22 0	4 30
22	10 7 10	10 9 14 53	1 8 53 17	3 8 4 52	9 23 28 19	10 14 10 28	10 19 7 47	5 9 20 3	8 24 52 25	8 26 8 32	-10 19	24 28	3 48
23	10 11 7	10 10 15 18	1 22 24 2	3 7 52 18	9 25 4 31	10 14 24 57	10 20 22 46	5 9 16 17	8 24 49 14	8 26 9 10	- 9 57	25 36	2 53
24	10 15 3	10 11 15 41	2 6 18 15	3 7 40 30	9 26 41 40	10 14 39 26	10 21 37 43	5 9 12 26	8 24 46 4	8 26 10 23	- 9 35	25 12	1 46
25	10 19 0	10 12 16 2	2 20 36 36	3 7 29 29	9 28 19 47	10 14 53 55	10 22 52 39	5 9 8 32	8 24 42 53	8 26 11 15	- 9 13	23 8	0 30
26	10 22 56	10 13 16 22	3 5 17 32	3 7 19 16	9 29 58 52	10 15 8 24	10 24 7 34	5 9 4 35	8 24 39 42	8 26 10 48	- 8 50	19 30	- 0 49
27	10 26 53	10 14 16 39	3 20 16 41	3 7 9 50	10 1 38 57	10 15 22 54	10 25 22 27	5 .9 0 33	8 24 36 31	8 26 8 24	- 8 28	14 32	- 2 6
28	10 30 49	10 15 16 55	4 5 26 45	3 7 1 11	10 3 20 1	10 15 37 23	10 26 37 19	5 8 56 29	8 24 33 21	8 26 3 47	- 8 5	8 37	- 3 16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 14"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यमं राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 34 46	10 16 17 9	4 20 38 9	3 6 53 20	10 5 2 7	10 15 51 53	10 27 52 9	5 8 52 21	8 24 30 10	8 25 57 9	-7 43	2 11	-4 11
2	10 38 43	10 17 17 21	5 5 40 33	3 6 46 16	10 6 45 14	10 16 6 23	10 29 6 58	5 8 48 10	8 24 26 59	8 25 49 11	-7 20	-4 17	-4 48
3	10 42 39	10 18 17 31	5 20 24 32	3 6 40 0	10 8 29 23	10 16 20 52	11 0 21 46	5 8 43 56	8 24 23 48	8 25 40 50	-6 57	-10 22	-5 5
4	10 46 36	10 19 17 40	6 4 43 7	3 6 34 30	10 10 14 36	10 16 35 21	11 1 36 32	5 8 39 39	8 24 20 38	8 25 33 9	-6 34	-15 44	-5 3
5	10 50 32	10 20 17 47	6 18 32 35	3 6 29 47	10 12 0 54	10 16 49 51	11 2 51 17	5 8 35 19	8 24 17 27	8 25 27 0	-6 11	-20 5	-4 42
6	10 54 29	10 21 17 52	7 1 52 28	3 6 25 50	10 13 48 16	10 17 4 19	11 4 6 1	5 8 30 57	8 24 14 16	8 25 22 53	-5 48	-23 13	-4 7
7	10 58 25	10 22 17 56	7 14 44 59	3 6 22 40	10 15 36 43	10 17 18 48	11 5 20 43	5 8 26 32	8 24 11 6	8 25 20 54	-5 24	-25 3	-3 20
8	11 2 22	10 23 17 59	7 27 14 4	3 6 20 15	10 17 26 16	10 17 33 16	11 6 35 24	5 8 22 5	8 24 7 55	8 25 20 39	-5 1	-25 34	-2 25
9	11 6 18	10 24 18 0	8 9 24 43	3 6 18 36	10 19 16 54	10 17 47 43	11 7 50 4	5 8 17 35	8 24 4 44	8 25 21 24	-4 38	-24 48	-1 25
10	11 10 15	10 25 17 59	8 21 22 14	3 6 17 41	10 21 8 38	10 18 2 10	11 9 4 42	5 8 13 4	8 24 1 33	8 25 22 9	-4 14	-22 55	-0 21
11	11 14 12	10 26 17 56	9 3 11 48	3 6 17 32	10 23 1 28	10 18 16 36	11 10 19 19	5 8 8 30	8 23 58 23	8 25 21 54	-3 50	-20 2	0 42
12	11 18 8	10 27 17 52	9 14 58 9	3 6 18 6	10 24 55 21	10 18 31 1	11 11 33 54	5 8 3 55	8 23 55 12	8 25 19 46	-3 27	-16 22	1 43
13	11 22 5	10 28 17 46	9 26 45 20	3 6 19 24	10 26 50 17	10 18 45 26	11 12 48 28	5 7 59 19	8 23 52 1	8 25 15 8	-3 3	-12 3	2 39
14	11 26 1	10 29 17 39	10 8 36 38	3 6 21 25	10 28 46 13	10 18 59 49	11 14 3 1	5 7 54 41	8 23 48 50	8 25 7 48	-2 40	-7 17	3 29
15	11 29 58	11 0 17 29	10 20 34 30	3 6 24 9	11 0 43 5	10 19 14 12	11 15 17 32	5 7 50 1	8 23 45 40	8 24 57 56	-2 16	-2 13	4 10
16	11 33 54	11 1 17 18	11 2 40 39	3 6 27 35	11 2 40 51	10 19 28 33	11 16 32 1	5 7 45 21	8 23 42 29	8 24 46 10	-1 52	2 58	4 40
17	11 37 51	11 2 17 4	11 14 56 7	3 6 31 42	11 4 39 23	10 19 42 54	11 17 46 29	5 7 40 39	8 23 39 18	8 24 33 27	-1 29	8 6	4 58
18	11 41 47	11 3 16 49	11 27 21 37	3 6 36 30	11 6 38 37	10 19 57 13	11 19 0 55	5 7 35 57	8 23 36 7	8 24 20 55	-1 5	12 59	5 2
19	11 45 44	11 4 16 31	0 9 57 39	3 6 41 58	11 8 38 22	10 20 11 30	11 20 15 19	5 7 31 14	8 23 32 57	8 24 9 43	-0 41	17 24	4 51
20	11 49 41	11 5 16 11	0 22 44 56	3 6 48 6	11 10 38 31	10 20 25 46	11 21 29 41	5 7 26 31	8 23 29 46	8 24 0 48	-0 17	21 5	4 25
21	11 53 37	11 6 15 49	1 5 44 27	3 6 54 52	11 12 38 52	10 20 40 1	11 22 44 1	5 7 21 47	8 23 26 35	8 23 54 42	0 6	23 46	3 46
22	11 57 34	11 7 15 24	1 18 57 38	3 7 2 16	11 14 39 11	10 20 54 14	11 23 58 20	5 7 17 3	8 23 23 25	8 23 51 24	0 30	25 13	2 54
23	12 1 30	11 8 14 58	2 2 26 10	3 7 10 17	11 16 39 13	10 21 8 25	11 25 12 36	5 7 12 20	8 23 20 14	8 23 50 19	0 54	25 14	1 51
24	12 5 27	11 9 14 29	2 16 11 44	3 7 18 54	11 18 38 41	10 21 22 34	11 26 26 51	5 7 7 36	8 23 17 3	8 23 50 25	1 17	23 43	0 40
25	12 9 23	11 10 13 57	3 0 15 29	3 7 28 7	11 20 37 16	10 21 36 42	11 27 41 3	5 7 2 53	8 23 13 52	8 23 50 23	1 41	20 42	-0 34
26	12 13 20	11 11 13 24	3 14 37 17	3 7 37 55	11 22 34 37	10 21 50 48	11 28 55 14	5 6 58 10	8 23 10 42	8 23 48 56	2 5	16 22	-1 48
27	12 17 16	11 12 12 48	3 29 15 4	3 7 48 17	11 24 30 22	10 22 4 51	0 0 9 22	5 6 53 28	8 23 7 31	8 23 45 5	2 28	11 0	-2 56
28	12 21 13	11 13 12 10	4 14 4 17	3 7 59 13	11 26 24 6	10 22 18 53	0 1 23 28	5 6 48 47	8 23 4 20	8 23 38 26	2 52	4 56	-3 53
29	12 25 10	11 14 11 29	4 28 57 59	3 8 10 40	11 28 15 25	10 22 32 53	0 2 37 32	5 6 44 7	8 23 1 9	8 23 29 10	3 15	-1 24	-4 34
30	12 29 6	11 15 10 47	5 13 47 35	3 8 22 40	0 0 3 54	10 22 46 50	0 3 51 34	5 6 39 28	8 22 57 59	8 23 18 2	3 38	-7 38	-4 57
31	12 33 3	11 16 10 3	5 28 24 21	3 8 35 11	0 1 49 9	10 23 0 45	0 5 5 34	5 6 34 50	8 22 54 48	8 23 6 14	4 2	-13 21	-4 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 17"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 17''

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	36	59	11	17	9	16	6	12	40	47	3	8	48	12	0	3	30	45	10	23	14	38	0	6	19	32	5	6	30	13	8	22	51	37	8	22	55	3	4	25	-18	12	- 4	43
2	12	40	56	11	18	8	28	6	26	31	51	3	9	1	43	0	5	8	19	10	23	28	28	0	7	33	28	5	6	25	38	8	22	48	26	8	22	45	34	4	48	-21	54	- 4	11
3	12	44	52	11	19	7	37	7	9	55	28	3	9	15	43	0	6	41	31	10	23	42	17	0	8	47	22	5	6	21	4	8	22	45	16	8	22	38	32	5	11	-24	17	- 3	25
4	12	48	49	11	20	6	45	7	22	52	21	3	9	30	12	0	8	10	0	10	23	56	2	0	10	1	14	5	6	16	33	8	22	42	5	8	22	34	9	5	34	-25	17	- 2	30
5	12	52	45	11	21	5	51	8	5	25	25	3	9	45	8	0	9	33	27	10	24	9	45	0	11	15	4	5	6	12	3	8	22	38	54	8	22	32	3	5	57	-24	56	- 1	29
6	12	56	42	11	22	4	56	8	17	39	4	3	10	0	33	0	10	51	36	10	24	23	26	0	12	28	52	5	6	7	35	8	22	35	44	8	22	31	29	6	20	-23	21	- 0	26
7	13	0	39	11	23	3	58	8	29	38	33	3	10	16	24	0	12	4	14	10	24	37	3	0	13	42	38	5	6	3	10	8	22	32	33	8	22	31	22	6	42	-20	45	0	38
8	13	4	35	11	24	2	59	9	11	29	26	3	10	32	41	0	13	11	6	10	24	50	38	0	14	56	22	5	5	58	46	8	22	29	22	8	22	30	34	7	5	-17	18	1	39
9	13	8	32	11	25	1	58	9	23	17	8	3	10	49	25	0	14	12	3	10	25	4	10	0	16	10	4	5	5	54	26	8	22	26	11	8	22	28	6	7	27	-13	11	2	35
10	13	12	28	11	26	0	56	10	5	6	34	3	11	6	33	0	15	6	55	10	25	17	39	0	17	23	44	5	5	50	8	8	22	23	1	8	22	23	12	7	50	- 8	35	3	25
11	13	16	25	11	26	59	51	10	17	1	59	3	11	24	7	0	15	55	34	10	25	31	5	0	18	37	22	5	5	45	52	8	22	19	50	8	22	15	34	8	12	- 3	38	4	6
12	13	20	21	11	27	58	45	10	29	6	41	3	11	42	5	0	16	37	54	10	25	44	27	0	19	50	58	5	5	41	40	8	22	16	39	8	22	5	18	8	34	1	30	4	37
13	13	24	18	11	28	57	37	11	11	23	0	3	12	0	27	0	17	13	50	10	25	57	47	0	21	4	31	5	5	37	31	8	22	13	28	8	21	52	59	8	56	6	39	4	55
14	13	28	14	11	29	56	27	11	23	52	13	3	12	19	13	0	17	43	21	10	26	11	3	0	22	18	3	5	5	33	24	8	22	10	18	8	21	39	34	9	17	11	38	5	0
15	13	32	11	0	0	55	15	0	6	34	38	3	12	38	21	0	18	6	26	10	26	24	15	0	23	31	33	5	5	29	22	8	22	7	7	8	21	26	13	9	39	16	12	4	50
16	13	36	8	0	1	54	1	0	19	29	51	3	12	57	52	0	18	23	5	10	26	37	24	0	24	45	0	5	5	25	22	8	22	3	56	8	21	14	9	10	0	20	6	4	25
17	13	40	4	0	2	52	44	1	2	36	58	3	13	17	45	0	18	33	24	10	26	50	30	0	25	58	24	5	5	21	26	8	22	0	45	8	21	4	23	10	22	23	3	3	46
18	13	44	1	0	3	51	26	1	15	55	7	3	13	37	59	0	18	37	29	10	27	3	31	0	27	11	47	5	5	17	34	8	21	57	35	8	20	57	33	10	43	24	48	2	54
19	13	47	57	0	4	50	6	1	29	23	42	3	13	58	34	0	18	35	31	10	27	16	29	0	28	25	7	5	5	13	46	8	21	54	24	8	20	53	40	11	4	25	7	1	51
20	13	51	54	0	5	48	43	2	13	2	32	3	14	19	29	0	18	27	43	10	27	29	23	0	29	38	24	5	5	10	2	8	21	51	13	8	20	52	15	11	24	23	56	0	41
21	13	55	50	0	6	47	18	2	26	51	44	3	14	40	45	0	18	14	23	10	27	42	13	1	0	51	39	5	5	6	21	8	21	48	2	8	20	52	18	11	45	21	18	- 0	32
22	13	59	47	0	7	45	51	3	10	51	31	3	15	2	20	0	17	55	52	10	27	54	59	1	2	4	52	5	5	2	45	8	21	44	52	8	20	52	30	12	5	17	22	- 1	44
23	14	3	43	0	8	44	21	3	25	1	38	3	15	24	14	0	17	32	36	10	28	7	41	1	3	18	1	5	4	59	13	8	21	41	41	8	20	51	35	12	25	12	25	- 2	51
24	14	7	40	0	9	42	50	4	9	20	52	3	15	46	26	0	17	5	4	10	28	20	19	1	4	31	8	5	4	55	46	8	21	38	30	8	20	48	34	12	45	6	44	- 3	47
25	14	11	37	0	10	41	16	4	23	46	33	3	16	8	57	0	16	33	50	10	28	32	52	1	5	44	13	5	4	52	23	8	21	35	19	8	20	42	58	13	5	0	41	- 4	30
26	14	15	33	0	11	39	41	5	8	14	25	3	16	31	45	0	15	59	32	10	28	45	22	1	6	57	14	5	4	49	4	8	21	32	9	8	20	34	54	13	25	- 5	25	- 4	56
27	14	19	30	0	12	38	3	5	22	38	52	3	16	54	50	0	15	22	48	10	28	57	46	1	8	10	13	5	4	45	50	8	21	28	58	8	20	25	2	13	44	-11	12	- 5	2
28	14	23	26	0	13	36	23	6	6	53	40	3	17	18	12	0	14	44	22	10	29	10	7	1	9	23	10	5	4	42	41	8	21	25	47	8	20	14	26	14	3	-16	19	- 4	50
29	14	27	23	0	14	34	42	6	20	53	1	3	17	41	51	0	14	4	56	10	29	22	22	1	10	36	3	5	4	39	36	8	21	22	36	8	20	4	16	14	22	-20	27	- 4	20
30	14	31	19	0	15	32	59	7	4	32	26	3	18	5	45	0	13	25	14	10	29	34	34	1	11	48	54	5	4	36	37	8	21	19	26	8	19	55	36	14	40	-23	21	- 3	36

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मई 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 20"

मई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	14 35 16	0 16 31 14	7 17 49 26	3 18 29 56	0 12 45 59	10 29 46 40	1 13 1 42	5 4 33 42	8 21 16 15	8 19 49 8	14 59	-24 52	-2 42
2	14 39 12	0 17 29 27	8 0 43 40	3 18 54 22	0 12 7 52	10 29 58 42	1 14 14 28	5 4 30 52	8 21 13 4	8 19 45 8	15 17	-25 0	-1 40
3	14 43 9	0 18 27 39	8 13 16 47	3 19 19 3	0 11 31 32	11 0 10 39	1 15 27 11	5 4 28 7	8 21 9 53	8 19 43 22	15 35	-23 49	-0 34
4	14 47 6	0 19 25 49	8 25 31 59	3 19 43 59	0 10 57 33	11 0 22 31	1 16 39 51	5 4 25 28	8 21 6 43	8 19 43 13	15 52	-21 30	0 31
5	14 51 2	0 20 23 58	9 7 33 38	3 20 9 9	0 10 26 28	11 0 34 17	1 17 52 29	5 4 22 53	8 21 3 32	8 19 43 51	16 10	-18 17	1 34
6	14 54 59	0 21 22 5	9 19 26 43	3 20 34 34	0 9 58 44	11 0 45 59	1 19 5 4	5 4 20 24	8 21 0 21	8 19 44 18	16 27	-14 21	2 32
7	14 58 55	0 22 20 11	10 1 16 35	3 21 0 13	0 9 34 43	11 0 57 36	1 20 17 37	5 4 18 1	8 20 57 10	8 19 43 42	16 43	-9 54	3 24
8	15 2 52	0 23 18 16	10 13 8 27	3 21 26 6	0 9 14 45	11 1 9 7	1 21 30 6	5 4 15 42	8 20 53 59	8 19 41 24	17 0	-5 4	4 6
9	15 6 48	0 24 16 19	10 25 7 9	3 21 52 13	0 8 59 3	11 1 20 33	1 22 42 34	5 4 13 30	8 20 50 49	8 19 37 4	17 16	-0 2	4 39
10	15 10 45	0 25 14 21	11 7 16 51	3 22 18 33	0 8 47 50	11 1 31 53	1 23 54 58	5 4 11 22	8 20 47 38	8 19 30 41	17 32	5 5	4 59
11	15 14 41	0 26 12 22	11 19 40 49	3 22 45 7	0 8 41 11	11 1 43 8	1 25 7 20	5 4 9 21	8 20 44 27	8 19 22 40	17 48	10 6	5 6
12	15 18 38	0 27 10 21	0 2 21 10	3 23 11 53	0 8 39 10	11 1 54 17	1 26 19 39	5 4 7 25	8 20 41 16	8 19 13 40	18 3	14 48	4 58
13	15 22 35	0 28 8 18	0 15 18 44	3 23 38 52	0 8 41 49	11 2 5 20	1 27 31 55	5 4 5 35	8 20 38 6	8 19 4 35	18 18	18 56	4 35
14	15 26 31	0 29 6 14	0 28 33 2	3 24 6 4	0 8 49 6	11 2 16 17	1 28 44 8	5 4 3 50	8 20 34 55	8 18 56 21	18 33	22 13	3 57
15	15 30 28	1 0 4 9	1 12 2 29	3 24 33 28	0 9 0 57	11 2 27 8	1 29 56 19	5 4 2 12	8 20 31 44	8 18 49 47	18 47	24 21	3 4
16	15 34 24	1 1 2 2	1 25 44 41	3 25 1 4	0 9 17 19	11 2 37 53	2 1 8 26	5 4 0 39	8 20 28 33	8 18 45 22	19 2	25 3	2 1
17	15 38 21	1 1 59 53	2 9 37 0	3 25 28 52	0 9 38 7	11 2 48 31	2 2 20 30	5 3 59 13	8 20 25 22	8 18 43 12	19 15	24 12	0 49
18	15 42 17	1 2 57 43	2 23 36 48	3 25 56 51	0 10 3 13	11 2 59 4	2 3 32 31	5 3 57 52	8 20 22 12	8 18 42 57	19 29	21 50	-0 26
19	15 46 14	1 3 55 31	3 7 41 54	3 26 25 2	0 10 32 31	11 3 9 30	2 4 44 29	5 3 56 37	8 20 19 1	8 18 43 55	19 42	18 8	-1 41
20	15 50 10	1 4 53 17	3 21 50 24	3 26 53 24	0 11 5 54	11 3 19 49	2 5 56 23	5 3 55 28	8 20 15 50	8 18 45 9	19 55	13 23	-2 49
21	15 54 7	1 5 51 2	4 6 0 43	3 27 21 56	0 11 43 15	11 3 30 2	2 7 8 14	5 3 54 26	8 20 12 39	8 18 45 45	20 7	7 54	-3 48
22	15 58 4	1 6 48 45	4 20 11 12	3 27 50 39	0 12 24 26	11 3 40 9	2 8 20 2	5 3 53 29	8 20 9 28	8 18 44 59	20 19	2 2	-4 32
23	16 2 0	1 7 46 27	5 4 19 56	3 28 19 33	0 13 9 21	11 3 50 8	2 9 31 46	5 3 52 39	8 20 6 18	8 18 42 28	20 31	-3 56	-5 0
24	16 5 57	1 8 44 7	5 18 24 30	3 28 48 36	0 13 57 52	11 4 0 1	2 10 43 26	5 3 51 54	8 20 3 7	8 18 38 17	20 42	-9 39	-5 10
25	16 9 53	1 9 41 45	6 2 22 0	3 29 17 50	0 14 49 53	11 4 9 46	2 11 55 2	5 3 51 16	8 19 59 56	8 18 32 51	20 53	-14 51	-5 1
26	16 13 50	1 10 39 22	6 16 9 16	3 29 47 13	0 15 45 18	11 4 19 25	2 13 6 35	5 3 50 43	8 19 56 45	8 18 26 52	21 4	-19 12	-4 35
27	16 17 46	1 11 36 57	6 29 43 14	4 0 16 45	0 16 44 1	11 4 28 57	2 14 18 5	5 3 50 17	8 19 53 34	8 18 21 7	21 14	-22 28	-3 53
28	16 21 43	1 12 34 32	7 13 1 26	4 0 46 27	0 17 45 56	11 4 38 21	2 15 29 30	5 3 49 57	8 19 50 24	8 18 16 19	21 24	-24 26	-3 0
29	16 25 39	1 13 32 5	7 26 2 21	4 1 16 19	0 18 50 58	11 4 47 38	2 16 40 52	5 3 49 43	8 19 47 13	8 18 12 56	21 34	-25 1	-1 58
30	16 29 36	1 14 29 37	8 8 45 42	4 1 46 19	0 19 59 4	11 4 56 48	2 17 52 9	5 3 49 35	8 19 44 2	8 18 11 10	21 43	-24 16	-0 51
31	16 33 33	1 15 27 8	8 21 12 27	4 2 16 28	0 21 10 9	11 5 5 51	2 19 3 23	5 3 49 33	8 19 40 51	8 18 10 55	21 52	-22 18	0 17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 25"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 25"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्यक्रां		चन्द्रक्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	37	29	1	16	24	38	9	3	24	46	4	2	46	46	0	22	24	10	11	5	14	45	2	20	14	33	5	3	49	37	8	19	37	40	8	18	11	48	22	1	-19	20	1	22
2	16	41	26	1	17	22	7	9	15	25	49	4	3	17	13	0	23	41	4	11	5	23	33	2	21	25	40	5	3	49	48	8	19	34	30	8	18	13	20	22	9	-15	35	2	24
3	16	45	22	1	18	19	36	9	27	19	33	4	3	47	48	0	25	0	47	11	5	32	12	2	22	36	42	5	3	50	4	8	19	31	19	8	18	14	58	22	16	-11	16	3	18
4	16	49	19	1	19	17	4	10	9	10	30	4	4	18	32	0	26	23	19	11	5	40	44	2	23	47	41	5	3	50	27	8	19	28	8	8	18	16	9	22	24	-6	33	4	4
5	16	53	15	1	20	14	31	10	21	3	27	4	4	49	24	0	27	48	36	11	5	49	7	2	24	58	35	5	3	50	56	8	19	24	57	8	18	16	31	22	31	-1	35	4	39
6	16	57	12	1	21	11	57	11	3	3	18	4	5	20	25	0	29	16	37	11	5	57	23	2	26	9	26	5	3	51	31	8	19	21	46	8	18	15	49	22	37	3	28	5	3
7	17	1	8	1	22	9	23	11	15	14	40	4	5	51	34	1	0	47	22	11	6	5	30	2	27	20	13	5	3	52	12	8	19	18	35	8	18	14	2	22	43	8	28	5	13
8	17	5	5	1	23	6	48	11	27	41	38	4	6	22	51	1	2	20	48	11	6	13	29	2	28	30	56	5	3	52	59	8	19	15	25	8	18	11	19	22	49	13	14	5	10
9	17	9	2	1	24	4	13	0	10	27	24	4	6	54	16	1	3	56	56	11	6	21	19	2	29	41	34	5	3	53	52	8	19	12	14	8	18	8	1	22	54	17	34	4	51
10	17	12	58	1	25	1	37	0	23	33	56	4	7	25	49	1	5	35	44	11	6	29	1	3	0	52	9	5	3	54	51	8	19	9	3	8	18	4	35	22	59	21	10	4	16
11	17	16	55	1	25	59	0	1	7	1	42	4	7	57	30	1	7	17	11	11	6	36	34	3	2	2	39	5	3	55	57	8	19	5	52	8	18	1	29	23	4	23	44	3	27
12	17	20	51	1	26	56	22	1	20	49	27	4	8	29	19	1	9	1	17	11	6	43	59	3	3	13	4	5	3	57	8	8	19	2	41	8	17	59	6	23	8	24	58	2	24
13	17	24	48	1	27	53	44	2	4	54	22	4	9	1	15	1	10	47	59	11	6	51	14	3	4	23	25	5	3	58	26	8	18	59	31	8	17	57	41	23	11	24	37	1	11
14	17	28	44	1	28	51	5	2	19	12	20	4	9	33	19	1	12	37	16	11	6	58	21	3	5	33	42	5	3	59	49	8	18	56	20	8	17	57	17	23	15	22	40	-0	7
15	17	32	41	1	29	48	25	3	3	38	27	4	10	5	31	1	14	29	4	11	7	5	19	3	6	43	54	5	4	1	19	8	18	53	9	8	17	57	44	23	18	19	14	-1	26
16	17	36	37	2	0	45	45	3	18	7	37	4	10	37	49	1	16	23	20	11	7	12	7	3	7	54	1	5	4	2	55	8	18	49	58	8	17	58	43	23	20	14	37	-2	39
17	17	40	34	2	1	43	3	4	2	35	7	4	11	10	15	1	18	19	59	11	7	18	46	3	9	4	3	5	4	4	36	8	18	46	47	8	17	59	50	23	22	9	10	-3	42
18	17	44	31	2	2	40	21	4	16	56	56	4	11	42	48	1	20	18	55	11	7	25	16	3	10	13	59	5	4	6	24	8	18	43	36	8	18	0	42	23	24	3	16	-4	31
19	17	48	27	2	3	37	38	5	1	10	0	4	12	15	28	1	22	20	2	11	7	31	36	3	11	23	51	5	4	8	17	8	18	40	26	8	18	1	4	23	25	-2	43	-5	3
20	17	52	24	2	4	34	54	5	15	12	9	4	12	48	14	1	24	23	9	11	7	37	47	3	12	33	37	5	4	10	16	8	18	37	15	8	18	0	48	23	26	-8	29	-5	16
21	17	56	20	2	5	32	9	5	29	1	56	4	13	21	7	1	26	28	8	11	7	43	48	3	13	43	17	5	4	12	21	8	18	34	4	8	17	59	57	23	26	-13	45	-5	10
22	18	0	17	2	6	29	24	6	12	38	29	4	13	54	7	1	28	34	46	11	7	49	40	3	14	52	52	5	4	14	32	8	18	30	53	8	17	58	44	23	26	-18	15	-4	48
23	18	4	13	2	7	26	38	6	26	1	15	4	14	27	13	2	0	42	49	11	7	55	22	3	16	2	20	5	4	16	48	8	18	27	42	8	17	57	23	23	26	-21	45	-4	9
24	18	8	10	2	8	23	51	7	9	10	0	4	15	0	26	2	2	52	3	11	8	0	54	3	17	11	43	5	4	19	10	8	18	24	32	8	17	56	9	23	25	-24	2	-3	18
25	18	12	6	2	9	21	4	7	22	4	43	4	15	33	44	2	5	2	12	11	8	6	16	3	18	21	0	5	4	21	38	8	18	21	21	8	17	55	14	23	24	-25	0	-2	18
26	18	16	3	2	10	18	16	8	4	45	41	4	16	7	9	2	7	13	0	11	8	11	28	3	19	30	11	5	4	24	11	8	18	18	10	8	17	54	44	23	22	-24	38	-1	12
27	18	20	0	2	11	15	28	8	17	13	33	4	16	40	40	2	9	24	9	11	8	16	29	3	20	39	15	5	4	26	50	8	18	14	59	8	17	54	39	23	20	-23	2	-0	4
28	18	23	56	2	12	12	40	8	29	29	28	4	17	14	17	2	11	35	23	11	8	21	21	3	21	48	13	5	4	29	35	8	18	11	48	8	17	54	52	23	18	-20	21	1	4
29	18	27	53	2	13	9	52	9	11	35	6	4	17	48	1	2	13	46	25	11	8	26	3	3	22	57	5	5	4	32	24	8	18	8	37	8	17	55	16	23	15	-16	48	2	8
30	18	31	49	2	14	7	3	9	23	32	44	4	18	21	50	2	15	56	59	11	8	30	34	3	24	5	50	5	4	35	20	8	18	5	27	8	17	55	43	23	11	-12	38	3	5

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 30"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	35	46	2	15	4	15	10	5	25	15	4	18	55	45	2	18	6	52	11	8	34	54	3	25	14	28	5	4	38	21	8	18	2	16	8	17	56	6	23	8	-8	1	3	54
2	18	39	42	2	16	1	26	10	17	16	2	4	19	29	46	2	20	15	49	11	8	39	4	3	26	23	0	5	4	41	27	8	17	59	5	8	17	56	19	23	4	-3	7	4	33
3	18	43	39	2	16	58	38	10	29	9	0	4	20	3	53	2	22	23	38	11	8	43	4	3	27	31	25	5	4	44	38	8	17	55	54	8	17	56	23	22	59	1	53	5	0
4	18	47	35	2	17	55	50	11	11	8	25	4	20	38	6	2	24	30	10	11	8	46	52	3	28	39	44	5	4	47	55	8	17	52	43	8	17	56	20	22	54	6	52	5	15
5	18	51	32	2	18	53	2	11	23	18	43	4	21	12	25	2	26	35	16	11	8	50	30	3	29	47	55	5	4	51	17	8	17	49	33	8	17	56	15	22	49	11	40	5	16
6	18	55	29	2	19	50	15	0	5	44	21	4	21	46	49	2	28	38	49	11	8	53	57	4	0	55	59	5	4	54	44	8	17	46	22	8	17	56	13	22	43	16	5	5	2
7	18	59	25	2	20	47	28	0	18	29	21	4	22	21	20	3	0	40	42	11	8	57	13	4	2	3	56	5	4	58	17	8	17	43	11	8	17	56	19	22	37	19	55	4	33
8	19	3	22	2	21	44	41	1	1	36	55	4	22	55	56	3	2	40	51	11	9	0	17	4	3	11	46	5	5	1	54	8	17	40	0	8	17	56	35	22	31	22	53	3	50
9	19	7	18	2	22	41	54	1	15	8	58	4	23	30	38	3	4	39	13	11	9	3	11	4	4	19	28	5	5	5	37	8	17	36	49	8	17	56	58	22	24	24	40	2	52
10	19	11	15	2	23	39	8	1	29	5	39	4	24	5	26	3	6	35	45	11	9	5	53	4	5	27	3	5	5	9	24	8	17	33	39	8	17	57	22	22	16	24	58	1	43
11	19	15	11	2	24	36	22	2	13	24	59	4	24	40	19	3	8	30	25	11	9	8	24	4	6	34	29	5	5	13	17	8	17	30	28	8	17	57	38	22	9	23	39	0	25
12	19	19	8	2	25	33	36	2	28	2	41	4	25	15	18	3	10	23	11	11	9	10	43	4	7	41	48	5	5	17	15	8	17	27	17	8	17	57	38	22	1	20	43	-0	56
13	19	23	4	2	26	30	50	3	12	52	29	4	25	50	23	3	12	14	4	11	9	12	51	4	8	48	58	5	5	21	17	8	17	24	6	8	17	57	14	21	52	16	24	-2	14
14	19	27	1	2	27	28	5	3	27	46	50	4	26	25	33	3	14	3	2	11	9	14	48	4	9	56	0	5	5	25	25	8	17	20	55	8	17	56	26	21	43	11	2	-3	23
15	19	30	58	2	28	25	20	4	12	37	51	4	27	0	48	3	15	50	5	11	9	16	33	4	11	2	52	5	5	29	37	8	17	17	44	8	17	55	21	21	34	5	4	-4	19
16	19	34	54	2	29	22	34	4	27	18	28	4	27	36	9	3	17	35	13	11	9	18	6	4	12	9	36	5	5	33	54	8	17	14	34	8	17	54	11	21	25	-1	6	-4	56
17	19	38	51	3	0	19	49	5	11	43	19	4	28	11	35	3	19	18	27	11	9	19	27	4	13	16	10	5	5	38	15	8	17	11	23	8	17	53	11	21	15	-7	5	-5	15
18	19	42	47	3	1	17	4	5	25	49	2	4	28	47	6	3	20	59	45	11	9	20	37	4	14	22	35	5	5	42	42	8	17	8	12	8	17	52	36	21	5	-12	35	-5	13
19	19	46	44	3	2	14	19	6	9	34	19	4	29	22	43	3	22	39	10	11	9	21	36	4	15	28	49	5	5	47	12	8	17	5	1	8	17	52	37	20	54	-17	19	-4	54
20	19	50	40	3	3	11	35	6	22	59	25	4	29	58	24	3	24	16	39	11	9	22	22	4	16	34	54	5	5	51	48	8	17	1	50	8	17	53	15	20	43	-21	3	-4	19
21	19	54	37	3	4	8	50	7	6	5	46	5	0	34	11	3	25	52	15	11	9	22	57	4	17	40	48	5	5	56	27	8	16	58	40	8	17	54	23	20	32	-23	37	-3	31
22	19	58	33	3	5	6	6	7	18	55	24	5	1	10	2	3	27	25	55	11	9	23	21	4	18	46	31	5	6	1	11	8	16	55	29	8	17	55	43	20	20	-24	53	-2	34
23	20	2	30	3	6	3	22	8	1	30	34	5	1	45	58	3	28	57	40	11	9	23	32	4	19	52	3	5	6	6	0	8	16	52	18	8	17	56	55	20	8	-24	51	-1	30
24	20	6	27	3	7	0	38	8	13	53	30	5	2	22	0	4	0	27	30	11	9	23	32	4	20	57	23	5	6	10	52	8	16	49	7	8	17	57	37	19	56	-23	35	-0	22
25	20	10	23	3	7	57	55	8	26	6	17	5	2	58	6	4	1	55	23	11	9	23	20	4	22	2	32	5	6	15	49	8	16	45	56	8	17	57	28	19	43	-21	12	0	45
26	20	14	20	3	8	55	12	9	8	10	49	5	3	34	16	4	3	21	18	11	9	22	56	4	23	7	29	5	6	20	50	8	16	42	46	8	17	56	18	19	30	-17	54	1	49
27	20	18	16	3	9	52	31	9	20	8	55	5	4	10	32	4	4	45	14	11	9	22	21	4	24	12	13	5	6	25	55	8	16	39	35	8	17	54	3	19	17	-13	54	2	48
28	20	22	13	3	10	49	49	10	2	2	27	5	4	46	52	4	6	7	8	11	9	21	33	4	25	16	45	5	6	31	4	8	16	36	24	8	17	50	52	19	3	-9	24	3	39
29	20	26	9	3	11	47	9	10	13	53	31	5	5	23	17	4	7	27	0	11	9	20	34	4	26	21	5	5	6	36	17	8	16	33	13	8	17	47	1	18	49	-4	34	4	21
30	20	30	6	3	12	44	29	10	25	44	29	5	5	59	47	4	8	44	45	11	9	19	23	4	27	25	11	5	6	41	34	8	16	30	3	8	17	42	55	18	35	0	24	4	51
31	20	34	2	3	13	41	51	11	7	38	7	5	6	36	22	4	10	0	21	11	9	18	1	4	28	29	4	5	6	46	55	8	16	26	52	8	17	39	2	18	21	5	22	5	9

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 36"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 36"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	37	59	3	14	39	13	11	19	37	41	5	7	13	2	4	11	13	45	11	9	16	27	4	29	32	43	5	6	52	20	8	16	23	41	8	17	35	49	18	6	10	11	5	13
2	20	41	56	3	15	36	37	0	1	46	54	5	7	49	46	4	12	24	52	11	9	14	41	5	0	36	9	5	6	57	48	8	16	20	30	8	17	33	37	17	51	14	41	5	4
3	20	45	52	3	16	34	2	0	14	9	51	5	8	26	36	4	13	33	38	11	9	12	43	5	1	39	20	5	7	3	20	8	16	17	19	8	17	32	37	17	35	18	39	4	40
4	20	49	49	3	17	31	28	0	26	50	43	5	9	3	30	4	14	39	58	11	9	10	33	5	2	42	16	5	7	8	56	8	16	14	9	8	17	32	48	17	19	21	52	4	3
5	20	53	45	3	18	28	55	1	9	53	28	5	9	40	29	4	15	43	46	11	9	8	12	5	3	44	58	5	7	14	36	8	16	10	58	8	17	33	52	17	3	24	4	3	12
6	20	57	42	3	19	26	23	1	23	21	18	5	10	17	32	4	16	44	57	11	9	5	40	5	4	47	24	5	7	20	19	8	16	7	47	8	17	35	19	16	47	24	59	2	9
7	21	1	38	3	20	23	53	2	7	16	4	5	10	54	41	4	17	43	24	11	9	2	56	5	5	49	34	5	7	26	5	8	16	4	36	8	17	36	30	16	30	24	22	0	56
8	21	5	35	3	21	21	24	2	21	37	30	5	11	31	55	4	18	38	59	11	9	0	0	5	6	51	28	5	7	31	56	8	16	1	26	8	17	36	47	16	14	22	10	-0	22
9	21	9	31	3	22	18	56	3	6	22	35	5	12	9	13	4	19	31	34	11	8	56	53	5	7	53	5	5	7	37	49	8	15	58	15	8	17	35	42	15	57	18	26	-1	41
10	21	13	28	3	23	16	29	3	21	25	19	5	12	46	36	4	20	21	1	11	8	53	35	5	8	54	25	5	7	43	46	8	15	55	4	8	17	33	2	15	39	13	26	-2	54
11	21	17	25	3	24	14	3	4	6	37	3	5	13	24	3	4	21	7	9	11	8	50	5	5	9	55	27	5	7	49	46	8	15	51	53	8	17	28	55	15	22	7	35	-3	55
12	21	21	21	3	25	11	39	4	21	47	44	5	14	1	36	4	21	49	48	11	8	46	25	5	10	56	11	5	7	55	49	8	15	48	42	8	17	23	52	15	4	1	17	-4	40
13	21	25	18	3	26	9	15	5	6	47	26	5	14	39	13	4	22	28	47	11	8	42	34	5	11	56	35	5	8	1	56	8	15	45	32	8	17	18	33	14	46	-4	59	-5	5
14	21	29	14	3	27	6	52	5	21	27	59	5	15	16	54	4	23	3	54	11	8	38	32	5	12	56	40	5	8	8	5	8	15	42	21	8	17	13	48	14	27	-10	51	-5	9
15	21	33	11	3	28	4	31	6	5	44	5	5	15	54	41	4	23	34	57	11	8	34	19	5	13	56	24	5	8	14	18	8	15	39	10	8	17	10	15	14	9	-15	58	-4	54
16	21	37	7	3	29	2	10	6	19	33	30	5	16	32	31	4	24	1	41	11	8	29	56	5	14	55	47	5	8	20	33	8	15	35	59	8	17	8	17	13	50	-20	5	-4	22
17	21	41	4	3	29	59	50	7	2	56	46	5	17	10	26	4	24	23	53	11	8	25	22	5	15	54	47	5	8	26	51	8	15	32	49	8	17	7	56	13	31	-22	59	-3	37
18	21	45	0	4	0	57	32	7	15	56	16	5	17	48	26	4	24	41	20	11	8	20	39	5	16	53	25	5	8	33	12	8	15	29	38	8	17	8	49	13	12	-24	36	-2	41
19	21	48	57	4	1	55	14	7	28	35	33	5	18	26	30	4	24	53	47	11	8	15	45	5	17	51	39	5	8	39	36	8	15	26	27	8	17	10	15	12	52	-24	53	-1	39
20	21	52	54	4	2	52	57	8	10	58	32	5	19	4	38	4	25	1	2	11	8	10	42	5	18	49	29	5	8	46	3	8	15	23	16	8	17	11	23	12	33	-23	54	-0	34
21	21	56	50	4	3	50	42	8	23	9	8	5	19	42	50	4	25	2	52	11	8	5	29	5	19	46	53	5	8	52	32	8	15	20	6	8	17	11	25	12	13	-21	48	0	32
22	22	0	47	4	4	48	27	9	5	10	53	5	20	21	7	4	24	59	6	11	8	0	7	5	20	43	51	5	8	59	4	8	15	16	55	8	17	9	38	11	53	-18	46	1	36
23	22	4	43	4	5	46	14	9	17	6	46	5	20	59	28	4	24	49	34	11	7	54	36	5	21	40	22	5	9	5	38	8	15	13	44	8	17	5	39	11	33	-14	58	2	34
24	22	8	40	4	6	44	3	9	28	59	16	5	21	37	53	4	24	34	12	11	7	48	55	5	22	36	25	5	9	12	14	8	15	10	33	8	16	59	23	11	13	-10	37	3	26
25	22	12	36	4	7	41	52	10	10	50	25	5	22	16	23	4	24	12	56	11	7	43	6	5	23	31	59	5	9	18	54	8	15	7	23	8	16	51	9	10	52	-5	53	4	8
26	22	16	33	4	8	39	43	10	22	41	55	5	22	54	57	4	23	45	51	11	7	37	8	5	24	27	4	5	9	25	35	8	15	4	12	8	16	41	32	10	31	-0	57	4	39
27	22	20	29	4	9	37	36	11	4	35	26	5	23	33	35	4	23	13	3	11	7	31	2	5	25	21	37	5	9	32	18	8	15	1	1	8	16	31	20	10	10	4	1	4	59
28	22	24	26	4	10	35	30	11	16	32	43	5	24	12	18	4	22	34	50	11	7	24	48	5	26	15	38	5	9	39	4	8	14	57	50	8	16	21	30	9	49	8	51	5	5
29	22	28	23	4	11	33	26	11	28	35	54	5	24	51	5	4	21	51	35	11	7	18	25	5	27	9	6	5	9	45	52	8	14	54	40	8	16	12	53	9	28	13	24	4	58
30	22	32	19	4	12	31	24	0	10	47	33	5	25	29	56	4	21	3	51	11	7	11	55	5	28	2	0	5	9	52	42	8	14	51	29	8	16	6	13	9	7	17	29	4	38
31	22	36	16	4	13	29	24	0	23	10	48	5	26	8	52	4	20	12	18	11	7	5	18	5	28	54	19	5	9	59	35	8	14	48	18	8	16	1	53	8	45	20	52	4	4

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 40"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	40	12	4	14	27	26	1	5	49	14	5	26	47	52	4	19	17	48	11	6	58	33	5	29	46	2	5	10	6	29	8	14	45	7	8	15	59	48	8	24	23	20	3	18
2	22	44	9	4	15	25	29	1	18	46	41	5	27	26	57	4	18	21	20	11	6	51	42	6	0	37	7	5	10	13	25	8	14	41	57	8	15	59	30	8	2	24	39	2	20
3	22	48	5	4	16	23	35	2	2	6	49	5	28	6	6	4	17	23	59	11	6	44	43	6	1	27	32	5	10	20	23	8	14	38	46	8	16	0	8	7	40	24	36	1	14
4	22	52	2	4	17	21	42	2	15	52	36	5	28	45	20	4	16	26	58	11	6	37	39	6	2	17	18	5	10	27	23	8	14	35	35	8	16	0	34	7	18	23	5	0	1
5	22	55	58	4	18	19	51	3	0	5	24	5	29	24	38	4	15	31	31	11	6	30	28	6	3	6	21	5	10	34	24	8	14	32	24	8	15	59	45	6	56	20	4	-1	14
6	22	59	55	4	19	18	2	3	14	44	6	6	0	4	0	4	14	38	55	11	6	23	12	6	3	54	41	5	10	41	27	8	14	29	14	8	15	56	51	6	34	15	43	-2	27
7	23	3	52	4	20	16	16	3	29	44	22	6	0	43	27	4	13	50	24	11	6	15	50	6	4	42	15	5	10	48	32	8	14	26	3	8	15	51	29	6	11	10	17	-3	31
8	23	7	48	4	21	14	31	4	14	58	31	6	1	22	58	4	13	7	8	11	6	8	23	6	5	29	2	5	10	55	39	8	14	22	52	8	15	43	49	5	49	4	10	-4	21
9	23	11	45	4	22	12	47	5	0	16	13	6	2	2	34	4	12	30	11	11	6	0	51	6	6	15	0	5	11	2	47	8	14	19	42	8	15	34	33	5	26	-2	12	-4	52
10	23	15	41	4	23	11	6	5	15	26	15	6	2	42	14	4	12	0	27	11	5	53	15	6	7	0	8	5	11	9	56	8	14	16	31	8	15	24	44	5	3	-8	23	-5	3
11	23	19	38	4	24	9	26	6	0	18	25	6	3	21	58	4	11	38	42	11	5	45	35	6	7	44	21	5	11	17	7	8	14	13	20	8	15	15	33	4	41	-13	57	-4	52
12	23	23	34	4	25	7	48	6	14	45	14	6	4	1	47	4	11	25	30	11	5	37	51	6	8	27	40	5	11	24	19	8	14	10	9	8	15	8	3	4	18	-18	35	-4	24
13	23	27	31	4	26	6	11	6	28	42	50	6	4	41	39	4	11	21	17	11	5	30	3	6	9	10	1	5	11	31	32	8	14	6	59	8	15	2	50	3	55	-21	59	-3	40
14	23	31	27	4	27	4	37	7	12	10	49	6	5	21	37	4	11	26	16	11	5	22	13	6	9	51	22	5	11	38	46	8	14	3	48	8	14	59	59	3	32	-24	3	-2	45
15	23	35	24	4	28	3	3	7	25	11	26	6	6	1	38	4	11	40	32	11	5	14	20	6	10	31	39	5	11	46	2	8	14	0	37	8	14	59	5	3	9	-24	43	-1	43
16	23	39	21	4	29	1	32	8	7	48	43	6	6	41	43	4	12	4	2	11	5	6	25	6	11	10	52	5	11	53	18	8	13	57	26	8	14	59	14	2	46	-24	4	-0	38
17	23	43	17	5	0	0	1	8	20	7	26	6	7	21	52	4	12	36	34	11	4	58	28	6	11	48	56	5	12	0	35	8	13	54	16	8	14	59	19	2	23	-22	14	0	27
18	23	47	14	5	0	58	33	9	2	12	34	6	8	2	6	4	13	17	49	11	4	50	30	6	12	25	50	5	12	7	54	8	13	51	5	8	14	58	11	2	0	-19	26	1	30
19	23	51	10	5	1	57	6	9	14	8	49	6	8	42	24	4	14	7	23	11	4	42	30	6	13	1	29	5	12	15	13	8	13	47	54	8	14	54	53	1	36	-15	51	2	28
20	23	55	7	5	2	55	41	9	26	0	20	6	9	22	45	4	15	4	47	11	4	34	30	6	13	35	52	5	12	22	33	8	13	44	44	8	14	48	49	1	13	-11	40	3	19
21	23	59	3	5	3	54	17	10	7	50	29	6	10	3	11	4	16	9	27	11	4	26	29	6	14	8	55	5	12	29	53	8	13	41	33	8	14	39	52	0	50	-7	4	4	1
22	0	3	0	5	4	52	56	10	19	41	57	6	10	43	41	4	17	20	47	11	4	18	28	6	14	40	34	5	12	37	14	8	13	38	22	8	14	28	19	0	26	-2	12	4	33
23	0	6	56	5	5	51	36	11	1	36	39	6	11	24	15	4	18	38	10	11	4	10	28	6	15	10	48	5	12	44	36	8	13	35	11	8	14	14	55	0	3	2	44	4	53
24	0	10	53	5	6	50	18	11	13	36	4	6	12	4	52	4	20	0	57	11	4	2	27	6	15	39	31	5	12	51	58	8	13	32	1	8	14	0	41	-0	20	7	36	5	0
25	0	14	50	5	7	49	2	11	25	41	19	6	12	45	35	4	21	28	29	11	3	54	28	6	16	6	42	5	12	59	21	8	13	28	50	8	13	46	49	-0	44	12	14	4	53
26	0	18	46	5	8	47	48	0	7	53	30	6	13	26	21	4	23	0	9	11	3	46	30	6	16	32	17	5	13	6	44	8	13	25	39	8	13	34	27	-1	7	16	25	4	34
27	0	22	43	5	9	46	37	0	20	13	57	6	14	7	11	4	24	35	21	11	3	38	34	6	16	56	12	5	13	14	7	8	13	22	28	8	13	24	31	-1	30	19	57	4	1
28	0	26	39	5	10	45	27	1	2	44	26	6	14	48	6	4	26	13	30	11	3	30	40	6	17	18	24	5	13	21	31	8	13	19	18	8	13	17	33	-1	54	22	36	3	16
29	0	30	36	5	11	44	20	1	15	27	17	6	15	29	4	4	27	54	7	11	3	22	48	6	17	38	50	5	13	28	55	8	13	16	7	8	13	13	33	-2	17	24	11	2	21
30	0	34	32	5	12	43	15	1	28	25	18	6	16	10	7	4	29	36	43	11	3	14	59	6	17	57	25	5	13	36	19	8	13	12	56	8	13	11	58	-2	40	24	30	1	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 43"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 43"

अक्टूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	0	38	29	5	13	42	13	2	11	41	35	6	16	51	14	5	1	20	51	11	3	7	13	6	18	14	6	5	13	43	43	8	13	9	45	8	13	11	47	-3	4	23	27	0	8
2	0	42	25	5	14	41	12	2	25	18	59	6	17	32	26	5	3	6	11	11	2	59	30	6	18	28	51	5	13	51	8	8	13	6	35	8	13	11	43	-3	27	21	0	-1	4
3	0	46	22	5	15	40	14	3	9	19	31	6	18	13	41	5	4	52	21	11	2	51	51	6	18	41	34	5	13	58	32	8	13	3	24	8	13	10	28	-3	50	17	15	-2	13
4	0	50	19	5	16	39	19	3	23	43	24	6	18	55	1	5	6	39	6	11	2	44	17	6	18	52	13	5	14	5	56	8	13	0	13	8	13	7	1	-4	13	12	24	-3	16
5	0	54	15	5	17	38	25	4	8	28	15	6	19	36	25	5	8	26	10	11	2	36	46	6	19	0	45	5	14	13	20	8	12	57	3	8	13	0	51	-4	36	6	44	-4	8
6	0	58	12	5	18	37	34	4	23	28	35	6	20	17	53	5	10	13	22	11	2	29	21	6	19	7	6	5	14	20	44	8	12	53	52	8	12	52	5	-5	0	0	35	-4	44
7	1	2	8	5	19	36	45	5	8	36	2	6	20	59	26	5	12	0	31	11	2	22	1	6	19	11	12	5	14	28	7	8	12	50	41	8	12	41	26	-5	23	-5	37	-5	0
8	1	6	5	5	20	35	58	5	23	40	26	6	21	41	2	5	13	47	29	11	2	14	46	6	19	13	2	5	14	35	30	8	12	47	30	8	12	30	2	-5	46	-11	29	-4	55
9	1	10	1	5	21	35	13	6	8	31	36	6	22	22	43	5	15	34	8	11	2	7	37	6	19	12	33	5	14	42	53	8	12	44	20	8	12	19	12	-6	8	-16	34	-4	30
10	1	13	58	5	22	34	30	6	23	1	5	6	23	4	28	5	17	20	24	11	2	0	35	6	19	9	42	5	14	50	15	8	12	41	9	8	12	10	4	-6	31	-20	34	-3	48
11	1	17	54	5	23	33	49	7	7	3	28	6	23	46	17	5	19	6	10	11	1	53	39	6	19	4	27	5	14	57	36	8	12	37	58	8	12	3	25	-6	54	-23	12	-2	53
12	1	21	51	5	24	33	10	7	20	36	47	6	24	28	10	5	20	51	25	11	1	46	50	6	18	56	49	5	15	4	57	8	12	34	47	8	11	59	26	-7	17	-24	23	-1	51
13	1	25	48	5	25	32	32	8	3	42	3	6	25	10	7	5	22	36	4	11	1	40	8	6	18	46	45	5	15	12	17	8	12	31	37	8	11	57	45	-7	39	-24	9	-0	44
14	1	29	44	5	26	31	57	8	16	22	32	6	25	52	8	5	24	20	8	11	1	33	34	6	18	34	16	5	15	19	36	8	12	28	26	8	11	57	33	-8	1	-22	39	0	23
15	1	33	41	5	27	31	23	8	28	42	51	6	26	34	13	5	26	3	32	11	1	27	7	6	18	19	23	5	15	26	54	8	12	25	15	8	11	57	42	-8	24	-20	5	1	28
16	1	37	37	5	28	30	51	9	10	48	12	6	27	16	21	5	27	46	19	11	1	20	48	6	18	2	9	5	15	34	12	8	12	22	4	8	11	57	5	-8	46	-16	41	2	27
17	1	41	34	5	29	30	21	9	22	43	51	6	27	58	34	5	29	28	25	11	1	14	38	6	17	42	35	5	15	41	28	8	12	18	54	8	11	54	40	-9	8	-12	40	3	18
18	1	45	30	6	0	29	52	10	4	34	45	6	28	40	50	6	1	9	53	11	1	8	36	6	17	20	47	5	15	48	43	8	12	15	43	8	11	49	49	-9	30	-8	12	4	1
19	1	49	27	6	1	29	26	10	16	25	16	6	29	23	11	6	2	50	41	11	1	2	43	6	16	56	48	5	15	55	57	8	12	12	32	8	11	42	17	-9	52	-3	26	4	33
20	1	53	23	6	2	29	1	10	28	18	58	7	0	5	35	6	4	30	51	11	0	56	59	6	16	30	47	5	16	3	10	8	12	9	21	8	11	32	18	-10	13	1	27	4	54
21	1	57	20	6	3	28	37	11	10	18	34	7	0	48	3	6	6	10	22	11	0	51	24	6	16	2	49	5	16	10	22	8	12	6	11	8	11	20	29	-10	35	6	20	5	2
22	2	1	17	6	4	28	16	11	22	25	58	7	1	30	35	6	7	49	15	11	0	45	59	6	15	33	5	5	16	17	32	8	12	3	0	8	11	7	47	-10	56	11	1	4	56
23	2	5	13	6	5	27	57	0	4	42	21	7	2	13	10	6	9	27	32	11	0	40	43	6	15	1	44	5	16	24	41	8	11	59	49	8	10	55	17	-11	17	15	19	4	37
24	2	9	10	6	6	27	39	0	17	8	21	7	2	55	50	6	11	5	14	11	0	35	37	6	14	28	58	5	16	31	48	8	11	56	38	8	10	44	5	-11	38	19	2	4	4
25	2	13	6	6	7	27	24	0	29	44	17	7	3	38	33	6	12	42	20	11	0	30	42	6	13	54	58	5	16	38	54	8	11	53	28	8	10	35	5	-11	59	21	55	3	19
26	2	17	3	6	8	27	11	1	12	30	33	7	4	21	21	6	14	18	53	11	0	25	56	6	13	19	58	5	16	45	58	8	11	50	17	8	10	28	50	-12	20	23	45	2	23
27	2	20	59	6	9	27	0	1	25	27	45	7	5	4	12	6	15	54	53	11	0	21	21	6	12	44	12	5	16	53	1	8	11	47	6	8	10	25	23	-12	40	24	20	1	19
28	2	24	56	6	10	26	51	2	8	36	58	7	5	47	7	6	17	30	22	11	0	16	56	6	12	7	53	5	17	0	2	8	11	43	55	8	10	24	18	-13	0	23	34	0	10
29	2	28	52	6	11	26	44	2	21	59	38	7	6	30	6	6	19	5	20	11	0	12	42	6	11	31	18	5	17	7	1	8	11	40	45	8	10	24	43	-13	20	21	28	-1	2
30	2	32	49	6	12	26	40	3	5	37	16	7	7	13	9	6	20	39	48	11	0	8	39	6	10	54	40	5	17	13	58	8	11	37	34	8	10	25	31	-13	40	18	6	-2	11
31	2	36	46	6	13	26	37	3	19	31	6	7	7	56	16	6	22	13	48	11	0	4	47	6	10	18	16	5	17	20	53	8	11	34	23	8	10	25	32	-14	0	13	40	-3	13

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 46"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	40	42	6	14	26	37	4	3	41	24	7	8	39	27	6	23	47	20	11	0	1	6	6	9	42	19	5	17	27	47	8	11	31	12	8	10	23	51	-14	19	8	25	-4	6
2	2	44	39	6	15	26	39	4	18	6	51	7	9	22	42	6	25	20	25	10	29	57	36	6	9	7	5	5	17	34	38	8	11	28	2	8	10	19	57	-14	39	2	39	-4	43
3	2	48	35	6	16	26	43	5	2	44	7	7	10	6	1	6	26	53	4	10	29	54	18	6	8	32	46	5	17	41	27	8	11	24	51	8	10	13	52	-14	57	-3	21	-5	3
4	2	52	32	6	17	26	49	5	17	27	39	7	10	49	23	6	28	25	17	10	29	51	12	6	7	59	37	5	17	48	14	8	11	21	40	8	10	6	9	-15	16	-9	11	-5	3
5	2	56	28	6	18	26	58	6	2	10	16	7	11	32	50	6	29	57	5	10	29	48	17	6	7	27	49	5	17	54	59	8	11	18	29	8	9	57	42	-15	35	-14	30	-4	43
6	3	0	25	6	19	27	8	6	16	44	7	7	12	16	20	7	1	28	28	10	29	45	34	6	6	57	34	5	18	1	41	8	11	15	19	8	9	49	35	-15	53	-18	56	-4	5
7	3	4	21	6	20	27	20	7	1	1	56	7	12	59	55	7	2	59	27	10	29	43	4	6	6	29	2	5	18	8	21	8	11	12	8	8	9	42	46	-16	11	-22	8	-3	12
8	3	8	18	6	21	27	33	7	14	58	18	7	13	43	33	7	4	30	2	10	29	40	45	6	6	2	22	5	18	14	58	8	11	8	57	8	9	37	55	-16	28	-23	55	-2	9
9	3	12	15	6	22	27	49	7	28	30	9	7	14	27	14	7	6	0	13	10	29	38	38	6	5	37	43	5	18	21	33	8	11	5	46	8	9	35	16	-16	46	-24	13	-0	59
10	3	16	11	6	23	28	6	8	11	37	3	7	15	11	0	7	7	30	0	10	29	36	44	6	5	15	10	5	18	28	5	8	11	2	35	8	9	34	37	-17	3	-23	8	0	11
11	3	20	8	6	24	28	24	8	24	20	41	7	15	54	49	7	8	59	21	10	29	35	2	6	4	54	51	5	18	34	34	8	10	59	25	8	9	35	24	-17	20	-20	52	1	19
12	3	24	4	6	25	28	44	9	6	44	23	7	16	38	41	7	10	28	17	10	29	33	33	6	4	36	50	5	18	41	1	8	10	56	14	8	9	36	49	-17	36	-17	41	2	22
13	3	28	1	6	26	29	6	9	18	52	35	7	17	22	37	7	11	56	46	10	29	32	15	6	4	21	11	5	18	47	24	8	10	53	3	8	9	38	2	-17	52	-13	48	3	17
14	3	31	57	6	27	29	29	10	0	50	15	7	18	6	37	7	13	24	46	10	29	31	10	6	4	7	56	5	18	53	45	8	10	49	52	8	9	38	16	-18	8	-9	26	4	2
15	3	35	54	6	28	29	53	10	12	42	30	7	18	50	40	7	14	52	17	10	29	30	18	6	3	57	8	5	19	0	2	8	10	46	42	8	9	37	1	-18	24	-4	45	4	37
16	3	39	50	6	29	30	18	10	24	34	15	7	19	34	47	7	16	19	16	10	29	29	38	6	3	48	48	5	19	6	17	8	10	43	31	8	9	34	1	-18	39	0	5	5	0
17	3	43	47	7	0	30	45	11	6	29	57	7	20	18	57	7	17	45	40	10	29	29	11	6	3	42	56	5	19	12	28	8	10	40	20	8	9	29	20	-18	54	4	56	5	10
18	3	47	44	7	1	31	13	11	18	33	24	7	21	3	10	7	19	11	27	10	29	28	56	6	3	39	33	5	19	18	36	8	10	37	9	8	9	23	21	-19	9	9	40	5	6
19	3	51	40	7	2	31	43	0	0	47	31	7	21	47	27	7	20	36	32	10	29	28	53	6	3	38	36	5	19	24	41	8	10	33	58	8	9	16	38	-19	23	14	5	4	49
20	3	55	37	7	3	32	14	0	13	14	21	7	22	31	47	7	22	0	52	10	29	29	3	6	3	40	5	5	19	30	42	8	10	30	48	8	9	9	53	-19	37	17	59	4	17
21	3	59	33	7	4	32	46	0	25	54	58	7	23	16	11	7	23	24	21	10	29	29	25	6	3	43	58	5	19	36	40	8	10	27	37	8	9	3	50	-19	50	21	8	3	33
22	4	3	30	7	5	33	20	1	8	49	32	7	24	0	38	7	24	46	53	10	29	30	0	6	3	50	13	5	19	42	35	8	10	24	26	8	8	59	5	-20	3	23	17	2	37
23	4	7	26	7	6	33	55	1	21	57	30	7	24	45	8	7	26	8	21	10	29	30	47	6	3	58	46	5	19	48	26	8	10	21	15	8	8	56	0	-20	16	24	13	1	31
24	4	11	23	7	7	34	32	2	5	17	55	7	25	29	42	7	27	28	36	10	29	31	46	6	4	9	34	5	19	54	13	8	10	18	4	8	8	54	41	-20	29	23	46	0	20
25	4	15	19	7	8	35	11	2	18	49	40	7	26	14	19	7	28	47	29	10	29	32	58	6	4	22	35	5	19	59	57	8	10	14	54	8	8	54	51	-20	41	21	55	-0	54
26	4	19	16	7	9	35	51	3	2	31	40	7	26	59	0	8	0	4	48	10	29	34	21	6	4	37	45	5	20	5	37	8	10	11	43	8	8	56	3	-20	52	18	47	-2	6
27	4	23	13	7	10	36	32	3	16	22	59	7	27	43	44	8	1	20	19	10	29	35	58	6	4	55	0	5	20	11	14	8	10	8	32	8	8	57	35	-21	4	14	34	-3	11
28	4	27	9	7	11	37	15	4	0	22	41	7	28	28	32	8	2	33	48	10	29	37	46	6	5	14	16	5	20	16	46	8	10	5	21	8	8	58	47	-21	15	9	32	-4	6
29	4	31	6	7	12	38	0	4	14	29	40	7	29	13	23	8	3	44	56	10	29	39	46	6	5	35	30	5	20	22	14	8	10	2	10	8	8	59	8	-21	25	3	57	-4	46
30	4	35	2	7	13	38	47	4	28	42	23	7	29	58	17	8	4	53	23	10	29	41	59	6	5	58	37	5	20	27	39	8	9	59	0	8	8	58	18	-21	35	-1	51	-5	9

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 51"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2010 ई. को अयनांश 24° 0' 51''

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	38	59	7	14	39	34	5	12	58	35	8	0	43	15	8	5	58	46	10	29	44	24	6	6	23	34	5	20	32	59	8	9	55	49	8	8	56	20	-21	45	-7	34	-5	13
2	4	42	55	7	15	40	24	5	27	15	10	8	1	28	16	8	7	0	38	10	29	47	1	6	6	50	16	5	20	38	15	8	9	52	38	8	8	53	28	-21	54	-12	54	-4	58
3	4	46	52	7	16	41	14	6	11	28	16	8	2	13	21	8	7	58	28	10	29	49	50	6	7	18	40	5	20	43	27	8	9	49	27	8	8	50	11	-22	3	-17	30	-4	25
4	4	50	48	7	17	42	6	6	25	33	32	8	2	58	28	8	8	51	41	10	29	52	51	6	7	48	42	5	20	48	35	8	9	46	16	8	8	47	2	-22	11	-21	5	-3	36
5	4	54	45	7	18	43	0	7	9	26	44	8	3	43	39	8	9	39	39	10	29	56	3	6	8	20	18	5	20	53	38	8	9	43	6	8	8	44	28	-22	19	-23	22	-2	34
6	4	58	42	7	19	43	54	7	23	4	13	8	4	28	54	8	10	21	39	10	29	59	28	6	8	53	24	5	20	58	37	8	9	39	55	8	8	42	48	-22	27	-24	13	-1	25
7	5	2	38	7	20	44	49	8	6	23	32	8	5	14	11	8	10	56	55	11	0	3	4	6	9	27	58	5	21	3	31	8	9	36	44	8	8	42	10	-22	34	-23	39	-0	13
8	5	6	35	7	21	45	46	8	19	23	35	8	5	59	31	8	11	24	39	11	0	6	52	6	10	3	55	5	21	8	21	8	9	33	33	8	8	42	28	-22	41	-21	47	0	59
9	5	10	31	7	22	46	43	9	2	4	45	8	6	44	55	8	11	43	57	11	0	10	52	6	10	41	12	5	21	13	6	8	9	30	22	8	8	43	28	-22	47	-18	52	2	6
10	5	14	28	7	23	47	41	9	14	28	49	8	7	30	21	8	11	54	1	11	0	15	4	6	11	19	47	5	21	17	46	8	9	27	11	8	8	44	49	-22	53	-15	9	3	5
11	5	18	24	7	24	48	40	9	26	38	40	8	8	15	50	8	11	53	59	11	0	19	26	6	11	59	36	5	21	22	21	8	9	24	1	8	8	46	10	-22	58	-10	53	3	55
12	5	22	21	7	25	49	40	10	8	38	8	8	9	1	22	8	11	43	11	11	0	24	0	6	12	40	37	5	21	26	52	8	9	20	50	8	8	47	16	-23	3	-6	16	4	34
13	5	26	17	7	26	50	40	10	20	31	37	8	9	46	57	8	11	21	5	11	0	28	45	6	13	22	46	5	21	31	18	8	9	17	39	8	8	47	53	-23	7	-1	27	5	1
14	5	30	14	7	27	51	40	11	2	23	50	8	10	32	35	8	10	47	27	11	0	33	42	6	14	6	1	5	21	35	38	8	9	14	28	8	8	47	58	-23	11	3	23	5	15
15	5	34	11	7	28	52	41	11	14	19	34	8	11	18	16	8	10	2	24	11	0	38	49	6	14	50	20	5	21	39	54	8	9	11	17	8	8	47	33	-23	15	8	8	5	15
16	5	38	7	7	29	53	43	11	26	23	25	8	12	3	59	8	9	6	34	11	0	44	7	6	15	35	40	5	21	44	5	8	9	8	7	8	8	46	46	-23	18	12	38	5	2
17	5	42	4	8	0	54	44	0	8	39	33	8	12	49	45	8	8	1	5	11	0	49	36	6	16	21	59	5	21	48	10	8	9	4	56	8	8	45	48	-23	20	16	42	4	35
18	5	46	0	8	1	55	47	0	21	11	23	8	13	35	33	8	6	47	38	11	0	55	16	6	17	9	15	5	21	52	10	8	9	1	45	8	8	44	50	-23	23	20	7	3	54
19	5	49	57	8	2	56	50	1	4	1	20	8	14	21	25	8	5	28	27	11	1	1	6	6	17	57	25	5	21	56	6	8	8	58	34	8	8	44	2	-23	24	22	39	3	1
20	5	53	53	8	3	57	53	1	17	10	34	8	15	7	18	8	4	6	5	11	1	7	7	6	18	46	29	5	21	59	55	8	8	55	23	8	8	43	31	-23	25	24	3	1	57
21	5	57	50	8	4	58	57	2	0	38	52	8	15	53	15	8	2	43	21	11	1	13	18	6	19	36	23	5	22	3	40	8	8	52	13	8	8	43	16	-23	26	24	4	0	45
22	6	1	46	8	6	0	1	2	14	24	36	8	16	39	14	8	1	23	1	11	1	19	39	6	20	27	6	5	22	7	19	8	8	49	2	8	8	43	15	-23	26	22	39	-0	32
23	6	5	43	8	7	1	6	2	28	24	53	8	17	25	15	8	0	7	38	11	1	26	10	6	21	18	37	5	22	10	53	8	8	45	51	8	8	43	21	-23	26	19	49	-1	47
24	6	9	40	8	8	2	12	3	12	35	56	8	18	11	20	7	28	59	21	11	1	32	52	6	22	10	53	5	22	14	21	8	8	42	40	8	8	43	25	-23	25	15	46	-2	57
25	6	13	36	8	9	3	18	3	26	53	30	8	18	57	27	7	27	59	50	11	1	39	43	6	23	3	52	5	22	17	43	8	8	39	29	8	8	43	24	-23	24	10	47	-3	57
26	6	17	33	8	10	4	24	4	11	13	19	8	19	43	36	7	27	10	13	11	1	46	44	6	23	57	34	5	22	21	0	8	8	36	18	8	8	43	16	-23	22	5	13	-4	42
27	6	21	29	8	11	5	31	4	25	31	34	8	20	29	48	7	26	31	7	11	1	53	54	6	24	51	56	5	22	24	12	8	8	33	8	8	8	43	3	-23	20	-0	36	-5	9
28	6	25	26	8	12	6	39	5	9	45	10	8	21	16	3	7	26	2	42	11	2	1	15	6	25	46	56	5	22	27	17	8	8	29	57	8	8	42	53	-23	18	-6	21	-5	17
29	6	29	22	8	13	7	48	5	23	51	43	8	22	2	20	7	25	44	51	11	2	8	44	6	26	42	35	5	22	30	17	8	8	26	46	8	8	42	53	-23	15	-11	44	-5	6
30	6	33	19	8	14	8	57	6	7	49	28	8	22	48	39	7	25	37	6	11	2	16	24	6	27	38	49	5	22	33	11	8	8	23	35	8	8	43	8	-23	11	-16	27	-4	37
31	6	37	15	8	15	10	6	6	21	37	7	8	23	35	1	7	25	38	52	11	2	24	12	6	28	35	37	5	22	36	0	8	8	20	24	8	8	43	38	-23	7	-20	14	-3	53

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2011 ई. को अयनांश 24° 0' 56"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	41	12	8	16	11	16	7	5	13	38	8	24	21	25	7	25	49	29	11	2	32	10	6	29	32	58	5	22	38	42	8	8	17	14	8	8	44	19	-23	3	-22	50	- 2	55
2	6	45	9	8	17	12	26	7	18	38	6	8	25	7	52	7	26	8	11	11	2	40	17	7	0	30	52	5	22	41	18	8	8	14	3	8	8	44	58	-22	58	-24	7	- 1	49
3	6	49	5	8	18	13	36	8	1	49	48	8	25	54	21	7	26	34	14	11	2	48	32	7	1	29	15	5	22	43	48	8	8	10	52	8	8	45	23	-22	52	-24	1	- 0	38
4	6	53	2	8	19	14	47	8	14	48	9	8	26	40	52	7	27	6	56	11	2	56	57	7	2	28	8	5	22	46	13	8	8	7	41	8	8	45	21	-22	47	-22	35	0	33
5	6	56	58	8	20	15	57	8	27	32	52	8	27	27	26	7	27	45	35	11	3	5	31	7	3	27	29	5	22	48	31	8	8	4	30	8	8	44	43	-22	40	-20	2	1	42
6	7	0	55	8	21	17	8	9	10	4	10	8	28	14	1	7	28	29	34	11	3	14	13	7	4	27	17	5	22	50	43	8	8	1	19	8	8	43	26	-22	34	-16	34	2	45
7	7	4	51	8	22	18	18	9	22	22	50	8	29	0	39	7	29	18	20	11	3	23	3	7	5	27	31	5	22	52	48	8	7	58	9	8	8	41	33	-22	26	-12	27	3	38
8	7	8	48	8	23	19	28	10	4	30	28	8	29	47	18	8	0	11	20	11	3	32	2	7	6	28	10	5	22	54	48	8	7	54	58	8	8	39	17	-22	19	- 7	54	4	21
9	7	12	44	8	24	20	38	10	16	29	26	9	0	34	0	8	1	8	8	11	3	41	9	7	7	29	13	5	22	56	41	8	7	51	47	8	8	36	55	-22	11	- 3	7	4	52
10	7	16	41	8	25	21	47	10	28	22	49	9	1	20	43	8	2	8	19	11	3	50	25	7	8	30	40	5	22	58	28	8	7	48	36	8	8	34	46	-22	2	1	44	5	10
11	7	20	38	8	26	22	56	11	10	14	22	9	2	7	28	8	3	11	31	11	3	59	48	7	9	32	29	5	23	0	9	8	7	45	25	8	8	33	10	-21	53	6	31	5	15
12	7	24	34	8	27	24	4	11	22	8	25	9	2	54	15	8	4	17	25	11	4	9	19	7	10	34	39	5	23	1	43	8	7	42	15	8	8	32	19	-21	44	11	4	5	7
13	7	28	31	8	28	25	12	0	4	9	37	9	3	41	3	8	5	25	45	11	4	18	58	7	11	37	11	5	23	3	12	8	7	39	4	8	8	32	21	-21	34	15	15	4	45
14	7	32	27	8	29	26	19	0	16	22	46	9	4	27	53	8	6	36	16	11	4	28	44	7	12	40	2	5	23	4	33	8	7	35	53	8	8	33	13	-21	24	18	53	4	9
15	7	36	24	9	0	27	25	0	28	52	28	9	5	14	45	8	7	48	45	11	4	38	38	7	13	43	14	5	23	5	49	8	7	32	42	8	8	34	40	-21	13	21	45	3	22
16	7	40	20	9	1	28	31	1	11	42	45	9	6	1	38	8	9	3	0	11	4	48	40	7	14	46	44	5	23	6	58	8	7	29	31	8	8	36	19	-21	2	23	36	2	23
17	7	44	17	9	2	29	36	1	24	56	33	9	6	48	33	8	10	18	52	11	4	58	48	7	15	50	33	5	23	8	0	8	7	26	21	8	8	37	40	-20	51	24	13	1	15
18	7	48	13	9	3	30	40	2	8	35	16	9	7	35	29	8	11	36	13	11	5	9	4	7	16	54	40	5	23	8	57	8	7	23	10	8	8	38	13	-20	39	23	25	0	0
19	7	52	10	9	4	31	44	2	22	38	11	9	8	22	27	8	12	54	55	11	5	19	27	7	17	59	5	5	23	9	47	8	7	19	59	8	8	37	35	-20	27	21	8	- 1	16
20	7	56	7	9	5	32	48	3	7	2	11	9	9	9	26	8	14	14	52	11	5	29	56	7	19	3	46	5	23	10	30	8	7	16	48	8	8	35	35	-20	14	17	29	- 2	30
21	8	0	3	9	6	33	50	3	21	41	50	9	9	56	27	8	15	35	59	11	5	40	33	7	20	8	43	5	23	11	7	8	7	13	37	8	8	32	19	-20	2	12	43	- 3	34
22	8	4	0	9	7	34	52	4	6	29	53	9	10	43	29	8	16	58	10	11	5	51	16	7	21	13	56	5	23	11	38	8	7	10	27	8	8	28	10	-19	48	7	9	- 4	25
23	8	7	56	9	8	35	54	4	21	18	22	9	11	30	33	8	18	21	23	11	6	2	5	7	22	19	25	5	23	12	2	8	7	7	16	8	8	23	44	-19	34	1	11	- 4	59
24	8	11	53	9	9	36	55	5	5	59	48	9	12	17	38	8	19	45	33	11	6	13	1	7	23	25	8	5	23	12	19	8	7	4	5	8	8	19	41	-19	20	- 4	47	- 5	12
25	8	15	49	9	10	37	56	5	20	28	15	9	13	4	44	8	21	10	38	11	6	24	4	7	24	31	6	5	23	12	31	8	7	0	54	8	8	16	40	-19	6	-10	24	- 5	5
26	8	19	46	9	11	38	56	6	4	39	52	9	13	51	52	8	22	36	36	11	6	35	13	7	25	37	18	5	23	12	35	8	6	57	43	8	8	15	3	-18	51	-15	22	- 4	40
27	8	23	42	9	12	39	55	6	18	32	59	9	14	39	1	8	24	3	24	11	6	46	28	7	26	43	42	5	23	12	34	8	6	54	33	8	8	14	56	-18	36	-19	24	- 3	59
28	8	27	39	9	13	40	54	7	2	7	40	9	15	26	11	8	25	31	1	11	6	57	49	7	27	50	20	5	23	12	25	8	6	51	22	8	8	15	58	-18	21	-22	17	- 3	5
29	8	31	35	9	14	41	52	7	15	25	6	9	16	13	23	8	26	59	24	11	7	9	16	7	28	57	10	5	23	12	11	8	6	48	11	8	8	17	34	-18	5	-23	52	- 2	2
30	8	35	32	9	15	42	50	7	28	27	8	9	17	0	35	8	28	28	34	11	7	20	49	8	0	4	12	5	23	11	50	8	6	45	0	8	8	18	56	-17	49	-24	7	- 0	54
31	8	39	29	9	16	43	47	8	11	15	41	9	17	47	49	8	29	58	29	11	7	32	28	8	1	11	25	5	23	11	22	8	6	41	50	8	8	19	16	-17	32	-23	4	0	16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 1"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2011 ई. को अयनांश 24

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	43	25	9	17	44	43	8	23	52	31	9	18	35	4	9	1	29	9	11	7	44	12	8	2	18	49	5	23	10	48	8	6	38	39	8	8	17	54	-17	16	-20	52	1	23
2	8	47	22	9	18	45	39	9	6	19	2	9	19	22	20	9	3	0	32	11	7	56	3	8	3	26	24	5	23	10	8	8	6	35	28	8	8	14	28	-16	58	-17	42	2	26
3	8	51	18	9	19	46	33	9	18	36	22	9	20	9	37	9	4	32	40	11	8	7	58	8	4	34	9	5	23	9	21	8	6	32	17	8	8	8	54	-16	41	-13	48	3	21
4	8	55	15	9	20	47	26	10	0	45	28	9	20	56	54	9	6	5	32	11	8	19	59	8	5	42	3	5	23	8	28	8	6	29	6	8	8	1	31	-16	23	- 9	24	4	5
5	8	59	11	9	21	48	19	10	12	47	25	9	21	44	13	9	7	39	8	11	8	32	5	8	6	50	7	5	23	7	28	8	6	25	56	8	7	52	57	-16	6	- 4	42	4	39
6	9	3	8	9	22	49	9	10	24	43	34	9	22	31	32	9	9	13	29	11	8	44	16	8	7	58	20	5	23	6	22	8	6	22	45	8	7	43	58	-15	47	0	9	5	0
7	9	7	4	9	23	49	59	11	6	35	50	9	23	18	52	9	10	48	34	11	8	56	33	8	9	6	42	5	23	5	10	8	6	19	34	8	7	35	27	-15	29	4	57	5	7
8	9	11	1	9	24	50	47	11	18	26	44	9	24	6	12	9	12	24	25	11	9	8	54	8	10	15	12	5	23	3	52	8	6	16	23	8	7	28	10	-15	10	9	33	5	2
9	9	14	58	9	25	51	34	0	0	19	30	9	24	53	32	9	14	1	2	11	9	21	20	8	11	23	50	5	23	2	28	8	6	13	13	8	7	22	45	-14	51	13	49	4	43
10	9	18	54	9	26	52	19	0	12	18	4	9	25	40	54	9	15	38	26	11	9	33	50	8	12	32	36	5	23	0	57	8	6	10	2	8	7	19	26	-14	32	17	36	4	12
11	9	22	51	9	27	53	3	0	24	26	59	9	26	28	15	9	17	16	37	11	9	46	26	8	13	41	30	5	22	59	21	8	6	6	51	8	7	18	10	-14	12	20	41	3	30
12	9	26	47	9	28	53	44	1	6	51	6	9	27	15	37	9	18	55	37	11	9	59	5	8	14	50	31	5	22	57	38	8	6	3	40	8	7	18	28	-13	53	22	53	2	36
13	9	30	44	9	29	54	25	1	19	35	19	9	28	2	59	9	20	35	26	11	10	11	49	8	15	59	40	5	22	55	50	8	6	0	30	8	7	19	31	-13	33	23	59	1	34
14	9	34	40	10	0	55	3	2	2	44	3	9	28	50	21	9	22	16	4	11	10	24	37	8	17	8	56	5	22	53	55	8	5	57	19	8	7	20	21	-13	13	23	49	0	25
15	9	38	37	10	1	55	40	2	16	20	35	9	29	37	44	9	23	57	34	11	10	37	30	8	18	18	18	5	22	51	55	8	5	54	8	8	7	19	56	-12	52	22	14	- 0	48
16	9	42	33	10	2	56	16	3	0	26	10	10	0	25	7	9	25	39	56	11	10	50	26	8	19	27	48	5	22	49	49	8	5	50	57	8	7	17	31	-12	32	19	15	- 2	1
17	9	46	30	10	3	56	50	3	14	59	11	10	1	12	30	9	27	23	11	11	11	3	27	8	20	37	24	5	22	47	37	8	5	47	47	8	7	12	40	-12	11	15	0	- 3	7
18	9	50	27	10	4	57	22	3	29	54	36	10	1	59	53	9	29	7	19	11	11	16	31	8	21	47	7	5	22	45	20	8	5	44	36	8	7	5	32	-11	50	9	43	- 4	3
19	9	54	23	10	5	57	53	4	15	4	9	10	2	47	16	10	0	52	21	11	11	29	39	8	22	56	56	5	22	42	57	8	5	41	25	8	6	56	44	-11	29	3	48	- 4	42
20	9	58	20	10	6	58	22	5	0	17	26	10	3	34	39	10	2	38	19	11	11	42	51	8	24	6	51	5	22	40	29	8	5	38	14	8	6	47	17	-11	7	- 2	22	- 5	2
21	10	2	16	10	7	58	50	5	15	23	40	10	4	22	3	10	4	25	11	11	11	56	6	8	25	16	52	5	22	37	55	8	5	35	4	8	6	38	20	-10	46	- 8	20	- 5	0
22	10	6	13	10	8	59	16	6	0	13	35	10	5	9	26	10	6	12	58	11	12	9	25	8	26	26	59	5	22	35	16	8	5	31	53	8	6	30	56	-10	24	-13	43	- 4	39
23	10	10	9	10	9	59	41	6	14	40	47	10	5	56	49	10	8	1	41	11	12	22	47	8	27	37	12	5	22	32	32	8	5	28	42	8	6	25	49	-10	2	-18	10	- 3	59
24	10	14	6	10	11	0	5	6	28	42	14	10	6	44	13	10	9	51	19	11	12	36	13	8	28	47	30	5	22	29	42	8	5	25	31	8	6	23	6	- 9	40	-21	27	- 3	7
25	10	18	2	10	12	0	27	7	12	17	53	10	7	31	36	10	11	41	50	11	12	49	42	8	29	57	54	5	22	26	47	8	5	22	21	8	6	22	24	- 9	18	-23	24	- 2	5
26	10	21	59	10	13	0	48	7	25	29	51	10	8	19	0	10	13	33	14	11	13	3	14	9	1	8	23	5	22	23	48	8	5	19	10	8	6	22	50	- 8	56	-23	59	- 0	58
27	10	25	56	10	14	1	8	8	8	21	27	10	9	6	23	10	15	25	29	11	13	16	49	9	2	18	56	5	22	20	43	8	5	15	59	8	6	23	12	- 8	33	-23	15	0	10
28	10	29	52	10	15	1	26	8	20	56	26	10	9	53	46	10	17	18	31	11	13	30	27	9	3	29	35	5	22	17	33	8	5	12	48	8	6	22	20	- 8	11	-21	20	1	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 5"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 33 49	10 16 1 43	9 3 18 27	10 10 41 9	10 19 12 17	11 13 44 9	9 4 40 18	5 22 14 19	8 5 9 38	8 6 19 11	-7 48	-18 27	2 18
2	10 37 45	10 17 1 58	9 15 30 38	10 11 28 31	10 21 6 43	11 13 57 53	9 5 51 5	5 22 11 0	8 5 6 27	8 6 13 10	-7 25	-14 47	3 12
3	10 41 42	10 18 2 11	9 27 35 33	10 12 15 53	10 23 1 42	11 14 11 40	9 7 1 57	5 22 7 37	8 5 3 16	8 6 4 8	-7 2	-10 34	3 56
4	10 45 38	10 19 2 23	10 9 35 8	10 13 3 15	10 24 57 7	11 14 25 29	9 8 12 52	5 22 4 8	8 5 0 5	8 5 52 29	-6 39	-6 0	4 30
5	10 49 35	10 20 2 33	10 21 30 49	10 13 50 36	10 26 52 49	11 14 39 22	9 9 23 51	5 22 0 36	8 4 56 55	8 5 38 59	-6 16	-1 14	4 51
6	10 53 31	10 21 2 41	11 3 23 53	10 14 37 56	10 28 48 38	11 14 53 16	9 10 34 54	5 21 57 0	8 4 53 44	8 5 24 44	-5 53	3 34	5 0
7	10 57 28	10 22 2 47	11 15 15 36	10 15 25 16	11 0 44 21	11 15 7 13	9 11 46 0	5 21 53 19	8 4 50 33	8 5 10 54	-5 30	8 12	4 56
8	11 1 25	10 23 2 52	11 27 7 34	10 16 12 35	11 2 39 43	11 15 21 13	9 12 57 10	5 21 49 34	8 4 47 22	8 4 58 38	-5 6	12 33	4 38
9	11 5 21	10 24 2 54	0 9 1 55	10 16 59 53	11 4 34 28	11 15 35 14	9 14 8 23	5 21 45 46	8 4 44 12	8 4 48 47	-4 43	16 26	4 9
10	11 9 18	10 25 2 54	0 21 1 30	10 17 47 10	11 6 28 17	11 15 49 18	9 15 19 39	5 21 41 54	8 4 41 1	8 4 41 51	-4 20	19 40	3 28
11	11 13 14	10 26 2 52	1 3 9 51	10 18 34 27	11 8 20 49	11 16 3 24	9 16 30 58	5 21 37 58	8 4 37 50	8 4 37 49	-3 56	22 5	2 38
12	11 17 11	10 27 2 48	1 15 31 12	10 19 21 42	11 10 11 40	11 16 17 31	9 17 42 20	5 21 33 59	8 4 34 40	8 4 36 10	-3 33	23 31	1 39
13	11 21 7	10 28 2 41	1 28 10 12	10 20 8 57	11 12 0 24	11 16 31 41	9 18 53 45	5 21 29 56	8 4 31 29	8 4 35 57	-3 9	23 46	0 34
14	11 25 4	10 29 2 33	2 11 11 31	10 20 56 10	11 13 46 35	11 16 45 52	9 20 5 13	5 21 25 51	8 4 28 18	8 4 35 56	-2 45	22 45	-0 35
15	11 29 0	11 0 2 22	2 24 39 21	10 21 43 22	11 15 29 44	11 17 0 4	9 21 16 44	5 21 21 42	8 4 25 7	8 4 34 51	-2 22	20 25	-1 44
16	11 32 57	11 1 2 9	3 8 36 28	10 22 30 33	11 17 9 20	11 17 14 19	9 22 28 17	5 21 17 31	8 4 21 57	8 4 31 40	-1 58	16 49	-2 49
17	11 36 54	11 2 1 53	3 23 3 10	10 23 17 43	11 18 44 56	11 17 28 35	9 23 39 53	5 21 13 16	8 4 18 46	8 4 25 47	-1 34	12 7	-3 46
18	11 40 50	11 3 1 36	4 7 56 19	10 24 4 52	11 20 16 0	11 17 42 52	9 24 51 32	5 21 8 59	8 4 15 35	8 4 17 16	-1 10	6 35	-4 29
19	11 44 47	11 4 1 16	4 23 8 57	10 24 51 59	11 21 42 5	11 17 57 11	9 26 3 13	5 21 4 40	8 4 12 24	8 4 6 43	-0 47	0 33	-4 55
20	11 48 43	11 5 0 55	5 8 30 51	10 25 39 6	11 23 2 43	11 18 11 31	9 27 14 57	5 21 0 18	8 4 9 14	8 3 55 15	-0 23	-5 35	-4 59
21	11 52 40	11 6 0 31	5 23 50 10	10 26 26 11	11 24 17 29	11 18 25 52	9 28 26 44	5 20 55 54	8 4 6 3	8 3 44 12	0 1	-11 21	-4 42
22	11 56 36	11 7 0 6	6 8 55 35	10 27 13 15	11 25 26 0	11 18 40 14	9 29 38 33	5 20 51 28	8 4 2 52	8 3 34 47	0 24	-16 20	-4 5
23	12 0 33	11 7 59 39	6 23 38 14	10 28 0 17	11 26 27 54	11 18 54 38	10 0 50 24	5 20 47 0	8 3 59 42	8 3 27 49	0 48	-20 11	-3 13
24	12 4 29	11 8 59 10	7 7 52 55	10 28 47 19	11 27 22 54	11 19 9 2	10 2 2 18	5 20 42 30	8 3 56 31	8 3 23 37	1 12	-22 40	-2 10
25	12 8 26	11 9 58 39	7 21 38 5	10 29 34 19	11 28 10 45	11 19 23 28	10 3 14 14	5 20 37 58	8 3 53 20	8 3 21 48	1 35	-23 41	-1 2
26	12 12 23	11 10 58 6	8 4 55 12	11 0 21 17	11 28 51 13	11 19 37 54	10 4 26 13	5 20 33 25	8 3 50 9	8 3 21 31	1 59	-23 18	0 8
27	12 16 19	11 11 57 32	8 17 47 40	11 1 8 15	11 29 24 11	11 19 52 21	10 5 38 13	5 20 28 50	8 3 46 59	8 3 21 32	2 22	-21 40	1 16
28	12 20 16	11 12 56 56	9 0 19 53	11 1 55 11	11 29 49 33	11 20 6 49	10 6 50 16	5 20 24 14	8 3 43 48	8 3 20 37	2 46	-18 59	2 17
29	12 24 12	11 13 56 18	9 12 36 28	11 2 42 5	0 0 7 17	11 20 21 18	10 8 2 21	5 20 19 37	8 3 40 37	8 3 17 41	3 9	-15 31	3 11
30	12 28 9	11 14 55 38	9 24 41 47	11 3 28 58	0 0 17 27	11 20 35 47	10 9 14 28	5 20 14 59	8 3 37 26	8 3 12 3	3 33	-11 28	3 56
31	12 32 5	11 15 54 56	10 6 39 41	11 4 15 49	0 0 20 9	11 20 50 17	10 10 26 36	5 20 10 20	8 3 34 16	8 3 3 31	3 56	-7 1	4 30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2011 ई. को अयनांश 24° 1' 8"

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2011 ई. को अयनांश 24 1 8

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	36	2	11	16	54	13	10	18	33	18	11	5	2	39	0	0	15	35	11	21	4	47	10	11	38	46	5	20	5	41	8	3	31	5	8	2	52	22	4	19	-2	21	4	51
2	12	39	58	11	17	53	28	11	0	25	3	11	5	49	27	0	0	4	4	11	21	19	17	10	12	50	58	5	20	1	1	8	3	27	54	8	2	39	20	4	43	2	23	5	0
3	12	43	55	11	18	52	41	11	12	16	48	11	6	36	13	11	29	45	59	11	21	33	48	10	14	3	11	5	19	56	21	8	3	24	44	8	2	25	26	5	6	7	2	4	56
4	12	47	52	11	19	51	51	11	24	10	1	11	7	22	58	11	29	21	47	11	21	48	19	10	15	15	26	5	19	51	41	8	3	21	33	8	2	11	51	5	29	11	26	4	39
5	12	51	48	11	20	51	0	0	6	6	0	11	8	9	40	11	28	52	6	11	22	2	50	10	16	27	42	5	19	47	0	8	3	18	22	8	1	59	40	5	51	15	24	4	10
6	12	55	45	11	21	50	7	0	18	6	13	11	8	56	21	11	28	17	33	11	22	17	21	10	17	39	59	5	19	42	20	8	3	15	11	8	1	49	47	6	14	18	47	3	29
7	12	59	41	11	22	49	11	1	0	12	28	11	9	42	59	11	27	38	55	11	22	31	52	10	18	52	18	5	19	37	40	8	3	12	1	8	1	42	44	6	37	21	23	2	39
8	13	3	38	11	23	48	13	1	12	27	8	11	10	29	36	11	26	57	1	11	22	46	23	10	20	4	37	5	19	33	1	8	3	8	50	8	1	38	37	7	0	23	2	1	40
9	13	7	34	11	24	47	13	1	24	53	10	11	11	16	10	11	26	12	42	11	23	0	54	10	21	16	58	5	19	28	22	8	3	5	39	8	1	37	0	7	22	23	34	0	36
10	13	11	31	11	25	46	11	2	7	34	8	11	12	2	42	11	25	26	53	11	23	15	24	10	22	29	20	5	19	23	44	8	3	2	28	8	1	37	4	7	44	22	54	-0	32

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत शृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2067 वि.)

मास	चैत्र		प्र. वैशा.		द्वि. वैशा.		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	*चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	⊕ चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	◈ चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	⊙ चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2010 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)	चन्द्रदर्शन (2011 ई.)	उन्नत शृंग (अंश)
+ 5°	17 मार्च	द. 35	16 अप्रै.	द. 29	15 मई	द. 16	13 जून	द. 2	13जुला.	उ. 22	11 अग.	उ. 37	10 सितं.	उ. 43	9 अक्तू.	उ. 41	7 नवं.	उ. 32	7 दिसं.	उ. 10	5 जन.	द. 11	4 फर.	द. 28	6 मार्च	द. 34
+ 15°	17 "	द. 25	16 "	द. 18	15 "	द. 5	13 "	उ. 8	13 "	उ. 32	11 "	उ. 48	10 "	उ. 53	9 "	उ. 51	7 "	उ. 42	7 "	उ. 20	5 "	द. 1	4 "	द. 18	6 "	द. 25
+ 25°	17 "	द. 15	15 "	द. 16	15 "	उ. 5	13 "	उ. 19	13 "	उ. 43	11 "	उ. 57	10 "	उ. 62	9 "	उ. 60	8 "	उ. 50	7 "	उ. 30	5 "	उ. 9	4 "	द. 7	6 "	द. 14
+ 35°	17 "	द. 4	15 "	द. 6	15 "	उ. 16	13 "	उ. 28	13 "	उ. 52	12 "	उ. 63	10 "	उ. 72	10 "	उ. 66	8 "	उ. 59	7 "	उ. 40	5 "	उ. 19	4 "	उ. 3	6 "	द. 3

नोट-- यहां दिए गए शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं।

* दक्षिण भारत में चन्द्रदर्शन 16 अप्रैल को होगा।

⊕ काश्मीर में चन्द्रदर्शन 12 अगस्त को होगा ।

◈ उत्तरी काश्मीर में चन्द्रदर्शन 9 अक्तूबर को नहीं होगा।

⊙ 24° से अधिक अक्षांशीय स्थलों पर चन्द्रदर्शन 8 नवम्बर को होगा।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010 ई.

तारीख	जनवरी 2010				फरवरी 2010				मार्च 2010				अप्रैल 2010				मई 2010				जून 2010				जुलाई 2010				अगस्त 2010				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	18	16	7	42	20	35	8	23	19	18	6	51	21	24	7	14	22	9	7	26	22	56	9	1	22	27	9	36	22	24	11	3	1
2	19	29	8	32	21	42	8	58	20	26	7	27	22	28	7	58	23	1	8	21	23	28	9	57	22	55	10	29	22	58	11	59	2
3	20	40	9	15	22	48	9	33	21	33	8	3	23	28	8	46	23	45	9	18	23	58	10	51	23	23	11	22	23	37	12	57	3
4	21	48	9	53	23	52	10	8	22	40	8	41	--	--	9	39	--	--	10	16	--	--	11	45	23	52	12	16	--	--	13	57	4
5	22	54	10	28	--	--	10	46	23	44	9	22	0	22	10	34	0	24	11	12	0	26	12	38	--	--	13	12	0	23	14	58	5
6	23	58	11	1	0	55	11	27	--	--	10	7	1	9	11	30	0	58	12	7	0	54	13	32	0	24	14	10	1	16	15	57	6
7	--	--	11	35	1	56	12	12	0	44	10	56	1	51	12	26	1	29	13	1	1	22	14	27	1	1	15	10	2	16	16	53	7
8	1	0	12	9	2	54	13	1	1	40	11	48	2	27	13	22	1	58	13	54	1	53	15	24	1	44	16	13	3	24	17	45	8
9	2	2	12	47	3	46	13	54	2	30	12	43	2	59	14	16	2	26	14	48	2	28	16	25	2	34	17	15	4	34	18	30	9
10	3	3	13	28	4	34	14	49	3	14	13	39	3	29	15	10	2	54	15	43	3	8	17	28	3	32	18	14	5	46	19	12	10
11	4	2	14	14	5	16	15	45	3	53	14	34	3	57	16	3	3	24	16	40	3	55	18	31	4	38	19	9	6	57	19	50	11
12	4	58	15	5	5	53	16	40	4	28	15	29	4	25	16	58	3	57	17	39	4	50	19	32	5	47	19	57	8	6	20	26	12
13	5	49	15	58	6	26	17	35	4	59	16	23	4	54	17	53	4	34	18	41	5	51	20	29	6	59	20	40	9	15	21	3	13
14	6	36	16	54	6	56	18	29	5	59	17	17	5	25	18	51	5	16	19	44	6	58	21	20	8	9	21	18	10	22	21	41	14
15	7	16	17	50	7	25	19	23	5	56	18	11	5	59	19	51	6	6	20	46	8	8	22	4	9	17	21	54	11	28	22	21	15
16	7	52	18	46	7	52	20	16	6	24	19	5	6	37	20	53	7	3	21	44	9	16	22	43	10	24	22	29	12	33	23	5	16
17	8	24	19	41	8	20	21	11	6	53	20	1	7	22	21	54	8	5	22	37	10	24	23	19	11	29	23	4	13	35	23	54	17
18	8	53	20	34	8	49	22	7	7	24	20	59	8	13	22	54	9	12	23	24	11	29	23	54	12	34	23	42	14	33	--	--	18
19	9	21	21	27	9	21	23	5	7	58	21	59	9	10	23	50	10	19	--	--	12	33	--	--	13	38	--	--	15	26	0	46	19
20	9	48	22	21	9	56	--	--	8	38	23	00	10	13	--	--	11	26	0	6	13	37	0	28	14	41	0	22	16	13	1	41	20
21	10	16	23	16	10	37	0	5	9	23	--	--	11	19	0	40	12	31	0	43	14	41	1	3	15	42	1	7	16	54	2	38	21
22	10	46	--	--	11	26	1	7	10	16	0	1	12	26	1	25	13	36	1	18	15	45	1	41	16	38	1	56	17	30	3	34	22
23	11	19	0	13	12	22	2	9	11	15	1	00	13	33	2	5	14	40	1	51	16	47	2	23	17	29	2	50	18	3	4	30	23
24	11	57	1	13	13	25	3	8	12	20	1	54	14	39	2	42	15	44	2	26	17	47	3	9	18	14	3	46	18	33	5	24	24
25	12	42	2	16	14	34	4	2	13	28	2	44	15	45	3	17	16	49	3	2	18	43	4	1	18	54	4	43	19	1	6	18	25
26	13	36	3	20	15	46	4	51	14	37	3	28	16	51	3	52	17	54	3	42	19	32	4	56	19	29	5	40	19	29	7	10	26
27	14	38	4	24	16	58	5	35	15	46	4	8	17	57	4	27	18	57	4	26	20	16	5	53	20	0	6	35	19	57	8	3	27
28	15	47	5	23	18	9	6	14	16	54	4	45	19	4	5	6	19	57	5	16	20	54	6	51	20	29	7	30	20	27	8	57	28
29	17	0	6	17					18	2	5	20	20	9	5	48	20	51	6	9	21	28	7	47	20	57	8	23	20	59	9	52	29
30	18	14	7	4					19	10	5	56	21	12	6	35	21	38	7	6	21	58	8	43	21	25	9	15	21	36	10	48	30
31	19	26	7	46					20	18	6	33					22	20	8	4					21	53	10	8	22	18	11	47	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010—11 ई.

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2010–11 ई.

तारीख	सितंबर 2010				अक्तूबर 2010				नवंबर 2010				दिसंबर 2010				जनवरी 2011				फरवरी 2011				मार्च 2011				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	23	6	12	46	23	57	13	24	1	5	14	8	2	11	13	55	4	23	14	47	5	49	16	28	4	29	15	20	1
2	--	--	13	44	--	--	14	11	2	10	14	44	3	17	14	33	5	23	15	41	6	29	17	26	5	5	16	16	2
3	0	2	14	40	1	3	14	54	3	17	15	20	4	23	15	16	6	19	16	39	7	4	18	22	5	38	17	11	3
4	1	4	15	32	2	11	15	34	4	24	15	58	6	35	16	3	7	9	17	39	7	36	19	17	6	8	18	4	4
5	2	11	16	19	3	19	16	12	5	32	16	39	6	34	16	56	7	52	18	38	8	5	20	10	6	37	18	57	5
6	3	21	17	2	4	27	16	49	6	41	17	25	7	35	17	53	8	30	19	36	8	34	21	3	7	6	19	50	6
7	4	31	17	42	5	36	17	26	7	48	18	16	8	29	18	53	9	4	20	31	9	3	21	56	7	35	20	43	7
8	5	42	18	19	6	46	18	6	8	52	19	11	9	16	19	52	9	35	21	25	9	32	22	49	8	6	21	37	8
9	6	52	18	57	7	56	18	50	9	50	20	9	9	57	20	51	10	4	22	18	10	4	23	44	8	39	22	32	9
10	8	1	19	35	9	4	19	38	10	40	21	8	10	33	21	47	10	32	23	11	10	39	--	--	9	17	23	28	10
11	9	10	20	16	10	9	20	30	11	24	22	7	11	5	22	42	11	1	--	--	11	18	0	40	9	59	--	--	11
12	10	18	21	00	11	9	21	26	12	2	23	4	11	35	23	35	11	31	0	4	12	3	1	37	10	47	0	24	12
13	11	24	21	48	12	3	22	23	12	36	23	58	12	3	--	--	12	4	0	58	12	55	2	34	11	41	1	18	13
14	12	25	22	41	12	49	23	21	13	6	--	--	12	32	0	28	12	42	1	55	13	54	3	30	12	41	2	10	14
15	13	21	23	36	13	29	--	--	13	35	0	52	13	1	1	21	13	25	2	53	14	58	4	22	13	44	2	59	15
16	14	10	--	--	14	5	0	18	14	3	1	45	13	33	2	15	14	14	3	51	16	6	5	11	14	51	3	44	16
17	14	53	0	32	14	37	1	13	14	32	2	37	14	8	3	11	15	11	4	50	17	15	5	55	15	59	4	26	17
18	15	31	1	29	15	6	2	7	15	3	3	31	14	49	4	9	16	14	5	45	18	25	6	36	17	8	5	6	18
19	16	5	2	25	15	34	3	0	15	36	4	27	15	36	5	9	17	22	6	37	19	34	7	15	18	18	5	44	19
20	16	35	3	19	16	3	3	53	16	14	5	24	16	30	6	8	18	31	7	23	20	43	7	53	19	28	6	23	20
21	17	4	4	13	16	32	4	46	16	57	6	23	17	30	7	6	19	39	8	5	21	52	8	31	20	39	7	3	21
22	17	32	5	6	17	3	5	40	17	47	7	23	18	35	7	59	20	47	8	44	23	1	9	11	21	49	7	46	22
23	18	0	5	59	17	38	6	37	18	42	8	21	19	42	8	47	21	54	9	21	--	--	9	55	22	57	8	34	23
24	18	30	6	52	18	17	7	34	19	43	9	16	20	49	9	30	23	1	9	57	0	7	10	42	24	0	9	26	24
25	19	2	7	47	19	2	8	33	20	47	10	6	21	55	10	9	--	--	10	34	1	11	11	33	--	--	10	21	25
26	19	37	8	43	19	53	9	32	21	52	10	51	23	00	10	46	0	7	11	14	2	9	12	28	0	56	11	19	26
27	20	17	9	41	20	49	10	28	22	58	11	32	--	--	11	21	1	12	11	57	3	2	13	25	1	46	12	18	27
28	21	3	10	39	21	50	11	20	--	--	12	9	0	4	11	56	2	16	12	44	3	48	14	23	2	29	13	16	28
29	21	56	11	37	22	54	12	8	0	2	12	44	1	9	12	33	3	17	13	36					3	6	14	12	29
30	22	54	12	32	23	59	12	52	1	6	13	19	2	14	13	13	4	14	14	32					3	40	15	7	30
31					--	--	13	31					3	19	13	58	5	5	15	30					4	11	16	00	31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2010 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2010 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 3	10 29 5	10 0 35	8 9 18	18 45	3 45	-20 28	1 38	-13 37	-0 56	-23 39	-0 26	0 19	2 17	-3 26	-0 45	-13 43	-0 25	-18 18	5 6
6	10 29 10	10 0 40	8 9 25	19 2	3 53	-20 3	2 31	-13 24	-0 56	-23 29	-0 33	0 18	2 18	-3 24	-0 45	-13 42	-0 25	-18 18	5 6
9	10 29 15	10 0 46	8 9 31	19 21	4 0	-19 51	3 6	-13 11	-0 56	-23 12	-0 39	0 18	2 19	-3 22	-0 45	-13 40	-0 25	-18 18	5 6
12	10 29 21	10 0 52	8 9 37	19 41	4 6	-19 52	3 20	-12 58	-0 56	-22 49	-0 46	0 18	2 20	-3 19	-0 44	-13 38	-0 25	-18 18	5 6
15	10 29 27	10 0 57	8 9 44	20 3	4 12	-20 4	3 14	-12 44	-0 56	-22 20	-0 52	0 18	2 21	-3 17	-0 44	-13 36	-0 25	-18 18	5 6
18	10 29 33	10 1 3	8 9 50	20 25	4 18	-20 25	2 55	-12 30	-0 56	-21 45	-0 57	0 19	2 22	-3 14	-0 44	-13 34	-0 25	-18 18	5 5
21	10 29 40	10 1 10	8 9 56	20 48	4 22	-20 49	2 28	-12 16	-0 55	-21 4	-1 2	0 20	2 22	-3 11	-0 44	-13 32	-0 25	-18 18	5 5
24	10 29 47	10 1 16	8 10 2	21 12	4 26	-21 14	1 58	-12 2	-0 55	-20 17	-1 7	0 22	2 23	-3 9	-0 44	-13 30	-0 25	-18 18	5 5
27	10 29 54	10 1 22	8 10 8	21 34	4 29	-21 35	1 28	-11 47	-0 55	-19 25	-1 12	0 24	2 24	-3 6	-0 44	-13 27	-0 25	-18 17	5 5
30	11 0 2	10 1 29	8 10 14	21 56	4 31	-21 50	0 57	-11 32	-0 55	-18 27	-1 15	0 27	2 25	-3 2	-0 44	-13 25	-0 25	-18 17	5 5
31	11 0 10	10 1 36	8 10 19	22 17	4 32	-21 57	0 28	-11 17	-0 55	-17 25	-1 19	0 29	2 26	-2 59	-0 44	-13 23	-0 25	-18 17	5 5
फर. 1	11 0 12	10 1 38	8 10 21	22 24	4 32	-21 57	0 19	-11 12	-0 55	-17 4	-1 20	0 30	2 26	-2 58	-0 44	-13 22	-0 25	-18 17	5 5
4	11 0 21	10 1 44	8 10 26	22 42	4 31	-21 51	-0 7	-10 57	-0 55	-15 56	-1 23	0 33	2 27	-2 55	-0 44	-13 20	-0 25	-18 17	5 5
7	11 0 29	10 1 51	8 10 31	22 58	4 30	-21 35	-0 32	-10 41	-0 55	-14 44	-1 25	0 37	2 27	-2 51	-0 44	-13 18	-0 25	-18 17	5 5
10	11 0 38	10 1 58	8 10 36	23 13	4 28	-21 9	-0 54	-10 26	-0 55	-13 29	-1 26	0 41	2 28	-2 48	-0 44	-13 15	-0 25	-18 16	5 5
13	11 0 47	10 2 5	8 10 41	23 25	4 25	-20 30	-1 14	-10 10	-0 55	-12 10	-1 27	0 45	2 29	-2 44	-0 43	-13 13	-0 25	-18 16	5 5
16	11 0 57	10 2 12	8 10 46	23 34	4 21	-19 41	-1 31	-9 54	-0 56	-10 48	-1 28	0 49	2 30	-2 40	-0 43	-13 11	-0 25	-18 16	5 5
19	11 1 6	10 2 19	8 10 50	23 42	4 16	-18 39	-1 45	-9 38	-0 56	-9 24	-1 27	0 54	2 30	-2 37	-0 43	-13 9	-0 25	-18 16	5 5
22	11 1 16	10 2 25	8 10 54	23 47	4 11	-17 26	-1 56	-9 22	-0 56	-7 58	-1 27	0 59	2 31	-2 33	-0 43	-13 6	-0 25	-18 15	5 6
25	11 1 25	10 2 32	8 10 58	23 49	4 6	-16 1	-2 4	-9 6	-0 56	-6 29	-1 25	1 4	2 31	-2 29	-0 43	-13 4	-0 25	-18 15	5 6
28	11 1 35	10 2 39	8 11 2	23 50	4 0	-14 24	-2 8	-8 49	-0 56	-5 0	-1 23	1 9	2 32	-2 25	-0 43	-13 2	-0 25	-18 15	5 6
मार्च 1	11 1 39	10 2 41	8 11 3	23 50	3 58	-13 49	-2 9	-8 44	-0 56	-4 29	-1 23	1 11	2 32	-2 23	-0 43	-13 1	-0 25	-18 15	5 6
4	11 1 49	10 2 48	8 11 6	23 48	3 52	-11 57	-2 8	-8 28	-0 56	-2 58	-1 20	1 16	2 32	-2 19	-0 43	-12 59	-0 26	-18 15	5 6
7	11 1 59	10 2 54	8 11 9	23 45	3 46	-9 52	-2 4	-8 11	-0 56	-1 26	-1 17	1 22	2 33	-2 15	-0 43	-12 57	-0 26	-18 14	5 6
10	11 2 9	10 3 1	8 11 12	23 39	3 39	-7 37	-1 55	-7 55	-0 57	0 7	-1 13	1 28	2 33	-2 11	-0 43	-12 54	-0 26	-18 14	5 6
13	11 2 19	10 3 7	8 11 14	23 33	3 33	-5 10	-1 41	-7 39	-0 57	1 39	-1 9	1 33	2 33	-2 7	-0 43	-12 52	-0 26	-18 14	5 7
16	11 2 30	10 3 13	8 11 17	23 25	3 27	-2 34	-1 22	-7 22	-0 57	3 12	-1 4	1 39	2 34	-2 3	-0 43	-12 50	-0 26	-18 14	5 7
19	11 2 40	10 3 20	8 11 19	23 15	3 20	0 9	-0 59	-7 6	-0 57	4 43	-0 59	1 45	2 34	-1 59	-0 43	-12 48	-0 26	-18 13	5 7
22	11 2 50	10 3 26	8 11 20	23 5	3 14	2 58	-0 30	-6 50	-0 58	6 14	-0 53	1 51	2 34	-1 55	-0 43	-12 46	-0 26	-18 13	5 7
25	11 3 0	10 3 31	8 11 22	22 53	3 8	5 48	0 2	-6 34	-0 58	7 44	-0 47	1 56	2 34	-1 51	-0 43	-12 44	-0 26	-18 13	5 7
28	11 3 11	10 3 37	8 11 23	22 40	3 2	8 33	0 37	-6 17	-0 58	9 12	-0 40	2 2	2 34	-1 47	-0 43	-12 42	-0 26	-18 12	5 8
31	11 3 21	10 3 43	8 11 24	22 26	2 56	11 7	1 13	-6 1	-0 58	10 38	-0 33	2 8	2 34	-1 43	-0 43	-12 40	-0 26	-18 12	5 8

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2010 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2010 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 3 24	10 3 44	8 11 24	22 21	2 54	11 54	1 25	-5 56	-0 59	11 6	-0 31	2 9	2 34	-1 41	-0 43	-12 40	-0 26	-18 12	5 8
4	11 3 34	10 3 50	8 11 24	22 6	2 49	14 4	1 58	-5 40	-0 59	12 30	-0 23	2 15	2 34	-1 37	-0 43	-12 38	-0 26	-18 12	5 8
7	11 3 44	10 3 55	8 11 24	21 50	2 43	15 51	2 26	-5 25	-0 59	13 50	-0 16	2 20	2 34	-1 34	-0 43	-12 36	-0 26	-18 12	5 8
10	11 3 54	10 3 59	8 11 24	21 32	2 38	17 11	2 48	-5 9	-1 0	15 7	-0 8	2 25	2 34	-1 30	-0 43	-12 35	-0 26	-18 12	5 8
13	11 4 3	10 4 4	8 11 24	21 14	2 32	18 3	3 0	-4 54	-1 0	16 21	-0 0	2 30	2 34	-1 26	-0 43	-12 33	-0 26	-18 11	5 9
16	11 4 13	10 4 8	8 11 23	20 54	2 27	18 27	3 2	-4 38	-1 0	17 32	0 8	2 34	2 33	-1 22	-0 43	-12 32	-0 26	-18 11	5 9
19	11 4 22	10 4 13	8 11 22	20 34	2 22	18 21	2 52	-4 23	-1 1	18 38	0 16	2 39	2 33	-1 19	-0 43	-12 30	-0 26	-18 11	5 9
22	11 4 31	10 4 16	8 11 21	20 12	2 17	17 46	2 29	-4 9	-1 1	19 40	0 24	2 43	2 33	-1 15	-0 43	-12 29	-0 26	-18 11	5 9
25	11 4 40	10 4 20	8 11 19	19 50	2 13	16 48	1 54	-3 54	-1 2	20 37	0 33	2 47	2 32	-1 11	-0 43	-12 28	-0 27	-18 11	5 9
28	11 4 49	10 4 23	8 11 17	19 26	2 8	15 31	1 9	-3 40	-1 2	21 30	0 41	2 50	2 32	-1 8	-0 43	-12 27	-0 27	-18 11	5 9
मई 1	11 4 57	10 4 26	8 11 15	19 2	2 4	14 4	0 19	-3 26	-1 3	22 17	0 49	2 53	2 32	-1 5	-0 44	-12 26	-0 27	-18 11	5 9
4	11 5 5	10 4 29	8 11 13	18 37	2 0	12 40	-0 33	-3 12	-1 3	22 59	0 56	2 56	2 31	-1 2	-0 44	-12 25	-0 27	-18 11	5 9
7	11 5 13	10 4 32	8 11 11	18 10	1 55	11 26	-1 21	-2 59	-1 4	23 34	1 4	2 59	2 31	-0 59	-0 44	-12 24	-0 27	-18 11	5 10
10	11 5 21	10 4 34	8 11 8	17 43	1 51	10 30	-2 4	-2 45	-1 4	24 4	1 11	3 1	2 30	-0 56	-0 44	-12 23	-0 27	-18 11	5 10
13	11 5 28	10 4 36	8 11 5	17 15	1 47	9 56	-2 38	-2 33	-1 5	24 28	1 18	3 2	2 29	-0 53	-0 44	-12 23	-0 27	-18 11	5 10
16	11 5 35	10 4 38	8 11 2	16 46	1 44	9 44	-3 4	-2 20	-1 5	24 46	1 25	3 4	2 29	-0 50	-0 44	-12 22	-0 27	-18 11	5 10
19	11 5 42	10 4 39	8 10 58	16 15	1 40	9 53	-3 21	-2 8	-1 6	24 57	1 31	3 5	2 28	-0 47	-0 44	-12 22	-0 27	-18 11	5 10
22	11 5 48	10 4 40	8 10 55	15 44	1 36	10 21	-3 30	-1 57	-1 7	25 2	1 37	3 6	2 28	-0 45	-0 44	-12 22	-0 27	-18 11	5 10
25	11 5 54	10 4 41	8 10 51	15 12	1 33	11 7	-3 31	-1 46	-1 7	25 0	1 42	3 6	2 27	-0 43	-0 44	-12 21	-0 27	-18 11	5 10
28	11 5 59	10 4 42	8 10 47	14 40	1 29	12 6	-3 25	-1 35	-1 8	24 52	1 47	3 6	2 26	-0 41	-0 44	-12 21	-0 27	-18 12	5 10
31	11 6 5	10 4 42	8 10 43	14 6	1 26	13 18	-3 14	-1 24	-1 9	24 38	1 51	3 5	2 26	-0 39	-0 44	-12 21	-0 27	-18 12	5 10
जून 1	11 6 6	10 4 42	8 10 42	13 54	1 25	13 44	-3 9	-1 21	-1 9	24 32	1 52	3 5	2 26	-0 38	-0 44	-12 21	-0 28	-18 12	5 10
4	11 6 11	10 4 42	8 10 38	13 20	1 21	15 7	-2 49	-1 11	-1 10	24 9	1 55	3 4	2 25	-0 36	-0 44	-12 21	-0 28	-18 12	5 9
7	11 6 15	10 4 41	8 10 33	12 44	1 18	16 37	-2 26	-1 2	-1 10	23 41	1 57	3 3	2 24	-0 35	-0 45	-12 22	-0 28	-18 12	5 9
10	11 6 19	10 4 40	8 10 29	12 8	1 15	18 9	-1 58	-0 54	-1 11	23 6	1 59	3 1	2 24	-0 33	-0 45	-12 22	-0 28	-18 13	5 9
13	11 6 23	10 4 39	8 10 25	11 30	1 12	19 40	-1 27	-0 46	-1 12	22 26	2 0	2 59	2 23	-0 32	-0 45	-12 22	-0 28	-18 13	5 9
16	11 6 26	10 4 38	8 10 20	10 52	1 9	21 7	-0 54	-0 38	-1 13	21 41	2 0	2 57	2 22	-0 31	-0 45	-12 23	-0 28	-18 13	5 9
19	11 6 28	10 4 36	8 10 15	10 14	1 6	22 25	-0 20	-0 31	-1 14	20 51	1 59	2 54	2 22	-0 30	-0 45	-12 24	-0 28	-18 14	5 8
22	11 6 30	10 4 35	8 10 11	9 34	1 3	23 27	0 13	-0 24	-1 14	19 56	1 58	2 51	2 21	-0 29	-0 45	-12 24	-0 28	-18 14	5 8
25	11 6 32	10 4 32	8 10 6	8 54	1 0	24 10	0 44	-0 19	-1 15	18 56	1 55	2 48	2 20	-0 28	-0 45	-12 25	-0 28	-18 15	5 8
28	11 6 34	10 4 30	8 10 2	8 13	0 57	24 29	1 10	-0 13	-1 16	17 53	1 52	2 44	2 20	-0 28	-0 45	-12 26	-0 28	-18 15	5 8

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2010 ई.)(प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2010 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	11 6 34	10 4 27	8 9 57	7 32	0 54	24 23	1 30	-0 9	-1 17	16 45	1 48	2 40	2 19	-0 28	-0 45	-12 27	-0 28	-18 16	5 7
4	11 6 35	10 4 25	8 9 52	6 50	0 51	23 52	1 44	-0 5	-1 18	15 34	1 42	2 36	2 19	-0 28	-0 46	-12 28	-0 28	-18 16	5 7
7	11 6 35	10 4 21	8 9 48	6 8	0 49	23 0	1 50	-0 2	-1 19	14 20	1 36	2 31	2 18	-0 28	-0 46	-12 29	-0 28	-18 17	5 7
10	11 6 35	10 4 18	8 9 43	5 25	0 46	21 50	1 51	0 1	-1 20	13 3	1 29	2 26	2 17	-0 28	-0 46	-12 30	-0 28	-18 17	5 6
13	11 6 34	10 4 15	8 9 39	4 41	0 43	20 25	1 46	0 3	-1 21	11 44	1 21	2 21	2 17	-0 28	-0 46	-12 32	-0 29	-18 18	5 6
16	11 6 32	10 4 11	8 9 35	3 57	0 41	18 49	1 35	0 4	-1 21	10 22	1 12	2 15	2 16	-0 29	-0 46	-12 33	-0 29	-18 18	5 5
19	11 6 31	10 4 7	8 9 30	3 13	0 38	17 6	1 19	0 5	-1 22	8 58	1 2	2 9	2 16	-0 30	-0 46	-12 34	-0 29	-18 19	5 5
22	11 6 29	10 4 3	8 9 26	2 28	0 36	15 18	1 0	0 5	-1 23	7 33	0 51	2 3	2 15	-0 31	-0 46	-12 36	-0 29	-18 20	5 4
25	11 6 26	10 3 59	8 9 22	1 43	0 33	13 27	0 36	0 4	-1 24	6 6	0 39	1 57	2 15	-0 32	-0 46	-12 37	-0 29	-18 20	5 4
28	11 6 23	10 3 54	8 9 18	0 57	0 31	11 35	0 10	0 2	-1 25	4 39	0 26	1 51	2 14	-0 33	-0 46	-12 39	-0 29	-18 21	5 3
31	11 6 20	10 3 50	8 9 15	0 11	0 28	9 45	-0 19	0 0	-1 26	3 10	0 13	1 44	2 14	-0 34	-0 46	-12 40	-0 29	-18 22	5 2
अगस्त 1	11 6 19	10 3 48	8 9 14	-0 4	0 28	9 8	-0 29	-0 1	-1 26	2 41	0 8	1 42	2 14	-0 35	-0 46	-12 41	-0 29	-18 22	5 2
4	11 6 15	10 3 44	8 9 10	-0 50	0 25	7 23	-1 1	-0 4	-1 27	1 12	-0 7	1 35	2 13	-0 37	-0 47	-12 43	-0 29	-18 22	5 2
7	11 6 11	10 3 39	8 9 7	-1 36	0 23	5 43	-1 34	-0 8	-1 28	-0 17	-0 23	1 27	2 13	-0 38	-0 47	-12 44	-0 29	-18 23	5 1
10	11 6 6	10 3 34	8 9 4	-2 23	0 20	4 11	-2 8	-0 12	-1 29	-1 46	-0 39	1 20	2 12	-0 40	-0 47	-12 46	-0 29	-18 24	5 0
13	11 6 1	10 3 29	8 9 1	-3 9	0 18	2 51	-2 42	-0 17	-1 30	-3 14	-0 57	1 12	2 12	-0 42	-0 47	-12 48	-0 29	-18 25	5 0
16	11 5 56	10 3 25	8 8 58	-3 56	0 16	1 44	-3 15	-0 23	-1 30	-4 41	-1 15	1 5	2 12	-0 44	-0 47	-12 49	-0 29	-18 25	4 59
19	11 5 51	10 3 20	8 8 56	-4 43	0 14	0 56	-3 45	-0 29	-1 31	-6 8	-1 34	0 57	2 11	-0 46	-0 47	-12 51	-0 29	-18 26	4 58
22	11 5 45	10 3 15	8 8 54	-5 29	0 11	0 31	-4 11	-0 36	-1 32	-7 33	-1 53	0 49	2 11	-0 49	-0 47	-12 53	-0 29	-18 27	4 58
25	11 5 39	10 3 10	8 8 52	-6 16	0 9	0 32	-4 28	-0 44	-1 32	-8 56	-2 13	0 41	2 11	-0 51	-0 47	-12 55	-0 29	-18 28	4 57
28	11 5 33	10 3 5	8 8 50	-7 2	0 7	1 5	-4 34	-0 51	-1 33	-10 18	-2 34	0 33	2 11	-0 54	-0 47	-12 56	-0 29	-18 28	4 56
31	11 5 26	10 3 0	8 8 49	-7 48	0 5	2 8	-4 25	-1 0	-1 34	-11 37	-2 55	0 24	2 10	-0 56	-0 47	-12 58	-0 29	-18 29	4 55
सित. 1	11 5 24	10 2 58	8 8 48	-8 4	0 4	2 35	-4 19	-1 2	-1 34	-12 3	-3 2	0 21	2 10	-0 57	-0 47	-12 59	-0 29	-18 29	4 55
4	11 5 17	10 2 54	8 8 47	-8 49	0 2	4 8	-3 47	-1 11	-1 34	-13 19	-3 24	0 13	2 10	-1 0	-0 47	-13 0	-0 29	-18 30	4 55
7	11 5 11	10 2 49	8 8 46	-9 35	0 0	5 50	-3 1	-1 20	-1 35	-14 32	-3 46	0 5	2 10	-1 3	-0 47	-13 2	-0 29	-18 31	4 54
10	11 5 4	10 2 44	8 8 46	-10 20	-0 2	7 22	-2 5	-1 30	-1 35	-15 42	-4 8	-0 4	2 10	-1 5	-0 47	-13 3	-0 29	-18 32	4 53
13	11 4 57	10 2 40	8 8 46	-11 5	-0 4	8 31	-1 7	-1 39	-1 35	-16 49	-4 31	-0 13	2 10	-1 8	-0 47	-13 5	-0 29	-18 32	4 52
16	11 4 49	10 2 36	8 8 46	-11 49	-0 6	9 5	-0 12	-1 49	-1 36	-17 51	-4 53	-0 21	2 10	-1 11	-0 47	-13 6	-0 29	-18 33	4 51
19	11 4 42	10 2 31	8 8 46	-12 33	-0 8	9 2	0 34	-1 58	-1 36	-18 49	-5 15	-0 30	2 10	-1 14	-0 47	-13 8	-0 29	-18 34	4 51
22	11 4 35	10 2 27	8 8 47	-13 16	-0 10	8 22	1 9	-2 8	-1 36	-19 42	-5 36	-0 39	2 10	-1 17	-0 47	-13 9	-0 29	-18 35	4 50
25	11 4 28	10 2 23	8 8 48	-13 58	-0 12	7 10	1 34	-2 18	-1 36	-20 30	-5 57	-0 48	2 10	-1 20	-0 47	-13 11	-0 29	-18 35	4 49
28	11 4 21	10 2 20	8 8 49	-14 40	-0 14	5 31	1 48	-2 27	-1 36	-21 11	-6 17	-0 56	2 10	-1 23	-0 47	-13 12	-0 29	-18 36	4 48

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2010 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2010 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 4 13	10 2 16	8 8 50	-15 20	-0 16	3 35	1 53	-2 36	-1 36	-21 46	-6 35	-1 5	2 10	-1 25	-0 47	-13 13	-0 29	-18 37	4 48
4	11 4 6	10 2 13	8 8 52	-16 0	-0 18	1 26	1 51	-2 45	-1 36	-22 13	-6 51	-1 14	2 10	-1 28	-0 47	-13 14	-0 29	-18 38	4 47
7	11 3 59	10 2 10	8 8 54	-16 39	-0 20	-0 48	1 44	-2 54	-1 35	-22 31	-7 4	-1 22	2 10	-1 31	-0 47	-13 15	-0 29	-18 38	4 46
10	11 3 53	10 2 7	8 8 56	-17 17	-0 22	-3 5	1 32	-3 2	-1 35	-22 40	-7 13	-1 31	2 10	-1 34	-0 47	-13 16	-0 29	-18 39	4 45
13	11 3 46	10 2 5	8 8 59	-17 54	-0 23	-5 21	1 17	-3 10	-1 35	-22 38	-7 18	-1 39	2 10	-1 36	-0 47	-13 17	-0 29	-18 40	4 45
16	11 3 40	10 2 2	8 9 2	-18 29	-0 25	-7 34	0 59	-3 17	-1 34	-22 23	-7 18	-1 48	2 11	-1 39	-0 47	-13 18	-0 29	-18 40	4 44
19	11 3 33	10 2 0	8 9 5	-19 3	-0 27	-9 43	0 40	-3 24	-1 34	-21 57	-7 12	-1 56	2 11	-1 41	-0 47	-13 18	-0 29	-18 41	4 43
22	11 3 27	10 1 59	8 9 8	-19 36	-0 29	-11 47	0 21	-3 30	-1 33	-21 17	-6 59	-2 4	2 11	-1 43	-0 47	-13 19	-0 29	-18 42	4 42
25	11 3 22	10 1 57	8 9 12	-20 8	-0 30	-13 45	0 0	-3 36	-1 33	-20 25	-6 38	-2 12	2 11	-1 46	-0 47	-13 19	-0 29	-18 42	4 42
28	11 3 16	10 1 56	8 9 15	-20 38	-0 32	-15 36	-0 20	-3 41	-1 32	-19 23	-6 10	-2 20	2 12	-1 48	-0 47	-13 20	-0 29	-18 43	4 41
31	11 3 11	10 1 55	8 9 19	-21 6	-0 34	-17 20	-0 40	-3 45	-1 32	-18 13	-5 36	-2 28	2 12	-1 50	-0 47	-13 20	-0 29	-18 43	4 40
नवं. 1	11 3 9	10 1 55	8 9 21	-21 15	-0 34	-17 53	-0 47	-3 46	-1 31	-17 49	-5 23	-2 31	2 12	-1 50	-0 47	-13 20	-0 29	-18 44	4 40
4	11 3 5	10 1 54	8 9 25	-21 41	-0 36	-19 26	-1 6	-3 49	-1 31	-16 34	-4 42	-2 38	2 12	-1 52	-0 46	-13 20	-0 29	-18 44	4 40
7	11 3 0	10 1 54	8 9 30	-22 6	-0 37	-20 51	-1 24	-3 52	-1 30	-15 21	-3 58	-2 46	2 13	-1 54	-0 46	-13 20	-0 29	-18 45	4 39
10	11 2 56	10 1 54	8 9 35	-22 28	-0 39	-22 6	-1 41	-3 54	-1 29	-14 12	-3 12	-2 53	2 13	-1 55	-0 46	-13 20	-0 29	-18 45	4 38
13	11 2 53	10 1 55	8 9 40	-22 49	-0 40	-23 12	-1 56	-3 55	-1 28	-13 10	-2 26	-3 0	2 14	-1 56	-0 46	-13 20	-0 29	-18 46	4 38
16	11 2 50	10 1 55	8 9 45	-23 7	-0 42	-24 7	-2 9	-3 55	-1 28	-12 17	-1 42	-3 7	2 14	-1 58	-0 46	-13 20	-0 29	-18 46	4 37
19	11 2 47	10 1 56	8 9 50	-23 24	-0 43	-24 51	-2 19	-3 55	-1 27	-11 35	-1 0	-3 14	2 15	-1 59	-0 46	-13 19	-0 29	-18 46	4 37
22	11 2 45	10 1 58	8 9 56	-23 38	-0 45	-25 24	-2 26	-3 54	-1 26	-11 2	-0 21	-3 20	2 15	-1 59	-0 46	-13 19	-0 29	-18 47	4 36
25	11 2 43	10 1 59	8 10 1	-23 51	-0 46	-25 44	-2 30	-3 52	-1 25	-10 41	0 14	-3 26	2 16	-2 0	-0 46	-13 18	-0 29	-18 47	4 36
28	11 2 41	10 2 1	8 10 7	-24 1	-0 47	-25 52	-2 28	-3 49	-1 25	-10 29	0 47	-3 32	2 16	-2 1	-0 46	-13 18	-0 29	-18 48	4 35
दिसं. 1	11 2 40	10 2 4	8 10 13	-24 9	-0 49	-25 46	-2 20	-3 46	-1 24	-10 26	1 16	-3 38	2 17	-2 1	-0 45	-13 17	-0 29	-18 48	4 35
4	11 2 40	10 2 6	8 10 19	-24 14	-0 50	-25 29	-2 4	-3 42	-1 23	-10 32	1 41	-3 43	2 18	-2 1	-0 45	-13 16	-0 29	-18 48	4 34
7	11 2 39	10 2 9	8 10 25	-24 17	-0 51	-25 0	-1 39	-3 37	-1 22	-10 44	2 4	-3 49	2 18	-2 1	-0 45	-13 15	-0 29	-18 48	4 34
10	11 2 40	10 2 12	8 10 31	-24 18	-0 52	-24 20	-1 2	-3 31	-1 21	-11 3	2 23	-3 53	2 19	-2 1	-0 45	-13 14	-0 29	-18 49	4 33
13	11 2 41	10 2 16	8 10 38	-24 16	-0 53	-23 33	-0 13	-3 25	-1 21	-11 28	2 39	-3 58	2 20	-2 0	-0 45	-13 13	-0 29	-18 49	4 33
16	11 2 42	10 2 19	8 10 44	-24 12	-0 55	-22 39	0 45	-3 18	-1 20	-11 57	2 53	-4 2	2 20	-2 0	-0 45	-13 12	-0 29	-18 49	4 32
19	11 2 44	10 2 23	8 10 50	-24 6	-0 56	-21 43	1 44	-3 11	-1 19	-12 30	3 5	-4 6	2 21	-1 59	-0 45	-13 10	-0 29	-18 49	4 32
22	11 2 46	10 2 27	8 10 57	-23 57	-0 57	-20 51	2 31	-3 3	-1 18	-13 5	3 14	-4 10	2 22	-1 58	-0 45	-13 9	-0 29	-18 49	4 32
25	11 2 49	10 2 32	8 11 3	-23 46	-0 57	-20 14	2 58	-2 54	-1 18	-13 43	3 21	-4 13	2 23	-1 57	-0 44	-13 7	-0 29	-18 49	4 31
28	11 2 52	10 2 37	8 11 10	-23 32	-0 58	-20 0	3 5	-2 45	-1 17	-14 23	3 26	-4 16	2 23	-1 55	-0 44	-13 6	-0 29	-18 49	4 31
31	11 2 55	10 2 41	8 11 16	-23 15	-0 59	-20 7	2 56	-2 35	-1 16	-15 3	3 29	-4 19	2 24	-1 54	-0 44	-13 4	-0 29	-18 49	4 31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2011 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2011 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 2 57	10 2 43	8 11 19	-23 10	-0 59	-20 13	2 50	-2 32	-1 16	-15 17	3 30	-4 19	2 25	-1 53	-0 44	-13 3	-0 29	-18 49	4 31
4	11 3 1	10 2 48	8 11 25	-22 50	-1 0	-20 39	2 29	-2 22	-1 15	-15 57	3 31	-4 21	2 25	-1 51	-0 44	-13 2	-0 29	-18 49	4 30
7	11 3 5	10 2 54	8 11 31	-22 28	-1 1	-21 12	2 4	-2 11	-1 15	-16 37	3 30	-4 23	2 26	-1 49	-0 44	-13 0	-0 29	-18 49	4 30
10	11 3 10	10 2 59	8 11 38	-22 4	-1 2	-21 46	1 37	-1 59	-1 14	-17 16	3 28	-4 25	2 27	-1 47	-0 44	-12 58	-0 29	-18 49	4 30
13	11 3 16	10 3 5	8 11 44	-21 38	-1 2	-22 17	1 10	-1 47	-1 13	-17 53	3 25	-4 26	2 28	-1 45	-0 44	-12 56	-0 29	-18 49	4 30
16	11 3 22	10 3 11	8 11 50	-21 10	-1 3	-22 42	0 43	-1 35	-1 13	-18 28	3 20	-4 26	2 29	-1 43	-0 44	-12 54	-0 29	-18 49	4 30
19	11 3 28	10 3 17	8 11 56	-20 39	-1 3	-22 59	0 17	-1 22	-1 12	-19 1	3 15	-4 27	2 30	-1 40	-0 44	-12 52	-0 29	-18 49	4 30
22	11 3 34	10 3 23	8 12 2	-20 6	-1 4	-23 7	-0 8	-1 9	-1 12	-19 30	3 8	-4 27	2 30	-1 37	-0 43	-12 50	-0 29	-18 49	4 29
25	11 3 41	10 3 30	8 12 8	-19 32	-1 4	-23 5	-0 31	-0 55	-1 11	-19 57	3 0	-4 26	2 31	-1 35	-0 43	-12 47	-0 29	-18 49	4 29
28	11 3 48	10 3 36	8 12 14	-18 55	-1 4	-22 52	-0 52	-0 41	-1 11	-20 20	2 52	-4 25	2 32	-1 32	-0 43	-12 45	-0 29	-18 48	4 29
31	11 3 56	10 3 43	8 12 20	-18 17	-1 4	-22 28	-1 10	-0 27	-1 10	-20 38	2 43	-4 24	2 33	-1 29	-0 43	-12 43	-0 29	-18 48	4 29
फर 1	11 3 58	10 3 45	8 12 22	-18 3	-1 5	-22 17	-1 16	-0 22	-1 10	-20 44	2 40	-4 24	2 33	-1 28	-0 43	-12 42	-0 29	-18 48	4 29
4	11 4 6	10 3 52	8 12 27	-17 23	-1 5	-21 37	-1 32	-0 8	-1 10	-20 57	2 30	-4 22	2 34	-1 24	-0 43	-12 40	-0 29	-18 48	4 29
7	11 4 15	10 3 58	8 12 32	-16 40	-1 5	-20 45	-1 45	0 7	-1 9	-21 5	2 19	-4 20	2 35	-1 21	-0 43	-12 38	-0 29	-18 48	4 29
10	11 4 23	10 4 5	8 12 37	-15 56	-1 5	-19 41	-1 55	0 22	-1 9	-21 8	2 8	-4 18	2 36	-1 17	-0 43	-12 35	-0 29	-18 47	4 29
13	11 4 32	10 4 12	8 12 42	-15 11	-1 5	-18 24	-2 2	0 38	-1 8	-21 7	1 57	-4 15	2 36	-1 14	-0 43	-12 33	-0 29	-18 47	4 29
16	11 4 41	10 4 19	8 12 47	-14 24	-1 5	-16 54	-2 6	0 53	-1 8	-21 0	1 46	-4 12	2 37	-1 10	-0 43	-12 31	-0 29	-18 47	4 29
19	11 4 50	10 4 26	8 12 51	-13 35	-1 5	-15 12	-2 6	1 9	-1 8	-20 49	1 34	-4 9	2 38	-1 7	-0 43	-12 28	-0 29	-18 47	4 29
22	11 4 59	10 4 32	8 12 56	-12 46	-1 4	-13 17	-2 2	1 25	-1 7	-20 32	1 22	-4 5	2 39	-1 3	-0 43	-12 26	-0 29	-18 46	4 29
25	11 5 9	10 4 39	8 13 00	-11 55	-1 4	-11 11	-1 54	1 42	-1 7	-20 10	1 10	-4 1	2 39	-0 59	-0 43	-12 24	-0 29	-18 46	4 29
28	11 5 19	10 4 46	8 13 4	-11 4	-1 4	-8 52	-1 40	1 58	-1 7	-19 42	0 58	-3 57	2 40	-0 55	-0 43	-12 21	-0 29	-18 46	4 29
मार्च 1	11 5 22	10 4 48	8 13 5	-10 46	-1 4	-8 3	-1 35	2 3	-1 7	-19 32	0 54	-3 56	2 40	-0 54	-0 43	-12 20	-0 29	-18 46	4 29
4	11 5 32	10 4 55	8 13 8	-9 53	-1 3	-5 31	-1 15	2 20	-1 6	-18 58	0 42	-3 51	2 41	-0 50	-0 42	-12 18	-0 29	-18 46	4 30
7	11 5 42	10 5 2	8 13 11	-9 0	-1 3	-2 51	-0 50	2 37	-1 6	-18 20	0 31	-3 47	2 41	-0 46	-0 42	-12 16	-0 29	-18 45	4 30
10	11 5 52	10 5 8	8 13 14	-8 6	-1 2	-0 6	-0 19	2 53	-1 6	-17 36	0 19	-3 42	2 42	-0 42	-0 42	-12 14	-0 29	-18 45	4 30
13	11 6 2	10 5 15	8 13 17	-7 11	-1 2	2 38	0 16	3 10	-1 6	-16 48	0 8	-3 37	2 42	-0 38	-0 42	-12 11	-0 29	-18 45	4 30
16	11 6 12	10 5 21	8 13 19	-6 15	-1 1	5 15	0 54	3 27	-1 5	-15 56	-0 2	-3 32	2 43	-0 33	-0 42	-12 9	-0 30	-18 45	4 30
19	11 6 23	10 5 27	8 13 22	-5 19	-1 0	7 36	1 32	3 44	-1 5	-15 0	-0 13	-3 26	2 43	-0 29	-0 42	-12 7	-0 30	-18 44	4 30
22	11 6 33	10 5 33	8 13 23	-4 23	-0 59	9 36	2 9	4 1	-1 5	-14 0	-0 23	-3 21	2 43	-0 25	-0 42	-12 5	-0 30	-18 44	4 30
25	11 6 43	10 5 39	8 13 25	-3 26	-0 58	11 8	2 41	4 18	-1 5	-12 56	-0 32	-3 16	2 44	-0 21	-0 42	-12 3	-0 30	-18 44	4 30
28	11 6 53	10 5 45	8 13 26	-2 30	-0 58	12 7	3 5	4 35	-1 5	-11 49	-0 41	-3 10	2 44	-0 17	-0 42	-12 1	-0 30	-18 44	4 30
31	11 7 4	10 5 51	8 13 27	-1 33	-0 57	12 31	3 18	4 51	-1 5	-10 39	-0 50	-3 5	2 44	-0 13	-0 42	-11 59	-0 30	-18 43	4 31

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2010 से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2010–11 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)	तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	10 36	अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	6 57	जुलाई 30		पुष्य	4	20 22	नवम्बर 13		विशा.	3	9 50
4		पू.षा.	3	17 07	17		अश्वि.	2	16 39	अगस्त 3		आश्ले.	1	8 00	16	वृश्चिक	विशा.	4	17 17
7		पू.षा.	4	23 38	21		अश्वि.	3	2 31	6		आश्ले.	2	19 32	20		अनु.	1	0 39
11		उ.षा.	1	6 08	24		अश्वि.	4	12 33	10		आश्ले.	3	6 58	23		अनु.	2	7 54
14	मकर	उ.षा.	2	12 38	27		भर.	1	22 45	13		आश्ले.	4	18 19	26		अनु.	3	15 03
17		उ.षा.	3	19 09	मई 1		भर.	2	9 07	17	सिंह	मघा	1	5 34	29		अनु.	4	22 05
21		उ.षा.	4	1 44	4		भर.	3	19 36	20		मघा	2	16 45	दिसम्बर 3		ज्येष्ठा	1	5 01
24		श्रव.	1	8 22	8		भर.	4	6 13	24		मघा	3	3 49	6		ज्येष्ठा	2	11 51
27		श्रव.	2	15 04	11		कृत्ति.	1	16 56	27		मघा	4	14 47	9		ज्येष्ठा	3	18 36
30		श्रव.	3	21 51	15	वृष	कृत्ति.	2	3 47	31		पू.फा.	1	1 37	13		ज्येष्ठा	4	1 18
फरवरी 3		श्रव.	4	4 42	18		कृत्ति.	3	14 45	सितम्बर 3		पू.फा.	2	12 17	16	धनु	मूल	1	7 58
6		धनि.	1	11 36	22		कृत्ति.	4	1 52	6		पू.फा.	3	22 48	19		मूल	2	14 37
9		धनि.	2	18 35	25		रोहि.	1	13 06	10		पू.फा.	4	9 10	22		मूल	3	21 13
13	कुम्भ	धनि.	3	1 38	29		रोहि.	2	0 28	13		उ.फा.	1	19 23	26		मूल	4	3 46
16		धनि.	4	8 46	जून 1		रोहि.	3	11 55	17	कन्या	उ.फा.	2	5 29	29		पू.षा.	1	10 17
19		शत.	1	16 02	4		रोहि.	4	23 26	20		उ.फा.	3	15 28	(सन् 2011 ई.)				
22		शत.	2	23 25	8		मृग.	1	11 01	24		उ.फा.	4	1 17	जनवरी 1		पू.षा.	2	16 47
26		शत.	3	6 57	11		मृग.	2	22 39	27		हस्त	1	10 58	4		पू.षा.	3	23 14
मार्च 1		शत.	4	14 37	15	मिथुन	मृग.	3	10 21	30		हस्त	2	20 28	8		पू.षा.	4	5 43
4		पू.भा.	1	22 24	18		मृग.	4	22 07	अक्तूबर 4		हस्त	3	5 47	11		उ.षा.	1	12 12
8		पू.भा.	2	6 18	22		आर्द्रा	1	9 57	7		हस्त	4	14 56	14	मकर	उ.षा.	2	18 44
11		पू.भा.	3	14 20	25		आर्द्रा	2	21 50	10		चित्रा	1	23 55	18		उ.षा.	3	1 18
14	मीन	पू.भा.	4	22 29	29		आर्द्रा	3	9 45	14		चित्रा	2	8 45	21		उ.षा.	4	7 55
18		उ.भा.	1	6 47	जुलाई 2		आर्द्रा	4	21 41	17	तुला	चित्रा	3	17 27	24		श्रव.	1	14 35
21		उ.भा.	2	15 14	6		पुन.	1	9 35	21		चित्रा	4	2 02	27		श्रव.	2	21 16
24		उ.भा.	3	23 52	9		पुन.	2	21 29	24		स्वाती	1	10 28	31		श्रव.	3	4 01
28		उ.भा.	4	8 40	13		पुन.	3	9 20	27		स्वाती	2	18 44	फरवरी 3		श्रव.	4	10 48
31		रेव.	1	17 38	16	कर्क	पुन.	4	21 11	31		स्वाती	3	2 51	6		धनि.	1	17 40
अप्रैल 4		रेव.	2	2 45	20		पुष्य	1	9 02	नवम्बर 3		स्वाती	4	10 48	10		धनि.	2	0 38
7		रेव.	3	12 1	23		पुष्य	2	20 51	6		विशा.	1	18 36	13	कुम्भ	धनि.	3	7 43
10		रेव.	4	21 25	27		पुष्य	3	8 38	10		विशा.	2	2 17	16		धनि.	4	14 54

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2010 से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2011)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 19		शत.	1	22 13
23		शत.	2	5 37
26		शत.	3	13 08
मार्च 1		शत.	4	20 45
5		पू.भा.	1	4 29
8		पू.भा.	2	12 21
11		पू.भा.	3	20 22
15	मीन	पू.भा.	4	4 33
18		उ.भा.	1	12 54
21		उ.भा.	2	21 24
25		उ.भा.	3	6 03
28		उ.भा.	4	14 50
31		रेव.	1	23 44

मंगल–चार (सन् 2010 ई.)

जनवरी 8		आश्ले.	2	12 31
19		आश्ले.	1	5 27
27		पुष्य	4	20 55
फरवरी 5		पुष्य	3	7 15
14		पुष्य	2	21 17
मार्च 3		पुष्य	1	5 28
10	मार्गी			22 39
18		पुष्य	2	21 11
अप्रैल 6		पुष्य	3	4 40
17		पुष्य	4	8 12
26		आश्ले.	1	14 07
मई 4		आश्ले.	2	20 48
12		आश्ले.	3	12 44
19		आश्ले.	4	18 11
26	सिंह	मघा	1	15 54
जून 2		मघा	2	7 42
8		मघा	3	18 37

मंगल–चार (सन् 2010–2011 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 15		मघा	4	1 24
21		पू.फा.	1	4 41
27		पू.फा.	2	5 01
जुलाई 3		पू.फा.	3	2 46
8		पू.फा.	4	22 09
14		उ.फा.	1	15 21
20	कन्या	उ.फा.	2	6 34
25		उ.फा.	3	20 02
31		उ.फा.	4	7 53
अगस्त 5		हस्त	1	18 09
11		हस्त	2	2 54
16		हस्त	3	10 14
21		हस्त	4	16 16
26		चित्रा	1	21 04
सितंबर 1		चित्रा	2	0 40
6	तुला	चित्रा	3	3 04
11		चित्रा	4	4 19
16		स्वाती	1	4 28
21		स्वाती	2	3 37
26		स्वाती	3	1 46
30		स्वाती	4	22 57
अक्तूबर 5		विशा.	1	19 09
10		विशा.	2	14 25
15		विशा.	3	8 48
20	वृश्चिक	विशा.	4	2 21
24		अनु.	1	19 05
29		अनु.	2	11 01
नवंबर 3		अनु.	3	2 10
7		अनु.	4	16 33
12		ज्येष्ठा	1	6 13
16		ज्येष्ठा	2	19 13

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 21		ज्येष्ठा	3	7 34
25		ज्येष्ठा	4	19 18
30	धनु	मूल	1	6 25
दिसंबर 4		मूल	2	16 56
9		मूल	3	2 54
13		मूल	4	12 22
17		पू.षा.	1	21 21
22		पू.षा.	2	5 54
26		पू.षा.	3	14 01
30		पू.षा.	4	21 44

(सन् 2011 ई.)

जनवरी 4		उ.षा.	1	5 03
8	मकर	उ.षा.	2	12 02
12		उ.षा.	3	18 42
17		उ.षा.	4	1 08
21		श्रव.	1	7 19
25		श्रव.	2	13 17
29		श्रव.	3	19 02
फरवरी 3		श्रव.	4	0 37
7		धनि.	1	6 05
11		धनि.	2	11 27
15	कुम्भ	धनि.	3	16 47
19		धनि.	4	22 05
24		शत.	1	3 22
28		शत.	2	8 40
मार्च 4		शत.	3	14 0
8		शत.	4	19 25
13		पू.भा.	1	0 57
17		पू.भा.	2	6 40
21		पू.भा.	3	12 33
25	मीन	पू.भा.	4	18 37

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 30		उ.भा.	1	0 54
अप्रैल 3		उ.भा.	2	7 26

बुध–चार (सन् 2010 ई.)

जनवरी 2		पू.षा.	3	16 47
5		पू.षा.	2	6 12
7		पू.षा.	1	19 38
11		मूल	4	3 14
15	मार्गी			22 22
21		पू.षा.	1	7 33
25		पू.षा.	2	14 52
28		पू.षा.	3	23 00
31		पू.षा.	4	21 46
फरवरी 3		उ.षा.	1	15 15
6	मकर	उ.षा.	2	5 16
8		उ.षा.	3	16 36
11		उ.षा.	4	1 58
13		श्रव.	1	9 39
15		श्रव.	2	15 53
17		श्रव.	3	20 52
20		श्रव.	4	0 41
22		धनि	1	3 24
24		धनि.	2	5 05
26	कुम्भ	धनि.	3	5 46
28		धनि.	4	5 30
मार्च 2		शत.	1	4 17
4		शत.	2	2 10
5		शत.	3	23 11
7		शत.	4	19 22
9		पू.भा.	1	14 45
11		पू.भा.	2	9 24
13		पू.भा.	3	3 21

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (1 जनवरी, 2010 से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

बुध—चार (सन् 2010—11 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 14	मीन	पू.भा.	4	20 39
16		उ.भा.	1	13 26
18		उ.भा.	2	5 47
19		उ.भा.	3	21 48
21		उ.भा.	4	13 42
23		रेव.	1	5 39
24		रेव.	2	21 57
26		रेव.	3	14 55
28		रेव.	4	8 56
30	मेष	अश्वि.	1	4 38
अप्रैल 1		अश्वि.	2	2 58
3		अश्वि.	3	5 07
5		अश्वि.	4	13 39
8		भर.	1	9 00
12		भर.	2	6 54
18	वक्री			9 37
25		भर.	1	0 46
30		अश्वि.	4	8 42
मई 6		अश्वि.	3	4 24
12	मार्गी			3 58
18		अश्वि.	4	2 26
23		भर.	1	10 46
27		भर.	2	3 52
30		भर.	3	5 49
जून 1		भर.	4	22 56
4		कृत्ति.	1	10 12
6	वृष	कृत्ति.	2	16 58
8		कृत्ति.	3	20 17
10		कृत्ति.	4	20 42
12		रोहि.	1	18 42
14		रोहि.	2	14 40
जून 16		रोहि.	3	8 56
18		रोहि.	4	1 41
19		मृग.	1	17 11
21		मृग.	2	7 45
22	मिथुन	मृग.	3	21 29
24		मृग.	4	10 39
25		आर्द्रा	1	23 27
27		आर्द्रा	2	12 03
29		आर्द्रा	3	0 40
30		आर्द्रा	4	13 27
जुलाई 2		पुन.	1	2 33
3		पुन.	2	16 11
5		पुन.	3	6 25
6	कर्क	पुन.	4	21 29
8		पुष्य	1	13 26
10		पुष्य	2	6 23
12		पुष्य	3	0 34
13		पुष्य	4	20 01
15		आश्ले.	1	16 54
17		आश्ले.	2	15 21
19		आश्ले.	3	15 33
21		आश्ले.	4	17 44
23	सिंह	मघा	1	22 09
26		मघा	2	5 08
28		मघा	3	15 23
31		मघा	4	5 23
अगस्त 3		पू.फा.	1	0 45
6		पू.फा.	2	3 33
9		पू.फा.	3	19 18
14		पू.फा.	4	17 57
21	वक्री			1 30
अगस्त 27		पू.फा.	3	0 25
31		पू.फा.	2	10 55
सितंबर 4		पू.फा.	1	0 01
7		मघा	4	22 22
13	मार्गी			4 39
18		पू.फा.	1	6 33
21		पू.फा.	2	15 47
24		पू.फा.	3	5 14
26		पू.फा.	4	10 30
28		उ.फा.	1	11 49
30	कन्या	उ.फा.	2	10 52
अक्तूबर 2		उ.फा.	3	8 37
4		उ.फा.	4	5 42
6		हस्त	1	2 30
7		हस्त	2	23 20
9		हस्त	3	20 23
11		हस्त	4	17 47
13		चित्रा	1	15 38
15		चित्रा	2	14 01
17	तुला	चित्रा	3	12 58
19		चित्रा	4	12 31
21		स्वाती	1	12 42
23		स्वाती	2	13 28
25		स्वाती	3	14 52
27		स्वाती	4	16 50
29		विशा.	1	19 23
31		विशा.	2	22 29
नवंबर 3		विशा.	3	2 07
5	वृश्चिक	विशा.	4	6 16
7		अनु.	1	10 57
9		अनु.	2	16 08
नवंबर 11		अनु.	3	21 52
14		अनु.	4	4 12
16		ज्येष्ठा	1	11 16
18		ज्येष्ठा	2	19 12
21		ज्येष्ठा	3	4 15
23		ज्येष्ठा	4	14 58
26	धनु	मूल	1	4 01
28		मूल	2	21 05
दिसंबर 1		मूल	3	21 30
5		मूल	4	17 08
10	वक्री			17 34
15		मूल	3	6 32
18		मूल	2	7 49
20		मूल	1	18 52
23	वृश्चिक	ज्येष्ठा	4	8 11
27		ज्येष्ठा	3	0 03
30	मार्गी			12 51
(सन् 2011 ई.)				
जनवरी 3		ज्येष्ठा	4	9 44
8	धनु	मूल	1	0 22
11		मूल	2	8 35
14		मूल	3	6 44
16		मूल	4	23 32
19		पू.षा.	1	13 02
22		पू.षा.	2	0 12
24		पू.षा.	3	9 35
26		पू.षा.	4	17 30
29		उ.षा	1	0 14
31	मकर	उ.षा.	2	5 54
फरवरी 2		उ.षा.	3	10 34
4		उ.षा.	4	14 20

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (1 जनवरी, 2010 से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

बुध—चार (सन् 2011 ई.)

तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फ़रवरी 6		श्रव.	1	17 14
8		श्रव.	2	19 18
10		श्रव.	3	20 33
12		श्रव.	4	20 59
14		धनि.	1	20 37
16		धनि.	2	19 28
18	कुम्भ	धनि.	3	17 32
20		धनि.	4	14 52
22		शत.	1	11 28
24		शत.	2	7 23
26		शत.	3	2 39
27		शत.	4	21 19
मार्च 1		पू.भा.	1	15 30
3		पू.भा.	2	9 18
5		पू.भा.	3	2 50
6	मीन	पू.भा.	4	20 18
8		उ.भा.	1	13 55
10		उ.भा.	2	8 00
12		उ.भा.	3	2 58
13		उ.भा.	4	23 29
15		रेव.	1	22 26
18		रेव.	2	1 17
20		रेव.	3	11 03
23		रेव.	4	10 47
28	मेष	अश्वि.	1	19 39
31	वक्री			2 19
अप्रैल 3		रेव.	4	5 31

गुरु—चार (सन् 2010 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 5		धनि.	4	23 29
21		शत.	1	7 21
फरवरी 4		शत.	2	18 07

गुरु—चार (सन् 2010 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 18		शत.	3	17 43
मार्च 4		शत.	4	13 11
18		पू.भा.	1	10 11
अप्रैल 1		पू.भा.	2	14 48
16		पू.भा.	3	10 15
मई 2	मीन	पू.भा.	4	8 07
20		उ.भा.	1	5 55
जून 11		उ.भा.	2	16 33
जुलाई 23	वक्री			17 33
सितंबर 3		उ.भा.	1	21 33
29		पू.भा.	4	14 05
नवंबर 1	कुम्भ	पू.भा.	3	12 53
18	मार्गी			22 24
दिसंबर 6	मीन	पू.भा.	4	9 08

(सन् 2011 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 6		उ.भा.	1	21 16
26		उ.भा.	2	15 44
फरवरी 12		उ.भा.	3	7 13
27		उ.भा.	4	11 06
मार्च 13		रेव.	1	19 35
27		रेव.	2	18 12

शुक्र—चार (सन् 2010 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि.
जनवरी 3		पू.षा.	2	11 15
6		पू.षा.	3	2 50
8		पू.षा.	4	18 25
11		उ.षा.	1	10 01
14	मकर	उ.षा.	2	1 37
16		उ.षा.	3	17 13
19		उ.षा.	4	8 50
22		श्रव.	1	0 29
24		श्रव.	2	16 09

शुक्र—चार (सन् 2010 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 27		श्रव.	3	7 50
29		श्रव.	4	23 33
फरवरी 1		धनि.	1	15 17
4		धनि.	2	7 03
6	कुम्भ	धनि.	3	22 50
9		धनि.	4	14 39
12		शत.	1	6 29
14		शत.	2	22 21
17		शत.	3	14 16
20		शत.	4	6 13
22		पू.भा.	1	22 13
25		पू.भा.	2	14 16
28		पू.भा.	3	6 22
मार्च. 2	मीन	पू.भा.	4	22 31
5		उ.भा.	1	14 43
8		उ.भा.	2	6 59
10		उ.भा.	3	23 17
13		उ.भा.	4	15 39
16		रेव.	1	8 04
19		रेव.	2	0 34
21		रेव.	3	17 07
24		रेव.	4	9 45
27	मेष	अश्वि.	1	2 28
29		अश्वि.	2	19 16
अप्रैल 1		अश्वि.	3	12 08
4		अश्वि.	4	5 06
6		भर.	1	22 08
9		भर.	2	15 15
12		भर.	3	8 27
15		भर.	4	1 44
17		कृत्ति.	1	19 06

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 20	बृष	कृत्ति.	2	12 34
23		कृत्ति.	3	6 09
25		कृत्ति.	4	23 50
28		रोहि.	1	17 38
मई 1		रोहि.	2	11 32
4		रोहि.	3	5 33
6		रोहि.	4	23 40
9		मृग.	1	17 54
12		मृग.	2	12 15
15	मिथुन	मृग.	3	6 44
18		मृग.	4	1 20
20		आर्द्रा	1	20 04
23		आर्द्रा	2	14 57
26		आर्द्रा	3	10 00
29		आर्द्रा	4	5 13
जून 1		पुन.	1	0 35
3		पुन.	2	20 08
6		पुन.	3	15 52
9	कर्क	पुन.	4	11 46
12		पुष्य	1	7 52
15		पुष्य	2	4 10
18		पुष्य	3	0 42
20		पुष्य	4	21 29
23		आश्ले.	1	18 31
26		आश्ले.	2	15 51
29		आश्ले.	3	13 30
जुलाई 2		आश्ले.	4	11 27
5	सिंह	मघा	1	9 45
8		मघा	2	8 25
11		मघा	3	7 28
14		मघा	4	6 56

ग्रहों के निरयण राशि—नक्षत्र चरण—चार (1 जनवरी, 2010 से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

शुक्र—चार (सन् 2010—11 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 17		पू.फा.	1	6 53
20		पू.फा.	2	7 21
23		पू.फा.	3	8 25
26		पू.फा.	4	10 08
29		उ.फा.	1	12 35
अगस्त 1	कन्या	उ.फा.	2	15 49
4		उ.फा.	3	19 56
8		उ.फा.	4	1 03
11		हस्त	1	7 17
14		हस्त	2	14 52
17		हस्त	3	24 00
21		हस्त	4	11 00
25		चित्रा	1	0 18
28		चित्रा	2	16 24
सितंबर 1	तुला	चित्रा	3	12 02
5		चित्रा	4	12 15
9		स्वाती	1	18 44
14		स्वाती	2	10 36
19		स्वाती	3	18 19
26		स्वाती	4	13 03
अक्तूबर 8	वक्री			12 35
19		स्वाती	3	21 12
26		स्वाती	2	5 29
31		स्वाती	1	17 39
नवंबर 6		चित्रा	4	20 06
19	मार्गी			2 48
दिसंबर 1		स्वाती	1	20 27
8		स्वाती	2	2 56
13		स्वाती	3	3 57
17		स्वाती	4	14 42
21		विशा.	1	16 43
दिसंबर 25		विशा.	2	12 45
29		विशा.	3	4 24
(सन् 2011 ई.)				
जनवरी 1	वृश्चिक	विशा.	4	16 44
5		अनु.	1	2 29
8		अनु.	2	10 10
11		अनु.	3	16 08
14		अनु.	4	20 41
18		ज्येष्ठा	1	0 01
21		ज्येष्ठा	2	2 17
24		ज्येष्ठा	3	3 38
27		ज्येष्ठा	4	4 10
30	धनु	मूल	1	4 00
फरवरी 2		मूल	2	3 14
5		मूल	3	1 56
8		मूल	4	0 11
10		पू.षा.	1	22 01
13		पू.षा.	2	19 29
16		पू.षा.	3	16 36
19		पू.षा.	4	13 25
22		उ.षा.	1	9 57
25	मकर	उ.षा.	2	6 13
28		उ.षा.	3	2 15
मार्च 2		उ.षा.	4	22 04
5		श्रव.	1	17 43
8		श्रव.	2	13 12
11		श्रव.	3	8 32
14		श्रव.	4	3 45
16		धनि.	1	22 50
19		धनि.	2	17 48
तारीख 2011 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 22	कुम्भ	धनि.	3	12 40
25		धनि.	4	7 25
28		शत.	1	2 05
30		शत.	2	20 39
अप्रैल 2		शत.	3	15 09

शनि—चार (सन् 2010—11 ई.)

जनवरी 13	वक्री			21 28
फरवरी 10		उ.फा.	4	1 21
मार्च 30		उ.फा.	3	2 43
मई 30	मार्गी			23 39
जुलाई 29		उ.फा.	4	22 24
अगस्त 31		हस्त	1	6 59
सितंबर 28		हस्त	2	0 35
अक्तूबर 25		हस्त	3	9 14
नवंबर 25		हस्त	4	5 42
जनवरी 26	वक्री			11 40

राहु—चार (सन् 2010—11 ई.).

जनवरी 19		पू.षा.	4	9 28
मार्च 23		पू.षा.	3	7 14
मई 25		पू.षा.	2	5 00
जुलाई 27		पू.षा.	1	2 20
सितंबर 28		मूल	4	0 11
नवंबर 29		मूल	3	21 54
जनवरी 31		मूल	2	19 17

केतु—चार (सन् 2010 ई.)

जनवरी 19		पुन.	2	9 28
मार्च 23		पुन.	1	7 14
मई 25		आर्द्रा	4	5 00
जुलाई 27		आर्द्रा	3	2 20

केतु—चार (सन् 2010—11 ई.)

तारीख 2010 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितंबर 28		आर्द्रा	2	0 11
नवंबर 29		आर्द्रा	1	21 54
जनवरी 31		मृग.	4	19 17

यूरेनस—चार (2010—11 ई.)

जनवरी 27	मीन	पू.भा.	4	13 15
मार्च 31		उ.भा.	1	0 03
जुलाई 5	वक्री			22 21
अक्तूबर 26		पू.भा.	4	3 10
दिसंबर 6	मार्गी			7 22
जनवरी 15		उ.भा.	1	11 20
मार्च 24		उ.भा.	2	6 56

नेप्च्यून—चार (2010—11 ई.)

मार्च 19		धनि	4	10 16
जून 1	वक्री			0 22
अगस्त 18		धनि.	3	23 51
नवं. 7	मार्गी			11 33
जनवरी 20		धनि.	4	15 06

प्लूटो—चार (2010—11 ई.)

जनवरी 21		मूल	4	5 24
अप्रैल 7	वक्री			8 02
जून 29		मूल	3	6 23
सितंबर 14	मार्गी			10 04
नवंबर 24		मूल	4	14 09
मार्च 17		पू.षा.	1	0 36

ग्रहों के वक्र / मार्ग, उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखें।

ग्रहों के वक्र–मार्ग/उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2010 ई. से 3 अप्रैल, 2011 ई. तक)

ग्रह	वक्र/ मार्ग	तारीख	ग्रह	उदय/ अस्त	तारीख
मंगल	मार्गी	10 मार्च, 2010 ई.	मंगल	अस्त	27 नवं., 2010 ई.
बुध	मार्गी	15 जन., 2010 ई.	बुध	प. में उदित	28 मार्च, 2010 ई.
बुध	वक्री	18 अप्रै., 2010 ई.	बुध	प. में अस्त	20 अप्रै., 2010 ई.
बुध	मार्गी	12 मई, 2010 ई.	बुध	पू. में उदित	7 मई, 2010 ई.
बुध	वक्री	21 अग., 2010 ई.	बुध	पू. में अस्त	17 जून, 2010 ई.
बुध	मार्गी	13 सितं., 2010 ई.	बुध	प. में उदित	10 जुला. 2010 ई.
बुध	वक्री	10 दिसं., 2010 ई.	बुध	प. में अस्त	27 अग. 2010 ई.
बुध	मार्गी	30 दिसं., 2010 ई.	बुध	पू. में उदित	12 सितं., 2010 ई.
बुध	वक्री	31 मार्च, 2011 ई.	बुध	पू. में अस्त	30 सितं., 2010 ई.
गुरु	वक्री	23 जुला., 2010 ई.	बुध	प. में उदित	8 नवं., 2010 ई.
गुरु	मार्गी	18 नवं., 2010 ई.	बुध	प. में अस्त	14 दिसं., 2010 ई.
शुक्र	वक्री	8 अक्तू., 2010 ई.	बुध	पू. में उदित	26 दिसं., 2010 ई.
शुक्र	मार्गी	19 नवं., 2010 ई.	बुध	पू. में अस्त	6 फर., 2011 ई.
शनि	वक्री	13 जन., 2010 ई.	बुध	प. में उदित	12 मार्च, 2011 ई.
शनि	मार्गी	30 मई, 2010 ई.	बुध	प. में अस्त	1 अप्रै., 2011 ई.
शनि	वक्री	26 जन., 2011 ई.	गुरु	अस्त	18 फर., 2010 ई.
यूरेनस	वक्री	5 जुला., 2010 ई.	गुरु	उदित	20 मार्च, 2010 ई.
यूरेनस	मार्गी	6 दिसं., 2010 ई.	गुरु	अस्त	26 मार्च, 2011 ई.
नेप्च्यून	वक्री	1 जून, 2010 ई.	शुक्र	प. में अस्त	19 अक्तू., 2010 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	7 नवं., 2010 ई.	शुक्र	पू. में उदित	3 नवं., 2010 ई.
प्लूटो	वक्री	7 अप्रै., 2010 ई.	शनि	अस्त	13 सितं., 2010 ई.
प्लूटो	मार्गी	14 सितं., 2010 ई.	शनि	उदित	19 अक्तू., 2010 ई.

पृष्ठ संख्या 272 **ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन** साईज़ 24 X 18 सें. मी.

मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का पूर्ण शास्त्रीय समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य,

पुस्तक में छः अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं., भारत के किसी भी नगर का सूक्ष्म दैनिक लग्नसमाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) बतलाने वाली मौलिक सारणियां एवं सन् 1971 से 2000 ई. तक के चन्द्रसहित सूर्यादि सभी ग्रहों के सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिए गए हैं, जिनकी मदद से 30 वर्षों में (1971 से 2000 ई. तक) पैदा हुए वर/कन्याओं की जन्मकुण्डली 10–15 मिनटों में ही बनाकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पांचवें और छठे अध्याय में शोधपूर्ण 11 निबन्ध हैं।

वर/कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर 36 पृष्ठों पर फैली गुणमिलान–सारणी है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त जाने जा सकते हैं।

गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" आदि तथा मंगलदोष के बारे में प्रचलित "चन्द्र–मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते"– आदि अनेक परिहारवाक्यों का सप्रपंच खण्डन–मण्डन किया गया है।

कुज (मंगली) दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक निर्णय के लिए 7 कुजदोष कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही वर–कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिक मान कुछ एक मिनटों में ही जानकर, उनकी तुलना द्वारा विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय किया जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्यय सहित मूल्य Rs. 550/- M.O अथवा D.D. द्वारा नीचे लिखे पते पर अपना Address साफ–साफ लिखते हुए भेजिए। V.P.P. नहीं की जाएगी। **द्वितीय संस्करण उपलब्ध है।**

Mrs. Veena Chaturvedi, ABHIJIT PRAKASHAN,
Kothi No.59, Sector-6, P.O. PANCHKULA, (Haryana)-
PIN 134 109 Phone- 0172- 2565 303

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः— अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कटुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोठागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	—	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुर	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08	टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें –	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40	पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52	फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00	पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24	फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44	पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32	पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00	फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16	पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16	फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20	पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04	फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24	पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48	फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04	पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40	फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12	पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40	फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12	पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56	फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
नैल्लूर	(आं)	14 29	80 00	−10 00	पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32	फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04	पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20	फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04	पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08	फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56	पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28	फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00	पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32	बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36	पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48	बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36	बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16	पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00	बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44	बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52	पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04	बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20	पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28	बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36	पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28	बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48	पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48	बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12	पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28	बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24	पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36	बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04	पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52	बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
परभनी	(म.)	19 16	76 51	−22 36	पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00	बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52	बंबई	(म.)	देखें –	मुम्बई	
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40	प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04	बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40	प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52	बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36	प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24	बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24	प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40	बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36	फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56	बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्रलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 28	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32	माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मण्डया	(क.)	12 34	76 55	−22 20	मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24	मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08	मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12	मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20	मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16	मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36	यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20	मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56	यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48	मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32	यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28	योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20	मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00	रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16	रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48	रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00	रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32	मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40	रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36	मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48	राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24	रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32	राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52	राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04	मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16	मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48	राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04	राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08	मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36	राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48	मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24	मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12	राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08	मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12	राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56	रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28	मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32	राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08	मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00	रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08	रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20	मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20	रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36	मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
*Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00
*Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ	38 44 पू.	−25 04	+02 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ	35 56 पू.	+23 44	+03 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ	23 43 पू.	−25 08	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ	73 16 पू.	−06 56	+00 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15
*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
Comilla	Bangladesh	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर	नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.			अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30	*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30	*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30	*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30	*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30	*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30	Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30	Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30	Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Dubai	U.A.E. .	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30	*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30	Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30	Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30	Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30	Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30	Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00	Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30	*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30	Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30	Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30	*Kingston*	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30	Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30	Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30	Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30	Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30	Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30	Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30	*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30	*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30	*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं टा से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
*Long Beach,Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ..	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
* Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Peking	China	देखें – Beijing		--	--	--
Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Port of Spain	Trininad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
*Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं मि.
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury(Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yeman	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 00 प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू	−06 20	−06 30
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ..	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

आपने 'गणक मार्त्तण्ड' अभी तक नहीं खरीदा ? इसे अभी खरीदिए – क्योंकि ऐसे उपयोगी विशाल ग्रन्थ का दूसरा संस्करण जल्दी छपने वाला नहीं है– यह ध्यान में रखिए। भारत का यह **Computer** से तैयार किया गया सर्वप्रथम 110 वर्ष का सूक्ष्मतम परमशुद्ध तिथ्यादि, ग्रहस्पष्ट ग्रहराशि प्रवेशकाल आदि महत्त्वपूर्ण विषयों से समृद्ध ऐसा अनुपम पंचांग है, जिसमें जन्मपत्रोपयोगी 140 पृष्ठों की विपुल सामग्री भी है। विद्वानों का मत है कि इस ग्रन्थ का वाकई कोई जवाब नहीं।

* इन नगरों में दीर्घकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है। दीर्घकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय(Summer Time) प्रचलित है; ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
**Albania*	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) मे बटा है –		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र मे Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते हैं)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते हैं।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) **W.S.T.** (इस कालक्षेत्र मे Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यत: इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है –		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते हैं।	105 00 प.	+12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पड़ता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 05 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे–बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30–30 मिनटों के अन्तर वाले छः कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक–एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;.........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi), Flores, Kabaena , Lombok, Sangihe , Talaud , Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat , Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten , Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Iran	52 30 पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	− 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN** – यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) Kazakhstan (West) .	60 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	− 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	− 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	− 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	− 01 30
* Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	− 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30
Malaysia	120 00 पू.	− 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Maurtius	60 00 पू.	+ 01 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
***KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA)** (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	− 01 00
Nepal	86 15 पू.	− 00 15
Netherlands	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	− 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प.	+ 10 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	− 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i)कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग).............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	− 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	− 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	− 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	− 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	− 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) . Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	− 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर). Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	− 6 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश)	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर
	अं. क.	घं. मि.
Saudi Arabia	45 00 पू.	+ 02 30
*Scotland (U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू.	− 02 30
South Africa	30 00 पू.	+ 03 30
*Spain	15 00 पू.	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू.	00 00
Sudan	30 00 पू.	+ 03 30
Suriname	45 00 प.	+ 08 30
*Sweden	15 00 पू.	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू.	+ 04 30
*Syria	30 00 पू.	+ 03 30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75 00 पू.	+ 00 30
Taiwan	120 00 पू.	− 02 30
Tanzania	45 00 पू.	+ 02 30
Thailand	105 00 पू.	− 01 30
Trinidad andTobago	60 00 प.	+ 09 30
Tunisia	15 00 पू.	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू.	+ 03 30
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) .[Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, .Sharjah, और Umma-al-Quiwain)	60 00 पू.	+ 01 30
Uganda	45 00 पू.	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड़ कर शेष पूरा भाग आता है।......................	30 00 पू.	+ 03 30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग(द्वीप) आता है।....	45 00 पू.	+ 02 30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75 00 पू.	+ 00 30
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पड़ती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र में Alabama, Illinois आदि States पड़ती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पड़ती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू.	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू.	− 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू.	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू.	+ 03 30
Zaire	30 00 पू.	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू.	+ 03 30

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (**Summer Time**) प्रचलित है। **Summer Time** के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	वैशाख											
			मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	ज्येष्ठ											
			वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४१	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	आषाढ़											
		मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
जून २२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
जुलाई ८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
१६	श्रा१	५ ३५											

अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	श्रावण											
		कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
जुलाई २४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
अगस्त ८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
१६	भा१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख		भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४२	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४२	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४२	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४२	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४२	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख		आश्विन प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		कार्तिक प्रविष्टे	कार्तिक											
			तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

अंग्रेज़ी तारीख		मार्गशीर्ष प्रविष्टे	मार्गशीर्ष											
			वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ.१	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	पौष											
			धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	माघ १	७ २८											

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	माघ											
			मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा १	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	फाल्गुन											
			कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २४	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	चैत्र											
			मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। **जैसे**-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+२१	+२०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+२	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+२५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित मे शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एव श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी ज़रूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाई ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी–पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बरावर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाई ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाई ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३१
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१३	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	२	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	[illegible]	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरणः– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अमीष्ट घड़ी–पल' हुए। ''दशम लग्नसारणी'' में इन ''अमीष्ट घड़ी–पलों'' से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का ''सारणीस्थ अन्तर'' हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अमीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें ''अयनांश संस्कार सारणी'' में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	– ७	२०४७	– १३	२०५५	– २०	२०६३	–२६	२०७१	–३३
२०२४	+ ६	२०३२	– १	२०४०	– ८	२०४८	– १४	२०५६	– २१	२०६४	–२७	२०७२	–३४
२०२५	+ ५	२०३३	– २	२०४१	– ९	२०४९	– १५	२०५७	– २२	२०६५	–२८	२०७३	–३५
२०२६	+ ४	२०३४	– ३	२०४२	– ९	२०५०	– १६	२०५८	–२२	२०६६	–२९	२०७४	–३६
२०२७	+ ३	२०३५	– ४	२०४३	–१०	२०५१	– १७	२०५९	–२३	२०६७	–३०	२०७५	–३६
२०२८	+ २	२०३६	– ४	२०४४	–११	२०५२	– १८	२०६०	–२४	२०६८	–३१	२०७६	–३७
२०२९	+ १	२०३७	– ५	२०४५	–१२	२०५३	– १८	२०६१	–२५	२०६९	–३१	२०७७	–३८
२०३०	+ १	२०३८	– ६	२०४६	– १३	२०५४	– १९	२०६२	–२६	२०७०	–३२	२०७८	–३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है , तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये ।

विशेष- यदि "**अक्षांशादि सारणी** " में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "**स्थानीयमध्यमकाल**" बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सित.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखा अंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)से लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं.टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर मं १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों को किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़गे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ को १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर. के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ठ सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न '' हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(द)		अक्षांश ११°(द)		अक्षांश १४°(द)		अक्षांश १७°(द)		अक्षांश २०°(द)		सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(द.)		अक्षांश ११°(द.)		अक्षांश १४°(द.)		अक्षांश १७°(द.)		अक्षांश २०°(द.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न				दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४	१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७	१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६	१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४	१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२	१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३	१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	४०	२९७	३२
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८	१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६	१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८	१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५	१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४	१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७	१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३	१८	३०	२७६	५३	८	४२	८	५५	९	९	९	२४	९	४१
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६	१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५	१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२	२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४	२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२	२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७	२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८	२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६	२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४	२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३	२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६	२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की '' ३ अक्षांश की गति'' है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे ''स्थूल लग्न'' में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (= ५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह ''स्थूल दशमलग्न'' है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (= ४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन् का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (= २ रा. ४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा ''गणकमार्तण्ड'' में हमने किया है वहां पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	३२
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	१
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं.	क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं.	कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं.	क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५५
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	५०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.
१९७१	६	३९	०७	१९७८	६	४०	१९	१९८५	६	४१	३२	१९९२	६	३८	४७	१९९९	६	३९	५९	२००६	६	४१	११	२०१३	६	४२	२३	२०२०	६	३९	३९
१९७२	६	३८	१०	१९७९	६	३९	२२	१९८६	६	४०	३५	१९९३	६	४१	४६	२०००	६	३९	०२	२००७	६	४०	१४	२०१४	६	४१	२६	२०२१	६	४२	३८
१९७३	६	४१	१०	१९८०	६	३८	२४	१९८७	६	३९	३८	१९९४	६	४०	४९	२००१	६	४२	०१	२००८	६	३९	१७	२०१५	६	४०	२९	२०२२	६	४१	४०
१९७४	६	४०	१२	१९८१	६	४१	२३	१९८८	६	३८	४०	१९९५	६	३९	५२	२००२	६	४१	०४	२००९	६	४२	१६	२०१६	६	३९	३१	२०२३	६	४०	४३
१९७५	६	३९	१५	१९८२	६	४०	२६	१९८९	६	४१	३९	१९९६	६	३८	५४	२००३	६	४०	०७	२०१०	६	४१	१९	२०१७	६	४२	३१	२०२४	६	३९	४६
१९७६	६	३८	१७	१९८३	६	३९	२९	१९९०	६	४०	४१	१९९७	६	४१	५३	२००४	६	३९	०९	२०११	६	४०	२१	२०१८	६	४१	३३	२०२५	६	४२	४५
१९७७	६	४१	१६	१९८४	६	३८	३२	१९९१	६	३९	४४	१९९८	६	४०	५६	२००५	६	४२	०९	२०१२	६	३९	२४	२०१९	६	४०	३६	२०२६	६	४१	४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	९	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४७	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५६	+१४२	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६	चंद्रदशा वर्ष १०	भौम दशा वर्ष ७	राहु दशा वर्ष १८	गुरु दशा वर्ष १६	शनिदशा वर्ष १९	बुधदशा वर्ष १७	केतुदशा वर्ष ७	शुक्रदशा वर्ष २०
एक घड़ी में ३६ दिन	एक घड़ी में ६० दिन	एक घड़ी में ४२ दिन	एक घड़ी में १०८ दिन	एक घड़ी में ९६ दिन	एक घड़ी में ११४ दिन	एक घड़ी में १०२ दिन	एक घड़ी में ४२ दिन	एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. .३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विघ्न
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं. बु. शु. श) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रि बल–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश या चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह [illegible] हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद्	चतुष्पद्	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद्
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए ज नक्षत्रसंख्या गताब्द जोड़ें और जोड़ें, 8 भाग दें, तो मंगलादि योगि दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)

म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग-

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांच या सातवें घ हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े तो उस गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो ग होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २ ३ ५ ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५ ७, ९. १० स्थानों में शुभग्रह हों;३. ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४. ६. ८. ९. १४. १५. ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५. ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५. ९, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में, तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन कराना है।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्त्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक मे, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो "यथा कुलधर्म वः"– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम मे, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (**गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः**) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए = ब
वश्य दोष के लिए = व
तारा दोष के लिए = त
योनि दोष के लिए = य
राशीश दोष के लिए = र
गण दोष के लिए = ग
भकूट दोष के लिए = भ
नाडी दोष के लिए = न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के २ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ $\frac{१}{२}$ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है ।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के '**श्री मार्त्तण्ड पंचांग**' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख ''**पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति**'' पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक '**ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन**' में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'**नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्**'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'**एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते**'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -'**नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्**' (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे,** दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक ''**ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन**'' में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्‌भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{1}{2}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है ।साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर चक्र भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग'; 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ण 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग','प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'य वर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त- गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तों नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते ।१८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।

(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।

(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।

(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।

(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	द.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सिं	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू. = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू-सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९७० ई. से सन् २००० ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पुराने पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए अद्भुत कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद विषयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है। दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर-6,पो. पंचकूला-134109

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या	
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ज ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग ब भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	.20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2, 3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2, 3,4	ज्ये. 1,2, 3,4	मूल 1,2, 3,4	पूषा. 1,2, 3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2, 3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2, 3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2, 3,4	रेव. 1,2, 3,4
मेष	अश्वि. 1,2, 3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2, 3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ न	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	26 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग व त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व र	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ वगत य र

(व =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या	
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग ग य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2, 3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2, 3,4	ज्ये. 1,2, 3,4	मूल 1,2, 3,4	पू.षा. 1,2, 3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2, 3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2, 3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2, 3,4	रेव. 1,2, 3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ बवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत वनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–''माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥'' वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गास्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोडकर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– लग्न लिखी (कुंकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– ''झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥ अत्यावश्यकता में ''द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥''

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु॰प्र॰सा॰)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/ [illegible]

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–
दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोडकर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाश	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षय	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र	हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	दूषित नक्षत्र	

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य राशयः
१२	११	१	३	८	७	
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा।।

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या। केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गारुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्त्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद दशविंशोपकाधिकंम्।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पी ३।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र य़ोगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्त्व का भी विचार नहीं करना– **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास मे पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। [illegible]।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालने समर्पितम्। [illegible]।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र								
नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मू., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये-भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमांवस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पू.भा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्राममात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	**नक्षत्र**	**फलम्**
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुमूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५ अशुभ	८ शुभ	८ अशुभ	६ शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, ,पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्ः— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्सदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्ग द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् *अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।*), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रंहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या	६	२	४	४	४	४	४
	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, मघा, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

<table>
<tr><th colspan="5">द्विग्द्वारलग्नानि</th></tr>
<tr><th>दिशा→</th><th>पूर्व</th><th>दक्षिण</th><th>पश्चिम</th><th>उत्तर</th></tr>
<tr><td>शुभम्→</td><td>१। ५। ९</td><td>२। ६। १०</td><td>३। ७। ११</td><td>४। ८। १२</td></tr>
<tr><td>मध्यमम्→</td><td>२। ६ १०</td><td>३। ७। ११</td><td>४। ८। १२</td><td>१। ५। ९</td></tr>
<tr><td>भयम्→</td><td>४। ८ १२</td><td>१। ५। ९</td><td>२। ६। १०</td><td>३। ७। ११</td></tr>
<tr><td>महद्भयम्→</td><td>३। ७। ११</td><td>४। ८। १२</td><td>१। ५। ९</td><td>२। ६। १०</td></tr>
</table>

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

<table>
<tr><th colspan="9">दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्</th><th colspan="4">नक्षत्रशूलचक्रम्</th></tr>
<tr><td>दिशा</td><td>पूर्व</td><td>आ.</td><td>दक्षि.</td><td>नैर्ऋ.</td><td>पश्चि.</td><td>वाय.</td><td>उत्तर</td><td>ईशा.</td><td>पू.</td><td>द.</td><td>प.</td><td>उ.</td></tr>
<tr><td>वार</td><td>चं.,श.</td><td>चं.,बृ.</td><td>गुरु</td><td>सू.,शु.</td><td>सू.,शु.</td><td>भौम</td><td>मं.</td><td>बु.,श.</td><td>ज्ये.</td><td>पू.भा.</td><td>रोहि.</td><td>उ.फा.</td></tr>
</table>

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषानभुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

<table>
<tr><th colspan="8">यात्रायां कालज्ञान चक्रम्</th></tr>
<tr><th>सम्मुखे</th><th>शनौ</th><th>शुक्रे</th><th>गुरौ</th><th>बुधे</th><th>भौमे</th><th>चन्द्रे</th><th>रवौ</th></tr>
<tr><td>नेष्टः</td><td>पूर्वे</td><td>आग्नेय्यां</td><td>दक्षिणे</td><td>नैर्ऋत्यां</td><td>पश्चिमे</td><td>वायव्ये</td><td>उत्तरे</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th colspan="9">योगिनीवास–चक्रम्</th></tr>
<tr><th>दिशा</th><th>पूर्व</th><th>आग्ने.</th><th>दक्षि.</th><th>नैर्ऋ.</th><th>पश्चि.</th><th>वाय.</th><th>उत्तर</th><th>ईशा.</th></tr>
<tr><td>तिथि</td><td>१। ६</td><td>३। ११</td><td>५। १३</td><td>४। १२</td><td>६। १४</td><td>७। १५</td><td>२। १०</td><td>८। ३०</td></tr>
</table>

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

<table>
<tr><th colspan="4">चन्द्रवासचक्रम्</th><th colspan="9" rowspan="3">एकस्मिन् राशौ आवश्यके
तात्कालिक–यात्रायां
घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्</th><th>घट्यात्मक चन्द्रवास</th></tr>
<tr><td>पूर्वे</td><td>दक्षि.</td><td>पश्चि.</td><td>उत्तरे</td><td rowspan="4">जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।</td></tr>
<tr><td>मेष</td><td>वृष</td><td>मिथुन</td><td>कर्क</td></tr>
<tr><td>सिंह</td><td>कन्या</td><td>तुला</td><td>वृश्चि.</td><td>दिशा</td><td>पू.</td><td>द.</td><td>प.</td><td>उ.</td><td>पू.</td><td>द.</td><td>प.</td><td>उ.</td></tr>
<tr><td>धनु</td><td>मकर</td><td>कुम्भ</td><td>मीन</td><td>घटी</td><td>१७</td><td>१५</td><td>२१</td><td>१६</td><td>१७</td><td>१५</td><td>२०</td><td>१४</td></tr>
</table>

चन्द्रफलम्ः– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—*भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥*

सर्वाङ्गसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाऐं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— **मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥** विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहिन चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– **प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।**

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य–पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– **'मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का:– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह–
तापम्:	सुकीर्ति	मृति	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्	रवौ भोमे व्यतिपाते संक्रांति–वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।
पुष्पं	○	मृत्तिका	○	दूर्वा	गोमय	○	पातनम्	

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्ही अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्ति। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०६७वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समय शुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- इस वर्ष शुक्र आश्वि. शुक्ल १२ मं. (१६ अक्तू., २०१० ई.) को पश्चिम में अस्त होकर कार्त्ति. कृ. १२ बु. (३ नवं., २०१० ई.) को पूर्व में उदित होगा।

गुरु-अस्त :- गुरु गतवर्ष सं. २०६६ वि. के फाल्गुन शुक्ल में अस्त हुआ था, वह इस वर्ष चैत्र शु. ४ श.(२० मार्च, २०१० ई.) को उदित होगा। इस वर्ष भी (सं. २०६७ वि. में) गुरु चैत्र कृ. ८ श. (२६ मार्च, २०११ ई.) को अस्त होकर, अगले वर्ष (सं. २०६८ वि.) वैशाख कृ. ८ चं.(२५ अप्रै., २०११ ई.) को उदित होगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है । क्योंकि अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जान कर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए ।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु—शुक्र का उदय—अस्त 'सं. २०६७ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	२३ अक्तू.,'१०	२२ अक्तू.,'१०	२० अक्तू.,'१०	१७ अक्तू.,'१०
शुक्र पूर्व में उदित	१ नवं., '१०	२ नवं., '१०	२ नवं., '१०	३ नवं., '१०
गुरु अस्त (सं. २०६६ वि.)	१८ फर. '१०	१८ फर. '१०	१८ फर. '१०	१७ फर. '१०
गुरु उदित (सं. २०६६-६७ वि.)	१३ मार्च '१०	१५ मार्च '१०	१७ मार्च '१०	२२ मार्च '१०
गुरु अस्त (सं. २०६७ वि.)	२६ मार्च '११	२६ मार्च '११	२६ मार्च '११	२६ मार्च '११
गुरु उदित (सं. २०६८ वि.)	१९ अप्रै.,'११	२० अप्रै.,'११	२३ अप्रै.,'११	२८ अप्रै.,'११

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते ।

वैशाख अधिकमास :- इस वर्ष वैशाख अधिकमास होने से इसमास में (१५ अप्रैल से १४ मई, २०१० ई. तक) शुभकृत्य नहीं होंगे ।

त्रयोदशदिनपक्ष :- इस वर्ष द्वि. वैशाखशुक्ल पक्ष में दो तिथियों का क्षय हुआ है, जिससे यह पक्ष त्रयोदशदिन का हो गया है। इसे **'विश्वघस्र'** पक्ष भी कहा जाता है। 'विश्वघस्र' पक्ष में मुहूर्तशास्त्रियों ने विवाहादि मंगलकृत्यों का दृढ़ता से निषेध किया है। जैसे- **"ज्योतिर्निबन्ध"** का यह वाक्य देखिए-

> उपनयनं परिणयनं वेशमारम्भादिकर्माणि।
> यात्रां द्विक्षयपक्षे कुर्यान्न जिजीविषुः पुरुषः।।"

लेकिन इसके अपवाद के रूप में **कश्यप** का एक यह वाक्य भी है, जो कहता है कि केन्द्र में शुभग्रहस्थिति वाले लग्न द्वारा यह (विश्वघस्र पक्ष) दोष समाप्त हो जाता है-

> "अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्ष—तिथ्यृक्ष—सम्भवाः।
> ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे।।"

(इस श्लोक की व्याख्या में **पीयूषधारा कार** ने लिखा है- **"पक्षदोषः** = त्रयोदशदिनात्मकादिः")

कश्यप के इस वाक्यानुसार हमने इस विश्वघस्र पक्ष में विवाहादि मुहूर्त्त लगाए हैं; लेकिन हमारा परामर्श है कि- अत्यावश्यकता की स्थिति में ही इन्हें स्वीकार करना चाहिए।

अग्राह्य लग्न :- इस वर्ष विवाहादि मुहूर्त्तों में निम्नलिखित पांच लग्न निर्दिष्ट दोषों के कारण कहीं भी ग्राह्य नहीं हुए हैं-

मिथुन लग्न	-	केतुयुति दोष
कन्यालग्न	-	शनियुति दोष
धनुलग्न	-	राहुयुति दोष
कुम्भलग्न	-	अष्टमस्थ लग्नेश(शनि)दोष
मीनलग्न	-	सप्तमस्थ शनिदोष

ध्यान दें, - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्तों में स्वीकार करें।

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य(महापात)दोष का विचार सूक्ष्मगणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितांत स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणितप्रक्रिया (महापात-गणित) निर्दिष्ट की है। कई पंचांगकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल पृष्ठ 59 पर दिया गया है।

यहां दिए गए मुहूर्त्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है और वहां विवाह-लग्न लगा दिए गए हैं।

ध्यान रहे -यहां मुहूर्त्तों में दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदयकालिक हैं। जो मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात के १२ बजे के बाद और सूर्योदय से पहिले पड़ता है, वहां अंग्रेजी तारीख अग्रिम (परवर्ती) समझनी चाहिए।

इन विवाहमुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण

आवश्यके = लग्न निर्बल है। अत्यावश्यकता में ही इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

दि.ल. = दिन का लग्न। ल. = रा. ल. = रात्रि का लग्न।

पादवेध = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध है।

पादवेधाभाव = विवाहलग्नकालिक नक्षत्रचरण को शुभग्रह का वेध नहीं है।

दा. = इस ग्रह की दान-पूजा करके इस लग्न में विवाह किया जा सकता है।

जैसे-"मं.दा." का अभिप्राय है, इस विवाह लग्न में मंगल की दान-पूजा आवश्यक है।

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
द्वि. वैशा. शु. १ श.	ज्ये. २	मई १५	रोहि.	वृष	वृष	मीन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू.,
द्वि. वैशा. शु. १ श.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	वृष	वृष	मीन	।। ऽशु.। ।। ।। ।।	ल. १(शु.दा.)(२८/३८ तक), (शुक्रयुति-परिहार), (२८/३८ बाद मृत्युबाण),
द्वि. वैशा. शु. ६ श.	ज्ये. ६	मई २२	उ.फा.	सिंह	वृष	मीन	।ऽ ऽश.। ।ऽची. ।ऽ ।।	ल. गोधू., (शनियुति-परिहार),
द्वि. वैशा. शु. १० र.	ज्ये. १०	मई २३	हस्त	कन्या	वृष	मीन	।। ।ऽगु. ऽगु. ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू., (गुरु-पादवेधाभाव),
ज्ये. कृ. १ शु.	ज्ये. १५	मई २८	अनु.	वृश्चिक	वृष	मीन	।। ।ऽबु. ।। ।। ।।	दि. ल. ४ (१०/५८ तक), (बुधपादवेध ६/०७ तक),
ज्ये. कृ. २ श.	ज्ये: १६	मई २९	मूल	धनु	वृष	मीन	ऽश.। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	ल. गोधू., १ (शु.दा.),
ज्ये. कृ. ३ चं.	ज्ये. १८	मई ३१	उ.षा.	धनु/मकर	वृष	मीन	।। ।। ऽशु.। ।ऽ ऽ।	ल. गोधू., १ (शु.दा.),
ज्ये. कृ. ४ मं.	ज्ये. १९	जून १	उ.षा.	मकर	वृष	मीन	।। ।। ऽशु.। ।ऽ ऽ।	दि. ल. ४ (चं.दा.),
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. २०	जून २	धनि.	मकर	वृष	मीन	ऽचं.बु.। ।। ।। ।। ।।	ल. १ (शु.दा.),
ज्ये. कृ. ९ र.	ज्ये. २४	जून ६	उ.भा.	मीन	वृष	मीन	।। ऽगु.। ऽश.। ।ऽ ।।	दि. ल. ४, गोधू.,
ज्ये. कृ. ११ मं.	ज्ये. २६	जून ८	अश्वि.	मेष	वृष	मीन	ऽरा.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. ७ (चं.श.दा.),
ज्ये. कृ. १२ बु.	ज्ये. २७	जून ९	अश्वि.	मेष	वृष	मीन	ऽरा.। ।। ।ऽची. ऽऽ ।।	दि. ल. ४ (९/११ तक),
ज्ये. शु. ६ गु.	आषा. ३	जून १७	मघा	सिंह	मिथुन	मीन	।। ऽमं.। ।ऽअ. ।। ।।	ल. गोधू., (मंगलयुति-परिहार), (कर्क लग्न में मृत्युबाण),
ज्ये. शु. ८ श.	आषा. ५	जून १९	हस्त	कन्या	मिथुन	मीन	।ऽ ।ऽगु. ऽगु. ऽनृ. ।। ।।	ल. २ (शु.दा.), (गुरु-पादवेधाभाव),
ज्ये. शु. ९ र.	आषा. ६	जून २०	हस्त	कन्या	मिथुन	मीन	।ऽ ।ऽगु. ऽगु. ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. ४(८/०४ तक), (गुरुपादवेध ८/०४ से १३/४९ तक),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
ज्ये. शु. ९ र	आषा. ६	जून २०	चित्रा	कन्या	मिथुन	मीन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू.,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	तुला	मिथुन	मीन	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ४ (८/५८ बाद),
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	स्वा.	तुला	मिथुन	मीन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. गोधू., १ (चं.दा.),
ज्ये. शु. १३ गु.	आषा. १०	जून २४	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	मीन	ऽसू. ऽ ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि. ल. ४, ७ (श.दा.),
आषा. कृ. १ र.	आषा. १३	जून २७	उ.षा.	धनु	मिथुन	मीन	।। ।। ।। ।। ।।	ल. १,
आषा. कृ. २ चं.	आषा. १४	जून २८	उ.षा.	मकर	मिथुन	मीन	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ४ (चं.दा.), ७ (१४/३६ तक)(श.दा.),
आषा. कृ. ३ मं.	आषा. १५	जून २९	श्रव.	मकर	मिथुन	मीन	।ऽ ।। ।ऽनृ. ।। ।।	ल. १, २ (२७/५२ तक)(शु.दा.), (वृष लग्न आवश्यके),
आषा. कृ. ४ बु.	आषा. १६	जून ३०	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	मीन	।। ।ऽशु. ऽशु. । ऽ। ।।	दि. ल. ४ (चं.दा.), गोधू., १, २(शु.दा.), (वृष लग्न आवश्यके), (शुक्रपादवेध ११/४८ से १८/३२ तक),
आषा. कृ. ७ श.	आषा. १९	जुला. ३	उ.भा.	मीन	मिथुन	मीन	।। ऽगु.। ऽश.ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., १, २ (शु.दा.), (वृष लग्न आवश्यके),
आषा. कृ. ७ र.	आषा. २०	जुला. ४	उ.भा.	मीन	मिथुन	मीन	।। ऽगु.। ऽश.। ।ऽ ऽ।	दि. ल. ४,
आषा. कृ. ११ गु.	आषा. २४	जुला. ८	रोहि.	वृष	मिथुन	मीन	ऽगु.ऽ ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. १,
आषा. कृ. १२ शु.	आषा. २५	जुला. ९	रोहि.	वृष	मिथुन	मीन	ऽगु.ऽ ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ४ (८/२४ तक),
आषा. शु. ३ बु.	आषा. ३०	जुला. १४	मघा	सिंह	मिथुन	मीन	।। ऽशु.। ।। ।। ।।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८(मं.दा.),(शुक्रयुति-परिहार),
आषा. शु. ६ श.	श्राव. २	जुला. १७	हस्त	कन्या	कर्क	मीन	।। ।ऽगु. ऽगु.। ।ऽ ।।	दि. ल. ७ (१३/५४ तक)(श.दा.), (गुरुपादवेध १३/५४ से १९/३३ तक),
आषा. शु. ८ र.	श्राव. ३	जुला. १८	स्वा.	तुला	कर्क	मीन	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. १ (२४/२३ बाद)(चं.दा.),
आषा. शु. ९ चं.	श्राव. ४	जुला. १९	स्वा.	तुला	कर्क	मीन	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. ८(मं.दा.), गोधू.,
आषा. शु. १० मं.	श्राव. ५	जुला. २०	अनु.	वृश्चिक	कर्क	मीन	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. २ (चं.दा.),
आषा. शु. ११ बु.	श्राव. ६	जुला. २१	अनु.	वृश्चिक	कर्क	मीन	।। ।। ।ऽनृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ७ (१३/४२ तक) (श.दा.),
आषा. शु. १३ शु.	श्राव. ८	जुला. २३	मूल	धनु	कर्क	मीन	ऽसू.श.। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८, गोधू.,
आषा. शु. १५ र.	श्राव. १०	जुला. २५	उ.षा.	मकर	कर्क	मीन	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. २,
आषा. शु. १५ चं.	श्राव. ११	जुला. २६	श्रव.	मकर	कर्क	मीन	।। ।ऽबु. ऽसू.। ।। ।।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८, (बुधपादवेध २२/३२ से २९/१४ तक),
श्राव. कृ. २ बु.	श्राव. १३	जुला. २८	धनि.	कुम्भ	कर्क	मीन	।। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ७ (१३/४० तक)(श.दा.), (९/४६ तक मृत्युबाण),
श्राव. कृ. ४ शु.	श्राव. १५	जुला. ३०	उ.भा.	मीन	कर्क	मीन	।। ऽगु.। ऽशु.श. ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. २,
श्राव. कृ. ५ श.	श्राव. १६	जुला. ३१	उ.भा.	मीन	कर्क	मीन	।। ऽगु.। ऽशु.श. ऽनृ. ।ऽ ।।	दि. ल. ८, गोधू.,
श्राव. कृ. ७ चं.	श्राव. १८	अग. २	अश्वि.	मेष	कर्क	मीन	ऽरा.। ।ऽबु. ।ऽचौ. ।ऽ ।।	दि. ल. ७ (चं.श.दा.), गोधू., (वृष लग्न में क्रान्तिसाम्य), (बुधपादवेध २४/४५ बाद).

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. २२	अग. ६	मृग.	मिथुन	कर्क	मीन	ऽबु.। ।ऽचं. ।ऽअ. ।ऽ ।।	ल. २, (चन्द्र-पादवेधाभाव), (१६/३१ तक मृत्युबाण),
श्राव. शु. २ बु.	श्राव. २७	अग. ११	मघा	सिंह	कर्क	मीन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि. ल. ८ (१४/०६ से १४/५४ तक),
श्राव. शु. ३ गु.	श्राव. २८	अग. १२	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	मीन	।। ऽश.। ।ऽरो. ।। ।।	दि. ल. ८ (१३/१५ बाद), गोधू., २, (शनियुति-परिहार),
श्राव. शु. ४ शु.	श्राव. २९	अग. १३	हस्त	कन्या	कर्क	मीन	।। ऽशु.ऽगु. ऽगु.ऽरो. ।ऽ ।।	ल. गोधू., २, (शुक्रयुति-परिहार), (गुरुपादवेध २१/३८ से २७/०६ तक)
श्राव. शु. ५ श.	श्राव. ३०	अग. १४	चित्रा	कन्या	कर्क	मीन	।ऽ ।। ।। ।। ऽ।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८, (गोधू. में क्रान्तिसाम्य), (२७/३५ बाद मृत्युबाण)
श्राव. शु. ८ मं.	भाद्र. २	अग. १७	अनु.	वृश्चिक	सिंह	मीन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. ७ (श.दा.), १०, गोधू., २(चं.दा.), ४ (२६/०६ तक)(शु.दा.),
श्राव. शु. १० गु.	भाद्र. ४	अग. १९	मूल	धनु	सिंह	मीन	ऽश.। ।। ।ऽअ. ।ऽ ऽ।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८, १०, गोधू. ,
श्राव. शु. १२ श.	भाद्र. ६	अग. २१	उ.षा.	धनु/मकर	सिंह	मीन	ऽसू. । ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. ७ (१२/२६ बाद)(श.दा.), ८, १०, गोधू., २, ४(चं.शु.दा.)
श्राव. शु. १३ र.	भाद्र. ७	अग. २२	उ.षा.	मकर	सिंह	मीन	ऽसू.। ।। ।। ।। ।।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८ (१३/५८ तक),
श्राव. शु. १४ चं.	भाद्र. ८	अग. २३	धनि.	मकर	सिंह	मीन	।। ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. गोधू.,
श्राव. शु. १५ मं.	भाद्र. ९	अग. २४	धनि.	कुम्भ	सिंह	मीन	।। ।। ।। ऽऽ ।।	दि. ल. ७ (श.दा.), ८, १०,
भाद्र. कृ. २ गु.	भाद्र. ११	अग. २६	उ.भा.	मीन	सिंह	मीन	।। ऽगु.। ऽश.। ।। ।।	ल. ४(२६/२८ बाद)(शु.दा.),
भाद्र. कृ. ३ शु.	भाद्र. १२	अग. २७	उ.भा.	मीन	सिंह	मीन	।। ऽगु.। ऽश.। ।। ।।	दि. ल. ८, (१४/५७ बाद मृत्युबाण),
भाद्र. कृ. ४ र.	भाद्र. १४	अग. २९	अश्वि.	मेष	सिंह	मीन	ऽरा.ऽ ।ऽबु.ऽमं.शु ऽअ.।ऽ।।	दि. ल. ७(चं.श.दा.), रा.ल.२, ४(शु.दा.), (बुधपादवेध १४/४९ से- २१/२२ तक), (रेखाल्पता),
भाद्र. कृ. ७ बु.	भाद्र. १७	सितं. १	रोहि.	वृष	सिंह	मीन	ऽगु.ऽ ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	दि. ल. ८(१३/१६ बाद)(चं.दा.), १०, गोधू., ४,
भाद्र. कृ. ८ गु.	भाद्र. १८	सितं. २	रोहि.	वृष	सिंह	मीन	ऽगु.ऽ ।। ।ऽचौ. ।ऽ ।।	दि. ल. ८(१२/३५ तक) (चं.दा.),
भाद्र. कृ. ८ गु.	भाद्र. १८	सितं. २	मृग.	वृष/मिथुन	सिंह	मीन	ऽबु.। ।। ।ऽचौ. ऽऽ ।।	दि. ल. ८(१३/४७ बाद) (चं.दा.), १०, गोधू. ४,
भाद्र. कृ. ९ शु.	भाद्र. १९	सितं. ३	मृग.	मिथुन	सिंह	मीन	ऽबु.। ।। ।। ऽऽ ऽ।	दि. ल. ७(श.दा.),
भाद्र. शु. १ गु.	भाद्र. २५	सितं. ९	उ.फा.	कन्या	सिंह	मीन	।। ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. ८(१२/०८ बाद), १० (मं.दा.),
भाद्र. शु. १ गु.	भाद्र. २५	सितं. ९	हस्त	कन्या	सिंह	मीन	।। ऽश.ऽगु. ऽगु.। ।। ।।	ल. ४, (शनियुति परिहार),
भाद्र. शु. २ शु.	भाद्र. २६	सितं. १०	हस्त	कन्या	सिंह	मीन	।। ऽश.ऽगु. ऽगु.। ।। ।।	दि. ल. ८(१२/५१ तक), (शनियुति-परिहार),(गुरुपादवेध १२/५१ से १८/१० तक),
भाद्र. शु. ४ श.	भाद्र. २७	सितं. ११	स्वा.	तुला	सिंह	मीन	।। ऽशु.ऽचं. ।। ।ऽ ।।	ल. ४ (२६/३४ बाद), (चन्द्रपादवेधाभाव),
भाद्र. शु. ६ चं.	भाद्र. २९	सितं. १३	अनु.	वृश्चिक	सिंह	मीन	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि. ल. १० (मं.दा.), गोधू., ४,
भाद्र. शु. १० शु.	आश्वि. २	सितं. १७	उ.षा.	धनु/मकर	कन्या	मीन	।। ।। ।। ।ऽ ऽ।	ल. ४ (चं.दा.),
भाद्र. शु. १२ र.	आश्वि. ४	सितं. १९	श्रव.	मकर	कन्या	मीन	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. ८, गोधू.,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१०-११ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
भाद्र. शु. १२ र.	आश्वि. ४	सितं. १९	धनि.	मकर	कन्या	मीन	ऽसू.। ॥ । ऽअ. ॥ ॥	ल. ४ (चं.दा.),
भाद्र. शु. १२ चं.	आश्वि. ५	सितं. २०	धनि.	मकर/कुम्भ	कन्या	मीन	ऽसू.। ॥ ॥ ॥ ॥	दि. ल. ८, गोधू.,
आश्वि. शु. २ श.	आश्वि.२४	अक्तू. ९	स्वा.	तुला	कन्या	मीन	।ऽ ऽशु.। ॥ ऽ। ॥	दि. ल. ८, १० (मं.दा.),
आश्वि. शु. ३ र.	आश्वि.२५	अक्तू. १०	अनु.	वृश्चिक	कन्या	मीन	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	ल. ४,
आश्वि. शु. ४ चं.	आश्वि.२६	अक्तू. ११	अनु.	वृश्चिक	कन्या	मीन	॥ ॥ ।ऽचौ. ॥ ॥	दि. ल. १० (मं.दा.), गोधू.,
आश्वि. शु. ८ शु.	आश्वि.३०	अक्तू. १५	उ.षा.	मकर	कन्या	मीन	॥ ॥ ॥ ।ऽ ऽ।	दि. ल. ८, (१६/५२ बाद मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. ६ शु.	कार्त्ति.२७	नवं. १२	श्रव.	मकर	तुला	कुम्भ	।ऽ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. गोधू.,
कार्त्ति. शु. ८ र.	कार्त्ति.२९	नवं. १४	धनि.	कुम्भ	तुला	कुम्भ	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि. ल. १०,
कार्त्ति. शु. १२ गु.	मार्ग. ३	नवं. १८	रेव.	मीन	वृश्चिक	कुम्भ	ऽसू.रा.। ॥ ऽश.ऽअ. ॥ ॥	ल. गोधू.,(१६/५५ तक मृत्युबाण),
कार्त्ति. शु. १२ गु.	मार्ग. ३	नवं. १८	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ॥ ऽशु.ऽअ. ॥ ॥	ल. ७ (२८/४५ से २९/३१ तक) (चं.श.दा.),
मार्ग. कृ. १ चं.	मार्ग. ७	नवं. २२	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ॥ ऽसू.ऽचौ. ।ऽ ॥	दि. ल. १०, ५(गु.शु.दा.),
मार्ग. कृ. २ मं.	मार्ग. ८	नवं. २३	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ॥ ऽमं.बु.ऽचौ. ॥ ॥	दि. ल. १०, ५(गु.शु.दा.), ७ (श.दा.),
मार्ग. कृ. ६ श.	मार्ग. १२	नवं. २७	मघा	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ	ऽशु.। ॥ ।ऽअ. ।ऽ ॥	ल. ७ (२८/५१ बाद) (श.दा.),
मार्ग. कृ. ८ चं.	मार्ग. १४	नवं. २९	उ.फा.	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ॥ ऽगु.ऽनृ. ।ऽ ॥	ल. ७ (श.दा.),
मार्ग. कृ. ९ मं.	मार्ग. १५	नवं. ३०	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ॥ ऽगु.ऽनृ. ।ऽ ऽ।	दि. ल. १०, गोधू.,
मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	हस्त	कन्या	वृश्चिक	कुम्भ	ऽबु.। ऽश.। ॥ ।ऽ ॥	दि. ल. १०, गोधू.,(शनियुति-परिहार),
मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	चित्रा	कन्या	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ।ऽगु. ।ऽचौ. ।ऽ ॥	ल. ५ (२२/५४ बाद) (गु.शु.दा.), ७ (२८/३१ तक) (श.दा.), (गुरुपादवेध २८/३१ बाद),
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	चित्रा	तुला	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ।ऽगु. ।ऽचौ. ।ऽ ॥	दि. ल. १०, (गुरुपादवेध १०/०८ तक),
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	स्वा.	तुला	वृश्चिक	कुम्भ	॥ ऽशु.। ॥ ॥ ॥	ल. ५ (गु.शु.दा.),
मार्ग. शु. ३ बु.	मार्ग. २३	दिसं. ८	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	मीन	ऽमं.। ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	ल. ७ (श.दा.),
मार्ग. शु. ४ गु.	मार्ग. २४	दिसं. ९	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मीन	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. ७ (श.दा.),
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. २५	दिसं. १०	श्रव.	मकर	वृश्चिक	मीन	॥ ॥ ।ऽचौ. ।ऽ ॥	ल. गोधू., ४ (२१/४४ तक) (चं.दा.),
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. २५	दिसं. १०	धनि.	मकर	वृश्चिक	मीन	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	ल. ७ (श.दा.),
मार्ग. शु. ६ श.	मार्ग. २६	दिसं. ११	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	मीन	॥ ॥ ॥ ऽ। ॥	ल. गोधू.,
पौष शु. ११ र.	माघ ३	जन. १६	रोहि.	वृष	मकर	मीन	ऽगु.। ॥ ऽशु ऽअ. ॥ ऽ।	ल. गोधू., (१७/५२ तक मृत्युबाण).

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न, ग्रह-दान-पूजा आदि विवरण (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
माघ कृ. ४ र.	माघ १०	जन. २३	उ.फा.	कन्या	मकर	मीन	।। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. ७ (श.दा.), ८,
माघ कृ. ६ मं.	माघ १२	जन. २५	चित्रा	तुला	मकर	मीन	ऽचं.बु.शु.। ।। ।ऽअ. ।। ।।	ल. ८,
माघ शु. १ शु.	माघ २२	फर. ४	धनि.	कुम्भ	मकर	मीन	।ऽ ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि. ल. १ (मं.दा.),
माघ शु. ४ चं.	माघ २५	फर. ७	रेव.	मीन	मकर	मीन	ऽरा. ऽ। ।ऽश. ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ८ (२५/ ५४ बाद),
माघ शु. ५ मं.	माघ २६	फर. ८	रेव.	मीन	मकर	मीन	ऽरा.ऽ ।। ऽश.। ।ऽ ।।	दि. ल. १ (मं.दा.), गोधू., ८ (२६/३६ तक),
माघ शु. ६ बु.	माघ २७	फर. ९	अश्वि.	मेष	मकर	मीन	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	ल. गोधू., ७ (चं.शु.श.दा.),
माघ शु. १५ शु.	फाल्गु. ६	फर. १८	मघा	सिंह	कुम्भ	मीन	।। ।। ऽसू.मं.बु.। ऽऽ ।।	दि. ल. १ (१०/३५ बाद), रा.ल. ७ (शु.श.दा.), ८ (२५/३४ तक
फाल्गु. कृ. १ श.	फाल्गु. ७	फर. १९	उ.फा.	सिंह/कन्या	कुम्भ	मीन	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. ७(२३/४७ बाद) (शु.श.दा.), ८, १० (२९/०२ बाद),
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. ९	फर. २१	चित्रा	कन्या/तुला	कुम्भ	मीन	।ऽ ।। ।ऽरो. ।ऽ ऽ।	ल. गोधू. (१८/१७ बाद),७ (शु.श.दा.), ८, १०,
फाल्गु. कृ. ५ मं.	फाल्गु.१०	फर. २२	चित्रा	तुला	कुम्भ	मीन	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. १ (चं.दा.),
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु.१२	फर. २४	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	मीन	ऽशु.। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. गोधू., ७ (शु.श.दा.), १०,
फाल्गु. कृ. ८ शु.	फाल्गु.१३	फर. २५	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	मीन	ऽशु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. १,
फाल्गु. कृ. १२ मं.	फाल्गु.१७	मार्च १	श्रव.	मकर	कुम्भ	मीन	।। ।ऽचं. ।। ऽ। ।।	ल. ७ (श.दा.), ८ (२४/५२ तक) (शु.दा.), (चन्द्रपादवेधाभाव),
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु.२३	मार्च ७	रेव.	मीन	कुम्भ	मीन	ऽरा.। ।। ऽश.ऽनृ. ।। ।।	दि. ल. १, २ (मं.दा.), ८ (शु.दा.), १०,
फाल्गु. शु. ३ मं.	फाल्गु.२४	मार्च ८	रेव.	मीन	कुम्भ	मीन	ऽरा.। ।। ऽश.। ।। ऽ।	दि. ल. १, २ (१०/०६ तक) (मं.दा.),
फाल्गु. शु. ३ मं.	फाल्गु.२४	मार्च ८	अश्वि.	मेष	कुम्भ	मीन	।। ।। ।। ।। ऽ।	ल. गोधू., ७ (२२/५५ तक) (चं.श.दा.),
फाल्गु. शु. ६ शु.	फाल्गु.२७	मार्च ११	रोहि.	वृष	कुम्भ	मीन	ऽगु.। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	ल. ८ (चं.शु.दा.), १०,
फाल्गु. शु. ७ श.	फाल्गु.२८	मार्च १२	रोहि.	वृष	कुम्भ	मीन	ऽगु.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि. ल. १,

आगामी संवत् २०६८ वि. में गुरु-शुक्रास्त- आगामी सं. २०६८ वि. में शुक्र श्राव. कृ. ८ श. (२३ जुलाई, २०११ ई.) को पूर्व में अस्त होकर आश्वि. शु. ६ (२ अक्तू., २०११ ई.) को पश्चिम में उदित होगा । गुरु वर्षारम्भ में अस्त है और यह वैशा. कृ. ८ चं. (२५ अप्रैल, २०११ ई.) को उदित हो जाएगा ।

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

आज ही अपनी प्रति बुकसेलर से हासिल करें ।

सं. २०६७ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०६७ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०६७ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 238 पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और मिथुनराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०६७ वि. में जुलाई (२०१० ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जुलाई, २०१० ई. की ३, ४, ८, ९, १४ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि मिथुन के आगे जुलाई की ३, ४, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २८, ३०, ३१ तारीखें हैं । इसलिए यह समझना चाहिए कि- जुलाई, २०१० ई. में मेष राशि वाले लड़के और मिथुन राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल ३, ४, ८, ९, १४ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-मिथुन) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हो तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है ।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६७ वि.) (१६ मार्च, सन् २०१० से ३ अप्रैल, सन् २०११ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म- राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मेष	मई १५, २२, २३, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १४; अग. १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १५; नवं. १२, १४; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, ९, १८, १९, २१, २२; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	ज्येष्ठ , कार्तिक ,	मई १५, २२, २३, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२ १३, १४, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, ९, १८, १९, २१, २२; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	- - -
वृष	मई १५, २३, २८, ३१(२२/४५ बाद); जून १, २, ६, ८, ९, १९, २०, २१, २४, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, १२ (१८/३५ बाद), १३, १४; सितं. १७(२५/०५ बाद), १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, ९, १९(२९/०२ बाद), २१, २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	मई १५, २३, २८, ३१(२२/४५ बाद); जून १, २, ६, ८, ९, १९, २०, २१, २४, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, १२ (१८/३५ बाद), १३, १४, १७, २१ (१९/०८ बाद), २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १३, १७(२५/०५ बाद), १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, ९, १९(२९/०२ बाद), २१, २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६७ वि.) (१६ मार्च, सन् २०१० से ३ अप्रैल, सन् २०११ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मिथुन	जून १७, २१, २४, २७, ३०(१८/३२ बाद); जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२(१८/३५ तक), १७, १९, २१(१९/०८ तक), २४, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ११, १३; नवं. १४, १८, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ११; फर. १८, १९ (२९/०२ तक), २१(२९/०८ बाद), २२, २४, २५; मार्च ७, ८, ११, १२;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	मई १५, २२, २८, २९, ३१(२२/४५ तक); जून ६, ८, ९, १७, २१, २४, २७, ३०(१८/३२ बाद); जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२(१८/३५ तक), १७, १९, २१(१९/०८ तक), २४, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ११, १३, १७(२५/०५ तक), २०(१३/३६ बाद); अक्तू. ९, १०, ११; नवं. १४, १८, २२, २३, २७, २९; दिसं. २, ११; जन. १६, २५; फर. ४, ७, ८, ९, १८, १९(२९/०२ तक), २१(२९/०८ बाद), २२, २४, २५; मार्च ७, ८, ११, १२;	---
कर्क	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९; जुला. १७, २०, २१, २३, २५, २६, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, १३, १७, १९, २०(१३/३६ तक) ; अक्तू. १०, ११, १५; नवं. १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, ८, ९, १०; जन. १६, २३; फर. ७, ८, ९;	माघ	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९, १७, १९, २०, २४, २७, २८, २९, ३०(१८/३२ तक); जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १७, २०, २१, २३, २५, २६, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, १३, १७, १९, २०(१३/३६ तक); अक्तू. १०, ११, १५; नवं. १२, १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, ८, ९, १०; जन. १६, २३; फर. ७, ८, ९, १८, १९, २१(२९/०८ तक), २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	कुम्भ
सिंह	मई १५, २२, २३, २९, ३१; जून १, २, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २७, २८, २९, ३०; जुला. ८, ९, १४; अग. १९, २१, २२, २३, २४, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १५; नतं. १२, १४; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ८, ९, १८, १९, २१, २२; मार्च १, ८, ११, १२;	आश्विन, फाल्गुन,	मई १५, २२, २३, २९, ३१; जून १, २, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २७, २८, २९, ३०; जुला. ८, ९, १४, १७, १८, १९, २३, २५, २६, २८; अग. २, ६, ११, १२, १३, १४, १९, २१, २२, २३, २४, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ८, ९, १८, १९, २१, २२; मार्च १, ८, ११, १२;	---
कन्या	मई १५, २२, २३, २८, ३१(२२/४५ बाद); जून १, २, ६, १७, १९, २०, २१, २४, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. ६, ११, १२, १३, १४; सितं. १७(२५/०५ बाद), १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्त्तिक, माघ ,	मई १५, २२, २३, २८, ३१(२२/४५ बाद); जून १, २, ६, १७, १९, २०, २१, २४, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. ६, ११, १२, १३, १४, १७, २१(१९/०८ बाद), २२, २३, २४, २६, २७; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १३, १७(२५/०५ बाद), १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	---
तुला	जून १७, १९, २०, २१, २४, २७, ३०(१८/३२ बाद); जुला. ३, ४, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१(१९/०८ तक), २४, २६, २७, २९; सितं. २(२५/४५ बाद), ३, ९, १०, ११, १३; नवं. १४, १८, २३(२०/०० बाद), २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ११; फर. १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च ७, ८;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	मई २२, २३, २८, २९, ३१(२२/४५ तक); जून ६, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २४, २७, ३०(१८/३२ बाद); जुला. ३, ४, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१(१९/०८ तक), २४, २६, २७, २९; सितं. २(२५/४५ बाद), ३, ९, १०, ११, १३, १७(२५/०५ तक), २० (१३/३६ बाद); अक्तू. ९, १०, ११; नवं. १४, १८, २३(२०/०० बाद), २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ११; जन.२३, २५; फर. ४, ७, ८, ९, १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च ७, ८;	---

नाम/ जन्म- राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०६७ वि.) (१६ मार्च, सन् २०१० से ३ अप्रैल, सन् २०११ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सीर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
वृश्चिक	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९; जुला. १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, ३०, ३१; अग. २, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९; सितं. १, २(२५/४५ तक), ९, १०, ११, १३, १७, १९, २०(१३/३६ तक); अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १८, २२, २३(२०/०० तक), २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०; जन. १६, २३, २५; फर. ७, ८, ९;	ज्येष्ठ,	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २४, २७, २८, २९, ३०(१८/३२ तक); जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, ३०, ३१; अग. २, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २६, २७, २९; सितं. १, २(२५/४५ तक), ९, १०, ११, १३, १७, १९, २०(१३/३६ तक); अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १८, २२, २३(२०/०० तक), २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०; जन. १६, २३, २५; फर. ७, ८, ९, १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	कुम्भ
धनु	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ८, ९, १४; अग. १७, १९, २१, २२, २३, २४, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १३, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ८, ९, १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च १, ८, ११, १२;	आषाढ़ , माघ,	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ८, ९, १७, १९, २०, २१, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ८, ९, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८; अग. २, ६, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २४, २९; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १३, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, २७, २९, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ८, ९, १८, १९, २१, २२, २४, २५; मार्च १, ८, ११, १२;	- - -
मकर	मई १५, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, १९, २०, २१, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. ६, १२(१८/३५ बाद), १३, १४; सितं. १७, १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, १९(२९/०२ बाद); २१, २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	मई १५, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, १९, २०, २१, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. ६, १२(१८/३५ बाद), १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७; सितं. १, २, ३, ९, १०, ११, १३, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३, ३०; दिसं. १, २, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३, २५; फर. ४, ७, ८, १९(२९/०२ बाद), २१ , २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	- - -
कुम्भ	जून १७, २१, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २, ६, ११, १२(१८/३५ तक), १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. २(२५/४५ बाद), ३, ११, १३; नवं. १२, १४, १८, २३(२०/०० बाद), २७, २९; दिसं. २, ८, ९, १० ११; फर. १८, १९(२९/०२ तक), २१(२९/०८ बाद), २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	मई २२, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९, १७, २१, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, १४, १८, १९, २०, २१, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २,६, ११, १२(१८/३५ तक), १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. २(२५/४५ बाद), ३, ११, १३, १७, १९, २०; अक्तू. ९, १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २३(२०/०० बाद), २७, २९; दिसं. २, ८, ९, १०, ११; जन. २५; फर. ४, ७, ८, ९, १८, १९(२९/०२ तक), २१(२९/०८ बाद), २२, २४, २५; मार्च १, ७, ८;	- - -
मीन	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९; जुला. १७, २०, २१, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. १, २(२५/४५ तक), ९, १०, १३, १७, १९, २०; अक्तू. १०, ११, १५; नवं. १८, २२, २३(२०/०० तक), २७, २९, ३०; दिसं. १, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३; फर. ४, ७, ८, ९	आश्विन,	मई १५, २२, २३, २८, २९, ३१; जून १, २, ६, ८, ९, १७, १९, २०, २४, २७, २८, २९, ३०; जुला. ३, ४, ८, ९, १४, १७, २०, २१, २३, २५, २६, २८, ३०, ३१; अग. २, ११, १२, १३, १४, १७, १९, २१, २२, २३, २४, २६, २७, २९; सितं. १, २(२५/४५ तक), ९, १०, १३, १७, १९, २०; अक्तू. १०, ११, १५; नवं. १२, १४, १८, २२, २३(२०/०० तक), २७, २९, ३०; दिसं. १, ८, ९, १०, ११; जन. १६, २३; फर. ४, ७, ८, ९, १८, १९, २१(२९/०८ तक), २४, २५; मार्च १, ७, ८, ११, १२;	कुम्भ

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि मे रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त–सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन या अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहा साथ–साथ उन दोषो का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी षष्ठाष्टमस्थ शुक्र, चन्द्र, भौम और लग्नेश आदि के कारण शुद्ध लग्न नहीं बन सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे–* यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०६७ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं– प्रियव्रत शर्मा ।

तिथि-वार	तारीख २०१० ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ में मीनस्थ सूर्य है। इसी के मध्य चैत्र शु. ४ शुक्रवार (१६ मार्च, २०१० ई.) तक गुरु अस्त एवम् बाद में १४ अप्रैल, २०१० ई. तक वैशाख अधिकमास।			
द्वि.वैशा.शु. ३ र.	मई १६	मृग.	मृत्युबाण,
द्वि.वैशा.शु. ७ गु.	मई २०	मघा	भद्रा, व्याघात नवनाड़ी,
द्वि.वैशा.शु. ८ शु.	मई २१	मघा	लग्नाभाव,
द्वि.वैशा.शु. १० र.	मई २३	उ.फा.	लग्नाभाव,
द्वि.वैशा.शु. ११ चं.	मई २४	हस्त	गुरुपादवेध,
द्वि.वैशा.शु. ११ चं.	मई २४	चित्रा	लग्नाभाव,
द्वि.वैशा.शु. १२ मं.	मई २५	चित्रा	व्यतिपात,
द्वि.वैशा.शु. १२ मं.	मई २५	स्वा.	मृत्युबाण,
द्वि.वैशा.शु. १३ बु.	मई २६	स्वा.	मृत्युबाण,
द्वि.वैशा.शु. १५ गु.	मई २७	अनु.	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. ३ र.	मई ३०	मूल	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. ४ मं.	जून १	श्रव.	भौमवेध,
ज्ये. कृ. ५ बु.	जून २	श्रव.	भौमवेध,
ज्ये. कृ. ६ गु.	जून ३	धनि.	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ७	उ.भा.	लग्नाभाव,
ज्ये. कृ. १० चं.	जून ७	रेव.	शनिवेध,
ज्ये. कृ. ११ मं.	जून ८	रेव.	शनिवेध,
ज्ये. शु. ४ बु.	जून १६	मघा	मृत्युबाण,
ज्ये. शु. ७ शु.	जून १८	उ.फा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. ८ श.	जून १६	उ.फा.	व्यतिपात,
ज्ये. शु. ११ मं.	जून २२	स्वा.	लग्नाभाव,
ज्ये. शु. १२ बु.	जून २३	अनु.	क्रान्तिसाम्य
ज्ये. शु. १४ शु.	जून २५	मूल	मृत्युबाण,
ज्ये. शु. १५ श.	जून २६	मूल	मृत्युबाण,
आषा. कृ. २ चं.	जून २८	श्रव.	वैधृति,
आषा. कृ. ३ मं.	जून २६	धनि.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ५ गु.	जुला. १	धनि.	लग्नाभाव,
आषा. कृ. ७ र.	जुला. ४	रेव.	शनिवेध,
आषा. कृ. ८ चं.	जुला. ५	रेव.	शनिवेध,
आषा. कृ. ८ चं.	जुला. ५	अश्वि.	भौमवेध,
आषा. कृ. ६ मं.	जुला. ६	अश्वि.	भौमवेध,
आषा. कृ. १२ शु.	जुला. ६	मृग.	क्षीणचन्द्र,
आषा. शु. ५ शु.	जुला. १६	उ.फा.	संक्रान्ति, परिघार्ध,
आषा. शु. ५ शु.	जुला. १६	हस्त	संक्रान्ति, परिघार्ध,
आषा. शु. ६ श.	जुला. १७	चित्रा	मृत्युबाण,
आषा. शु. ८ र.	जुला. १८	चित्रा	मृत्युबाण,
आषा. शु. १२ गु.	जुला. २२	मूल	लग्नाभाव,
आषा. शु. १५ चं.	जुला. २६	उ.षा.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. १ मं.	जुला. २७	श्रव.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. १ मं.	जुला. २७	धनि.	मृत्युबाण,
श्राव. कृ. ५ श.	जुला. ३१	रेव.	भौम-शनिवेध,
श्राव. कृ. ६ र.	अग. १	रेव.	भौम-शनिवेध,
श्राव. कृ. ६ र.	अग. १	अश्वि.	भद्रा,
श्राव. कृ. ६ बु.	अग. ४	रोहि.	लग्नाभाव,
श्राव. कृ. १० गु.	अग. ५	रोहि.	लग्नाभाव,१८/२६ बाद मृत्युबाण,
श्राव. कृ. १० गु.	अग. ५	मृग.	मृत्युबाण,
श्राव. शु. ४ शु.	अग. १३	उ.फा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ५ श.	अग. १४	हस्त	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ६ र.	अग. १५	स्वा.	मासान्त,
श्राव. शु. ६ बु.	अग. १८	अनु.	वैधृति, नक्षत्रान्त,
श्राव. शु. ११ शु.	अग. २०	मूल	भद्रा,
श्राव. शु. १३ र.	अग. २२	श्रव.	सूर्यवेध,
श्राव. शु. १४ चं.	अग. २३	श्रव.	सूर्यवेध,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

तिथि-वार	तारीख २०१० ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. कृ. ३ शु.	अग. २७	रेव.	शनिवेध, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ४ श.	अग. २८	रेव.	शनिवेध, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ४ र.	अग. २६	रेव.	शनिवेध, भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ५ चं.	अग. ३०	अश्वि.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. २ शु.	सितं. १०	चित्रा	अपरिहार्य भौमयुति,
भाद्र. शु. ४ श.	सितं. ११	चित्रा	अपरिहार्य भौमयुति,
भाद्र. शु. ५ र.	सितं. १२	स्वा.	चन्द्रपादवेध,
भाद्र. शु. ७ मं.	सितं. १४	अनु.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ६ गु.	सितं. १६	मूल	संक्रान्ति,
भाद्र. शु. ११ श.	सितं. १८	उ.षा.	लग्नाभाव, मृत्युबाण,
भाद्र. शु. ११ श.	सितं. १८	श्रव.	मृत्युबाण,
आश्वि. शु. १ शु.	अक्तू. ८	चित्रा	८/२० तक गुरुपादवेध, लग्नाभाव,
आश्वि. शु. १ शु.	अक्तू. ८	स्वा.	वैधृति-विष्कंभदोष,
आश्वि. शु. ५ मं.	अक्तू. १२	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
आश्वि. शु. ६ बु.	अक्तू. १३	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
आश्वि. शु. ७ गु.	अक्तू. १४	उ.षा.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. ८ शु.	अक्तू. १५	श्रव.	मृत्युबाण,
आश्वि. शु. ६ श.	अक्तू. १६	श्रव.	मृत्युबाण, मासान्त,
आश्वि. शु. १० र.	अक्तू. १७	धनि.	संक्रान्ति,

शुक्रास्त- आश्वि. शु. १२ मं. से कार्ति. कृ. १२ बु.(१६ अक्तू. से ३ नवं. २०१० ई.) तक।

कार्ति. शु. १ र.	नद. ७	अनु.	अपरिहार्य भौमयुति,
कार्ति. शु. ३ चं.	नवं. ८	अनु.	अपरिहार्य भौमयुति,

तिथि-वार	तारीख २०१० ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्ति. शु. ४ मं.	नवं. ६	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
कार्ति. शु. ५ बु.	नवं. १०	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
कार्ति. शु. ६ गु.	नवं. ११	उ.षा.	भुजंगपात,
कार्ति. शु. ६ शु.	नवं. १२	उ.षा.	लग्नाभाव, भुजंगपात,
कार्ति. शु. ७ श.	नवं. १३	श्रव.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. ७ श.	नवं. १३	धनि.	लग्नाभाव,
कार्ति. शु. १० मं.	नवं. १६	उ.भा.	संक्रान्ति,
कार्ति. शु. ११ बु.	नवं. १७	उ.भा.	शनिवेध,
कार्ति. शु. ११ बु.	नवं. १७	रेव.	मृत्युबाण,
कार्ति. शु. १३ शु.	नवं. १६	अश्वि.	व्यतिपात,
मार्ग. कृ. २ मं.	नवं. २३	रोहि.	नक्षत्रान्त,
मार्ग. कृ. ३ बु.	नवं. २४	मृग.	नक्षत्रान्त,
मार्ग. कृ. ७ र.	नवं. २८	मघा	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ. ६ मं.	नवं. ३०	हस्त	भद्रा,
मार्ग. शु. १ चं.	दिसं. ६	मूल	अपरिहार्य राहु-भौमयुति, भुजंगपात,
मार्ग. शु. २ मं.	दिसं. ७	मूल	अपरिहार्य राहु-भौमयुति, भुजंगपात,
मार्ग. शु. ४ गु.	दिसं. ६	उ.षा.	लग्नाभाव,
मार्ग. शु. ८ मं.	दिसं. १४	उ.भा.	शनिवेध,
मार्ग. शु. ६ बु.	दिसं. १५	उ.भा.	व्यतिपात, मासान्त,
मार्ग. शु. ६ बु.	दिसं. १५	रेव.	मासान्त,

धनुस्थसूर्य- मार्ग. शु. १० गु. से पौष शु. ६ गु. (१६ दिसं., '१० ई. से १३ जन., २०११ ई.) तक,

तिथि-वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
पौष शु. १० श.	जन. १५	रोहि.	भद्रा, मृत्युबाण,
पौष शु. ११ र.	जन. १६	मृग.	सूर्य-भौमवेध,
पौष शु. १२ चं.	जन. १७	मृग.	सूर्य-भौमवेध,
माघ कृ. २ शु.	जन. २१	मघा	भौमवेध,
माघ कृ. ३ श.	जन. २२	मघा	भौमवेध,
माघ कृ. ५ चं.	जन. २४	उ.फा.	लग्नाभाव,
माघ कृ. ५ चं.	जन. २४	हस्त	लग्नाभाव, १४/३५ बाद मृत्युबाण,
माघ कृ. ६ मं.	जन. २५	हस्त	गुरुपादवेध, मृत्युबाण,
माघ कृ. ८ बु.	जन. २६	चित्रा	लग्नाभाव,
माघ कृ. ८ बु.	जन. २६	स्वा.	भुजंगपात,
माघ कृ. ६ गु.	जन. २७	स्वा.	नक्षत्रान्त,
माघ कृ. १० शु.	जन. २८	अनु.	लग्नाभाव,
माघ कृ. ११ श.	जन. २६	अनु.	नक्षत्रान्त,
माघ कृ. १२ र.	जन. ३०	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,
माघ शु. ३ र.	फर. ६	उ.भा.	शनिवेध,
माघ शु. ४ चं.	फर. ७	उ.भा.	शनिवेध,
माघ शु. ५ मं.	फर. ८	अश्वि.	लग्नाभाव,
माघ शु. ७ गु.	फर. १०	अश्वि.	नक्षत्रान्त,
माघ शु. ६ श.	फर. १२	रोहि.	मासान्त, वैधृति,
माघ शु. १० र.	फर. १३	रोहि.	वैधृति, संक्रान्ति,
माघ शु. १० र.	फर. १३	मृग.	वैधृति, संक्रान्ति,
माघ शु. ११ चं.	फर. १४	मृग.	लग्नाभाव, ७/२६ बाद मृत्युबाण,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०६७ वि.)

तिथि-वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष	तिथि-वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष	तिथि-वार	तारीख २०११ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु. १४ गु.	फर. १७	मघ.	लग्नाभाव,	फाल्गु. कृ. ५ मं.	फर. २२	स्वा.	सूर्यवेध,	फाल्गु. शु. १ श.	मार्च ५	उ.भा.	शनिवेध,
फाल्गु. कृ. ३ र.	फर. २०	उ.फा.	लग्नाभाव,	फाल्गु. कृ. ६ बु.	फर. २३	स्वा.	मृत्युबाण, सूर्यवेध,	फाल्गु. शु. २ र.	मार्च ६	उ.भा.	शनिवेध,
फाल्गु. कृ. ३ र.	फर. २०	हस्त	भुजंगपात, गुरुपादवेध	फाल्गु. कृ. ९ श.	फर. २६	मूल	अपरिहार्य राहुयुति,	फाल्गु. शु. २ चं.	मार्च ७	उ.भा.	शनिवेध,
			२६/१४ बाद,	फाल्गु. कृ. १० र.	फर. २७	मूल	भद्रा, अपरिहार्य राहुयुति,	फाल्गु. शु. ४ बु.	मार्च ९	अश्वि.	लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फर. २१	हस्त	गुरुपादवेध ७/३५ तक,	फाल्गु. कृ. ११ चं.	फर. २८	उ.षा.	केतुवेध,	फाल्गु. शु. ७ श.	मार्च १२	मृग.	भद्रा, मृत्युबाण,
			लग्नाभाव, भुजंगपात,	फाल्गु. कृ. १२ मं.	मार्च १	उ.षा.	केतुवेध,	होलाष्टक, मीनस्थ सूर्य एवम् गुरु अस्त।			

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- ***वेध परिहार-*** सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को, द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। ***युतिदोष का परिहार-*** नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। ***कर्त्तरीदोष का परिहार-*** मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भांव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार-*** मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति मे दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-*** नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार-*** मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो, तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-*** शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो, तो उसका भी कोई परिहार नहीं है। **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** में दिए जाने वाले मुहूर्त्तों में उपरोक्त सभी दोषों के परिहारों का प्रयोग किया जाता है।

1951 A.D. से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं। कैसे ? देखिए, विज्ञापन " शताब्दी विश्वकुण्डलीदर्पण " इसी पंचांग के अन्तिम पृष्ठों पर।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०६७ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्धमुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक–एक या दो–दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य–विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है।

मुण्डन मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
द्वि.वैशा.शु. १३ बु.	ज्ये. १३	मई २६	स्वा.	६/२७ तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. २०	जून २	श्रव.	६/४२ तक,
ज्ये. कृ. ७ शु.	ज्ये. २२	जून ४	शत.	६/३५ बाद,
माघ कृ. १ गु.	माघ ७	जन. २०	पुष्य	
माघ शु. १ शु.	माघ २२	फर. ४	धनि.	६/५५ बाद,
माघ शु. ११ चं.	फाल्गु. २	फर १४	मृग.	११/१६ तक,
माघ शु. १३ बु.	फाल्गु. ४	फर. १६	पुष्य	१०/२० बाद,
फाल्गु. कृ १३ बु.	फाल्गु.१८	मार्च २	श्रव.	१३/०४ बाद,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु.२३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,

मुण्डन में विशेषः- किसी देवस्थल तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हि.प्र. आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

द्वि.वैशा.शु. ३ र.	ज्ये. ३	मई १६	मृग.	
द्वि.वैशा.शु.१० र.	ज्ये. १०	मई २३	उ.फा.	१०/०० तक (१०/०० बाद रोगबाण),
ज्ये. कृ. १ शु.	ज्ये. १५	मई २८	अनु.	१०/५८ तक,

उपनयन मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	८/५८ बाद,
पौष शु. ११ र.	माघ ३	जन. १६	रोहि.	६/०१ बाद,
माघ कृ. १ गु.	माघ ७	जन. २०	पुष्य	
माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	उ.फा.	१०/५४ तक,
फाल्गु. कृ. ३ र.	फाल्गु. ८	फर. २०	उ.फा.	
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु. २३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

द्वि.वैशा.शु. ६ बु.	ज्ये. ६	मई १६	पुष्य	
द्वि.वैशा.शु. ११ चं.	ज्ये. ११	मई २४	चित्रा	१३/५६ से १५/२६ तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. २०	जून २	श्रव.	
ज्ये. कृ. १२ बु.	ज्ये. २७	जून ६	अश्वि.	६/११ तक,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	८/५८ से १७/४३ तक,
माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	हस्त	१२/०६ बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ १५	जन. २८	अनु.	७/३६ से १६/२१ तक,
माघ शु. ६ बु.	माघ २७	फर. ६	अश्वि.	८/१५ तक, (८/१५ बाद क्रान्तिसाम्य),

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

द्वि.वैशा.शु. ३ र.	ज्ये. ३	मई १६	मृग.	

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
द्वि.वैशा.शु. ६ बु.	ज्ये. ६	मई १६	पुष्य	
द्वि.वैशा. शु.१० र.	ज्ये. १०	मई २३	उ.फा.	१३/५७ तक,
ज्ये. कृ. ३ र.	ज्ये. १७	मई ३०	मूल	१३/०३ तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. २०	जून २	श्रव.	
ज्ये. कृ. ६ गु.	ज्ये. २१	जून ३	धनि.	७/२४ तक,
ज्ये. कृ. १२ बु.	ज्ये. २७	जून ६	अश्वि.	६/३७ तक,
ज्ये. शु. ४ बु.	आषा. २	जून १६	आश्ले.	६/३८ बाद,
पौष शु. ११ र.	माघ ३	जन. १६	रोहि.	६/०१ बाद,
माघ कृ. २ शु.	माघ ८	जन. २१	आश्ले.	
माघ कृ. १० शु.	माघ १५	जन. २८	अनु.	७/३६ से १६/२१ तक,
माघ शु. १ शु.	माघ २२	फर. ४	धनि.	६/५५ बाद,
माघ शु. ३ र.	माघ २४	फर. ६	पू.भा.	१४/३२ तक,
माघ शु. ६ बु.	माघ २७	फर. ६	अश्वि.	८/१५ तक, (८/१५ बाद क्रान्तिसाम्य),

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त (सन् २०१०-११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति.शु. १२ गु.	मार्ग. ३	नवं. १८	रेव.	
मार्ग. कृ. १ चं.	मार्ग. ७	नवं. २२	रोहि.	७/४० बाद,
मार्ग. कृ. ५ शु.	मार्ग. ११	नवं. २६	पुष्य	१८/४५ तक,
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	चित्रा	१०/०७ से २०/१० तक, (१०/०७ तक गुरु पादवेध),
मार्ग. कृ. १३ शु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	स्वा.	
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. २५	दिसं. १०	श्रव.	८/३७ तक, १२/१३ बाद,
माघ शु. १३ बु.	फाल्गु. ४	फर. १६	पुष्य	१०/२० से २०/३६ तक,
फाल्गु. कृ. १३ बु.	फाल्गु.१८	मार्च २	श्रव.	१३/०४ से १८/४६ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु.२३	मार्च ७	उ.भा.	७/०६ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु.२३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,

द्विरागमन में विशेष- विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो, तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त (सन् २०१०-११ ई.)

※द्वि.वैशा.शु.१ श.	ज्ये. २	मई १५	रोहि.	८/३३ बाद,
※द्वि.वैशा.शु.६ बु.	ज्ये. ६	मई १९	पुष्य	
※श्राव. कृ. १० गु.	श्राव. २१	अग. ५	रोहि.	१०/२७ तक,
※श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. २२	अग. ६	मृग.	
※श्राव. शु. ५ श.	श्राव. ३०	अग. १४	चित्रा	८/३६ बाद,
※कार्त्ति. शु. ३ चं.	कार्त्ति.२३	नवं. ८	अनु.	७/१६ तक,
※कार्त्ति. शु. ६ गु.	कार्त्ति.२६	नवं. ११	उ.षा.	६/५२ बाद,
※कार्त्ति. शु. ६ शु.	कार्त्ति.२७	नवं. १२	उ.षा.	१०/४२ तक,
※मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	हस्त	८/३३ बाद,
※मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	चित्रा	१०/०७ बाद, (१०/०७ तक गुरु-पादवेध)
※मार्ग. कृ. १३ शु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	स्वा.	
※मार्ग. शु. ६ श.	मार्ग. २६	दिसं. ११	धनि.	
※माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	हस्त	१२/०६ बाद,

गृहारम्भ मुहूर्त (सन् २०११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
※माघ कृ. १० शु.	माघ १५	जन. २८	अनु.	७/३६ से १६/२१ तक,
※माघ शु. २ श.	माघ २३	फर. ५	शत.	६/४६ बाद,
माघ शु. ११ चं.	फाल्गु. २	फर. १४	मृग.	११/१९ तक,
माघ शु. १३ बु.	फाल्गु. ४	फर. १६	पुष्य	१०/२० बाद,

※ तारांकित मुहूर्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृषवास्तुचक्र शुद्धि नहीं है। वृषवास्तुचक्र शुद्धि वाले मुहूर्त्त इस वर्ष केवल दो ही हैं; यह ऊपर दिए गए गृहारम्भ मुहूर्त्तों से स्पष्ट है।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

※द्वि.वैशा.शु. १ श.	ज्ये. २	मई १५	रोहि.	२४/०६ तक,
※द्वि.वैशा.शु. १ श.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	२५/१८ बाद,
द्वि.वैशा.शु. ६ श.	ज्ये. ६	मई २२	उ.फा.	१६/२६ से २०/५१ तक, २२/०३ बाद,
द्वि.वैशा.शु. ११ चं.	ज्ये. ११	मई २४	चित्रा	६/४७ से १२/४४ तक,
※द्वि.वैशा.शु. १५गु.	ज्ये. १४	मई २७	अनु.	१५/५८ बाद,
※ज्ये. कृ. १ शु.	ज्ये. १५	मई २८	अनु.	१०/५८ तक,
ज्ये. कृ. १० चं.	ज्ये. २५	जून ७	उ.भा.	७/२० तक,
※ज्ये. कृ. १४ शु.	ज्ये. २९	जून ११	रोहि.	१८/३४ बाद,
ज्ये. शु. ७ शु.	आषा. ४	जून १८	उ.फा.	२१/५२ से २३/०४ तक,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	८/५८ से १७/४३ तक,
ज्ये. शु. १२ बु.	आषा. ६	जून २३	अनु.	२८/१७ बाद,
ज्ये. शु. १३ गु.	आषा. १०	जून २४	अनु.	१५/५६ तक,
※माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	उ.फा.	१०/५४ तक,
माघ कृ. १० शु.	माघ १५	जन. २८	अनु.	७/३६ से १६/२१ तक, २८/०४ बाद,
※माघ शु. ४ चं.	माघ २५	फर. ७	रेव.	२५/५४ बाद,
माघ शु. ११ चं.	फाल्गु. २	फर. १४	मृग.	११/१९ तक,
※फाल्गु.कृ. १ श.	फाल्गु. ७	फर. १९	उ.फा.	२३/४७ बाद,
※फाल्गु.कृ. ४ चं.	फाल्गु. ६	फर. २१	चित्रा	२३/४६ बाद,

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
※फाल्गु.कृ. ७ गु.	फाल्गु. १२	फर. २४	अनु.	१३/३५ बाद,
※फाल्गु.कृ. ८ शु.	फाल्गु. १३	फर. २५	अनु.	१२/१० तक,
※फाल्गु.शु. २ चं.	फाल्गु. २३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,
फाल्गु.शु. ६ शु.	फाल्गु. २७	मार्च ११	रोहि.	१८/५० बाद,
फाल्गु.शु. ७ श.	फाल्गु. २८	मार्च १२	रोहि.	१६/५८ तक,

※ तारांकित मुहूर्त्तों में केवल कलशचक्र शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

द्वि.वैशा.शु. १ श.	ज्ये. २	मई १५	रोहि.	२४/१६ तक,
द्वि.वैशा.शु. १ श.	ज्ये. २	मई १५	मृग.	२५/१८ बाद,
द्वि.वैशा.शु. ६ बु.	ज्ये. ६	मई १९	पुष्य	१९/३२ तक,
द्वि.वैशा.शु. ६ श.	ज्ये. ६	मई २२	उ.फा.	१६/२६ से २०/५१ तक,
द्वि.वैशा.शु.११ चं.	ज्ये. ११	मई २४	चित्रा	१३/५६ से १५/२६ तक,
द्वि.वैशा.शु.१५ गु.	ज्ये. १४	मई २७	अनु.	१५/५८ बाद,
ज्ये. कृ. १ शु.	ज्ये. १५	मई २८	अनु.	१०/५८ तक,
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. २०	जून २	धनि.	२१/२६ बाद,
ज्ये. कृ. ६ गु.	ज्ये. २१	जून ३	धनि.	७/२४ तक,
ज्ये. कृ. ७ शु.	ज्ये. २२	जून ४	शत.	६/३५ से २६/२०
ज्ये. कृ. १० चं.	ज्ये. २५	जून ७	उ.भा.	७/०४ तक,
ज्ये. शु. ७ शु.	आषा. ४	जून १८	उ.फा.	२१/५२ से २३/०४ तक,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	८/५८ से १७/४३ तक,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	स्वा.	१८/५८ से २९/१५ तक,
ज्ये. शु. १२ बु.	आषा. ६	जून २३	अनु.	२८/१७ बाद,
ज्ये. शु. १३ गु.	आषा. १०	जून २४	अनु.	१५/५६ तक,
श्राव. कृ. २ बु.	श्राव. १३	जुला. २८	धनि.	१३/४० तक,
श्राव. कृ. २ बु.	श्राव. १३	जुला. २८	शत.	१४/५२ से २४/५१ तक,
श्राव. कृ. ४ शु.	श्राव. १५	जुला. ३०	उ.भा.	२०/५० बाद,
श्राव. कृ. ५ श.	श्राव. १६	जुला. ३१	उ.भा.	२२/२४ तक,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. कृ. ५ श.	श्राव. १६	जुला. ३१	रेव.	२३/३६ बाद,
श्राव. कृ. १० गु.	श्राव. २१	अग. ५	रोहि.	१०/२७ तक,
श्राव. कृ. ११ शु.	श्राव. २२	अग. ६	मृग.	२७/१७ तक,
श्राव. शु. ३ गु.	श्राव. २८	अग. १२	उ.फा.	१३/१५ से २१/३१ तक,
श्राव. शु. ५ श.	श्राव. ३०	अग. १४	चित्रा	८/३६ से १८/३८ तक,
श्राव. शु. १२ श.	भाद्र. ६	अग. २१	उ.षा.	१२/२६ बाद,
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	कार्त्ति.११	अक्तू.२७	मृग.	६/२७ से २४/४६ तक,
कार्त्ति. कृ. ७ श.	कार्त्ति.१४	अक्तू.३०	पुष्य	२३/२५ तक,
कार्त्ति. शु. ६ गु.	कार्त्ति.२६	नवं. ११	उ.षा.	६/५७ से २५/२६ तक, २७/४३ बाद,
कार्त्ति. शु. ६ शु.	कार्त्ति.२७	नवं. १२	उ.षा.	१०/४२ तक,
कार्त्ति. शु. ७ श.	कार्त्ति.२८	नवं. १३	धनि.	२२/११ बाद,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	मार्ग. २	नवं. १७	उ.भा.	१८/३६ से २४/३४ तक,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	मार्ग. २	नवं. १७	रेव.	२५/४६ बाद,
मार्ग. कृ. १ चं.	मार्ग. ७	नवं. २२	रोहि.	७/४० बाद,
मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	चित्रा	२२/५४ बाद,
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	स्वा.	२१/२२ बाद,
मार्ग. कृ. १३ शु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	स्वा.	१८/५६ तक,
मार्ग. शु. ३ बु.	मार्ग. २३	दिसं. ८	उ.षा.	१६/११ से २२/३६ तक,
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. २५	दिसं. १०	धनि.	२२/५६ बाद,
मार्ग. शु. ६ श.	मार्ग. २६	दिसं. ११	धनि.	२४/२० तक,
माघ कृ. १ गु.	माघ ७	जन. २०	पुष्य	२०/०६ तक,
माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	उ.फा.	१०/५४ तक,
माघ कृ. ८ बु.	माघ १३	जन. २६	स्वा.	८/५६ से २७/३१ तक,
माघ कृ. १० शु.	माघ १५	जन. २८	अनु.	७/३६ से १६/२१ तक,
माघ शु. १ शु.	माघ २२	फर. ४	धनि.	१६/०३ तक,
माघ शु. १ शु.	माघ २२	फर. ४	शत.	१७/१५ से २१/०१ तक,

पुरातन-गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु. २ श.	माघ २३	फर. ५	शत.	६/४६ से १८/४७ तक,
माघ शु. ४ चं.	माघ २५	फर. ७	उ.भा.	१७/०६ से २४/४२ तक,
माघ शु. ११ चं.	फाल्गु. २	फर. १४	मृग.	११/१६ तक,
माघ शु. १३ बु.	फाल्गु. ४	फर. १६	पुष्य	१०/२० से २०/३६ तक,
फाल्गु. कृ. १ श.	फाल्गु. ७	फर. १६	उ.फा.	२३/४७ बाद,
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. ९	फर. २१	चित्रा	२३/४६ बाद,
फाल्गु. कृ. ६ बु.	फाल्गु.११	फर. २३	स्वा.	१३/१६ तक,
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु.१२	फर. २४	अनु.	१३/३५ बाद,
फाल्गु. कृ. ११ चं.	फाल्गु.१६	फर. २८	उ.षा.	२४/४१ बाद,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु.२३	मार्च ७	उ.भा.	७/०६ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु.२३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,
फाल्गु. शु. ६ शु.	फाल्गु.२७	मार्च ११	रोहि.	१८/५० बाद,
फाल्गु. शु. ७ श.	फाल्गु.२८	मार्च १२	रोहि.	१६/५८ तक,
फाल्गु. शु. ११ बु.	चैत्र ३	मार्च १६	पुष्य	१३/३० से १७/४७ तक,
फाल्गु. शु. १५ श.	चैत्र ६	मार्च १६	उ.फा.	१३/३६ बाद,

नोट :- सरकारी या अन्य नौकरी वाले तथा दूसरे लोग भी ट्रांस्फर आदि के कारण अक्सर किराये वाले पुराने मकानों में यदा–कदा प्रवेश करते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए ही ये पुरातन–गृहप्रवेश मुहूर्त्त हैं। इन मुहूर्त्तों में गुरु–शुक्र अस्त और अधिकमास का दोष नहीं माना जाता। सिंहस्थ गुरु का सिंहांशक भी यहां विचारा नहीं जाता, इसलिए इनका इन मुहूर्त्तों में विचार नहीं किया गया है। कलश–चक्र का विचार भी यहां नहीं किया जाता ।

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

द्वि.वैशा.शु. ३ र.	ज्ये. ३	मई १६	मृग.	
द्वि.वैशा.शु. ६ बु.	ज्ये. ६	मई १९	पुष्य	
द्वि.वैशा.शु.१० र.	ज्ये. १०	मई २३	उ.फा.	
ज्ये. कृ. १ शु.	ज्ये. १५	मई २८	अनु.	११/०८ तक,

सर्व-देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१०-११ ई.)

तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. कृ. ५ बु.	ज्ये. २०	जून २	श्रव.	
ज्ये. कृ. ६ गु.	ज्ये. २१	जून ३	धनि.	७/२४ तक,
ज्ये. कृ. ७ शु.	ज्ये. २२	जून ४	शत.	६/३५ बाद,
ज्ये. कृ. १२ बु.	ज्ये. २७	जून ९	अश्वि.	६/११ तक,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	
पौष शु. ११ र.	माघ ३	जन. १६	रोहि.	६/०१ बाद,
माघ कृ. १ गु.	माघ ७	जन. २०	पुष्य	
माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	उ.फा.	१०/५४ तक,
माघ कृ. ८ बु.	माघ १३	जन. २६	स्वा.	८/५६ बाद,
माघ कृ. १० शु.	माघ १५	जन. २८	अनु.	७/३६ बाद,
माघ शु. १ शु.	माघ २२	फर. ४	धनि.	
माघ शु. ६ बु.	माघ २७	फर. ९	अश्वि.	८/१५ तक, (८/१५ बाद क्रान्तिसाम्य)
माघ शु. ११ चं.	फाल्गु. २	फर. १४	मृग.	११/१६ तक,
फाल्गु. कृ. ३ र.	फाल्गु. ८	फर. २०	उ.फा.	
फाल्गु. कृ. ८ शु.	फाल्गु.१३	फर. २५	अनु.	
फाल्गु. शु. २ र.	फाल्गु.२२	मार्च ६	उ.भा.	
फाल्गु. शु. २ च	फाल्गु.२३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

ज्ये. शु. १३ गु.	आषा.१०	जून २४	अनु.	
आषा. कृ. २ चं.	आषा.१४	जून २८	उ.षा.	
आषा. कृ. ५ गु.	आषा.१७	जुला. १	धनि.	६/४६ तक,
आषा. कृ. ५ गु.	आषा.१७	जुला. १	शत.	८/०१ बाद,
आषा. कृ. ६ शु.	आषा.१८	जुला. २	शत.	६/५० तक,
आषा. कृ. १२ शु.	आषा.२५	जुला. ९	रोहि.	
आषा. शु. १ चं.	आषा.२८	जुला. १२	पुन.	
कार्त्ति. शु. १२ गु.	मार्ग. ३	नवं. १८	रेव.	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

तिथि–वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. १६	दिसं. १	हस्त	८/३३ बाद,
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	चित्रा	१०/०७ बाद, (१०/०७ तक गुरुपादवेध)
मार्ग. कृ. १३ शु.	मार्ग. १८	दिसं. ३	स्वा.	
मार्ग. शु. ५ शु.	मार्ग. २५	दिसं.१०	श्रव.	८/३७ तक,
मार्ग. शु. ७ र.	मार्ग. २७	दिसं.१२	शत.	६/३५ तक, १०/४७ बाद,

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

माघ कृ. ४ र.	माघ १०	जन. २३		
फाल्गु. कृ. ४ चं.	फाल्गु. ६	फर. २१	हस्त	

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०१० ई.)

ज्ये. कृ. ३ र.	ज्ये. १७	मई ३०	मूल	
ज्ये. शु. ६ र.	आषा. ६	जून २०	हस्त	

श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

पौष शु. १४ मं.	माघ ५	जन. १८	आर्द्रा	
माघ शु. १२ मं.	फाल्गु. ३	फर. १५	आर्द्रा	१०/३६ तक,
फाल्गु. कृ. १३ बु.	फाल्गु.१८	मार्च २		श्रीमहाशिवरात्रि व्रत

श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् २०११ ई.)

तिथि–वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टै.टा.)
माघ शु. ३ र.	माघ २४	फर. ६		
फाल्गु. शु. ३ चं.	फाल्गु. २३	मार्च ७		

दशावतार प्रतिष्ठा

श्रीराम, कृष्ण आदि देवताओं की मूर्त्ति–प्रतिष्ठा इन देवताओं की अपनी –अपनी अवतार तिथियों (श्रीरामनवमी आदि) के दिन पूर्वाह्णकाल में बिना पंचांग–शुद्धि के भी की जा सकती है। अवतार की तिथि यदि गुरु–शुक्रास्तकाल में पड़े ,तब तो उस दिन मूर्ति–प्रतिष्ठा नहीं करनी चाहिए।

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय–काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त " सात्त्विक देव प्रतिष्ठा " वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त काल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां नीचे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी–देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी– देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें– गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का निर्देश किया गया है, नक्षत्रों का नहीं। हां, जहां कहीं इन तिथियों के समय कोई देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त का नक्षत्र भी मिल गया है, वहां उस तिथि के साथ उसका भी निर्देश कर दिया गया है। शिव प्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त लगाए गए हैं । इन मुहूर्त्तों में भी गुरु–शुक्रास्तकाल तथा सिंहांशकस्थ सिंहगतगुरु को वर्जित किया जाता है।

विपणि मुहूर्त्त (सन् २०१०–११ ई.)

तिथि–वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल(भा.स्टै.टा.)
ज्ये. कृ. १२ बु.	ज्ये. २७	जून ६	अश्वि.	६/११ तक,
ज्ये. शु. १० चं.	आषा. ७	जून २१	चित्रा	१७/४३ तक,
ज्ये. शु. १३ गु.	आषा. १०	जून २४	अनु.	१५/५६ तक,
आषा. कृ. २ चं.	आषा. १४	जून २८	उ.षा.	१४/३६ तक,
आषा. कृ. ७ र.	आषा. २०	जुला. ४	उ.भा.	७/१२ तक,
आषा. शु. ६ श.	श्राव. २	जुला. १७	हस्त	६/३७ बाद,
श्राव. कृ. ५ श.	श्राव. १६	जुला. ३१	उ.भा.	
श्राव. कृ. ७ चं.	श्राव. १८	अग. २	अश्वि.	६/१८ बाद,
श्राव. कृ. १० गु.	श्राव. २१	अग. ५	रोहि.	१०/२७ तक,
श्राव. शु. ३ गु.	श्राव. २८	अग. १२	उ.फा.	१३/१५ बाद,
श्राव. शु. १३ र.	भाद्र. ७	अग. २२	उ.षा.	१३/५८ तक,
भाद्र. कृ. ४ र.	भाद्र. १४	अग. २६	अश्वि.	८/१६ बाद,
भाद्र. कृ. ६ शु.	भाद्र. १६	सितं. ३	मृग.	६/५० बाद,
भाद्र. कृ. १२ र.	भाद्र. २१	सितं. ५	पुष्य	१०/५२ बाद,
भाद्र. शु. २ शु.	भाद्र. २६	सितं. १०	हस्त	१२/०० तक,
अश्वि.शु. ४ चं.	आश्वि.२६	अक्तू. ११	अनु.	१४/०० बाद,
कार्त्ति.शु. १ र.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	अनु.	६/२५ बाद,
कार्त्ति.शु. ६ शु.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	उ.षा.	६/१७ से १०/४२ तक,
कार्त्ति.शु. १२ गु.	मार्ग. ३	नवं. १८	रेव.	
मार्ग. कृ. १२ गु.	मार्ग. १७	दिसं. २	चित्रा	११/३० बाद,
माघ कृ. ५ चं.	माघ ११	जन. २४	उ.फा.	१०/५४ तक,
माघ शु. १३ बु.	फाल्गु. ४	फर. १६	पुष्य	१०/२० बाद,
फाल्गु. कृ. ३ र.	फाल्गु. ८	फर. २०	उ.फा.	१६/५१ तक,
फाल्गु. कृ. ७ गु.	फाल्गु. १२	फर. २४	अनु.	१३/३५ से १७/२४ तक,
फाल्गु. शु. २ चं.	फाल्गु. २३	मार्च ७	रेव.	८/२१ बाद,
फाल्गु. शु. ४ बु.	फाल्गु. २५	मार्च ९	अश्वि.	१२/०७ से १२/५६ तक,
फाल्गु. शु. ७ श.	फाल्गु. २८	मार्च १२	रोहि.	१६/५८ तक,

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६७ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
मार्च १६	०६ ४८	मार्च १७	सू. उ.	जून ६	०६ ०३	जून ७	सू. उ.	अग. २३	सू. उ.	अग. २३	१८ ०४	नवं. ३	१७ २१	नवं. ४	सू. उ.
मार्च १८	सू. उ.	मार्च १९	सू. उ.	(जून ८	०९ ५३	जून ९	सू. उ.)मं.	(अग. २८	०५ ४५	अग. २८	सू. उ.)शु.	नवं. ६	सू. उ.	नवं. ६	१० ५६
मार्च १९	सू. उ.	मार्च १९	११ ५२	(जून १२	सू. उ.	जून १२	०९ ४९)श.	अग. २९	०८ १६	अग. ३०	सू. उ.	नवं. ८	सू. उ.	नवं. ८	०८ २८
मार्च २२	सू. उ.	मार्च २२	१३ २०	जून १५	०४ ५९	जून १५	सू. उ.	अग. ३१	१२ १०	सितं. १	सू. उ.	नवं. १२	११ ५४	नवं. १३	सू. उ.
(मार्च २२	१३ २०	मार्च २३	सू. उ.)चं.	जून १६	०३ ०५	जून १६	सू. उ.	सितं. १	सू. उ.	सितं. २	सू. उ.	नवं. १३	सू. उ.	नवं. १३	१४ २५
मार्च २५	सू. उ.	मार्च २५	१० ४१	जून १८	सू. उ.	जून १८	२१ ५२	सितं. ५	१० ५२	सितं. ६	सू. उ.	नवं. १६	२३ ०९	नवं. १७	सू. उ.
(मार्च २५	१० ४१	मार्च २६	सू. उ.)गु.	(जून २०	सू. उ.	जून २०	१९ ३४)र.	सितं. ६	सू. उ.	सितं. ६	०८ ३७	नवं. १८	सू. उ.	नवं. १९	सू. उ.
मार्च २९	०१ ४८	मार्च २९	सू. उ.	(जून २३	१८ ४८	जून २४	सू. उ.)बु.	सितं. ११	१५ ५८	सितं. १२	सू. उ.	नवं. १९	सू. उ.	नवं. २०	०५ ४१
अप्रै. ४	१९ ०३	अप्रै. ५	सू. उ.	जून २४	सू. उ.	जून २४	१९ २३	सितं. १३	१३ ३८	सितं. १४	सू. उ.	नवं. २२	०७ ४०	नवं. २३	सू. उ.
अप्रै. १३	सू. उ.	अप्रै. १३	१५ ४२	जून २७	२३ ५६	जून २८	सू. उ.	सितं. १८	२१ ०८	सितं. १९	सू. उ.	नवं. २४	सू. उ.	नवं. २४	०७ ५६
अप्रै. १५	सू. उ.	अप्रै. १५	१८ ०६	जून २९	०२ २०	जून २९	सू. उ.	(सितं. २४	११ ३६	सितं. २५	सू. उ.)शु.	नवं. २५	०७ ३४	नवं. २६	०६ ५४
(अप्रै. १७	१८ ५२	अप्रै. १८	सू. उ.)श.	जुला. ४	सू. उ.	जुला. ४	१६ २७	सितं. २६	सू. उ.	सितं. २६	१६ ०७	(नवं. २६	०६ ५४	नवं. २६	सू. उ.)गु.
(अप्रै. १९	सू. उ.	अप्रै. १९	१५ ५१)चं.	(जुला. ६	सू. उ.	जुला. ६	१९ २२)मं.	सितं. २८	सू. उ.	सितं. २८	१९ १५	दिसं. १	सू. उ.	दिसं. १	२२ ५४
अप्रै. १९	१५ ५१	अप्रै. १९	१८ १९	जुला. ७	२० ३२	जुला. ८	सू. उ.	सितं. २९	सू. उ.	सितं. ३०	सू. उ.	दिसं. १०	सू. उ.	दिसं. १०	२२ ५६
(अप्रै. २२	सू. उ.	अप्रै. २२	१० ४९)गु.	जुला. १२	१४ ०५	जुला. १३	सू. उ.	अक्तू. १	२० १३	अक्तू. २	सू. उ.	दिसं. १४	०७ २३	दिसं. १५	सू. उ.
अप्रै. २२	१० ४९	अप्रै. २२	१५ २२	जुला. १३	११ ३६	जुला. १४	सू. उ.	अक्तू. ३	सू. उ.	अक्तू. ३	१७ ४९	दिसं. १६	सू. उ.	दिसं. १७	सू. उ.
अप्रै. २५	१० १८	अप्रै. २६	सू. उ.	जुला. २१	सू. उ.	जुला. २२	०१ १५	अक्तू. ९	सू. उ.	अक्तू.१०	०० २७	दिसं. १७	सू. उ.	दिसं. १७	१४ ३१
अप्रै. ३०	०३ २१	अप्रै. ३०	सू. उ.	जुला. २५	०६ ३७	जुला. २६	सू. उ.	अक्तू. ११	सू. उ.	अक्तू.११	२२ २५	दिसं. २०	सू. उ.	दिसं. २०	१६ ३२
मई २	सू. उ.	मई ३	०५ ३६	जुला. २६	०९ ०८	जुला. २७	सू. उ.	अक्तू. १६	०३ ५४	अक्तू.१६	सू. उ.	(दिसं. २०	१६ ३२	दिसं. २१	सू. उ.)चं.
मई ९	२१ ४५	मई १०	सू. उ.	अग. २	०२ ००	अग. २	सू. उ.	अक्तू. १६	सू. उ.	अक्तू.१७	सू. उ.	दिसं. २३	सू. उ.	दिसं. २३	१३ ५१
(मई १२	०१ ०५	मई १२	सू. उ.)मं.	अग. ४	०५ १०	अग. ४	सू. उ.	अक्तू. २१	१८ ०७	अक्तू.२२	सू. उ.	(दिसं. २३	१३ ५१	दिसं. २४	सू. उ.)गु.
(मई १५	सू. उ.	मई १६	०१ १८)श.	अग. ४	सू. उ.	अग. ५	सू. उ.	(अक्तू. २२	सू. उ.	अक्तू.२२	२० २०)शु.	(सन् २०११ ई.)			
मई २१	१७ ५४	मई २२	सू. उ.	अग. ९	०० ३६	अग. ९	सू. उ.	अक्तू. २२	२० २०	अक्तू.२३	सू. उ.	जन. ३	०२ ०९	जन. ३	सू. उ.
मई २३	सू. उ.	मई २३	१५ ०९	अग. ९	सू. उ.	अग. ९	२१ ५७	अक्तू. २६	०० ४९	अक्तू.२६	सू. उ.	जन. ११	सू. उ.	जन. ११	१८ २९
(मई २३	१५ ०९	मई २४	सू. उ.)र.	अग. १०	सू. उ.	अग. १०	१९ ०४	अक्तू. २७	सू. उ.	अक्तू.२८	०१ ५८	जन. १३	सू. उ.	जन. १३	२३ ३४
मई २७	११ ५८	मई २८	सू. उ.	(अग. १८	सू. उ.	अग. १८	०६ ५२)बु.	अक्तू. २९	०१ ५७	अक्तू.२९	सू. उ.	जन. १६	०२ २०	जन. १६	सू. उ.
मई ३०	सू. उ.	मई ३०	१४ १५	अग. २२	सू. उ.	अग. २२	१५ १०	अक्तू. २९	सू. उ.	अक्तू.३०	०१ ३०				

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०६७ वि.) (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
(जन. १७	सू. उ.	जन. १८	०२ १०)चं.
(जन. २०	सू. उ.	जन. २०	२१ १८)गु.
जन. २३	१४ १४	जन. २४	सू. उ.
जन. ३०	०८ २३	जन. ३१	सू. उ.
फर. ६	२२ ५३	फर. ७	सू. उ.
(फर. ९	०४ ५१	फर. ९	सू. उ.)मं.
फर. १०	सू. उ.	फर. १०	०७ ३३
(फर. १२	११ ३०	फर. १३	सू. उ.)श.
(फर. १४	सू. उ.	फर. १४	१२ ३१)चं.
(फर. १७	सू. उ.	फर. १७	०८ १४)गु.
फर. १९	०२ ४६	फर. १९	सू. उ.
फर. २०	सू. उ.	फर. २०	२० ५३
(फर. २०	२० ५३	फर. २१	सू. उ.)र.
फर. २४	१३ ३५	फर. २५	सू. उ.
फर. २७	सू. उ.	फर. २७	१४ ५६
मार्च ६	सू. उ.	मार्च ७	सू. उ.
(मार्च ८	११ १८	मार्च ९	सू. उ.)मं.
(मार्च १२	सू. उ.	मार्च १२	२० २४)श.
मार्च १८	१४ ०४	मार्च १९	सू. उ.
मार्च २०	सू. उ.	मार्च २०	०७ ४९
(मार्च २०	०७ ४९	मार्च २१	०४ ४२)र.
(मार्च २३	२१ ४५	मार्च २४	सू. उ.)बु.
मार्च २४	सू. उ.	मार्च २४	२० ४४
मार्च २७	२२ २६	मार्च २८	सू. उ.
मार्च २९	०० २२	मार्च २९	सू. उ.
अप्रै. ३	सू. उ.	अप्रै. ३	१४ २२

रवि योग (सं. २०६७ वि.) (भा. स्टै. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
मार्च १९	११ ५२	मार्च २०	१२ ४७
मार्च २१	१३ १७	मार्च २२	१३ २०
मार्च २४	१२ ०३	मार्च २६	०८ ५३
मार्च २८	०४ १९	मार्च २९	०१ ४८
अप्रै. ४	१९ ०३	अप्रै. ५	२० ५८
अप्रै. १७	१८ ५२	अप्रै. १८	१८ ४५
अप्रै. १९	१८ १९	अप्रै. २०	१७ ३७
अप्रै. २२	१५ २२	अप्रै. २४	१२ ०९
अप्रै. २६	०८ २५	अप्रै. २७	०६ ३९
अप्रै. २७	२२ ४५	अप्रै. २८	०५ ०७
मई ४	०७ ४५	मई ५	१० २४
मई १७	०० २५	मई १७	२३ १९
मई १८	२२ ०४	मई १९	२० ४४
मई २१	१७ ५४	मई २३	१५ ०९
मई २५	१२ ५७	मई २५	१३ ०६
मई २६	१२ १६	मई २७	११ ५८
जून २	२१ २६	जून ४	०० २५
जून १५	०४ ५९	जून १६	०३ ०५
जून १७	०१ १२	जून १७	२३ २६
जून १९	२० ३४	जून २१	१८ ५५
जून २२	०९ ५७	जून २२	१८ ३९
जून २४	१९ २३	जून २५	२० २६
जुला. २	११ ०२	जुला. ३	१३ ५४
जुला. १४	०९ ०४	जुला. १५	०६ ३८
जुला. १६	०४ २७	जुला. १७	०२ ३६
जुला. १९	०० २३	जुला. २२	०१ १५
जुला. २४	०४ २५	जुला. २५	०६ ३७

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
जुला. ३१	२३ ३६	अग. २	०२ ००
अग. १२	१३ १५	अग. १३	१० ४२
अग. १४	०८ ३६	अग. १५	०७ ०६
अग. १८	०६ ५२	अग. २०	१० ०७
अग. २२	१५ १०	अग. २३	१८ ०४
अग. ३०	१० २७	अग. ३१	०१ ३७
अग. ३१	१२ १०	सितं. १	१३ १९
सितं. १०	१८ १०	सितं. ११	१५ ५८
सितं. १२	१४ २५	सितं. १३	१३ ३८
सितं. १३	१९ २३	सितं. १४	१३ ४१
सितं. १६	१६ १२	सितं. १८	२१ ०८
सितं. २१	०३ ०७	सितं. २२	०६ ०६
सितं. २९	२० ०९	सितं. ३०	२० २९
अक्तू. १०	०० २७	अक्तू. १०	२३ ०३
अक्तू. १०	२३ ५५	अक्तू. ११	२२ २५
अक्तू. १२	२२ ३८	अक्तू. १३	२३ ४०
अक्तू. १६	०३ ५४	अक्तू. १८	०९ ४४
अक्तू. २०	१५ ३४	अक्तू. २१	१८ ०७
अक्तू. २९	०१ ५७	अक्तू. ३०	०१ ३०
नवं. ०९	०८ १२	नवं. १०	०८ ४२
नवं. ११	०९ ५७	नवं. १२	११ ५४
नवं. १४	१७ १६	नवं. १६	२३ ०९
नवं. १९	०३ ५७	नवं. २०	०० ३९
नवं. २०	०५ ४१	नवं. २१	०६ ५४
नवं. २७	०५ ५९	नवं. २८	०४ ५१
दिसं. ८	१९ ११	दिसं. ९	२० ४६

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
दिसं. १०	२२ ५६	दिसं. १२	०१ ३२
दिसं. १४	०७ २३	दिसं. १६	०७ ५८
दिसं. १६	१२ ३६	दिसं. १७	१४ ३१
दिसं. १९	१६ २९	दिसं. २०	१६ ३२
दिसं. २६	०९ ०२	दिसं. २७	०७ २५
(सन् २०११ ई.)			
जन. ७	०७ २२	जन. ८	०९ ४८
जन. ९	१२ ३४	जन. १०	१५ ३१
जन. ११	१२ १२	जन. ११	१८ २९
जन. १३	२३ ३४	जन. १६	०२ २०
जन. १८	०२ १०	जन. १९	०१ ०३
जन. २४	१२ ०६	जन. २४	१४ ३५
जन. २५	१० १८	जन. २६	०८ ५६
फर. ५	१९ ५९	फर. ६	१७ ४०
फर. ६	२२ ५३	फर. ८	०१ ५४
फर. ९	०४ ५१	फर. १०	०७ ३३
फर. १२	११ ३०	फर. १४	१२ ३१
फर. १६	१० २०	फर. १७	०८ १४
फर. २३	१४ ३१	फर. २४	१३ ३५
मार्च ०८	११ १८	मार्च ०९	१४ ०८
मार्च १०	१६ ४२	मार्च ११	१८ ५०
मार्च १३	२१ १५	मार्च १५	२० ३२
मार्च १७	१६ ४७	मार्च १८	१२ ५४
मार्च १८	१४ ०४	मार्च १९	११ ००
मार्च २४	२० ४४	मार्च २५	२० ३१

सिद्धि योग (सन् २०१०-११ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
मार्च १६	०६ ४८	मार्च १७	सू. उ.
मार्च २५	सू. उ.	मार्च २५	१० ४१
अप्रै. ४	१९ ०३	अप्रै. ५	सू. उ.
अप्रै. १३	सू. उ.	अप्रै. १३	१५ ४२
मई २	सू. उ.	मई ३	०५ ३६
मई २१	१७ ५४	मई २२	सू. उ.
मई ३०	सू. उ.	मई ३०	१४ १५
जून १८	सू. उ.	जून १८	२१ ५२
जून २९	०२ २०	जून २९	सू. उ.
जुला. ७	२० ३२	जुला. ८	सू. उ.
जुला. २६	०९ ०८	जुला. २७	सू. उ.
अग. ४	सू. उ.	अग. ५	०५ ४२
अग. २३	सू. उ.	अग. २३	१८ ०४
सितं. १	सू. उ.	सितं. १	१३ १९
सितं. ११	१५ ५८	सितं. १२	सू. उ.
अक्तू. ९	सू. उ.	अक्तू. १०	०० २७
अक्तू. २९	०१ ५७	अक्तू. २९	सू. उ.
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ६	१० ५६
नवं. १६	२३ ०९	नवं. १७	सू. उ.
नवं. २५	०७ ३४	नवं. २६	०६ ५४
दिसं. १४	०७ २३	दिसं. १५	सू. उ.
दिसं. २३	सू. उ.	दिसं. २३	१३ ५१

(सन् २०११ ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
जन. ३	०२ ०९	जन. ३	सू. उ.
जन. ११	सू. उ.	जन. ११	१८ २९
जन. ३०	०८ २३	जन. ३१	सू. उ.
फर. १९	०२ ४६	फर. १९	सू. उ.
फर. २७	सू. उ.	फर. २७	१४ ५६
मार्च १८	१४ ०४	मार्च १९	सू. उ.
मार्च २९	०० २२	मार्च २९	सू. उ.

द्विपुष्कर योग (सन् २०१० ई.)

मई १६	०१ १८	मई १६	०४ १०
मई २५	सू. उ.	मई २५	०७ ५८
जुला. १८	०१ १४	जुला. १८	०४ ३१
जुला. २७	११ ५५	जुला. २८	सू. उ.
सितं. २०	०० ०५	सितं. २०	सू. उ.
नवं. २३	०७ ५९	नवं. २३	२२ १८

(सन् २०११ ई.)

जन. १७	०२ ३७	जन. १७	सू. उ.
जन. २५	१० १८	जन. २६	०७ १९
मार्च २१	०४ ४२	मार्च २१	सू. उ.

त्रिपुष्करयोग (सन् २०१० ई.)

अप्रै. ११	११ २६	अप्रै. ११	१४ ०७
अप्रै. २०	१७ ३७	अप्रै. २१	सू. उ.
अप्रै. २५	१० १८	अप्रै. २६	०० ५५
मई ४	१८ १५	मई ५	सू. उ.
जून २२	१८ ३९	जून २३	सू. उ.
जून २७	२३ ५६	जून २८	सू. उ.
जुला. ३	सू. उ.	जुला. ३	१३ ५४
अग. २१	१२ २९	अग. २१	१५ ३९
अग. ३१	१२ १०	सितं. १	सू. उ.

त्रिपुष्करयोग (सन् २०१० ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
सितं. ५	०५ ५६	सितं. ५	१० ५२
अक्तू. १९	१२ ४४	अक्तू. २०	०१ २९
अक्तू. २४	२३ ४१	अक्तू. २५	सू. उ.
नवं. २	२१ ५८	नवं. ३	सू. उ.
नवं. ७	०८ ०६	नवं. ७	०९ २५
दिसं. १३	०४ २६	दिसं. १३	०६ १२

(सन् २०११ ई.)

फर. १५	११ ४८	फर. १५	२३ १०
फर. १९	२३ ४७	फर. २०	०६ ३९
मार्च १	सू. उ.	मार्च १	१८ ३८
मार्च ६	०४ ४३	मार्च ६	०५ २२

अमृतसिद्धियोग

(सन् २०१० ई.)

(मार्च २२	१३ २०	मार्च २३	सू. उ.)चं.
(मार्च २५	१० ४१	मार्च २६	सू. उ.)गु.
(अप्रै. १७	१८ ५२	अप्रै. १८	सू. उ.)श.
(अप्रै. १९	सू. उ.	अप्रै. १९	१५ ५१)चं.
(अप्रै. २२	सू. उ.	अप्रै. २२	१० ४९)गु.
(मई १२	०१ ०५	मई १२	सू. उ.)मं.
(मई १५	सू. उ.	मई १६	०१ १८)श.
(मई २३	१५ ०९	मई २४	सू. उ.) र.
(जून ८	०९ ५३	जून ९	सू. उ.)मं.
(जून १२	सू. उ.	जून १२	०९ ४९)श.
(जून २०	सू. उ.	जून २०	१४ ३४)र.
(जून २३	१८ ४८	जून २४	सू. उ.)बु.

अमृतसिद्धियोग

(सन् २०१० ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
(जुला. ६	सू. उ.	जुला. ६	१९ २२)मं.
(अग. १८	सू. उ.	अग. १८	०६ ५२)बु.
(अग. २८	०५ ४५	अग. २८	सू. उ.)शु.
(सितं. २४	११ ३६	सितं. २५	सू. उ.)शु.
(अक्तू. २२	सू. उ.	अक्तू. २२	२० २०)शु.
(नवं. २६	०६ ५४	नवं. २६	सू. उ.)गु.
(दिसं. २०	१६ ३२	दिसं. २१	सू. उ.)चं.
(दिसं. २३	१३ ५१	दिसं. २४	सू. उ.)गु.

(सन् २०११ ई.)

(जन. १७	सू. उ.	जन. १८	०२ १०)चं.
(जन. २०	सू. उ.	जन. २०	२१ १८)गु.
(फर. ०९	०४ ५१	फर. ९	सू. उ.)मं.
(फर. १२	११ ३०	फर. १३	सू. उ.)श.
(फर. १४	सू. उ.	फर. १४	१२ ३१)चं.
(फर. १७	सू. उ.	फर. १७	०८ १४)गु.
(फर. २०	२० ५३	फर. २१	सू. उ.)र.
(मार्च ०८	११ १८	मार्च ९	सू. उ.)मं.
(मार्च १२	सू. उ.	मार्च १२	२० २४)श.
(मार्च २०	०७ ४९	मार्च २१	०४ ४२)र.
(मार्च २३	२१ ४५	मार्च २४	सू. उ.)बु.

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में बच्चे का जन्म हुआ हो। 'विश्वलग्न सारणी' उसके जन्मकालिक सूक्ष्म लग्न के स्पष्ट राशि–अंश आदि दैवज्ञ को केवल एक मिनट में बतला देती है। विस्तृत विज्ञापन अन्तिम पृष्ठों पर देखें।

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2067 वि.) का

ग्रहोदयास्त विशेषांक

लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा

इस विशेषांक में पढ़िए–

(i) समस्याएं एवं समाधान..पृष्ठ 259
(ii) चन्द्रमा का 'उपच्छाया ग्रहण' ग्रहण नहीं होता................पृष्ठ 265

ग्रहों का उदयास्तकाल

(iii) सूर्योदयास्तसाधन..पृष्ठ 267
(iv) चन्द्र एवम् मंगलादि ग्रहों के उदयास्तसाधन................पृष्ठ 274
(v) चन्द्रदर्शन किस दिन होगा ?..............................पृष्ठ 286
(vi) मंगल, बुध एवम् शनि का लोप–दर्शन......................पृष्ठ 288
(vi) गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन का निर्णय (लोप–दर्शन की सन् 2001 से 2050 ई. तक की तारीखें)............पृष्ठ 293

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही तुरन्त (30–40 सैकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य Rs. 75/– + डाकव्यय Rs. 35/– है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल Rs. 65/– ही लिया जाएगा।

(पुस्तक अप्रैल, 2010 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी– प्रतीक्षा कीजिए।)

सिद्धि योग (सन् २०१०-११ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
मार्च १६	०६ ४८	मार्च १७	सू. उ.
मार्च २५	सू. उ.	मार्च २५	१० ४१
अप्रै. ४	१६ ०३	अप्रै. ५	सू. उ.
अप्रै. १३	सू. उ.	अप्रै. १३	१५ ४२
मई २	सू. उ.	मई ३	०५ ३६
मई २१	१७ ५४	मई २२	सू. उ.
मई ३०	सू. उ.	मई ३०	१४ १५
जून १८	सू. उ.	जून १८	२१ ५२
जून २६	०२ २०	जून २६	सू. उ.
जुला. ७	२० ३२	जुला. ८	सू. उ.
जुला. २६	०६ ०८	जुला. २७	सू. उ.
अग. ४	सू. उ.	अग. ५	०५ ४२
अग. २३	सू. उ.	अग. २३	१८ ०४
सितं. १	सू. उ.	सितं. १	१३ १६
सितं. ११	१५ ५८	सितं. १२	सू. उ.
अक्तू. ६	सू. उ.	अक्तू. १०	०० २७
अक्तू. २६	०१ ५७	अक्तू. २६	सू. उ.
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ६	१० ५६
नवं. १६	२३ ०६	नवं. १७	सू. उ.
नवं. २५	०७ ३४	नवं. २६	०६ ५४
दिसं. १४	०७ २३	दिसं. १५	सू. उ.
दिसं. २३	सू. उ.	दिसं. २३	१३ ५१
(सन् २०११ ई.)			
जन. ३	०२ ०६	जन. ३	सू. उ.
जन. ११	सू. उ.	जन. ११	१८ २६
जन. ३०	०८ २३	जन. ३१	सू. उ.

प्रारम्भ		समाप्त	
२०११ई.	घं. मि.	२०११ ई.	घं. मि.
फर. १६	०२ ४६	फर. १६	सू. उ.
फर. २७	सू. उ.	फर. २७	१४ ५६
मार्च १८	१४ ०४	मार्च १६	सू. उ.
मार्च २६	०० २२	मार्च २६	सू. उ.

द्विपुष्कर योग (सन् २०१० ई.)

मई १६	०१ १८	मई १६	०४ १०
मई २५	सू. उ.	मई २५	०७ ५८
जुला. १८	०१ १४	जुला. १८	०४ ३१
जुला. २७	११ ५५	जुला. २८	सू. उ.
सितं. २०	०० ०५	सितं. २०	सू. उ.
नवं. २३	०७ ५६	नवं. २३	२२ १८
(सन् २०११ ई.)			
जन. १७	०२ ३७	जन. १७	सू. उ.
जन. २५	१० १८	जन. २६	०७ १६
मार्च २१	०४ ४२	मार्च २१	सू. उ.

त्रिपुष्करयोग (सन् २०१० ई.)

अप्रै. ११	११ २६	अप्रै. ११	१४ ०७
अप्रै. २०	१७ ३७	अप्रै. २१	सू. उ.
अप्रै. २५	१० १८	अप्रै. २६	०० ५५
मई ४	१८ १५	मई ५	सू. उ.
जून २२	१८ ३६	जून २३	सू. उ.
जून २७	२३ ५६	जून २८	सू. उ.
जुला. ३	सू. उ.	जुला. ३	१३ ५४
अग. २१	१२ २६	अग. २१	१५ ३६
अग. ३१	१२ १०	सितं. १	सू. उ.

त्रिपुष्करयोग (सन् २०१० ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
सितं. ५	०५ ५६	सितं. ५	१० ५२
अक्तू. १६	१२ ४४	अक्तू. २०	०१ २६
अक्तू. २४	२३ ४१	अक्तू. २५	सू. उ.
नवं. २	२१ ५८	नवं. ३	सू. उ.
नवं. ७	०८ ०६	नवं. ७	०६ २५
दिसं. १३	०४ २६	दिसं. १३	०६ १२
(सन् २०११ ई.)			
फर. १५	११ ४८	फर. १५	२३ १०
फर. १६	२३ ४७	फर. २०	०६ ३६
मार्च १	सू. उ.	मार्च १	१८ ३८
मार्च ६	०४ ४३	मार्च ६	०५ २२

अमृतसिद्धियोग
(सन् २०१० ई.)

(मार्च २२	१३ २०	मार्च २३	सू. उ.)चं.
(मार्च २५	१० ४१	मार्च २६	सू. उ.)गु.
(अप्रै. १७	१८ ५२	अप्रै. १८	सू. उ.)श.
(अप्रै. १६	सू. उ.	अप्रै. १६	१५ ५१)चं.
(अप्रै. २२	सू. उ.	अप्रै. २२	१० ४६)गु.
(मई १२	०१ ०५	मई १२	सू. उ.)मं.
(मई १५	सू. उ.	मई १६	०१ १८)श.
(मई २३	१५ ०६	मई २४	सू. उ.) र.
(जून ८	०६ ५३	जून ६	सू. उ.)मं.
(जून १२	सू. उ.	जून १२	०६ ४६)श.
(जून २०	सू. उ.	जून २०	१४ ३४)र.
(जून २३	१८ ४८	जून २४	सू. उ.)बु.

अमृतसिद्धियोग
(सन् २०१० ई.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१० ई.	घं. मि.	२०१० ई.	घं. मि.
(जुला. ६	सू. उ.	जुला. ६	१६ २२)मं.
(अग. १८	सू. उ.	अग. १८	०६ ५२)बु.
(अग. २८	०५ ४५	अग. २८	सू. उ.)शु.
(सितं. २४	११ ३६	सितं. २५	सू. उ.)शु.
(अक्तू. २२	सू. उ.	अक्तू. २२	२० २०)शु.
(नवं. २६	०६ ५४	नवं. २६	सू. उ.)गु.
(दिसं. २०	१६ ३२	दिसं. २१	सू. उ.)चं.
(दिसं. २३	१३ ५१	दिसं. २४	सू. उ.)गु.
(सन् २०११ ई.)			
(जन. १७	सू. उ.	जन. १८	०२ १०)चं.
(जन. २०	सू. उ.	जन. २०	२१ १८)गु.
(फर. ०६	०४ ५१	फर. ६	सू. उ.)मं.
(फर. १२	११ ३०	फर. १३	सू. उ.)श.
(फर. १४	सू. उ.	फर. १४	१२ ३१)चं.
(फर. १७	सू. उ.	फर. १७	०८ १४)गु.
(फर. २०	२० ५३	फर. २१	सू. उ.)र.
(मार्च ०८	११ १८	मार्च ६	सू. उ.)मं.
(मार्च १२	सू. उ.	मार्च १२	२० २४)श.
(मार्च २०	०७ ४६	मार्च २१	०४ ४२)र.
(मार्च २३	२१ ४५	मार्च २४	सू. उ.)बु.

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में बच्चे का जन्म हुआ हो। 'विश्वलग्न सारणी' उसके जन्मकालिक सूक्ष्म लग्न के स्पष्ट राशि–अंश आदि दैवज्ञ को केवल एक मिनट में बतला देती है। विस्तृत विज्ञापन' अन्तिम पृष्ठों पर देखें।

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2067 वि.) का

ग्रहोदयास्त विशेषांक

लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा

इस विशेषांक में पढ़िए–

(i) समस्याएं एवं समाधान....................पृष्ठ 259
(ii) चन्द्रमा का 'उपच्छाया ग्रहण' ग्रहण नहीं होता....................पृष्ठ 265

ग्रहों का उदयास्तकाल

(iii) सूर्योदयास्तसाधन....................पृष्ठ 267
(iv) चन्द्र एवम् मंगलादि ग्रहों के उदयास्तसाधन....................पृष्ठ 274
(v) चन्द्रदर्शन किस दिन होगा ?....................पृष्ठ 286
(vi) मंगल, बुध एवम् शनि का लोप–दर्शन....................पृष्ठ 288
(vi) गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन का निर्णय (लोप–दर्शन की सन् 2001 से 2050 ई. तक की तारीखें)....................पृष्ठ 293

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही तुरन्त (30–40 सैकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य Rs. 75/– + डाकव्यय Rs. 35/– है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल Rs. 65/– ही लिया जाएगा।

(पुस्तक अप्रैल, 2010 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी– प्रतीक्षा कीजिए।)

सं. 2068 वि. में दिए जाने वाले ज्ञानवर्धक एवम् शोधपूर्ण कुछ विशेष लेख

क्षमा चाहता हूँ। सं. 2067 वि. के पंचांग में प्रतिज्ञात– "शनि की साढ़ेसाती व ढैय्या का पूरा काल अशुभ नहीं होता" आदि पांच लेखों के स्थान पर इस वर्ष "ग्रहोदयास्त, लोप–दर्शन"सम्बन्धी यह महत्त्वपूर्ण विशेष उपयोगी लेख दिया जा रहा है। अगले वर्ष (सं. 2068 वि. के पंचांग में) इन पूर्वप्रतिज्ञात विषयों पर शोधपूर्ण लेख आपको अवश्य मिलेंगे।

– प्रियव्रत शर्मा

******

प्रो. प्रियव्रत शर्मा की एक और अद्भुत कृति

ग्रहोदयास्तनिर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीख तथा मंगल आदि के लोप–दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पाएंगे। प्राचीन एवम् नवीन ज्योतिर्गणित ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप–दर्शन का दिन जानने की जटिल गणित प्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनक रूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणितप्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0° से 62° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 45 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप–दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप–दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप–पूर्वदर्शन या पूर्वलोप–पश्चिमदर्शन किस तारीख को होगा; यह पुस्तक में दी गई विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप विद्युद्गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझें, यह बिल्कुल सच है। लेखक की प्रतिज्ञा है– ग्रहों के उदयास्त, लोप–दर्शन पर उनका यह प्रकाशन अपनी ही तरह का है।

पुस्तक अप्रैल, 2010 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी, प्रतीक्षा कीजिए।

मूल्य **Rs.** 250/– + डाकव्यय **Rs.** 50/–

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, 'अभिजित् प्रकाशन' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109, **Phone: 0172-2565 303**

समस्याएं और समाधान

लेखक :– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्) पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्रद्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें, और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

यहां इन समस्याओं के समाधान पढ़िए !

- सं. 2066 वि. में 5 अगस्त, 2009 ई. को 'रक्षाबन्धन' का शास्त्रीय काल कौन–सा था ?
- सं. 2066 वि. में चैत्र शुक्ल की 'दुर्गाष्टमी' वस्तुतः किस दिन थी ?
- सं. 2066 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में 21 मई, 2009 ई. को क्रूरयुत रेवती में 'नूतन गृहप्रवेश मुहूर्त्त' किस आधार पर लगाया गया था ?
- क्या 'मृत्युबाण' को 'वर–कन्या–वरण' में भी वर्जित किया जाए ?
- 'होमकालिक अग्निवास' के निर्णय में तिथिसंख्यागणना करते हुए क्या क्षीण और वृद्ध तिथि का विचार करना चाहिए ?
- क्या मघायुता भाद्र. अमा को संचित कुशा का शुभकृत्यों में प्रयोग वर्जित है ?
- मात्र जन्म/नामराशि के आधार पर की जाने वाली भविष्यवाणियां कहां तक विश्वसनीय हैं ?
- सं. 2065 वि. में मकरसंक्रान्ति 13 जनवरी, 2009 ई. को थी या 14 जनवरी, 2009 ई. को ?
- मासिक, वार्षिक आदि श्राद्ध के दिन 'मृताशौच या जननाशौच'' की स्थिति में क्या किया जाए ?
- क्या सूर्य के साथ उसी राशि–अंश पर स्थित शुक्र उदित (दृश्य) हो सकता है ?

समस्या– सं. 2066 वि. में 5 अगस्त, 2009 ई. को रक्षाबन्धन का काल विवादास्पद रहा। अधिकतर पंचांगकारों ने इस दिन भद्रा समाप्ति (17 घं. 12 मि. भा. स्टैं. टा.) के बाद, कुछ पंचांगकारों ने 'अभिजित् मुहूर्त्त' में और कुछेक ने परिहार–वाक्यों के आधार पर भद्रा में ही रक्षाबन्धन को उचित ठहराया। जिससे सामान्य धार्मिकलोग अनिश्चय का बुरी तरह शिकार रहे। रक्षाबन्धन के लिए इस दिन कौनसा काल शास्त्रीय था, कृपया स्पष्ट करें; ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति आने पर जन–सामान्य इस प्रकार भ्रान्त न हों–

डॉ. अनिरुद्ध भट्ट,
H.No. 273, Sector 12-A,
पंचकूला(हरियाणा)।

समाधान– रक्षाबन्धन अपराह्णव्यापिनी श्रावणपूर्णिमा में होता है। शास्त्रकारों ने भद्रा में इसका स्पष्टता से निषेध किया है। यदि अपराह्ण में भद्रा हो तो दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी पूर्णिमा होने पर दूसरे ही दिन अपराह्ण में रक्षाबन्धन होता है, क्योंकि जो तिथि सूर्योदयानन्तर त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी होती है, उसे धर्मशास्त्र पूरा दिन व्याप्त मानते हैं। यदि दूसरे दिन पूर्णिमा त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी न हो तब धर्मशास्त्र का निर्देश है कि पहिले दिन भद्रा की समाप्ति हो जाने पर ही रक्षाबन्धन करना चाहिए। इस स्थिति में कुछ शास्त्रकार प्रदोष के उत्तरार्ध में रक्षाबन्धन के लिए कहते हैं। यदि प्रदोष के उत्तरार्ध में भी भद्रा हो तो भद्रा समाप्ति के अनन्तर प्रदोष के बाद रात्रि में भी रक्षाबन्धन की शास्त्रकारों ने अनुमति दी है। इस प्रकार स्पष्ट है– धर्मशास्त्र भद्रा में रक्षाबन्धन की अनुमति किसी भी स्थिति में नहीं देते। **(देखें– निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, पुरुषार्थचिन्तामणि आदि)।**

इस उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है– 2066 वि. की श्रावण पूर्णिमा, 5 अगस्त, 2009 ई. को सायं 5 घं. 12 मि. (भा. स्टैं. टा.) तक भद्रादूषित थी। 6 अगस्त, 2009 ई. को वह त्रिमुहूर्त्त से न्यून थी। अतः इस वर्ष शास्त्रानुसार रक्षाबन्धन 5 अगस्त, 2009 ई. को सायं 5 घं. 12 मि. के बाद अथवा प्रदोष के उत्तरार्ध में ही करना शास्त्रानुमत्त था। **ध्यान रहे–** अधिकतर पंचांगकारों का भी यही मत था, लेकिन एक पंचांगकार ने इस मत को प्रामाणिक बतलाने के बावजूद भी भद्रापरिहार एवम् अन्य कुछ अनुष्ठानों द्वारा भद्रादोष निवारण के प्रकार बतलाकर भद्रा में भी रक्षाबन्धन को वैध सिद्ध करने का प्रयत्न किया, जिससे इस विषय में जनता दुविधा में पड़ गई। **ध्यान रहे–** भद्रा के परिहार की बात तो तब ग्राह्य होती जबकि स्पष्ट शास्त्रीय विकल्प न होता। जब स्पष्टतापूर्वक शास्त्रों का निर्देश है कि ऐसी स्थिति में भद्रान्त में रक्षाबन्धन करना चाहिए, तब भद्रा के परिहार के नियमों को यहां लागू करने का प्रयास शास्त्रीय एवम् तर्क–संगत नहीं था– **"अबाधेनोपपत्तौ बाधो न न्याय्यः"** जब बिना बाधा के कार्य निष्पन्न हो सकता है, तब वहां बाधा को आमन्त्रित करना न्याय–संगत नहीं है। जबकि धर्मशास्त्रकारों का स्पष्ट निर्देश है कि ऐसी स्थिति में भद्रासमाप्ति पर रक्षाबन्धन करना चाहिए तब भद्रा को रक्षाबन्धन में बाधा मानकर इसके परिहार का प्रयास क्या शास्त्रविरुद्ध तथा तर्कच्युत नहीं है ? किञ्च परिहार वाक्यों की प्रवृत्ति आपात स्थिति में ही होनी चाहिए– यह सर्वसम्मत सिद्धान्त है। रक्षाबन्धन के लिए भद्रासमाप्ति की प्रतीक्षा कर सकना असम्भव है– भला ऐसी कौनसी आपात स्थिति यहां हो सकती है ? इन्हीं पंचांगकर्त्ता महोदय ने अपने पंचांग में एक भद्रादोषनाशक छोटा सा; चार–पांच मिनट का विधान भी दिया है, जिसके अनुष्ठान से, इस पंचांगकर्त्ता का मत है, रक्षाबन्धन में भद्रा शुभकरी हो जाती है। अपिच इन्हीं पंचांगकर्त्ता ने भद्रा के बारह नाम भी दिए हैं जिनका उच्चारण कर भद्रा में रक्षाबन्धन करना शुभावह बतलाया है। समझ में नहीं आता पंचांगकर्त्ता महोदय का यह परामर्श कि भद्रा में कोई भी शुभकाम करना हो तो यह छोटा–सा अनुष्ठान कीजिए या इन 12 भद्रानामों का उच्चारण कीजिए; बस भद्रा के कुफल की चिन्ता छोड़ दीजिए, कहां तक युक्तियुक्त है। यहां यह जान लेना चाहिए कि इस प्रकार के भद्रादोषनाशक अनुष्ठानादि, जो इस पंचांगकर्त्ता ने उद्धृत किए हैं, ऐसे स्थलों पर ही करने योग्य हैं जहां प्रमादवश भद्रादि में शुभकृत्य हमसे हो गया हो।

स्पष्ट है–ये पंचांगकार इसपर्व को दिन के समय ही करने के आग्रह में हैं। लेकिन शास्त्रकार भद्राव्याप्ति की स्थिति में भद्रान्त में ही, प्रदोष या रात्रि को इस पर्व का विहितकाल बतलाते हैं। इस आदेश का उल्लंघन शास्त्र के प्रति अपराध है।

ध्यान रहे– होलिकादहन के कालनिर्णय में भद्रादोष के परिहार (भद्रामुखत्याग) के प्रयोग की अनुमति अपरिहार्य स्थितिवश शास्त्रों ने दी है। क्योंकि होलिकादहन का काल (प्रदोषकाल) नियत है, उसे दिन में नहीं किया जा सकता।

वैसे पंजाब आदि के अनेक लोग भद्रा की परवाह न करते हुए पूर्वाह्ण या प्रातः काल में ही रक्षाबन्धन कर लेते हैं। लेकिन शास्त्र इसकी अनुमति नहीं देता। उसके कथनानुसार यह राष्ट्र एवम् शासक के लिए अहितकर है–

" यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते कामचारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।"

समस्या– सं. 2066 में चैत्रशुक्ल की दुर्गाष्टमी कुछ पंचांगकारों ने 3 अप्रैल, 2009 ई. को लगाई थी, जबकि आपने इसे 2 अप्रैल को लगाया था। कौन से पक्ष को शास्त्रीय माना जाए ?

पं. चक्रधर भट्ट शास्त्री
कैथ माजरी, अम्बाला शहर (हरियाणा)।

समाधान– इसके समाधान के लिए पृष्ठ 96 देखिए।

समस्या– सं. 2066 के पंचांग में 21 मई, 2009 ई. को रेवती नक्षत्र में नूतन गृह–प्रवेश मुहूर्त्त लगाया गया है, जबकि रेवती में क्रूरग्रह मंगल की युति है। ऐसा क्यों ?

श्रीमहावीरप्रसाद पारीक, शास्त्री
बीदासर(झुंझुनुं), राजस्थान।

समाधान– मित्रराशिगत चन्द्र होने पर क्रूरयुतिदोष नहीं रहता–

" वर्गोत्तमगतः चन्द्रः स्वोच्चे वा मित्रराशिगः।
युतिदोषश्च न भवेद् दम्पत्योः श्रेयसे तदा।।"

यहां चन्द्र और मीनराशीश गुरु परस्पर मित्र–सम हैं। मित्र–सम सम्बन्ध को जातककारों ने मैत्री–सम्बन्ध के तुल्य ही माना है।

समस्या– मृत्युबाण का विचार विवाहमुहूर्त्त में ही मुहूर्त्तकार करते हैं। मुहूर्त्तग्रन्थों में भी इस बाण का विचार विवाह के लिए ही करने का निर्देश है। लेकिन कुछ ज्योतिषी लोग इसका विचार वर एवम् कन्यावरण में भी करते हैं। क्या यह ठीक है ?

आर.पी. उपाध्याय, अमौरा (गाज़ीपुर), उ.प्र.।

समाधान– मुहूर्त्तशास्त्रानुसार मृत्युबाण विवाह में, अग्निबाण गृहगोप में, नृपबाण नृपसेवा में, चौरबाण यात्रा में, रोगबाण व्रतबन्ध में वर्जित है। लेकिन इनसे सम्बद्ध विषयों में भी सम्भव हो तो इनका विचार करना निश्चित शुभकारक ही है। वर–कन्यावरण भी विवाह से सम्बद्ध है। अतः इनमें भी यदि कोई कर सके तो मृत्युबाण का विचार करना अच्छा है। वैसे मृत्यु, अग्नि, नृपकोप, चौर, रोग– ये सभी विपदाएं ही तो हैं। अतः इन्हें अन्य मुहूर्त्तों में भी तत्तत्सम्बद्ध हानि से बचने के लिए यथाशक्य विचारने में लाभ ही है। लेकिन विशिष्ट कृत्यों के मुहूर्त्तार्थ निर्धारित विचार्य विषयों को अन्यत्र सर्वत्र प्रयोग में लाने के प्रयास से सभी कृत्यों के शुभ मुहूर्त्तकाल असहयरूपेण संकुचित हो जाएंगे– यह तो स्पष्ट ही है।

समस्या– होमकालिक अग्निवास के निर्णयप्रसंग में ''सैका तिथिः वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः'' – इस वाक्य में शुक्ल प्रतिपदा से अभीष्ट (तात्कालिक) तिथि-पर्यन्त तिथि–संख्या का जो निर्देश है वहां क्या गणना में क्षीण और वृद्धिमती तिथियों को क्रमशः ऋण और धन करना चाहिए ?

पं. बनवारी लाल शर्मा,
मोहनपुरा (जयपुर), राज.।

समाधान– यहां तिथियों की क्षय–वृद्धि का विचार किए बिना ही तिथि–संख्या ग्रहण करनी चाहिए। **ध्यान रहे–** क्षीणतिथि समाप्त नहीं हो जाती, दूसरी तिथियों से इसका बस केवल यह अन्तर है कि वह सूर्योदय का स्पर्श नहीं करती। **किञ्च–** वृद्धतिथि भी एक ही रहती है, दूसरी तिथियों से इसका बस इतना ही अन्तर है कि वह दो सूर्योदयों का स्पर्श करती है।

समस्या– ''मघायुक्त भाद्र. अमा में उत्पाटित कुशा का प्रयोग केवल पितृकार्य में ही करना चाहिए, मंगल कार्यों में नहीं, क्योंकि अमातिथि और मघानक्षत्र दोनों के देवता पितर हैं। भाद्र. अमा की मघा से व्याप्त होने की स्थिति में शुभ कृत्यों के लिए कुशोत्पाटन ऋषिपंचमी के दिन करना चाहिए''– ऐसी हमारे यहां की प्रथा है। क्या इस प्रथा का कोई शास्त्रीय आधार है ?

-पं. कर्मचन्द वाशिष्ठ,
चोगान, खन्नी(कांगड़ा),हि.प्र.।

समाधान– कुशोत्पाटन केवल भाद्र. अमा में ही शास्त्रों में निर्दिष्ट है, ऋषि पंचमी के दिन नहीं। मघायुता अमा में उत्पाटित कुशा का प्रयोग केवल पितृकार्य में ही करना चाहिए–ऐसी भी कोई शास्त्रव्यवस्था नहीं है। पितृदेवताक मघा नक्षत्र से युता अमा में संचित कुशा को मंगलकार्य में अप्रयोज्य मानने की बात तर्क या किसी शास्त्रीय प्रमाण से समर्थित नहीं होती। वैसे पितर देवता की कोटि में आते हैं। **किञ्च–** मघा नक्षत्र में तो विवाहादि शुभकृत्य भी किए जाते हैं। अतः इन दोनों के संगम को शुभकृत्यार्थ कुशोत्पाटन के लिए वर्ज्य नहीं होना चाहिए। **ध्यान रहे–** अमावस्या भी पितृदेवताक तिथि है। अतः इसमें संचित कुशाओं को भी आपकी परम्परानुसार शुभकर्म में त्याज्य मानना चाहिए। स्पष्ट है आपके यहां यह स्थानीय प्रथामात्र ही है।

समस्या– विश्व की जनसंख्या (6,50,00,00,000) को 12 राशियों में विभाजित करने पर प्रत्येक राशि वाली जनसंख्या लगभग 54 करोड़ बैठती है। समाचारपत्रों, T.V. Channels और पंचांगों में मात्र राशि के आधार पर की जाने वाली दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवम् वार्षिक भविष्यवाणियां इतनी जनसंख्या के लिए इस प्रकार सदृश हो सकती हैं क्या ?

श्री जगदीश यायावर,
लाडनूं (नागौर), राज.।

समाधान– जन्मराशि या नामराशि पर आधारित ये भविष्यवाणियां फलितज्योतिष के राशिफल सिद्धान्त का उन्मुक्त प्रयोग है। भविष्यकथन के असंख्य सिद्धान्तों में से एकमात्र जन्म/नामराशि को आधार लेकर उसमें सूर्य–चन्द्रादि की सामान्यस्थिति मात्र से एक ही राशि वाले 54 करोड़ लोगों के दैनिक, साप्ताहिक आदि भविष्य का कथन तर्क से पूरी तरह च्युत है। आश्चर्य है ऐसी नितान्त सामान्य (Extremely General) अक्षम्यरूप से स्थूल आधार पर आश्रित भविष्यवाणियों को अपने जीवन की दैनिक, साप्ताहिक आदि घटनाओं से संबद्ध करने वाले **'आस्थावान्'** ज्योतिष प्रेमियों की यहां कमी नहीं है।

समस्या– सन् 2009 ई. में मकर संक्रान्ति 13 जनवरी, मंगलवार को 57 घ. 34 प. पर (चण्डीगढ़ में) घटित हुई। इसका पुण्यकाल 14 जनवरी को मध्याह्न से पूर्व था। सभी भारतीय पंचांगकार इस बारे एकमत थे। लेकिन कुछ स्थलों पर मकर संक्रान्तिपर्व 13 और कुछ स्थलों पर 14 जनवरी को मनाया गया। T.V. के कुछ Channels ने तो मकर संक्रान्ति को स्पष्टरूप से 14 जनवरी के दिन ही घोषित किया। इसके कारण पश्चिमोत्तर भारत (पंजाब आदि) में मनाई जाने वाली लोहड़ी भी, जो मकर संक्रान्तिदिन से एक दिन पूर्व होती है, इन Channels पर 13 जनवरी को ही दर्शाई गई, जबकि वह वास्तव में 12 जनवरी को थी। यह मतभेद क्यों हुआ ?

पं. रामदास शर्मा, ज्योतिर्विद,
खिज़राबाद(मोहाली),पं.।

समाधान– जिस वार में सूर्य राशि बदलता है उसी वार को पश्चिमोत्तरी भारत (पंजाब, हरियाणा, हिमाचल आदि) में संक्रान्तिपर्व माना जाता है और वहां उसी दिन सौरमास प्रारम्भ (सौरमास का पहिला प्रविष्टा) होता है। [यहां यह जानलेना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार वार का अर्थ सूर्योदय से प्रारम्भ होकर दूसरे सूर्योदय पर समाप्त होने वाला दिन है।] यदि संक्रान्तिकाल उस दिन (उस वार को) अर्धरात्रि से पूर्व हो तो संक्रान्ति का पुण्यकाल उसी दिन, यदि वह अर्धरात्रि के बाद हो तो पुण्यकाल दूसरे दिन होता है– यह शास्त्रनिर्देश है। पुण्यकाल में संक्रान्ति निमित्तक स्नान, दान, जपादि करना चाहिए। पंजाब आदि पश्चिमोत्तरी भारतीय प्रान्तों में सूर्य के राशि–परिवर्तन वाले दिन ही संक्रान्ति का पर्व मनाने और तदर्थ स्नान–दानादि करने की परम्परा है। यदि संक्रान्तिपुण्यकाल संक्रान्तिदिन से दूसरे दिन हो तो भारत के अन्य प्रदेशों में संक्रान्तिदिन और संक्रान्तिपुण्यकाल दिन भिन्न–भिन्न माने जाते हैं। सं. 2065 वि. में सूर्य का मकर राशि में प्रवेश 13/14 जनवरी, 2009 ई. की मध्यरात्रि के बाद 14 जनवरी, 2009 ई. बुधवार को सूर्योदय से पूर्व हुआ था। अतः पश्चिमोत्तर भारत में संक्रान्ति का दिन मंगलवार, 13 जनवरी को ही माना गया, क्योंकि भारतीयज्योतिष अनुसार उस समय (संक्रान्ति के समय) मंगलवार ही था। क्योंकि परम्परा अनुसार पश्चिमोत्तर भारतीयपर्व लोहड़ी संक्रान्तिदिन से पूर्ववर्ती दिन में मनाया जाता है, अतः लोहड़ी को सभी पंचांगकारों ने 12 जनवरी, 2009 ई. चन्द्रवार को ही दर्शाया, जो कि बिल्कुल ठीक था। क्योंकि हरिद्वार, प्रयाग आदि में संक्रान्तिनिमित्तक स्नान–दान–जपादि संक्रान्ति के दिन नहीं, अपितु संक्रान्ति के पुण्यकाल में ही किया जाता है। अतः वहां इस मकर संक्रान्तिनिमित्तक स्नान–दान–जपादि इसके पुण्यकाल में 14 जनवरी, बुधवार को ही लोगों में किया। इससे संक्रान्ति के वार या तारीख में कुछ ज्योतिषियों को भ्रान्ति हुई, जिन्होंने समाचारपत्रों एवम् T.V. Channels वालों को सूर्यसंक्रान्ति का दिन 14 जनवरी बतला डाला। जो वस्तुतः संक्रान्ति–पुण्यकालदिन था। संक्रान्तिदिन तो मंगलवार, 13 जनवरी, 2009 ई. था। संक्रान्तिदिन से एक दिन पूर्व होने वाला लोहड़ीपर्व भी इसी भ्रान्ति के फलस्वरूप संक्रान्ति–पुण्यकालदिन (14 जनवरी, 2009 ई.) से एक दिन पूर्व (13 जनवरी को ही) इन भ्रान्त समाचारपत्रादि ने घोषित कर डाला।

यह बड़े दुःख की बात है, समाचारपत्र एवम् T.V. Channels वाले लोग हमारे धार्मिकपर्वों के दिनादि के बारे में प्रामाणिक ज्योतिर्विदों के सम्पर्क में नहीं रहते। ऐसे विवादास्पद विषयों के बारे में स्पष्टीकरण के लिए स्तरीय पंचागों, पंचांगकारों या इस विषय के विशेषज्ञों से उन्हें परामर्श लेना चाहिए।

समस्या– नियतकालिक मासिक, वार्षिक, चातुर्वार्षिक श्राद्धों को जननाशौच एवम् मृताशौच की स्थिति में कब करना चाहिए ?

पं. सन्तराम शर्मा,
मु. सेरा, डा. पारनु (सोलन),हि.प्र.।

समाधान– जननाशौच एवम् मृताशौच की स्थिति में नियतकालिक श्राद्धों को अशौच की शुद्धि के अनन्तर ही करना चाहिए अथवा अशौच निवृत्त होने के बाद अमावस्या में भी ये श्राद्ध किए जा सकते हैं। व्यास का वचन है–

> **“श्राद्ध-विघ्ने समुत्पन्ने त्वन्तरा मृतसूतके।**
> **अमावस्यां प्रकुर्याद्वै शुद्धावेके मनीषिणः।।”**

समस्या– 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' सं. 2066 वि. में 28–3–2009 को शुक्र का पूर्व में उदय दर्शाया गया है। आज तारीख 3–4–2009 को प्रातः पूर्वी आकाश में वह दिखाई भी पड़ रहा है। लेकिन सूर्य–शुक्र दोनों 28–3–2009 को 11 रा. 13 अंश पर स्थित हैं। इस स्थिति में शुक्र को सर्वथा सूर्ययुत होने के कारण दृश्य (उदित) नहीं होना चाहिए था। सूर्य से अंशात्मक युति होने पर भी इस दिन शुक्र उदित (दृश्य) क्योंकर हुआ ? कृपया स्पष्ट करें ।

पं. मुकेश शर्मा,
नेहरु नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)।

समाधान– ग्रह की सूर्य से अंशात्मक या कलात्मकयुति का अभिप्राय यह नहीं कि ग्रह सूर्य कक्षा (क्रान्तिवृत्त) में सूर्य के साथ बैठा है। **ध्यान रहे–** कोई भी ग्रह क्रान्तिवृत्त में नहीं घूमता। सभी ग्रहों की अपनी–अपनी भिन्न–भिन्न कक्षाएं हैं और वे सूर्यकक्षा (क्रान्तिवृत्त) से अलग हैं। ये ग्रह अपनी–अपनी कक्षाओं में ही घूमते हैं। इनकी ये कक्षाएं क्रान्तिवृत्त से थोड़ी–थोड़ी दूरी पर स्थित हैं, जो क्रान्तिवृत्त को अपने एक पूर्णभ्रमण में दो स्थानों पर काटती हैं, जिन्हें इन ग्रहों का सम्पात कहा जाता है। सम्पात बिन्दु पर ग्रह वस्तुतः क्रान्तिवृत्त में होता है। इस से आगे–पीछे इसका कक्षावृत्त से अन्तर उत्तर या दक्षिण की ओर घटता–बढ़ता रहता है। ग्रह अपनी कक्षा में कक्षावृत्त से उत्तर या दक्षिण की ओर जितनी अंशात्मक दूरी पर स्थित होता है उसे ग्रह का क्रमशः उत्तर या दक्षिण **'शर'** कहते हैं। यह शर ग्रह की कक्षावृत्त से परमाल्प दूरी बतलाता है। या यूं कहिए– यह शर ग्रह से कक्षावृत्त का समीपतम बिन्दु बतलाता है। राशियों की स्थिति कक्षावृत्त में है। कक्षावृत्त को ही उसके किसी एक बिन्दु को शून्य मानकर पश्चिम से पूर्व की ओर 21600 कलाओं, 360 अंशों, अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों व मेषादि 12 राशियों में विभाजित किया हुआ है। ग्रहों की कक्षाओं में यह विभाजन नहीं है। अपनी कक्षा में स्थित ग्रह से क्रान्तिवृत्त का जो समीपतम बिन्दु है, उसके राशि–अंशादि ही उस ग्रह के राशि–अंशादि माने जाते हैं।

इस उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है, 28 मार्च, 2009 ई. को प्रातः सूर्य और शुक्र दोनों के राश्यादि (11 रा. 13 अं.) समान होने पर भी ये दोनों एकत्र स्थित नहीं हैं। साथ दिया गया चित्र देखें। सूर्य अपनी कक्षावृत्त में 11 रा. 13 अं. पर है और शुक्र 8.1 अंशतुल्य (उत्तरशर की) दूरी पर अपनी कक्षा में 11 रा. 13 अं. पर ही स्थित है। क्योंकि इस समय शुक्र अपनी कक्षा में उस बिन्दु पर स्थित है जो कक्षावृत्त के 11 रा. 13 अं. वाले बिन्दु के समीपतम है। अतः इसके भोगांश (राश्यादि) भी सूर्य के भोगांश (राश्यादि) के समान 11 रा. 13 अं. ही हैं। स्पष्ट है यहां शुक्र पूर्वी क्षितिजस्थ सूर्य से साक्षात् युत नहीं है; यह राश्यादि में सूर्य के समान होने पर भी सूर्य से उत्तर की ओर 8.1 अंश की दूरी पर पूर्वी क्षितिज से कुछ ऊपर स्थित है। **(चित्र देखिए)**। भारतीय अक्षांश उत्तर हैं, इसलिए 8.1 अंश उत्तरशर वाला यह शुक्र 28 मार्च के आस–पास पूर्वी क्षितिज से लगभग 6.4 अंश ऊपर (पूर्वी क्षितिज पर लम्ब रूप में) उठा हुआ है। 6.4 अंश शुक्र के लोप–दर्शन के उन्नतांश हैं। जब शुक्र प्रातः सूर्योदय के समय या सायं सूर्यास्त के समय क्रमशः पूर्व या पश्चिम क्षितिज से 6.4 अंश उन्नत (ऊपर उठा हुआ) रहता है तब इसका उदय (दर्शन) या अस्त (लोप) होता है। इसीलिए यहां 28–3–2009 ई. को शुक्र लगभग सारे भारतवर्ष में दिखाई पड़ा।

28 मार्च, 2009 ई. को प्रातः पूर्वी क्षितिज पर सूर्य–शुक्र की स्थिति

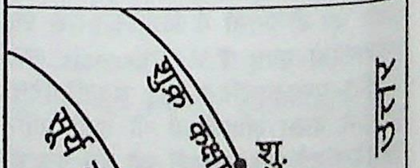

प सू उ क्ष = पूर्वी क्षितिज
सू = सूर्य (11 रा. 13 अं.)
शु = शुक्र (11 रा. 13 अं.)
सू शु = शुक्र का शर (= उ 8°.1)
शु उ = शुक्र के उन्नतांश (= 6°.4)

जब सूर्य–शुक्रयुति फरवरी से अप्रैल मध्य तक के काल में घटित होती है तब इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हुआ करती है।

ग्रहों का दैनिक उदयास्तकाल

सूर्य तथा अन्य सभी चन्द्रादि ग्रह पृथ्वी के दैनिक अक्षभ्रमण के कारण प्रतिदिन पूर्व में उदित होकर पश्चिम में अस्त होते रहते हैं। सूर्य जब उदित होता है, तब दिन का प्रारम्भ और जब अस्त होता है तब रात्रि का प्रारम्भ होता है। चन्द्र आदि अन्य ग्रहों के उदयास्त का इस दिन–रात्रि से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे तो अपनी–अपनी दैनिक गति से, जो एकरूप नहीं है अर्थात् बदलती रहती है, सूर्य के कभी समीप तो कभी उससे दूर होते रहते हैं, जिससे वे दिन या रात्रि के किसी भी क्षण में पृथ्वी के अक्षभ्रमण के ही कारण पूर्व में उदय होकर पश्चिम में अस्त होते रहते हैं। प्रत्येक ग्रह 24 घंटों में सामान्यतः एकबार उदित और एकबार अस्त अवश्य होता है, अतः ग्रहों के इस उदयास्त को उनका **"दैनिक उदयास्त"** कहा जाता है। सूर्य एवम् चन्द्र के दैनिक उदयास्त का अन्य भौमादि ग्रहों के उदयास्त की अपेक्षा ज्योतिषशास्त्र एवम् सामान्य जनव्यवहार की दृष्टि से कहीं अधिक महत्त्व है। यहां हम सूर्य आदि इन सभी ग्रहों के दैनिक उदयास्तकाल के साधन की सरल प्रक्रिया से अपने पाठकों को अवगत कराएंगे। [**ध्यान रहे–** इस प्रक्रिया में सर्वत्र स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. का ही प्रयोग किया गया है।]

सबसे पहले हम सूर्य के उदयास्तकाल का, जिस पर विश्वभर का पूर्ण कालव्यवहार आधारित है, साधनप्रकार बतलाएंगे–

सूर्योदयास्तकाल–साधन

वैसे तो फलादेश एवं जनव्यवहार के लिए मिनट तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल ही पर्याप्त होता है, फिर भी यदि कोई दैवज्ञ सूक्ष्मतम (सेकण्ड तक सूक्ष्म) सूर्योदयास्तकाल जानना चाहता है तो उसे निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाना होगा। इस प्रक्रिया द्वारा ज्ञात सूर्योदयास्तकाल में 4–5 सेकण्ड से अधिक अशुद्धि नहीं होगी, बशर्ते कि स्थानीय अक्षांश, रेखांश तथा तात्कालिक सूर्यभोगांश (स्पष्टसूर्य) अपेक्षित सूक्ष्मता वाले हों।

सूर्योदयकाल ज्ञात करने के लिए अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर के अलावा स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. (अभीष्ट नगर/ग्राम जिस देश/कालक्षेत्र में स्थित है, उस देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा.) के अनुसार प्रातः 6 बजे अभीष्ट तारीख के निम्नांकित पदार्थ भी मालूम कीजिए–

(i) **सायन सूर्यभोगांश (रा. अं. क.)।**
(ii) **सूर्यक्रान्ति (अं. क.)।**
(iii) **वेलान्तर–संस्कार (मि.से.)।**
(iv) **स्थानीय चर (मि.से.)।**

इसी प्रकार सूर्यास्तकाल जानने के लिए भी अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश, स्टैंडर्ड अंतर तथा स्थानीय स्टैं. टा. के अनुसार 18 घं. 00 मि. पर अभीष्ट तारीख को निम्नांकित पदार्थ मालूम कीजिए–

(i) **सायन सूर्यभोगांश (रा. अं. क.)।**
(ii) **सूर्यक्रान्ति (अं. क.)।**
(iii) **वेलान्तर–संस्कार (मि.से.)।**
(iv) **स्थानीय चर (मि.से.)।**

भूभा एवम् उपच्छाया

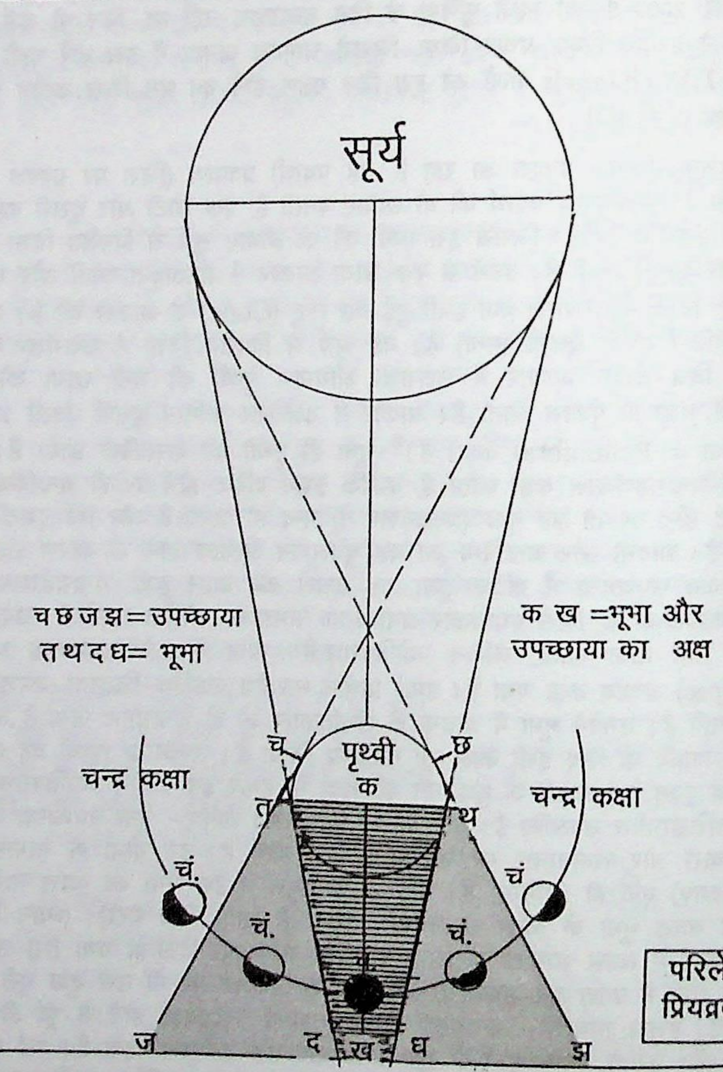
सूर्य
चछजझ=उपच्छाया
तथदध= भूभा
क ख =भूभा और उपच्छाया का अक्ष
च
छ
पृथ्वी
क
त
थ
चन्द्र कक्षा
चन्द्र कक्षा
चं.
चं.
चं.
चं.
ज
द
ख
ध
झ

परिलेख :–
प्रियव्रत शर्मा

भूभा और उपच्छाया के बारे में कुछ तथ्य

(i) भूभा चन्द्रकक्षा से कुछ लाख किलोमीटर की दूरी पर शून्य हो जाती है। जहां यह शून्य होती है, उसी स्थान पर उपच्छाया भी समाप्त हो जाती है।

(ii) चन्द्रग्रहण के समय चन्द्रकक्षा में भूभा एवम् उपच्छाया के व्यास का मान चन्द्रगति की न्यूनाधिकता पर निर्भर करता है। चन्द्रगति की परमाल्पता पर भूभा और उपच्छाया के व्यास परमाल्प (क्रमशः लगभग 75 कला और 168 कला) तथा इसकी परमता पर इसके व्यास परम (क्रमशः लगभग 92 कला और 190 कला) होते हैं।

(iii) भूभा और उपच्छाया– दोनों क्रान्तिवृत्त में सूर्य से 180 अंश की दूरी पर प्रति चार मिनट में एक अंश की दर से पूर्व से पश्चिम की ओर निरन्तर घूमती रहती हैं।

ग्रहों का दैनिक उदयास्तकाल

सूर्य तथा अन्य सभी चन्द्रादि ग्रह पृथ्वी के दैनिक अक्षभ्रमण के कारण प्रतिदिन पूर्व में उदित होकर पश्चिम में अस्त होते रहते हैं। सूर्य जब उदित होता है, तब दिन का प्रारम्भ और जब अस्त होता है तब रात्रि का प्रारम्भ होता है। चन्द्र आदि अन्य ग्रहों के उदयास्त का इस दिन–रात्रि से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे तो अपनी–अपनी दैनिक गति से, जो एकरूप नहीं है अर्थात् बदलती रहती है, सूर्य के कभी समीप तो कभी उससे दूर होते रहते हैं, जिससे वे दिन या रात्रि के किसी भी क्षण में पृथ्वी के अक्षभ्रमण के ही कारण पूर्व में उदय होकर पश्चिम में अस्त होते रहते हैं। प्रत्येक ग्रह 24 घंटों में सामान्यतः एकबार उदित और एकबार अस्त अवश्य होता है, अतः ग्रहों के इस उदयास्त को उनका **"दैनिक उदयास्त"** कहा जाता है। सूर्य एवम् चन्द्र के दैनिक उदयास्त का अन्य भौमादि ग्रहों के उदयास्त की अपेक्षा ज्योतिषशास्त्र एवम् सामान्य जनव्यवहार की दृष्टि से कहीं अधिक महत्त्व है। यहां हम सूर्य आदि इन सभी ग्रहों के दैनिक उदयास्तकाल के साधन की सरल प्रक्रिया से अपने पाठकों को अवगत कराएंगे। [**ध्यान रहे**– इस प्रक्रिया में सर्वत्र स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. का ही प्रयोग किया गया है।]

सबसे पहले हम सूर्य के उदयास्तकाल का, जिस पर विश्वभर का पूर्ण कालव्यवहार आधारित है, साधनप्रकार बतलाएंगे–

सूर्योदयास्तकाल–साधन

वैसे तो फलादेश एवं जनव्यवहार के लिए मिनट तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल ही पर्याप्त होता है, फिर भी यदि कोई दैवज्ञ सूक्ष्मतम (सेकण्ड तक सूक्ष्म) सूर्योदयास्तकाल जानना चाहता है तो उसे निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाना होगा। इस प्रक्रिया द्वारा ज्ञात सूर्योदयास्तकाल में 4–5 सेकण्ड से अधिक अशुद्धि नहीं होगी, बशर्ते कि स्थानीय अक्षांश, रेखांश तथा तात्कालिक सूर्यभोगांश (स्पष्टसूर्य) अपेक्षित सूक्ष्मता वाले हों।

सूर्योदयकाल ज्ञात करने के लिए अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर के अलावा स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. (अभीष्ट नगर/ग्राम जिस देश/कालक्षेत्र में स्थित है, उस देश/कालक्षेत्र के स्टैं. टा.) के अनुसार प्रातः 6 बजे अभीष्ट तारीख के निम्नांकित पदार्थ भी मालूम कीजिए–

(i) **सायन सूर्यभोगांश (रा. अं. क.)।**
(ii) **सूर्यक्रान्ति (अं. क.)।**
(iii) **वेलान्तर–संस्कार (मि.से.)।**
(iv) **स्थानीय चर (मि.से.)।**

इसी प्रकार सूर्यास्तकाल जानने के लिए भी अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश, स्टैंडर्ड अंतर तथा स्थानीय स्टैं. टा. के अनुसार 18 घं. 00 मि. पर अभीष्ट तारीख को निम्नांकित पदार्थ मालूम कीजिए–

(i) **सायन सूर्यभोगांश (रा. अं. क.)।**
(ii) **सूर्यक्रान्ति (अं. क.)।**
(iii) **वेलान्तर–संस्कार (मि.से.)।**
(iv) **स्थानीय चर (मि.से.)।**

सायन सूर्य की रा. अं. क. द्वारा आगे पृष्ठ 270 .पर दिए गए " क्रान्ति–वेलान्तर कोष्ठक " से क्रान्ति (सूर्यक्रान्ति की अं. क.) तथा वेलान्तर के मि. से. ज्ञात कर लें। क्योंकि, यह कोष्ठक एक–एक अंश के अन्तर पर क्रान्ति और वेलान्तर बतलाता है, अतः सूर्य की शेषकलाओं से अनुपात द्वारा क्रान्ति और वेलान्तर का यथार्थ मान (कला तक सूक्ष्मक्रान्ति और सेकण्ड तक सूक्ष्म वेलान्तर) जान लीजिए। क्रान्ति की दिशा (उत्तर या दक्षिण) तथा वेलान्तर का चिह्न (धन या ऋण) भी इस कोष्ठक से मालूम कर लीजिए। इस प्रकार ज्ञात क्रान्ति की अं. क.तथा अभीष्ट नगर के अक्षांश की अं. क. द्वारा आगे पृष्ठ. 272 .पर दिए गए 'चरकोष्ठक' से चर के मि. से. (या घं. मि. से.) जानिए। 'चरकोष्ठक' में क्रान्ति और अक्षांश एक–एक अंश के अन्तर पर दिए गए हैं, अतः क्रान्ति और अक्षांश की शेषकलाओं के लिए यहां अलग–अलग दो बार (एक ओर क्रान्ति की कलाओं के लिए और दूसरी ओर अक्षांश की कलाओं के लिए) अनुपात करके सेकण्ड तक शुद्ध चर प्राप्त करना चाहिए। **इस प्रकार प्राप्त वेलान्तर और चर** द्वारा अभीष्ट नगर का सूक्ष्म (लगभग सेकण्ड तक शुद्ध) **सूर्योदय** एवं **सूर्यास्तकाल** इस तरह जान लीजिए–

अभीष्ट तारीख के प्रातः 6 बजे के चर और वेलान्तर के मिनट, सेकण्डों (या घं. मि. से.) को 6 घं. में इनके चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट तारीख और नगर का सूर्योदयकाल (स्था.म.का.) बन जाएगा।

इसी तरह अभीष्ट तारीख के 18 बजे के चर और वेलान्तर को 18 घं. में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट तारीख और नगर का सूर्यास्तकाल (स्था.म.का.) प्राप्त हो जाएगा।

सूर्योदय और सूर्यास्त के स्था. म. का. में अभीष्ट नगर का स्टैं. अं. चिह्न के विपरीत जोड़ने या घटाने पर स्थानीय स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्तकाल प्राप्त होंगे।

ध्यान रहे– चर का चिह्न **'चर कोष्ठक'** से ज्ञात नहीं होता है। चर का चिह्न कब धन(+) माना जाएगा और कब ऋण (–), इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

अभीष्ट नगर का अक्षांश और क्रान्ति– दोनों यदि एक ही दिशा के (दोनों उत्तर या दोनों दक्षिण दिशा के) हों तो चर उदय (सूर्योदय बनाने) के लिए ऋण (–) और अस्त (सूर्यास्त बनाने) के लिए धन (+) होगा। यदि दोनों की दिशाएं भिन्न–भिन्न हों तब चर का चिह्न इसके विपरीत; (उदय के लिए धन और अस्त के लिए ऋण) होगा।

उदयास्त की पूरी प्रक्रिया स्पष्ट करने के लिए नीचे उदाहरण दिया जा रहा है–

उदाहरण :– वाराणसी में 10 नवंबर, सन् 2001 ई. को सूक्ष्मतम सूर्योदय, सूर्यास्तकाल जानने हैं।

सूर्योदयकाल साधन –

10 नवंबर, सन् 2001 ई. को 6 घं. 00 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सायनसूर्य 7 रा. 17 अं. 41 क., तदनुसार **" क्रान्ति–वेलान्तर कोष्ठक "** से सूर्यक्रान्ति द. 17 अं. 6 क. और वेलान्तर –16 मि. 3 से. मिले। क्रान्ति 17 अं. 6 क. और वाराणसी के अक्षांश 25 अं. 20 क. द्वारा **' चर कोष्ठक '** से चर +33 मि. 29 से. मिला। (क्योंकि, यहां अक्षांश उत्तर और क्रान्ति दक्षिण दिशा की है, अर्थात् ये दोनों परस्पर भिन्न–भिन्न दिशा की हैं, अतः उदयकाल के लिए यह चर पूर्वोक्त नियमानुसार धन (+) माना गया है)। **अब वाराणसी में**

10 नवंबर, सन् 2001 ई. को सूक्ष्मतम सूर्योदयकाल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार ज्ञात होगा–

घं.	मि.	से.	
6	00	00	
+	33	29	(चर)
6	33	29	
–	16	03	(वेलान्तर)
6	17	26	[सूर्योदयकाल (स्था.म.का.)]
–	02	00	[वाराणसी का स्टैं. अं. (चिह्न बदलकर)]
6	15	26	[10 नवं., सन् 2001 ई. को वाराणसी में सूर्योदयकाल (भा. स्टैं. टा.)]

सूर्यास्तकाल साधन–

10 नवंबर, सन् 2001 ई. को 18 घं. 00 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सायनसूर्य 7 रा. 18 अं. 11 क., तदनुसार **"क्रान्ति–वेलान्तर कोष्ठक"** से क्रान्ति द. 17 अं. 15 क. और वेलान्तर –16 मि. 00 से. मिले। क्रान्ति 17 अं. 15 क. और वाराणसी के अक्षांश 25 अं. 20 क. द्वारा **'चर कोष्ठक'** से चर –33 मि. 48 से. मिला। (अक्षांश और क्रान्ति की भिन्न–भिन्न दिशाओं के कारण अस्तकाल के लिए यह चर ऋण (–) चिह्न वाला है।) अब वाराणसी में 10 नवंबर, सन् 2001 ई. को सूर्यास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) इस तरह जाना जाएगा–

घं.	मि.	से.	
18	00	00	
–	33	48	(चर)
17	26	12	
–	16	00	(वेलान्तर)
17	10	12	[सूर्यास्तकाल (स्था.म.का.)]
–	02	00	[वाराणसी का स्टैं. अं. (चिह्न बदलकर)]
17	08	12	[10 नवं., सन् 2001 ई. को वाराणसी में सूर्यास्तकाल (भा.स्टैं.टा.)]

ठीक, इसी प्रकार भारत से अन्य किसी भी देश के नगर का सूक्ष्मतम सूर्योदय–सूर्यास्तकाल जाना जा सकता है। यहां यह ध्यान रखना जरूरी है कि– जिस देश/क्षेत्र के नगर का उदय–अस्त साधन किया जा रहा है, उस देश/क्षेत्र के स्टैं. टा. के अनुसार ही प्रातः 6 बजे और 18 बजे का सायनसूर्य स्पष्ट करके तदनुसार क्रान्ति, वेलान्तर, चर जानकर पूर्वोक्त पद्धति अनुसार वहां का सूर्योदय–सूर्यास्त ज्ञात करना होगा।

इस पूर्वोक्त प्रक्रिया से ज्ञात सूर्योदय–सूर्यास्तकाल ज्योतिषशास्त्रीय ही होंगे। अर्थात् ये काल सूर्य–बिम्बकेन्द्र का किरणवक्रीभवन संस्काररहित उदयास्त बतलाएंगे। **ध्यान रहे**– लग्नादि–साधनार्थ इष्टकाल बनाने के लिए इन्हें ही प्रयोग में लाना चाहिए। सूर्यबिंब के पूर्वी क्षितिज में दृश्य उदय और पश्चिमी क्षितिज में दृश्य अस्तकाल के लिए इन ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकालों में क्रमशः लगभग $3\frac{1}{2}$ मिनट ऋण और धन करने होंगे।

क्रान्ति–वेलान्तर सारणी (भाग 1)

सायन सूर्य राशि▶	(0) मेष				(1) वृष				(2) मिथुन				(3) कर्क				(4) सिंह				(5) कन्या			
अंश ▼	क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर	
	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.
0	उ. 0	00	+7	28	उ.11	28	−1	02	उ.20	09	−3	31	उ.23	27	+1	39	उ.20	09	+6	22	उ.11	28	+2	39
1	0	24	7	10	11	49	1	15	20	22	3	27	23	26	1	53	19	56	6	24	11	07	2	22
2	0	48	6	52	12	10	1	27	20	34	3	22	23	26	2	06	19	43	6	25	10	46	2	05
3	1	12	6	33	12	31	1	39	20	46	3	17	23	25	2	20	19	29	6	26	10	24	1	48
4	1	35	6	15	12	51	1	51	20	57	3	11	23	23	2	33	19	16	6	25	10	03	1	30
5	1	59	5	57	13	11	2	02	21	08	3	05	23	21	2	46	19	01	6	24	9	41	1	12
6	2	23	5	38	13	31	2	12	21	19	2	58	23	18	3	00	18	47	6	23	9	19	0	54
7	2	47	5	20	13	51	2	22	21	29	2	50	23	16	3	13	18	32	6	21	8	57	0	35
8	3	10	5	02	14	11	2	31	21	39	2	42	23	12	3	25	18	16	6	18	8	34	+0	16
9	3	34	4	43	14	30	2	40	21	48	2	34	23	08	3	37	18	01	6	14	8	12	−0	03
10	3	58	4	25	14	49	2	49	21	57	2	25	23	04	3	49	17	45	6	10	7	49	0	23
11	4	21	4	07	15	08	2	57	22	06	2	16	22	59	4	01	17	28	6	05	7	27	0	44
12	4	45	3	48	15	26	3	04	22	14	2	06	22	54	4	12	17	12	6	00	7	04	1	04
13	5	08	3	30	15	45	3	11	22	22	1	56	22	49	4	23	16	55	5	54	6	41	1	24
14	5	31	3	12	16	03	3	17	22	29	1	46	22	42	4	34	16	38	5	47	6	18	1	45
15	5	55	2	54	16	20	3	22	22	36	1	35	22	36	4	44	16	20	5	40	5	55	2	06
16	6	18	2	36	16	38	3	27	22	42	1	23	22	29	4	54	16	03	5	32	5	31	2	27
17	6	41	2	19	16	55	3	32	22	49	1	11	22	22	5	04	15	45	5	23	5	08	2	49
18	7	04	2	02	17	12	3	36	22	54	1	00	22	14	5	13	15	26	5	14	4	45	3	10
19	7	27	1	44	17	28	3	39	22	59	0	48	22	06	5	22	15	08	5	04	4	21	3	32
20	7	49	1	27	17	45	3	41	23	04	0	35	21	57	5	30	14	49	4	54	3	58	3	53
21	8	12	1	11	18	01	3	43	23	08	0	22	21	48	5	38	14	30	4	43	3	34	4	15
22	8	34	0	55	18	16	3	44	23	12	−0	10	21	39	5	45	14	11	4	31	3	10	4	37
23	8	57	0	39	18	32	3	45	23	16	+0	03	21	29	5	52	13	51	4	18	2	47	4	59
24	9	19	0	23	18	47	3	45	23	18	0	17	21	19	5	58	13	31	4	06	2	23	5	21
25	9	41	+0	08	19	01	3	44	23	21	0	31	21	08	6	04	13	11	3	53	1	59	5	43
26	10	03	−0	06	19	16	3	43	23	23	0	44	20	57	6	09	12	51	3	39	1	35	6	04
27	10	24	0	20	19	29	3	41	23	25	0	58	20	46	6	13	12	31	3	25	1	12	6	25
28	10	46	0	35	19	43	3	38	23	26	1	12	20	34	6	17	12	10	3	10	0	48	6	46
29	11	07	0	49	19	56	3	35	23	26	1	25	20	22	6	20	11	49	2	55	0	24	7	08
30	उ. 11	28	−1	02	उ. 20	09	−3	31	उ. 23	27	+1	39	उ. 20	09	+6	22	उ. 11	28	+2	39	उ. 0	00	−7	30

क्रान्ति–वेलान्तर सारणी (भाग 2)

सायन सूर्य राशि▶	(6) तुला				(7) वृश्चिक				(8) धनु				(9) मकर				(10) कुम्भ				(11) मीन			
अंश ▼	क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर		क्रान्ति		वेलान्तर	
	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.	अं.	क.	मि.	से.
0	द. 0	00	−7	30	द.11	28	−15	37	द.20	09	−13	50	द.23	27	−1	35	द.20	09	+11	03	द.11	28	+13	59
1	0	24	7	52	11	49	15	45	20	22	13	33	23	26	1	06	19	56	11	20	11	07	13	54
2	0	48	8	13	12	10	15	53	20	34	13	16	23	26	0	37	19	43	11	36	10	46	13	47
3	1	12	8	35	12	31	15	59	20	46	12	59	23	25	−0	08	19	29	11	51	10	24	13	40
4	1	35	8	56	12	51	16	05	20	57	12	41	23	23	+0	21	19	16	12	06	10	03	13	33
5	1	59	9	16	13	11	16	10	21	08	12	22	23	21	0	50	19	01	12	20	9	41	13	25
6	2	23	9	36	13	31	16	14	21	19	12	02	23	18	1	19	18	47	12	33	9	19	13	16
7	2	47	9	56	13	51	16	18	21	29	11	41	23	16	1	48	18	32	12	46	8	57	13	07
8	3	10	10	16	14	11	16	20	21	39	11	20	23	12	2	17	18	16	12	58	8	34	12	57
9	3	34	10	36	14	30	16	22	21	48	10	58	23	08	2	46	18	01	13	09	8	12	12	46
10	3	58	10	55	14	49	16	23	21	57	10	36	23	04	3	14	17	45	13	19	7	49	12	35
11	4	21	11	14	15	08	16	23	22	06	10	14	22	59	3	42	17	28	13	28	7	27	12	23
12	4	45	11	32	15	26	16	23	22	14	09	50	22	54	4	09	17	12	13	37	7	04	12	11
13	5	08	11	50	15	45	16	21	22	22	09	26	22	49	4	36	16	55	13	45	6	41	11	58
14	5	31	12	08	16	03	16	19	22	29	09	02	22	42	5	03	16	38	13	52	6	18	11	45
15	5	55	12	25	16	20	16	16	22	36	08	36	22	36	5	30	16	20	13	58	5	55	11	32
16	6	18	12	41	16	38	16	12	22	42	08	10	22	29	5	56	16	03	14	03	5	31	11	18
17	6	41	12	57	16	55	16	07	22	49	07	44	22	22	6	21	15	45	14	08	5	08	11	03
18	7	04	13	13	17	12	16	01	22	54	07	17	22	14	6	46	15	26	14	12	4	45	10	48
19	7	27	13	28	17	28	15	55	22	59	06	50	22	06	7	11	15	08	14	15	4	21	10	33
20	7	49	13	43	17	45	15	47	23	04	06	23	21	57	7	35	14	49	14	17	3	58	10	18
21	8	12	13	57	18	01	15	39	23	08	05	55	21	48	7	58	14	30	14	18	3	34	10	02
22	8	34	14	11	18	16	15	30	23	12	05	27	21	39	8	21	14	11	14	19	3	10	9	46
23	8	57	14	24	18	32	15	20	23	16	04	59	21	29	8	44	13	51	14	19	2	47	9	29
24	9	19	14	36	18	47	15	10	23	18	04	31	21	19	9	06	13	31	14	18	2	23	9	12
25	9	41	14	48	19	01	14	58	23	21	04	02	21	08	9	27	13	11	14	17	1	59	8	56
26	10	03	14	59	19	16	14	46	23	23	03	33	20	57	9	47	12	51	14	15	1	35	8	39
27	10	24	15	10	19	29	14	33	23	25	03	04	20	46	10	07	12	31	14	12	1	12	8	21
28	10	46	15	20	19	43	14	19	23	26	02	35	20	34	10	26	12	10	14	08	0	48	8	03
29	11	07	15	29	19	56	14	05	23	26	02	05	20	22	10	45	11	49	14	04	0	24	7	46
30	द. 11	28	−15	37	द. 20	09	−13	50	द.23	27	−01	35	द.20	09	+11	03	द.11	28	+13	59	द. 0	00	+7	28

चर कोष्ठक (भाग 1)

क्रान्ति ➤	0°	1°	2°	3°	4°	5°	6°	7°	8°	9°	10°	11°	12°
अक्षांश	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.
0	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 00	0 0 00	0 0 00
1	0 00	0 04	0 08	0 13	0 17	0 21	0 25	0 29	0 34	0 38	0 42	0 47	0 51
2	0 00	0 08	0 17	0 25	0 34	0 42	0 50	0 59	1 07	1 16	1 25	1 33	1 42
3	0 00	0 13	0 25	0 38	0 50	1 03	1 16	1 28	1 41	1 54	2 07	2 20	2 33
4	0 00	0 17	0 34	0 50	1 07	1 24	1 41	1 58	2 15	2 32	2 50	3 07	3 24
5	0 00	0 21	0 42	1 03	1 24	1 45	2 06	2 28	2 49	3 10	3 32	3 54	4 16
6	0 00	0 25	0 50	1 16	1 41	2 06	2 32	2 57	3 23	3 49	4 15	4 41	5 07
7	0 00	0 29	0 59	1 28	1 58	2 28	2 57	3 27	3 57	4 27	4 58	5 28	5 59
8	0 00	0 34	1 07	1 41	2 15	2 49	3 23	3 57	4 32	5 06	5 41	6 16	6 51
9	0 00	0 38	1 16	1 54	2 32	3 11	3 49	4 27	5 06	5 45	6 24	7 03	7 43
10	0 00	0 42	1 25	2 07	2 50	3 32	4 15	4 58	5 41	6 24	7 08	0 7 51	8 36
11	0 00	0 47	1 33	2 20	3 07	3 54	4 41	5 28	6 16	7 03	7 51	8 40	9 28
12	0 00	0 51	1 42	2 33	3 24	4 16	5 07	5 59	6 51	7 44	8 36	9 28	10 21
13	0 00	0 55	1 51	2 46	3 42	4 38	5 34	6 30	7 26	8 23	9 20	10 17	11 15
14	0 00	1 00	2 00	3 00	4 00	5 00	6 00	7 01	8 02	9 03	10 05	11 07	12 09
15	0 00	1 04	2 09	3 13	4 18	5 22	6 27	7 32	8 38	9 44	10 50	11 57	13 04
16	0 00	1 09	2 18	3 27	4 36	5 45	6 54	8 04	9 14	10 25	11 36	12 47	13 59
17	0 00	1 13	2 27	3 40	4 54	6 08	7 22	8 36	9 51	11 06	12 22	13 38	14 54
18	0 00	1 18	2 36	3 54	5 12	6 31	7 50	9 09	10 28	11 48	13 08	14 39	15 50
19	0 00	1 23	2 45	4 08	5 31	6 54	8 18	9 42	11 06	12 30	13 55	15 21	16 47
20	0 00	1 27	2 55	4 22	5 50	7 18	8 46	10 15	11 41	13 13	14 43	0 16 14	17 45
21	0 00	1 32	3 04	4 37	6 09	7 42	9 15	10 48	12 22	13 57	15 31	17 07	18 43
22	0 00	1 37	3 14	4 51	6 29	8 06	9 44	11 22	13 01	14 40	16 20	18 01	19 42
23	0 00	1 42	3 24	5 06	6 48	8 31	10 14	11 57	13 41	15 25	17 10	18 56	20 42
24	0 00	1 47	3 34	5 21	7 08	8 56	10 44	12 32	14 21	16 11	18 01	19 52	21 43
25	0 00	1 52	3 44	5 36	7 28	9 21	11 14	13 08	15 02	16 57	18 52	20 48	22 45
26	0 00	1 57	3 54	5 52	7 49	9 47	11 45	13 44	15 43	17 44	19 44	21 46	23 48
27	0 00	2 02	4 05	6 07	8 10	10 13	12 17	14 21	16 26	18 31	20 37	22 44	24 52
28	0 00	2 08	4 15	6 23	8 31	10 40	12 49	14 58	17 09	19 19	21 31	23 44	25 57
29	0 00	2 13	4 26	6 40	8 53	11 07	13 22	15 37	17 52	20 09	22 26	24 44	27 04
30	0 00	2 19	4 37	6 56	9 15	11 35	13 55	16 16	18 37	20 59	23 22	0 25 46	28 12
31	0 00	2 24	4 49	7 13	9 38	12 03	14 29	16 55	19 23	21 51	24 20	26 50	29 21
32	0 00	2 30	5 00	7 30	10 01	12 32	15 04	17 36	20 09	22 43	25 18	27 54	30 32
33	0 00	2 36	5 12	7 48	10 25	13 02	15 39	18 18	20 57	23 37	26 18	29 00	31 44
34	0 00	2 42	5 24	8 06	10 49	13 32	16 16	19 00	21 45	24 32	27 19	30 08	32 58
35	0 00	2 48	5 36	8 25	11 14	14 03	16 53	19 44	22 35	25 28	28 22	31 17	34 14
36	0 00	2 54	5 49	8 44	11 39	14 35	17 31	20 28	23 27	26 26	29 26	32 29	35 32
37	0 00	3 01	6 02	9 03	12 05	15 07	18 10	21 14	24 19	27 25	30 33	33 41	36 52
38	0 00	3 08	6 15	9 23	12 32	15 41	18 50	22 01	25 13	28 26	31 40	34 56	38 14
39	0 00	3 14	6 29	9 44	12 59	16 15	19 32	22 50	26 08	29 39	32 50	36 16	39 39
40	0 00	3 21	6 43	10 05	13 27	16 50	20 14	23 39	27 06	30 33	34 02	0 37 33	0 41 06
41	0 00	3 29	6 57	10 27	13 56	17 27	20 58	24 30	28 04	31 39	35 16	38 55	42 35
42	0 00	3 36	7 12	10 49	14 26	18 04	21 43	25 23	29 05	32 48	36 32	40 19	44 08
43	0 00	3 44	7 28	11 12	14 57	18 43	22 30	26 18	30 07	33 58	37 51	41 46	45 44
44	0 00	3 52	7 44	11 36	15 29	19 23	23 18	27 14	31 12	35 12	39 13	43 17	47 23
45	0 00	4 00	8 00	12 01	16 02	20 05	24 08	28 13	32 19	36 27	40 37	44 50	49 05
46	0 00	4 09	8 17	12 27	16 37	20 48	25 00	29 13	33 28	37 49	42 05	46 27	50 52
47	0 00	4 17	8 35	12 53	17 12	21 32	25 61	30 16	34 40	39 07	43 36	48 08	52 42
48	0 00	4 27	8 53	13 21	17 49	22 18	26 49	31 21	35 55	40 31	45 10	49 52	54 37
49	0 00	4 36	9 13	13 50	18.27	23 06	27 47	32 29	37 13	42 00	46 49	51 41	56 37
50	0 00	4 46	9 32	14 19	19 07	23 56	28 47	33 39	38 34	43 31	48 31	0 53 35	0 58 42

चर कोष्ठक (भाग 2)

क्रान्ति ➤	13°	14°	15°	16°	17°	18°	19°	20°	21°	22°	23°	24°
अक्षांश	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.
0	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00	0 0 00
1	0 55	1 00	1 04	1 09	1 13	1 18	1 23	1 27	1 32	1 37	1 42	1 47
2	1 51	2 00	2 09	2 18	2 27	2 36	2 45	2 55	3 04	3 14	3 24	3 34
3	2 46	3 00	3 13	3 27	3 40	3 54	4 08	4 22	4 37	4 51	5 06	5 21
4	3 42	4 00	4 18	4 36	4 54	5 12	5 31	5 50	6 09	6 29	6 48	7 08
5	4 38	5 00	5 22	5 45	6 08	6 31	6 54	7 18	7 42	8 06	8 31	8 56
6	5 34	6 00	6 27	6 54	7 22	7 50	8 18	8 46	9 15	9 44	10 14	10 44
7	6 30	7 01	7 32	8 04	8 36	9 09	9 42	10 15	10 48	11 22	11 57	12 32
8	7 26	8 02	8 38	9 14	9 51	10 28	11 06	11 44	12 22	13 01	13 41	14 21
9	8 23	9 03	9 44	10 25	11 06	11 48	12 30	13 13	13 56	14 41	15 25	16 11
10	0 9 20	0 10 04	0 10 50	0 11 36	0 12 22	0 13 08	0 13 55	0 14 43	0 15 31	0 16 21	0 17 10	0 18 01
11	10 17	11 07	11 56	12 47	13 38	14 29	15 27	16 14	17 07	18 01	18 56	19 52
12	11 15	12 09	13 03	13 58	14 54	15 50	16 47	17 45	18 43	19 42	20 42	21 43
13	12 13	13 12	14 11	15 11	16 11	17 12	18 14	19 17	20 20	21 25	22 30	23 36
14	13 12	14 15	15 19	16 24	17 29	18 35	19 43	20 50	21 57	23 08	24 18	25 30
15	14 11	15 19	16 28	17 38	18 48	19 59	21 11	22 24	23 37	24 52	26 07	27 24
16	15 11	16 24	17 38	18 52	20 07	21 23	22 40	23 58	25 17	26 37	27 58	29 20
17	16 11	17 29	18 48	20 07	21 27	22 48	24 10	25 33	26 58	28 23	29 50	31 18
18	17 12	18 35	19 59	21 23	22 48	24 14	25 42	27 10	28 40	30 10	31 43	33 16
19	18 14	19 42	21 11	22 40	24 10	25 52	27 14	28 48	30 23	31 59	33 37	35 16
20	0 19 17	0 20 50	0 22 23	0 23 58	0 25 33	0 27 10	0 28 48	0 30 27	0 32 08	0 33 49	0 35 33	0 37 18
21	20 20	21 59	23 37	25 17	26 58	28 40	30 23	32 08	33 54	35 41	37 31	39 22
22	21 25	23 08	24 52	26 37	28 23	30 10	31 58	33 49	35 42	37 35	39 30	41 27
23	22 30	24 18	26 08	27 58	29 50	31 43	33 57	35 33	37 31	39 30	41 31	43 34
24	23 36	25 30	27 24	29 20	31 18	33 16	35 16	37 18	39 22	41 27	43 34	45 44
25	24 43	26 42	28 43	30 44	32 47	34 52	36 57	39 05	41 15	43 26	45 40	47 56
26	25 52	27 56	30 02	32 09	34 18	36 28	38 40	40 54	43 10	45 28	47 48	50 10
27	27 01	29 12	31 23	33 36	35 51	38 07	40 23	42 45	45 07	47 32	49 58	52 27
28	28 12	30 28	32 46	35 05	37 25	39 48	42 12	44 38	47 06	49 38	52 11	54 47
29	29 25	31 47	34 10	36 35	39 02	41 30	44 01	46 33	49 08	51 46	54 27	57 09
30	0 30 39	0 33 06	0 35 36	0 38 07	0 40 40	0 43 15	0 45 52	0 48 31	0 51 13	0 53 57	0 56 45	0 59 34
31	31 54	34 28	37 04	39 41	42 21	45 02	47 46	50 32	53 20	56 12	0 59 06	1 02 04
32	33 11	35 51	38 33	41 17	44 03	46 52	49 42	52 35	55 30	0 58 30	1 01 31	1 04 37
33	34 29	37 16	40 05	42 56	45 48	48 44	51 41	54 41	0 57 44	1 00 51	1 04 00	1 07 13
34	35 50	38 44	41 39	44 36	47 36	50 38	53 43	56 51	1 00 01	1 03 15	1 06 33	1 09 54
35	37 13	40 13	43 15	46 20	49 27	52 36	55 48	0 59 04	1 02 22	1 05 44	1 09 10	1 12 40
36	38 37	41 45	44 54	48 06	51 20	54 37	0 57 57	1 01 20	1 04 47	1 08 17	1 11 51	1 15 30
37	40 05	43 19	46 36	49 55	53 17	56 41	1 00 09	1 03 40	1 07 15	1 10 54	1 14 37	1 18 24
38	41 34	44 56	48 20	51 47	55 17	0 58 49	1 02 25	1 06 05	1 09 48	1 13 36	1 17 28	1 21 25
39	43 06	46 36	50 08	53 42	57 20	1 01 01	1 04 46	1 08 34	1 12 26	1 16 23	1 20 25	1 24 35
40	44 41	0 48 18	0 51 58	0 55 41	0 59 28	1 03 17	1 07 10	1 11 08	1 15 10	1 19 16	1 23 28	1 27 45
41	46 19	50 04	53 53	57 44	1 01 39	1 05 38	1 09 40	1 13 47	1 17 58	1 22 15	1 26 37	1 31 05
42	47 59	51 54	55 51	0 59 51	1 03 55	1 08 03	1 12 15	1 16 31	1 20 53	1 25 20	1 29 53	1 34 32.
43	49 44	53 46	57 53	1 02 02	1 06 16	1 10 33	1 14 55	1 19 22	1 23 54	1 28 32	1 33 16	1 38 07
44	51 32	55 44	0 59 59	1 04 18	1 08 41	1 13 09	1 17 41	1 22 19	1 27 02	1 31 52	1 36 48	1 41 51
45	53 24	57 45	1 02 10	1 06 39	1 11 13	1 15 51	1 20 34	1 25 23	1 30 18	1 35 19	1 40 28	1 45 45
46	55 20	0 59 51	1 04 26	1 09 06	1 13 53	1 18 39	1 23 33	1 28 34	1 33 41	1 38 56	1 44 18	1 49 49
47	57 20	1 02 02	1 06 48	1 11 38	1 16 33	1 21 34	1 26 41	1 31 54	1 37 14	1 42 42	1 48 19	1 54 04
48	0 59 26	1 04 18	1 09 15	1 14 17	1 19 24	1 24 37	1 29 56	1 35 22	1 40 56	1 46 39	1 52 30	1 58 32
49	1 01 36	1 06 40	1 11 49	1 17 03	1 22 22	1 27 48	1 33 20	1 39 01	1 44 49	1 50 47	1 56 55	2 03 14
50	1 03 53	1 09 09	1 14 29	1 19 56	1 25 28	1 31 08	1 36 54	1 42 50	1 48 54	1 55 08	2 01 33	2 08 11

चन्द्र एवम् पंचतारा मंगल आदि ग्रहों के उदयास्त

चन्द्रमा एवम् अन्य पंचतारा ग्रहों (मं., बु., गु., शु., और श.) के उदयास्त(दैनिक उदयास्त)काल के साधन की प्रक्रिया समान है, केवल चन्द्र के उदयास्तसाधन की प्रक्रिया में थोड़ा–सा अन्तर है। इन छः ग्रहों की उदयास्तकालसाधन–प्रक्रिया सूर्य की उदयास्तकालसाधन–प्रक्रिया से कठिन तो नहीं, अधिक कालापेक्षी जरूर है।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवम् शनि के उदयास्तकालसाधन–प्रक्रिया में जो पदार्थ अपेक्षित हैं, वे ये हैं–

(i) अभीष्ट स्थलीय अक्षांश।
(ii) अभीष्ट स्थल एवम् दिन का सूर्योदयकाल।
(iii) स्पष्ट सूर्य (इष्टकालिक)।
(iv) स्पष्ट अभीष्ट ग्रह।* (इष्टकालिक)
(v) अभीष्ट ग्रह का शर (इष्टकालिक)।
(vi) सूर्य का स्पष्ट विषुवकाल (इष्टकालिक)।
(vii) अभीष्ट ग्रह का स्पष्ट विषुवकाल (इष्टकालिक)।
(viii) सूर्यक्रान्ति (इष्टकालिक)।
(ix) सूर्य का स्थानीय चर (इष्टकालिक)।
(x) अभीष्ट ग्रह की क्रान्ति (इष्टकालिक)।
(xi) अभीष्ट ग्रह का स्थानीय चर (इष्टकालिक)।

अभीष्ट ग्रह का उदयास्तकाल जानने के लिए इन उपरोक्त 11 पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। इन्हें जानने का प्रकार क्रमशः इस प्रकार है–

(i) अभीष्ट स्थलीय अक्षांश – अभीष्ट स्थलीय अक्षांश किसी प्रामाणिक **'एटलस'** आदि से जाने जा सकते हैं।

(ii) अभीष्ट स्थल एवम् दिन का सूर्योदयकाल – अभीष्ट स्थल एवम् दिन का सूर्योदयकाल पंचांग से जानिए अथवा पृष्ठ **267** पर दी गई सूर्योदयास्तकाल साधन प्रक्रिया से भी इसे जाना जा सकता है।

(iii) स्पष्ट सूर्य (इष्टकालिक) – $5^{\text{घं}}$ $30^{\text{मि.}}$ भा. स्टैं. टा. का स्पष्ट सूर्य पंचांग से लेकर, उसे अनुपात द्वारा इष्टकालिक बना लें।

(iv) स्पष्ट अभीष्ट ग्रह (इष्टकालिक) – $5^{\text{घं}}$ $30^{\text{मि.}}$ भा. स्टैं. टा. का स्पष्ट अभीष्टग्रह भी पंचांग से लेकर उसे अनुपात द्वारा इष्टकालिक बनाया जा सकता है।

(v) अभीष्ट ग्रह का शर (इष्टकालिक) – चन्द्र का दैनिक शर पंचांग में दैनिक चन्द्रस्पष्ट के साथ दिया रहता है तथा शेष पंचतारा (मंगल आदि) ग्रहों के शर भी दैनिक ग्रहस्पष्ट वाले पृष्ठों से अग्रिम पृष्ठों पर तीन–तीन दिनांतर पर दिए रहते हैं। ये $5^{\text{घं}}$ $30^{\text{मि.}}$ भा. स्टैं. टा. के हैं– इन्हें अनुपात द्वारा इष्टकालिक बनाना आसान है।

(vi) सूर्य का स्पष्ट विषुवकाल (इष्टकालिक) – सूर्य का इष्टकालिक विषुवकाल पृष्ठ **282** पर दिए गए **'विषुवकाल कोष्ठक'** से इष्टकालिक सायन सूर्य के राशि–अंशों द्वारा जान लें।

(vii) अभीष्ट ग्रह का स्पष्ट विषुवकाल (इष्टकालिक)– अभीष्ट ग्रह का **'इष्टकालिक विषुवकाल'** भी पृष्ठ **282** पर दिए गए **'विषुवकाल कोष्ठक'** से इष्टकालिक सायन ग्रह के राशि–अंशों द्वारा तुरन्त प्राप्त हो जाता है। **ध्यान रहे–** इस कोष्ठक से प्राप्त विषुवकाल मध्यम है। पृष्ठ **283** पर दिए गए

** अभीष्टग्रह = वह ग्रह, जिसका उदयास्तकाल ज्ञात करना है।*

'शर संस्कार कोष्ठक' से सायन ग्रह के राशि–अंशों तथा शर द्वारा प्राप्त मिनटों को इस मध्यम विषुवकाल में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने पर यह **'स्पष्ट विषुवकाल'** बन जाएगा। यह शर–संस्कार कब धन(+) और कब ऋण (–) होगा, इसका निर्देश इस 'शरसंस्कार कोष्ठक' के नीचे किया गया है।

ध्यान दें– क्योंकि, सूर्य का शर नहीं होता, अतः पृष्ठ **282** पर दिए **'विषुवकाल कोष्ठक'** से **'सूर्य विषुवकाल'** स्पष्ट ही प्राप्त होगा।

(viii) सूर्यक्रान्ति (इष्टकालिक)– पंचांग में दैनिक सूर्य स्पष्ट के साथ ही $5^{घ}$ $30^{मि}$ भा. स्टैं. टा. की सूर्यक्रान्ति दी रहती है– इसे साधारण अनुपात द्वारा इष्टकालिक बना लें।

(ix) सूर्य का स्थानीय चर (इष्टकालिक)– सूर्य का स्थानीय इष्टकालिक चर पृष्ठ **284** पर दिए गए **'चर कोष्ठक'** से इष्टकालिक सूर्यक्रान्ति और अभीष्ट स्थलीय अक्षांश द्वारा प्राप्त कर लें।

(x) अभीष्ट ग्रह की क्रान्ति (इष्टकालिक)– चन्द्र की क्रान्ति पंचांग में दैनिक चन्द्रस्पष्ट के साथ $5^{घ}$ $30^{मि}$ भा. स्टैं. टा. की दी रहती है एवम् अन्य भौमादि ग्रहों की क्रान्ति दैनिक ग्रहस्पष्ट से अग्रिम पृष्ठों पर तीन–तीन दिनान्तर पर $5^{घ}$ $30^{मि}$ की ही दी रहती है। चन्द्र एवम् अन्य भौमादि ग्रहों की इस क्रान्ति को अनुपात द्वारा इष्टकालिक बना लें।

(xi) अभीष्ट ग्रह का स्थानीय चर (इष्टकालिक)– अभीष्ट ग्रह का इष्टकालिक स्थानीय चर पृष्ठ **284** पर दिए गए **'चर कोष्ठक'** से ग्रह की इष्टकालिक क्रान्ति और अभीष्ट स्थालीय अक्षांश द्वारा तुरंत प्राप्त करें।

ध्यान दें– यदि सूर्य या अभीष्ट ग्रह की क्रान्ति और इष्ट स्थलीय अक्षांश–दोनों एक ही चिह्न (दिशा) के [यानी दोनों धन (उत्तर) या दोनों ऋण(दक्षिण)] होंगे तो चर धन(+), अन्यथा ऋण (–) होगा।

अब उपरोक्त इन 11 उपकरणों (पदार्थों) से हम चन्द्र आदि ग्रहों की 'उदयकालसाधनप्रक्रिया बतलाएंगे। ध्यान रहे– जैसा कि पहले भी बतला चुके हैं, इस प्रक्रिया में सर्वत्र स्टैं. टा. का ही प्रयोग किया गया है।

चन्द्र आदि ग्रहों की उदयकालसाधन–प्रक्रिया

जिस दिन का ग्रहोदय जानना है, उस दिन को हम **'अभीष्ट दिन'*** कहेंगे। अभीष्ट दिन के प्रातः $5^{घ}$ $30^{मि}$ भा. स्टैं. टा. अथवा अन्य किसी भी समय का स्पष्ट ग्रह (जिस ग्रह का उदय ज्ञात करना है, उस ग्रह के स्पष्ट राश्यादि) और स्पष्ट सूर्य ज्ञात करें। स्पष्ट ग्रह में से स्पष्ट सूर्य घटाएं। शेष राश्यादि को हम **'सामान्य ग्रह–सूर्यान्तर'** कहेंगे। यदि ग्रह के राश्यादि सूर्य के राश्यादि से कम हों तो ग्रह–राश्यादि में 12 राशि जोड़कर सूर्य के राश्यादि घटाएं। शेष राश्यादि को हम **'अन्य ग्रह सूर्यान्तर'** कहेंगे। 'सामान्यग्रह–सूर्यान्तर' या 'अन्य ग्रह–सूर्यान्तर' के राश्यादि को अंशों में बदलकर 4 से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल मिनट होंगे। इन मिनटों के घंटा–मिनट बना लें। 'सामान्यग्रह–सूर्यान्तर' या 'अन्य ग्रह–सूर्यान्तर' के इन घं. मि. को अभीष्ट दिन के स्थानीय सूर्योदय के घं. मि. में जोड़ देने पर ग्रह का **' स्थूल उदयकाल'** प्राप्त होगा।

ध्यान रहे– 'सामान्यग्रह–सूर्यान्तर' के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय में जोड़ने पर योग यदि 24 घण्टा से कम उपलब्ध हो तो ग्रह का उपरोक्त **'स्थूल उदयकाल'** अभीष्ट दिन का ही होगा। यदि यहां योग 24 घण्टा से अधिक हो तो उसमें से 24 घण्टा घटाने से शेष घं. मि. ग्रह का 'स्थूल उदयकाल' अभीष्ट दिन से परवर्ती दिन का माना जाएगा।

'अन्य ग्रह–सूर्यान्तर' के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय में जोड़ने पर योग यदि 24 घण्टा से कम प्राप्त हो तो ग्रह का उपरोक्त **' स्थूल उदयकाल '** अभीष्ट दिन से पूर्ववर्ती दिन का होगा। यदि यहां योग 24 घं. से

** यहां अभीष्ट दिन से हमारा अभिप्राय मध्यरात्रि से प्रारम्भ होने वाली तारीख से है।*

अधिक हो तो उसमें से 24 घण्टा घटाने पर शेष घं. मि. ग्रह का ' स्थूल उदयकाल' अभीष्ट दिन का ही होगा।

ग्रह के इस ' **स्थूल उदयकाल**' के समय सायन सूर्य और सायन ग्रह स्पष्ट ज्ञात कर **सूर्य विषुवकाल, ग्रहशर, ग्रह–विषुवकाल** (ग्रह का स्पष्ट विषुवकाल) **सूर्यक्रान्ति, ग्रहक्रान्ति, सूर्यचर** और **ग्रहचर** ज्ञात करें। सूर्य विषुवकाल में सूर्य का और ग्रह के विषुवकाल में ग्रह का ' **स्थानीय चर** ' चिह्न बदलकर जोड़ें या घटाएं। इससे सूर्य एवम् ग्रह के '**उदयकालिक विषुवकाल**' प्राप्त होंगे। ग्रह के 'उदयकालिक विषुवकाल' में से सूर्य का 'उदयकालिक विषुवकाल' घटा दें। घटाने पर प्राप्त शेष घण्टा–मिनट को हम '**सामान्य विषुवान्तरकाल**' कहेंगे। यदि ग्रह के विषुवकाल के घण्टा–मिनट सूर्य विषुवकाल के घण्टा–मिनट से कम हों तो ग्रह विषुवकाल के घण्टा–मिनट में 24 घण्टा जोड़कर सूर्य विषुवकाल को घटाएं। इस तरह प्राप्त शेष घण्टा–मिनट को हम यहां '**अन्य विषुवान्तरकाल**' कहेंगे।

'**सामान्य विषुवान्तरकाल**' या '**अन्य विषुवान्तरकाल**' के इन घण्टा–मिनट को अभीष्ट दिन के स्थानीय सूर्योदय में जोड़ देने पर ग्रह का '**स्पष्ट उदयकाल**' प्राप्त होगा।

ध्यान रहे– '**सामान्य विषुवान्तरकाल**' के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय में जोड़ने पर योग यदि 24 घं. से कम मिले तो ग्रह का उपरोक्त '**स्पष्ट उदयकाल**' अभीष्ट दिन का ही होगा और यदि यहां योग 24 घं. से अधिक हो तो उसमें से 24 घं. घटाने पर शेष घं. मि. ग्रह का उपरोक्त 'स्पष्ट उदयकाल' अभीष्ट दिन से परवर्ती दिन का होगा।

'**अन्य विषुवान्तरकाल**' के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय में जोड़ने पर योग यदि 24 घं. से कम प्राप्त हों तो ग्रह का उपरोक्त '**स्पष्ट उदयकाल**' अभीष्ट दिन से पूर्ववर्ती दिन का होगा। **किञ्च**-- यदि यहां योग 24 घं. से अधिक हो तो उसमें से 24 घं. घटाने पर शेष घं. मि. ग्रह का 'स्पष्ट उदयकाल' अभीष्ट दिन का ही होगा। चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य सभी भौमादि ग्रहों के इस 'स्पष्ट उदयकाल' के घं. मि. में '**किरण वक्रीभवन संस्कार**'' के 2 मिनट भी जोड़ने होंगे।

विशेष– यहां तक की गणितप्रक्रिया से पंचताराग्रहों (मं., बु., गु., शु. और श.) का '**स्पष्ट उदयकाल**' अन्तिमरूपेण शुद्ध आ जाएगा, लेकिन चन्द्रमा का उदयकाल यहां अन्तिमरूपेण शुद्ध नहीं होगा। इसके लिए उपरोक्त गणना के अतिरिक्त निम्न साधारण–सी गणितप्रक्रिया भी अपेक्षित है–

उपरोक्त प्रकार से प्राप्त चन्द्र का '**स्पष्ट उदयकाल**' यदि पूर्वसाधित इसके 'स्थूल **उदयकाल**' से कुछ न्यूनाधिक (आगे–पीछे) हो तो इन दोनों कालों का अन्तर कीजिए। अन्तर के घंटों को 2 से गुणा करने पर मिनट प्राप्त होंगे। यदि स्पष्ट उदयकाल स्थूल उदयकाल से अधिक हो तो इन मिनटों को चन्द्र के स्पष्ट उदयकाल में जोड़िए, अन्यथा घटाइए। इस प्रक्रिया के अनन्तर चन्द्र का अन्तिमरूप से '**शुद्ध स्पष्ट उदयकाल**' प्राप्त हो जाएगा। अब चन्द्र के इस उदयकाल में **किरणवक्री-भवनसंस्कार**' के 2 मिनट ऋण कर देने होंगे और '**क्षितिजलम्बन**' के चार मिनट भी यहां धन करने होंगे। **ऐसा करने पर चन्द्र का यह उदयकाल सर्वथा सूक्ष्म एवम् आकाश में यथावत् दृश्य स्पष्ट होगा।** ध्यान रहे– मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि– इन पंचताराग्रहों के उदयकाल में **क्षितिजलम्बन** संस्कार नहीं होता। **(स्पष्टता के लिए ग्रहों के 'स्पष्ट उदयकाल' साधन के उदाहरण आगे पृष्ठ 277 से 281 पर दिए गए हैं--वहां देखें।)**

अब हम चन्द्र एवम् मंगल आदि पंचताराग्रहों के अस्तकाल की साधनप्रक्रिया स्पष्ट करेंगे–

चन्द्र आदि ग्रहों की अस्तकालसाधन–प्रक्रिया

अभीष्ट ग्रह के द्विगुणित चर को चिह्न के अनुसार 12 घं. में जोड़िए या घटाइए। प्राप्त घं. मि. को ग्रह के पूर्वसाधित '**स्पष्ट उदयकाल**' में जोड़ दें। यह ग्रह का '**स्थूल अस्तकाल**' प्राप्त होगा।

ग्रह के उपरोक्त '**स्थूल अस्तकाल**' के समय **ग्रहशर, ग्रहक्रान्ति** और **सूर्यक्रान्ति** पंचांग से ज्ञात करें। सूर्य और ग्रह की क्रान्तियों तथा स्थानीय अक्षांश द्वारा पृष्ठ **284** पर दिए गए '**चर कोष्ठक**' से सूर्य और ग्रह के चर ज्ञात करें। इसी समय के ग्रह और सूर्य के विषुवकालों में इन दोनों के अपने–अपने चर चिह्न के विपरीत जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार प्राप्त औदयिक ग्रहविषुवकाल में से औदयिक सूर्यविषुवकाल को घटा दें। यदि 'ग्रह–विषुवकाल' 'सूर्य–विषुवकाल' से कम हो तो इसमें 24 घं. जोड़कर 'सूर्य–विषुवकाल' घटाएं। शेष घं. मि. '**विषुवांतरकाल**' कहलाएगा।

अब द्विगुणित **'ग्रहचर'** को चिह्नानुसार 12 घं. में जोड़ने या घटाने पर प्राप्त घं. मि. को इस विषुवान्तरकाल में जोड़ दें और इसमें उस दिन का स्थानीय सूर्योदय भी जोड़ दें। यह ग्रह का **'स्पष्ट अस्तकाल'** प्राप्त होगा। इसमें **'किरणवक्रीभवन संस्कार'** के 2 मिनट धन करने पर ग्रह का **'दृश्य स्पष्ट अस्तकाल'** प्राप्त हो जाएगा। चन्द्रमा का **'दृश्य स्पष्ट अस्तकाल'** जानने के लिए इसके 'स्पष्ट अस्तकाल' में 'किरणवक्रीभवन संस्कार' के 2 मिनट जोड़ने के साथ **'क्षितिजलम्बन'** के 4 मिनट घटाने भी होंगे।

नोट– यहां चन्द्र एवम् भौमादि पंचतारा ग्रहों के अस्तकाल का दिन (तारीख) इनके उदयकालिक दिन से परवर्ती (अग्रिम) हो सकता है– यह ध्यान रखें।

अब हम आगे स्पष्टता के लिए ग्रहों के दैनिक उदयास्तकाल के कुछेक उदाहरण दे रहे हैं। देखिए–

उदाहरण (1)– 4 जनवरी, 2009 ई. को **चण्डीगढ़** (अक्षांश +30° 45′) में **चन्द्रोदयकालसाधनः–**

4 जनवरी, 2009 ई. को $5^{\text{घं}}$ $30^{\text{मि}}$ I.S.T. पर :–

	$11^{\text{रा}}$	$14^{\text{अं}}$	(स्पष्ट चन्द्र)
−	$8^{\text{रा}}$	$20^{\text{अं}}$	(स्पष्ट सूर्य)
	$2^{\text{रा}}$	$24^{\text{अं}}$	
=		84°	
=		336 मि.	
=	$5^{\text{घं}}$	$36^{\text{मि}}$	
+	$7^{\text{घं}}$	$25^{\text{मि}}$	[4 जनवरी को चण्डीगढ़सूर्योदय (I.S.T.)]
	$13^{\text{घं}}$	$01^{\text{मि}}$	[4 जनवरी को स्थूल चन्द्रोदयकाल (I.S.T.)]

4 जनवरी, 2009 ई. को $13^{\text{घं}}$ $01^{\text{मि}}$ I.S.T. (स्थूल चन्द्रोदयकाल) पर :–

	$0^{\text{रा}}$	$12^{\text{अं}}$	(सायन चन्द्र)
	$9^{\text{रा}}$	$14^{\text{अं}}$	(सायन सूर्य)
		$+ 4^{\circ}.5$	(चन्द्रशर)
		$+ 8^{\circ}.9$	(चन्द्रक्रान्ति)
		+ 22 मि.	(चन्द्रचर)
		$- 22^{\circ}.7$	(सूर्यक्रान्ति)
		− 58 मि.	(सूर्यचर)
	$0^{\text{घं}}$	$35^{\text{मि}}$	(स्पष्ट चन्द्रविषुवकाल)
	$19^{\text{घं}}$	$01^{\text{मि}}$	(स्पष्ट सूर्यविषुवकाल)
	$0^{\text{घं}}$	$13^{\text{मि}}$	(उदयकालिक चन्द्रविषुवकाल)
−	$19^{\text{घं}}$	$59^{\text{मि}}$	(उदयकालिक सूर्यविषुवकाल)
	$4^{\text{घं}}$	$14^{\text{मि}}$	(विषुवांतरकाल)
+	$7^{\text{घं}}$	$25^{\text{मि}}$	[4 जनवरी, 2009 ई. को चण्डीगढ़सूर्योदय (I.S.T.)]
	$11^{\text{घं}}$	$39^{\text{मि}}$	[स्पष्ट चन्द्रोदयकाल (I.S.T.)]

[क्योंकि, यह स्पष्ट चन्द्रोदयकाल उपरोक्त 'स्थूल चन्द्रोदयकाल' से लगभग 1½ घण्टा पहले हुआ है, अतः नियमानुसार 3 मिनट ($1^{\text{घं}}.5 \times 2 = 3$ मि.) घटाने पर वास्तविक स्पष्ट चन्द्रोदयकाल $11^{\text{घं}}$ $36^{\text{मि}}$ प्राप्त हुआ।]

	$11^{\text{घं}}$	$36^{\text{मि}}$	(वास्तविक स्पष्ट चन्द्रोदयकाल)
−		$02^{\text{मि}}$	(किरणवक्रीभवन संस्कार)
	$11^{\text{घं}}$	$34^{\text{मि}}$	
+		$04^{\text{मि}}$	(क्षितिजलंबन संस्कार)
	$11^{\text{घं}}$	$38^{\text{मि}}$	[दृश्य स्पष्ट चन्द्रोदयकाल (I.S.T.)]

उदाहरण (2)– 3 जून, 2008 ई. को चण्डीगढ़ (अक्षांश +30° 45′) में चन्द्रोदयकालसाधन :–

3 जून, 2008 ई. को $5^{\text{घं.}}\ 30^{\text{मि.}}$ I.S.T. पर :–

$01^{\text{रा}}\ \ 07^{\text{अं}}$	(स्पष्ट चन्द्र)
$-01^{\text{रा}}\ \ 19^{\text{अं.}}$	(स्पष्ट सूर्य)
$11^{\text{रा.}}\ \ 18^{\text{अं}}$	
$= 348^{\circ}$	
= 1392 मि.	
$= 23^{\text{घं.}}\ \ 12^{\text{मि.}}$	
$+05^{\text{घं.}}\ \ 24^{\text{मि.}}$	[2 जून '08 को चण्डीगढ़सूर्योदय (I.S.T.)]
$04^{\text{घं.}}\ \ 36^{\text{मि.}}$	[3 जून,'08 को चण्डीगढ़ में स्थूल चन्द्रोदयकाल (I.S.T.)]

3 जून, 2008 ई. को $04^{\text{घं.}}\ \ 36^{\text{मि.}}$ I.S.T. (स्थूल चन्द्रोदयकाल) पर :–

$02^{\text{रा.}}\ \ 01^{\text{अं.}}$	(सायन चन्द्र)
$02^{\text{रा}}\ \ 13^{\text{अं}}$	(सायन सूर्य)
$+\ \ 5^{\circ}.0$	(चन्द्रशर)
$+\ \ 25^{\circ}.2$	(चन्द्रक्रान्ति)
$+01^{\text{घं.}}\ \ 06^{\text{मि.}}$	(चन्द्रचर)
$+\ \ 22^{\circ}.3$	(सूर्यक्रान्ति)
$+00^{\text{घं.}}\ \ 57^{\text{मि.}}$	(सूर्यचर)
$03^{\text{घं.}}\ \ 51^{\text{मि}}$	(स्पष्ट चन्द्रविषुवकाल)
$04^{\text{घं}}\ \ 46^{\text{मि}}$	(स्पष्ट सूर्यविषुवकाल)
$02^{\text{घं.}}\ \ 45^{\text{मि.}}$	(उदयकालिक चन्द्रविषुवकाल)
$-03^{\text{घं.}}\ \ 49^{\text{मि.}}$	(उदयकालिक सूर्यविषुवकाल)
$22^{\text{घं.}}\ \ 56^{\text{मि}}$	(विषुवांतरकाल)
$+05^{\text{घं.}}\ \ 24^{\text{मि}}$	[2 जून, '08 को चण्डीगढ़सूर्योदय (I.S.T.)]
$04^{\text{घं.}}\ \ 20^{\text{मि}}$	[3 जून, '08 को स्पष्ट चन्द्रोदयकाल (I.S.T.)]
$-\ \ 02^{\text{मि.}}$	(किरणवक्रीभवन संस्कार)
$04^{\text{घं.}}\ \ 18^{\text{मि}}$	
$+\ \ 04^{\text{मि}}$	(क्षितिजलंबन संस्कार)
$04^{\text{घं}}\ \ 22^{\text{मि}}$	[3 जून, '08 को दृश्यस्पष्ट चन्द्रोदयकाल)(I.S.T.)]

उदाहरण (3)– 4 जनवरी, 2009 ई. को चण्डीगढ़ (अक्षांश +30° 45′) में चन्द्रास्तकाल साधन :–

$11^{\text{घं}}$	$38^{\text{मि}}$	[04 जनवरी, '09 को चन्डीगढ़ में चन्द्रोदयकाल (I.S.T.)]
$+12^{\text{घं}}$	$44^{\text{मि}}$	[उदयकालिक द्विगुणित चन्द्रचरसंस्कृत 12घण्टा($=12^{\text{घं}}+2 \times 22^{\text{मि}}=12^{\text{घं}}\ 44^{\text{मि}}$)]
$00^{\text{घं}}$	$22^{\text{मि}}$	[05 जनवरी, '09 को स्थूल चन्द्रास्तकाल (I.S.T.)]

05 जनवरी, '09 को स्थूल चन्द्रास्तकाल $0^{\text{घं}}$ $22^{\text{मि}}$ (I.S.T.) के समय :–

$00^{\text{रा}}$	$18^{\text{अं}}$	(सायन चन्द्र)
$09^{\text{रा}}$	$15^{\text{अं}}$	(सायन सूर्य)
	$+4^{\circ}.7$	(चन्द्रशर)
	$+11^{\circ}.5$	(चन्द्रक्रान्ति)
	$+28^{\text{मि}}$	(चन्द्रचर)
	$-22^{\circ}.6$	(सूर्यक्रान्ति)
	$-58^{\text{मि}}$	(सूर्यचर)
$00^{\text{घं}}$	$59^{\text{मि}}$	(स्पष्ट चन्द्रविषुवकाल)
$19^{\text{घं}}$	$03^{\text{मि}}$	(स्पष्ट सूर्यविषुवकाल)
$00^{\text{घं}}$	$31^{\text{मि}}$	(उदयकालिक चन्द्रविषुवकाल)
$-20^{\text{घं}}$	$01^{\text{मि}}$	(उदयकालिक सूर्यविषुवकाल)
$4^{\text{घं}}$	$30^{\text{मि}}$	(4 जनवरी, '09 को विषुवांतरकाल)
$+12^{\text{घं}}$	$56^{\text{मि}}$	[द्विगुणित चन्द्रचरसंस्कृत 12घण्टा($=12^{\text{घं}}+2\times 28^{\text{मि}}=12^{\text{घं}}\ 56^{\text{मि}}$)]
$17^{\text{घं}}$	$26^{\text{मि}}$	
$+07^{\text{घं}}$	$25^{\text{मि}}$	[4 जन., '09 को सूर्योदयचण्डीगढ़ (I.S.T.)]
$00^{\text{घं}}$	$51^{\text{मि}}$	[5 जन., '09 को स्पष्ट चन्द्रास्तकाल (I.S.T.)]

क्योंकि यह स्पष्ट चन्द्रास्तकाल उपरोक्त स्थूल चन्द्रास्तकाल से लगभग ½ घण्टा आगे है, अतः नियमानुसार इसमें 01 मिनट ($0.5^{\text{घं}} \times 2 = 01^{\text{मि}}$) जोड़ने पर वास्ततिक स्पष्ट चन्द्रास्तकाल $00^{\text{घं}}$ $52^{\text{मि}}$ प्राप्त हुआ।

$00^{\text{घं}}$	$52^{\text{मि}}$	(वास्तविक चन्द्रास्तकाल)
+	$02^{\text{मि}}$	(किरणवक्रीभवन संस्कार)
$00^{\text{घं}}$	$54^{\text{मि}}$	
–	$04^{\text{मि}}$	(क्षितिजलंबन संस्कार)
$00^{\text{घं}}$	$50^{\text{मि}}$	**(5 जनवरी, 2009 ई. को दृश्य स्पष्ट चन्द्रास्तकाल,)** (I.S.T.)]

उदाहरण (4)– 09 जुलाई, 2008 ई. को चेन्नई (अक्षांश +13° 00′) में **शनि का उदयकालसाधनः–**

09 जुलाई, 2008 ई. को $5^{\text{घं.}}$ $30^{\text{मि.}}$ I.S.T. परः–

$04^{\text{रा.}}$ $11^{\text{अं.}}$ (स्पष्ट शनि)
$-02^{\text{रा.}}$ $23^{\text{अं.}}$ (स्पष्ट सूर्य)
$1^{\text{रा.}}$ $18^{\text{अं.}}$
= 48°
= 192 मि.
= $3^{\text{घं.}}$ $12^{\text{मि.}}$
$+5^{\text{घं.}}$ $51^{\text{मि.}}$ [09 जुलाई,'08 को चेन्नईसूर्योदय (I.S.T.)]
$9^{\text{घं.}}$ $03^{\text{मि.}}$ [09 जुलाई,'08 को शनि का स्थूल उदयकाल (I.S.T.)]

09 जुलाई, 2008 ई. को $09^{\text{घं.}}$ $03^{\text{मि.}}$ I.S.T. (शनि के स्थूल उदयकाल) पर :–

$05^{\text{रा.}}$ $05^{\text{अं.}}$ (सायन शनि)
$03^{\text{रा.}}$ $17^{\text{अं.}}$ (सायन सूर्य)
+1°.7 (शनिशर)
+11°.1 (शनिक्रान्ति)
$+11^{\text{मि.}}$ (शनिचर)
+22°.3 (सूर्यक्रान्ति)
$+21^{\text{मि.}}$ (सूर्यचर)
$10^{\text{घं.}}$ $31^{\text{मि.}}$ (स्पष्ट शनिविषुवकाल)
$07^{\text{घं.}}$ $15^{\text{मि.}}$ (स्पष्ट सूर्यविषुवकाल)
$10^{\text{घं.}}$ $21^{\text{मि.}}$ (उदयकालिक शनिविषुवकाल)
$-06^{\text{घं.}}$ $54^{\text{मि.}}$ (उदयकालिक सूर्यविषुवकाल)
$3^{\text{घं.}}$ $27^{\text{मि.}}$ (विषुवांतरकाल)
$+05^{\text{घं.}}$ $51^{\text{मि.}}$ [9 जुलाई, '08 को चेन्नई सूर्योदय (I.S.T.)]
$09^{\text{घं.}}$ $18^{\text{मि.}}$ [9 जुलाई, '08 को शनि का स्पष्ट उदयकाल (I.S.T.)]
– $02^{\text{मि.}}$ (किरणवक्रीभवन संस्कार)
$09^{\text{घं.}}$ $16^{\text{मि.}}$ **[9 जुलाई, '08 को शनि का दृश्य स्पष्ट उदयकाल (I.S.T.)]**

उदाहरण (5)— 09 जुलाई, 2008 ई. को ही चेन्नई (अक्षांश +13° 00′) में **शनि का अस्तकालसाधन :—**

$09^{\text{घं.}}$ $16^{\text{मि.}}$ [09 जुलाई, 2008 ई. को शनि का स्पष्ट उदयकाल (I.S.T.)]
$+12^{\text{घं.}}$ $20^{\text{मि.}}$ [द्विगुणित शनिचरसंस्कृत 12घण्टा($=12^{\text{घं.}}+2 \times 10^{\text{मि.}} = 12^{\text{घं.}}\ 20^{\text{मि.}}$)]
$21^{\text{घं.}}$ $36^{\text{मि.}}$ [09 जुलाई, 2008 ई. को शनि का स्थूल अस्तकाल (I.S.T.)]

09 जुलाई, 2008 ई. को $21^{\text{घं.}}$ $36^{\text{मि.}}$ **I.S.T.** (स्थूल शनि अस्तकाल) के समय :—

$05^{\text{रा.}}$ $05^{\text{अं.}}$ (सायन शनि)
$03^{\text{रा.}}$ $17^{\text{अं.}}$ (सायन सूर्य)
$+ 1^{\circ}.7$ (शनिशर)
$+ 11^{\circ}.0$ (शनिक्रान्ति)
$+ 10^{\text{मि.}}$ (शनिचर)
$+ 22^{\circ}.3$ (सूर्यक्रान्ति)
$+ 22^{\text{मि.}}$ (सूर्यचर)
$10^{\text{घं.}}$ $29^{\text{मि.}}$ (स्पष्ट शनिविषुवकाल)
$07^{\text{घं.}}$ $14^{\text{मि.}}$ (स्पष्ट सूर्यविषुवकाल)

$10^{\text{घं.}}$ $19^{\text{मि.}}$ (उदयकालिक शनिविषुवकाल)
$-06^{\text{घं.}}$ $52^{\text{मि.}}$ (उदयकालिक सूर्यविषुवकाल)
$03^{\text{घं.}}$ $27^{\text{मि.}}$ (विषुवांतरकाल)

$+12^{\text{घं.}}$ $20^{\text{मि.}}$ [द्विगुणित शनिचरसंस्कृत 12घण्टा($=12^{\text{घं.}}+2 \times 10^{\text{मि.}} = 12^{\text{घं.}}\ 20^{\text{मि.}}$)]
$15^{\text{घं.}}$ $47^{\text{मि.}}$
$+05^{\text{घं.}}$ $51^{\text{मि.}}$ [(09 जुलाई, 2008 ई. को चेन्नईसूर्योदय (I.S.T.)]
$21^{\text{घं.}}$ $38^{\text{मि.}}$ [(09 जुलाई, 2008 ई. को शनि का स्पष्ट अस्तकाल]
$+$ $02^{\text{मि.}}$ (किरण वक्रीभवन संस्कार)
$21^{\text{घं.}}$ $40^{\text{मि.}}$ **[09 जुलाई, '08 को दृश्य स्पष्ट शनि अस्तकाल (I.S.T.)]**

ध्यान दें— (i) ग्रहों के उदयास्तकाल–साधनार्थ जहां कहीं स्थानीय सूर्योदयकाल का प्रयोग करने का निर्देश है, वहां सर्वत्र ज्योतिषशास्त्रीय (किरणवक्रीभवन संस्काररहित बिंबकेन्द्रोदय वाले) सूर्योदय का ही प्रयोग किया जाए।

(ii) ग्रहों के उदयास्तकाल में अधिक सूक्ष्मता के इच्छुक गणक को ग्रह तथा सूर्य के विषुवकालसाधन में ग्रह एवम् सूर्य के भोगांश कलांत लेने चाहिएं।

विषुवकाल कोष्ठक

सायन–ग्रह → ↓	राशि 0		राशि 1		राशि 2		राशि 3		राशि 4		राशि 5		राशि 6		राशि 7		राशि 8		राशि 9		राशि 10		राशि 11	
अंश	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
0	0	00	1	52	3	51	6	00	8	09	10	08	12	00	13	52	15	51	18	00	20	09	22	08
1	0	04	1	55	3	55	6	04	8	13	10	12	12	04	13	55	15	55	18	04	20	13	22	12
2	0	07	1	59	4	00	6	09	8	17	10	16	12	07	13	59	16	00	18	09	20	17	22	16
3	0	11	2	03	4	04	6	13	8	21	10	20	12	11	14	03	16	04	18	13	20	21	22	20
4	0	14	2	07	4	08	6	17	8	25	10	24	12	14	14	07	16	08	18	17	20	25	22	24
5	0	18	2	11	4	12	6	22	8	30	10	27	12	18	14	11	16	12	18	22	20	30	22	27
6	0	22	2	14	4	16	6	26	8	34	10	31	12	22	14	14	16	16	18	26	20	34	22	31
7	0	26	2	18	4	20	6	30	8	38	10	35	12	26	14	18	16	20	18	30	20	38	22	35
8	0	29	2	22	4	25	6	35	8	42	10	39	12	29	14	22	16	25	18	35	20	42	22	39
9	0	33	2	26	4	29	6	39	8	46	10	42	12	33	14	26	16	29	18	39	20	46	22	42
10	0	37	2	30	4	34	6	43	8	50	10	46	12	37	14	30	16	34	18	43	20	50	22	46
11	0	40	2	34	4	38	6	48	8	54	10	50	12	40	14	34	16	38	18	48	20	54	22	50
12	0	44	2	38	4	42	6	52	8	58	10	54	12	44	14	38	16	42	18	52	20	58	22	54
13	0	48	2	42	4	46	6	56	9	02	10	57	12	48	14	42	16	46	18	56	21	02	22	57
14	0	52	2	46	4	50	7	01	9	06	11	01	12	52	14	46	16	50	19	01	21	06	23	01
15	0	55	2	50	4	55	7	05	9	10	11	05	12	55	14	50	16	55	19	05	21	10	23	05
16	0	59	2	54	4	59	7	10	9	14	11	09	12	59	14	54	16	59	19	10	21	14	23	09
17	1	03	2	58	5	03	7	14	9	18	11	12	13	03	14	58	17	03	19	14	21	18	23	12
18	1	06	3	02	5	08	7	18	9	22	11	16	13	06	15	02	17	08	19	18	21	22	23	16
19	1	10	3	06	5	12	7	22	9	26	11	19	13	10	15	06	17	12	19	22	21	26	23	19
20	1	14	3	10	5	16	7	26	9	30	11	23	13	14	15	10	17	16	19	26	21	30	23	23
21	1	18	3	14	5	21	7	31	9	34	11	27	13	18	15	14	17	21	19	31	21	34	23	27
22	1	21	3	18	5	25	7	35	9	38	11	30	13	21	15	18	17	25	19	35	21	38	23	30
23	1	25	3	22	5	29	7	39	9	42	11	34	13	25	15	22	17	29	19	39	21	42	23	34
24	1	29	3	26	5	34	7	43	9	45	11	38	13	29	15	26	17	34	19	43	21	45	23	38
25	1	33	3	31	5	38	7	48	9	49	11	42	13	33	15	31	17	38	19	48	21	49	23	42
26	1	36	3	35	5	42	7	52	9	53	11	45	13	36	15	35	17	42	19	52	21	53	23	45
27	1	40	3	39	5	47	7	56	9	57	11	49	13	40	15	39	17	47	19	56	21	57	23	49
28	1	44	3	43	5	51	8	00	10	01	11	53	13	44	15	43	17	51	20	00	22	01	23	53
29	1	48	3	47	5	56	8	04	10	04	11	56	13	48	15	47	17	56	20	04	22	04	23	56
30	1	52	3	51	6	00	8	09	10	08	12	00	13	52	15	51	18	00	20	09	22	08	24	00

ध्यान दें– इस कोष्ठक से प्राप्त विषुवकाल मध्यम है। इसमें पृष्ठ **283** पर दिए गए 'शरसंस्कार कोष्ठक' से सायनग्रह और उसके शर द्वारा प्राप्त मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने/घटाने से यह स्पष्ट हो जाएगा।

शरसंस्कार कोष्ठक

(मध्यम विषुवकाल को स्पष्ट विषुवकाल बनाने के लिए)

शरसंस्कार–*	शरसंस्कार+*	शरसंस्कार+*	शरसंस्कार–*																
सायनग्रह				ग्रहशर															
रा.अं.	रा.अं.	रा.अं.	रा.अं.	0°.0	0°.5	1°.0	1°.5	2°.0	2°.5	3°.0	3°.5	4°.0	4°.5	5°.0	5°.5	6°.0	6°.5	7°.0	7°.5
				मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
0 00	6 00	6 00	12 00	0	1	2	3	3	4	5	6	7	8	9	10	10	11	12	13
0 05	5 25	6 05	11 25	0	1	2	3	3	4	5	6	7	8	9	10	10	11	12	13
0 10	5 20	6 10	11 20	0	1	2	3	3	4	5	6	7	8	9	9	10	11	12	13
0 15	5 15	6 15	11 15	0	1	2	3	3	4	5	6	7	8	8	9	10	11	12	13
0 20	5 10	6 20	11 10	0	1	2	2	3	4	5	6	7	7	8	9	10	11	11	12
0 25	5 05	6 25	11 05	0	1	2	2	3	4	5	6	6	7	8	9	9	10	11	12
1 00	5 00	7 00	11 00	0	1	2	2	3	4	5	5	6	7	8	8	9	10	11	11
1 05	4 25	7 05	10 25	0	1	1	2	3	4	4	5	6	6	7	8	9	9	10	11
1 10	4 20	7 10	10 20	0	1	1	2	3	3	4	5	5	6	7	7	8	9	9	10
1 15	4 15	7 15	10 15	0	1	1	2	2	3	4	4	5	6	6	7	7	8	9	9
1 20	4 10	7 20	10 10	0	1	1	2	2	3	3	4	4	5	6	6	7	7	8	8
1 25	4 05	7 25	10 05	0	0	1	1	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7
2 00	4 00	8 00	10 00	0	0	1	1	2	2	3	3	3	4	4	4	5	6	6	7
2 05	3 25	8 05	9 25	0	0	1	1	1	2	2	3	3	3	4	4	4	5	5	6
2 10	3 20	8 10	9 20	0	0	1	1	1	1	2	2	2	3	3	3	4	4	4	4
2 15	3 15	8 15	9 15	0	0	0	1	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	3	3
2 20	3 10	8 20	9 10	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2
2 25	3 05	8 25	9 05	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1
3 00	3 00	9 00	9 00	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

*ध्यान रहे– स्पष्ट सायनग्रह यदि 12 या 0 राशि से 3 राशि तक अथवा 9 से 12 राशि तक हो तो शरसंस्कार ऋण (–), अन्यथा धन (+) होगा। शर संस्कार के ये धन (+) , ऋण (–) चिह्न उत्तर (+) ग्रहशर के लिए हैं। दक्षिण (–) ग्रहशर के लिए ये विपरीत होंगे।

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS (1951 To 2050 A.D.)

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पश्ट दैनिकग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेष व वक्र–मार्गकाल)

(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में)

बड़े साईज़ के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्रप्रवेशकाल तथा वक्र, मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशिप्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है। विस्तृत विज्ञापन के लिए इस पंचांग के अन्तिम पृष्ठ देखें।

चरकोष्ठक (भाग-1)

क्रान्ति→ अक्षांश↓	1° मि.	2° मि.	3° मि.	4° मि.	5° मि.	6° मि.	7° मि.	8° मि.	9° मि.	10° मि.	11° मि.	12° मि.	13° मि.	14° मि.	15° मि.
1	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1
2	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2
3	0	0	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	3	3	3
4	0	0	1	1	1	2	2	2	2	3	3	3	4	4	4
5	0	1	1	1	2	2	2	3	3	4	4	4	5	5	5
6	0	1	1	2	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	6
7	0	1	1	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7
8	1	1	2	2	3	3	4	4	5	6	6	7	7	8	9
9	1	1	2	2	3	4	4	5	6	6	7	8	8	9	10
10	1	1	2	3	3	4	5	6	6	7	8	9	9	10	11
11	1	1	2	3	4	5	5	6	7	8	9	9	10	11	12
12	1	2	2	3	4	5	6	7	8	9	9	10	11	12	13
13	1	2	3	4	5	6	6	7	8	9	10	11	12	13	14
14	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
15	1	2	3	4	5	6	7	9	10	11	12	13	14	15	16
16	1	2	3	5	6	7	8	9	10	12	13	14	15	16	18
17	1	2	4	5	6	7	9	10	11	12	14	15	16	17	19
18	1	3	4	5	6	8	9	10	12	13	14	16	17	19	20
19	1	3	4	6	7	8	10	11	12	14	15	17	18	20	21
20	1	3	4	6	7	9	10	12	13	15	16	18	19	21	22
21	1	3	5	6	8	9	11	12	14	15	17	19	20	22	24
22	2	3	5	6	8	10	11	13	15	16	18	20	21	23	25
23	2	3	5	7	8	10	12	14	15	17	19	21	22	24	26
24	2	4	5	7	9	11	12	14	16	18	20	22	24	25	27
25	2	4	6	7	9	11	13	15	17	19	21	23	25	27	29
26	2	4	6	8	10	12	14	16	18	20	22	24	26	28	30
27	2	4	6	8	10	12	14	17	18	21	23	25	27	29	31
28	2	4	6	8	11	13	15	17	19	21	24	26	28	30	33
29	2	4	7	9	11	13	16	18	20	22	25	27	29	32	34
30	2	5	7	9	12	14	16	19	21	23	26	28	31	33	36
31	2	5	7	10	12	14	17	19	22	24	27	29	32	34	37
32	2	5	7	10	12	15	17	20	23	25	28	30	33	36	38
33	3	5	8	10	13	16	18	21	23	26	29	32	34	37	40
34	3	5	8	11	13	16	19	22	24	27	30	33	36	38	41
35	3	5	8	11	14	17	20	22	25	28	31	34	37	40	43
36	3	6	9	12	14	17	20	23	26	29	32	35	38	41	45
37	3	6	9	12	15	18	21	24	27	31	33	37	40	43	46

चरकोष्ठक (भाग–2)

क्रान्ति→	16°	17°	18°	19°	20°	21°	22°	23°	24°	25°	26°	27°	28°	29°	30°	31°
अक्षांश↓	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2
2	2	2	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	5	5
3	3	4	4	4	4	5	5	5	5	6	6	6	6	7	7	7
4	5	5	5	5	6	6	6	7	7	7	8	8	8	9	9	10
5	6	6	6	7	7	8	8	8	9	9	10	10	11	11	11	12
6	7	7	8	8	9	9	10	10	11	11	12	12	13	13	14	14
7	8	9	9	10	11	12	13	14	14	15	16	16	17	18	18	19
8	9	10	10	11	12	12	13	14	14	15	16	16	17	18	19	19
9	10	11	12	12	13	14	15	15	16	17	18	18	19	20	21	22
10	12	12	13	14	15	16	16	17	18	19	20	21	21	22	23	24
11	13	14	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	26
12	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29
13	15	16	17	18	19	20	21	22	24	25	26	27	28	29	31	32
14	16	17	19	20	21	22	23	24	25	27	28	29	30	32	33	34
15	18	19	20	21	22	24	25	26	27	29	30	31	33	34	36	37
16	19	20	21	23	24	25	27	28	29	31	32	34	35	37	38	40
17	20	21	23	24	25	27	28	30	31	33	34	36	37	39	41	42
18	21	23	24	26	27	29	30	32	33	35	36	38	40	41	43	45
19	23	24	26	27	29	30	32	34	35	37	39	40	42	44	46	47
20	24	25	27	29	30	32	34	35	37	39	41	43	45	47	48	50
21	25	27	29	30	32	34	36	37	39	41	43	45	47	49	51	53
22	27	28	30	32	34	36	38	39	41	43	45	47	50	52	54	56
23	28	30	32	34	35	37	39	41	44	46	48	50	52	54	57	59
24	29	31	33	35	37	39	41	44	46	48	50	52	55	57	60	62
25	31	33	35	37	39	41	43	46	48	50	53	55	57	60	62	65
26	32	34	36	39	41	43	45	48	50	53	55	58	60	63	65	68
27	34	36	38	40	43	45	47	50	52	55	57	60	63	66	68	71
28	35	37	40	42	45	47	50	52	55	57	60	63	66	69	71	74
29	37	39	41	44	46	49	52	54	57	60	63	66	69	72	75	78
30	38	41	43	46	48	51	54	57	60	62	65	68	71	75	78	81
31	40	42	45	48	50	53	56	59	62	65	68	71	74	78	81	84
32	41	44	47	49	52	55	58	61	64	67	71	74	77	80	84	87
33	43	45	48	51	54	57	60	64	67	70	73	77	80	83	87	90
34	44	47	50	53	56	60	63	66	69	73	76	80	83	87	91	94
35	46	49	52	55	59	63	65	69	72	76	79	83	87	91	94	98
36	48	51	54	58	61	64	68	71	75	79	82	86	90	94	98	103
37	50	53	56	60	63	67	70	74	78	82	86	89	94	98	102	107

ग्रहों का लोप–दर्शन

चन्द्र एवम् भौम आदि पंचताराग्रह जब अपनी दैनिक गति से अपने भ्रमणवृत्त में चलते हुए सूर्य के समीप आ जाते हैं अथवा सूर्य अपनी दैनिकगति से चलते हुए जब उनके समीप आ पहुंचता है, तब कुछ दिनों के लिए वे (चन्द्र एवम् भौमादि पंचताराग्रह) प्रातः, सायं एवम् रात्रि में दिखाई नहीं पड़ते। इस स्थिति में वे सूर्य के आगे–पीछे कुछ अंशों तक फैली सौरप्रभा (प्रातः–सायंकालीन सान्ध्यप्रभा) में अदृश्य रहते हुए सूर्य के साथ ही प्रातः उदय होकर उसी के साथ सायं अस्त हो जाते हैं। जब वे अपनी एवम् सूर्य की दैनिक गति के कारण सूर्य की पूर्वापरवर्ती सांध्यप्रभा से दूर निकल जाते हैं, तब वे पुनः प्रातः पूर्व में या सायं पश्चिम में दिखाई देने लग जाते हैं। सूर्य के सान्निध्य से उत्पन्न ग्रह की इस अदृश्यता को ग्रह का **'लोप'** एवम् सूर्य से दूर हो जाने पर उत्पन्न ग्रह की इस दृश्यता को ग्रह का **'दर्शन'** कहा जाता है। सामान्य भाषा में ग्रह के इस 'लोप' एवम् 'दर्शन' को क्रमशः ग्रह का 'अस्त' एवम् 'उदय' भी कहते हैं। ग्रह के इस **'लोप–दर्शन'** को ज्योतिष–शास्त्रीय भाषा में **'सूर्यकैन्द्रिक अस्तोदय'** या **'सूर्यकैन्द्रिक लोप–दर्शन'** कहा जाता है। लेकिन प्रकृत संदर्भ में हम यहां **'लोप'** एवम् **'दर्शन'** शब्दों का ही प्रयोग करेंगे। **'अस्त'** एवम् **'उदय'** शब्दों का प्रयोग तो हमने विगत पृष्ठों पर ग्रहों के दैनिक **'उदयास्त'** के लिए ही किया है। वैसे, अधिकतर पंचांगकार एवम् दैवज्ञ लोग **'लोप–दर्शन'** के स्थान पर **'अस्त–उदय'** शब्दों का खूब प्रयोग करते हैं।

चन्द्र एवम् गुरु, शुक्र के **'लोप–दर्शन'** का व्रत–पर्व एवम् मुहूर्तनिर्णय में पदे–पदे प्रयोग मिलता है। वैसे, फलादेश में तो दैवज्ञ लोग सभी ग्रहों के 'लोप–दर्शन' का विचार करते हैं। प्रत्येक ग्रह के 'लोप–दर्शन' की तारीख स्थान(अक्षांश)भेद से अक्सर भिन्न–भिन्न हुआ करती है। ग्रह का 'लोप' या 'दर्शन' कहां किस दिन होगा ?, इसका निर्णय एक विशेष गणितप्रक्रिया (ग्रहलोप–दर्शन–गणितप्रक्रिया) द्वारा किया जाता है। **अब हम यहां आगे इसी प्रक्रिया से पाठकों को अवगत कराएंगे। यहां सर्वप्रथम चन्द्रमा के 'लोप–दर्शन' के बारे में बतलाते हैं :–**

चन्द्रमा का 'लोप–दर्शन' निर्णय

चन्द्रमा अपनी गति से चलता हुआ सूर्य से जब 12 अंश (लगभग) पीछे आ जाता है, तब वह प्रातः पूर्व में लुप्त हो जाता है। तब लगभग कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी या अमा होती है। जब वह अपनी गति से चलता हुआ सूर्य से 12 अंश (लगभग) आगे पूर्व की ओर चला जाता है, तब वह सायं पश्चिम में दृश्य हो जाता है। इस समय शुक्ल पक्ष की लगभग द्वितीया होती है। अमा के बाद चन्द्रमा का यह प्रथमदर्शन हिन्दुओं के अनेक व्रत–पर्वों में निर्णायक होता है और मुस्लिम धर्म के अनुयायियों का कैलेन्डर तो पूरी तरह इसी पर निर्भर करता है। चन्द्रमा वस्तुतः किस दिन लुप्त या दृश्य होगा ? – इसके लिए हमारे **'सिद्धान्त'** एवम् **'करण'** ग्रन्थों में एक विशेष गणितप्रक्रिया दी गई है, जो कुछ श्रमापेक्षी है। **मैने इस गणितप्रक्रिया के कई ऐसे भागों को, जो अनावश्यकरूप से इसे लम्बी बनाते हैं, निकालकर चन्द्र के दर्शन–लोप की तिथि के निर्णय को अपेक्षाकृत अत्यन्त सरल एवम् अल्पकालसाध्य बनाया है।** आगे पृष्ठ **291** पर एक स्वनिर्मित **'चन्द्रलोप–दर्शन–साधन कोष्ठक'** दिया जा रहा है, जो चन्द्र की लोप–दर्शन–गणित को नितान्त सुकर बनाता है। यह कोष्ठक केवल भारत के लिए है। इसके द्वारा चन्द्र के **लोप** एवम् **दर्शन** की तारीख कैसे ज्ञात होगी ?– इसका यहां सोदाहरण स्पष्टीकरण दिया जा रहा है। क्योंकि, चन्द्रदर्शन की तारीख का हमारे व्रत–पर्वों में विशेष महत्त्व है और चन्द्र के लोप की तारीख हमारे व्रत–पर्वों में लगभग अनपेक्षित मानी गई है, अतः पहले हम **चन्द्रदर्शन की तारीख का निर्णयप्रकार बतलाएंगेः–**

चन्द्रदर्शन–निर्णय

भारत के जिस नगर में चन्द्रदर्शन की तारीख का निर्णय करना है, उसका अक्षांश ज्ञात करें। जिस चान्द्रमास के चन्द्रदर्शन की तारीख ज्ञातव्य है, उस मास के शुक्लपक्ष की औदयिक प्रतिपदा के दिन, प्रतिपदा की वृद्धि होने पर परवर्ती प्रतिपदा वाले दिन और प्रतिपदा का क्षय हुआ हो तो द्वितीया के दिन स्थानीय सूर्यास्तकालीन **स्पष्ट चन्द्र** एवम **सूर्य** तथा **चन्द्रशर** पंचांग से ज्ञात करें। इस सूर्यास्तकालीन स्पष्ट

चन्द्र में से स्पष्ट-सूर्य को घटा दें। यहां चन्द्र के राश्यादि यदि सूर्य के राश्यादि से न्यून हों तो चन्द्र में 12 राशि जोड़कर घटाएं। इससे प्राप्त अन्तर के अंश बना लें। इन अंशों को हम **'चन्द्र–सूर्यान्तरांश'** कहेंगे।

अब औदयिक प्रतिपदा, प्रतिपदा–वृद्धि होने पर परवर्ती औदयिक प्रतिपदा और प्रतिपदाक्षय होने पर औदयिक द्वितीया की अंग्रेज़ी तारीख और अभीष्ट नगर के अक्षांशों द्वारा **' चन्द्र–लोप–दर्शनसाधन कोष्ठक'** से **'क'** गुणक और **'ख'** गुणक प्राप्त कर लें (यहां कोष्ठक में तारीखें 10–10 दिनांतर और अक्षांश 10–10 अंशान्तर पर हैं, अतः इनके मध्यगत किसी भी तारीख और अक्षांश के **'क'** और **'ख'** गुणक को मौखिक अनुपात द्वारा स्पष्ट कर लें)

अब **'क'** गुणक से **'चन्द्र–सूर्यान्तरांश'** और **'ख'** गुणक से **'चन्द्रशरांश'** (चन्द्रशर के अंशों) को गुणा करें। **'क'** गुणक से गुणित 'चन्द्र–सूर्यातरांश' हमेशा धन (+) होता है। यदि **'ख'** गुणक और **'चन्द्रशर'**– दोनों के चिह्न एक ही (समान) हों तो इनका गुणनफल भी धन (+) होगा, अन्यथा ऋण (–)। **'ख'** गुणक से गुणित चन्द्रशरांश धन हो तो इसे **'क'** गुणक से गुणित **चन्द्र–सूर्यान्तरांश** में जोड दें, अन्यथा घटा दें। इस प्रकार जो अंश प्राप्त होंगे, उन्हें **'चन्द्रोन्नतांश'** कहा जाएगा। यदि 'चन्द्रोन्नतांश' 12° से अधिक हो तो उस दिन सायं पश्चिम में सूर्यास्त के समय नया चन्द्रमा (बाल चन्द्र) दिखाई पड़ेगा, अन्यथा वह दूसरे दिन दिखाई देगा। यदि यह 'चन्द्रोन्नतांश' केवल 12° या इससे थोड़ा ही (कुछ ही कला) न्यूनाधिक हो तो इस स्थिति में वहां चन्द्रदर्शन का दिन सन्देहास्पद होता है अर्थात् वहां चन्द्रदर्शन हो भी सकता है और नहीं भी। **ध्यान रहे–** शुक्लप्रतिपदा का क्षय हो तो चन्द्रदर्शन औदयिक द्वितीया के दिन ही होता है। इस स्थिति में कई बार तो काश्मीर के उत्तरी छोर पर उदयव्यापिनी तृतीया के दिन भी प्रथम चन्द्रदर्शन होता देखा गया है।

चन्द्रदर्शन वाले दिन से दूसरे दिन मुस्लिम–मास (मुहर्रम आदि) प्रारम्भ होते हैं। क्योंकि, चन्द्रदर्शन की तारीख अक्षांशभेद से विश्व के भिन्न–भिन्न स्थलों पर एक दिन आगे–पीछे होती है, अतः मुस्लिम मासारम्भ भी इस स्थिति में वहां एक दिन आगे–पीछे हुआ करते हैं।

स्पष्टता के लिए नीचे चन्द्रदर्शन के दो उदाहरण दे रहे हैं:–

(यहां सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

उदाहरण (1)– संवत् 2067 वि. की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, मंगलवार (16 मार्च, 2010 ई.) को **पाण्डिचेरी** में चन्द्रदर्शन होगा या नहीं ? – यह ज्ञात करना है।

$+12^\circ\ 0'$	(पाण्डिचेरी के अक्षांश)
$18^{\text{घ}}\ 20^{\text{मि}}$	[16 मार्च, 2010 ई. को सूर्यास्त (I.S.T.)]
$7^\circ.7$	(16 मार्च, 2010 ई. को सूर्यास्त के समय चन्द्र–सूर्यान्तरांश)
$+5^\circ.0$	(16 मार्च, 2010 ई. को सूर्यास्त के समय चन्द्रशरांश)

'चन्द्रलोप–दर्शनसाधन कोष्ठक' से–

16 मार्च और +12° 0′ अक्षांश द्वारा **'क'** गुणक +0.98 और **'ख'** गुणक –0.19 प्राप्त हुए।

उपरोक्त निर्देशानुसार–

$$+0.98 \times 7^\circ.7 = +\ 7^\circ.5$$

$$-0.19 \times (+5^\circ.0) = -\ 0^\circ.9$$

इन दोनों के गुणनफलों का चिह्नानुसार योग **(चन्द्रोन्नतांश)** = 6°.6

यहां **'चन्द्रोन्नतांश'** 12° से काफी कम है, अतः स्पष्ट है– 16 मार्च, 2010 ई. को **'पाण्डिचेरी'** में चन्द्रदर्शन बिल्कुल नहीं होगा अर्थात् यहां चन्द्रदर्शन दूसरे दिन (17 मार्च, 2010 ई. को) होगा।

उदाहरण (2)– संवत् 2067 वि. की श्रावण शुक्ल द्वितीया, बुधवार (11 अगस्त, 2010 ई.) को कारगिल (काश्मीर) में चन्द्रदर्शन ज्ञात करना है ?

(ध्यान दें– प्रतिपदाक्षय होने से यहां चन्द्रदर्शनसाधनार्थ उदयव्यापिनी द्वितीया-तिथि वाला दिन ही लिया जा रहा है।)

+34°	31′	(कारगिल के अक्षांश)
$19^{घं}$	$19^{मि.}$	[11 अगस्त, 2010 ई. को सूर्यास्त (I.S.T.)]
20°.5		(11 अगस्त, 2010 ई. को सूर्यास्तकालीन चन्द्र–सूर्यान्तरांश)
– 4°.3		(11 अगस्त, 2010 ई. को सूर्यास्तकालीन चन्द्रशरांश)

'चन्द्र–लोप–दर्शनसाधन कोष्ठक' से–

11 अगस्त को +34° 31′ अक्षांश पर **'क'** गुणक +0.57 और **'ख'** गुणक + 0.81 प्राप्त हुए।

उपरोक्त निर्देशानुसार–

$$+0.57 \times 20^{\circ}.5 = +11^{\circ}.7$$

$$+0.81 \times (-4^{\circ}.3) = -3^{\circ}.5$$

इन दोनों के गुणनफलों का चिह्नानुसार योग (**चन्द्रोन्नतांश**) = 8°.2

यहां यह 'चन्द्रोन्नतांश' 12° से कम है, अतः स्पष्ट है– **कारगिल** (काश्मीर) में चन्द्रदर्शन 11 अगस्त को न होकर 12 अगस्त, 2010 ई. को होगा।

चन्द्रलोप–निर्णय

अमा से पहली तिथि चतुर्दशी के दिन प्रातः सूर्योदयकालिक **'चन्द्र–सूर्यान्तरांश'** और **'चन्द्रशर'** ज्ञात कर, इन्हें **'चन्द्रलोप–दर्शनसाधन कोष्ठक'** से प्राप्त क्रमशः **'क'** और **'ख'** गुणकों से गुणा करें। इनके गुणनफलों का चन्द्रदर्शनसाधन–प्रक्रिया में निर्दिष्ट विधि से जोड़–घटाव कीजिए। इससे प्राप्त अंश (चन्द्रोन्नतांश) यदि 12° से अधिक हों तो **चन्द्रलोप** दूसरे दिन, अन्यथा उसी दिन होगा।

मंगल–बुध और शनि का लोप–दर्शन

जैसा कि पहले भी बतलाया जा चुका है– पंचताराग्रहों में गुरु और शुक्र के **'लोप–दर्शन'** का हमारे व्रत–पर्वों एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के सन्दर्भ में भारी महत्त्व है। शेष मंगल, बुध, शनि ग्रहों के लोप–दर्शन का इस विषय में महत्त्व नगण्य सा है। इसीलिए **वेंकटेश केतकर** आदि आधुनिक नक्षत्रविदों ने गुरु–शुक्र के 'लोप–दर्शन' के निर्णय में यथार्थता लाने के लिए भरसक परिश्रम किया है। उन्होंने मं., बु., श. की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। इनके 'लोप–दर्शन' के निर्धारण में उन्होंने सूक्ष्मता की पर्याप्त उपेक्षा की है।

गुरु–शुक्र के यथार्थ **'लोप–दर्शन'** के निर्धारण की प्रक्रिया विस्तृत एवम् श्रमसाध्य है, जो चन्द्रग्रहण–साधनप्रक्रिया से भी कठिन एवम् अधिक कालापेक्षी है। इसका नितांत सरलीकृतरूप हम आगे चलकर बतलाएंगे। इससे पूर्व मं. बु. श. की लोप–दर्शनकालसाधन की हमारे **सिद्धान्त, करण** ग्रन्थों में निर्दिष्ट प्रक्रिया का, जो आसन्नमान से ही परिणाम देती है, यहां निर्देश करेंगे।

यह हम पहले लिख चुके हैं कि– सूर्य के पूर्वापर में कुछ अंशों तक फैले सौर–आभामण्डल में प्रविष्ट हतप्रभ ग्रह दृष्टिग्राह्य नहीं रहता, वह वहां **'लुप्त'** रहता है। इस आभामण्डल से बाहर निकल आने पर ही वह पुनः **'दृश्य'** हो पाता है। लेकिन इन ग्रहों (मं., बु., श.) का सूर्य से लोप–दर्शन का निर्णायक यह अन्तर

अंशात्मक नहीं है। आचार्यों ने इसे कालांशों में निर्धारित किया है। एक कालांश चार मिनट का है। हमारे नक्षत्रविदों ने मंगल के कालांश 15 (= 60 मिनट), बुध के 11 (= 44 मिनट) और शनि के 13 (=52 मिनट) निर्धारित किए हैं।[*] उनका यह कहना है कि– ग्रह (मं., बु., श.) के उदयास्तकाल और सूर्य के उदयास्तकाल का अन्तर यदि ग्रह के कालांश–मिनटों से अधिक है, तभी वह दृष्टिग्राह्य (दृश्य) हुआ करता है, अन्यथा वह लुप्त रहता है। **उदाहरणार्थ–** मंगल के कालांशमिनट 60 हैं। इसका अर्थ है– मंगल के उदयकाल एवम् सूर्य के उदयकाल में अथवा मंगल के अस्तकाल एवम् सूर्य के अस्तकाल में अंतर यदि 60 मिनट से अधिक होगा, तभी मंगल आकाश में प्रातः, सायं या रात्रि में दृश्य होगा, अन्यथा वह लुप्त रहेगा।⊕

स्पष्ट है– इस कालांशपद्धति अनुसार मं., बु. और श. के लोप–दर्शन के निर्णयार्थ इनके (इन ग्रहों के) दैनिक उदयास्तकाल हमें ज्ञात होने चाहिएं, जिससे यह जाना जा सके कि– ग्रह के उदयास्तकाल का सूर्य के उदयास्तकाल से कालांश–मिनटतुल्य अन्तर किस दिन घटित होता है ? लेकिन भारत के अधिकतर पंचांगों में सूर्य–चन्द्र के अलावा अन्य किसी भी ग्रह का दैनिक उदयास्तकाल नहीं दिया रहता, क्योंकि पंचांगकार इसे निरुपयोगी सा समझते हैं। मं., बु., श. के दैनिक उदयास्तकाल के ज्ञान के बिना इनके लोप–दर्शन का दिन केवल आसन्नमान से ही जाना जा सकता है, जिसे जानने का प्रकार यह है–

जिस दिन ग्रह की सूर्य से दूरी कालांशतुल्य अंशों के बराबर हो जाती है, उस दिन वह ग्रह लुप्त या दृश्य हो जाता है (अर्थात् यदि वह लुप्त है तो उस दिन दृश्य तथा यदि दृश्य है तो वह उस दिन लुप्त हो जाएगा)।

स्पष्टता के लिए उदाहरण लेते हैं– 22 सितम्बर, 2008 ई. को शनि का सूर्य से अन्तर 15° (शनि के स्वकालांशतुल्य अंशों के बराबर) घटित हो रहा है **(देखें–** श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2065 वि., पृष्ठ 157)। अतः पहले से लुप्त चला आ रहा शनि इस दिन दृश्य हो जाएगा। शनि के दर्शन की यह तारीख आसन्नमान से है। मं., बु., श. के लोप–दर्शनकाल के निर्णय के लिए अनेक पंचांगकार और दैवज्ञ इसी आसन्नमान का प्रयोग करते हैं।

ध्यान रहे– ग्रह के कालांशमिनटों के अनुसार ग्रह एवम् सूर्य के उदयास्तकालों के अन्तर से निर्णीत ग्रह के लोप–दर्शन का दिन एवम् इस आसन्नमानपद्धति से निर्णीत दिन–ये दोनों काफी स्थूल हैं। इनमें परस्पर अन्तर तो रहता ही है। ये दोनों ग्रह के वास्तविक लोप–दर्शन से अक्सर मेल नहीं खाते।

गणक को यहां यह भी जान लेना चाहिए कि– उपरोक्त कालांशपद्धति को **'स्थूल कालांशपद्धति'** की संज्ञा सिद्धांतज्ञों ने दी है। ग्रहों के इन उपरि निर्दिष्ट कालांशों (कालांशमिनटों) को **स्थूल, स्थिर, मध्यम** या **अस्पष्ट** कालांश कहा गया है। केवल इनसे शून्य अक्षांशीय स्थलों पर एवम् शून्य क्रान्ति वाले ग्रहों के लोप–दर्शन का ही दिन स्थूलरूपेण ज्ञात होता है। स्थान(अक्षांश)भेद तथा ग्रह की तात्कालिक क्रान्ति की भिन्नता के कारण ग्रह का यथार्थ **लोप–दर्शनकाल** स्थिर कालांशों द्वारा तो बिल्कुल नहीं जाना जा सकता। **वेंकटेश केतकर** ने अपनी **'ग्रहगणित'** में इन स्थिर (मध्यम) कालांशों को अलग–अलग अक्षांशों एवम्

---

[*] ये कालांश वेंकटेशकृत *'केतकीग्रहगणित'* के अनुसार हैं। *'ग्रहलाघवादि'* अन्य करणग्रन्थों में कथित कालांशों से ये कुछ अंतरित हैं। केतकर ने अपनी *'ज्योतिर्गणित'* में तो मं. बु. श. के कालांश क्रमशः 17, 13 और 15 लिखे हैं, जो *'ग्रहलाघव'* के ही हैं।

⊕ ग्रह किस दिशा में दृश्य या लुप्त होगा और ग्रह का लोप एवम् दर्शन कब, किस दिन होगा ?, इसका सामान्य ज्ञानप्रकार इस तरह है– सूर्य से अधिक गति वाले बुध एवम् शुक्र ग्रह वक्री हों तो वे सायं पश्चिम में लुप्त होकर कुछ दिनों बाद प्रातः पूर्व में दृश्य होते हैं। मार्ग गति से ये ग्रह इससे विपरीत प्रातः पूर्व में लुप्त और सायं पश्चिम में दृश्य होते हैं। शेष मंगल, गुरु और शनि तो हमेशा सायं पश्चिम में लुप्त होकर प्रातः पूर्व में दृश्य हुआ करते हैं।

पंचांग में दिए गए दैनिक स्पष्ट ग्रह देखिए– जो दृश्य ग्रह प्रतिदिन सूर्य के समीप से समीपतर होता जा रहा है, वह कुछ दिनों बाद लुप्त और जो लुप्त ग्रह प्रतिदिन सूर्य से उत्तरोत्तर दूर हटता जा रहा है, वह कुछ दिनों बाद दृश्य हो जाएगा।

अलग–अलग ग्रहक्रान्ति के आधार पर स्पष्ट कालांशों में बदलने का प्रकार एक त्रिकोणमितीय सूत्र द्वारा बतलाया है, जो इस तरह है :–

$$\text{ग्रह के स्पष्ट लोपदर्शन कालांशमिनट} = \frac{\text{ग्रह के स्थिर कालांशमिनट}}{\text{अक्षांशकोज्या x ग्रहक्रान्तिकोज्या}}$$

सामान्य गणकों के लिए इस सूत्र का प्रयोग कर सकना संभव नहीं है, अत: मैने इस सूत्रानुसार उनकी सुविधा के लिए भिन्न–भिन्न भारतीय अक्षांशों (+8° से +36° अक्षांशों) तथा ग्रहों (मं., बु., श.) की भिन्न–भिन्न क्रान्तियों के लिए स्पष्ट कालांशमिनटों का एक कोष्ठक (स्पष्टकालांश–मिनट कोष्ठक) बना दिया है (देखें पृष्ठ **292**), जिसके प्रयोग से इन ग्रहों के लोप–दर्शन का दिन अपेक्षाकृत कुछ यथार्थता से जाना जा सकता है।

इस कोष्ठक की प्रयोगविधि अत्यन्त सरल है, जो इस प्रकार है :–

लुप्त या दृश्य होने जा रहे अभीष्ट ग्रह (मं. बु. श.) के लोप या दर्शन का लगभग अनुमानित दिन पंचांग से अभीष्ट ग्रह और सूर्य के प्रतिदिन घटते या बढ़ते अंशादि–अन्तर द्वारा जानिए।[⊕] इस अनुमानित दिन की अभीष्ट ग्रहक्रान्ति भी पंचांग से जान लीजिए। **'स्पष्ट कालांश–मिनट कोष्ठक'** में इस क्रान्ति वाले उस ग्रह के आगे स्थानीय अक्षांश के नीचे लिखे मिनट ज्ञात करें। ये उस ग्रह के **'स्पष्ट कालांश–मिनट'** हैं, जो बतलाते हैं कि– यह ग्रह तब लुप्त या दृश्य होगा, जब उसके और सूर्य के उदयास्तकाल का अन्तर इतना **(स्पष्ट कालांशमिनटतुल्य)** होगा।

उदाहरणार्थ, मान लें– किसी दिन मंगल सूर्य से कुछ ही आगे लगभग 15–20 अंश पूर्व में विद्यमान है। स्पष्ट है, वह कुछ ही दिनों बाद सायं पश्चिम में लुप्त होने को है। **मान लें–** इस समय इसकी क्रान्ति 16 अंश उत्तर या दक्षिण है। आप कुरुक्षेत्र (हरि.) में (अक्षांश +30° पर) इसके लुप्त होने का दिन जानना चाहते हैं। **'स्पष्ट कालांश–मिनट कोष्ठक'** देखिए– यहां 16 क्रान्त्यंश में मंगल के आगे अक्षांश +30° के नीचे **स्पष्टकालांश–मिनट 72** लिखे हैं। इसका अभिप्राय है– इन दिनों मंगल कुरुक्षेत्र में तब (उस दिन) लुप्त होगा, जब (जिस दिन) वहां उसके अस्तकाल का सूर्यास्तकाल से अन्तर 01 घं. 12 मि. रह जाएगा।

यद्यपि **'स्थूल कालांशपद्धति'** से **'स्पष्ट कालांशपद्धति'** अपेक्षाकृत कुछ सूक्ष्म परिणाम देती है, लेकिन इससे साधित ग्रह का लोप–दर्शनकाल भी दोषमुक्त नहीं है, क्योंकि इस पद्धति में ग्रह के लोप–दर्शन पर सान्ध्यप्रभा का विचार नहीं किया गया। इसके लिए लुप्त या दृश्य होने जा रहे ग्रह के लोप–दर्शनकालिक उन्नतांश (ग्रह की पूर्वापर क्षितिज से सूर्यास्तोदयकालिक साक्षाद् उन्नति)[*] का विचार नितान्त आवश्यक है। इसके बिना **'स्पष्ट कालांशपद्धति'** से साधित लोप–दर्शन के दिन का भी दृश्य लोप–दर्शन से 4–5 दिनों किंवा कई बार तो इससे भी अधिक दिनों का अन्तर सम्भव है। लोप–दर्शन में **'उन्नतांशपद्धति'** के प्रयोग का आविष्कार **वेंकटेश केतकर** ने किया है, लेकिन उन्होंने भी इसका प्रयोग केवल गुरु–शुक्र के लोप–दर्शनकाल के निर्णय हेतु ही किया है, मं. बु. श. के लोप–दर्शनार्थ नहीं। कारण स्पष्ट है– गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन का काल मुहूर्त्तादि में अपरिहार्यरूप से अपेक्षित रहता है, जबकि मं. बु. श. के लोप–दर्शन का प्रयोग फलितज्योतिष को छोड़कर अन्यत्र पर्याप्त विरल है।

[⊕] *ग्रह कितने दिनों बाद लुप्त या दृश्य होगा, यह अनुमानतः जाना जा सकता है। यहां अनुमान में यदि 6–7 दिन की अशुद्धि भी हो तो भी इस 'स्पष्ट कालांशपद्धति' से ज्ञात ग्रह के लोप–दर्शन के दिन में कोई अन्तर नहीं आएगा– यह उपपत्ति से सिद्ध है।*

[*] *पूर्वापर क्षितिज से ग्रह का दृग्वृत्तीय अन्तर।*

चन्द्रलोप-दर्शनसाधन कोष्ठक

(अमावस्या के बाद प्रथम चन्द्रदर्शन की तारीख जानने के लिए)

शुक्ल प्रतिपदा या द्वितीया की तारीख		अक्षांश + 5°		अक्षांश + 15°		अक्षांश + 25°		अक्षांश + 35°	
		क (गुणक)	ख (गुणक)	क (गुणक)	ख (गुणक)	क (गुणक)	ख (गुणक)	क (गुणक)	ख (गुणक)
सितंबर 23	सितंबर 23	+ 0.89	+0.47	+0.79	+0.61	+0.66	+0.75	+0.53	+0.85
अक्तूबर 3	सितंबर 13	+ 0.89	+0.47	+0.79	+0.61	+0.66	+0.75	+0.53	+0.85
अक्तूबर 13	सितंबर 2	+ 0.90	+0.45	+0.80	+0.59	+0.67	+0.74	+0.53	+0.85
अक्तूबर 23	अगस्त 23	+ 0.91	+0.43	+0.81	+0.58	+0.69	+0.72	+0.54	+0.84
नवम्बर 2	अगस्त 13	+ 0.92	+0.40	+0.83	+0.56	+0.72	+0.70	+0.56	+0.82
नवम्बर 12	अगस्त 2	+ 0.93	+0.35	+0.86	+0.52	+0.75	+0.66	+0.59	+0.80
नवम्बर 22	जुलाई 23	+ 0.95	+0.29	+0.89	+0.47	+0.78	+0.62	+0.63	+0.77
दिसम्बर 2	जुलाई 12	+ 0.97	+0.24	+0.91	+0.42	+0.81	+0.58	+0.68	+0.73
दिसम्बर 12	जुलाई 2	+ 0.98	+0.16	+0.93	+0.35	+0.85	+0.53	+0.73	+0.68
दिसम्बर 22	जून 21	+ 1.00	+0.09	+0.96	+0.27	+0.89	+0.46	+0.78	+0.62
जनवरी 1	जून 11	+ 1.00	+0.02	+0.98	+0.19	+0.92	+0.39	+0.83	+0.56
जनवरी 11	मई 31	+ 1.00	−0.05	+0.99	+0.12	+0.95	+0.31	+0.87	+0.49
जनवरी 21	मई 21	+ 0.99	−0.12	+1.00	+0.06	+0.97	+0.24	+0.90	+0.42
जनवरी 31	मई 11	+ 0.98	−0.18	+1.00	00	0.98	+0.17	+0.93	+0.36
फरवरी 10	अप्रैल 30	+ 0.97	−0.22	+1.00	−0.05	+0.99	+0.12	+0.95	+0.31
फरवरी 19	अप्रैल 20	+ 0.97	−0.26	+1.00	−0.09	+1. 00	+0.08	+0.97	+0.26
मार्च 1	अप्रैल 10	+ 0.96	−0.29	+0.99	−0.12	+1.00	+0.05	+0.97	+0.23
मार्च 11	मार्च 31	+ 0.95	−0.31	+0.99	−0.14	+1.00	+0.03	+0.97	+0.21
मार्च 21	मार्च 21	+ 0.95	−0.31	+0.99	−0.14	+1.00	+0.01	+0.98	+0.19

क = सूर्यचन्द्रान्तर गुणक।

ख = चन्द्रशर गुणक।

स्पष्ट कालांश–मिनट कोष्ठक

(मंगल–बुध–शनि के लिए)

क्रान्ति (+ या −)	ग्रह ↓	अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)														
		8°	10°	12°	14°	16°	18°	20°	22°	24°	26°	28°	30°	32°	34°	36°
		मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
0°	मंगल	61	61	61	62	62	63	64	65	66	67	68	69	71	72	74
	बुध	44	44	45	45	46	46	47	47	48	49	50	51	52	53	55
	शनि	53	53	53	54	54	55	55	56	57	58	59	60	61	63	64
4°	मंगल	61	61	61	62	63	63	64	65	66	67	68	69	71	73	74
	बुध	44	44	45	45	46	46	47	48	48	49	50	51	52	53	55
	शनि	53	53	53	54	54	55	55	56	57	58	59	60	61	63	64
8°	मंगल	61	62	62	62	63	64	64	65	66	67	69	70	72	73	75
	बुध	45	45	45	46	46	47	47	48	49	49	50	51	52	54	55
	शनि	53	53	54	54	55	55	56	57	58	58	59	61	62	63	65
12°	मंगल	62	62	63	63	64	65	65	66	67	67	69	71	72	74	76
	बुध	45	46	46	46	47	47	48	49	49	50	51	52	53	54	56
	शनि	54	54	54	55	55	56	57	57	58	59	60	61	63	64	66
16°	मंगल	63	63	64	64	65	66	66	67	68	69	71	72	74	75	77
	बुध	46	46	47	47	48	48	49	49	50	51	52	53	54	56	57
	शनि	55	55	55	56	56	57	58	58	59	60	61	62	64	65	67
20°	मंगल	64	65	65	66	66	67	68	69	70	71	72	74	75	77	79
	बुध	47	48	48	48	49	49	50	50	51	52	53	54	55	56	58
	शनि	56	56	57	57	58	58	59	60	61	61	63	64	65	67	68
24°	मंगल	66	67	67	68	68	69	70	71	72	73	74	76	78	79	81
	बुध	49	49	49	50	50	51	51	52	53	54	55	56	57	58	60
	शनि	58	58	58	59	59	60	61	61	62	63	65	66	67	69	70
28°	मंगल	69	69	69	70	71	72	72	73	74	76	77	78	80	82	84
	बुध	50	51	51	51	52	53	53	54	55	55	56	58	59	60	62
	शनि	59	60	60	61	61	62	63	63	64	65	67	68	69	71	73
31°	बुध	52	52	53	53	53	54	55	55	56	57	58	59	61	62	63

गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन का निर्णय

(नितान्त सरलीकृत)

[अब हम विवाहादि सभी संस्कारों, गृहारम्भादि सभी मुहूर्त्तों तथा व्रत–पर्वादि समस्त धार्मिक अनुष्ठानों के काल के प्रमुख नियन्ता गुरु एवम् शुक्र के लोप–दर्शनकाल का निर्णयप्रकार बतलाएंगे।]

ग्रहों के **लोप–दर्शन** के क्षेत्र में गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन का महत्त्व अद्वितीय है। इन दोनों (देव और दैत्यगुरुओं) के लोप–दर्शन को परम सूक्ष्मतापूर्वक साधनार्थ आधुनिक विद्वान् नक्षत्रविद **वेंकटेश केतकर** ने भगीरथ-प्रयत्न किया है, जिसके फलस्वरूप इन ग्रहों के लोप–दर्शन का काल सूक्ष्मता में अन्य प्राचीन एवम् नवीन **सिद्धांत–करण–ग्रन्थों** से कहीं आगे है। इसका श्रेय उनकी अपनी आविष्कृत **'उन्नतांश पद्धति'** को जाता है।

अपने **'ज्योतिर्गणित'** ग्रन्थ में गुरु–शुक्र के लोप–दर्शनसाधन की जो प्रक्रिया इन्होंने दी है, वह आश्चर्यजनकरूप से वेधसिद्ध परिणाम ज़रूर देती है, लेकिन यह चन्द्रग्रहण–गणितप्रक्रिया से भी अधिक विस्तृत एवम् श्रमसाध्य है। लगभग सभी भारतीय पंचांगकार, जो सूक्ष्मता को महत्त्व देते हैं, प्रतिवर्ष इसी विस्तृत प्रक्रिया से गुरु–शुक्र के लोप–दर्शनकाल का निर्णय लगभग शताब्दी से करते चले आ रहे हैं। विगत 5–6 दशाब्दियों से इस लम्बी प्रक्रिया को करते हुए मुझे विगत 2–3 वर्षों से यह आभास हो रहा था कि– इस विस्तृत प्रक्रिया को परमलघु रूप दिया जा सकता है। इस प्रक्रिया को यथासम्भव लघुतम रूप देने के दृढ निश्चय से मैं विगत 2–3 मास से निरन्तर गणनामग्न रहा। परिणामस्वरूप, गुरु–शुक्र के उदयास्त–कालसाधन में जो लाघव ला पाया हूँ, उसे यहां आपके समक्ष रखने जा रहा हूँ। आप देखेंगे– लाघव के साथ–साथ इस प्रक्रिया में सरलता का भी पूर्ण ध्यान रखा गया है। कोई भी व्यक्ति (यहां तक कि, ज्योतिष एवम् पंचांगगणित से सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति भी) वस्तुतः बिना गणित किए ही मेरी इस पद्धति से 3–4 सेकण्ड में ही यह जान सकता है कि– अमुक वर्ष में गुरु या शुक्र कब, किस तारीख को लुप्त (अस्त) या दृश्य (उदित) होगा ? **ध्यान रहे–** गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन के ज्ञान की यह विधि मूलतः **वेंकटेश केतकर** की ही है। मैंने तो **केतकर** की इस प्रक्रिया को खगोलीय उपपत्त्या आत्मसात् कर इस बालबोधशैली में उपस्थापितमात्र किया है, लेकिन इसे इस रूप में लाने के लिए मुझे भारी गणना करनी पड़ी है।

यहां आगे तीन कोष्ठक **[कोष्ठक (1), (2), (3)]** दिए गए हैं। इन कोष्ठकों से सन् 2001 से 2050 ई. तक के वर्षों में गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन की तारीख भारत के किसी भी स्थल (अक्षाश) के लिए ऐसे जानी जा सकती है* :–

यहां गुरु के लोप–दर्शन के लिए **'कोष्ठक (1)'** है। शुक्र के पश्चिमलोप एवम् पूर्वदर्शन के लिए **'कोष्ठक (2)'** तथा इसके पूर्वलोप एवम् पश्चिमदर्शन के लिए **'कोष्ठक (3)'** है।

इन कोष्ठकों के पहले कॉलम में **'ईस्वी सन्'** और दूसरे कॉलम में **'सूर्ययुतितारीख'** दी गई है। **अभीष्ट ईस्वी सन्** की **सूर्ययुतितारीख** उठाएं। अब अभीष्ट ग्रह (गुरु या शुक्र) के अभीष्ट लोप–दर्शन, पश्चिमलोप–पूर्वदर्शन अथवा पूर्वलोप–पश्चिमदर्शन शीर्षक के अन्तर्गत अभीष्ट ईस्वी सन् के आगे और अभीष्ट अक्षांश के नीचे दी गई ऋण (–), धन (+) चिह्न वाली दिनसंख्या को उठाकर उसे **सूर्ययुतितारीख** में से चिह्नानुसार घटाने या जोड़ने पर ग्रह के लोप–दर्शन, पश्चिमलोप–पूर्वदर्शन या पूर्वलोप–पश्चिमदर्शन की तारीख ज्ञात हो जाएगी।

स्पष्टता के लिए आगे दिए जा रहे उदाहरण देखिए–

उदाहरण (1)– ईस्वी सन् 2005 में अक्षांश +25° पर **गुरु के लोप–दर्शन** की तारीखें ज्ञात करें ?

'कोष्ठक (1)' में ईस्वी सन् 2005 के आगे **'सूर्ययुतितारीख'** 23 अक्तूबर है। इसी कोष्ठक में **'गुरु**

---

* *ये कोष्ठक मेरे आगामी प्रकाशन **'ग्रहोदयास्त–निर्णय'** से उद्धृत हैं। इस पुस्तक में तो ईस्वी सन् 3000 तक की गुरु–शुक्र के लोप–दर्शन की तारीखें निर्दिष्ट हैं।*

(लोप)' शीर्षक के नीचे इसी सन् के आगे +25° अक्षांश में दिन –15 लिखे हैं। इन्हें चिह्नानुसार 23 अक्तूबर में से घटाने पर इस वर्ष इस (+25°) अक्षांश पर 8 अक्तूबर **'गुरु के लोप'** की तारीख मिली। इसी **'कोष्ठक (1)'** में इसी सन् के आगे **'गुरु (दर्शन)'** शीर्षक के नीचे +25° अक्षांश में दिन +11 मिले। इन्हें चिह्नानुसार **'सूर्ययुतितारीख'** 23 अक्तूबर में जोड़ने पर इस वर्ष इस (+25°) अक्षांश पर 3 नवम्बर **'गुरुदर्शन'** की तारीख मिली।

उदाहरण (2)– ईस्वी सन् 2006 में अक्षांश +35° पर **शुक्र के पश्चिमलोप** और **पूर्वदर्शन** की तारीखें ज्ञात करें ?

'कोष्ठक (2)' में ईस्वी सन् 2006 के आगे **'सूर्ययुतितारीख'** 14 जनवरी है। इसी कोष्ठक में **'शुक्र (पश्चिमलोप)'** शीर्षक के नीचे इसी सन् के आगे +35° अक्षांश में दिन –3 और **'शुक्र (पूर्वदर्शन)'** शीर्षक के नीचे दिन +3 लिखे हैं। इन्हें 'सूर्ययुतितारीख' 14 जनवरी में क्रमशः चिह्नानुसार घटाने और जोड़ने पर **शुक्र के पश्चिमलोप** की तारीख 11 जनवरी और इसके **पूर्वदर्शन** की तारीख 17 जनवरी प्राप्त हुई।

उदाहरण (3)– ईस्वी सन् 2006 में ही अक्षांश +35° पर **शुक्र के पूर्वलोप** और **पश्चिमदर्शन** की तारीखें ज्ञात करें ?

'कोष्ठक (3)' में ईस्वी सन् 2006 के आगे **'सूर्ययुतितारीख'** 28 अक्तूबर है। इसी कोष्ठक में **'शुक्र (पूर्वलोप)'** शीर्षक के नीचे इसी सन् के आगे +35° अक्षांश में दिन –23 और **'शुक्र (पश्चिमदर्शन)'** शीर्षक के नीचे दिन +33 मिले। इन्हें 'सूर्ययुतितारीख' 28 अक्तूबर में क्रमशः चिह्नानुसार घटाने और जोड़ने पर **शुक्र के पूर्वलोप** की तारीख 5 अक्तूबर और इसके **पश्चिमदर्शन** की तारीख 30 नवम्बर प्राप्त हुई।

ध्यान दीजिए– यदि किसी कोष्ठक में किसी ईस्वी सन् के आगे **'सूर्ययुतितारीख'** नहीं दी गई है तो समझना चाहिए कि– इस वर्ष ग्रह (गुरु–शुक्र) का लोप–दर्शन नहीं होगा। **जैसे– 'कोष्ठक (1)'** देखिए– ई. सन् 2008 में 'सूर्ययुतितारीख' कोष्ठक में नहीं लिखी है। इसका अर्थ है– गुरु इस वर्ष न लुप्त होगा और न ही उदित। **अपि च– 'कोष्ठक (2)'** देखिए– सन् 2016 ई. में यहां 'सूर्ययुतितारीख' नहीं दर्शाई गई है। इसका अर्थ है– इस वर्ष शुक्र का पश्चिमलोप और पूर्वदर्शन नहीं होगा। इसी तरह **'कोष्ठक (3)'** देखिए– यहां सन् 2020 ई. में 'सूर्ययुतितारीख' का निर्देश नहीं है, अतः इस वर्ष शुक्र का पूर्वलोप एवम् पश्चिमदर्शन नहीं होगा।

नोट– मेरी इस परम लाघव वाली प्रक्रिया से प्राप्त गुरु–शुक्र लोप–दर्शन की तारीख में **ज्योतिर्गणितागत** तारीख से कभी–कभार एक तारीख का अन्तर संभव है। ग्रहों के लोप–दर्शन में ऐसा अन्तर उपेक्ष्य है। **'ज्योतिर्गणित'** कार ने तो अपनी गणितप्रक्रिया से प्राप्त लोप–दर्शन की तिथि में 2–3 दिन की स्थूलता (अन्तर) को भी उपेक्ष्य लिखा है। उन्होंने एवम् अन्य करण ग्रन्थकारों ने किसी भी ग्रह के लोप–दर्शन की तिथि को **'इदमित्त्थम्'** बतला पाना असंभव माना है।

ग्रह के लोप–दर्शन का समय ?

जब ग्रह के लोप–दर्शन के दिन को भी प्रतिज्ञापूर्वक घोषित कर पाना असंभव है, तब यह जानने का प्रयास कि–ग्रह कितने बजकर कितने मिनट पर लुप्त या दृश्य होगा– तर्कसंगत नहीं है। यह सैद्धांतिक रूप से असंगत भी है। मेरा विचार है– पूर्व में लुप्त या दृश्य होने वाले ग्रह का लोप–दर्शनकाल सूर्योदयकाल और पश्चिम में लुप्त या दृश्य होने वाले ग्रह का लोप–दर्शनकाल सूर्यास्तकाल माना जाए, क्योंकि ग्रह के प्रथमलोप एवम् प्रथमदर्शन की ये घटनाएं प्रातः (सूर्योदय) एवम् सायं (सूर्यास्त) के समय ही सर्वप्रथम दृष्टिगोचर होती हैं।

कोष्ठक-1

ई. सन्	सूर्ययुति तारीख	गुरु (लोप)				गुरु (दर्शन)			
		अक्षांश +5°	अक्षांश +15°	अक्षांश +25°	अक्षांश +35°	अक्षांश +5°	अक्षांश +15°	अक्षांश +25°	अक्षांश +35°
		दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन
2001	14 जून	− 11	− 11	− 11	− 12	+ 11	+ 11	+ 12	+ 13
2002	19 जुलाई	11	11	12	14	11	11	11	11
2003	22 अगस्त	11	12	13	16	12	11	11	11
2004	22 सितंबर	11	13	14	18	12	11	11	11
2005	23 अक्तूबर	12	13	15	18	11	11	11	11
2006	21 नवम्बर	11	12	14	17	11	11	11	12
2007	23 दिसम्बर	11	11	12	14	11	12	13	14
2008	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2009	24 जनवरी	11	11	12	13	12	13	15	18
2010	28 फरवरी	11	11	11	12	13	15	17	22
2011	6 अप्रैल	11	11	11	11	13	14	17	22
2012	14 मई	11	11	11	12	11	12	14	16
2013	19 जून	11	11	12	13	11	11	12	13
2014	24 जुलाई	11	11	12	14	11	11	11	11
2015	27 अगस्त	11	12	14	16	12	11	11	11
2016	26 सितम्बर	12	13	15	18	12	11	11	11
2017	27 अक्तूबर	11	13	14	18	11	11	11	11
2018	25 नवम्बर	11	12	13	16	11	11	11	12
2019	27 दिसम्बर	11	11	12	14	11	12	13	14
2020	— —	— — —	—	—	—	—	—	—	—
2021	29 जनवरी	11	11	12	13	12	13	15	19
2022	6 मार्च	11	11	11	11	13	15	17	23
2023	11 अप्रैल	11	11	11	11	12	14	17	20
2024	18 मई	11	11	11	12	11	12	14	16
2025	23 जून	11	11	12	13	11	11	12	13
2026	29 जुलाई	11	12	13	15	11	11	11	11
2027	31 अगस्त	11	12	14	16	12	11	11	11
2028	1 अक्तूबर	12	13	15	18	12	11	11	11
2029	31 अक्तूबर	11	13	14	18	11	11	11	11
2030	30 नवम्बर	11	12	13	16	11	11	11	12
2031	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2032	1 जनवरी	11	11	12	13	11	12	13	15
2033	2 फरवरी	11	11	11	12	12	14	16	20
2034	11 मार्च	11	11	11	11	13	15	18	23
2035	16 अप्रैल	11	11	11	11	12	14	17	20
2036	23 मई	11	11	11	12	11	12	13	15
2037	29 जून	11	11	12	13	11	11	11	12
2038	3 अगस्त	11	12	13	15	11	11	11	11
2039	5 सितम्बर	11	12	14	16	12	11	11	11
2040	5 अक्तूबर	12	13	15	18	12	11	11	12
2041	4 नवम्बर	11	13	14	18	11	11	11	11
2042	4 दिसम्बर	11	12	13	15	11	11	12	13
2043	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2044	5 जनवरी	11	11	12	13	11	12	13	16
2045	7 फरवरी	11	11	11	12	12	14	16	20
2046	16 मार्च	11	11	11	11	13	15	18	23
2047	22 अप्रैल	11	11	11	11	12	13	16	19
2048	28 मई	11	11	11	12	11	12	13	15
2049	4 जुलाई	11	11	12	13	11	11	11	12
2050	7 अगस्त	− 11	− 12	− 13	− 15	+ 11	+ 11	+ 11	+ 11

कोष्ठक–2

ई. सन्	सूर्ययुति तारीख	शुक्र (पश्चिमलोप)				शुक्र (पूर्वदर्शन)			
		अक्षांश +5°	अक्षांश +15°	अक्षांश +25°	अक्षांश +35°	अक्षांश +5°	अक्षांश +15°	अक्षांश +25°	अक्षांश +35°
		दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन
2001	30 मार्च	− 6	− 5	− 4	− 3	+ 2	+ 1	0	0
2002	1 नवम्बर	6	7	9	11	3	4	+ 4	+ 5
2003	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2004	9 जून	4	4	4	5	4	4	4	5
2005	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2006	14 जनवरी	4	3	3	3	3	3	3	3
2007	18 अगस्त	6	8	10	13	3	3	4	5
2008	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2009	28 मार्च	6	5	4	3	2	1	0	0
2010	29 अक्तूबर	6	7	9	12	3	4	4	5
2011	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2012	6 जून	4	4	4	4	4	4	4	5
2013	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2014	12 जनवरी	4	3	3	3	3	3	3	3
2015	15 अगस्त	6	7	9	12	3	3	4	5
2016	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2017	25 मार्च	6	5	4	3	2	1	0	0
2018	27 अक्तूबर	6	7	9	12	3	4	4	5
2019	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2020	4 जून	4	4	4	4	4	4	4	5
2021	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2022	9 जनवरी	4	3	3	3	3	3	3	3
2023	13 अगस्त	6	7	9	12	3	4	4	5
2024	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2025	23 मार्च	6	5	4	3	2	1	0	0
2026	24 अक्तूबर	6	8	10	13	3	4	4	5
2027	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2028	1 जून	4	4	4	4	4	4	4	5
2029	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2030	7 जनवरी	4	3	3	3	3	3	3	3
2031	11 अगस्त	6	7	9	11	3	4	4	5
2032	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2033	20 मार्च	6	5	4	3	2	1	0	0
2034	22 अक्तूबर	6	8	10	13	3	3	4	5
2035	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2036	30 मई	4	4	4	4	4	4	4	5
2037	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2038	4 जनवरी	4	3	3	3	3	3	3	3
2039	8 अगस्त	6	7	9	11	3	4	4	+ 5
2040	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2041	18 मार्च	6	5	4	3	2	1	0	− 1
2042	19 अक्तूबर	6	8	10	14	3	3	4	+ 5
2043	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2044	27 मई	4	4	4	4	4	4	4	4
2045	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2046	1 जनवरी	4	3	3	3	3	3	3	3
2047	6 अगस्त	6	7	9	11	3	4	4	+ 5
2048	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2049	16 मार्च	6	5	4	3	2	1	0	− 1
2050	16 अक्तूबर	− 6	− 8	− 10	− 14	+ 3	+ 3	+ 4	+ 5

कोष्ठक-3

ई. सन्	सूर्ययुति तारीख	शुक्र (पूर्वलोप)				शुक्र (पश्चिमदर्शन)			
		अक्षांश +5°	अक्षांश +15°	अक्षांश +25°	अक्षांश +35°	अक्षांश +5°	अक्षांश +15°	अक्षांश +25°	अक्षांश +35°
		दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन	दिन
2001	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2002	15 जनवरी	− 24	− 24	− 25	− 27	+ 26	+ 24	+ 23	+ 23
2003	18 अगस्त	24	23	24	25	30	34	42	53
2004	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2005	31 मार्च	30	34	41	52	25	24	23	24
2006	28 अक्तूबर	27	25	23	23	24	26	29	33
2007	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2008	9 जून	27	30	35	43	25	28	30	36
2009	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2010	12 जनवरी	24	24	25	27	26	24	23	23
2011	16 अगस्त	24	23	24	25	30	34	42	53
2012	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2013	28 मार्च	29	33	40	51	25	24	23	24
2014	25 अक्तूबर	27	25	23	23	24	26	29	34
2015	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2016	7 जून	28	31	35	44	24	27	29	35
2017	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2018	9 जनवरी	24	24	24	26	25	24	23	23
2019	13 अगस्त	24	24	24	26	30	34	41	53
2020	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2021	25 गार्च	29	33	40	49	25	24	23	24
2022	23 अक्तूबर	27	25	23	23	24	26	30	35
2023	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2024	5 जून	28	31	37	45	24	26	29	34
2025	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2026	7 जनवरी	24	24	24	26	25	24	23	23
2027	11 अगस्त	24	24	24	26	30	34	41	53
2028	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2029	23 मार्च	29	33	40	49	25	24	23	24
2030	20 अक्तूबर	27	25	23	23	25	27	31	36
2031	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2032	3 जून	28	31	37	46	24	26	29	33
2033	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2034	4 जनवरी	24	24	24	26	25	24	23	23
2035	9 अगस्त	24	24	24	26	30	34	41	53
2036	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2037	21 मार्च	29	33	39	48	25	24	23	24
2038	18 अक्तूबर	27	25	23	23	25	27	31	37
2039	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2040	31 मई	29	33	38	47	24	26	29	33
2041	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2042	2 जनवरी	24	24	24	26	25	24	23	23
2043	6 अगस्त	24	24	24	27	30	34	41	53
2044	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2045	18 मार्च	27	31	38	47	26	24	23	23
2046	15 अक्तूबर	27	25	23	23	25	27	31	38
2047	— —	—	—	—	—	—	—	—	—
2048	29 मई	28	31	38	48	24	26	29	32
2049	30 दिसम्बर	− 24	− 23	− 23	− 25	+ 24	+ 23	+ 23	+ 23
2050	— —	—	—	—	—	—	—	—	—

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS

(1951 To 2050 A.D.)

साईज 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़).
पृष्ठसंख्या 722

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)
(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बडे साइज के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Programme** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में लाभान्वित होंगे।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्त्य प्रकाशन से की जा सकती है।

मूल्य **Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/-**

साईज़ 24 x 18½ सें. मी.
पृष्ठसंख्या 280

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½ अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षाश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। **ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।**

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य **Rs.500/- + डाकव्यय Rs. 50/-**

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24X18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गईं 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर / उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित है।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम / द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750 / – + डाकव्यय Rs. 60 / –

पुस्तक मिलने का पताः– **श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें :–इस पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण *'लघु लग्नसारणी'* तथा विशेषरूप से भारतीय नगरों में लग्नारम्भ–समाप्तिकाल सरलता से जानने के लिए एक *'भारतीय लग्ननिर्णय'* पुस्तक भी प्रकाशित होने जा रही है। इनके विज्ञापन पृष्ठ और पृष्ठ पर देखिए।

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS

(1951 To 2050 A.D.)

साईज़ 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़),
पृष्ठसंख्या 722

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)
(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृकसिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Programme** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में लाभान्वित होंगे।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्त्य प्रकाशन से की जा सकती है।

मूल्य **Rs.1000/-** + डाकव्यय **Rs. 60/-**

साईज़ 24 x 18½ सें. मी.
पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षाश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षाश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षाशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह स्थूलता नहीं रहती।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अ. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य **Rs.500/-** + डाकव्यय **Rs. 50/-**

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24X18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़-घटाव द्वारा बतलाने वाला
लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30-30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15-15 अक्षांश-कलाओं के अन्तर पर बनाई गई 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1-1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5-5 अक्षांश-कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़-घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश-रेखांश तथा स्था. म. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20-20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग-अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि- इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय-परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित है।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष-मास-तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित-प्रक्रिया को छः छः, सात-सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव-एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुदित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी- यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750/- + डाकव्यय Rs. 60/-

पुस्तक मिलने का पताः- श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil.,
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर-6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109,
Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें :-इस पुस्तक का संक्षिप्त संस्करण *'लघु लग्नसारणी'* तथा विशेषरूप से भारतीय नगरों में लग्नारम्भ-समाप्तिकाल सरलता से जानने के लिए एक *'भारतीय लग्ननिर्णय'* पुस्तक भी प्रकाशित होने जा रही है। इनके विज्ञापन पृष्ठ और पृष्ठ पर देखिए।

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

व्रतपर्व–विवेक

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर,
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद् विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चांङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेज़ी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख जैन–पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी।
इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

मूल्य Rs. 400/– + Rs. 50/– डाकव्यय

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा लिखित
'अभिजित् प्रकाशन, 59/6, पंचकूला' के संग्रहणीय

आगामी प्रकाशन

(i) भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त

(भारतीय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों की विश्लेषणात्मक, पूर्वाग्रहमुक्त समीक्षा।)

(ii) नव्य जातकपद्धति

(फलादेशोपयोगी ग्रह, भावबल आदि के निर्धारण की संशोधित नई विधाएं।)

(iii) समस्या एवम् समाधान

(गणित, फलित, मुहूर्त्त आदि ज्योतिष की विविध शाखाओं से सम्बद्ध लगभग दो सौ से अधिक ऐसी समस्याओं के सप्रपञ्च, सुबोध, सरल समाधान, जो दैवज्ञों को यत्र–तत्र अक्सर उलझाती रहती हैं।)

(iv) ज्योतिर्निबन्धमाला

(गणित, फलित आदि सम्बन्धी विचारोत्तेजक अनेक मौलिक, प्रौढ़, शोधपूर्ण ज्योतिर्निबन्धों का नवदिग्दर्शक महासंकलन।)

(v) मेघमाला

(पशु–पक्षियों की चेष्टाओं, विविध प्राकृतिक घटनाओं, आकाशलक्षणों तथा ग्रहचार आदि द्वारा भावी सुभिक्ष–दुर्भिक्ष, वृष्टि–अनावृष्टि आदि शुभाशुभ घटनाओं का स्पष्ट संकेत देने वाली *आचार्य मेघमुनि* की व्रजभाषा में लिखी प्राचीन विलक्षणकृति, हिन्दी अनुवादसहित)

अधिक जानकारी के लिए इस पते पर सम्पर्क करें :–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, **M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर 6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109
Phone: 0172-2565 303

॥ श्री राम ॥

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

राशि-रत्न + उपरत्न

Certified Gems

ज्योतिषाचार्यों के लिये विशेष

हमारे यहाँ हर प्रकार के राशि-रत्न + उपरत्न एवं नवरत्नों के ओपन सेट,
1 से 14 मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक और रुद्राक्ष की मालाऐं इत्यादि
100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलने का विश्वसनीय स्थान।

मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र-व्यवहार करें।

माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।

S. पूरणमल कमलकिशोर • ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, कानोता हाऊस, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन : (दु.) 91-0141-2570540, टेलिफेक्स-2568446, निवास-2634889 मो. : 98290 63818
E-mail : info@astralsgems.com • Website : www.astralsgems.com

शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण विलक्षण घटना

लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधिविज्ञान,
रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ

रावण संहिता

का हस्तलिखित रूप में प्रकाशन

महान् विद्वान रावण द्वारा रचित ज्योतिष, औषधि-विज्ञान और तंत्रशास्त्र का यह ज्ञान यद्यपि मूल रूप में रचित एक ग्रंथ के रूप में कहीं उपलब्ध नहीं, परन्तु ज्ञान की धारा दृष्टि से ओझल भले ही हो जाए वह विलुप्त नहीं होती। ज्ञान के यत्र-तत्र बिखरे इन बिन्दुओं, किरणों और मोतियों को एक स्थान पर संग्रहित किया गया है रावण संहिता नामक इस हस्तलिखित वृहद् ग्रंथ में। प्रस्तुत ग्रंथ पांच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में लंकाधिपति रावण के वंश का परिचय, जन्म की कथा, उनके महान् कार्यों और ज्ञानवान स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड में लंकेश द्वारा रचित माने जाने वाले चिकित्सा विज्ञान और औषधिशास्त्र से संबंधित एक हजार एक सौ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक जटिल रोगों के निदान से संबंधित जानकारियां संग्रहित हैं। तृतीय खण्ड में तंत्रशास्त्र एवं तांत्रिक क्रियाओं से संबंधित प्राचीनतम ज्ञान का संकलन है तो चतुर्थ खण्ड में हैं सहस्राधिक कुण्डलियां। पंचम खण्ड में कुण्डलियों के फलादेश दिए गए हैं जो लगभग साढ़े छः सौ पृष्ठों में हैं।

इस ग्रंथ की दक्षिणा मात्र 2500/- पच्चीस सौ रुपये रखी गई है, डाक व्यय 100/-रु. अलग। 500/-रु. (पाँच सौ रुपये) पेशगी भेजकर शेष 2100/- (इक्कीस सौ रुपये) की वी.पी. द्वारा यह ग्रंथ आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

लाल किताब

(सम्पूर्ण)

उर्दू भाषा की 1200 पृष्ठों की प्रसिद्ध एवं प्राचीन पुस्तक का हुबहू सरल हिन्दी अनुवाद

(9x14 इंच साइज में हिन्दी भाषा में प्रथम बार तीन खण्डों में फोटो स्टेट रूप में)

- यह अनोखी पुस्तक बहुत से आश्चर्यजनक ज्योतिष नियमों एवं विचित्र ज्ञान के लिये प्रसिद्ध है।
- ग्रहों की शान्ति के लिये सरल, व्यवहार में आ सकने वाले अचूक टोटके व उपाय जो प्रत्येक व्यक्ति आसानी से व कम खर्च में कर सकता है।
- साथ ही जन्म कुंडली की ग्रह स्थिति का हस्तरेखाओं के साथ मिलान करने की विधि का वर्णन है।
- जिनकी जन्मकुंडली नहीं या गलत है उनके मकान की कुंडली बनाकर ग्रह स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इत्यादि।
- इसमें वर्ष कुंडली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी विधि बताई गई है, जिससे 10 मिनट में किसी भी वर्ष की कुंडली और फलित निकाला जा सकता है अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की आवश्यकता नहीं रही।

चमत्कारी फलादेश के लिये प्रसिद्ध दुर्लभ एवं बेजोड़ ग्रन्थ प्रथम बार दो खण्डों में (हिन्दी भाषा में) स्वयं पढ़िये और आजमाइये।

- उर्दू की फोटोस्टेट प्रति ज्यों की त्यों भी उपलब्ध की जा सकती है।
- डाक व्यय अलग 100/- रुपये।
- कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपये अवश्य भेजें।

मूल्य रु. 2100/-
सम्पूर्ण दोनों खण्ड

★ **इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है।**

★ **कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।**

दुर्लभ, प्राचीन भृगु संहिता

(संस्कृत-हिन्दी)

यह ग्रंथ प्राचीन काल से ही श्रवणगोचर होता रहा है। इस विद्या के प्रमुख आचार्य श्री भृगु जी महाराज हैं इसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगु संहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है एवं जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है। यह ग्रंथ प्राचीन एवं जीर्ण दशा में कठिनता से प्राप्त किया गया है। इस अनुपलब्ध ग्रन्थ में ग्यारह खण्ड हैं:-

1. संतान उपाय खण्ड
2. कुंडली खंड
3. फलित खंड
4. स्त्री फलित खंड
5. नरपति जयचर्या
6. नष्ट जन्मांग दीपिका
7. मूक प्रश्न विचार
8. राज खंड
9. जातक प्रकरणम्
10. सर्वारिष्ट निवारण खंड
11. सोने की चिड़िया

अब इस अप्राप्य, दुर्लभ भृगुसंहिता के फुलस्केप आकार के 2500 पृष्ठों की इलैक्ट्रोस्टेट प्रति उपलब्ध की जा सकती है।

तीन जिल्दों में फुलक्लाथ बाइडिंग सहित (बड़ा साईज) मूल्य 4800/-

★ कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपया अवश्य भेजें।

दुर्लभ, महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन अप्राप्य ग्रन्थ

हस्तलिखित भृगु संहिता कुंडली रहस्य	2500/- रु.
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	2500/- रु.
असली हस्तलिखित यंत्र-तंत्र-मंत्र महार्णव *(यंत्र-तंत्र-मंत्र संबंधी जानकारी पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ)*	1600/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित तंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र शिरोमणि (दो खण्डों में)	650/- रु.
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र महाशास्त्र	400/- रु.

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की आधी कीमत पहले भेजें।

अग्रवाल बुक डिपो (रजि.) 460, खारी बावली दिल्ली- 6 फोन : 23943254, 23936116

॥ श्री राम ॥

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

राशि-रत्न + उपरत्न

Certified Gems

ज्योतिषाचार्यों के लिये विशेष

हमारे यहाँ हर प्रकार के राशि-रत्न + उपरत्न एवं नवरत्नों के ओपन सेट,
1 से 14 मुखी रूद्राक्ष, स्फटिक और रूद्राक्ष की मालाऐं इत्यादि
100% शुद्ध गारन्टी के साथ मिलने का विश्वसनीय स्थान।

मुफ्त रेट लिस्ट के लिये लिखें

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिले या पत्र-व्यवहार करें।

माल V.P.P. या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।

S. पूरणमल कमलकिशोर• ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, कानोता हाऊस, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन : (दु.) 91-0141-2570540, टेलिफेक्स-2568446, निवास-2634889 मो. : 98290 63818
E-mail : info@astralsgems.com• Website : www.astralsgems.com

शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण विलक्षण घटना

लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधिविज्ञान,
रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ

रावण संहिता

का हस्तलिखित रूप में प्रकाशन

महान् विद्वान रावण द्वारा रचित ज्योतिष, औषधि-विज्ञान और तंत्रशास्त्र का यह ज्ञान यद्यपि मूल रूप में रचित एक ग्रंथ के रूप में कहीं उपलब्ध नहीं, परन्तु ज्ञान की धारा दृष्टि से ओझल भले ही हो जाए वह विलुप्त नहीं होती। ज्ञान के यत्र-तत्र बिखरे इन बिन्दुओं, किरणों और मोतियों को एक स्थान पर संग्रहित किया गया है रावण संहिता नामक इस हस्तलिखित वृहद् ग्रंथ में। प्रस्तुत ग्रंथ पांच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में लंकाधिपति रावण के वंश का परिचय, जन्म की कथा, उनके महान् कार्यों और ज्ञानवान स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड में लंकेश द्वारा रचित माने जाने वाले चिकित्सा विज्ञान और औषधिशास्त्र से संबंधित एक हजार एक सौ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक जटिल रोगों के निदान से संबंधित जानकारियां संग्रहित हैं। तृतीय खण्ड में तंत्रशास्त्र एवं तांत्रिक क्रियाओं से संबंधित प्राचीनतम ज्ञान का संकलन है तो चतुर्थ खण्ड में हैं सहस्त्राधिक कुण्डलियां। पंचम खण्ड में कुण्डलियों के फलादेश दिए गए हैं जो लगभग साढ़े छः सौ पृष्ठों में हैं।

इस ग्रंथ की दक्षिणा मात्र 2500/- पच्चीस सौ रुपये रखी गई है, डाक व्यय 100/-रु. अलग। 500/-रु. (पाँच सौ रुपये) पेशगी भेजकर शेष 2100/- (इक्कीस सौ रुपये) की वी.पी. द्वारा यह ग्रंथ आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

लाल किताब
(सम्पूर्ण)

उर्दू भाषा की 1200 पृष्ठों की प्रसिद्ध एवं प्राचीन पुस्तक का हुबहू सरल हिन्दी अनुवाद

(9x14 इंच साइज में हिन्दी भाषा में प्रथम बार तीन खण्डों में फोटो स्टेट रूप में)

- यह अनोखी पुस्तक बहुत से आश्चर्यजनक ज्योतिष नियमों एवं विचित्र ज्ञान के लिये प्रसिद्ध है।
- ग्रहों की शान्ति के लिये सरल, व्यवहार में आ सकने वाले अचूक टोटके व उपाय जो प्रत्येक व्यक्ति आसानी से व कम खर्च में कर सकता है।
- साथ ही जन्म कुंडली की ग्रह स्थिति का हस्तरेखाओं के साथ मिलान करने की विधि का वर्णन है।
- जिनकी जन्मकुंडली नहीं या गलत है उनके मकान की कुंडली बनाकर ग्रह स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इत्यादि।
- इसमें वर्ष कुंडली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी विधि बताई गई है, जिससे 10 मिनट में किसी भी वर्ष की कुंडली और फलित निकाला जा सकता है अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की आवश्यकता नहीं रही।

चमत्कारी फलादेश के लिये प्रसिद्ध दुर्लभ एवं बेजोड़ ग्रन्थ प्रथम बार दो खण्डों में (हिन्दी भाषा में) स्वयं पढ़िये और आजमाइये।

मूल्य रु. 2100/-
सम्पूर्ण दोनों खण्ड

- उर्दू की फोटोस्टेट प्रति ज्यों की त्यों भी उपलब्ध की जा सकती है।
- डाक व्यय अलग 100/- रुपये।
- कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपये अवश्य भेजें।

★ **इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है।**

★ **कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।**

दुर्लभ, प्राचीन भृगु संहिता
(संस्कृत-हिन्दी)

यह ग्रंथ प्राचीन काल से ही श्रवणगोचर होता रहा है। इस विद्या के प्रमुख आचार्य श्री भृगु जी महाराज हैं इसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगु संहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है एवं जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है। यह ग्रंथ प्राचीन एवं जीर्ण दशा में कठिनता से प्राप्त किया गया है। इस अनुपलब्ध ग्रन्थ में ग्यारह खण्ड हैं:-

1. संतान उपाय खण्ड
2. कुंडली खंड
3. फलित खंड
4. स्त्री फलित खंड
5. नरपति जयचर्या
6. नष्ट जन्मांग दीपिका
7. मूक प्रश्न विचार
8. राज खंड
9. जातक प्रकरणम्
10. सर्वारिष्ट निवारण खंड
11. सोने की चिड़िया

अब इस अप्राप्य, दुर्लभ भृगुसंहिता के फुलस्केप आकार के 2500 पृष्ठों की इलैक्ट्रोस्टेट प्रति उपलब्ध की जा सकती है।

तीन जिल्दों में फुलक्लाथ बाइडिंग सहित (बड़ा साईज) मूल्य 4800/-

★ कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपया अवश्य भेजें।

दुर्लभ, महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन अप्राप्य ग्रन्थ

हस्तलिखित भृगु संहिता कुंडली रहस्य	2500/- रु.
हस्तलिखित भृगु संहिता महाशास्त्र	2500/- रु.
असली हस्तलिखित यंत्र-तंत्र-मंत्र महार्णव *(यंत्र-तंत्र-मंत्र संबंधी जानकारी पर सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ)*	1600/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित यंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित तंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव	551/- रु.
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र शिरोमणि *(दो खण्डों में)*	650/- रु.
असली प्राचीन यंत्र-तंत्र-मंत्र महाशास्त्र	400/- रु.

उपरोक्त सभी पुस्तकों का डाक व्यय अलग है। पुस्तक की आधी कीमत पहले भेजें।

अग्रवाल बुक डिपो (रजि.) 460, खारी बावली दिल्ली- 6 फोन : 23943254, 23936116

सफलता की राह : कार्यस्थल – वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित मूल्य : रुपये 125.00 (डाक व्यय अलग)

भवन निर्माण एक कला है और जिस भवन में आप रहते हैं या जहाँ से आपका कारोबार चलता है, आपके लिए सौभाग्यदायक भी हो सकता है और दुर्भाग्यपूर्ण भी। हममें से अधिकांश लोग प्रतिदिन कम-से-कम आठ घंटे अपने कार्यस्थल पर बिताते हैं। आप नौकरी पेशा हों, अपना व्यवसाय चलाते हों, कन्सल्टेंट हों या उद्योगपति, कार्यक्षेत्र में सफलता और समृद्धि की कामना सर्वोपरि होती है। वास्तुशास्त्र एक दक्ष एवम् तनाव मुक्त कार्यस्थल का निर्माण करता है। कार्यस्थल वास्तु का लक्ष्य एक स्फूर्तिदायक, उत्साहवर्धक और कार्य सक्षम परिवेश प्रदान करता है। *इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के शास्त्रीय रूप के साथ-साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में :-*

❖ कार्यालय ❖ अस्पताल/नर्सिंग होम

❖ बहुमंजिला भवन ❖ शोरूम तथा दुकानें

❖ सिनेमा हाल / परिसर ❖ होटल/रिसार्ट

❖ उद्योग ❖ शापिंग सेंटर ❖ बैंक/ शिक्षा संस्थान

को अधिक लाभप्रद, उत्पादक और सफल बनाने के वास्तुसम्मत, सहज और सटीक उपाय, सुझाव और समाधान दिए गये हैं। इसमें व्यावसायिक भूखण्ड के चयन से लेकर बने हुए भवनों में विद्यमान वास्तु दोषों से मुक्ति के उपाय भी बताए गये हैं। इस प्रकार बिना तोड़-फोड़ और कम खर्च में किए गए परिवर्तनों द्वारा आप अपने कारोबार को सौभाग्य का प्रतीक बना सकते हैं। आप चाहे नौकरी पेशा हों या उद्योगपति, कार्यक्षेत्र में सफलता और समृद्धि की कामना करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

"सम्पूर्ण हिन्दू चिन्तन" (हिन्दी) एवं Complete Hindu Thought (English)

मूल्य- 35/-(हिन्दी), 40/- (English) (डाक व्यय अलग)

इस किताब में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित हर पक्ष और कोण का समावेश है। यह पुस्तक न केवल हिन्दू धर्म के प्रत्येक जिज्ञासु के लिए बल्कि सर्वसाधारण के लिए भी बहुत उपयोगी है। विशिष्ट विषयों पर चर्चा छोटे-छोटे निबन्धों के रूप में की गई है। पुस्तक की भाषा बहुत ही सरस व सरल है।

प्रसन्न मन व स्वस्थ शरीर का रहस्य

-ले.: पण्डित रविन्द्र लाखोटिया

इस पुस्तक में कार्मिक ज्ञान, मन्त्र अराधना, दैनिक दिनचर्या में व्यवहार, ध्यान व योग (मुद्रा सहित), भारतीय आयुर्वेदिक मालिश (मुद्रा सहित), मुद्रा चिकित्सा, रेकी, क्रिस्टल हिलिंग, डाउसिंग एवं फूलो के द्वारा चिकित्सा सभी पूर्ण रुप से रंगीन चित्रों सहित दी गई है। मूल्य 80/- रुपये (डाक खर्च सहित)

सुख-समृद्धि की राह : गृह-वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

❖ सुख और समृद्धि ❖ उत्तम दाम्पत्य जीवन

❖ स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति ❖ उत्तम शिक्षा और

❖ घर और व्यवसाय में सफलता

❖ एक बेहतर जीवन प्रणाली

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गगया है। **भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन** से लेकर **आंतरिक साज-सज्जा** तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। **फ्लैट्स के चयन** और आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों-सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है। *मूल्य : रुपये 125.00 (डाक व्यय अलग)*

अनुभूत फलित सिद्धांत

लेखक - श्री सीताराम स्वामी ज्योतिषाचार्य

एम.ए., बी.एड., प्रभाकर, दैवज्ञभूषण, ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष वाचस्पति

इस ग्रन्थ में राशि, ग्रह व भिन्न-भिन्न भावों के कारकों से उत्पन्न शुभाशुभ योग, धनयोग, विवाह योग आदि महत्वपूर्ण फलित सिद्धान्तों को सरल सरस एवं सुरुचिपूर्ण भाषा द्वारा लघु ग्रन्थ के रूप में पिरोकर ज्योतिष प्रेमी पाठकों के कर-कमलों में समर्पित किया है। ''हर्षल'' एवं ''नेपच्यून का मानव जीवन पर प्रभाव'' विषय पर अलग से संभवतया, प्रथम बार प्रकाश डालकर विद्वान् लेखक ने इस लघु ग्रन्थ की विशेषता को उजागर किया है। ''कालसर्प योग'' पर वर्गीकरण बड़े विस्तारेण कर लेखक ने संभवतः प्रथम बार प्रकाश में लाकर लघुग्रन्थ की विशेषता को चार चाँद लगाने जैसा कार्य कर अति श्रम का परिचय दिया है जो स्पष्टतया झलकता है।

ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए तो यह पुस्तक एक निधि से कम मूल्य नहीं रखती है। यहाँ पर ग्रहों, भावों, भावेश के कारकत्व के संबंध में ऐसी अनेकों सूचियाँ दी हैं कि अन्य ग्रन्थों से इसकी विशेषता का पृथक् आभास स्वयमेव हो जाता है।

मूल्य : 80/- + 30/- (डाक व्यय)

प्राप्ति स्थान:- **अग्रवाल बुक डिपो** 460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है।

जन्मपत्र की फीसः– साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 600 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 800 रु. है। डाकव्यय अलग होगा। विदेशी जन्मपत्र कम्प्यूटर से तैयार की गई सारणियों से बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं, गणित विशेष परिश्रम से करनी पड़ती है, अतः जिनका जन्म विदेश में हुआ हो, उनके साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 800 रु. है। यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जन्मपत्र बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मसंवत्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, जाति, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय भी लिखना न भूलें। टेवा की फीस 100 रु. है।

भारतीय वर्षफल की फीस साधारणतया 300 रु. है। विस्तृत फलादेश वाले वर्षफल की फीस 500 रु. है। विदेशी साधारण वर्षफल की फीस 500 रु. एवं विस्तृत की फीस 700 रु. है। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा, जाति अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है, कि इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। शुद्ध विवाहमुहूर्त्त जानने की फीस 251 रु. है और वर-कन्या की कुण्डली मिलान की फीस 251 रु. है। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेश सहित बनाए जाते हैं। आर्डर के साथ पूरी फीस पेशगी भेजें। सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 201 रु. है।

नोटः– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नही किया जाएगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों, बिनौला, आदि तिलहन; रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि तथा सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 5000 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50000 + 500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। जिन्होंने Advance Fee लिखित Report के लिए भेजी होगी, वे Telephone के माध्यम से भी ताजा मशवरा प्राप्त कर सकेंगें। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार विमर्श' के अन्त में देखें।

जो व्यापारी साल में प्रमुख–प्रमुख केवल एक–दो हाज़र व्यापार के चांस ही चाहते हैं, वे 10000 रु. भेजकर रजि. में नाम दर्ज करा सकते हैं। जिन व्यापारियों के नाम रजिस्टर में दर्ज होंगे, हम केवल उन्हें ही अपने विचार भेज सकेंगे।

पत्रव्यवहार करते समय साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. लिखना न भूलें।

सर्दियों में – प्रातः 9 से 2 बजे तक।
गर्मियों में – प्रातः 8 से 2 बजे तक।

दूर से आने वाले सज्जन पत्र या टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय पहले ही निश्चित कर लें।

पुंसवनी (अभीष्ट सन्तानप्राप्ति के लिए दिव्य औषधि)

इस ईश्वरप्रदत्त प्रभावयुक्त दिव्यौषधि को गर्भ के दूसरे मास के अन्त में सेवन करने से अभीष्ट (मनचाही) संतान ही उत्पन्न होती है। इस अद्भुत औषधि की प्रशंसा में असंख्य पत्र और ईनाम प्राप्त हुए हैं। मूल्य 800 रु. + 50 रु. पैकिंग एवं डाकव्यय, कुल राशि 850 रु. भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी।

सिद्ध शनियन्त्र– विधिपूर्वक शुभमुहूर्त्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीडा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट– 1100 रु. डाकव्यय अलग।

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजुर्बा लें। भेंट– 2100 रु., डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे [illegible], [illegible] व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तजुर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। भेंट– 1100 रु., डाकव्यय.अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। भेंट– 1100 रु., डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्रव्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),
मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, P I N– 140 103,
[PHONE– 0160-264 1277, FAX- 264 1577]
Website : www.shrimartand.com

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh Gadh, at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Ph. 0160-2641274, Fax: 0160-2645575

पृष्ठ संख्या 200 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(अप्रैल, 2010 ई. तक प्रकाशित हो जाएगी–प्रतीक्षा कीजिए।)

लेखकः-- प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है। ध्यान दें– गतवर्षीय विज्ञापन में इस पुस्तक की पृष्ठसंख्या केवल 120 लिखी गई थी, लेकिन विषयवृद्धि के कारण इसकी पृष्ठसंख्या अब 200 के लगभग हो गई है। अतः अब इसका संशोधित मूल्य Rs. 375/– निर्धारित किया गया है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 375/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303